



॥ श्रीः ॥

महाकव्यमरसिंहेन विरचितः
अमरकोशः ।

रोहतकप्रदेशान्तर्गत-वेरीग्रामनिवासि-पण्डित-
रविदत्तशास्त्रिकृतभाषाटीकासहितः ।

स च

आगरानगरस्थमुख्यपाठशालीयप्रथमसंस्कृताध्यापक-
पण्डितरामेश्वरभट्टेन संशोधितः ।

स च

श्रीकृष्णदासात्मजेन गंगाविष्णुना
स्वकीये "लक्ष्मीविकटेश्वर" मुद्रणालये
मुद्रितः प्रकाशितश्च ।

द्वितीयावृत्तिः ।

विक्रमान्दाः १९६१, शकान्दाः १८२६.

कल्याण-मुंबई.

इस पुस्तक के राजिष्टरी हक सन १८६७ के आक्ट २१ के
बमोजब यन्त्राधिकारीने स्वाधीन रखे हैं.

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

LIBRARY

PHYSICS DEPARTMENT

5710 S. UNIVERSITY AVE.

CHICAGO, ILL.

1950

RECEIVED

1950

1950

1950

1950

1950

1950

भूमिका.



विदित हो कि आज दिन अमरकोश छोटे और बड़े सब पण्डितोंके हाथका आभूषण हो रहा है। व्याकरण पढ़कर इसके बिना क्षणमात्र कार्य नहीं चल सकता। मेदिनी आदि अन्य कोशोंके होनेपर भी इसहीकी मान्यता क्यों? कारण जो सूक्ष्म और सरल रीति पाणिन्यादि व्याकरणसे सिद्ध शब्दोंकी इसमें है सो अन्यत्र नहीं इसी हेतु इसकी मान्यता सर्वोपरि हो रही है।

इस कोशके कर्ता कवि अमरसिंहजी हैं। अत एव यह अमरकोशके नामसे प्रसिद्ध है और इसमें तीन काण्ड हैं। कवि अमरसिंहका होना विक्रमादित्यके समयमें सिद्ध होता है क्योंकि वे उक्त महाराजकी सभाके नवरत्नोंमें गिने जाते थे। यह बात कवि-शिरोमणि कालिदासकृत ज्योतिर्विदाभरणके श्लोकसे प्रमाणित होती है। यथा:-

“धन्वन्तरिः क्षपणकोऽमरसिंहशंकुवेतालभट्टघटखर्परकालिदासाः॥
यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥१॥

अर्थात्—धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि ये विक्रमादित्यकी सभाके नव रत्न हैं ॥ १ ॥”

श्रोत्रपरंपरासे यह भी सुना जाता है कि अमरसिंह बौद्धमतावलम्बी थे। उन्होंने अपने कोशमें मंगलाचरणको एक नवीन रीतिपर लिखकर और स्वर्ग आदिके २१४ मुख्य श्लोक लिखकर अन्य देवताओंके होतेभी इन्होंने बुद्धके नामकोही अग्रणी किया है इससे उनका बौद्ध होना स्पष्ट दीखता है। और कोई कोई यह भी निश्चित करते हैं कि इनके बौद्ध होनेका वर्णन शंकरदिग्विजयमें है।

संस्कृतमें जो वाचस्पत्यादि बड़े २ कोश हैं वे केवल पण्डित होनेपर काममें आते हैं। विद्यार्थीकी दशमें उपयोगी नहीं। उस अवस्थामें तो अमरकोशही अधिक लाभदायक है। क्यों कि श्लोकबद्ध होनेसे जितना और जो कुछ वे अपनी बाल्यावस्थामें कण्ठ कर लेते हैं और फिर गुरुमुखसे अर्थ समझ लेते हैं तो उनके जन्मपर्यन्त कंठाग्रही रहता है। जहां कहीं पण्डितलोग विद्यमान हैं वहां विद्यार्थीका पाठ सुगम रीतिसे हो सकता है परन्तु ग्रामोंमें कि जहां पण्डितोंका अभाव है वहां विद्यार्थीको अर्थ समझनेके लिये बड़ा क्लेश उठाना पड़ता है।

अमरकोशकी पादचन्द्रिका, रामाश्रमी, वाच्यसुधा, सारसुन्दरी आदि अनेक टीका हैं परन्तु वे संस्कृतमें होनेसे पण्डितोंकेही काममें आ सकती हैं उनसे विद्यार्थीको लाभ नहीं पहुँच सकता, अत एव ऐसे अभावको दूर करनेके लिये श्रीयुत गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजी जो परोपकारके लिये दत्तचित्त और काटिबद्ध हैं। उन्होंने इस कोशकी भाषाटीका वेरीग्रामनिवासी पं० रविदत्त शास्त्रीजीसे कराकर छापनेका उद्साह किया। उक्त शास्त्रीजीने जो सरलता इसके अनुवादमें कर दी सो सब स्पष्टही है कि आज दिन अनेक भाषाटीकाओंके प्रस्तुत होनेपर भी ऐसी सरल दूसरी भाषाटीका नहीं हुई।

जब इस टीकाके छपनेका समय आया तो सेठजी महाशयने इसके विषयमें

मुझेभी सम्मती ली और मेरे अवलोकनार्थ वा संशोधनार्थ भेज दी। इसकी उत्तमता देखनेपरभी मुझको इसमें कुछ अधिक तारतम्य दीख पड़ा और कहीं अर्थांशमें ऐसे संस्कृत शब्द दीख पड़े कि जिनका अर्थ बालकोंकी समझमें आना कठिन था अत एव मैंने उक्त सेठजीकी अनुमतिसे इसके विस्तारको कुछ न्यून किया। और इसके बदले लिंगसंकेत बढ़ा दिया और आखिरमें गणेश काशीनाथ काळे इनकी बनाई हुई अमरकोशस्थ-शब्दानुक्रमणिका जोड़ दी है। इससे पुस्तकमें विषयभी अधिक हो गया और मौल्यभी अन्य छापेकी पुस्तकोंसे इतना अधिक नहीं हुआ कि विद्यार्थियोंको लेनेमें कुछ कष्टकल्पना करनी पड़े।

यदि यथार्थमें देखा जाय तो पण्डितके लिये लिंगज्ञानही अधिक कठिन है सो वह अमरकोश पढ़ते समय या तो गुरुमुखसे अर्थ सुननेपर समझमें बैठ जाता है और या लोग व्याकरणका बोध होनेपर कोशानियमके अनुसार स्वयं जान लेते हैं परन्तु साधारण देखनेमें बहुतसे लोगोंको संदेहमें पड़ना पड़ता है। कारण अमरसिंहजीने जो लिंगव्यवहार जताया है सो बड़ी चतुरता की है। थोड़ेसे लेखमेंही बहुतसा काम सिद्ध कर दिया है। जहाँ जिसके मध्यमें वा अन्तमें “अस्त्री, त्रिषु वा पुंस्त्र-पुंसकम्” आदि लिख दिया है वहाँ तो स्पष्टही है। परन्तु अभी यह बात इस योग्य न हुई कि विद्यार्थियोंको बाल्यावस्थासेही नामके ज्ञान होनेके साथही सब शब्दोंका लिंगव्यवहारभी चित्तमें बैठता हुआ चला जाय कि जिससे बड़े होनेपर उनको लिंगज्ञानके लिये वारंवार कोश नहीं खखोलने पड़े। यदि टीकामें संस्कृतके शब्द विभक्त्यनुसार घरे जाय तो व्याकरणके बोधसे शब्दमें प्रत्येक लिंगकी कल्पना हो सकती है। परन्तु भाषामें विभक्तिहीन शब्दोंसे कदापि यह ज्ञान नहीं हो सकता कि अमुक शब्द अमुक लिंग है अत एव मैंने विद्यार्थियोंके उपकारार्थ और उक्त सेठजीकी गुणग्राहकतासे यहभी भार अपने ऊपर लिया कि कोई शब्द ऐसा न छोड़ा कि जिसका लिंगज्ञान इस भाषाटीकासे न हो। कुछ यह बात नहीं है कि अमरसिंहजीने लिंगज्ञानका नियम न लिखा हो। उन्होंने कोशके आरंभमें लिखकर तृतीयकांडके पंचम वर्गमेंभी स्पष्ट किया है परन्तु जो कुछ है सब उनहीके लिये है कि जिनको व्याकरणके प्रकृतिप्रत्ययका यथार्थ ज्ञान है। अत एव भाषामें प्रत्येक शब्दका लिंग आगेके नियमोंके अनुसार पाठकोंको मिलेगा और इतने लिखनेपरभी जिनको अधिक शंका हो वे समय पाकर किसी विद्वान्से पूँछकर अपनी शंका दूर करें। जहांतक हुआ है कोई बात उठा तो धरी नहीं है।

अंतमें पाठकोंसे सविनय निवेदन है कि जिन शब्दोंका लिंग अधिक बढ़ाया है वह सब बड़े २ वाचस्पत्यादि कोशोंकी सहायतासे सावधानतापूर्वक लिखा है। इस परभी जहाँ कहीं भ्रमादिदोषसे रह गया हो अथवा यंत्रदोषसे कुछका कुछ छप गया हो तो सज्जनजन उसको शोधकर मुझे कृतार्थ करें।

विद्वज्जनकृपाकांक्षी-रामेश्वरभट्ट.

लिङ्गादिज्ञानके लिये आवश्यकीय नियम.



१ प्रत्येक नामको जुदा २ दिखलानेके लिये नामोंके बीचमें ऐसा (,) चिह्न कर दिया है ।

२ जहां कहीं अर्थीशमें एक शब्दका पर्याय शब्द दिया है अथवा इन्नन्त नान्त शब्दोंका भेद लिखा है वा मूलके अतिरिक्त लिङ्गव्यवहार स्पष्ट किया है अथवा कहीं कुछ अधिक विशेषता दिखाई है वह सब () इस प्रकारके कोष्ठकमें लिखा है ।

३ जहां मूलमें लिंगका विषय आया है जैसे “ पुत्रपुंसकम् ” आदि वहां तौ भाषामें स्पष्टरीतिसे लिख दिया है कि अमुक शब्द अमुक लिंगी है परन्तु मूलसे अधिक जो लिखा है वहां पुंलिङ्गके लिये (पु०), स्त्रीलिङ्गके लिये (स्त्री०) नपुंसकलिंगके लिये (न०) और त्रिलिंगीके लिये (त्रि०) ऐसे संकेत कर दिये हैं ।

४ जहां देखा है कि बहुतसे शब्द एकही लिंगके चले गये हैं वहां प्रथम शब्दके आरम्भमें ऐसा लिख दिया है कि आगेके शब्द अमुक लिंगी हैं और अमुक शब्दतक हैं अथवा शब्दोंके अंतमें दे दिया है कि यहांतक अमुक लिंगी शब्द हुए और जहां कई शब्द एकही अर्थके हैं और उनके लिंगमें भेद है तौ उन शब्दोंके पासही लिंगसंकेत कर दिये गये हैं ।

५ नानार्थवर्गमें इतना ध्यान रहे कि एक २ शब्द अनेक शब्दका वाची है किन्तु वे शब्द पीछेके काण्डोंमें हो गये हैं और स्थल २ पर उनका लिंगभी जताया गया है अत एव उन्हींके अनुसार लिंगनिश्चय जानना । जहांतक हुआ है लिखभी दिया गया है ।

रामेश्वरभट्ट,
हेड पण्डित आगराकालेज,
पश्चिमोत्तर देश.

अमरकोशस्य वर्गानुक्रमणिका.

वर्गङ्काः	वर्गनाम.	पृष्ठाङ्काः	मूलश्लो०	प्र० श्लो०
	प्रथमकाण्डम्.	१	२८०॥	१९
०	मङ्गलाचरणम्	१	१	०
०	प्रस्तावना	१	१	०
०	परिभाषा	२	३	०
१	स्वर्गवर्गः	४	६९॥	६॥
२	व्योमवर्गः	१५	२	॥
३	दिग्वर्गः	१६	३५	४
४	कालवर्गः	२२	३१	१॥
५	धीवर्गः	२९	१७	१
६	शब्दादिवर्गः	३२	२५॥	२
७	नाट्यवर्गः	३७	३८	१॥
८	पातालभोगिवर्गः	४५	११	१॥
९	नरकवर्गः	४७	३॥	०
१०	वारिवर्गः	४८	४३	॥
	द्वितीयकाण्डम्.	५७	७३३॥	११॥
१	भूमिवर्गः	५७	१८	२
२	पुरवर्गः	६०	२०	॥
३	शैलवर्गः	६४	८	॥
४	वनौषधिवर्गः	६६	१६९॥	०
५	सिंहादिवर्गः	९४	४३	२॥
६	मनुष्यवर्गः	१०२	१३९॥	१
७	ब्रह्मवर्गः	१२९	५८	४
८	क्षत्रियवर्गः	१४०	११९॥	०
९	वैश्यवर्गः	१६२	१११	१
१०	शूद्रवर्गः	१८३	४७	०
	तृतीयकाण्डम्.	१९२	४८१	८
१	विशेष्यनिघ्नवर्गः	१९२	११२॥	०
२	संकीर्णवर्गः	२११	४२॥	०
३	नानार्थवर्गः	२२०	२५७	८
४	अव्ययवर्गः	२७०	२३	०
५	लिङ्गादिसंयहवर्गः ...	२७४	४६	०
२५			१४९६	३८॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

अर्थप्रकाशिकया भाषाटीकया समन्वितः

अमरकोशः ।

प्रथमकाण्डम् ।

श्रीअमरसिंह निर्विघ्नपूर्वक इस ग्रन्थकी समाप्ति और शिष्योंकी शिक्षाके लिये ग्रन्थके आदिमें प्रथम मंगलाचरण करते हैं:—

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः ।

सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥

अन्वयः—भो धीराः ! यस्य अगाधस्य ज्ञानदयासिन्धोः अनघाः गुणाः (सन्ति), स अक्षयः श्रिये अमृताय च (भवद्भिः) सेव्यताम् ॥ १ ॥

श्रीमद्भूषणमस्कृत्य रविदत्तेन धीमता ।

नूनममरकोशस्य भाषाटीका विरच्यते ॥

भाषार्थः—हे धीरपुरुषो ! जिस अत्यन्त गम्भीर ज्ञान और दयाके समुद्रके क्षांति आदि निर्मल गुण हैं उस अविनाशीकी सम्पत्ति और मोक्षके लिये आप आराधना करो ॥ १ ॥

प्रस्तावना ।

समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ।

संपूर्णमुच्यते वर्गेर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥

अन्वयः—अन्यतन्त्राणि समाहृत्य संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः वर्गैः सम्पूर्ण नाम-लिङ्गानुशासनम् (मया) उच्यते ॥ २ ॥

भाषार्थः—नाम और लिंगके प्रतिपादन करनेवाले अन्य ग्रन्थोंको एकत्र करके अल्पविस्तारक बहुअर्थवाले और प्रत्येक पदके प्रकृति प्रत्येय आदिके विचारसे जिनमें प्रत्येक पदका संस्कार किया गया है ऐसे वर्गोंके द्वारा सम्पूर्ण स्वर इत्यादि नाम और पुरुष आदि लिंग इनके व्युत्पत्तिविधायक शास्त्रको मैं कहता हूँ ॥ २ ॥

परिभाषा ।

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् ।

स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥

अन्वयः-प्रायशः रूपभेदेन, कुत्रचित् साहचर्यात्, क्वचित् तद्विशेषविधेः स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयम् ॥ ३ ॥

भाषार्थः-इस ग्रन्थमें बहुधा करके रूपभेदसे अर्थात् आकारविशेष करके स्त्रीलिंग, पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिंग जानना चाहिये । जैसे-“ लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा ” “ पिनाकोऽजगवं धनुः ” इन श्लोकोंमें रूपभेदसे लक्ष्मीसे पद्माशब्दतक स्त्रीलिंग है । पिनाकः यह पुँल्लिङ्ग है, अजगवं यह नपुंसकलिंग है । तथा कहीं कहीं साहचर्यसे अर्थात् अन्यशब्दके समीप होनेसे स्त्रीलिंग, पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिंग जानना । जैसे-“ अश्वयुगश्चिनी ” “ ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः ” “ वियद्विष्णुपदम् ” इन श्लोकोंमें अश्विनीकी साहचर्यसे अश्वयुक् शब्द स्त्रीलिंग है । आत्मभू शब्दके साहचर्यसे ब्रह्मा पुँल्लिङ्ग है । विष्णुपदके साहचर्यसे वियत्शब्द नपुंसकलिंग है और कहीं लिंगकी विशेष उक्तिसे स्त्रीलिंग, पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिंग जानना । जैसे-“ भेरी स्त्री दुंदुभिः पुमान् ” “ क्लीबे त्रिविष्टपम् ” इन श्लोकोंमें स्त्रीपद कहनेसे भेरी स्त्रीलिंग है और पुमान् पद कहनेसे दुंदुभिःशब्द पुँल्लिङ्ग है । क्लीब पद कहनेसे त्रिविष्टप क्लीब अर्थात् नपुंसकलिंग है ॥ ३ ॥

भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न संकरः ।

कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां क्रमादृते ॥ ४ ॥

अन्वयः-अत्र अनुक्तानां भिन्नलिङ्गानां भेदाख्यानाय द्वन्द्वो न कृतः, (तथा) एकशेषः न कृतः, (तथा) क्रमात् ऋते संकरः अपि न कृतः ॥ ४ ॥

भाषार्थः-इस ग्रन्थमें अनुक्त अर्थात् अव्युत्पादित और भिन्नलिङ्गवाले नामोंका लिंगभेद कहनेके लिये द्वन्द्वसमास नहीं किया गया । जैसे-“ कुलिशं भिदुरं पविः ” इस श्लोकमें ‘ कुलिशभिदुरपवयः ’ ऐसा होता सो नहीं किया । तथा एकशेषभी नहीं किया क्योंकि एकशेषमें जो शेष रहता उसीके लिंगका बोध होता । जैसे-“ नभः खं श्रावणो नभाः ” इसकी जगह ‘ खश्रावणौ तु नभसौ ’ ऐसा नहीं किया । तथा क्रमके विना भिन्न लिंगोंका संकर अर्थात् मेलभी नहीं किया; क्योंकि साहचर्यसे लिंगके निश्चयका अभाव हो जाता, किन्तु स्त्रीलिंग, पुँल्लिङ्ग, नपुंसकलिंग ये क्रमसे

पठे । जैसे “ स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ” इसकी जगह ‘ स्तुतिः स्तोत्रं स्तवो नुतिः ’ ऐसा नहीं किया । यहां बहुधा रूपभेद करके जिन्हींका लिंग कहा, उन मित्रलिंगवालोंका द्वन्द्व आदि किया है । जैसे—“ अप्स-रोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः ” “ मातापितरौ वितरौ ” इन श्लोकांमें द्वन्द्वस-मास और एकशेष किया है ॥ ४ ॥

त्रिलिङ्ग्यां त्रिष्विति पदं मिथुने तु द्वयोरिति ।

निषिद्धलिङ्गं शेषार्थं त्वन्तायादि न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥

अन्वयः—त्रिषु इति पदं त्रिलिङ्ग्यां (ज्ञेयम्), मिथुने तु द्वयोः इति पदं (ज्ञेयम्), निषिद्धलिङ्गं शेषार्थं (ज्ञेयम्), त्वन्तायादि पूर्वभाक् न (भवति) ॥ ५ ॥

भाषार्थः—तीनों लिंगोंके कहनेमें त्रिषु यह पद कहा । जैसे—“ त्रिषु स्फुलिंगोऽग्निकणः ” यहां त्रिषु कहनेसे स्फुलिंगशब्द तीनों लिंगवाची है । तथा स्त्रीलिंग पुँल्लिंगके कहनेमें द्वयोः यह पद कहा है । जैसे “ वद्वेद्वे-योर्ज्वालीकली ” यहां द्वयोः कहनेसे ज्वालीकली शब्द पुँल्लिंग स्त्रीलिंग हैं तथा निषिद्ध लिंग शेषके लिये जानना । जैसे—“ व्योम यानं विमानोऽस्त्री ” यहां स्त्रीलिंगके निषेधमें विमानशब्द पुँल्लिंग नपुंसकलिंग है । तथा तु जिसके अन्तमें हो वह त्वन्त और अथ जिसके आदिमें हो वह अथादिये दोनों पूर्वपदके साथ सम्बन्ध करनेवाले नहीं होते । जैसे—“ पुलोमजा श-चीन्द्राणी नगरी त्वमरावती । ” यहां नगरी यह त्वन्त पद इन्द्राणीसे सम्ब-न्ध नहीं रखता किंतु अमरावतीसे संबंध रखता है । तथा “ नित्यानवर-ताजमप्यथातिशयो भरः । ” यहां अथादिपद अतिशय पूर्वपदको नहीं कहता किन्तु भरका पर्याय है ॥ ५ ॥



स्वर्गवर्गः १ ।

स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशलयाः ।

सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ॥ ६ ॥

अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः ।

सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः ॥ ७ ॥

आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः ।

आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः ॥ ८ ॥

बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः ।

वृन्दारका दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम् ॥ ९ ॥

आदित्यविश्वसवस्तुषिताऽभास्वरानिलाः ।

महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः ॥ १० ॥

विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नराः ।

पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽभी देवयोनयः ॥ ११ ॥

अथ स्वर्गवर्गः । स्वर, स्वर्ग, नाक, त्रिदिव, त्रिदशलया, सुरलोक, द्यो, दिव्, त्रिविष्टप ये नव नाम स्वर्गके हैं । तहां स्वर अव्यय है । द्यो, दिव् (स्त्री०) हैं । त्रिविष्टप (न०) है । शेष पुँल्लिङ्ग हैं ॥ ६ ॥ अमर, निर्जरा, देव, त्रिदश, विबुध, सुर, सुपर्वन (नान्त), सुमनस् (सान्त), त्रिदिवेश, दिवौकस् (सान्त) ॥ ७ ॥ आदितेय, दिविषद्, लेख, अदितिनन्दन, आदित्य, ऋभु, अस्वप्न, अमर्त्य, अमृतान्धस् (सान्त) ॥ ८ ॥ बर्हिर्मुख, क्रतुभुज् (जान्त), गीर्वाण, दानवारि, वृन्दारक, दैवत, देवता ये छत्वासि नाम देवताओंके हैं । दैवत पुँल्लिङ्ग नपुंसक लिङ्ग है । देवता स्त्रीलिङ्ग है । शेष (पु०) हैं ॥ ९ ॥ आदित्य १२, विश्व १०, वसु ८, तुषित ३६, आभास्वर ६४, अनिल ४९, महाराजिक २२०, साध्य १२, रुद्र ११ ये सब (पु०) नाम गणदेवताके हैं । यहां तुषित आदि गण बौद्ध, पातंजलि आदिमें देखने उचित हैं ॥ १० ॥ विद्याधर (पु० जीमूतवाहन आदि), अप्सरस् (सान्त देवताओंकी स्त्रियां), यक्ष (पु० कुबेर आदि), रक्षस् (सान्त लंकादिके वासी), गन्धर्व (तुंबरू आदि), किन्नर (अश्वादि मुखवाले मनुष्याकृति), पिशाच (भूतविशेष), गुह्यक (मणिभद्र आदि), सिद्ध (विश्वावसु आदि), भूत (बालग्रह आदि)

असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः ।
 शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विषः ॥ १२ ॥
 सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः ।
 समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः ॥ १३ ॥
 षडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः ।
 मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः शाक्यमुनिस्तु यः ॥ १४ ॥
 स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः ।
 गौतमश्चार्कबन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः ॥ १५ ॥
 ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः ।
 हिरण्यगर्भो लोकेशः स्वयंभूश्चतुराननः ॥ १६ ॥
 धाताब्जयोनिर्दुहिणो विरिञ्चिः कमलासनः ।
 स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृष्टिधिः ॥ १७ ॥
 “ नाभिजन्माण्डजः पूर्वो निधनः कमलोद्भवः ।
 सदानंदो रजोमूर्तिः सत्यको हंसवाहनः ॥ ”

ये देवयोनिस्तृक हैं । अप्सरस्शब्द स्त्रीलिंग, रक्षस् शब्द (न०) और शेष (पु०) हैं ॥ ११ ॥ असुर, दैत्य, दैतेय, दनुज, इन्द्रारि, दानव, शुक्रशिष्या, दितिसुत, पूर्वदेव, सुरद्विष (पान्त) ये दश पुँल्लिंग नाम दैत्यों-के हैं ॥ १२ ॥ सर्वज्ञ, सुगत, बुद्ध, धर्मराज, तथागत, समन्तभद्र, भगवत् (मत्वन्त), मारजित, लोकजित्, जिन ॥ १३ ॥ षडभिज्ञ, दशबल, अद्वयवादिन् (इन्नन्त), विनायक, मुनीन्द्र, श्रीघन, शास्तृ (ऋकारान्त), मुनि ये अठारह पुँल्लिंग नाम बुद्धके हैं । शाक्यमुनि ॥ १४ ॥ शाक्य-सिंह, सर्वार्थसिद्ध, शौद्धोदनि, गौतम, अर्कबन्धु, मायादेवीसुत ये सात नाम शाक्यमुनिके हैं ॥ १५ ॥ ब्रह्मन् (नान्त), आत्मभू, सुरज्येष्ठ, परमे-ष्ठिन् (इन्नन्त), पितामह, हिरण्यगर्भ, लोकेश, स्वयंभू, चतुरानन ॥ १६ ॥ धातृ (ऋकारान्त), अब्जयोनि, दुहिण, विरिञ्चि, कमलासन, स्रष्टृ (ऋकारान्त), प्रजापति, वेधस् (सान्त), विधातृ (ऋकारान्त), विश्व-सृज् (जान्त), विधि ये बीस और “ नाभिजन्मन् (नान्त), अण्डज, पूर्व, निधन, कमलोद्भव, सदानन्द, रजोमूर्ति, सत्यक, हंसवाहन ” ये नव कुल

विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः ।
 दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः ॥ १८ ॥
 दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः ।
 पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥ १९ ॥
 उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः ।
 पद्मनाभो मधुरिपूर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥ २० ॥
 देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः ।
 वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ॥ २१ ॥
 विश्वम्भरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः ।
 पुराणपुरुषो यज्ञपुरुषो नरकान्तकः ॥ २२ ॥
 जलशायी विश्वरूपो मुकुन्दो मुरमर्दनः ।
 वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः ॥ २३ ॥
 बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रजः ।
 रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः ॥ २४ ॥
 नीलाम्बरो रौहिणेयस्तालाङ्को मुसली हली ।
 संकर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः ॥ २५ ॥

उनतीस (पु०) नाम ब्रह्माके हैं ॥ १७ ॥ विष्णु, नारायण, कृष्ण, वैकुण्ठ,
 विष्टरश्रवस् (सान्त), दामोदर, हृषीकेश, केशव, माधव, स्वभू ॥ १८ ॥
 दैत्यारि, पुण्डरीकाक्ष, गोविन्द, गरुडध्वज, पीताम्बर, अच्युत, शार्ङ्गिन्
 (इन्नन्त), विष्वक्सेन, जनार्दन ॥ १९ ॥ उपेन्द्र, इन्द्रावरज, चक्रपाणि,
 चतुर्भुज, पद्मनाभ, मधुरिपु, वासुदेव, त्रिविक्रम ॥ २० ॥ देवकीनन्दन, शौरि,
 श्रीपति, पुरुषोत्तम, वनमालिन् (इन्नन्त), बलिध्वंसिन् (इन्नन्त), कंसा-
 राति, अधोक्षज ॥ २१ ॥ विश्वम्भर, कैटभजित् (तान्त), विधु, श्रीवत्स-
 लाञ्छन, पुराणपुरुष, यज्ञपुरुष, नरकान्तक ॥ २२ ॥ जलशायिन् (इन्नन्त),
 विश्वरूप, मुकुन्द, मुरमर्दन ये चवालीस (पु०) नाम विष्णुके हैं । वसु-
 देव यह एक (पु०) नाम कृष्णके पिता वसुदेवका है । वही आनकदु-
 न्दुभि है । अर्थात् ये दोनों नाम कृष्णके पिताके हैं ॥ २३ ॥ बलभद्र, प्र-
 लम्बघ्न, बलदेव, अच्युताग्रज, रेवतीरमण, राम, कामपाल, हलायुध ॥ २४ ॥
 नीलाम्बर, रौहिणेय, तालाङ्क, मुसालिन् (इन्नन्त), हलिन् (इन्नन्त), संक-

मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः ।
 कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गः कामः पञ्चशरः स्मरः ॥ २६ ॥
 शम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेषुरनन्यजः ।
 पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः ॥ २७ ॥
 ब्रह्मसूक्तृष्यकेतुः स्यादनिरुद्ध उषापतिः ।
 लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीहरिप्रिया ॥ २८ ॥
 इन्दिरा लोकमाता मा क्षीरोदतनया रमा ।
 “ भार्गवी लोकजननी क्षीरसागरकन्यका । ”
 शंखो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्यश्चक्रं सुदर्शनम् ॥ २९ ॥
 कौमोदकी गदा खड्गो नन्दकः कौस्तुभो मणिः ।
 चापः शार्ङ्गं मुरारिस्तु श्रीवत्सो लाञ्छनं स्मृतम् ॥ ३० ॥
 “ अश्वश्च शैव्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकाः ।
 सारथिर्दारुको मन्त्री ह्युद्धवो वनजो गजः ॥ ”

वैष्णव, सीरपाणि, कालिन्दीभेदन, बल ये सत्रह (पु०) नाम बलदेवजीके हैं ॥ २६ ॥ मदन, मन्मथ, मार, प्रद्युम्न, मीनकेतन, कन्दर्प, दर्पक, अनङ्ग, काम, पञ्चशर, स्मर ॥ २६ ॥ शम्बरारि, मनसिज, कुसुमेषु, अनन्यज, पुष्पधन्वन् (नान्त), रतिपति, मकरध्वज, आत्मभू ये उन्नीस (पु०) नाम कामदेवके हैं ॥ २७ ॥ ब्रह्मसू, ऋष्यकेतु, अनिरुद्ध, उषापति ये चार (पु०) नाम अनिरुद्धके हैं । लक्ष्मी, पद्मालया, पद्मा, कमला, श्री, हरि-प्रिया ॥ २८ ॥ इन्दिरा, लोकमातृ (ऋकारान्त), मा, क्षीरोदतनया, रमा ये ग्यारह और “ भार्गवी, लोकजननी, क्षीरसागरकन्यका ” ये तीन कुल-पौदह (स्त्री०) नाम लक्ष्मीके हैं । पाञ्चजन्य यह एक (पु०) नाम विष्णुके शंखका है । सुदर्शन यह एक (पु० न०) नाम विष्णुके चक्रका है ॥ २९ ॥ कौमोदकी यह एक (स्त्री०) नाम विष्णुकी गदाका है । नन्दक यह एक (पु०) नाम विष्णुके खड्गका है । कौस्तुभ यह एक (पु०) नाम विष्णुकी मणिका है । शार्ङ्ग यह (न०) नाम विष्णुके धनुषका है । श्रीवत्स यह एक (पु०) नाम विष्णुकी छातीके लाञ्छनका है ॥ ३० ॥ “ शैव्य, सुग्रीव, मेघपुष्प, बलाहक ये चार (पु०) नाम विष्णुके घोड़ोंके हैं । दारुक यह एक (पु०) नाम विष्णुके सारथीका है । उद्धव यह एक

गरुत्मान्गरुडस्ताक्षर्यो वैनतेयः खगेश्वरः ।
 नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः ॥ ३१ ॥
 शंभुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः ।
 ईश्वरः शर्व ईशानः शंकरश्चन्द्रशेखरः ॥ ३२ ॥
 भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः ।
 मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ ३३ ॥
 उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् ।
 वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः ॥ ३४ ॥
 कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः ।
 हरः स्मरहरो भर्गरुयम्बकस्त्रिपुरान्तकः ॥ ३५ ॥
 गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः ।
 व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः ॥ ३६ ॥
 “ अहिर्बुध्न्योऽष्टमूर्तिश्च गजारिश्च महानटः । ”
 कपर्दोऽस्य जटाजूटः पिनाकोऽजगवं धनुः ।
 प्रमथाः स्युः पारिषदा ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः ॥ ३७ ॥

(पु०) नाम विष्णुके मंत्रीका है । वनज यह एक (पु०) नाम विष्णुके
 हाथीका है । ” गरुत्मन् (मत्वन्त), गरुड, ताक्षर्य, वैनतेय, खगेश्वर, ना-
 गांतक, विष्णुरथ, सुपर्ण, पन्नगाशन ये नव (पु०) नाम गरुडके हैं ॥ ३१ ॥
 शंभु, ईश, पशुपति, शिव, शूलिन् (इन्नन्त), महेश्वर, ईश्वर, शर्व, ईशान,
 शंकर, चन्द्रशेखर ॥ ३२ ॥ भूतेश, खण्डपरशु, गिरीश, गिरिश, मृड, मृत्यु-
 ञ्जय, कृत्तिवासस् (सान्त), पिनाकिन् (इन्नन्त), प्रमथाधिप ॥ ३३ ॥ उग्र,
 कपर्दिन् (इन्नन्त), श्रीकण्ठ, शितिकण्ठ, कपालभृत् (तान्त), वामदेव,
 महादेव, विरूपाक्ष, त्रिलोचन ॥ ३४ ॥ कृशानुरेतस् (सान्त), सर्वज्ञ,
 धूर्जटि, नीललोहित, हर, स्मरहर, भर्ग, व्यंबक, त्रिपुरान्तक ॥ ३५ ॥
 गङ्गाधर, अंधकरिपु, क्रतुध्वंसिन् (इन्नन्त), वृषध्वज, व्योमकेश, भव, भीम,
 स्थाणु, रुद्र, उमापति ये अडतालीस और “ अहिर्बुध्न्य, अष्टमूर्ति, गजारि,
 महानट ” ये चार कुल बावन (पु०) नाम शिवके हैं ॥ ३६ ॥ कपर्द यह एक
 (पु०) नाम शिवजीके जटाजूटका है । पिनाक (पु०), अजगव (न०) ये

“ ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ।
 वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मातरः ॥ ”
 विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकमष्टधा ।
 “ अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा ।
 प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः ॥ ”
 उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरी ॥ ३८ ॥
 शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमंगला ।
 अपर्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिकाम्बिका ॥ ३९ ॥
 आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा ।
 विनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणाधिपाः ॥ ४० ॥
 अप्येकदन्तहेरम्बलम्बोदरगजाननाः ।
 कार्तिकेयो महासेनः शरजन्मा षडाननः ॥ ४१ ॥
 पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीरग्निभूर्गुहः ।
 बाहुलेयस्तारकजिद्विशाखः शिखिवाहनः ॥ ४२ ॥

दो नाम शिवजीके धनुषके हैं । शिवके पारिषद् (सभामें रहनेवाले) प्रमथ कहाते हैं । प्रमथ शब्द (पु०) है । “ ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा ” ये सात (स्त्री०) नाम मातृकावाची हैं ॥ ३७ ॥ विभूति (स्त्री), भूति (स्त्री), ऐश्वर्य (न०) ये तीन नाम ऐश्वर्य वा सिद्धिके हैं । “ अणिमन्, महिमन्, गरिमन्, लघिमन् ये चार (नान्त पु०) हैं । प्राप्ति (स्त्री०), प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व ये तीन (न०) हैं इन भेदोंसे आठ प्रकारकी सिद्धियाँ हैं । ” उमा, कात्यायनी, गौरी, काली, हैमवती, ईश्वरी ॥ ३८ ॥ शिवा, भवानी, रुद्राणी, शर्वाणी, सर्वमंगला, अपर्णा, पार्वती, दुर्गा, मृडानी, चण्डिका, अम्बिका ॥ ३९ ॥ आर्या, दाक्षायणी, गिरिजा, मेनकात्मजा ये इक्कीस (स्त्री०) नाम पार्वतीके हैं । विनायक, विघ्नराज, द्वैमातुर, गणाधिप ॥ ४० ॥ एकदन्त, हेरम्ब, लम्बोदर, गजानन ये आठ (पु०) नाम गणेशजीके हैं । कार्तिकेय, महासेन, शरजन्मन् (नान्त), षडानन ॥ ४१ ॥ पार्वतीनन्दन, स्कन्द, सेनानी, अग्निभू, गुह, बाहुलेय, तारकजित् (तान्त), विशाख, शिखिवाहन ॥ ४२ ॥

षाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः कौश्वदारणः ।
 शृंगी भृंगी रिदिस्तुंडी नन्दिको नन्दिकेश्वरः ॥ ४३ ॥
 “ कर्ममोटी तु चामुण्डा चर्ममुण्डा तु चर्चिका । ”
 इन्द्रो मरुत्वान्मघवा बिडौजाः पाकशासनः ।
 वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहूतः पुरंदरः ॥ ४४ ॥
 जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः ।
 सुत्रामा गोत्रभिद्वज्री वासवो वृत्रहा वृषा ॥ ४५ ॥
 वास्तोष्पतिः सुरपतिर्बलारातिः शचीपतिः ।
 जम्भभेदी हरिहयः स्वाराणमुचिसूदनः ॥ ४६ ॥
 संक्रन्दनो दुश्च्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः ।
 आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षास्तस्य तु प्रिया ॥ ४७ ॥
 पुलोमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती ।
 हय उच्चैश्रवाः सूतो मातलिर्नन्दनं वनम् ॥ ४८ ॥

षाण्मातुर, शक्तिधर, कुमार, कौश्वदारण ये सत्रह (पु०) नाम स्वामिका-
 त्तिके हैं । शृङ्गिन्, भृङ्गिन् (इन्नन्त), रिदि, तुंडिन् (इन्नन्त), नन्दिक,
 नन्दिकेश्वर ये छः (पु०) नाम नन्दिगणके हैं ॥ ४३ ॥ “ कर्ममोटी यह एक
 (स्त्री०) नाम चामुंडाका और चर्ममुंडा यह एक (स्त्री०) नाम चर्चि-
 काका है । ” इन्द्र, मरुत्वत् (मत्वन्त), मघवा (मत्वन्त), बिडौजस्
 (सान्त), पाकशासन, वृद्धश्रवस् (सान्त), सुनासीर, पुरुहूत, पुरन्दर ॥ ४४ ॥
 जिष्णु, लेखर्षभ, शक्र, शतमन्यु, दिवस्पति, सुत्रामन् (नान्त), गोत्रभृत्
 (तान्त), वज्रिन् (इन्नन्त), वासव, वृत्रहन् (नान्त), वृषन् (नान्त)
 ॥ ४५ ॥ वास्तोष्पति, सुरपति, बलाराति, शचीपति, जम्भभेदिन् (इन्नन्त),
 हरिहय, स्वाराज् (जान्त), नमुचिसूदन ॥ ४६ ॥ संक्रन्दन, दुश्च्यवन,
 तुराषाह् (हान्त), मेघवाहन, आखण्डल, सहस्राक्ष, ऋभुक्षिन् (नान्त),
 ये पैतसि (पु०) नाम इन्द्रके हैं । इन्द्रकी प्रियाके ॥ ४७ ॥ पुलोमजा, शची,
 इन्द्राणी ये तीन (स्त्री०) नाम हैं । अमरावती यह एक (स्त्री०) नाम
 इन्द्रकी नगरीका है । उच्चैःश्रवस् (सान्त) यह एक (पु०) नाम इन्द्रके
 घोड़ेका है । मातलि यह एक (पु०) नाम इन्द्रके सारथिका है । नन्दन
 यह एक (न०) नाम इन्द्रके बागका है ॥ ४८ ॥

स्यात्प्रासादो वैजयन्तो जयन्तः पाकशासनिः ।
 ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभाः ॥ ४९ ॥
 ह्यादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः ।
 शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोलिशनिर्द्वयोः ॥ ५० ॥
 व्योमयानं विमानोऽस्त्री नारदाद्याः सुरर्षयः ।
 स्यात्सुधर्मा देवसभा पीयूषममृतं सुधा ॥ ५१ ॥
 मन्दाकिनी वियद्गङ्गा खर्णदौ सुरदीर्घिका ।
 मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः ॥ ५२ ॥
 पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।
 संतानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ५३ ॥
 सनत्कुमारो वैधात्रः स्वर्वैद्यावश्विनीसुतौ ।
 नासत्यावश्विनौ दक्षावाश्विनेयौ च तावुभौ ॥ ५४ ॥

वैजयन्त यह एक (पु०) नाम इन्द्रके महलका है । जयन्त और पाकशासनि
 ये दो (पु०) नाम इन्द्रके पुत्रके हैं । ऐरावत, अभ्रमातंग, ऐरावण, अभ्र-
 मुवल्लभ ये चार (पु०) नाम इन्द्रके हाथीके हैं ॥ ४९ ॥ ह्यादिनी (स्त्री०),
 वज्र, कुलिश, भिदुर, पवि, शतकोटि, स्वरु, शम्ब, दम्भोलि, अशनि ये दश
 नाम वज्रके हैं । वज्रशब्द (पु०) और (न०) है । अशनिशब्द (पु०)
 और (स्त्री०) है । कुलिश, भिदुर (न०), शेष (पु०) हैं ॥ ५० ॥ व्यो-
 मयान (न०), विमान ये दो नाम विमानके हैं । विमानशब्द (पु०) और
 (न०) है । नारद, देवल आदि देवताओंमें ऋषि हैं । सुधर्मा, देवसभा ये दो
 (स्त्री०) नाम देवताओंकी सभाके हैं । पीयूष (न०), अमृत (न०), सुधा
 (स्त्री०) ये तीन नाम अमृतके हैं ॥ ५१ ॥ मन्दाकिनी, वियद्गङ्गा, स्वर्णदी, सुर-
 दीर्घिका ये चार (स्त्री०) नाम आकाशगंगाके हैं । मेरु, सुमेरु, हेमाद्री,
 रत्नसानु, सुरालय ये पांच (पु०) नाम सुमेरुपर्वतके हैं ॥ ५२ ॥ मन्दार,
 पारिजातक, सन्तान, कल्पवृक्ष, हरिचन्दन ये पांच (पु०) नाम देवता-
 ओंके वृक्षके हैं । हरिचन्दनशब्द (पु० न०) है ॥ ५३ ॥ सनत्कुमार,
 वैधात्र ये दो (पु०) नाम सनकादिकोंके हैं । स्वर्वैद्य, अश्विनीसुत, नास-
 त्या, अश्विन, दक्ष, आश्विनेय ये छः (पु०) नाम अश्विनीकुमारोंके हैं ।
 ये यमल अर्थात् दोनों एकसाथ उत्पन्न हुए हैं; इसलिये इनके वाचक शब्द

स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः ।
 हाहा हूहूश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् ॥ ५५ ॥
 अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनंजयः ।
 कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् ॥ ५६ ॥
 बर्हिःशुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उषर्बुधः ।
 आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः ॥ ५७ ॥
 रोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः ।
 हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः ॥ ५८ ॥
 सप्तार्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ।
 शुचिरपिप्तमौर्वस्तु वाडवो वडवानलः ॥ ५९ ॥
 वह्नेर्द्वयोर्ज्वालकीलावर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम् ।
 त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः संतापः संज्वरः समौ ॥ ६० ॥
 “ उल्का स्यान्निर्गतज्वाला भूतिर्भासितभस्मनी ।
 क्षारो रक्षा च दावस्तु दवो वनहुताशनः ॥ ”

सर्वदा द्विवचनांत होते हैं ॥ ५४ ॥ अप्सरस्, स्वर्वेश्या ये दो (स्त्री०)
 नाम उर्वशी मेनका आदिके हैं । तहां अप्सरस्शब्द (स्त्री०) बहुवच-
 नांत है । हाहा, हूहू, आदि (पु०) नाम देवताओंके गन्धर्व अर्थात् गा-
 नेवालोंके हैं ॥ ५५ ॥ अग्नि, वैश्वानर, वह्नि, वीतिहोत्र, धनञ्जय, कृपी-
 टयोनि, ज्वलन, जातवेदस् (सान्त), तनूनपात् (तान्त) ॥ ५६ ॥ बर्हिस्
 (सान्त), शुष्मन् (नान्त), कृष्णवर्त्मन् (नान्त), शोचिष्केश, उष-
 र्बुध, आश्रयाश, बृहद्भानु, कृशानु, पावक, अनल ॥ ५७ ॥ रोहिताश्व,
 वायुसख, शिखावत् (मत्वन्त), आशुशुक्षणि, हिरण्यरेतस् (सान्त),
 हुतभुज् (जान्त), दहन, हव्यवाहन ॥ ५८ ॥ सप्तार्चिस् (सान्त), दमु-
 नस् (सान्त), शुक्र, चित्रभानु, विभावसु, शुचि (पु०), अपिप्त (न०)
 ये चौतीस नाम अग्निके हैं । और्व, वाडव, वडवानल ये तीन (पु०) नाम
 वडवाअग्निके हैं ॥ ५९ ॥ ज्वाल, कील, अर्चिस्, हेति, शिखा ये पांच
 नाम अग्निकी शिखाके हैं । ज्वाल और कीलशब्द (पु० स्त्री०) हैं ।
 अर्चिस्शब्द (सान्त स्त्री० न०) है । हेति और शिखाशब्द स्त्रीलिंग है ।
 स्फुलिङ्ग, अग्निकण ये दो (पु०) नाम अग्निके कणके हैं । स्फुलिङ्गशब्द

धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराट् ।

कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराड्यमः ॥ ६१ ॥

कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः ।

राक्षसः कौणपः क्रव्यात्क्रव्यादोऽस्रप आशरः ॥ ६२ ॥

रात्रिचरो रात्रिचरः कर्बुरो निकषात्मजः ।

यातुधानः पुण्यजनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी ॥ ६३ ॥

प्रचेता वरुणः पाशी यादसापतिरप्पतिः ।

श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः ॥ ६४ ॥

पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः ।

समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणाः ॥ ६५ ॥

नभस्वद्वातपवनपवमानप्रभञ्जनाः ।

प्रकम्पनो महावातो शंशावातः सवृष्टिकः ॥ ६६ ॥

तीनों लिंगका वाची है । संताप, संज्वर ये दो (पु०) नाम अग्निके संता-
पके हैं ॥ ६० ॥ “ उल्का यह एक (स्त्री०) नाम अंगारेका है । भूति
(स्त्री०), भसित (न०), भस्मन् (नान्त न०), क्षार (पु०), रक्षा
(स्त्री०) ये पांच नाम रक्षाके हैं । दाव, दव ये दो (पु०) नाम वनाग्निके
हैं । ” धर्मराज, पितृपति, समवर्तिन् (इन्नन्त), परेतराज् (जान्त), कृतान्त,
यमुनाभ्रातृ (ऋकारान्त), शमन, यमराज् (जान्त), यम ॥ ६१ ॥
काल, दण्डधर, श्राद्धदेव, वैवस्वत, अन्तक ये चौदह (पु०) नाम यमके
हैं । राक्षस, कौणप, क्रव्याद् (दान्त), क्रव्याद, अस्रप, आशर ॥ ६२ ॥
रात्रिचर, रात्रिचर, कर्बुर, निकषात्मज, यातुधान, पुण्यजन, नैर्ऋत, यातु,
रक्षस् (सान्त) ये पन्द्रह नाम राक्षसके हैं । इनमें यातु और रक्षस् ये
दो नाम (न०) शेष पुँल्लिङ्ग हैं ॥ ६३ ॥ प्रचेतस् (सान्त), वरुण, पा-
शीन् (इन्नन्त), यादसापति, अप्पति ये पांच (पु०) नाम वरुणके हैं ।
श्वसन, स्पर्शन, वायु, मातरिश्वन् (नान्त), सदागति ॥ ६४ ॥ पृषदश्व,
गन्धवह, गन्धवाह, अनिल, आशुग, समीर, मारुत, मरुत् (तान्त),
जगत्प्राण, समीरण ॥ ६५ ॥ नभस्वत् (मत्वन्त), वात, पवन, पवमान,
प्रभञ्जन ये बीस (पु०) नाम वायुके हैं । प्रकम्पन, महावात ये दो (पु०)
नाम महावायु अर्थात् आंधीके हैं । और जो वृष्टि करके सहित हो तो

प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः ।
 शरीरस्था इमे रंहस्तरसी तु रयः स्यदः ॥ ६७ ॥
 जवोऽथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ।
 सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च ॥ ६८ ॥
 सततानारताश्रान्तसंतताविरतानिशम् ।
 नित्यानवरताजस्रमप्यथानिशयो भरः ॥ ६९ ॥
 अतिवेलभृशान्तर्यातिमात्रोद्गाढनिर्भरम् ।
 तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढबाढदृढानि च ॥ ७० ॥
 क्लीबे शीघ्राद्यसत्त्वे स्यान्निष्पेषां सत्त्वगामि यत् ।
 कुबेरस्यम्बकसखो यक्षराज् गुह्यकेश्वरः ॥ ७१ ॥
 मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ।
 किन्नरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः ॥ ७२ ॥

उसीको झंझावात कहते हैं यह पुँल्लिंग है ॥ ६६ ॥ प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान ये पाँच (पु०) नाम शरीरमें स्थित वायुके हैं । हृदयमें प्राण है, गुदामें अपान है, नाभिमें समान है, कंठमें उदान और सम्पूर्ण शरीरमें व्यान है । रंहस् (सान्त न०), तरस् (सान्त न०), रय (पु०), स्यद (पु०) ॥ ६७ ॥ जव (पु०) ये पाँच नाम वेगके हैं । शीघ्र, त्वरित, लघु, क्षिप्र, अर, द्रुत, सत्वर, चपल, तूर्ण, अविलम्बित, आशु ये ग्यारह (न०) नाम शीघ्रताके हैं ॥ ६८ ॥ सतत, अनारत, अश्रान्त, संतत, अविरत, अनिश, नित्य, अनवरत, अजस्र ये नव (न०) नाम नित्यके हैं । अतिशय (पु०), भर (पु०) ॥ ६९ ॥ अतिवेल, भृश, अत्यर्थ, अतिमात्र, उद्गाढ, निर्भर, तीव्र, एकांत, नितान्त, गाढ, बाढ, दृढ ये बारह (न०) कुल चौदह नाम अतिशयके हैं ॥ ७० ॥ शीघ्रसे आदि ले दृढपर्यंत शब्द असत्त्व विषे अर्थात् द्रव्यवृत्तिपनेके अभावमें नपुंसकलिंग हैं । जैसे— 'शीघ्रं कृतवान्, भृशं मूर्खः, भृशं याति' इन वचनोंमें नपुंसकलिंग है और इन शीघ्रआदिकोंके मध्यमें जो सत्त्वगामी द्रव्यवृत्ति हैं वह तीनों लिंगवाची हैं । जैसे— 'शीघ्रा धेनुः, शीघ्रो वृषः, शीघ्रं गमनम्' इन वचनोंमें (स्त्री० पु० न०) है । कुबेर, त्र्यम्बकसख, यक्षराज (जान्त), गुह्यकेश्वर ॥ ७१ ॥ मनुष्यधर्मन् (नान्त), धनद, राजराज, धनाधिप, किन्नरेश,

यक्षैकपिङ्गलविलश्रीदपुण्यजनेश्वराः ।

अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ॥ ७३ ॥

कैलासः स्थानमलका पूर्वमानं तु पुष्पकम् ।

स्यात्किन्नरः किंपुरुषस्तुरंगवदनो मयुः ॥ ७४ ॥

निधिर्ना शेवधिर्मेदाः पद्मशङ्खादयो निधेः ॥ इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

अथ व्योमवर्गः २ ।

द्यौर्दिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्करमम्बरम् ।

नभोन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥

वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी ।

विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युरपि स्यात्तदव्ययम् ॥ २ ॥

“तारापथोऽन्तरिक्षं च मेघाध्वा च महाबिलम्” इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥

वैश्रवण, पौलस्त्य, नरवाहन ॥ ७२ ॥ यक्ष, एकपिंग, ऐलविल, श्रीद, पुण्यजनेश्वर ये सत्रह (पु०) नाम कुबेरके हैं । चैत्ररथ यह एक (न०) नाम कुबेरके बगीचेका है । नलकूबर यह एक (पु०) नाम कुबेरके पुत्रका है ॥ ७३ ॥ कैलास यह एक (पु०) नाम कुबेरके स्थानका है । अलका यह एक (स्त्री०) नाम कुबेरकी पुरीका है । पुष्पक यह एक (पु० न०) नाम कुबेरके विमानका है । किन्नर, किंपुरुष, तुरंगवदन, मयु ये चार (पु०) नाम किन्नरोंके हैं ॥ ७४ ॥ निधि, शेवधि ये दो (पु०) नाम खजानेके हैं । (यहां “ ना ” अर्थात् पुँल्लिंगका काककी आंखकी पुतलीके समान दोनोंमें सम्बन्ध है) पद्म (पु०), शंख (पु०) आदि नाम निधि अर्थात् खजानेके भेदवाची हैं । “ महापद्मश्च पद्मश्च शंखो मकरकच्छपौ । मुकुन्दकुन्दौ नीलश्च खर्वश्च निधयो नव ॥ ” महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व ये नव (पु०) नाम निधि अर्थात् खजानेके भेद हैं ॥ इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

अथ व्योमवर्गः । द्यौ, दिव्, अभ्र, व्योमन् (नान्त), पुष्कर, अम्बर, नभस् (सान्त), अन्तरिक्ष, गगन, अनन्त, सुरवर्त्मन् (नान्त), ख ॥ १ ॥ वियत् (तान्त), विष्णुपद, आकाश, विहायस् (सान्त), विहायस, नाक, द्यु ये उर्नास “ तारापथ (पु०), अन्तरिक्ष (न०), मेघाध्वन् (नान्त पु०), महाबिल (न०) ये चार कुल तेईस नाम आकाशके हैं । द्यौ और

अथ दिग्बर्गः ३ ।

दिशस्तु कुकुम्ः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः ।
 प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः ॥ १ ॥
 उत्तरा दिग्दीची स्यात् दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे ।
 “ अवाग्भवमवाचीनमुदीचीनमुदग्भवम् ।
 प्रत्यग्भवं प्रतीचीनं प्राचीनं प्राग्भवं त्रिषु ॥ ”
 इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् ॥ २ ॥
 कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात् ।
 “ रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः ।
 बुधो बृहस्पतिश्चेति दिशां चैव तथा ग्रहाः ॥ ”
 ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ॥ ३ ॥
 पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ।
 करिण्योऽश्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाः क्रमात् ॥ ४ ॥

दिव् शब्द स्त्रीलिंग हैं । आकाश और विहायस् शब्द (पु० न०) हैं ।
 और बुस् यह अव्यय है शेष (न०) हैं ॥ २ ॥ इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥
 अथ दिग्बर्गः । दिश् (शान्त), ककुम् (भान्त), काष्ठा, आशा,
 हरित (तांत) ये पांच (स्त्री०) नाम दिशाके हैं । वे पूर्व, दक्षिण, प-
 श्चिम इनके प्राची, अवाची, प्रतीची ये क्रमसे (स्त्री०) नाम हैं ॥ १ ॥
 उदीची यह एक (स्त्री०) नाम उत्तर दिशाका है । दिशामें होनेवालेको
 दिश्य कहते हैं और यह तीनों लिंगवाची है । जैसे—‘ दिश्यो हस्ती, दिश्या
 हस्तिनी ’ इन वचनोंमें हस्तीके साथ दिश्यशब्द पुँल्लिंग है और हस्तिनीके
 साथ दिश्यशब्द स्त्रीलिंग है । “ अवाचीन, उदीचीन, प्रतीचीन, प्राचीन
 ये तीनों लिंगवाची चार नाम दक्षिण, उत्तर, पश्चिम, पूर्व इन चार दिशा-
 ओंमें होनेवाले पदार्थके यथा क्रम हैं । ” इन्द्र, वह्नि, पितृपति, नैर्ऋत, वरुण,
 मरुत् (तान्त) ॥ २ ॥ कुबेर, ईश ये आठों (पु०) नाम पूर्व आदि
 दिशाओंके क्रमसे स्वामियोंके हैं । “ रवि, शुक्र, महीसूनु, स्वर्भानु, भानुज,
 विधु, बुध, बृहस्पति ये आठ ग्रहोंके (पु०) नाम क्रमसे पूर्व आदि दिशा-
 ओंके स्वामियोंके हैं । ” ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन ॥ ३ ॥
 पुष्पदन्त, सार्वभौम, सुप्रतीक ये आठ (पु०) नाम पूर्व आदि दिशाओंके

ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चांगना चाञ्जनावती ।
 क्लीबाव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक् स्त्रियाम् ॥ ५ ॥
 अभ्यन्तरं त्वन्तरालं चक्रवालं तु मण्डलम् ।
 अभ्रं मेघौ वारिवाहः स्तनयित्नुर्बलाहकः ॥ ६ ॥
 धाराधरो जलधरस्ताडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत् ।
 घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः ॥ ७ ॥
 कादम्बिनी मेघमाला त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम् ।
 स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषे रसितादि च ॥ ८ ॥
 शंपाशतहृदाह्लादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा ।
 तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि ॥ ९ ॥
 स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषो मेघज्योतिरिरिमदः ।
 इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजुरोहितम् ॥ १० ॥

क्रमसे दिग्गज अर्थात् दिशाओंको धारण करनेवालोंके हैं । अभ्रमु, क-
 पिला, पिंगला, अनुपमा ॥ ४ ॥ ताम्रकर्णी, शुभ्रदन्ती, अंगना, अञ्जना-
 वती ये आठ (स्त्री०) नाम दिग्गजोंकी हथिनियोंके हैं । अपदिश,
 विदिक् (शान्त) ये दो नाम दिशाओंके मध्यवाली दिशाके हैं तहां
 अपदिशशब्द (न०) और अव्यय है और विदिक् शब्द (स्त्री०)
 हैं ॥ ५ ॥ अभ्यन्तर, अन्तराल ये दो (न०) नाम भीतर अवकाशके हैं।
 चक्रवाल, मंडल ये दो (न०) नाम मण्डल अर्थात् घेरेके हैं । अभ्र (न०),
 मेघ, वारिवाह, स्तनयित्नु, बलाहक ॥ ६ ॥ धाराधर, जलधर, ताडित्वत्
 (मत्वन्त), वारिद, अंबुभृत् (तान्त), घन, जीमूत, मुदिर, जलमुच्
 (चान्त), धूमयोनि ये पंद्रह (पु०) नाम मेघके हैं ॥ ७ ॥ कादम्बिनी,
 मेघमाला ये दो (स्त्री०) नाम मेघकी पंक्तिके हैं । मेघमें जो हो उसे
 अभ्रिय कहते हैं और वह तीनों लिंगी है । जैसे—‘ अभ्रिया आपः, अ-
 भ्रिय आसारः, अभ्रियं जलम् ’ इन वाक्योंमें स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, नपुंसक
 लिंग क्रमसे हैं । स्तनित, गर्जित, रसित आदि ये तीन (न०) नाम मेघके
 गर्जनेके हैं ॥ ८ ॥ शंपा, शतहृदा, ह्लादिनी, ऐरावती, क्षणप्रभा, तडित्
 (तान्त), सौदामनी, विद्युत् (तान्त), चञ्चला, चपला ये दश (स्त्री०)
 नाम बिजलीके हैं ॥ ९ ॥ स्फूर्जथु, वज्रनिर्घोष ये दो (पु०) नाम वज्रके
 २ अमर.

वृष्टिर्वर्षं तद्विधातेऽवग्राहावग्रहौ समौ ।

धारासंपात आसारः शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ॥ ११ ॥

वर्षोपलस्तु करका मेघच्छन्नेऽहि दुर्दिनम् ।

अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् ॥ १२ ॥

अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।

हिमांशुश्चंद्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदबान्धवः ॥ १३ ॥

विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः ।

अब्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगांकः कलानिधिः ॥ १४ ॥

द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ।

कला तु षोडशो भागो बिम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ॥ १५ ॥

भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेऽशके ।

चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥ १६ ॥

शब्दके हैं । मेघज्योतिस् (सान्त), इमं द ये दो (पु०) नाम मेघकी ज्योतिके हैं । इन्द्रायुध, शक्रधनुस् (सान्त), ऋजुरोहित ये तीन (न०) नाम इन्द्रके धनुषके हैं ॥ १० ॥ वृष्टि (स्त्री०), वर्ष (न०) ये दो नाम वर्षा के हैं । अवग्राह, अवग्रह ये दो (पु०) नाम वर्षाके निरोधके हैं । धारा-संपात, आसार ये दो (पु०) नाम निरन्तर वर्षनेके हैं । शीकर यह एक (पु०) नाम जलके छोटे २ कणकोंका है ॥ ११ ॥ वर्षोपल (पु०), करका (स्त्री०) ये दो नाम ओलोंके हैं । दुर्दिन यह एक (न०) नाम मेघसे आच्छादित हुए दिनका है । अन्तर्धा (स्त्री०), व्यवधा (स्त्री०), अन्तर्धि (पु०), अपवारण (न०) ॥ १२ ॥ अपिधान (न०), तिरोधान (न०), पिधान (न०), आच्छादन (न०) ये आठ नाम आच्छादनके हैं । तहाँ अंतर्धिशब्द पुंल्लिङ्ग है । हिमांशु, चन्द्रमस् (सान्त), चन्द्र, इन्दु कुमुदबान्धव ॥ १३ ॥ विधु, सुधांशु, शुभ्रांशु, ओषधीश, निशापति, अब्ज जैवातृक, सोम, ग्लौ, मृगांक, कलानिधि ॥ १४ ॥ द्विजराज, शशधर, नक्षत्रेश, क्षपाकर ये बीस (पु०) नाम चन्द्रमाके हैं । कला यह एक (स्त्री०) नाम चन्द्रमाके मंडलके सोलहवें भागका है । बिम्ब, मंडल ये दो नाम बिम्बके हैं । तहाँ बिम्बशब्द (पु० न०) है और मण्डलशब्द त्रिलिङ्ग है ॥ १५ ॥ भित्त (न०), शकल, खण्ड, अर्द्ध ये चार नाम टुकड़ेके हैं ।

कलङ्काङ्गौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ।
 सुषमा परमा शोभा शोभा कान्तिर्द्युतिश्छविः ॥ १७ ॥
 अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् ।
 प्रालेयं मिहिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः ॥ १८ ॥
 शीतं गुणे तद्दर्थाः सुषीमः शिशिरो जडः ।
 तुषारः शीतलः शीतो हिमः सप्तान्यलिङ्गकाः ॥ १९ ॥
 ध्रुव औत्तानपादिः स्यादगस्त्यः कुम्भसम्भवः ।
 मैत्रावरुणिरस्यैव लोपामुद्रा सधर्मिणी ॥ २० ॥
 नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु वा स्त्रियाम् ।
 दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा अश्वयुगश्विनी ॥ २१ ॥

तहां शकल और खण्डशब्द (पु० न०) हैं । अर्द्धशब्द पुँल्लिंग है । जैसे-
 ' कवलस्यार्द्धः खण्ड ' इत्यर्थः । और वाच्यलिंगभी हैं । जैसे- ' अर्धा
 शाटी, अर्धः पटः, अर्ध वस्त्रम् ' और समानभागमें अर्द्धशब्द नपुंसकलिंग
 है । चंद्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना ये तीन (स्त्री०) नाम चंद्रमाकी चांद-
 नीके हैं । प्रसाद (पु०), प्रसन्नता (स्त्री०) ये दो नाम निर्मलताके हैं
 ॥ १६ ॥ कलंक, अंक, लाँछन, चिह्न, लक्ष्मन् (नां०), लक्षण ये छः नाम
 चिह्नके हैं । कलंक, अंक ये दो (पु०) हैं शेष (न०) लिंग हैं । सु-
 षमा यह एक (स्त्री०) नाम उत्तम शोभाका है । शोभा, कान्ति, द्युति,
 छवि ये चार (स्त्री०) नाम कान्तिके हैं ॥ १७ ॥ अवश्याय (पु०),
 नीहार (पु०), तुषार (पु०), तुहिन (न०), हिम (न०), प्रालेय
 (न०), मिहिका (स्त्री०) ये सात नाम हिम अर्थात् जाड़ेके हैं । हि-
 मानी, हिमसंहति ये दो (स्त्री०) नाम बहुत हिमके हैं ॥ १८ ॥ शीत-
 शब्द गुण अर्थात् स्पर्शविशेषमेंही (न०) है, गुणवालेमें नहीं है । सुषीम,
 शिशिर, जड, तुषार, शीतल, शीत, हिम ये सातों नाम शीतगुणवालेके हैं।
 अन्यालिंग अर्थात् त्रिलिङ्गी हैं । इनका लिंग विशेष्यके अनुसार होता है
 ॥ १९ ॥ ध्रुव, औत्तानपादि ये दो (पु०) नाम उत्तानपादके पुत्रके हैं ।
 अगस्त्य, कुम्भसंभव, मैत्रावरुणि ये तीन (पु०) नाम अगस्त्यमुनिके हैं ।
 लोपामुद्रा यह एक (स्त्री०) नाम अगस्त्यकी समानधर्मवाली स्त्रीका है
 ॥ २० ॥ नक्षत्र (न०), ऋक्ष (न०), भ (न०), तारा (स्त्री०), तार-
 का (स्त्री०), उडु ये छः नाम नक्षत्रके हैं । तहां उडुशब्द (स्त्री० न०)

राधा विशाखा पुष्ये तु सिध्यतिष्यौ श्रविष्ठा ।
 समा धनिष्ठा स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः स्त्रियः ॥ २२ ॥
 मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ।
 इत्वलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः ॥ २३ ॥
 बृहस्पतिः सुराचार्यो गीष्पतिर्धिषणो गुरुः ।
 जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः ॥ २४ ॥
 शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः ।
 अङ्गारकः कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः ॥ २५ ॥
 रौहिणेयो बुधः सौम्यः समौ सौरिशनैश्वरौ ।
 तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैहिकेयो विधुंतुदः ॥ २६ ॥
 सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखंडिनः ।
 राशीनामुदयो लग्नं ते तु मेषवृषादयः ॥ २७ ॥

है । अश्विनीनक्षत्रसे आदि ले रेवतीपर्यंत दाक्षायणी नामसे प्रसिद्ध हैं ।
 अश्वयुज् (ज्ञान्त), अश्विनी ये दो (स्त्री०) नाम अश्विनीके हैं ॥ २१ ॥
 राधा, विशाखा ये दो (स्त्री०) नाम विशाखाके हैं । सिध्य, तिष्य, पुष्य
 ये तीन (पु०) नाम पुष्यके हैं । श्रविष्ठा, धनिष्ठा ये दो (स्त्री०) नाम
 धनिष्ठाके हैं । श्रविष्ठाके तुल्य हैं । प्रोष्ठपदा, भाद्रपदा ये दो (स्त्री०)
 नाम पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपदके हैं ॥ २२ ॥ मृगशीर्ष (न०), मृग
 शिरस् (सान्त न०), आग्रहायणी (स्त्री०) ये तीन नाम मृगशिरके हैं ।
 इत्वला एक (स्त्री०) नाम मृगशिरके शिरके देशमें रहनेवाले पांच तारोंका
 है ॥ २३ ॥ बृहस्पति, सुराचार्य, गीष्पति, धिषण, गुरु, जीव, आंगिरस
 वाचस्पति, चित्रशिखंडिज ये नव (पु०) नाम बृहस्पतिके हैं ॥ २४ ॥ शुक्र
 दैत्यगुरु, काव्य, उशनस् (सान्त), भार्गव, कवि ये छः (पु०) नाम शुक्रके
 हैं । अंगारक, कुज, भौम, लोहितांग, महीसुत ये पांच (पु०) नाम मं
 गलके हैं ॥ २५ ॥ रौहिणेय, बुध, सौम्य ये तीन (पु०) नाम बुधके हैं ।
 सौरि, शनैश्वर ये दो (पु०) नाम शनिके हैं । तमस् (सान्त), राहु, स्व
 र्भानु, सैहिकेय, विधुंतुद ये पांच नाम राहुके हैं । तहां तमस् शब्द (न०)
 है । शेष (पु०) हैं ॥ २६ ॥ चित्रशिखंडिन् यह एक (इत्रन्त पु०) नाम
 मरीचि, अंगिरस्, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ इन सप्तर्षियोंक

सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः ।

भास्कराहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः ॥ २८ ॥

भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः ।

विकर्त्तनार्कमार्त्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥ २९ ॥

द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः ।

विभावसुर्ग्रहपतिस्त्विषांपत्निरहर्पतिः ॥ ३० ॥

भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः ।

“ पद्माक्षस्तेजसाराशिश्छायानाथस्तमिस्रहा ।

कर्मसाक्षी जगच्चक्षुर्लोकबन्धुस्त्रयीतनुः ॥

प्रद्योतनो दिनमणिः खद्योतो लोकबान्धवः ।

इनो भागो धामनिधिश्चांशुमाल्यब्जिनीपतिः ॥ ”

माठरः पिङ्गलो दंडश्चण्डांशोः पारिपार्श्वकाः ॥ ३१ ॥

सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपिर्गरुडाग्रजः ।

परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले ॥ ३२ ॥

हैं । लग्न यह एक (न०) नाम मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ, मीन इन राशियोंके उदयका है ॥ २७ ॥ सूर, सूर्य, अर्यमन् (नान्त), आदित्य, द्वादशात्मन् (नान्त), दिवाकर, भास्कर, अहस्कर, ब्रध्न, प्रभाकर, विभाकर ॥ २८ ॥ भास्वत् (तांत), विवस्वत् (तांत), सप्ताश्व, हरिदश्व, उष्णरश्मि, विकर्त्तन, अर्क, मार्त्तण्ड, मिहिर, अरुण, पूषन् (नांत) ॥ २९ ॥ द्युमणि, तरणि, मित्र, चित्रभानु, विरोचन, विभावसु, ग्रहपति, त्विषांपति, अहर्पति ॥ ३० ॥ भानु, हंस, सहस्रांशु, तपन, सवितृ (ऋकारांत), रवि ये सैंतीस और “ पद्माक्ष, तेजसाराशि, छायानाथ, तमिस्रहन् (नान्त), कर्मसाक्षिन् (इन्नन्त), जगच्चक्षु, लोकबन्धु, त्रयीतनु, प्रद्योतन, दिनमणि, खद्योत, लोकबान्धव, इन, भाग, धामनिधि, अंशुमालि, अब्जिनीपति ये सत्रह कुल चौवन (पु०) नाम सूर्यके हैं । माठर, पिङ्गल, दण्ड ये तीन (पु०) नाम सूर्यके पास रहनेवालोंके हैं ॥ ३१ ॥ सूरसूत, अरुण, अनूरु, काश्यपि, गरुडाग्रज ये पांच (पु०) नाम सूर्यके सारथिके हैं । परिवेष (पु०), परिधि (पु०), उपसूर्यक (न०), मण्डल (न०) ये चार नाम सूर्यके कुण्डलनाके हैं ॥ ३२ ॥

किरणोत्समयूखांशुगभस्तिघृणिरश्मयः ।

मानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

स्युः प्रभा रुयुचिस्त्विड् भा भाश्छविर्द्युतिदीप्तयः ।

रोचिः शोचिरुभे क्लीबे प्रकाशो द्योत आतपः ॥ ३४ ॥

कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्वति ।

तिग्मं तीक्ष्णं खरं तदन्मृगतृष्णा मरीचिका ३५ इति दिग्वर्गः ३

अथ कालवर्गः ४ ।

कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयोऽप्यथ पक्षतिः ।

प्रतिपदे इमे स्त्रीत्वे तदाद्यास्तितथयो द्वयोः ॥ १ ॥

घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवसवासरो ।

प्रत्युषोऽहर्मुखं कल्यमुषः प्रत्युषसी अपि ॥ २ ॥

किरण, उत्स, मयूख, अंशु, गभस्ति, घृणि, रश्मि, मानु, कर, मरीचि, दीधिति ये ग्यारह नाम किरणके हैं । तहां मरीचिशब्द स्त्रीलिंग पुँल्लिंग, दीधितिशब्द स्त्रीलिंग और शेष पुँल्लिंग हैं ॥ ३३ ॥ प्रभा, रुच् (चान्त), रुचि, त्विष् (पांत), भा, भास् (सांत), छवि, द्युति, दीप्ति, रोचिस् (सांत), शोचिस् (सांत) ये ग्यारह नाम प्रभाके हैं । इनमें प्रभासे दीप्तिशब्दतक स्त्रीलिंग हैं । रोचिष् और शोचिष् शब्द (न०) हैं । प्रकाश, द्योत, आतप ये तीन (पु०) नाम सूर्यकी घामके हैं ॥ ३४ ॥ कोष्ण, कवोष्ण, मन्दोष्ण, कदुष्ण ये चार नाम अल्पगर्मके हैं । ये धर्ममें रूपभेदसे (न०) हैं । धर्मी अर्थात् धर्मवालेमें त्रिलिङ्गी हैं । तिग्म, तीक्ष्ण, खर ये तीन नाम अत्यन्त गर्मके हैं । येभी धर्ममें रूपभेदसे नपुंसकलिंग हैं और धर्म अर्थात् धर्मवालोंमें त्रिलिङ्गी हैं । मृगतृष्णा, मरीचिका ये दो (स्त्री०) नाम मृगजल अर्थात् मरुदेशमें फैली हुई रेतपर सूर्यकी किरणें पडनेसे जो भ्रमरूप जलका आभास होता है उसके हैं ॥ ३५ ॥ इति दिग्वर्गः ॥ ३ ॥

अथ कालवर्गः । काल, दिष्ट, अनेहस् (सान्त), समय ये चार (पु०) नाम कालके हैं । पक्षति, प्रतिपद् (दांत) ये दो नाम पडवाके हैं । प्रतिपद्से आदि तिथि कहाती हैं । पक्षति और प्रतिपद्शब्द (स्त्री०) हैं । तिथिशब्द (स्त्री०) और (पु०) है ॥ १ ॥ घस्र (पु०), दिन (न०) अहन् (नांत न०), दिवस, वासर ये पांच नाम दिनके हैं । तहां दिवस

“ व्युष्टं विभातं द्वे क्लीबे पुंसि गोसर्ग इष्यते । ”

प्रभातं च दिनान्ते तु सायंसंध्या पितृप्रसूः ।

प्राह्णापराह्णमध्याह्नास्त्रिसन्ध्यमथ शर्वरी ॥ ३ ॥

निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा ।

विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥

तमिस्रा तामसी रात्रिर्ज्योत्स्नी चन्द्रिकयान्विता ।

आगामिवर्त्तमानाहर्द्युक्तायां निशि पक्षिणी ॥ ५ ॥

गणरात्रं निशा बह्वचः प्रदोषो रजनीमुखम् ।

अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ द्वौ यामप्रहरौ समौ ॥ ६ ॥

स पर्वसंधिः प्रतिपत्पञ्चदश्योर्यदन्तरम् ।

पक्षान्तौ पञ्चदश्यौ द्वे पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥

आसर शब्द (पु० न०) हैं । प्रत्यूष, अहर्मुख, कल्य, उषस् (सांत), प्रत्यूषस् (सांत) ॥ २ ॥ प्रभात ये छः और “ व्युष्ट (न०), विभात (न०), गोसर्ग (पु०) ” ये तीन कुल नौ नाम प्रभातके हैं । प्रत्यूष (पु० न०) है । शेष (न०) हैं । दिनान्त (पु०), सायं (अव्यय, पु०) संध्या (स्त्री०), पितृप्रसू (स्त्री०) ये चार नाम सायंकालके हैं । प्राह्ण, अपराह्ण, मध्याह्ण इन तीनोंको त्रिसंध्य कहते हैं । प्राह्ण यह एक (पु०) नाम दिनके पूर्वभागका है । मध्याह्ण यह एक (पु०) नाम दुपहरका है । अपराह्ण यह एक (पु०) नाम दुपहर पीछेका है । शर्वरी ॥ ३ ॥ निशा, निशीथिनी, रात्रि, त्रियामा, क्षणदा, क्षपा, विभावरी, तमस्विनी, रजनी, यामिनी, तमी ये बारह (स्त्री०) नाम रात्रिके हैं ॥ ४ ॥ तमिस्रा यह एक (स्त्री०) नाम अंधेरी रात्रिका है । ज्योत्स्नी यह एक (स्त्री०) नाम चंद्रमासे युक्त अर्थात् चांदनीरात्रिका है । पक्षिणी यह एक (स्त्री०) नाम पहले पिछले दिनसे युक्त हुई रात्रिका है ॥ ५ ॥ गणरात्र यह एक (न०) नाम बहुतसी रात्रियोंके समूहका है । प्रदोष (पु०), रजनीमुख (न०) ये दो नाम रात्रिके पूर्वभागके हैं । अर्द्धरात्र, निशीथ ये दो (पु०) नाम आधी रातके हैं । याम, प्रहर ये दो (पु०) नाम प्रहरके हैं ॥ ६ ॥ पर्वसंधि यह एक (पु०) नाम प्रतिपदा और पञ्चदशीके अंतरका है । पक्षान्त (पु०), पञ्चदशी (स्त्री०) ये दो नाम

कलाहीने सानुमतिः पूर्णे राका निशाकरे ।

अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसङ्गमः ॥ ८ ॥

सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली सा नष्टेन्दुकला कुहूः ।

उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च ॥ ९ ॥

सोपप्लवोपरक्तौ द्वावभ्युत्पात उपाहितः ।

एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ ॥ १० ॥

अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा त्रिंशत्तु ताः कला ।

तास्तु त्रिंशत्क्षणस्ते तु मुहूर्तो द्वादशास्त्रियाम् ॥ ११ ॥

ते तु त्रिंशदहोरात्रः पक्षस्ते दश पञ्च च ।

पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ मासस्तु तावुभौ ॥ १२ ॥

पक्षे अन्तकी तिथिके हैं । पौर्णमासी, पूर्णिमा ये दो (स्त्री०) नाम पूर्णमासीके हैं ॥ ७ ॥ अनुमति यह एक (स्त्री०) नाम कलाहीन चंद्रमायुक्त पौर्णमासीका है । राका यह एक (स्त्री०) नाम पूर्णचंद्रमायुक्त पौर्णमासीका है । अमावास्या (स्त्री०), अमावस्या (स्त्री०), दर्श (पु०), सूर्येन्दुसंगम (पु०) ये चार नाम अमावसके हैं ॥ ८ ॥ सिनीवाली यह एक (स्त्री०) नाम चंद्रमा जिसमें दिखाई दे उस अमावसका है । और कुहू यह एक (स्त्री०) नाम जिसमें चंद्रमा नहीं दीखे उस अमावसका है । उपराग, ग्रह ये दो नाम राहुसे किये गये चंद्रमा और सूर्यके ग्रासके हैं ॥ ९ ॥ सोपप्लव, उपरक्त ये दो नाम राहुसे ग्रस्त हुए चंद्रमा और सूर्यके हैं । ये चारों (पु०) नाम हैं । अभ्युत्पात, उपाहित ये दो (पु०) नाम अग्निकृत उत्पातके हैं । पुष्पवन्त यह एक (पु०) नाम एक युक्ति करके अर्थात् दोनोंको एक साथ कहनेसे सूर्य चंद्रमाका है ॥ १० ॥ निमेष (पु०) नाम आंखके भीचने और खोलनेका है । अठारह निमेषका नाम काष्ठा (स्त्री०) है । तीस काष्ठाओंका नाम एक कला (स्त्री०) है । तीस कलाओंका नाम एक क्षण (पु०) है । बारह क्षणोंका नाम मुहूर्त है । और मुहूर्तशब्द (पु० न०) है ॥ ११ ॥ तीस मुहूर्तोंका एक अहोरात्र (पु०) अर्थात् दिनरात्रि होती है । पंद्रह अहोरात्रका पक्ष (पु०) होता है । महीनेका पूर्वपक्ष शुक्ल (पु०) है और परपक्ष कृष्ण (पु०) है और दोनों पक्षोंका मास (पु०) अर्थात् महीना होता है ॥ १२ ॥

द्वौ द्वौ मार्गादिमासी स्यादृतुस्तैरयनं त्रिभिः ।

अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य वत्सरः ॥ १३ ॥

समरात्रिन्दिवे काले विषुवद्विषुवं च तत् ।

“ पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र सा ।

नाम्ना स पौषी माघाद्याश्चैवमेकादशापरे ॥ ”

मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः ॥ १४ ॥

पौषे तैषसहस्यौ द्वौ तपा माघेऽथ फाल्गुने ।

स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः ॥ १५ ॥

वैशाखे माधवो राधो ज्येष्ठे शुक्रः शुचिस्त्वयम् ।

आषाढे श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः ॥ १६ ॥

स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः समाः ।

स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोऽपि स्यात्तु कार्तिके ॥ १७ ॥

मगशिर आदि दो दो मासोंका ऋतु (पु०) होता है । (मूलमें जो माघसे दो दो मासोंकी गणना है वह केवल अयनारम्भके वशसे है) । तीन ऋतुओंका अयन (न०) होता है । अयन दो प्रकारका है । उत्तरायण और दक्षिणायन इन दोनों अयनोंका वत्सर (पु०) होता है ॥ १३ ॥ विषुवत् (तान्त), विषुव ये दो (न०) नाम समान रात्रिदिनवाले काल अर्थात् मेष-तुलाकी संक्रांतिके कालके हैं । “ पुष्यनक्षत्रसे युक्त जो पौर्णमासी उसको पौषी ऐसा (स्त्री०) एक नाम है वह पौषी जिस मासमें हो उसको पौष ऐसा (पु०) एक नाम है । मघानक्षत्रयुक्त पौर्णमासी जिस मासमें हो उसको माघ ऐसा (पु०) एक नाम है इस प्रकार पौषसे लेके सब मास जानना । ” मार्गशीर्ष, सहस्र (सान्त), मार्ग, आग्रहायणिक ये चार (पु०) नाम मगशिरके हैं ॥ १४ ॥ पौष, तैष, सहस्य ये तीन (पु०) नाम पौषके हैं । तपस् (सान्त), माघ ये दो (पु०) नाम माघके हैं । फाल्गुन, तपस्य, फाल्गुनिक ये तीन (पु०) नाम फाल्गुनके हैं । चैत्र, चैत्रिक, मधु ये तीन (पु०) नाम चैत्रके हैं ॥ १५ ॥ वैशाख, माधव, राघ ये तीन (पु०) नाम वैशाखके हैं । ज्येष्ठ, शुक्र ये दो (पु०) नाम जेठके हैं । शुचि, आषाढ ये दो (पु०) नाम आषाढके हैं । श्रावण, नभस् (सान्त), श्रावणिक ये तीन (पु०) नाम श्रावणके हैं ॥ १६ ॥ नभस्य,

बाहुल्योर्जो कार्तिकिको हेमन्तः शिशिरोऽस्त्रियाम् ।
 वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिर्ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥
 निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ।
 स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूम्नि वर्षा अथ शरत् स्त्रियाम् ॥ १९ ॥
 षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात् ।
 संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥
 मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रो वर्षेण दैवतः ।
 दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः कल्पौ तु तौ नृणाम् ॥ २१ ॥

प्रौष्ठपद, भाद्र, भाद्रपद ये चार (पु०) नाम भाद्रोंके हैं । आश्विन, इष, आश्वयुज ये तीन (पु०) नाम आश्विनके हैं । कार्तिक ॥ १७ ॥ बाहुल्य, उर्ज, कार्तिकिक ये चार (पु०) नाम कार्तिकके हैं । हेमन्त यह एक ऋतु है । शिशिर यह एक ऋतु है । हेमन्त और शिशिरशब्द (पु० न०) हैं । वसन्त, पुष्पसमय, सुरभि ये तीन (पु०) नाम वसन्तऋतुके हैं । ग्रीष्म, ऊष्मक ॥ १८ ॥ निदाघ, उष्णोपगम, उष्ण, ऊष्मागम, तप ये सात (पु०) नाम ग्रीष्म ऋतुके हैं । प्रावृष्ट, वर्षा ये दो नाम वर्षाऋतुके हैं । तहां प्रावृट्शब्द षकारान्त (स्त्री०) है और वर्षाशब्द (स्त्री०) और नित्य बहुवचनांत है । शरत् (दान्त) यह एक नाम शरत् ऋतुका है और स्त्रीलिंग है ॥ १९ ॥ मगशिर आदि दो दो महीनोंके क्रमसे ये छः ऋतु हैं और ऋतुशब्द (पु०) है । संवत्सर, वत्सर, अब्द, हायन, शरत्, समा ये छः नाम वर्षके हैं । तहां हायनान्त शब्द (पु० न०) हैं । शरत् (स्त्री०) है । समाशब्द स्त्रीलिंग बहुवचनांत है । शेष पुँल्लिङ्ग हैं ॥ २० ॥ मनुष्योंके एक महीनेसे पितरांका एक दिनरात्रि होता है । तहां कृष्णपक्षकी अष्टमीके उत्तरार्द्धमें दिनका आरम्भ होता है और शुक्लपक्षकी अष्टमीके उत्तरार्द्धमें रात्रिका आरम्भ होता है । मनुष्योंके एक वर्षमें देवताओंका दिनरात्रि होता है । उत्तरायण दिन है, दक्षिणायन रात्रि है और मनुष्योंके कृतयुग आदि चौकड़ी देवताओंका एक युग होता है । इस प्रकार देवताओंके दो हजार युगका ब्रह्माका एक दिनरात्रि होता है । ब्रह्माके दिनमें संसारकी स्थिति है और ब्रह्माजीकी रात्रिमें प्रलयकाल होता है । ऐसे देवताओंके दो हजार युगमें मनुष्योंकी स्थिति और प्रलय

मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः ।
 संवर्त्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥
 अस्त्री पङ्क्तं पुमान् पाप्मा पापं किल्विषकल्मषम् ।
 कलुषं वृजिनैर्नोघमंहो दुरितदुष्कृतम् ॥ २३ ॥
 स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः ।
 मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसंमदाः ॥ २४ ॥
 स्यादानन्दथुरानन्दः शर्मशांतसुखानि च ।
 श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मंगलं शुभम् ॥ २५ ॥
 भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम् ।
 शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥ २६ ॥
 मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतल्लजौ ।
 प्रशस्तवाचकान्यमून्ययः शुभावहो विधिः ॥ २७ ॥

होता है ॥ २१ ॥ देवताओंके ७१ युगोंका एक मन्वन्तर होता है। संवर्त्त, प्रलय, कल्प, क्षय, कल्पान्त ये पांच (पु०) नाम प्रलयके हैं ॥ २२ ॥ पंक, पाप्मन् (नान्त), पाप, किल्विष, कल्मष, कलुष, वृजिन, एनस् (सांत), अघ, अंहस् (सांत), दुरित, दुष्कृत ये बारह नाम पापके हैं। तहां पाप्मन्शब्द (पु०) है। पंक शब्द (पु० न०) है। और सब स्त्रीव हैं ॥ २३ ॥ धर्म, पुण्य, श्रेयस् (सांत), सुकृत, वृष ये पांच नाम धर्मके हैं। इनमें धर्मशब्द (पु० न०), वृष (पु०), शेष (न०) हैं। पुण्यशब्द जब विशेषण होता है तब इसका लिंग विशेष्यके समान होता है। मुद् (दांत), प्रीति, प्रमद, हर्ष, प्रमोद, आमोद, संमद ॥ २४ ॥ आनंदयु, आनंद, शर्मन् (नांत), शांत, सुख ये बारह नाम सुखके हैं। इनमें मुद् और प्रीतिशब्द स्त्रीलिंग हैं। शर्मन्, शांत, सुख (न०), शेष (पु०) हैं। श्वःश्रेयस् (सान्त), शिव, भद्र, कल्याण, मंगल, शुभ ॥ २५ ॥ भावुक, भविक, भव्य, कुशल, क्षेम, शस्त ये बारह नाम कल्याणमात्रके हैं। तहां क्षेम और शस्त शब्द (पु० न०) हैं। पाप-पुण्यशब्द और सुखादिशब्द (श्वःश्रेयस्से लेके शस्तपर्यंत शब्द) विशेष्यके साथ आनेसे वाच्यलिंग अर्थात् तीनों लिंग हैं। जैसे- ' पापा स्त्री, पापः पुमान्, पापं कुलम् ' इन वचनोंमें स्त्रीलिंग, पुल्लिंग और नपुंसकलिंग हैं ॥ २६ ॥ मतल्लिका (स्त्री०)

दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः ।

हेतुर्ना कारणं बीजं निदानं त्वादिकारणम् ॥ २८ ॥

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ।

विशेषः कालिकोऽवस्था गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ २९ ॥

जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।

प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्युशरीरिणः ॥ ३० ॥

जातिर्जातं च सामान्यं व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ।

चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हन्मानसं मनः ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

मर्चाचिका (स्त्री०), प्रकांड (पु०), उद्ध (पु०), तल्लज (पु०) ये पांच नाम प्रशस्तवाचक हैं । जैसे—‘प्रशस्ता ब्राह्मणाः ब्राह्मणमतल्लिका’ आदि जानने । अय यह एक (पु०) नाम शुभको उत्पन्न करनेवाले दैव अर्थात् भाग्यका है ॥ २७ ॥ दैव, दिष्ट, भागधेय, भाग्य, नियति, विधि ये छः नाम पूर्वजन्मके कर्मके हैं । यहां नियतिशब्द (स्त्री०) है । विधिशब्द (पु०) और शेष (न०) हैं । हेतु, कारण, बीज ये नाम कारणके हैं । इनमें हेतुशब्द (पु०), शेष (न०) हैं । निदान यह एक (न०) नाम आदिकारणका है ॥ २८ ॥ क्षेत्रज्ञ, आत्मन् (नान्त), पुरुष ये तीन (पु०) नाम शरीरके अधिदैवतके हैं । प्रधान (न०), प्रकृति ये दो नाम सत्त्वआदि गुणोंकी साम्यअवस्थाके हैं । प्रकृतिशब्द स्त्रीलिंग है । अवस्था यह एक (स्त्री०) नाम कालकृत यौवन आदि विशेषका है । सत्त्व, रजस् (सान्त), तमस् (सान्त) ये तीन (न०) नाम गुणोंके हैं ॥ २९ ॥ जनुस् (सान्त न०), जनन (न०), जन्मन् (नान्त न०), जनि (स्त्री०) उत्पत्ति (स्त्री०), उद्भव (पु०) ये छः नाम जन्मके हैं । प्राणिन् (इन्नन्त), चेतन, जन्मिन् (इन्नन्त), जन्तु, जन्त्यु, शरीरिन् (इन्नन्त) ये छः नाम प्राणीके हैं ॥ ३० ॥ जाति (स्त्री०), जात (न०), सामान्य (न०) ये तीन नाम घट आदि जातिके हैं । व्यक्ति, पृथगात्मता ये दो (स्त्री०) नाम घट आदि व्यक्तिके हैं । चित्त, चेतस् (सान्त), हृदय, स्वान्त, हृद् (दान्त), मानस, मनस् (सान्त) ये सात (न०) नाम मनके हैं ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

अथ धीवर्गः ५ ।

बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः ।

प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संविदप्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः ॥ १ ॥

धीर्धारणावती मेधा सङ्कल्पः कर्म मानसम् ।

“ अवधानं समाधानं प्रणिधानं तथैव च । ”

चित्ताभोगो मनस्कारश्चर्चा संख्या विचारणा ॥ २ ॥

“ विमर्शो भावना चैव वासना च निगद्यते । ”

अध्याहारस्तर्क ऊहो विचिकित्सा तु संशयः ।

सन्देहद्वापरौ चाथ समौ निर्णयनिश्चयौ ॥ ३ ॥

मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ।

समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ भ्रान्तिर्मिथ्यामतिभ्रमः ॥ ४ ॥

संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रवसंश्रवाः ।

अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः ॥ ५ ॥

अथ धीवर्गः । बुद्धि, मनीषा, धिषणा, धी, प्रज्ञा, शेमुषी, मति, प्रेक्षा, उपलब्धि, चिद् (तान्त), संविद् (दान्त), प्रतिपद् (दान्त), ज्ञप्ति, चेतना ये चौदह (स्त्री०) नाम बुद्धिके हैं ॥ १ ॥ मेधा यह एक (स्त्री०) नाम धारणावाली बुद्धिका है । संकल्प यह एक (पु०) नाम मनके व्यापारका है । “अवधान, समाधान, प्रणिधान ये तीन (न०) नाम समाधानके हैं । ” चित्ताभोग, मनस्कार ये दो (पु०) नाम सुख आदिमें तत्पर मनके हैं । चर्चा, संख्या, विचारणा ये तीन (स्त्री०) नाम प्रमाणोंकरके अर्थकी परीक्षाके हैं ॥ २ ॥ “ विमर्श (पु०), भावना, वासना (दो स्त्री०) ये तीन नाम वासनाके हैं । ” अध्याहार, तर्क, ऊह ये तीन (पु०) नाम तर्कके हैं । विचिकित्सा (स्त्री०), संशय (पु०), सन्देह (पु०), द्वापर (पु०) ये चार नाम संशयज्ञानके हैं । निर्णय, निश्चय ये दो (पु०) नाम निर्णयके हैं ॥ ३ ॥ मिथ्यादृष्टि, नास्तिकता ये दो (स्त्री०) नाम नास्तिकपनेके हैं । व्यापाद (पु०), द्रोहचिन्तन (न०) ये दो नाम परद्रोहचिन्तनके हैं । सिद्धान्त, राद्धान्त ये दो (पु०) नाम सिद्धान्तके हैं । भ्रान्ति (स्त्री०), मिथ्यामति (स्त्री०), भ्रम (पु०) ये तीन नाम भ्रमके हैं ॥ ४ ॥ संवित्, आगू, प्रतिज्ञान, नियम, आश्रव, संश्रव, अङ्गीकार, अभ्युपगम, प्रतिश्रव,

मोक्षे धीज्ञानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ।

मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥

मोक्षोऽपवर्गोऽथाज्ञानमविद्याहंमतिः स्त्रियाम् ।

रूपं शब्दो गंधरसस्पर्शाश्च विषया अमी ॥ ७ ॥

गोचरा इन्द्रियार्थाश्च हृषीकं विषयीन्द्रियम् ।

कर्मेन्द्रियं तु पाखादि मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥

तुवरस्तु कषायोऽस्त्री मधुरो लवणः कटुः ।

तिक्तोऽम्लश्च रसाः पुंसि तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥

विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे ।

आमोदः सोऽतिनिर्हारी वाच्यलिंगत्वमागुणात् ॥ १० ॥

समाधि ये दश नाम अंगीकारके हैं । इनमें संवित् और आगू (स्त्री०), प्रतिज्ञान (न०) और शेष (पु०) हैं ॥ ६ ॥ ज्ञान यह (न०) नाम मोक्षमें बुद्धिका है । विज्ञान यह (न०) नाम शिल्प और अन्यशास्त्रमें जो बुद्धि है उसका है । मुक्ति, कैवल्य, निर्वाण, श्रेयस् (सान्त), निःश्रेयस् (सान्त), अमृत ॥ ६ ॥ मोक्ष, अपवर्ग ये आठ नाम मोक्षके हैं । तहां मुक्ति (स्त्री०), मोक्ष, अपवर्ग (पु०), शेष (न०) हैं । अज्ञान (न०) अविद्या, अहंमति ये तीन नाम अज्ञानके हैं । तहां अविद्या, अहंमति शब्द स्त्रीलिंग हैं । रूप (न०), शब्द (पु०), गंध (पु०), रस (पु०) स्पर्श (पु०) ये पांच विषय हैं ॥ ७ ॥ गोचर (पु०), इन्द्रियार्थ (पु०) इन नामोंसे वे प्रसिद्ध हैं । हृषीक, विषयिन (इन्नन्त), इन्द्रिय ये तीन (न०) नाम चक्षुआदि इन्द्रियके हैं । तहां गुदा, लिंग, हाथ, पैर, वाणी ये कर्मेन्द्रिय हैं । मन और नेत्र आदि ज्ञानेन्द्रिय कहाते हैं ॥ ८ ॥ तुवर कषाय, मधुर, लवण, कटु, तिक्त, अम्ल ये छः रसवाचक शब्द (पु०) हैं । कषायशब्द (पु० न०), शेष (पु०) हैं । ये शब्द रसवानोंमें वर्तमान हों तो त्रिलिङ्गी हैं । तहां तुवरशब्द हरड आदिमें प्रसिद्ध है । मधुर रस जल आदिमें प्रसिद्ध है । लवण रस सेंधा आदिमें प्रसिद्ध है । कटुरस मरीच आदिमें प्रसिद्ध है । तिक्तरस नींबू आदिमें प्रसिद्ध है । अम्लरस अमली आदिमें प्रसिद्ध है ॥ ९ ॥ परिमल यह (पु०) नाम संघर्षण आदिसे उत्पन्न और मनोहारी गंधका है । आमोद यह (पु०) नाम अ

समाकर्षी तु निर्हारी सुरभिर्घ्राणतर्पणः ।

इष्टगन्धः सुगन्धिः स्यादामोदी मुखवासनः ॥ ११ ॥

पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो विस्रं स्यादामगन्धि यत् ।

शुक्लशुभ्रशुचिश्वेतविशदश्येतपाण्डराः ॥ १२ ॥

अवदातः सितो गौरोऽवलक्षो धवलोऽर्जुनः ।

हरिणः पाण्डुरः पाण्डुरीषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥ १३ ॥

कृष्णे नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः ।

पीतो गौरो हरिद्राभः पालाशो हरितो हरित् ॥ १४ ॥

रोहितो लोहितो रक्तः शोणः कोकनदच्छविः ।

अव्यक्तरागस्त्वरुणः श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥

त्यन्तं समाकर्षवाले गंधका है । इससे आगे 'गुणे शुक्लादयः' इसपयत वक्ष्यमाण (जो आगे कहे जायेंगे) शब्द त्रिलिङ्गी हैं । कस्तूरीमें आमोद गंध है । कपूरमें मुखवासना गंध है । बकुलमें परिमल गंध है । चंपा आदिमें सुरभिगंध है ॥ १० ॥ समाकर्षिन् (इन्नन्त), निर्हारीन् (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम दूर जानेवाले गंधके हैं । सुरभि, घ्राणतर्पण, इष्टगंध, सुगन्धि ये चार (पु०) नाम सुन्दर गंधके हैं । आमोदिन् (इन्नन्त), मुखवासन ये दो (पु०) नाम ताम्बूल आदि गंधके हैं ॥ ११ ॥ पूतिगंध, दुर्गंध ये दो (पु०) नाम दुष्टगंधके हैं । विस्र, आमगंधि ये दो (न०) नाम कच्ची गंधिके हैं अर्थात् बिना पके हुए मांस आदिके हैं । शुक्ल, शुभ्र, शुचि, श्वेत, विशद, श्वेत, पाण्डर ॥ १२ ॥ अवदात, सित, गौर, अवलक्ष, धवल, अर्जुन ये तेरह नाम सुपेद रंगके हैं । हरिण, पाण्डुर, पाण्डु ये तीन नाम पीलेसे मिले हुए सुपेद रंगके हैं । ईषत्पाण्डु, धूसर ये दो नाम अल्पश्वेत रंगके हैं ॥ १३ ॥ कृष्ण, नील, असित, श्याम, काल, श्यामल, मेचक ये सात नाम नीले आदि रंगके हैं । पीत, गौर, हरिद्राभ ये तीन नाम पीले रंगके हैं । पालाश, हरित, हरित् ये तीन नाम हरे रंगके हैं ॥ १४ ॥ लोहित, रोहित, रक्त ये तीन नाम लाल रंगके हैं । शोण यह एक नाम लाल कमलके समान रंगका है । अरुण यह एक नाम थोड़े लाल रंगका है । पाटल यह नाम सुपेद और लाल मिले हुए अर्थात् गुलाबी रंगका है

१ यह शब्द जब दीर्घ ईकारान्त होता है तब स्त्रीलिङ्ग है ।

श्यावः स्यात्कपिशो धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ।

कडारः कपिलः पिंगपिशंगौ कटुपिंगलौ ॥ १६ ॥

चित्रं किर्मीरकलमाषशबलैताश्च कर्बुरे ।

गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिंगास्तु तद्वति ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥

अथ शब्दादिवर्गः ६ ।

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती ।

व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥

अपभ्रंशोऽपशब्दः स्याच्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ।

तिङ्मुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता ॥ २ ॥

श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी धर्मस्तु तद्विधिः ।

स्त्रियामृक् सामयजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥

॥ १५ ॥ श्याव, कपिश ये दो नाम धूसर अरुण अर्थात् वानरकेसे रंगके हैं धूम्र, धूमल, कृष्णलोहित ये तीन नाम कालेसहित लाल रंगके हैं । कडार कपिल, पिंग, पिशंग, कटु, पिंगल ये छः नाम पिंगल (पीले) वर्णके हैं ॥ १६ ॥ चित्र, किर्मीर, कलमाष, शबल, एत, कर्बुर ये छः नाम विचित्र वर्णके हैं । गुणमात्रमें शुक्ल आदि शब्द पुँल्लिंग हैं और गुणवालोंमें त्रिलिङ्ग हैं । जैसे ' शुक्ला शायी, शुक्लः पटः, शुक्लं वस्त्रम् ' इन वचनोंमें तीन लिंग हैं ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥

अथ शब्दादिवर्गः । ब्राह्मी, भारती, भाषा, गी (रान्त), वाच् (चान्त) वाणी, सरस्वती ये सात (स्त्री०) नाम सरस्वतीके हैं । व्याहार (पु०) उक्ति (स्त्री०) लपित (न०), भाषित (न०), वचन (न०), वच (सान्त न०) ये छः नाम वचनके हैं ॥ १ ॥ अपशब्द यह एक (पु०) नाम अपभ्रंशशब्दका है । व्याकरण आदिमें जो वाचक है वह शब्द वहाता है । तिङन्त सुबन्त पदोंका समूह वाक्य कहाता है । जैसे—' पर्चा भवति, प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ' यह वाक्य है । अथवा कारक करके क्रिया वाक्य कहाती है । जैसे—' देवदत्त गामाभिरक्ष शुक्ल दंडेन ' यह वाक्य है ॥ २ ॥ श्रुति, वेद (पु०), आम्नाय (पु०) ये तीन नाम वेद हैं । तहां श्रुतिशब्द स्त्रीलिंग है । धर्म यह एक (पु०) नाम वैदिक वि

शिक्षेत्यादि श्रुतेरंगमोकारप्रणवौ समौ ।

इतिहासः पुरावृत्तमुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥ ४ ॥

आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः ।

आख्यायिकोपलब्धार्थाः पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥

प्रबन्धकल्पना कथा प्रवह्लिका प्रहेलिका ।

स्मृतिस्तु धर्मसंहिता समाहृतिस्तु संग्रहः ॥ ६ ॥

समस्या तु समासार्था किंवदन्ती जनश्रुतिः ।

वार्त्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यादथाह्वयः ॥ ७ ॥

आख्याहे अभिधानं च नामधेयं च नाम च ।

हूतिराकारणाह्वानं संहृतिर्बहुभिः कृता ॥ ८ ॥

यज्ञ आदिका है । ऋच् (चान्त), सामन् (नान्त न०), यजुष् (पान्त न०) इन तीन वेदोंके समूहको त्रयी कहते हैं । तहां ऋच्शब्द (स्त्री०) है ॥ ३ ॥ शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द ये सब वेदके अंग हैं । अंगशब्द (न०) है । छः अंग, चार वेद, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण ये चौदह विद्या हैं । ओंकार, प्रणव ये दो (पु०) नाम ओंकारके हैं । इतिहास (पु०), पुरावृत्त (न०) ये दो नाम भारत आदि पूर्वचरितके हैं । उदात्त, अनुदात्त, स्वरित ये तीन स्वर कहाते हैं ॥ ४ ॥ आन्वीक्षिकी (स्त्री०) यह एक नाम गौतमप्रणीत तर्कविद्याका है । दण्डनीति यह एक (स्त्री०) नाम बृहस्पति आदि प्रणीत अर्थनीति शास्त्रका है । आख्यायिका, उपलब्धार्था ये दो (स्त्री०) नाम वासवदत्ता आदि ग्रन्थके हैं । पुराण यह एक (न०) नाम सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, वंशानुचरित इन पांच लक्षणोंसे युक्तका है ॥ ५ ॥ कथा यह एक (स्त्री०) नाम वाक्यके विस्तारकी रचनाका है । प्रवह्लिका, प्रहेलिका ये दो (स्त्री०) नाम पहेलीके हैं । स्मृति यह एक (स्त्री०) नाम धर्मके बोधके लिये रची हुई संहिताका है । समाहृति (स्त्री०), संग्रह (पु०) ये दो नाम संग्रह-ग्रन्थके हैं ॥ ६ ॥ समस्या यह एक (स्त्री०) नाम कविकी शक्तिकी परीक्षाके अर्थ किसी श्लोक वा कवित्तके संकेत देनेका है । किंवदन्ती, जनश्रुति ये दो (स्त्री०) नाम लोकप्रवादके हैं । वार्त्ता (स्त्री०), प्रवृत्ति (स्त्री०), वृत्तान्त (पु०), उदन्त (पु०) ये चार नाम लोकवृत्तान्त कथनके हैं । आह्वय (पु०) ॥ ७ ॥ आख्या (स्त्री०), आह्वा (स्त्री०), अभिधान

३ अमर.

विवादो व्यवहारः स्यादुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ।
 उपोद्घात उदाहारः शपनं शपथः पुमान् ॥ ९ ॥
 प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च प्रतिवाक्योत्तरे समे ।
 मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानमथ मिथ्याभिशंसनम् ॥ १० ॥
 अभिशापः प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ।
 यशः कीर्तिः समज्ञा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ११ ॥
 आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्तमुच्चैर्घुष्टं तु घोषणा ।
 काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥ १२ ॥
 अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत् ।
 उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे ॥ १३ ॥

(न०), नामधेय (न०), नामन् (नामन्त न०) ये छः नाम नामके हैं
 ह्राति (स्त्री०), आकारणा (स्त्री०), आह्वान (न०) ये तीन नाम आ
 ह्वान अर्थात् बुलानेके हैं । संहति यह एक (स्त्री०) नाम बहुतोंसे मिले
 बुलानेका है ॥ ८ ॥ विवाद, व्यवहार ये दो (पु०) नाम कर्जा आदिवे
 निमित्त अनेक प्रकारके विवादके हैं । उपन्यास (पु०), वाङ्मुख (न०)
 ये दो नाम वचनके आरंभके हैं । उपोद्घात, उदाहार ये दो (पु०) नाम
 प्रकृतसिद्धिके अर्थ किये हुए चिन्तनके हैं । शपन (न०), शपथ (पु०)
 ये दो नाम कसमके हैं ॥ ९ ॥ प्रश्न (पु०), अनुयोग (पु०), पृच्छा
 (स्त्री०) ये तीन नाम प्रश्नके हैं । प्रतिवाक्य, उत्तर ये दो (न०) नाम
 उत्तरके हैं । मिथ्याभियोग (पु०), अभ्याख्यान (न०) ये दो नाम
 झूठे दोष लगानेके हैं । मिथ्याभिशंसन (न०) ॥ १० ॥ अभिशाप (पु०)
 ये दो नाम मदिरापान आदि मिथ्यापापके उद्घावनके हैं । प्रणाद यह एक
 (पु०) नाम अनुरागसे उत्पन्न शब्दका है । यशस् (न०), कीर्ति
 (स्त्री०), समज्ञा (स्त्री०) ये तीन नाम कीर्तिके हैं । स्तव (पु०), स्तोत्र
 (न०), स्तुति (स्त्री०), नुति (स्त्री०) ये चार नाम स्तुतिके हैं ॥ ११ ॥
 आम्रेडित यह एक (न०) नाम दो बार तीन बार कहेका है । उच्चैर्घु
 (न०), घोषणा (स्त्री०) ये दो नाम ऊँचे शब्दके हैं । काकु यह एक
 (स्त्री०) नाम शोक और भय आदिसे उत्पन्न ध्वनिविकारका है ॥ १२ ॥
 अवर्ण, आक्षेप, निर्वाद, परीवाद, अपवाद, उपक्रोश यज्ञानक (पु०),

पारुष्यमतिवादः स्याद्भर्त्सनं त्वपकारगीः ।

यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् ॥ १४ ॥

तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति ।

स्यादाभाषणमालापः प्रलापोऽनर्थकं वचः ॥ १५ ॥

अनुलापो मुहुर्भाषा विलापः परिदेवनम् ।

विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिथः ॥ १६ ॥

सुप्रलापः सुवचनमपलापस्तु निहवः ।

“ चोद्यमाक्षेपाभियोगौ शापाक्रोशौ दुरेषणा ।

अस्त्री चाटु चटु श्लाघा प्रेम्णा मिथ्याविकृत्यनम् ॥ ”

संदेशवाग्वाचिकं स्याद्वाग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे ॥ १७ ॥

गुप्सा, कुत्सा, निन्दा ये (स्त्री०), गर्हण (न०) ये दश नाम निन्दाके हैं ॥ १३ ॥ पारुष्य (न०), अतिवाद (पु०) ये दो नाम कठोर बोलनेके हैं । भर्त्सन यह एक (न०) नाम अपकारके लिये बोलने अर्थात् धमकानेका है । परिभाषण यह एक (न०) नाम क्रोधपूर्वक दोषके प्रतिपादनका है ॥ १४ ॥ आक्षारणा यह एक (स्त्री०) नाम परस्त्री पुरुषके संयोगनिमित्त निन्दाका है । आभाषण (न०), आलाप (पु०) ये दो नाम आपसमें संबोधनपूर्वक बोलनेके हैं । प्रलाप यह एक (पु०) नाम अनर्थक वचनका है ॥ १५ ॥ अनुलाप (पु०), मुहुर्भाषा (स्त्री०) ये दो नाम बहुतवार बोलनेके हैं । विलाप (पु०), परिदेवन (न०) ये दो नाम रुदनपूर्वक बोलनेके हैं । विप्रलाप (पु०), विरोधोक्ति (स्त्री०) ये दो नाम आपसमें विरुद्ध बोलनेके हैं । संलाप यह एक (पु०) नाम आपसमें बोलनेका है ॥ १६ ॥ सुप्रलाप (पु०), सुवचन (न०) ये दो नाम सुन्दर बोलनेके हैं । अपलाप, निहव ये दो (पु०) नाम गुप्तवचनके हैं । “ चोद्य (न०), आक्षेप (पु०), अभियोग (पु०) ये तीन नाम अद्भुत प्रश्नके हैं । शाप (पु०), आक्रोश (पु०), दुरेषणा (स्त्री०) ये तीन नाम शापवचनके हैं । चाटु, चटु, श्लाघा (स्त्री०) ये तीन नाम प्रेमकरके मिथ्या बोलनेके हैं । तहां चाटु चटु शब्द (पु० न०) हैं । ” संदेशवाच् (चान्त स्त्री०), वाचिक (न०) ये दो नाम दूत आदिके मुखसे कहे हुए वचनके हैं । इससे परे वक्ष्यमाण रुशती आदि और सम्यक् पर्यंत वाणीके

रुशती वागकल्याणी स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ।

अत्यर्थमधुरं सान्त्वं संगतं हृदयंगमम् ॥ १८ ॥

निष्ठुरं परुषं ग्राम्यमश्लीलं सूनृतं प्रिये ।

सत्येऽथ संकुलक्लिष्टे परस्परपराहते ॥ १९ ॥

लुप्तवर्णपदं ग्रस्तं निरस्तं त्वरितोदितम् ।

अम्बूकृतं सनिष्ठीवमबद्धं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥

अनक्षरमवाच्यं स्यादाहतं तु मृषार्थकम् ।

“ सोल्लुण्ठनं तु सोत्प्रासं भणितं रतिकूजितम् ।

श्राव्यं हृद्यं मनोहारि विस्पष्टं प्रकटोदितम् ॥ ”

अथ म्लिष्टमविस्पष्टं वितथं त्वनृतं वचः ॥ २१ ॥

सत्यं तथ्यमृतं सम्यगमूनि त्रिषु तद्वति ।

शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनाः ॥ २२ ॥

भेद त्रिलिङ्गी हैं ॥ १७ ॥ रुशती यह एक (स्त्री०) नाम अकल्याणी वाणीका है । कल्या यह एक (स्त्री०) नाम शुभवाणीका है । सान्त्वं यह एक (न०) नाम अत्यन्त मधुर बोलनेका है । संगत, हृदयंगम ये दो (न०) नाम संबद्ध वचनके हैं ॥ १८ ॥ निष्ठुर, परुष ये दो (न०) नाम कठोर वचनके हैं । ग्राम्य, अश्लील ये दो (न०) नाम शिथिल वचनके हैं । सूनृत यह एक (न०) नाम प्रिय और सत्यवचनका है । संकुल, क्लिष्ट ये दो (न०) नाम आपसमें पूर्वापर विरुद्धके हैं । जैसे—‘ मेरी माता बंध्या है ’ ॥ १९ ॥ ग्रस्त यह एक (न०) नाम असंपूर्ण उच्चारित वचनका है । निरस्त यह एक (न०) नाम शीघ्र कहे हुए वचनका है । अंबूकृत यह एक (न०) नाम लार अर्थात् थूकसाहित वचनका है । अबद्ध यह एक (न०) नाम अनर्थक वचनका है ॥ २० ॥ अनक्षर, अवाच्य ये दो (न०) नाम नहीं कहने योग्य वचनके हैं । आहत यह एक (न०) नाम मिथ्या और असंभावित अर्थवालेका है । जैसे—‘ यह बंध्याका पुत्र जाता है ’ । “ सोल्लुण्ठन, सोत्प्रास ये दो (न०) नाम उपहाससाहित वचनके हैं । भणित, रतिकूजित ये दो (न०) नाम स्त्रीसंगके समय बोलनेके हैं । श्राव्य, हृद्य, मनोहारिन् (इन्नन्त), विस्पष्ट, प्रकटोदित ये पांच (न०) नाम प्रकट वचनके हैं ” । म्लिष्ट, अविस्पष्ट ये दो (न०) नाम स्पष्टवचनके हैं । वितथ यह एक (न०) नाम मिथ्यावचनका है ॥ २१ ॥ सत्य, तथ्य

स्वाननिर्घोषनिर्द्वादनादनिस्वाननिस्वनाः ।

आरवारावसंरावविरावा अथ मर्मरः ॥ २३ ॥

स्वनिते वस्त्रपणानां भूषणानां तु शिञ्जितम् ।

निकाणो निकणः काणः कणः कणनमित्यपि ॥ २४ ॥

वीणायाः कणिते प्रादेः प्रकाणप्रकणादयः ।

कोलाहलः कलकलस्तिरश्चां वाशितं रुतम् ॥ २५ ॥

स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने गीतं गानमिमे समे ।

इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

अथ नाट्यवर्गः ७ ।

निषादर्षभगान्धारषड्जमध्यमधैवताः ।

पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः ॥ १ ॥

काकली तु कले सूक्ष्मे ध्वनौ तु मधुरास्फुटे ।

कलो मन्द्रस्तु गम्भीरे तारोऽत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु ॥ २ ॥

कृत, सम्यच् (चान्त) ये चार (न०) नाम सत्यवचनके हैं । ये शब्द विशेषण होते हैं तब त्रिलिङ्गी हैं । जैसे- ' सत्या स्त्री, सत्यः पुमान्, सत्यं कुलम् ' इत्यादि । शब्द, निनाद, निनद, ध्वनि, ध्वान, रव, स्वन ॥ २२ ॥ स्वान, निर्घोष, निर्द्वाद, नाद, निस्वान, निस्वन, आरव, आराव, संराव, विराव ये सत्रह (पु०) नाम शब्दमात्रके हैं । मर्मर ॥ २३ ॥ यह एक (पु०) नाम वस्त्र और पत्तोंके शब्दका है । शिञ्जित यह एक (न०) नाम गहनोंके शब्दका है । निकाण, निकण, काण, कण, कणन ये पाँच नाम वीणा आदिके शब्दके हैं । इनमें कणन (न०) शेष (पु०) हैं ॥ २४ ॥ प्रकाण, प्रकण आदि (पु०) नामभी वीणाहीके शब्दमें हैं; अन्यके शब्दमें नहीं हैं । कोलाहल, कलकल ये दो (पु०) नाम बहुतोंसे मिलकर किये हुए शब्दके हैं । वाशित, रुत ये दो (न०) नाम पक्षियोंके शब्दके हैं ॥ २५ ॥ प्रतिश्रुत् (तान्त स्त्री०), प्रतिध्वान (पु०) ये दो नाम प्रतिशब्दके हैं । गीत, गान ये दो (न०) नाम गानेके हैं । इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

अथ नाट्यवर्गः । स्वरके भेद कहते हैं-निषाद, ऋषभ, गांधार, षड्ज, मध्यम, धैवत, पञ्चम ये सात (पु०) नाम वीणा या कंठसे उठे हुए स्वरोंके हैं ॥ १ ॥ " हस्ती निषाद स्वरसे बोलता है । गौ ऋषभ स्वरसे बोलती है ।

“ नृणामुरासि मध्यस्थो द्वाविंशतिविधो ध्वनिः ।
 स मन्द्रः कण्ठमध्यस्थस्तारः शिरसि गीयते ॥ ”
 समन्वितलयस्त्वेकतालो वीणा तु वल्लकी ।
 विपञ्ची सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ॥ ३ ॥
 ततं वीणादिकं वाद्यमानद्धं मुरजादिकम् ।
 वंशादिकं तु सुषिरं कांस्यतालादिकं घनम् ॥ ४ ॥
 चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यनामकम् ।
 मृदङ्गा मुरजा भेदास्त्वङ्ग्यालिङ्गचोर्ध्वकास्त्रयः ॥ ५ ॥
 स्याद्यशःपटहो ढक्का भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान् ।
 आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्कोणो वीणादिवादनम् ॥ ६ ॥

बकरी आदि गांधार स्वरसे बोलती है । मोर षड्ज स्वरसे बोलता है । कंज मध्यम स्वरसे बोलती है । घोडा धैवत स्वरसे बोलता है । कोयल पञ्चम स्वरसे बोलती है । ” काकली यह एक (स्त्री०) नाम सूक्ष्म कलका है । कल यह एक नाम मधुर और अस्पष्ट शब्दका है । मन्द्र यह एक नाम गंभीर ध्वनिका है । तार यह एक नाम अत्यन्त ऊंची ध्वनिका है । ये तीनों शब्द (त्रि०) हैं ॥ २ ॥ “ मनुष्योंके हृदयसे बाईस प्रकारका ध्वनि गाया जाता है । कण्ठसे मन्द्र और मस्तकसे तार स्वर गाया जाता है । ” जिसमें अच्छी लय हो और गीतके तुल्य हो उसे एकताल कहते हैं यह (पु०) है । वीणा, वल्लकी, विपञ्ची ये तीन (स्त्री०) नाम वीणाके हैं । परिवादिनी यह एक (स्त्री०) नाम सात तंत्रियोंकरके बन्धी हुई वीणाका है ॥ ३ ॥ तत यह (न०) नाम वीणा आदि बाजेका है । आनद्ध यह एक (न०) नाम मृदंग आदि बाजेका है । सुषिर यह एक (न०) नाम वंशी, अलगोजा, शंख आदि बाजेका है । घन यह एक (न०) नाम कांसीका बाजा घंटा झालर आदिका है ॥ ४ ॥ वादित्र, आतोद्य ये दो (न०) नाम पूर्वोक्त तत आदि चार प्रकारके बाजेके हैं । मृदङ्ग, मुरज ये दो (पु०) नाम मृदङ्गके हैं । अंघ्र्य, आलिंग्य, ऊर्ध्वक ये तीन (पु०) नाम भी मृदङ्गके ही भेदके हैं ॥ ५ ॥ यशःपटह (पु०), ढक्का (स्त्री०) ये दो नाम ढोलके हैं । भेरी, दुन्दुभि ये दो नाम नक्कारेके हैं । तहां भेरीशब्द (स्त्री०) और दुन्दुभिशब्द (पु०) है । आनक (पु०), पटह ये दो नाम बड़े नगाड़ेके हैं । तहां पटह-

वीणादण्डः प्रवालः स्यात्ककुभस्तु प्रसेवकः ।

कोलम्बकस्तु कायोऽस्या उपनाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥

वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमझर्राः ।

मर्दलः पणवोऽन्ये च नर्तकीलासिके समे ॥ ८ ॥

विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।

तालः कालक्रियामानं लयः साम्यमथास्त्रियाम् ॥ ९ ॥

ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने ।

तौर्यत्रिकं नृत्यगीतवाद्यं नाट्यमिदं त्रयम् ॥ १० ॥

भ्रकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्चेति नर्तकः ।

स्त्रीवेषधारी पुरुषो नाट्योक्तौ गणिकाज्जुका ॥ ११ ॥

शब्द (पु० न०) है । कोण यह एक (पु०) नाम जिससे वीणादि बजाई जाती है उस धनुषाकार काष्ठका है ॥ ६ ॥ प्रवाल यह एक (पु०) नाम वीणाके दंडका है । ककुभ, प्रसेवक ये दो (पु०) नाम वीणाके प्रान्तमें स्थित चर्मसे मढे हुए काष्ठतुंबीके हैं । जो शब्दकी गंभीरताके लिये रहते हैं । कोलंबक यह एक (पु०) नाम वीणाके तंत्रीरहित दंड आदिके समुदायका है । उपनाह यह एक (पु०) नाम जहां वीणाके प्रान्तमें तन्त्री बांधी जाती है उसका है ॥ ७ ॥ डमरुसे आदि लेकर ये बाजोंके भेदके नाम हैं । डमरु, मड्डु, डिण्डिम, झर्रा, मर्दल, पणव आदि । नर्तकी, लासिका ये दो (स्त्री०) नाम नाचनेवालीके हैं ॥ ८ ॥ तत्त्व यह एक (न०) नाम हाथ पैर आदि करके देरमें नाचने आदिका है । ओघ यह एक (पु०) नाम शीघ्र नाचने आदिका है । घन यह एक (न०) नाम जो न देरसे और न शीघ्रता नाचना हो उसका है । ताल यह एक (पु०) नाम कालक्रियाके नियमके हेतुका है । लय यह एक (पु०) नाम गाना बजाना और पैर आदिका धरना इन्हींकी क्रियाकालके साम्यका है । तहां ताल और लयशब्द (पु०) हैं ॥ ९ ॥ तांडव, नटन, नाट्य, लास्य, नृत्य, नर्तन ये छः (न०) नाम नाचनेके हैं । इनमें तांडवशब्द (पु०) भी है । नृत्य, गीत, वाद्य ये तीन मिलके तौर्यत्रिक और नाट्य कहाते हैं । ये (न०) हैं ॥ १० ॥ भ्रकुंस, भ्रुकुंस, भ्रुकुंस ये तीन (पु०) नाम स्त्रीके भेषको धारण कर नाचनेवाले पुरुषके हैं । ' अंगहार ' यहांतक नाट्यप्रकरणके शब्द कहते हैं । अज्जुका यह एक (स्त्री०) नाम वेश्याका

भगिनीपतिरावुत्तो भावो विद्वानथावुकः ।

जनको युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १२ ॥

राजा भट्टारको देवस्तत्सुता भर्तृदारिका ।

देवी कृताभिषेकायामितरासु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥

अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ राजशालस्तु राष्ट्रियः ।

अम्बा माताऽथ बाला स्याद्वासूरायस्तु मारिषः ॥ १४ ॥

अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा निष्ठानिर्वहणे समे ।

हण्डे हञ्जे हलाह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥

अङ्गहारोङ्गविक्षेपो व्यञ्जकाभिनयौ समौ ।

निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वङ्गिकसात्विके ॥ १६ ॥

है ॥ ११ ॥ आवुत्त यह एक (पु०) नाम बहनके पतिका है । भाव यह एक (पु०) नाम विद्वानका है । आवुक यह एक (पु०) नाम पिताका है । कुमार, भर्तृदारक ये दो (पु०) नाम युवराज अर्थात् राजपुत्रके हैं ॥ १२ ॥ भट्टारक, देव ये दो (पु०) नाम राजाके हैं । भर्तृदारिका यह एक (स्त्री०) नाम राजाकी पुत्रीका है । देवी यह एक (स्त्री०) नाम अभिषेक हुई रानीका है । भट्टिनी यह एक (स्त्री०) नाम अन्यरानीका है ॥ १३ ॥ अब्रह्मण्य यह एक (न०) नाम अवध्य ब्राह्मण आदिके दोष प्रकाश करनेका है । राष्ट्रिय यह एक (पु०) नाम राजाके सालेका है । अम्बा, मातृ ये दो (स्त्री०) नाम माताके हैं । मातृशब्द ऋकारान्त है । बाला, वासू ये दो (स्त्री०) नाम कुमारीके हैं । आर्य्य, मारिष ये दो (पु०) नाम उत्तमके हैं ॥ १४ ॥ अत्तिका यह एक (स्त्री०) नाम जेठी बहनका है । निष्ठा (स्त्री०), निर्वहण (न०) ये दो नाम नाटककी निर्वहण संधिके हैं । हंडे यह एक नाम नीच सहेलीके प्रति बुलानेका है । हंजे यह एक नाम चेटीको बुलानेका है । हला यह एक नाम सखीको बुलानेका है । तहां हंडे, हंजे, हला ये अव्यय हैं ॥ १५ ॥ अंगहार, अंगविक्षेप ये दो (पु०) नाम नृत्यविशेषके हैं । व्यञ्जक, अभिनय ये दो (पु०) नाम हाथ आदि करके मनोगत अर्थके प्रकाशके हैं । आंगिक यह नाम अंगकरके निष्पन्न कर्मका है । सात्विक यह एक नाम अंतःकरणकरके हुए कर्मका है । आंगिक, सात्विक ये दोनों त्रिलिङ्गी हैं । “ स्तंभ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभंग, कंप, वर्णका बदलना, अश्रु, प्रलय ये आठ सात्विक गुण हैं ” ॥ १६ ॥

शृंगारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः ।

बीभत्सरौद्रौ च रसाः शृंगारः शुचिरुज्ज्वलः ॥ १७ ॥

उत्साहवर्द्धनो वीरः कारुण्यं करुणा घृणा ।

कृपा दयानुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽप्यथो हसः ॥ १८ ॥

हासो हास्यं च बीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम् ।

विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्रमप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥

दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् ।

भयंकरं प्रतिभयं रौद्रं तूग्रमभी त्रिषु ॥ २० ॥

चतुर्दश दरस्त्रासो भीतिभीः साध्वसं भयम् ।

विकारो मानसो भावोऽनुभावो भावबोधकः ॥ २१ ॥

गर्वोऽभिमानोऽहंकारो मानश्चित्तसमुन्नतिः ।

“ दर्पोऽवलेपोऽवष्टम्भश्चित्तोद्रेकः स्मयो मदः । ”

अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥

शृङ्गार, वीर, करुण, अद्भुत, हास्य, भयानक, बीभत्स, रौद्र ये आठ (पु०) नाम नाटकके रसके हैं। चकारसे नववां शान्तरस जानना। शृङ्गार, शुचि, उज्ज्वल ये तीन (पु०) नाम शृङ्गारके हैं ॥ १७ ॥ उत्साहवर्द्धन, वीर ये दो (पु०) नाम वीररसके हैं। कारुण्य, करुणा, घृणा, कृपा, दया, अनुकम्पा, अनुक्रोश ये सात नाम दयाके हैं। यहां कारुण्य (न०), अनुक्रोश (पु०), शेष (स्त्री०) हैं। हस ॥ १८ ॥ हास, हास्य ये तीन नाम हांसीके हैं। हास्य (न०) शेष (पु०) हैं। बीभत्स, विकृत ये दो नाम बीभत्सके हैं और ये दोनों शब्द त्रिलिङ्गी हैं। विस्मय, अद्भुत, आश्चर्य, चित्र ये चार नाम अचरजके हैं। विस्मय (पु०) शेष (न०) हैं। भैरव ॥ १९ ॥ दारुण, भीषण, भीष्म, घोर, भीम, भयानक, भयंकर, प्रतिभय ये नव नाम भयानकके हैं। रौद्र, उग्र ये दो नाम उग्रके हैं। भैरवसे लेकर रौद्रपर्यंत चौदह शब्द तीनों लिंगवाची हैं ॥ २० ॥ र (पु० न०), त्रास (पु०), भीति (स्त्री०), भी (स्त्री०), साध्वस (न०), भय (न०) ये छः नाम भयके हैं। भाव यह एक (पु०) नाम मनसंबंधी विकारका है। अनुभाव यह एक (पु०) नाम चित्तके विकारको प्रकाश करनेवालेका है ॥ २१ ॥ गर्व, अभिमान, अहंकार ये

रीढावमाननावज्ञावहेलनमसूक्ष्णम् ।

मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा सापत्रपान्यतः ॥ २३ ॥

क्षान्तिस्तितिक्षाऽभिध्या तु परस्य विषये स्पृहा ।

अक्षान्तिरीर्ष्याऽसूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि ॥ २४ ॥

वैरं विरोधो विद्वेषो मन्युशोकौ तु शुक् स्त्रियाम् ।

पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि ॥ २५ ॥

कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघा रुद्रक्रुधौ स्त्रियौ ।

शुचौ तु चरिते शीलमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ २६ ॥

प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहोऽथ दोहदम् ।

इच्छा कांक्षा स्पृहेहा तृडाञ्छा लिप्सा मनोरथः ॥ २७ ॥

तीन (पु०) नाम गर्वके हैं । मान यह एक (पु०) नाम चित्तके बहुत ऊंचाई अर्थात् उन्नताका है । “ दर्प, अवलेप, अवष्टम्भ, चित्तद्वेक, स्मय, मद ये छः (पु०) नाम मदके हैं । ” अनादर, परिभवा परिभाव ये तीन (पु०), तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥ रीढा, अवमानना, अवज्ञा ये चार (स्त्री०), अवहेलन, असूक्ष्ण ये दो (न०) ये नव नाम अन्यादरके हैं । मन्दाक्ष, ह्री, त्रपा, व्रीडा, लज्जा ये पांच नाम लाजके हैं । यमन्दाक्ष (न०) शेष (स्त्री०) हैं । अपत्रपा यह एक (स्त्री०) नाम दूसरेसे लाजका है ॥ २३ ॥ क्षान्ति, तितिक्षा ये दो (स्त्री०) नाम अन्यसुखको सहनेके हैं । अभिध्या यह एक (स्त्री०) नाम अन्यके धनके विषयमें इच्छाका है । अक्षान्ति, ईर्ष्या ये दो (स्त्री०) नाम ईर्ष्याके हैं । असूया यह एक (स्त्री०) नाम गुणोंमें दोष आरोपणका है ॥ २४ ॥ वैर, विरोध, विद्वेष ये तीन नाम वैरके हैं । वैरशब्द (न०) शेष (पु०) हैं । मन्युशोक, शुक् (चान्त) ये तीन नाम शोकके हैं । शुक्शब्द (स्त्री०) शेष (पु०) हैं । पश्चात्ताप, अनुताप, विप्रतीसार ये तीन (पु०) नाम पश्चात्तापके हैं ॥ २५ ॥ कोप, क्रोध, अमर्ष, रोष, प्रतिघा, रुद्र (षान्त), क्रुध ये सात नाम क्रोधके हैं । तहां रुष् और क्रुध ये दोनों शब्द (स्त्री०) शेष (पु०) हैं । शील यह एक (न०) नाम शुद्ध चरितका है । उन्माद चित्तविभ्रम ये दो (पु०) नाम चित्त विगडनेके हैं ॥ २६ ॥ प्रेमन् (नान्त पु०), प्रियता (स्त्री०), हार्द (न०), प्रेमन् (नान्त न०), स्नेह (पु०) ये पांच नाम प्रेमके हैं । दोहद, इच्छा, कांक्षा, स्पृहा, ईहा,

कामोऽभिलाषस्तर्षश्च सौत्यर्थं लालसा द्वयोः ।

उपाधिर्ना धर्मचिन्ता पुंस्याधिर्मानसी व्यथा ॥ २८ ॥

स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानमुत्कण्ठोत्कलिके समे ।

उत्साहोऽध्यवसायः स्यात्स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९ ॥

कपटोऽस्त्री व्याजदम्भोपधयश्छद्मकैतवे ।

कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यं प्रमादोऽनवधानता ॥ ३० ॥

कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम् ।

स्त्रीणां विलासविव्वोकविभ्रमा ललितं तथा ॥ ३१ ॥

हेला लीलेत्यमी हावाः क्रियाः शृंगारभावजाः ।

द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा लीला च नर्म च ॥ ३२ ॥

वान्त), वांछा, लिप्सा, मनोरथ ॥ २७॥ काम, अभिलाष, तर्ष ये बारह नाम मनोरथके हैं । दोहदशब्द (पु० न०), इच्छासे लिप्सातक (स्त्री०) और शेष (पु०) हैं । लालसा यह एक नाम अत्यन्त इच्छाका है और स्त्री० पु०) है । उपाधि, धर्मचिन्ता (स्त्री०) ये दो नाम धर्मकी चिन्ताके हैं । तहां उपाधिशब्द (पु०) है । आधि, मानसीव्यथा ये दो नाम मनकी पीडाके हैं । तहां आधिशब्द (पु०) है दूसरा (स्त्री०) है ॥ २८ ॥ चिन्ता, स्मृति, आध्यान ये तीन नाम स्मरणके हैं । आध्यान न०) शेष (स्त्री०) हैं । उत्कंठा, उत्कलिका ये दो (स्त्री०) नाम उत्कंठाके हैं । उत्साह, अध्यवसाय ये दो (पु०) नाम उत्साहके हैं । वीर्य न०) यह एक नाम अत्यन्त उत्साहका है ॥ २९ ॥ कपट, व्याज(पु०) दम्भ (पु०), उपधि (पु०), छद्मन् (नान्त न०), कैतव (न०), कुसृता (स्त्री०), निकृति (स्त्री०), शाठ्य (न०) ये नव नाम शठपनेके हैं । तहां कपटशब्द (पु० न०) है ॥ ३० ॥ कौतूहल, कौतुक, कुतुक, कुतूहल ये चार (न०) नाम कौतुकके हैं । विलास (पु०), विव्वोक (पु०), विभ्रम (पु०), ललित (न०) ॥ ३१ ॥ हेला (स्त्री०), लीला (स्त्री०) ये दो स्त्रियोंके शृङ्गारसे उपजी छः चेष्टा हाव नामसे प्रसिद्ध हैं । द्रव (पु०), १ नेत्र मुख भृकुटी आदिसे जो रस उत्पन्न हो उसे विलास कहते हैं । २ गर्वसे उत्पन्न अनादरादिको विव्वोक कहते हैं । ३ वस्त्र आभूषणादिकरके उलट पुलटको विभ्रम कहते हैं । ४ अंगोंके अच्छे विन्यासको ललित कहते हैं । ५ नृत्य आदिको हेला कहते हैं । ६ प्रिय भूषण और वचन आदिके अनुकरणको लीला कहते हैं ।

व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च क्रीडा खेला च कूर्दनम् ।
 घर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्प्रलयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥
 अवहित्थाकारगुप्तिः समौ संवेगसंभ्रमौ ।
 स्यादाच्छुरितकं हासः सोत्प्रासः स मनाक् स्मितम् ॥ ३४ ॥
 मध्यमः स्याद्विहसितं रोमाञ्चो रोमहर्षणम् ।
 क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं जृम्भस्तु त्रिषु जृम्भणम् ॥ ३५ ॥
 विप्रलम्भो विसंवादो रिङ्गणं स्वलनं समे ।
 स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि ॥ ३६ ॥
 तन्द्री प्रमीला भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः स्त्रियाम् ।
 अट्टिः स्यादसौम्येऽक्षिण संसिद्धिप्रकृती त्विमे ॥ ३७ ॥

केलि (पु० स्त्री०), परीहास (पु०), क्रीडा (स्त्री०), खेला (स्त्री०)
 नर्मन् (न०) ये छः नाम क्रीडामात्रके हैं ॥ ३३ ॥ व्याज (पु०),
 पदेश (पु०), लक्ष्य (न०) ये तीन नाम अपने रूपको छिपानेके हैं ।
 क्रीडा (स्त्री०), खेला (स्त्री०), कूर्दन (न०) ये तीन नाम बालक
 लाके हैं । घर्म, निदाघ, स्वेद ये तीन (पु०) नाम पसीनेके हैं । प्र
 (पु०), नष्टचेष्टता (स्त्री०) ये दो नाम मूर्च्छा करके बेहोशपनेके
 ॥ ३३ ॥ अवहित्था, आकारगुप्ति ये दो (स्त्री०) नाम शोक आदि
 उपजी मुखकी ग्लानिके वा गुप्त आकारके हैं । संवेग, संभ्रम ये दो (पु०)
 नाम आनन्दपूर्वक कर्मांमें शीघ्रताके हैं । आच्छुरित यह एक (न०) नाम
 अभिप्रायसहित हँसनेका है अथवा शब्दसहित हँसनेका है । स्मित यह
 एक (न०) नाम मुसकुरानेका है ॥ ३४ ॥ विहसित यह एक (न०) नाम
 मध्यम हँसनेका है । रोमाञ्च (पु०), रोमहर्षण (न०) ये दो नाम रोम
 वाली खडी होनेके हैं । क्रन्दित, रुदित, क्रुष्ट ये तीन (न०) नाम रोवने
 हैं । जृम्भ, जृम्भण (न०) ये दो नाम जंभाईके हैं । तहां जृम्भशब्द त्रिलिङ्ग
 है ॥ ३५ ॥ विप्रलम्भ, विसंवाद ये दो (पु०) नाम ठगाईसे मिले हुए
 बोलनेके हैं । रिङ्गण, स्वलन ये दो (न०) नाम अपने धर्म आदिसे उत्त
 चलनेके हैं । निद्रा (स्त्री०), शयन (न०), स्वाप (पु०), स्वप्न (पु०)
 संवेश (पु०) ये पांच नाम नींदके हैं ॥ ३६ ॥ तन्द्री, प्रमीला ये त
 (स्त्री०) नाम नींदके आदि और अन्त्यमें हुए आलस्यके हैं । भ्रुकुटि

स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चाथ वेपथुः ।

कम्पोऽथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३८ ॥

इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

अथ पातालभोगिवर्गः ८ ।

अधोभुवनपातालं बलिसन्न रसातलम् ।

नागलोकोऽथ कुहरं सुषिरं विवरं बिलम् ॥ १ ॥

छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा शुषिः ।

गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे सरन्ध्रे सुषिरं त्रिषु ॥ २ ॥

अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ।

ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं क्षीणेऽवतमसं तमः ॥ ३ ॥

विष्वक् संतमसं नागाः काद्रवेयास्तदीश्वरः ।

शेषोऽनन्तो वासुकिस्तु सर्पराजोऽथ गोनसे ॥ ४ ॥

भ्रुकुटि, भ्रुकुटि ये तीन नाम भ्रुकुटी चटानेके हैं । तहां भ्रुकुटि आदि तीनों शब्द (स्त्री०) हैं । अदृष्टि यह एक (स्त्री०) नाम रोषसाहित टेढी आंखसे देखनेका है । संसिद्धि (स्त्री०), प्रकृति (स्त्री०) ॥ ३७ ॥ स्वरूप (न०), स्वभाव (पु०), निसर्ग (पु०) ये पांच नाम स्वभावके हैं । वेपथु, कंप ये दो (पु०) नाम कंपके हैं । क्षण, उद्धर्ष, मह, उद्धव, उत्सव ये पांच (पु०) नाम उत्सवके हैं ॥ ३८ ॥ इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥ अथ पातालभोगिवर्गः । अधोभुवन, पाताल, बलिसन्न, रसातल, नागलोक ये पांच नाम पातालके हैं । यहां नागलोक (पु०) शेष (न०) हैं । कुहर, सुषिर, बिल ॥ १ ॥ छिद्र, निर्व्यथन, रोक, रन्ध्र, श्वभ्र, वपा, शुषि ये पारह नाम छिद्रमात्रके हैं । तहां वपा और शुषि शब्द (स्त्री०) और शेष (न०) हैं । गर्त, अवट ये दो (पु०) नाम पृथ्वीछिद्रके हैं । सुषिर यह एक नाम छिद्रयुक्त वस्तुका है और तीनों लिंगवाची है ॥ २ ॥ अंधकार (पु० न०), ध्वान्त (न०), तमिस्र (न०), तिमिर (न०), तमस् (न०) ये पांच नाम अंधकारके हैं । अंधतमस यह एक (न०) नाम मत्स्यंत अंधरेका है । अवतमस यह एक (न०) नाम विगत अंधरेका है ॥ ३ ॥ संतमस यह एक (न०) नाम सर्वव्यापी अंधरेका है । नाग, काद्रवेय ये दो (पु०) नाम सर्पोंके हैं । शेष, अनंत ये दो (पु०) नाम

तिलित्सः स्यादजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ।
 अलगर्दो जलव्यालः समौ राजिलडुण्डुभौ ॥ ५ ॥
 मालुधानो मातुलाहिर्निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ।
 सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजंगोऽहिर्भुजंगमः ॥ ६ ॥
 आशीविषो विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः ।
 कुण्डली गूढपाच्चक्षुःश्रवाः काकोदरः फणी ॥ ७ ॥
 दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको विलेशयः ।
 उरगः पन्नगो भोगी जिह्वगः पवनाशनः ॥ ८ ॥
 “ लेलिहानो द्विरसनो गोकर्णः कंचुकी तथा ।
 कुम्भीनसः फणधरो हरिर्भोगधरस्तथा ॥
 अहेः शरीरं भोगः स्यादाशीरप्यहिदंष्ट्रिका । ”
 त्रिष्वहेयं विषास्थ्यादि स्फटायां तु फणा द्वयोः ।
 समौ कञ्चकनिर्मोकौ क्षेडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥

सर्पोंके पति शेषनागके हैं । वासुकि, सर्पराज ये दो (पु०) नाम सर्पराजाके हैं । मोनस ॥ ४ ॥ तिलित्स ये दो (पु०) नाम पाणससर्पके अजगर, शयु, बाहस ये तीन (पु०) नाम अजगरके हैं । अलगर्द, व्याल ये दो (पु०) नाम पानीके सर्पके हैं । राजिल, डुण्डुभ ये दो (पु०) नाम निर्विष और दो मुखवाले सर्पके हैं ॥ ५ ॥ मालुधान, मातुलाहि दो (पु०) नाम खट्वाके आकारवाले चित्रसर्पके हैं । निर्मुक्त, मुक्तक ये दो (पु०) नाम त्यागी हुई कांचलीवाले सर्पके हैं । सर्प, पृदाकु, भुजंग, अहि, भुजंगम ॥ ६ ॥ आशीविष, विषधर, चक्रिन् (इन्द्रन्त), व्याल, सरीसृप, कुण्डलिन् (इन्द्रन्त), गूढपाद् (दान्त), चक्षुःश्रवसू (सान्ना), काकोदर, फणिन् (इन्द्रन्त) ॥ ७ ॥ दर्वीकर, दीर्घपृष्ठ, दन्दशूक, विलेशय उरग, पन्नग, भोगिन् (इन्द्रन्त), जिह्वग, पवनाशन ये पच्चीस (पु०) सर्पके हैं ॥ ८ ॥ “ लेलिहान, द्विरसन, गोकर्ण, कंचुकिन् (इन्द्रन्त), कुम्भीनस, फणधर, हरि, भोगधर ये आठ (पु०) नाम सर्पमात्रके भोग यह एक (पु०) नाम सांपके शरीरका है । आशिस् (सान्ना) अहिदंष्ट्रिका ये दो (स्त्री०) नाम सांपकी डाढके हैं । ” आहेय एक नाम सर्पके विष और हड्डी आदिका है । तहां आहेयशब्द

पुंसि क्लीबे च काकोलकालकूटहलाहलाः ।

सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ॥ १० ॥

दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव ।

विषवैद्यो जाङ्गुलिको व्यालग्राह्यहितुण्डिकः ॥ ११ ॥

इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥

अथ नरकवर्गः ९ ।

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।

तद्भेदास्तपनावीचिमहारौरवरौरवाः ॥ १ ॥

संघातः कालसूत्रं चेत्याद्याः सत्वास्तु नारकाः ।

प्रेता वैतरणी सिंधुः स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋतिः ॥ २ ॥

विष्टिगज्जूः कारणा तु यातना तीव्रवेदना ।

पीडा बाधा व्यथा दुःखमामनस्यं प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥

लिंगवाची है । स्फटा, फणा ये दो (पु० स्त्री०) नाम सर्पके फनके हैं । कंचुक, निर्मोक ये दो (पु०) नाम सांपकी कांचलीके हैं । क्ष्वेड (पु०), गरल (न०), विष ये तीन नाम विषके हैं । तहां विषशब्द (पु० न०) है ॥ ९ ॥ काकोल, कालकूट, हलाहल ये तीन (पु० न०) हैं और सौराष्ट्रिक, शौक्लिकेय, ब्रह्मपुत्र, प्रदीपन ॥ १० ॥ दारद, वत्सनाभ ये छः नाम (पु०) हैं । इस प्रकार ये नव भेद विषके हैं । विषवैद्य, जाङ्गुलिक ये दो (पु०) नाम विषवैद्यके हैं । व्यालग्राहिन (इन्नन्त), अहितुण्डिक ये दो (पु०) नाम सर्प पकडनेवालेके हैं ॥ ११ ॥ इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥

अथ नरकवर्गः । नारक, नरक, निरय, दुर्गति ये चार नाम नरकके हैं । तहां दुर्गतिशब्द (स्त्री०) शेष (पु०) हैं । तपन (पु०), अवीचि (पु०), महारौरव (पु०), रौरव (पु०) ॥ १ ॥ संघात (पु०), कालसूत्र (न०) आदि नरकके भेद हैं । यहां आदिशब्दसे तामिस्र, कुंभीपाक आदि लेने चाहिये । प्रेत यह एक (पु०) नाम नरकमें रहनेवाले जीवोंका है । वैतरणी यह एक (स्त्री०) नाम नरककी नदीका है । निर्ऋति यह एक (स्त्री०) नाम नरककी अशोभाका है ॥ २ ॥ विष्टि, गज्जू ये दो (स्त्री०) नाम नरकमें हठसे गेरनेके हैं । कारणा, यातना, तीव्रवेदना ये तीन (स्त्री०) नाम नरककी पीडाके हैं । पीडा (स्त्री०), बाधा

स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत् ।

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

अथ वारिवर्गः १० ।

समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ।

उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः ॥ १ ॥

रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपांपतिः ।

तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे ॥ २ ॥

आपः स्त्री भूम्नि वार्वारि सलिलं कमलं जलम् ।

पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥

कवन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् ।

अम्भोऽर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशंवरम् ॥ ४ ॥

मेघपुष्पं घनरसस्त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् ।

भंगस्तरंग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचिरथोर्मिषु ॥ ५ ॥

(स्त्री०), व्यथा (स्त्री०), दुःख (न०), आमनस्य (न०), प्रसूति (न०) ॥ ३ ॥ कष्ट (न०), कृच्छ्र (न०), आभील (न०) ये नाम दुःखके हैं । इन्होंके मध्यमें जो दुःख आदि विशेष्यवृत्तिवाले हैं तीनों लिंगवाची हैं । जैसे- ' सेयं सेवा दुःखा च बहुरूपा, सोयं दुःखस्य गुणः, सर्वं दुःखं विवेकिनः ' और भेद्यगामित्व (विशेष्यवृत्तित्व) का अभाव है वहां वेही लिंग हैं ॥ ४ ॥ इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

अथ वारिवर्गः । समुद्र, अब्धि, अकूपार, पारावार, सरित्पति, उदन् (मत्वन्त), उदधि, सिन्धु, सरस्वत् (मत्वन्त), सागर, अर्णव ॥ १ ॥ रत्नाकर, जलनिधि, यादःपति, अपांपति ये पन्द्रह (पु०) नाम समुद्रके क्षीरोद, लवणोद, दध्युद, घृतोद, सुरोद, इक्षुद, स्वादूद ये सात (पु०) शब्द समुद्रभेदके हैं ॥ २ ॥ अप् (स्त्री० बहुवचन), वार्, वारि, सति कमल, जल, पयस् (सान्त), कीलाल, अमृत, जीवन, भुवन, वन ॥ ३ ॥ कवन्ध, उदक, पाथस् (सान्त), पुष्कर, सर्वतोमुख, अम्भस् (सान्त), अर्णस् (सान्त), तोय, पानीय, नीर, क्षीर, अंबु, शंवर ॥ ४ ॥ मेघपु घनरस (पु०) ये सत्ताईस (न०) नाम पानीके हैं । आप्य, अम्मय ये दो पानीके विकारके हैं और त्रिलिङ्गी हैं । भंग (पु०), तरंग (पु०), उ

महत्सूलोलकलोलौ स्यादावर्त्तोऽम्भसां भ्रमः ।
 पृषन्ति बिन्दुपृषताः पुमांसो विप्रुषः स्त्रियाम् ॥ ६ ॥
 चक्राणि पुटभेदाः स्युर्भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ।
 कूलं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च तटं त्रिषु ॥ ७ ॥
 पारावारे परावाची तीरे पात्रं तदन्तरम् ।
 द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्तर्वारिणस्तटम् ॥ ८ ॥
 तोयोत्थितं तत्पुलिनं सैकतं सिकतामयम् ।
 निषद्वरस्तु जम्बालः पङ्कोऽस्त्री शादकर्मौ ॥ ९ ॥
 जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ।
 नाव्यं त्रिलिङ्गं नौतार्ये स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥ १० ॥

वीचि ये चार नाम लहरके हैं । तहां ऊर्भिश्शब्द (स्त्री० पु०) है और वीचिशब्द (स्त्री०) है शेष (पु०) हैं ॥ ५ ॥ उल्लोल, कल्लोल ये दो (पु०) नाम बड़ी लहरके हैं । आवर्त यह एक (पु०) नाम मंडलके आकारवाले भँवरका है । पृषत् (तान्त न०), बिन्दु (पु०), पृषत (पु०), विप्रुष् ये चार नाम पानीकी बूंदोंके हैं । तहां विप्रुष्शब्द षकारान्त (स्त्री०) है ॥ ६ ॥ चक्र (न०), पुटभेद (पु०) ये दो नाम चक्रके आकारकरके नीचे जाते हुए पानीके हैं । भ्रम, जलनिर्गम ये दो (पु०) नाम पानी निकसनेके जालके हैं । कूल, रोधस् (सान्त), तीर, प्रतीर, तट ये पाँच (न०) नाम तीरके हैं । तहां तटशब्द त्रिलिङ्गी है ॥ ७ ॥ पार यह (न०) नाम नदीके परले तीरका है । आवार यह (न०) नाम नदीके उरले तीरका है । पात्र यह (न०) नाम दोनों तीरोंके मध्यका है । द्वीप, अन्तरीप ये दो (पु० न०) नाम पानीके मध्यमें तट अर्थात् टापूके हैं ॥ ८ ॥ पुलिन यह एक (न०) नाम पानीके क्रमसे निकली हुई पृथ्वीका है । सैकत, सिकतामय ये दो (न०) नाम बहुत बालू रेतवाली जगहके हैं । निषद्वर, जंबाल, पङ्क, शाद, कर्म ये पाँच (पु०) नाम कीचडके हैं । तहां पङ्कशब्द (पु० न०) है ॥ ९ ॥ जलोच्छ्वास, परीवाह ये दो (पु०) नाम निर्गम मार्गोंकरके बढे हुए और बहते हुए पानीके हैं । कूपक, विदारक ये दो (पु०) नाम सूखी नदी आदिमें पानीके लिये जो गढे किये जावें उनके हैं । नाव्य यह नाम नावकरके तारनेके योग्य पानी आदिका है और

४ अमर.

उडुपं तु प्लवः कोलः स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः ।
 आतरस्तरपण्यं स्यात् द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥
 सांयात्रिकः पोतवाणिक्कर्णधारस्तु नाविकः ।
 नियामकाः पोतवाहाः कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥
 नौकादण्डः क्षेपणी स्यादरित्रं केनिपातकः ।
 अभ्रिः स्त्री काष्ठकुदालः सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३ ॥
 क्लीबेऽर्धनावं नावोऽर्धेऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु ।
 तिष्वागाधात्प्रसन्नोऽच्छः कलुषोऽनच्छ आविलः ॥ १४ ॥
 निम्नं गभीरं गम्भीरमुत्तानं तद्विपर्यये ।
 अगाधमतलस्पर्शं कैवर्त्तं दाशधीवरौ ॥ १५ ॥

त्रिलिङ्गी है । नौ, तरणि, तरि ये तीन (स्त्री०) नाम नावके
 ॥ १० ॥ उडुप, प्लव, कोल ये तीन (पु०) नाम डोंगीके हैं । उडु
 (न०) भी है । स्रोतस् यह एक (पु० न०) नाम आपहीसे पानी डि
 अर्थात् झिरनेका है । आतर (पु०), तरपण्य (न०) ये दो नाम नदी
 उतराई देनेके हैं । द्रोणी (स्त्री०) यह नाम काठसे बनी हुई और
 नीमें बहनेवाली नावका है ॥ ११ ॥ सांयात्रिक, पोतवाणिज् (जान्त) ये
 (पु०) नाम नावके द्वारा व्यवहार करनेवालोंके हैं । कर्णधार, नाविक ये
 (पु०) नाम मलाहके हैं । नियामक, पोतवाह ये दो (पु०) नाम जहाज
 खिचैयेके हैं । कूपक, गुणवृक्षक ये दो (पु०) नाम रस्सी आदिके म
 आधारस्थित स्तंभ अर्थात् मस्तूलका है ॥ १२ ॥ नौकादण्ड (पु०
 क्षेपणी (स्त्री०) ये दो नाम नावको चलानेवाली वल्लीके हैं । अरि
 (न०), केनिपातक (पु०) ये दो नाम सुकाण अर्थात् पतवारके हैं
 अभ्रि (स्त्री०), काष्ठकुदाल (पु०) ये दो नाम जहाज आदिके मल
 दूर करनेके लिये काठके कुदालके हैं । सेकपात्र, सेचन ये दो (न०) ना
 चमड़ेके जल फेंकनेके पात्रके हैं ॥ १३ ॥ अर्धनाव यह नाम नावके अ
 भागका है और (न०) है । अतिनु यह एक नाम नावको जीत
 बड़े तैरनेवाले मनुष्य आदिका है और यह शब्द त्रिलिङ्गी है । यह
 अतलस्पर्शपर्यंत सब शब्द त्रिलिङ्गी हैं । प्रसन्न, अच्छ ये दो नाम निर्मल
 हैं । कलुष, अनच्छ, आविल ये तीन नाम गदलेके हैं ॥ १४ ॥ निम्न

आनायः पुंसि जालं स्याच्छणसूत्रं पवित्रकम् ।
 मत्स्याधानी कुवेणी स्याद्वडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६ ॥
 पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः ।
 विसारः शकुली चाथ गडकः शकुलार्भकः ॥ १७ ॥
 सहस्रदंष्ट्रः पाठीन उलूपी शिशुकः समौ ।
 नलमीनश्चिलिचिमः प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः ॥ १८ ॥
 क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधानमथो झषाः ।
 रोहितो मद्वरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥
 तिमिगिलादयश्चाथ यादांसि जलजन्तवः ।
 तद्भेदाः शिशुमारोद्रशङ्खो मकरादयः ॥ २० ॥

गभीर, गंभीर ये तीन नाम गंभीर (गहरे) के हैं । उत्तान यह एक नाम गंभीरसे विपरीतका है । अगाध, अतलस्पर्श ये दो नाम अत्यन्त गंभीर अर्थात् अथाहके हैं । कैवर्त्त, दाश, धीवर ये तीन (पु०) नाम मलाहके हैं ॥ १५ ॥ आनाय (पु०), जाल (न०) ये दो नाम जालके हैं । शणसूत्र, पवित्रक ये दो (न०) नाम शणसूत्र अर्थात् सुतलीके हैं । मत्स्याधानी, कुवेणी ये दो (स्त्री०) नाम मछली बांधनेकी करंडिका अर्थात् टोकरीके हैं । बडिश, मत्स्यवेधन ये दो (न०) नाम मछलीवेधन अर्थात् वंशीके हैं ॥ १६ ॥ पृथुरोमन् (नान्त), झष, मत्स्य, मीन, वैसारिण, अण्डज, विसार, शकुलिन् (इन्नन्त) ये आठ (पु०) नाम मछलीके हैं । गडक, शकुलार्भक ये दो (पु०) नाम गलफटी मछली वा बच्चेविशेषके हैं ॥ १७ ॥ सहस्रदंष्ट्र, पाठीन ये दो (पु०) नाम बहुत दांतवाली मछलीविशेषके हैं । उलूपिन् (इन्नन्त), शिशुक ये दो (पु०) नाम शिशुमारके आकारवाली मछलीके हैं । नलमीन, चिलिचिम ये दो (पु०) नाम पानी और तृणमें विचरनेवाली मछलीके हैं । प्रोष्ठी (स्त्री०), शफरी (पु० स्त्री०) ये दो नाम सफरी मछलीके हैं ॥ १८ ॥ पोताधान यह एक (न०) नाम छोटी मछलियोंके समूहका है । अब मत्स्यविशेष कहते हैं । रोहित यह एक (पु०) नाम रोही मछलीका है । मद्वर यह एक (पु०) नाम मंगरा मछलीका है । शाल यह (पु०) नाम चर्काकित मछलीका है । राजीव यह (पु०) नाम राया मछलीका है । शकुल यह (पु०) नाम सौरा मछलीका है । तिमि ॥ १९ ॥ तिमिगिल, नंदावर्त्त ये तीन (पु०)

स्यात्कुलीरः कर्कटकः कूर्मे कमठकच्छपौ ।
 ग्राहोऽवहारो नक्रस्तु कुम्भीरोऽथ महीलता ॥ २१ ॥
 गण्डूपदः किंचुलको निहाका गोधिका समे ।
 रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां भूमि जलौकसः ॥ २२ ॥
 मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः शंखः स्यात्कम्बुरास्त्रियौ ।
 क्षुद्रशङ्खाः शङ्खनखाः शम्बूका जलशुक्तयः ॥ २३ ॥
 भेके मण्डूकवर्षाभूशालूरप्लवदर्दुराः ।
 शिली गण्डूपदी भेकी वर्षाभ्वी कमठी डुलिः ॥ २४ ॥
 मद्गरस्य प्रिया शृङ्गी दुर्नामा दीर्घकोशिका ।
 जलाशयो जलाधारस्तत्रागाधजलो हृदः ॥ २५ ॥

नाम तीन तरहकी मछलियोंके हैं । यादस् (सान्त न०), जलजन्तु (पु०)
 ये दो नाम पानीमें रहनेवाले जीवके हैं । उनके भेद ये हैं । शिशुमार य
 (पु०) नाम शिरस मछलीका है । उद्र यह (पु०) नाम हृद मछलीका है
 शंकु यह (पु०) नाम सफू मच्छका है । मकर यह (पु०) नाम मगर
 च्छका है । आदिशब्दसे जलहस्ती आदि जानने । ये सब मच्छोंके भेद
 हैं ॥ २० ॥ कुलीर, कर्कटक ये दो (पु०) नाम कैंकड़ेके हैं । कूर्म, कम
 कच्छप ये तीन (पु०) नाम कछुआके हैं । ग्राह, अवहार ये दो (पु०)
 नाम ग्राहके हैं । नक्र, कुम्भीर ये दो (पु०) नाम नाकूके हैं । महील
 (स्त्री०) ॥ २१ ॥ गण्डूपद (पु०), किंचुलक (पु०) ये तीन नाम
 चुवाके हैं । निहाका, गोधिका ये दो (स्त्री०) नाम जलगोहके हैं । रक्त
 (स्त्री०), जलौका (स्त्री०), जलौकस् ये तीन नाम जोंकके कहे हैं
 तहां जलौकस् शब्द नित्य बहुवचनान्त सकारान्त स्त्रीलिंग है ॥ २२ ॥
 मुक्तास्फोट (पु०), शुक्ति (स्त्री०) ये दो नाम सीपोंके हैं । शंख, कंबु
 दो (पु० न०) नाम शंखके हैं । क्षुद्रशंख, शंखनख ये (पु०) नाम शं
 खके हैं । शम्बूक यह (पु० स्त्री०) नाम घोंघेका है ॥ २३ ॥ भे
 मंडक, वर्षाभू, शालूर, प्लव, दर्दुर ये छः (पु०) नाम मेंढकके हैं । शि
 गण्डूपदी ये दो (स्त्री०) नाम छोटे गिंडोवा अर्थात् केंचुएके हैं । भे
 वर्षाभ्वी ये दो (स्त्री०) नाम छोटी मेंढकजातिके हैं । कमठी, डुलि
 दो (स्त्री०) नाम कछुवोंके हैं ॥ २४ ॥ शृङ्गी (स्त्री०) यह एक न

आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये ।

पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूप उदपानं तु पुंसि वा ॥ २६ ॥

नेमिस्त्रिकाऽस्य वीनाहो मुखबन्धनमस्य यत् ।

पुष्करिण्यां तु खातं स्यादखातं देवखातकम् ॥ २७ ॥

पद्माकरस्तडागोऽस्त्री कासारः सरसी सरः ।

वेशन्तः पल्वलं चालपसरो वापी तु दीर्घका ॥ २८ ॥

खेयं तु परिखाधारस्त्वम्भसां यत्र धारणम् ।

स्यादालवालमावालमावापोऽथ नदी सरित् ॥ २९ ॥

तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्लादिनी धुनी ।

स्रोतस्विनी द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा ॥ ३० ॥

मद्दुर नामवाले मच्छविशेषकी स्त्रीके हैं । दुर्नामन् (पु०), दीर्घकोशिका (स्त्री०) ये दो नाम जोँकके आकारवाले जलचरविशेषके हैं । जलाशय, जलाधार ये दो (पु०) नाम तालाव आदिके हैं । ह्रद् यह (पु०) नाम अगाध पानीवाले जलस्थानका है ॥ २६ ॥ आहाव (पु०), निपान (न०) ये दो नाम कुएके पासके गढेके हैं । इसमें भरे पानीको पशु पीते हैं । अंधु, प्रहि, कूप, उदपान ये चार नाम कुएके हैं । उदपान शब्द (पु० न०) है शेष (पु०) हैं ॥ २६ ॥ नेमि, त्रिका ये दो (स्त्री०) नाम कुएके चाक अर्थात् धित्रीके हैं । वीनाह (पु०) यह नाम कुएके मनघटेका है । पुष्करिणी (स्त्री०), खात (न०) ये दो नाम खोदी हुई छोटी तलैयाके हैं । अखात, देवखातक ये दो (न०) नाम बिना खोदे हुए सरोवर अर्थात् पुराने तीर्थके हैं ॥ २७ ॥ पद्माकर (पु०), तडाग (पु० न०), कासार (पु०), सरसी (स्त्री०), सरस् (सान्त न०) ये पाँच नाम तलावके हैं । वेशन्त (पु०), पल्वल (पु० न०), अल्पसरस् (सान्त न०) ये तीन नाम छोटी तलाईके हैं । वापी, दीर्घका ये दो (स्त्री०) नाम बावडीके हैं ॥ २८ ॥ खेय (न०), परिखा (स्त्री०) ये दो नाम खाईके हैं । आधार (पु०) यह नाम बाँधका है । आलवाल (न०), आवाल (न०), आवाप (पु०) ये तीन नाम वृक्ष आदिके थाँवलेके हैं । नदी, सरित् (तान्त) ॥ २९ ॥ तरंगिणी, शैवलिनी, तटिनी, ह्लादिनी, धुनी, स्रोतस्विनी, द्वीप-

“ कूलंकषा निर्झरिणी रोधोवक्रा सरस्वती । ”

गङ्गा विष्णुपदी जहुतनया सुरनिम्नगा ।

भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि ॥ ३१ ॥

कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ।

रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥

करतोया सदानीरा बाहुदा सैतवाहिनी ।

शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्याद्विपाशा तु विपाद् स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

शोणो हिरण्यवाहः स्यात् कुल्यालगा कृत्रिमा सरित् ।

शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा सरस्वती ॥ ३४ ॥

कावेरी सरितोऽन्याश्च संभेदः सिन्धुसंगमः ।

द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्यां त्रिषु तूत्तरौ ॥ ३५ ॥

वती, स्ववती, निम्नगा, आपगा ये बारह (स्त्री०) नाम नदीके हैं ॥ ३० ॥
 “ कूलंकषा, निर्झरिणी, रोधोवक्रा, सरस्वती येभी चार (स्त्री०) नाम
 नदीकेही हैं । ” गंगा, विष्णुपदी, जहुतनया, सुरनिम्नगा, भागीरथी, त्रि-
 पथगा, त्रिस्रोतस् (सान्त), भीष्मसू ये आठ (स्त्री०) नाम गंगाजीके
 हैं ॥ ३१ ॥ कालिन्दी, सूर्यतनया, यमुना, शमनस्वसृ (ऋकारान्त) ये चार
 (स्त्री०) नाम यमुनाजीके हैं । रेवा, नर्मदा, सोमोद्भवा, मेकलकन्यका ये
 चार (स्त्री०) नाम नर्मदाके हैं ॥ ३२ ॥ करतोया, सदानीरा ये दो (स्त्री०)
 नाम गौरीके विवाहमें कन्यादानके जलसे उपजी नदीके हैं । बाहुदा, सैत-
 वाहिनी ये दो (स्त्री०) नाम कार्तवीर्यार्जुनने उतारी नदीके हैं । शतद्रु-
 शुतुद्रि ये दो (स्त्री०) नाम सतलज नदीके हैं । विपाशा, विपाद्
 (शान्त) ये दो (स्त्री०) नाम व्यासनदीके हैं ॥ ३३ ॥ शोण, हिर-
 ण्यवाह ये दो (पु०) नाम नदिविशेषके हैं अर्थात् शोणा नदीके
 हैं । कुल्या यह एक (स्त्री०) नाम छोटी और बनाई हुई नहरके
 है । शरावती, वेत्रवती, चन्द्रभागा, सरस्वती ॥ ३४ ॥ कावेरी
 ये पांच (स्त्री०) नाम पांच नदिविशेषके हैं । और कौशिकी, गंडकी, चम्पल
 गोदावरी, वेणी आदि अन्यभी नदी हैं । संभेद, सिन्धुसंगम ये दो (पु०)
 नाम नदीसंगमके हैं । प्रणाली यह एक (स्त्री० पु०) नाम पानी निकसनेके

देविकायां सरय्यां च भवे दाविकसारवौ ।
 सौगन्धिकं तु कल्लारं हल्लकं रक्तसंध्यकम् ॥ ३६ ॥
 स्यादुत्पलं कुवलयमथ नीलाम्बुजन्म च ।
 इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्सिते कुमुदकैरवे ॥ ३७ ॥
 शालूकमेषां कंदः स्याद्वारिपर्णी तु कुम्भिका ।
 जलनीली तु शैवालं शैवलोऽथ कुमुद्वती ॥ ३८ ॥
 कुमुदिन्यां नलिन्यां तु विसिनीपद्मिनीमुखाः ।
 वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥
 सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ।
 पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥
 विसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च ।
 पुण्डरीकं सिताम्भोजमथ रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥

मार्गमें मच्छके मुखके समान रूपवालेका है ॥ ३५ ॥ देविकानदीमें जो हो उसे दाविक, सरयूनदीमें हो उसे सारव कहते हैं । ये दोनों शब्द त्रिलिङ्गी हैं । सौगन्धिक, कल्लार ये दो (न०) नाम सायंकालमें खिलनेवाले कमलके हैं । इसीको कुईभी कहते हैं । हल्लक, रक्तसंध्यक ये दो (न०) नाम लालरंगवाले पूर्वोक्त कमलके हैं ॥ ३६ ॥ उत्पल, कुवलय ये दो (न०) नाम कुमोदिनीके हैं अथवा साधारण कमलके हैं । नीलाम्बुजन्मन् (नान्त), इन्दीवर ये दो (न०) नाम नीले कमलके हैं । कुमुद, कैरव ये दो (न०) नाम सुपेद कमलके हैं ॥ ३७ ॥ शालूक यह एक (न०) नाम कमलकन्दका है । वारिपर्णी, कुम्भिका ये दो (स्त्री०) नाम जलकुम्भीके हैं । जलनीली (स्त्री०), शैवाल (न०), शैवल (पु०) ये तीन नाम शिवालके हैं । कुमुद्वती ॥ ३८ ॥ कुमुदिनी ये दो (स्त्री०) नाम कुमोदिनीके हैं । नलिनी, विसिनी, पद्मिनी ये तीन (स्त्री०) नाम कमलिनीके हैं । यहां मुखशब्दसे सरोजिनी आदि नामभी कमलिनीके हैं । पद्म, नलिन, अरविन्द, महोत्पल ॥ ३९ ॥ सहस्रपत्र, कमल, शतपत्र, कुशेशय, पंकेरुह, तामरस, सारस, सरसीरुह ॥ ४० ॥ विसप्रसून, राजीव, पुष्कर, अम्भोरुह ये सोलह (न०) नाम कमलके हैं उनमें पद्मशब्द (पु० न०) है । पुण्डरीक, सिताम्भोज ये दो (न०) नाम सुपेद कमलके

रक्तोत्पलं कोकनदं नालो नालमथास्त्रियाम् ।

मृणालं विसमब्जादिकदम्बे खण्डमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥

करहाटः शिफाकंदः किंजल्कः केसरोऽस्त्रियाम् ।

संवर्तिका नवदलं बीजकोशो वराटकः ॥ ४३ ॥

इति वारिवर्गः ॥ १० ॥

उक्तं स्वव्योमदिकालधीशब्दादि सनाट्यकम् ।

पातालभोगि नरकं वारि चैषां च संगतम् ॥ १ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।

स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः ॥ २ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने प्रथमं काण्डम् ॥ १ ॥

हैं । रक्तसरोरुह ॥ ४१ ॥ रक्तोत्पल कोकनद ये तीन (न०) नाम लाल कमलके हैं । नाल (पु०), नाल (न०) ये दो नाम कमलकी दंडीके हैं । मृणाल, विस ये दो (पु० न०) नाम कमलकी भेसाके हैं । खंड यह एक (पु० न०) नाम कमल आदिके समूहका है ॥ ४२ ॥ करहाट, शिफाकन्द ये दो (पु०) नाम कमलकी जड़के हैं । किंजल्क (पु०), केसर (पु० न०) ये दो नाम कमलकी केसरके हैं । संवर्तिका (स्त्री०), नवदल (न०) ये दो नाम कमल आदिके नये पत्तोंके हैं । बीजकोश, वराटक ये दो (पु०) नाम कमलगट्टोंके हैं ॥ ४३ ॥

इति वारिवर्गः ॥ १० ॥

स्वर्गवर्ग, व्योमवर्ग, दिग्वर्ग, कालवर्ग, धीवर्ग, शब्दादिवर्ग, नाट्यवर्ग, पातालभोगिवर्ग, नरकवर्ग, वारिवर्ग ये दश वर्ग कहे ॥ १ ॥ इस प्रकार अमरसिंहकी कृति नाम लिङ्गानुशासनमें स्वरादि शब्दोंका अंग उपांग सहित प्रथम कांड कहा ॥ २ ॥

इति श्रीदिल्लीरौहतकप्रदेशान्तर्गतवेरीग्रामनिवासिगौडवंशावतंसविविधशास्त्रपरम-
पंडितश्रीशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायामागरानगरवास्तव्य-
ज्योतिर्विद्वालयमुकुन्दभट्टसूरिसूनुपं० रामेश्वरभट्टेन संशोधितायां अमरको-
शार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां प्रथमकांडः ॥ १ ॥

द्वितीयं काण्डम् ।

अथ भूमिवर्गः १ ।

वर्गाः पृथ्वीपुरक्ष्माभृद्वनौषधिमृगादिभिः ।
 नृब्रह्मक्षत्रविट्शूद्रैः सांगोपांगैरिहोदिताः ॥ १ ॥
 भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वम्भरा स्थिरा ।
 धरा धरित्री धरणिः क्षोणिर्ज्या काश्यपी क्षितिः ॥ २ ॥
 सर्वसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुंधरा ।
 गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्मावनिर्मेदिनी मही ॥ ३ ॥
 “ विपुला गह्वरी धात्री गौरिला कुम्भिनी क्षमा ।
 भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा ॥ ”
 मृन्मृत्तिका प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ना च मृत्तिका ।
 उर्वरा सर्वसस्याढ्या स्यादूषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥
 ऊषवानूषरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ स्थलं स्थली ।
 समानौ मरुधन्वानौ द्वे खिलाप्रहते समे ॥ ५ ॥

अथ भूमिवर्गः । पृथ्वीवर्ग, पुरवर्ग, शैलवर्ग, वनौषधिवर्ग, सिंहादिवर्ग, नृवर्ग, ब्रह्मवर्ग, क्षत्रियवर्ग, वैश्यवर्ग, शूद्रवर्ग ये वर्ग अंग उपांगसहित इस दूसरे कांडमें कहे हैं ॥ १ ॥ भू, भूमि, अचला, अनन्ता, रसा, विश्वम्भरा, स्थिरा, धरा, धरित्री, धरणी, क्षोणि, ज्या, काश्यपी, क्षिति ॥ २ ॥ सर्वसहा, वसुमती, वसुधा, उर्वी, वसुन्धरा, गोत्रा, कु, पृथिवी, पृथ्वी, क्ष्मा, अवनि, मेदिनी, मही ये सत्ताईस (स्त्री०) नाम पृथिवीके हैं ॥ ३ ॥ “ विपुला, गह्वरी, धात्री, गो, इला, कुम्भिनी, क्षमा, भूतधात्री, रत्नगर्भा, जगती, सागराम्बरा ये ग्यारह नाम भी पृथ्वीके हैं । ” मृद् (दांत), मृत्तिका ये दो (स्त्री०) नाम माटीके हैं । मृत्सा, मृत्स्ना ये दो (स्त्री०) नाम सुंदर माटीके हैं । उर्वरा (स्त्री०) यह एक नाम सम्पूर्ण खेतियोंसे युक्त पृथिवीका है । ऊष (पु०), क्षारमृत्तिका (स्त्री०) ये दो नाम खारी माटीके हैं ॥ ४ ॥ ऊषवत् (तांत), ऊषर ये दो नाम खारी माटीसे मिले हुएके हैं । ये दोनों शब्द त्रिलिङ्गी हैं । स्थल (न०), स्थली (स्त्री०) ये दो नाम अकृत्रिम स्थानके हैं । मरु, धन्वन् (नांत) ये दो

त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् ।
 लोकोऽयं भारतं वर्षं शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६ ॥
 देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य उदीच्यः पश्चिमोत्तरः ।
 प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यान्मध्यदेशस्तु मध्यमः ॥ ७ ॥
 आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्याहिमालयोः ।
 नीवृज्जनपदो देशविषयौ तूपवर्तनम् ॥ ८ ॥
 त्रिष्वागोष्ठाक्षडप्राये नड्वान्नडल इत्यापि ।
 कुमुद्वान्कुमुदप्राये वेतस्वान्वहुवेतसे ॥ ९ ॥
 शाद्वलः शादहरिते सजम्बाले तु पङ्किलः ।
 जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छस्तथाविधः ॥ १० ॥

(पु०) नाम बागड (मारवाड) देशके हैं । खिल, अप्रहत ये दो नाम
 विना कोई हुई पृथ्वीके हैं और त्रिलिङ्गी हैं ॥ ५ ॥ जगती (स्त्री०), लो
 (पु०), विष्टप (न०), भुवन (न०), जगत् (तान्त न०) ये पांच नाम
 जगत्के हैं । जम्बूद्वीपमें वर्तमान लोक भारतवर्षके नामसे प्रसिद्ध हैं ।
 इलावृत्त आदि अन्यभी वर्ष हैं । शरावती नदीकी अवधिसे जो ॥ ६ ॥
 पूर्व दक्षिण देश है वह प्राच्य कहाता है और (पु०) है । और शराव
 नदीकी अवधिसे जो देश पश्चिम उत्तर है वह उदीच्य कहाता है
 (पु०) है । प्रत्यन्त, म्लेच्छदेश ये दो (पु०) नाम म्लेच्छदेशके हैं । जि
 देशमें चार वर्णोंकी व्यवस्था नहीं हो वह म्लेच्छदेश होता है । मध्यदेश
 मध्यम ये दो (पु०) नाम मध्यदेशके हैं । हिमालय और विन्ध्याचल
 मध्य हो कुरुक्षेत्रसे पूर्व और प्रयागसे पश्चिम हो यह मध्यदेश है ॥ ७ ॥
 आर्यावर्त, पुण्यभूमि ये दो (पु०) नाम आर्यावर्त देशके हैं । यह आ
 र्यावर्त हिमालय और विन्ध्याचलके भीतर है अर्थात् पूर्वके समुद्र और पश्चि
 मके समुद्रके बीचकी पृथ्वी आर्यावर्तसे प्रसिद्ध है । नीवृत्त (पु० स्त्री०)
 जनपद (पु०) ये दो नाम मगध आदि देशके हैं । देश (पु०)
 विषय (पु०), उपवर्तन (न०) ये तीन नाम देशमात्रके हैं ॥ ८ ॥
 गोष्ठशब्दतक त्रिलिङ्गी हैं । नड्वत्, नड्वल ये दो नाम बहुत नरसल्य
 देशके हैं । कुमुद्वत् यह एक नाम बहुत कमोदनीवाले देशका है
 वेतस्वत् (तान्त) यह एक नाम बहुत वेतोंवाले देशका है ॥ ९ ॥ शाद्व

स्त्री शर्करा शर्करिलः शर्करः शर्करावति ।
 देश एवादिमावेवमुन्नेयाः सिकतावति ॥ ११ ॥
 देशो नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसम्पन्नव्रीहिपालितः ।
 स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥ १२ ॥
 सुराज्ञि देशे राजन्वान्स्यात्ततोऽन्यत्र राजवान् ।
 गोष्ठं गोस्थानकं तत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम् ॥ १३ ॥
 पर्यंतभूः परिसरः सेतुरालौ स्त्रियां पुमान् ।
 वामलूरश्च नाकुश्च वल्मीकं पुंनपुंसकम् ॥ १४ ॥
 अयनं वर्त्म मार्गाध्वपन्थानः पदवी सृतिः ।
 सरणिः पद्धतिः पद्या वर्त्तन्येकपदीति च ॥ १५ ॥

यह एक नाम बालतृणोंसे हरे देशका है । पंकिल यह एक नाम कीचडवाले देशका है । अनूप यह एक नाम अनूप अर्थात् बहुत जलवाले देशका है । कच्छ यह एक नाम नदी आदिके समीपदेशका है और पुंल्लिंग है ॥ १० ॥ शर्करा, शर्करिल ये दो नाम बालूरेतसे युक्त देशके हैं । तहां शर्कराशब्द स्त्रीलिंग है । शर्कर, शर्करावत् ये दो नाम कंकणोंसे युक्त देशके हैं । सिकता, सिकतिल ये दो नाम कंकरोसे युक्त हुए देशके हैं । सैकत, सिकतावत् ये दो नाम बालूसे युक्त हुए देश आदिके हैं ॥ ११ ॥ नदीमातृक यह एक नाम नदीके पानीसे सम्पन्न हुए व्रीहिवाले देशका है । देवमातृक यह नाम वर्षाके पानीसे सम्पन्न हुए व्रीहिवाले देशका है ॥ १२ ॥ राजन्वत् (तान्त) यह एक नाम सुन्दर धर्म धर्मशील राजा जिसमें हो उसका है । राजवत् (तान्त) यह एक नाम साधारण राजा जिस देशमें हो उसका है । गोष्ठ, गोस्थानक ये दो नाम गौवोंके स्थानके हैं यहांतक त्रिलिंगी हैं । गौष्ठीन (न०) यह तहां पहले गौ रहती हों उस स्थानका नाम है ॥ १३ ॥ पर्यंतभू (स्त्री०), परिसर (पु०) ये दो नाम नदी पर्वत आदिके समीपकी स्थानोंके हैं । सेतु (पु०), आलि ये दो नाम पुलके हैं । तहां सेतुशब्द (पु०) है और आलिशब्द (पु० स्त्री०) है । वामलूर (पु०), नाकु (पु०), वल्मीक (पु० न०) ये तीन नाम सांप आदिकी बांबीके हैं ॥ १४ ॥ अयन (न०), वर्त्मन् (नान्त न०), मार्ग (पु०), अध्वन्

अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चितेऽध्वनि ।
 व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः समाः ॥ १६ ॥
 अपन्थास्त्वपथं तुल्ये शृङ्गाटकचतुष्पथे ।
 प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा कान्तारं वर्त्म दुर्गमम् ॥ १७ ॥
 गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगं नल्वः किष्कुचतुःशतम् ।
 घण्टापथः संसरणं तत्पुरस्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥
 “ द्यावापृथिव्यौ रोदस्यौ द्यावाभूमी च रोदसी ।
 दिवस्पृथिव्यौ गङ्गा तु रुमा स्याल्लवणाकरः ॥ ”
 इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

अथ पुरवर्गः २ ।

पूः स्त्री पुरी नगर्यौ वा पत्तनं पुटभेदनम् ।
 स्थानीयं निगमोऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम् ॥ १ ॥

(नान्त पु०), पथिन् (नान्त पु०), पदवी, सृति, सरणि, पद्धति, पद्य
 वर्त्तनी, एकपदी ये बारह नाम मार्ग (रस्ते) के हैं । पदवीसे एकपदी
 शब्दतक (स्त्री०) हैं ॥ १६ ॥ अतिपथिन्, सुपथिन्, सत्पथ ये तीन (पु०
 नाम सुन्दर रस्तेके हैं । व्यध्व, दुरध्व, विपथ, कदध्वन् (नान्त), काप
 ये पांच (पु०) नाम बुरे रस्तेके हैं ॥ १६ ॥ अपथिन् (नान्त पु०), अप
 (न०) ये दो नाम अमार्ग अर्थात् जहाँ रास्ता न हो उसके हैं । शृंग
 टक, चतुष्पथ ये दो (न०) नाम चौराहेके हैं । प्रान्तर (न०) यह ए
 नाम दूर और शून्य रास्तेका है । कान्तार यह एक (पु० न०) ना
 दुर्गम मार्गका है ॥ १७ ॥ गव्यूति यह एक (स्त्री०) नाम दो कोसव
 है । नल्व यह एक (पु०) नाम चार सौ हाथका है । घंटापथ (पु०)
 संसरण (न०) ये दो नाम घंटोंसे युत हस्ती आदिके निकलने
 चौड़े अर्थात् मुख्य मार्गके हैं । उपनिष्कर यह एक (न०) नाम जि
 राजमार्गसे सेना निकले वा मार्ग साकड़ा हो उसका है ॥ १८ ॥ “ द्याव
 पृथिवी, रोदसी, द्यावाभूमी, रोदसी, दिवस्पृथिवी ये पांच (स्त्री०) ना
 आकाशसहित पृथिवीके हैं । गङ्गा (स्त्री०), रुमा (स्त्री०), लवण
 कर (पु०) ये तीन नाम खारी समुद्रके हैं ॥ ” इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

अथ पुरवर्गः । पुर, पुरी, नगरी, पत्तन, पुटभेदन, स्थानीय, निग

तच्छाखानगरं वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ।

आपणस्तु निषद्यायां विपणिः पण्यवीथिका ॥ २ ॥

रथ्या प्रतोली विशिखा स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम् ।

प्राकारो वरणः सालः प्राचीनं प्रान्ततो वृत्तिः ॥ ३ ॥

भित्तिः स्त्री कुडचमेडूकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम् ।

गृहं गेहोदवसितं वेश्म सद्म निकेतनम् ॥ ४ ॥

निशान्तपस्त्यसदनं भवनागारमन्दिरम् ।

गृहाः पुंसि च भूमन्येव निकाय्यनिलयालयाः ॥ ५ ॥

वासः कुटी द्वयोः शाला सभा संजवनं त्विदम् ।

चतुःशालं मुनीनां तु पर्णशालोऽटजोऽस्त्रियाम् ॥ ६ ॥

ये सात नाम नगरके हैं । तहां पुर, पुरी और नगरीशब्द (स्त्री०) हैं और जब पुरं नगरं ऐसा बनता है तब (न०) हैं । निगम (पु०) शेष (न०) हैं ॥ १ ॥ जो मूलनगरसे अन्य पुर हो वह शाखानगर (न०) कहाता है । वेश यह एक (पु०) नाम वेश्याके निवासस्थानका है । आपण (पु०), निषद्या (स्त्री०) ये दो नाम हाटेके हैं । विपणि (स्त्री०), पण्यवीथिका (स्त्री०) ये दो नाम दुकानोंकी पंक्तिके हैं ॥ २ ॥ रथ्या, प्रतोली, विशिखा ये तीन (स्त्री०) नाम ग्रामकी गलीके हैं । चय (पु०), वप्र ये दोनों नाम कोटके हैं । तहां वप्रशब्द (पु० न०) है । प्राकार, वरण, साल ये तीन (पु०) नाम बाड करनेके हैं । प्राचीन (न०) यह एक नाम नगर आदिके प्रान्तभागमें वांस और कांटे आदिके वेषनका है ॥ ३ ॥ भित्ति (स्त्री०), कुडच (न०) ये दो नाम भीतके हैं । एडूक यह एक (न०) नाम हड्डियोंसहित भीतका है । गृह, गेह, उदवसित, वेश्मन् (नांत्), सद्मन् (नांत्), निकेतन ॥ ४ ॥ निशान्त, पस्त्य, सदन, भवन, अगार, मन्दिर, गृह, निकाय्य, निलय, आलय ये सोलह नाम घरके हैं । तहां गृहशब्द बहुवचनमें (पु०) है । निकाय्य, निलय, आलय ये तीन (पु०) शेष (न०) हैं ॥ ५ ॥ वास (पु०), कुटी (स्त्री०), शाला (स्त्री०), सभा (स्त्री०) ये चार नाम सभाघरके हैं । तहां कुटीशब्द (स्त्री० पु०) है । संजवन (न०), चतुःशाल (न०) ये दो नाम आपसमें सन्मुखरूप चार शाला अर्थात् चौकके हैं । पर्णशाला (स्त्री०), उटज ये दो नाम मुनियोंके घरके हैं । तहां उटजशब्द (पु० न०) है ॥ ६ ॥

चैत्यमायतनं तुल्ये वाजिशाला तु मन्दुरा ।
 आवेशनं शिल्पिशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥
 मठश्छात्रादिनिलयो गङ्गा तु मदिरागृहम् ।
 गर्भागारं वासगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥
 “ कुट्टिमोऽस्त्री निबद्धा भूश्चन्द्रशाला शिरोगृहम् । ”
 वातायनं गवाक्षोऽथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।
 हर्म्यादि धनिनां वासः प्रासादो देवभूभुजाम् ॥ ९ ॥
 सौधोऽस्त्री राजसदनमुपकार्योपकारिका ।
 स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्तादयोऽपि च ॥ १० ॥
 विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसन्ननाम् ।
 खयगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११ ॥

चैत्य, आयतन ये दो (न०) नाम यज्ञके स्थानभेदके हैं । वाजिशाला मन्दुरा ये दो (स्त्री०) नाम अश्वशालाके हैं । आवेशन (न०), शिल्पिशाला (स्त्री०) ये दो नाम सुनार आदिकी शालाके हैं । प्रपा, पानीयशालिका ये दो (स्त्री०) नाम प्याउके हैं ॥ ७ ॥ मठ (पु०) यह एक नाम शिष्य संन्यासी आदिकोंके स्थानका है । गङ्गा (स्त्री०), मदिरागृह (न०) ये दो नाम मदिराघरके हैं । गर्भागार, वासगृह ये दो (न०) नाम गर्भस्थानके हैं । अरिष्ट, सूतिकागृह ये दो (न०) नाम सूतिकाघरके हैं ॥ ८ ॥ “ कुट्टिम यह एक (पु० न०) नाम पत्थर आदिसे बँधी हुई पृथ्वीका है । चन्द्रशाला (स्त्री०), शिरोगृह (न०) ये दो नाम अश्वशालाके हैं । ” वातायन (न०), गवाक्ष (पु०) ये दो नाम झरोखाके हैं । मण्डप (पु० न०), जनाश्रय (पु०) ये दो नाम मण्डपके हैं । हर्म्य यह एक (न०) नाम धनवालोंके स्थानका है । प्रासाद यह एक (पु०) नाम राजघरका है ॥ ९ ॥ सौध (पु० न०), राजसदन, (न०), उपकार्य (स्त्री०), उपकारिका (स्त्री०) ये चार नाम राजाके स्थानके हैं । स्वस्तिक यह एक (पु० न०) नाम तोरणसहित चारद्वारवाले स्थानका है । सर्वतोभद्र यह एक (पु० न०) नाम ऊपरके घरका है । नन्द्यावर्त यह एक (पु० न०) नाम गोलघरका है । आदिशब्दसे अन्यगृहभेद जानने ॥ १० ॥ विच्छन्दक यह एक (पु०) नाम बड़े सुन्दर घरका है ।

शुद्धान्तश्चावरोधश्च स्यादट्टः क्षौममस्त्रियाम् ।
 प्रघाणप्रघणालिन्दा बहिर्द्वारप्रकोष्ठके ॥ १२ ॥
 गृहावग्रहणी देहलयंगणं चत्वरजिरे ।
 अधस्तादारुणि शिला नासा दारूपरि स्थितम् ॥ १३ ॥
 प्रच्छन्नमन्तद्वारं स्यात्पक्षद्वारं तु पक्षकम् ।
 वलीकनीध्रे पटलप्रान्तेऽथ पटलं छदिः ॥ १४ ॥
 गोपानसी तु वलभी छादने वक्रदारुणि ।
 कपोतपालिकायां तु विटंकं पुंनपुंसकम् ॥ १५ ॥
 स्त्री द्वार्द्वारं प्रतीहारः स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका ।
 तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं पुरद्वारं तु गोपुरम् ॥ १६ ॥

ये स्वास्तिक आदि राजघरोंके भेद हैं । अन्तःपुर (न०), अवरोधन (न०)
 ॥ ११ ॥ शुद्धान्त (पु०), अवरोध (पु०) ये चार नाम राजाओंके
 स्त्रीघर (रनिवास) के हैं । अट्ट (पु०), क्षौम ये दो नाम हर्म्य आदिके
 पृष्ठस्थानके हैं । तहां क्षौमशब्द (पु० न०) है । प्रघाण, प्रघण, आलिन्द
 ये तीन (पु०) नाम घरके बाहरके चौतरेके हैं ॥ १२ ॥ गृहावग्रहणी,
 देहली ये दो (स्त्री०) नाम देहलके हैं । अंगण, चत्वर, अजिर ये तीन
 (न०) नाम आंगनके हैं । शिला (स्त्री०) यह एक नाम द्वारस्तंभके
 नीचे स्थित काठका है । नासा (स्त्री०) यह एक नाम द्वारस्तंभके ऊपर
 स्थितका है ॥ १३ ॥ प्रच्छन्न, अन्तद्वार ये दो (न०) नाम खिडकीके हैं ।
 पक्षद्वार, पक्षक ये दो (न०) नाम पार्श्वद्वारके हैं । वलीक (पु० न०),
 नीध्र (न०) ये दो नाम पटलके प्रान्तमें घरके आच्छादनके हैं । पटल
 (न०), छदि (स्त्री०) ये दो नाम छातके हैं । छदिशब्द सान्तभी पाया
 जाता है ॥ १४ ॥ गोपानसी, वलभी ये दो (स्त्री०) नाम छादनके
 लिये टेढे काठके हैं । कपोतपालिका (स्त्री०), विटंक ये दो नाम काठ
 आदिसे बने हुए पक्षीघरके हैं तहां विटंकशब्द (पु० न०) है ॥ १५ ॥
 द्वार (स्त्री०), द्वार (न०), प्रतीहार (पु०) ये तीन नाम द्वारके हैं ।
 वितर्दि, वेदिका ये दो (स्त्री०) नाम वेदीके हैं । तोरण (पु० न०),
 बहिर्द्वार (न०) ये दो नाम तोरणके हैं । पुरद्वार, गोपुर ये दो (न०)

कूटं पूर्दारि यद्धस्तिनखस्तस्मिन्नथ त्रिषु ।
 कपाटमरं तुल्ये तद्विष्कम्भोऽर्गलं न ना ॥ १७ ॥
 आरोहणं स्यात्सोपानं निःश्रेणिस्त्वधिरोहिणी ।
 संमार्जनी शोधनी स्यात्संकरोऽवकरस्तथा ॥ १८ ॥
 क्षिप्ते मुखं निःसरणं संनिवेशो निकर्षणम् ।
 समौ संवसथग्रामौ वेश्मभूर्वास्तुरस्त्रियाम् ॥ १९ ॥
 ग्रामान्त उपशल्यं स्यात् सीमसीमे स्त्रियामुभे ।
 घोष आभीरपल्ली स्यात्पक्कणः शबरालयः ॥ २० ॥
 इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

अथ शैलवर्गः ३ ।

महीध्रे शिखरिक्षमाभृदहार्यधरपर्वताः ।

अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलौच्चयाः ॥ १ ॥

नाम नगरके द्वारके हैं ॥ १६ ॥ हस्तिनख यह एक (पु०) नाम नगर
 द्वारमें सुखपूर्वक उतरनेके लिये माथीकी सीढीके हैं । कपाट, अरर ये
 नाम किवाडके हैं और त्रिलिङ्गी हैं । अर्गल यह एक नाम आगलका
 और (स्त्री० न०) है ॥ १७ ॥ आरोहण, सोपान ये दो (न०) नाम
 जीने वा सीढीके हैं । निःश्रेणि, अधिरोहिणी ये दो (स्त्री०) नाम क
 ष्टकी बनी सीढीके हैं । संमार्जनी, शोधनी ये दो (स्त्री०) नाम बु
 रीके हैं । संकर, अवकर ये दो (पु०) नाम कूडाकरकटके हैं ॥ १८ ॥
 मुख, निःसरण ये दो (न०) नाम घर आदिके प्रवेश वा निकलने
 द्वारके हैं । संनिवेश (पु०), निकर्षण (न०) ये दो नाम सम्यक् प्रकार
 वासस्थानके हैं । संवसथ, ग्राम ये दो (पु०) नाम गामके हैं । वेश्म
 (स्त्री०), वास्तु ये दो नाम घरकी पृथ्वीके हैं । वास्तुशब्द (पु० न०
 है ॥ १९ ॥ उपशल्य यह एक (न०) नाम ग्रामके समीप प्रदेशका है
 सीमन् (नान्त), सीमा यह दो (स्त्री०) नाम सीमाके हैं ! घोष (पु०
 आभीरपल्ली (स्त्री०) ये दो नाम गोपलोगोंके गामके हैं । पक्कण, शबराल
 ये दो (पु०) नाम भीलोंके गामके हैं ॥ २० ॥ इति पुरवर्गः ॥ २

अथ शैलवर्गः । महीध्र, शिखरिन् (इन्नन्त), क्षमाभृत्, अहार्य, ध
 पर्वत, अद्रि, गोत्र, गिरि, ग्रावन् (नान्त), अचल, शैल, शिलौच्चय

लोकालोकश्चक्रवालत्रिकूटत्रिकुत्समौ ।

अस्तस्तु चरमक्षमाभृदुदयः पूर्वपर्वतः ॥ २ ॥

हिमवान्निषधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रिकः ।

गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः ॥ ३ ॥

पाषाणप्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शिला दृषत् ।

कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥ ४ ॥

कटकोऽस्त्री नितम्बोऽद्रेः स्नुः प्रस्थः सानुरस्त्रियाम् ।

उत्सः प्रस्रवणं वारिप्रवाहो निर्झरो झरः ॥ ५ ॥

दरी तु कंदरो वा स्त्री देवखातविले गुहा ।

गह्वरं गण्डशैलास्तु च्युताः स्थूलोपला गिरेः ॥ ६ ॥

तेरह (पु०) नाम पर्वतके हैं ॥ १ ॥ लोकालोक, चक्रवाल ये दो (पु०) नाम सात द्वीपवाली पृथ्वीके प्राकारभूत पर्वतके हैं । त्रिकूट, त्रिकुत्स (दान्त) ये दो (पु०) नाम त्रिकूट पर्वतके हैं । अस्त, चरमक्षमाभृत् (तान्त) ये दो (पु०) नाम अस्ताचलके हैं । उदय, पूर्वपर्वत ये दो (पु०) नाम उदयाचल पर्वतके हैं ॥ २ ॥ हिमवत् (मत्वन्त), निषध, विन्ध्य, माल्यवत् (मत्वन्त), पारियात्रिक, गन्धमादन, हेमकूट, (मलय, चित्रकूट, मन्दराचल) ये सब (पु०) नाम पर्वतभेदवाची हैं तहां गन्धमादन शब्द (न०) भी है ॥ ३ ॥ पाषाण, प्रस्तर, ग्रावत् (नांत), उपल, अश्मन् (नांत), शिला, दृषद् (दान्त) ये सात नाम पत्थरके हैं । इनमें शिला और दृषद् (स्त्री०) शेष (पु०) हैं । कूट (पु० न०), शिखर (न०), शृंग (न०) ये तीन नाम पर्वतके अग्रभागके हैं । प्रपात, अतट, भृगु ये तीन (पु०) नाम पर्वतसे पतनस्थानके हैं ॥ ४ ॥ कटक यह एक (पु० न०) नाम पर्वतके मध्यभागका है । स्नु, प्रस्थ, सानु ये तीन नाम पर्वतके एक देशके हैं और तीनों शब्द (पु० न०) हैं । उत्स (पु०), प्रस्रवण (न०) ये दो नाम जहां पानी झिरके बहुत हो जाता है उस स्थानके हैं । वारि-प्रवाह, निर्झर, झर ये तीन (पु०) नाम झिरनेके हैं ॥ ५ ॥ दरी (स्त्री०), कन्दर (पु० स्त्री०) ये दो नाम समान बनाई हुई पर्वतकी गुफाके हैं । देवखात, विल, गुहा, गह्वर ये चार नाम बिना बनाई हुई पर्वतकी गुफाके हैं । गुहाशब्द (स्त्री०) शेष (न०) हैं । गण्डशैल यह एक (पु०) नाम

— ५ अमर.

“ दन्तकास्तु बहिस्तिर्यक्प्रदेशात्त्रिर्गता गिरेः । ”

खनिः स्त्रियामाकरः स्यात् पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ।

उपत्यकाद्विरासन्ना भूमिरूर्ध्वमधित्यका ॥ ७ ॥

धातुर्मनःशिलाद्यद्वैरैरिकं तु विशेषतः ।

निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

अथ वनौषधिवर्गः ४ ।

अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ।

महारण्यमरण्यानी गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥

आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत् ।

अमात्यगणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका ॥ २ ॥

पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम् ।

स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुरोचितम् ॥ ३ ॥

पर्वतसे गिरे हुए मोटे पत्थरका है ॥ ६ ॥ “ दंतक यह एक (पु०) न पर्वतके तिरछे प्रदेशसे बाहर निकले हुए शूलके आकारवाले पत्थरों हे । ” खनि (स्त्री०), आकर (पु०) ये दो नाम खानके हैं । प प्रत्यन्तपर्वत ये दो (पु०) नाम पर्वतके समीपमें छोटे पर्वतोंके हैं । त्यका (स्त्री०) यह एक नाम पर्वतके नीचेवाली पृथ्वीका है । अधित्य (स्त्री०) यह एक नाम पर्वतके ऊपरकी पृथ्वीका है ॥ ७ ॥ धातु एक (पु०) नाम पर्वतकी मनाशिल आदिका है । गैरिक यह एक (न०) नाम पर्वतकी धातुविशेष अर्थात् गेरूका है । निकुञ्ज, कुञ्ज ये दो (न०) नाम लता आदिसे ढके हुए स्थानके हैं ॥ ८ ॥ इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

अथ वनौषधिवर्गः । अटवी, अरण्य, विपिन, गहन, कानन, वन ये नाम वनके हैं । तहां अटवीशब्द (स्त्री०) शेष (न०) हैं । महार (न०), अरण्यानी (स्त्री०) ये दो नाम बड़े वनके हैं । गृहाराम, ष्कुट ये दो (पु०) नाम घरके समीप बनाये हुए बगीचेके हैं ॥ १ ॥ राम (पु०), उपवन (न०) ये दो नाम लगाये हुए बगीचेके हैं । वाटिका यह एक (स्त्री०) नाम राजमन्त्री और वेश्याओंके घरमें लगे हुए बगीचेके हैं ॥ २ ॥ आक्रीड (पु०), उद्यान (न०) ये दो

वीथ्यालिरावलिः पंक्तिः श्रेणी लेखास्तु राजयः ।

वन्या वनसमूहे स्यादंकुरोऽभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥

वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः ।

अनोकहः कुटः शालः पलाशी द्रुमागमाः ॥ ५ ॥

वानस्पत्यः फलैः पुष्पात्तैरपुष्पाद्वनस्पतिः ।

औषध्यः फलपाकान्ताः स्युरवन्ध्यः फलेग्रहिः ॥ ६ ॥

वन्ध्योऽफलोऽवकेशी च फलवान् फलिनः फली ।

प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः ॥ ७ ॥

फुल्लश्चैते विकसिते स्युरवन्ध्यादयस्त्रिषु ।

स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शंकुर्ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ८ ॥

राजाके साधारण बगीचेके हैं । प्रमदवन (न०) यह एक नाम रानियोंके क्रीडावनका है ॥ ३ ॥ वीथी, आलि, आवलि, पंक्ति, श्रेणी ये पांच (स्त्री०) नाम पंक्तिके हैं । लेखा, राजि ये दो (स्त्री०) नाम रेखाके हैं । वन्यां यह एक (स्त्री०) नाम वनके समूहका है । अंकुर यह एक (पु०) नाम नये अंकुरका है ॥ ४ ॥ वृक्ष, महीरुह, शाखिन् (इन्नन्त), विटपिन् (इन्नन्त), पादप, तरु, अनोकह, कूट, शाल, पलाशिन् (इन्नन्त), द्रु, द्रुम, अगम ये तेरह (पु०) नाम वृक्षके हैं ॥ ५ ॥ फूलसे उपजे फलोंके उपलक्षित कुयेको वानस्पत्य कहते हैं यह (पु०) है । जैसे-आम आदि । फूलोंके विना फलोंसे उपजा वनस्पति कहलाता है । जैसे-गूलर आदि । फलपाकही है अन्त जिन्होंका वे औषधि कहाते हैं । जैसे-ब्रीहि जव आदि । अवन्ध्य, फलेग्रहि ये दो (पु०) नाम जैसा काल हो उसके अनुसार फलधारी वृक्षके हैं ॥ ६ ॥ वन्ध्य, अफल, अवकेशिन् (इन्नन्त) ये तीन नाम ऋतुकालमें फलरहित वृक्षके हैं । फलवत् (मत्वन्त), फलिन, फलिन् (इन्नन्त) ये तीन नाम फलवाले वृक्षके हैं । प्रफुल्ल, उत्फुल्ल, संफुल्ल, व्याकोश, विकच, स्फुट, फुल्ल ॥ ७ ॥ ये आठ नाम फूले हुए वृक्षके हैं । अवन्ध्यसे लेके फुल्लपर्यंत शब्द (त्रि०) हैं । स्थाणु (पु० न०), ध्रुव (पु०), शंकु (पु०) ये तीन नाम छांटे हुए शाखावाले वृक्षके अर्थात् ठूटके हैं । क्षुप यह एक (पु०) नाम छोटी

अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मौ वल्ली तु व्रततिर्लता ।
 लता प्रतानिनी वीरुहुलिमन्युलप इत्यपि ॥ ९ ॥
 नगाद्यारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः ।
 अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः ॥ १० ॥
 समे शाखालते स्कन्धशाखाशाले शिफाजटे ।
 शाखा शिफारोहः स्यान्मूलाच्चाग्रं गता लता ॥ ११ ॥
 शिरोऽग्रं शिखरं वा ना मूलं बुध्नोऽग्निनामकः ।
 सारो मज्जा नरि त्वक् स्त्री वल्कं वल्कलमस्त्रियाम् ॥ १२ ॥
 काष्ठं दार्विन्धनं त्वेध इधममेधः समित् स्त्रियाम् ।
 निष्कुहः कोटरं वा ना वल्लरिर्मञ्जरिः स्त्रियौ ॥ १३ ॥

ढाली और जड़वाले वृक्षका है ॥ ८ ॥ स्तंभ, गुल्म ये दो (पु०) नाम प्रकांडरहित वृक्षके हैं । वल्ली, व्रतति, लता ये तीन (स्त्री०) नाम वृक्षके हैं । वीरुध् (धान्त स्त्री०), गुल्मिनी (स्त्री०), उलप (पु०) ये तीन नाम फैली हुई वेलिके हैं ॥ ९ ॥ उच्छ्राय, उत्सेध, उच्छ्रय ये तीन नाम वृक्ष आदिकी ऊंचाईके हैं । प्रकांड (पु० न०), स्कंध (पु० न०) ये दो नाम वृक्षके मूलसे शाखापर्यंत भागके हैं ॥ १० ॥ शाखा, लता ये दो (स्त्री०) नाम शाखाके हैं । स्कंधशाखा, शाला ये दो (स्त्री०) नाम प्रधान शाखाके हैं । शिफा, जटा ये दो (स्त्री०) नाम वृक्षके हैं । अवरोह यह एक (पु०) नाम शाखाकी जड़का है । वृक्षके मूलसे अग्रभागपर्यंत चढ़ी हुई वेल गिलोय आदिभी अवरोह कहते हैं ॥ ११ ॥ शिखर यह एक (पु० न०) नाम शिखरके अग्रभागका है । बुध्न (पु०), अग्निनामक (पु०) ये तीन नाम वृक्ष आदिकी जड़के हैं । सार, मज्जन् (नान्त) ये दो (पु०) नाम वृक्षके गुदेके हैं । त्वक् (धान्त स्त्री०), वल्क, वल्कल ये तीन नाम वृक्षकी छालके हैं । वल्क और वल्कलशब्द (पु० न०) हैं ॥ १२ ॥ काष्ठ (न०), दारु (पु० न०) ये दो नाम काठमात्रके हैं । इधन (न०), एधस् (न०), इध्म (न०), एध (पु०), समिध् (धान्त स्त्री०) ये पाँच नाम सूखे हुए तृण काष्ठ आदिके हैं । निष्कुह (पु०), कोटर (पु० न०) ये दो नाम वृक्षके छिद्रके हैं । वल्लरि, मञ्जारि ये दो (स्त्री०) नाम तु

पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः पुमान् ।
 पल्लवोऽस्त्री किसलयं विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम् ॥ १४ ॥
 वृक्षादीनां फलं सस्यं वृन्तं प्रसवबन्धनम् ।
 आम्रे फले शलाटुः स्याच्छुष्के वानमुमे त्रिषु ॥ १५ ॥
 क्षारको जालकं क्लीवे कलिका कोरकः पुमान् ।
 स्याद्गुच्छकस्तु स्तवकः कुड्मलो मुकुलोऽस्त्रियाम् ॥ १६ ॥
 स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुंसुमं समम् ।
 मकरन्दः पुष्परसः परागः सुमनोरजः ॥ १७ ॥
 द्विहीनं प्रसवे सर्वं हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ।
 आश्वत्थवैणवप्लाक्षनैयग्रोधैर्गुदं फले ॥ १८ ॥

आदिकी मंजरीके हैं ॥ १३ ॥ पत्र, पलाश, छदन, दल, पर्ण, छद ये छः
 नाम पत्तोंके हैं । तहां छदशब्द (पु०) शेष (न०) हैं । पल्लव, किस-
 लय ये दो (पु० न०) नाम पत्ता आदिसे युत हुए शाखाके पर्वके हैं ।
 यथा ' पुंसि क्लीवे च पल्लवः ' इति तु व्याडिः । विटप यह एक (पु० न०)
 नाम शाखापत्तोंके समुदायका है ॥ १४ ॥ सस्य यह एक (न०) नाम
 वृक्षादिके फलका है । वृन्त यह एक (न०) नाम फल आदि जिसक-
 के बांधे जाते हैं उसका है । शलाटु यह एक नाम कच्चे फलका है । वान
 यह एक नाम सूखे हुए फलका है । शलाटु और वान शब्द त्रिलिङ्गी हैं
 ॥ १५ ॥ क्षारक (पु०), जालक (न०) ये दो नाम नई कलीके हैं ।
 कलिका (स्त्री०), कोरक (पु०) ये दो नाम कलीके हैं । गुच्छक, स्त-
 वक ये दो (पु०) नाम कली आदिसे आकीर्ण हुई पत्तोंकी गांठके हैं ।
 कुड्मल, मुकुल ये दो (पु० न०) नाम थोड़ी खिली हुई कलीके हैं ॥ १६ ॥
 सुमनस् (सान्त), पुष्प, प्रसून, कुंसुम ये चार नाम फूलके हैं । तहां सुम-
 नस्शब्द (स्त्री०) शेष (न०) हैं । मकरन्द, पुष्परस ये दो (पु०) नाम
 फूलोंके मधुके हैं । पराग (पु०), सुमनोरजस् (सान्त न०) ये दो नाम
 फूलोंकी रेणुके हैं ॥ १७ ॥ पुष्प, फल, मूल इन्होंमें वर्तमान सब (न०) हैं ।
 और हरीतकी आदि शब्द (स्त्री०) हैं । अश्वत्थ, वैणव, प्लाक्ष, नैयग्रोध,
 गुद ये पाँचों (न०) नाम क्रमसे पीपल, वांस, पिलखन, वड, हींगड

बार्हतं च फले जम्बू जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ।
 पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वलिङ्गा ब्रीहयः फले ॥ १९ ॥
 विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि पुष्पे क्लीवेऽपि पाटला ।
 बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः ॥ २० ॥
 अश्वत्थेऽथ कपित्थे स्युर्दधित्थग्राहिमन्मथाः ।
 तस्मिन्दधिफलः पुष्पफलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥
 उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः ।
 कोविदारो चमरिकः कुदालो युगपत्रकः ॥ २२ ॥
 सप्तपर्णो विशालत्वक् शारदो विषमच्छदः ।
 आरग्वधे राजवृक्षश्म्याकचतुरङ्गुलाः ॥ २३ ॥
 आरेवतव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः ।
 स्युर्जम्बीरे दन्तशठजम्भजम्भीरजम्भलाः ॥ २४ ॥

इन्होंके फलोंके हैं ॥ १८ ॥ बार्हत यह एक (न०) नाम बड़ी कटेहरीके फलका है । जम्बू, जम्बु, जाम्बव ये तीन नाम जामुनके फलके हैं । तह जम्बूशब्द (स्त्री०) शेष (न०) हैं । जातीसे आदि ले पुष्पवाचक शब्द अपने २ लिंगवाले हैं और फलवाचक ब्रीहिशब्द अपने २ लिंगवाले हैं किन्तु (न०) नहीं हैं । तहां जातीशब्द (स्त्री०) है ब्रीहिशब्द (पु०) है ॥ १९ ॥ विदारी आदि फलपुष्पवाचक शब्द स्वलिङ्ग हैं । पाटलाशब्द पुष्पवाचक होनेसेभी (न० और स्वलिङ्ग) है । जैसे—‘ पाटलायाः पुष्पाटलम् ’ । बोधिद्रुम, चलदल, पिप्पल, कुञ्जराशन ॥ २० ॥ अश्वत्थ पांच (पु०) नाम पीपलवृक्षके हैं । कपित्थ, दधित्थ, ग्राहिन् (इत्रन्त) मन्मथ, दधिफल, पुष्पफल, दन्तशठ ये सात (पु०) नाम कैथके हैं ॥ २१ ॥ उदुम्बर, जन्तुफल, यज्ञाङ्ग, हेमदुग्धक ये चार (पु०) नाम गूलरके हैं । कोविदार, चमरिक, कुदाल, युगपत्रक ये चार (पु०) नाम कचनारके हैं ॥ २२ ॥ सप्तपर्ण, विशालत्वक् (चांत), शारद, विषमच्छद ये चार (पु०) नाम सातविण अर्थात् सात पत्तेवालेके हैं । आरग्वध, राजवृक्ष, शम्याक, चतुरङ्गुल ॥ २३ ॥ आरेवत, व्याधिघात, कृतमाल, सुवर्णका आठ (पु०) नाम अमलतासके हैं । जम्बीर, दन्तशठ, जम्भ, जम्भीर, जम्भल ये पांच (पु०) नाम जम्भीर नीबूके हैं ॥ २४ ॥

वरुणो वरणः सेतुस्तिक्तशाखः कुमारकः ।
 पुंनागे पुरुषस्तुंगः केसरो देववल्लभः ॥ २५ ॥
 पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः ।
 तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथदुरतिमुक्तकः ॥ २६ ॥
 वंजुलश्चित्रकृच्चाथ द्वौ पीतनकपीतनौ ।
 आम्रातके मधूके तु गुडपुष्पमधुद्रुमौ ॥ २७ ॥
 वानप्रस्थमधुष्ठीलौ जलजेऽत्र मधूलकः ।
 पीलौ गुडफलः संसी तस्मिंस्तु गिरिसंभवे ॥ २८ ॥
 अक्षोटकन्दरालौ द्वावंकोटे तु निकोचकः ।
 पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथोऽथ वेतसे ॥ २९ ॥
 रथाभ्रपुष्पविदुरशीतवानीरवंजुलः ।
 द्वौ परिव्याधविदुलौ नादेयी चाम्बुवेतसे ॥ ३० ॥
 सौभाञ्जने शिशुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचकाः ।
 रक्तोऽसौ मधुशिशुः स्यादरिष्टः फेनिलः समौ ॥ ३१ ॥

वरुण, वरण, सेतु, तिक्तशाख, कुमारक ये पांच (पु०) नाम वरनाके हैं । पुंनाग, पुरुष, तुंग, केसर, देववल्लभ ये पांच (पु०) नाम केसरके हैं ॥ २५ ॥ पारिभद्र, निम्बतरु, मन्दार, पारिजातक ये चार (पु०) नाम नींब-विशेष वृक्षके हैं । तिनिश, स्यन्दन, नेमि, रथदु, अतिमुक्तक ॥ २६ ॥ वंजुल, चित्रकृत (तान्त) ये सात (पु०) नाम तिवस (तैंदुए) के हैं । पीतन, कपीतन, आम्रातक ये तीन (पु०) नाम आमलेके हैं । मधूक, गुडपुष्प, मधुद्रुम ॥ २७ ॥ वानप्रस्थ, मधुष्ठील ये पांच (पु०) नाम मधुवेके हैं । मधूलक यह एक (पु०) नाम जलमधुवेका है । पीलु, गुडफल, संसिन् (इन्नन्त) ये तीन (पु०) नाम पीलुवृक्षके हैं ॥ २८ ॥ अक्षोट, कन्दराल ये दो (पु०) नाम पर्वतपीलु अर्थात् अखरोटके हैं । अंकोट, निकोचक ये दो (पु०) नाम पिश्टेके हैं । पलाश, किंशुक, पर्ण, वातपोथ ये चार (पु०) नाम टाकके हैं । वेतस ॥ २९ ॥ रथ, अभ्रपुष्प, विदुर, शीत, वानीर, वंजुल ये सात (पु०) नाम वेतके हैं । परिव्याध, विदुल, नादेयी, अंबुवेतस ये चार (पु०) नाम जलवेतके हैं ॥ ३० ॥ सौभांजन, शिशु, तीक्ष्णगन्धक,

बिल्वे शाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि ।
 प्लक्षो जटी पर्कटी स्याद्व्यग्रोधो बहुपाद्वटः ॥ ३२ ॥
 गालवः शाबरो लोध्रस्तिरीटस्तिल्वमार्जनौ ।
 आम्रश्चूतो रसालोऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ॥ ३३ ॥
 कुम्भोलूखलकं क्लीबे कौशिको गुग्गुलुः पुरः ।
 शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो बाहुवारकः ॥ ३४ ॥
 राजादनं प्रियालः स्यात्सन्नकद्वर्धनुःपटः ।
 गंभारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥
 श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चाप्यथ द्वयोः ।
 कर्कधूर्वदरी कोलिः कोलं कुवलफेनिले ॥ ३६ ॥
 सौवीरं बदरं घोण्टाप्यथ स्यात्स्वादुकण्टकः ।
 विकंकतः सुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि ॥ ३७ ॥

अक्षीव, मोचक ये पांच (पु०) नाम सहजनेके हैं । मधुशिष्ट यह एक (पु०) नाम लाल फूलवाले सहजनेका है । अरिष्ट, फेनिल ये दो (पु०) नाम रीठेके हैं ॥ ३१ ॥ बिल्व, शांडिल्य, शैलूष, मालूर, श्रीफल ये पांच (पु०) नाम बेलवृक्षके हैं । प्लक्ष, जटिन्, पर्कटिन् ये तीन (पु०) नाम पिलखनके हैं । न्यग्रोध, बहुपाद् (दान्त), वट ये तीन (पु०) नाम बेलवृक्षके हैं ॥ ३२ ॥ गालव, शाबर, लोध्र, तिरीट, तिल्व, मार्जन ये छह (पु०) नाम लोध्रके हैं । आम्र, चूत, रसाल ये तीन (पु०) नाम आंबके हैं । सहकार यह एक (पु०) नाम अत्यन्त सुगन्धवाले आंबका है ॥ ३३ ॥ कुंभ, उलूखल, कौशिक, गुग्गुलु, पुर ये पांच नाम गूलके हैं । तहां कुंभ उलूखलक (न०) शेष (पु०) हैं । शेलु, श्लेष्मातक, शीत, उद्दाल, बहुवारक ये पांच (पु०) नाम लहसोडेके हैं ॥ ३४ ॥ राजादन, प्रियाल, सन्नकद्व, धनुःपट ये चार (पु०) नाम चिरोंजीके हैं । राजादन क्लीबभी है गंभारी, सर्वतोभद्रा, काश्मरी, मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥ श्रीपर्णी, भद्रपर्णी, काश्मर्य ये सात नाम कंभारीके हैं । काश्मर्य (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । कर्कधूर्वदरी, कोलि ये तीन (पु० स्त्री०) नाम बडबेरीके हैं । कोल, कुवल, फेनिल ॥ ३६ ॥ सौवीर, बदर, घोंटा ये छः नाम बेरके हैं । तहां घोंटा (स्त्री०) शेष (न०) हैं । स्वादुकंटक, विकंकत, सुवावृक्ष, ग्रन्थिल, व्याघ्रपाद् (दान्त

ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका ।
 तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके ॥ ३८ ॥
 काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुके ।
 गोलीढो श्वाटलो घण्टापाटलिर्मोक्षमुष्ककौ ॥ ३९ ॥
 तिलकः क्षुरकः श्रीमान्समौ पिचुलझावुकौ ।
 श्रीपार्णिका कुमुदिका कुम्भी कैडर्यकट्फलौ ॥ ४० ॥
 क्रमुकः पट्टिकारुख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।
 तूदस्तु यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च ॥ ४१ ॥
 तूलं च नीपप्रियककदम्बास्तु हरिप्रियः ।
 वीरवृक्षोऽरुष्करोऽग्निमुखी भल्लातकी त्रिषु ॥ ४२ ॥
 गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसुपार्श्वकाः ।
 पुक्षश्च तिन्तिडी चिंचाम्लिकाथो पीतसारके ॥ ४३ ॥

पांच (पु०) नाम वेहली (शमी) वृक्षके हैं ॥ ३७ ॥ ऐरावत, नागरंग,
 देयी, भूमिजम्बुका ये चार नाम नारंगीके हैं । प्रथम दो नाम (पु०)
 (स्त्री०) हैं । तिन्दुक, स्फूर्जक, कालस्कन्ध, शितिसारक ये चार नाम
 मुरनी (छोटे तैदुए) के हैं ॥ ३८ ॥ काकेन्दु, कुलक, काकतिन्दुक, का-
 कपीलुक ये चार (पु०) नाम काकतैदु अर्थात् कुचलेके हैं । गोलीढ,
 श्वाटल, घंटापाटलि, मोक्ष, मुष्कक ये पांच (पु०) नाम घंटापाटलि (का-
 कपाटरी) के हैं । घंटापाटलि (स्त्री०) भी है ॥ ३९ ॥ तिलक, क्षुरक,
 श्रीमत् (मत्स्यन्त) ये तीन (पु०) नाम फिरास (तालमखाने) के हैं ।
 पिचुल, झावुक ये दो (पु०) नाम झाउके हैं । श्रीपार्णिका, कुमुदिका,
 कुम्भी, कैडर्य, कट्फल ये पांच नाम कायफलके हैं । श्रीपार्णिका, कुमुदिका,
 कुम्भी (स्त्री०) शेष (पु०) हैं ॥ ४० ॥ क्रमुक, पट्टिकारुख्य, पट्टिन
 (मत्स्यन्त), लाक्षाप्रसादन ये चार (पु०) नाम लाल लोधके हैं । तूद,
 यूप, क्रमुक, ब्रह्मण्य, ब्रह्मदारु, तूल ये छः नाम पारस पीपलके हैं । ब्रह्म-
 दारु और तूल (न०) शेष (पु०) हैं ॥ ४१ ॥ नीप, प्रियक, कदम्ब,
 हरिप्रिय ये चार (पु०) नाम कदम्बके हैं । वीरवृक्ष (पु०), अरुष्कर
 (पु०), अग्निमुखी (स्त्री०), भल्लातकी ये चार नाम भिलावेके हैं । तहां
 भल्लातक शब्द त्रिलिंगी है ॥ ४२ ॥ गर्दभांड, कन्दराल, कपीतन, सुपार्श्वक,

सर्जकासनबन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः ।

साले तु सर्जकाश्चकणिकाः सस्यसंवरः ॥ ४४ ॥

नदीसर्जो वीरतरुः इन्द्रद्रुः ककुभोऽर्जुनः ।

राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायामय द्वयोः ॥ ४५ ॥

इंगुदी तापसतरुर्भूर्जे चर्मिमृदुत्वचौ ।

पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलिर्द्वयोः ॥ ४६ ॥

पिच्छा तु शाल्मली वेष्टे रोचनः कूटशाल्मलिः ।

चिरिविल्वो नक्तमालः करजश्च करञ्जके ॥ ४७ ॥

प्रकीर्यः पूतिकरजः पूतिकः कलिमारकः ।

करंजभेदाः षड्ग्रन्थो मर्कटचङ्गारवल्लरी ॥ ४८ ॥

रोही रोहितकः प्लीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः ।

गायत्री बालतनयः खदिरो दन्तधावनः ॥ ४९ ॥

लक्ष ये पांच (पु०) नाम लाखा पीपलके हैं । तित्तिडी, चिंचा, अमि
ये तीन (स्त्री०) नाम इमलीके हैं । पीतसारक ॥ ४३ ॥ सर्जक, अ
बन्धूकपुष्प, प्रियक, जीवक ये छः (पु०) नाम आसनाके हैं । साल, स
काश्य, अश्वकर्णक, सस्यसंवर ये पांच (पु०) नाम सालवृक्षके हैं ॥ ४४ ॥
नदीसर्ज, वीरतरु, इन्द्रद्रु, ककुभ, अर्जुन ये पांच (पु०) नाम कोह
र्जुन) वृक्षके हैं । राजादन (पु० न०), फलाध्यक्ष (पु०), क्षी
(स्त्री०) ये तीन नाम खिरनीके हैं ॥ ४५ ॥ इंगुदी (स्त्री० पु०) है ।
में इंगुद होता है । तापसतरु (पु०) ये दो नाम हिगनबेट (गोंदी
हैं । भूर्ज, चर्मिन् (इन्नन्त), मृदुत्वच् (चान्त) ये तीन (पु०)
भोजपत्रके हैं । पिच्छिला (स्त्री०), पूरणी (स्त्री०), मोचा (स्त्री
स्थिरायु (पु०), शाल्मलि (पु० न०) ये पांच नाम शंभलके हैं ॥ ४६ ॥
पिच्छा यह एक (स्त्री०) नाम शंभलक गोंदका है । रोचन (पु०)
कूटशाल्मलि (पु० स्त्री०) ये दो नाम काली शंभलके हैं । चिरि
नक्तमाल, करज, करंजक ये चार (पु०) नाम करंजुवाके हैं ॥ ४७ ॥
प्रकीर्य, पूतिकरज, पूतिक, कलिमारक ये चार (पु०) नाम कांटेदार
जुएके हैं । षड्ग्रन्थ (पु०), मर्कटी (स्त्री०), अंगारवल्लरी (स्त्री०)
तीन करंजुएके भेद हैं ॥ ४८ ॥ रोहिन् (इन्नन्त), रोहितक, प्लीह

अरिमेदो विट्खदिरं कदरः खदिरं सिते ।
 सोमवल्लकोऽप्यथ व्याघ्रपुच्छगंधर्वहस्तकौ ॥ ५० ॥
 एरण्ड उरुवृक्षश्च रुचकश्चित्रकश्च सः ।
 चंचुः पञ्चांगुलो मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः ॥ ५१ ॥
 अल्पा शमी शमीरः स्याच्छमी सक्तुफला शिवा ।
 पिण्डीतको मरुबकः श्वसनः करहाटकः ॥ ५२ ॥
 शल्यश्च मदनं शक्रपादपः पारिभद्रकः ।
 भद्रदारु द्रुक्किलिमं पीतदारु च दारु च ॥ ५३ ॥
 पूतिकाष्ठं च सप्त स्युर्देवदारुण्यथ द्वयोः ।
 पाटलिः पाटला मोघा काचस्थाली फलेरुहा ॥ ५४ ॥
 कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी श्यामा तु महिलाद्वया ।
 लता गोवन्दिनी गुद्रा प्रियंगुः फलिनी फली ॥ ५५ ॥
 विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकश्च सा ।
 मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकटुङ्गटुण्डकाः ॥ ५६ ॥

डिमपुष्पक ये चार (पु०) नाम लाल रोहिडा (करंज) के हैं । गा-
 धी, बालतनय, खदिर, दंतधावन ये चार नाम खैरके हैं । गायत्री
 स्त्री०) शेष (पु०) हैं ॥ ४९ ॥ अरिमेद, विट्खदिर ये दो (पु०)
 म दुर्गंधवाले खैरके हैं । कदर, सोमवल्लक ये दो (पु०) नाम सुपेद
 रके हैं । व्याघ्रपुच्छक, गंधर्वहस्तक ॥ ५० ॥ एरण्ड, उरुवृक्ष, रुचक, चि-
 क, चञ्चु, पञ्चांगुल, मंड, वर्धमान, व्यडम्बक ये ग्यारह (पु०) नाम अ-
 डके हैं ॥ ५१ ॥ शमीर यह एक (पु०) नाम स्वल्पआकारवाली श-
 का है । शमी, शक्तुफला, शिवा ये तीन (स्त्री०) नाम शमीके हैं ।
 डीतक, मरुबक, श्वसन, करहाटक ॥ ५२ ॥ शल्य, मदन ये छः (पु०)
 म मनफलके हैं । शक्रपादप (पु०), पारिभद्रक (पु०), भद्रदारु
 पु० न०), द्रुक्किलिम (न०), पीतदारु (न०), दारु (न०) ॥ ५३ ॥
 तिकाष्ठ (न०) ये सात नाम देवदारुके हैं । पाटलि, पाटला, मोघा,
 काचस्थाली, फलेरुहा ॥ ५४ ॥ कृष्णवृन्ता, कुबेराक्षी ये सात (स्त्री०)
 म पाटलके हैं । तहां पाटलिशब्द (पु०) भी है । श्यामा, महिला,
 ता, गोवन्दिनी, गुद्रा, प्रियंगु, फलिनी, फली ॥ ५५ ॥ विष्वक्सेना, गंध-

स्योनाकशुकनासर्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः ।

शोणकश्चारलौ तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु ॥ ५७ ॥

अमृता च वयस्था च त्रिलिङ्गस्तु विभीतकः ।

नाक्षस्तुषः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः ॥ ५८ ॥

अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनामृता ।

हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ५९ ॥

पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं चाथ द्रुमोत्पलः ।

कर्णिकारः परिव्याधो लकुचो लिकुचो डहुः ॥ ६० ॥

पनसः कण्टकिफलो निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः ।

काकोदुम्बरिका फलगुर्मलयूर्जघनेफला ॥ ६१ ॥

अरिष्टः सर्वतोभद्रहिङ्गुनिर्यासमालकाः ।

पिचुमंदश्च निम्बेऽथ पिच्छिलाऽगुरुशिंशपा ॥ ६२ ॥

फली, कारंभा, प्रियक ये बारह नाम मेहदीके हैं । तहां प्रियकशब्द (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । मंडकपर्ण, पत्रोर्ण, नट, कटुंग, टुटुक ॥ ५६ ॥ स्योना, शुकनास, ऋक्ष, दीर्घवृन्त, कुटन्नट, शोणक, अरल ये बारह (पु०) नाम शोनापाठेके हैं । तिष्यफला (स्त्री०), आमलकी ॥ ५७ ॥ अमृता (स्त्री०) वयस्था (स्त्री०) ये चार नाम आवलेके हैं । तहां आमलकी शब्द लिंगी है । विभीतक, अक्ष, तुष, कर्षफल, भूतावास, कलिद्रुम ये छः नाम बहेडेके हैं । तहां विभीतकशब्द त्रिलिंगी है, अक्षशब्द आदि (पु०) ॥ ५८ ॥ अभया, अव्यथा, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, हरीत, हैमवती, चेतकी, श्रेयसी, शिवा ये ग्यारह (स्त्री०) नाम हरडके ॥ ५९ ॥ पीतद्रु (पु०), सरल (पु०), पूतिकाष्ठ (न०) ये तीन नाम देवदारविशेषके हैं । द्रुमोत्पल, कर्णिकार, परिव्याध ये तीन (पु०) नाम कर्णिकार वृक्षके हैं । लकुच, लिकुच, डहु ये तीन (पु०) नाम ओंठ (बडहल) वृक्षके हैं ॥ ६० ॥ पनस, कण्टकिफल ये दो (पु०) नाम पनसके हैं । निचुल, हिज्जल, अंबुज ये तीन (पु०) नाम जलके भेद हैं । काकोदुम्बरिका, फलगु, मलयू, जघनेफला ये चार (स्त्री०) नाम काली गूलरके हैं ॥ ६१ ॥ अरिष्ट, सर्वतोभद्र, हिङ्गुनिर्यास, माल

कपिला भस्मगर्भा सा शिरीषस्तु कपीतनः ।
 भण्डिलोऽप्यथ चाम्पेयश्चंपको हेमपुष्पकः ॥ ६३ ॥
 एतस्य कलिका गन्धफली स्यादथ केसरे ।
 बकुलो वज्जुलोऽशोके समौ करकदाडिमौ ॥ ६४ ॥
 चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः ।
 जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥
 श्रीपर्णमग्निमन्थः स्यात्कणिका गणिकारिका ।
 जयोऽथ कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका ॥ ६६ ॥
 एतस्यैव कलिंगेन्द्रयवभद्रयवं फले ।
 कृष्णपाकफलाविग्रसुषेणाः करमर्दके ॥ ६७ ॥
 कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छोऽप्यथ सिन्दुके ।
 सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीद्राणिकेत्यपि ॥ ६८ ॥

पिचुमन्द, निंब ये छः पुँल्लिंग नाम नींबके हैं । पिच्छिला, अगुरुशिंशपा
 ॥ ६२ ॥ कपिला, भस्मगर्भा ये चार (स्त्री०) नाम शीशमके हैं । शि-
 ष, कपीतन, भण्डिल ये तीन (पु०) नाम शिरसके हैं । चांपेय, चंपक,
 हेमपुष्पक ये तीन (पु०) नाम सुनहरी चमेलीके हैं ॥ ६३ ॥ गंधफली
 यह एक (स्त्री०) नाम पूर्वोक्त चमेलीकी कलीका है । केसर, बकुल ये
 दो (पु०) नाम औवलवृक्ष अर्थात् बकुलके हैं । वंजुल, अशोक ये दो
 (पु०) नाम अशोकवृक्षके हैं । करक, दाडिम ये दो (पु०) नाम अ-
 नारके हैं ॥ ६४ ॥ चांपेय, केसर, नागकेशर, काञ्चनाह्वय ये चार (पु०)
 नाम नागकेशरके हैं । जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी, वैजयन्तिका ये पांच
 (स्त्री०) नाम अरनीके हैं ॥ ६५ ॥ श्रीपर्ण (न०), अग्निमन्थ (पु०),
 कणिका (स्त्री०), गणिकारिका (स्त्री०), जय (पु०) ये पांच
 नाम नरवेलके हैं । कुटज, शक्र, वत्सक, गिरिमल्लिका ये चार नाम
 कुरैआके हैं । गिरिमल्लिका (स्त्री०) शेष (पु०) हैं ॥ ६६ ॥ कलिंग,
 इन्द्रयव, भद्रयव ये तीन (त्रि०) नाम इन्द्रजवके हैं । कृष्णपाकफल,
 अविग्र, सुषेण, करमर्दक ये चार (पु०) नाम करोंदेके हैं ॥ ६७ ॥ काल-
 स्कन्ध, तमाल, तापिच्छ ये तीन (पु०) नाम तमालके हैं । सिन्दुक (पु०),
 सिन्दुवार (पु०), इन्द्रसुरस (पु०), निर्गुण्डी (स्त्री०), इन्द्राणिका

वेणी गरा गरी देवताडो जीमूत इत्यापि ।
 श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी तृणशून्यं तु मल्लिका ॥ ६९ ॥
 भूपदी शीतभीरुश्च सैवास्फोटा वनोद्भवा ।
 शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा ॥ ७० ॥
 सिताऽसौ श्वेतसुरसा भूतवेश्यथ मागधी ।
 गणिका यूथिकाऽम्बष्ठा सा पीता हेमपुष्पिका ॥ ७१ ॥
 अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता ।
 सुमना मालती जातिः सप्तला नवमालिका ॥ ७२ ॥
 माध्यं कुन्दं रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः ।
 सहा कुमारी तरणिरम्लानस्तु महासहा ॥ ७३ ॥
 तत्र शोणे कुरवकस्तत्र पीते कुरण्टकः ।
 नीली झिण्टी द्वयोर्बाणा दासी चार्तगलश्च सा ॥ ७४ ॥

(स्त्री०) ये पांच नाम संभालूके हैं ॥ ६८ ॥ वेणी, गरा, गरी, देव
 जीमूत ये पांच नाम देवदालीके हैं । देवताड और जीमूत (पु०)
 (स्त्री०) हैं । श्रीहस्तिनी, भूरुण्डी ये दो (स्त्री०) नाम अरबीशाकके
 तृणशून्य (न०), मल्लिका (स्त्री०) ॥ ६९ ॥ भूपदी (स्त्री०), शी
 (पु०) ये चार नाम मोगरेके हैं । आस्फोटा यह एक (स्त्री०) नाम
 मोगरेका है । शेफालिका, सुवहा, निर्गुण्डी, नीलिका ये चार (स्त्री०)
 रानासंभालूके हैं ॥ ७० ॥ श्वेतसुरसा, भूतवेशी ये दो (स्त्री०) नाम
 संभालूके हैं । मागधी, गणिका, यूथिका, अंबष्ठा ये चार (स्त्री०)
 जुईके हैं । हेमपुष्पिका यह एक (स्त्री०) नाम पीली जुईका है ॥
 अतिमुक्त (पु०), पुण्ड्रक (पु०), वासन्ती (स्त्री०), माधवीलता (स्त्री०)
 चार नाम कुन्दके भेदके हैं । सुमना, मालती, जाति ये तीन (स्त्री०)
 चमेलीके हैं । सप्तला, नवमालिका ये दो (स्त्री०) नाम बेलमोगर
 ॥ ७२ ॥ माध्य, कुन्द ये दो (पु० न०) नाम कुन्दके हैं । रक्तक,
 बन्धुजीवक ये तीन (पु०) नाम दुपहरियाके हैं । सहा, कुमारी,
 ये तीन (स्त्री०) नाम सेवतीगुलाबके हैं । अम्लान (पु०), मह
 (स्त्री०) ये दो नाम आबोली (कांटेदार सेवती) के हैं ॥ ७३ ॥
 यह एक (पु०) नाम लाल कुण्डेका है कुण्टक यह एक (पु०) नाम

सैरेयकस्तु झिण्टी स्यात्तस्मिन्कुरबकोऽरुणे ।
 पीता कुरण्टको झिण्टी तस्मिन्सहचरी द्वयोः ॥ ७५ ॥
 ओण्ड्रपुष्पं जपापुष्पं वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ।
 प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः ॥ ७६ ॥
 करवीरे करीरे तु क्रकरग्रन्थिलावुभौ ।
 उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तूरः कनकाह्वयः ॥ ७७ ॥
 मातुलो मदनश्चास्य फले मातुलपुत्रकः ।
 फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलुङ्गके ॥ ७८ ॥
 समीरणो मरुबकः प्रस्थपुष्पः फणिज्जकः ।
 जम्बीरोऽप्यथ पर्णासे कठिञ्जरकुठेरकौ ॥ ७९ ॥
 सितेऽर्जकोऽत्र पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः ।
 अर्काह्वयसुकाऽऽस्फोटगणरूपविकीरणाः ॥ ८० ॥

कुरंटा अर्थात् पीले पियावासेका है । बाणा (स्त्री० पु०), दासी (स्त्री०),
 मार्सगल (पु०) ये तीन नाम नीली झिण्टीके हैं ॥ ७४ ॥ सैरेयक (पु०),
 झिण्टी (स्त्री०) ये दो नाम कुरंटेके हैं । कुरबक यह एक (पु०) नाम
 कुरवर्ण कुरंटेका है । कुरंटक यह एक (पु०) नाम पीले कुरंटेका है ।
 सहचरी यह भी कुरंटेका नाम है तहां सञ्चरशब्द (पु० स्त्री०) है ॥ ७५ ॥
 ओण्ड्रपुष्प, जपापुष्प ये दो (न०) नाम जास्वंद (गुडहल) के हैं । वज्र-
 पुष्प यह एक (न०) नाम तिलोंके फलका है । प्रतिहास, शतप्रास, चण्डात,
 हयमारक ॥ ७६ ॥ करवीर ये पांच (पु०) नाम कनेरके हैं । करीर,
 क्रकर, ग्रन्थिल ये तीन (पु०) नाम करीलके हैं । उन्मत्त, कितव, धूर्त,
 धत्तूर, कनकाह्वय ॥ ७७ ॥ मातुल, मदन ये सात (पु०) नाम धतूरेके
 हैं । मातुलपुत्रक यह एक (पु०) नाम धतूरेके फलका है । फलपूर,
 बीजपूर, रुचक, मातुलङ्गक ये चार (पु०) नाम बिजोरेके हैं ॥ ७८ ॥
 समीरण, मरुबक, प्रस्थपुष्प, फणिज्जक, जम्बीर ये पांच नाम सुपेद मरवाके
 हैं । पर्णास, कठिञ्जर, कुठेरक ये तीन (पु०) नाम पर्णासके भेदके हैं
 ॥ ७९ ॥ अर्जक यह एक (पु०) नाम सुपेद पर्णासका है । पाठिन
 (द्रवन्त), चित्रक, वह्निसंज्ञक ये तीन (पु०) नाम चीतेके हैं । अर्काह्व,

मन्दारश्चार्कपर्णोऽत्र शुक्लेऽलर्कप्रतापसौ ।
 शिवमल्ली पाशुपत एकाष्टीलो बुको वसुः ॥ ८१ ॥
 वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि ।
 वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकाऽमृता ॥ ८२ ॥
 जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि ।
 मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी सुवा ॥ ८३ ॥
 मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ।
 पाठाऽम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ॥ ८४ ॥
 एकाष्टीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका ।
 कटुः कटम्भराऽशोकरोहिणी कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥
 मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्राङ्गी शकुलादनी ।
 आत्मगुप्ताऽजहाऽव्यण्डा कण्डुरा प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥
 ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुश्च मर्कटी ।
 चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ॥ ८७ ॥

वसुक, आस्फोट, गणरूप, विकीरण ॥ ८० ॥ मन्दार, अर्कपर्ण
 (पु०) नाम आकके हैं । अलर्क, प्रतापस ये दो (पु०) नाम सुपे
 कके हैं । शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्टील, बुक, वसु ये पाँच नाम
 भेदके हैं । शिवमल्ली (स्त्री०) शेष (पु०) हैं ॥ ८१ ॥ आगेके
 पर्णीतक सब शब्द (स्त्री०) हैं । वन्दा, वृक्षादनी, वृक्षरुहा, जीव
 ये चार नाम अमरवेलेके हैं । वत्सादनी, छिन्नरुहा, गुडूची, तन्त्रिका,
 ॥ ८२ ॥ जीवन्तिका, सोमवल्ली, विशल्या, मधुपर्णी ये नव नाम गि
 हैं । मूर्वा, देवी, मधुरसा, मोरटा, तेजनी, सुवा ॥ ८३ ॥ मधूलिका
 श्रेणी, गोकर्णी, पीलुपर्णी ये दश नाम मरोरफलीके हैं । पाठा, अ
 विद्धकर्णी, स्थापनी, श्रेयसी, रसा ॥ ८४ ॥ एकाष्टीला, पापचेली
 चीना, वनतिक्तिका ये दश नाम पाठाके हैं । कटु, कटम्भरा, अश
 हिणी, कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥ मत्स्यपित्ता, कृष्णभेदी, चक्राङ्गी, शकु
 ये आठ नाम कुटकीके हैं । आत्मगुप्ता, अजहा, अव्यण्डा, कण्डुरा
 प्रायणी ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता, शूकशिम्बि, कपिकच्छु, मर्कटी ये न

प्रत्यक्श्रेणी सुतश्रेणी रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ।
 अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ८८ ॥
 प्रत्यक्पर्णी केशपर्णी किणिही खरमञ्जरी ।
 हंजिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥
 अङ्गारवल्ली बालेयशाकवर्बरवर्धकाः ।
 मंजिष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा कालमेषिका ॥ ९० ॥
 मण्डूकपर्णी मण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्यपि ।
 यासो यशसो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ॥ ९१ ॥
 रोदनी कच्छुराऽनन्ता समुद्रान्ता दुरालभा ।
 पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्यंघ्रिवल्लिका ॥ ९२ ॥
 क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशी धावनी गुहा ।
 निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका ॥ ९३ ॥
 प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ।
 नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥

चके हैं । चित्रा, उपचित्रा, न्यग्रोधी, द्रवन्ती, शम्बरी, वृषा ॥ ८७ ॥
 प्रत्यक्श्रेणी, सुतश्रेणी, रण्डा, मूषिकपर्णा ये दश नाम मूषापर्णिके हैं ।
 हातक (स्त्री०) हैं । अपामार्ग (पु०), शैखरिक (पु०), धामार्गव
 पु०), मयूरक (पु०) ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पर्णी (स्त्री०), केशपर्णी
 स्त्री०), किणिही (स्त्री०), खरमञ्जरी (स्त्री०) ये आठ नाम
 गाके हैं । हंजिका, ब्राह्मणी, पद्मा, भार्गी, ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥
 गारवल्ली, बालेयशाक, वर्बर, वर्धक ये नव नाम भारंगीके हैं । बालेय-
 शाक आदि तीन (पु०) हैं शेष (स्त्री०) हैं । मंजिष्ठा, विकसा, जिङ्गी,
 मङ्गा, कालमेषिका ॥ ९० ॥ मण्डूकपर्णी, मण्डीरी, भण्डी, योजनवल्ली ये
 च (स्त्री०) नाम मजीठके हैं । यास, यशस, दुःस्पर्श, धन्वयास, कुना-
 शक ये (पु०) हैं ॥ ९१ ॥ रोदनी, कच्छुरा, अनन्ता, समुद्रान्ता, दुरा-
 भा ये पांच (स्त्री०) ये दश नाम धमासेके हैं । पृश्निपर्णी, पृथक्पर्णी,
 चित्रपर्णी, अंघ्रिवल्लिका ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनी,
 गुहा ये नव (स्त्री०) नाम पिठवनके हैं । निदिग्धिका, स्पृशी, व्याघ्री,
 बृहती, कण्टकारिका ॥ ९३ ॥ प्रचोदनी, कुली, क्षुद्रा, दुःस्पर्शा, राष्ट्रिका
 ६ अमर.

रञ्जनी श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला च नीलिनी ।
 अवलगुजः सोमराजी सुवलिः सोमवल्लिका ॥ ९५ ॥
 कालमेषी कृष्णफला बाकुची पूतिफल्यपि ।
 कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा ॥ ९६ ॥
 उषणा पिप्पली शौण्डी कोलाऽथ करिपिप्पली ।
 कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरः पुमान् ॥ ९७ ॥
 चव्यं तु चविका काकचिञ्चीगुञ्जे तु कृष्णला ।
 पलंकषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ॥ ९८ ॥
 गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि ।
 विश्वा विषा प्रतिविषातिविषोपविषारुणा ॥ ९९ ॥
 शृङ्गी महौषधं चाथ क्षीरावी दुग्धिका समे ।
 शतमूली बहुसुताऽभीरुरिन्दीवरी वरी ॥ १०० ॥

ये दश (स्त्री०) नाम कटेलीके हैं । नीली, काला, क्लीतकिका, ग्राम
 मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥ रंजनी, श्रीफली, तुत्था, द्रोणी, दोला, नी
 ये ग्यारह (स्त्री०) नाम नीलके हैं । अवलगुज (पु०), सोम
 सुवलि, सोमवल्लिका ॥ ९५ ॥ कालमेषी, कृष्णफला, बाकुची, पूति
 ये (स्त्री०) कुल आठ नाम बावचीके हैं । कृष्णा, उपकुल्या, वैदेही, मा
 चपला, कणा ॥ ९६ ॥ उषणा, पिप्पली, शौण्डी, कोला ये दश (स्त्री०)
 नाम पीपलके हैं । करिपिप्पली, कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशि
 पांच नाम गजपीपलके हैं । तहां वशिरशब्द (पु०) है शेष (स्त्री०)
 ॥ ९७ ॥ चव्य (न०), चविका (स्त्री०) ये दो नाम चव्य (पी
 लकडी) के हैं । काकचिञ्ची, गुंजा, कृष्णला ये तीन (स्त्री०) नाम
 मिटीके हैं । पलंकषा (स्त्री०), इक्षुगन्धा (स्त्री०), श्वदंष्ट्रा (स्त्री०)
 स्वादुकण्टक (पु०) ॥ ९८ ॥ गोकण्टक (पु०), गोक्षुरक (पु०)
 वनशृङ्गाट (पु०) ये सात नाम गोखरूके हैं । विश्वा, विषा, प्रति
 अतिविषा, उपविषा, अरुणा ॥ ९९ ॥ शृङ्गी, महौषध ये आठ नाम
 सके हैं । महौषध (न०) शेष (स्त्री०) हैं । क्षीरावी, दुग्धिका
 (स्त्री०) नाम दूधके हैं । शतमूली, बहुसुता, अभीरु, इन्दीवरी

ऋष्यप्रोक्ताऽभीरुपत्रीनारायण्यः शतावरी ।

अहेरुस्य पीतद्रुकालीयकहरिद्रवः ॥ १०१ ॥

दावीं पचंपचा दारुहरिद्रा पर्जनीत्यपि ।

वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ॥ १०२ ॥

शुक्ला हैमवती वैद्यमातृसिंहचौ तु वाशिका ।

वृषोऽटरूषः सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः ॥ १०३ ॥

आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णुक्रान्ताऽपराजिता ।

इक्षुगन्धा तु काण्डेक्षुकोकिलाक्षेक्षुरक्षुराः ॥ १०४ ॥

शालेयः स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसिः ।

मिश्रेयाप्यथ सीहुण्डो वज्रः स्नुक् स्नुही गुडा ॥ १०५ ॥

समन्तदुग्धाऽथो वेल्ममोघा चित्रतण्डुला ।

तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुंनपुंसकम् ॥ १०६ ॥

१०० ॥ ऋष्यप्रोक्ता, अभीरुपत्री, नारायणी, शतावरी, अहेरु ये दस स्त्री०) नाम शतावरीके हैं । पीतद्रु, कालीयक, हरिद्र ये तीन नाम पु०) हैं ॥ १०१ ॥ दावीं, पचंपचा, दारुहरिद्रा, पर्जनी ये चार (स्त्री०) ये सात नाम दारुहर्द्वीके हैं । वचा, उग्रगन्धा, षड्ग्रन्था, गोलोमी, शतपर्विका ये पांच (स्त्री०) नाम वचके हैं ॥ १०२ ॥ हैमवती यह एक स्त्री०) नाम सुपेद वचका है । वैद्यमातृ, सिंही, वाशिका ये तीन म (स्त्री०) हैं । वृष, अटरूष, सिंहास्य, वासक, वाजिदन्तक ये पु०) हैं ये आठ नाम वांसाके हैं ॥ १०३ ॥ आस्फोटा, गिरिकर्णी, विष्णुक्रान्ता, अपराजिता ये चार (स्त्री०) नाम विष्णुक्रां- के हैं । इक्षुगन्धा, काण्डेक्षु, कोकिलाक्ष, इक्षुर, क्षुर ये पांच नाम वेल्मखानेके हैं । तहां इक्षुगन्धा (स्त्री०) शेष (पु०) हैं ॥ १०४ ॥ शालेय (पु०), शीतशिव (पु०), छत्रा (स्त्री०), मधुरिका (स्त्री०), मिसि (स्त्री०), मिश्रेया (स्त्री०) ये छः नाम सोंफके हैं । सीहुण्ड (स्त्री०), वज्र (पु०), स्नुह (हकारान्त स्त्री०), स्नुही (स्त्री०), गुडा (स्त्री०), समन्तदुग्धा (स्त्री०) ये छः नाम थोहरके हैं ॥ १०५ ॥ वेल्म (पु० न०), अमोघा (स्त्री०), चित्रतण्डुला (स्त्री०), तण्डुल (पु०), कृमिघ्न (पु०), विडङ्ग (पु० न०) ये छः नाम वायविडङ्गके हैं ॥ १०६ ॥

बला वाट्यालका घण्टारवा तु शणपुष्पिका ।
 मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्री मधुरसेति च ॥ १०७ ॥
 सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् ।
 त्रिभण्डी रोचनी श्यामापालिन्द्यौ तु सुषेणिका ॥ १०८ ॥
 काला मसूरविदलाऽर्धचन्द्रा कालमेषिका ।
 मधुकं क्लितकं यष्टिमधुकं मधुयष्टिका ॥ १०९ ॥
 विदारी क्षीरशुक्लेशुगन्धा क्रोष्ट्री तु या सिता ।
 अन्या क्षीरविदारी स्यान्महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ ११० ॥
 लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी ।
 खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः ॥ १११ ॥
 गोपी श्यामा सारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा ।
 योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धेरप्याद्वया इमे ॥ ११२ ॥

बला, वाट्यालका ये दो (स्त्री०) नाम खरैहटीके हैं । घण्टारवा, पुष्पिका ये दो (स्त्री०) नाम शणपुष्पीके हैं । मृद्वीका, गोस्तनी, द्राक्षा स्वाद्री, मधुरसा ये पांच (स्त्री०) नाम मुनक्का दाखके हैं ॥ १०७ ॥
 सर्वानुभूति, सरला, त्रिपुटा, त्रिवृता, त्रिवृत्, त्रिभंडी, रोचनी ये (स्त्री०) नाम निसोतके हैं । श्यामा, पालिन्दी, सुषेणिका ॥ १०८ ॥
 काला, मसूरविदला, अर्धचन्द्रा, कालमेषिका ये सात (स्त्री०) नाम निसोतके हैं । मधुक (न०), क्लितक (न०), यष्टिमधुक (न०), यष्टिका (स्त्री०) ये चार नाम मुलहठीके हैं ॥ १०९ ॥ विदारी, शुक्ला, इक्षुगन्धा, क्रोष्ट्री ये चार (स्त्री०) नाम सुपेद भूमिकोहलेके क्षीरविदारी, महाश्वेता, ऋक्षगन्धिका ये तीन (स्त्री०) नाम काले भूमिकोहलेके हैं ॥ ११० ॥ लांगली, शारदी, तोयपिप्पली, शकुलादनी ये (स्त्री०) नाम जलपीपलके हैं । खराश्वा (स्त्री०), कारवी (स्त्री०), दीप्य (पु०), मयूर (पु०), लोचमस्तक (पु०) ये पांच नाम मोर (अजमोदी) के हैं ॥ १११ ॥ गोपी, श्यामा, सारिवा, अनन्ता, उत्पलरिवा ये पांच (स्त्री०) नाम सरयाईके हैं । योग्य, ऋद्धि, सिद्धि, ये चार नाम ऋद्धि औषधीके हैं । योग्य (न०) शेष (स्त्री०) हैं ॥ ११२ ॥

कदली वारणबुसा रम्भा मोचांशुमत्फला ।
 काष्ठीला मुद्रपर्णी तु काकमुद्रा सहेत्यपि ॥ ११३ ॥
 वार्ताकी हिंगुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रधर्षिणी ।
 नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥
 नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी छत्राकी सुवहा च सा ।
 विदारिगन्धांशुमती सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥ ११५ ॥
 तुंडिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बदरेति च ।
 भारद्वाजी तु सा वन्या शृङ्गी तु ऋषभो वृषः ॥ ११६ ॥
 गाङ्गेरुकी नागबला झषा ह्रस्वगवेधुका ।
 धामार्गवो घोषकः स्यान्महाजाली स पीतकः ॥ ११७ ॥
 ज्योत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका ।
 स्याल्लाङ्गलिक्यग्निशिखा काकाङ्गी काकनासिका ॥ ११८ ॥

ही नाम वृद्धि औषधीकेभी हैं ॥ ११२ ॥ कदली, वारणबुसा, रम्भा, मोचा, शुमत्फला, काष्ठीला ये छः (स्त्री०) नाम केलाके हैं । मुद्रपर्णी, काक-
 मुद्रा, सहा ये तीन (स्त्री०) नाम रानी मूंगके हैं ॥ ११३ ॥ वार्ताकी,
 हिंगुली, सिंही, भण्टाकी, दुष्प्रधर्षिणी ये पांच (स्त्री०) नाम बड़ी कटेलीके
 । नाकुली, सुरसा, रास्ना, सुगन्धा, गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥ नकुलेष्टा,
 भुजङ्गाक्षी, छत्राकी, सुवहा ये नव (स्त्री०) नाम रास्नाके हैं । विदारि-
 गन्धा, अंशुमती, सालपर्णी, स्थिरा, ध्रुवा ये पांच (स्त्री०) नाम सालवनके
 ॥ ११५ ॥ तुंडिकेरी, समुद्रान्ता, कार्पासी, बदरा ये चार (स्त्री०) नाम
 पासके हैं । कार्पासः (पु०) है । भारद्वाजी यह एक (स्त्री०) नाम रानी
 निकपासका है । शृङ्गिन्, ऋषभ, वृष ये तीन (पु०) नाम ऋषभक औषधी
 काकडासिगी) के हैं ॥ ११६ ॥ गाङ्गेरुकी, नागबला, झषा, ह्रस्वगवेधुका
 चार (स्त्री०) नाम बड़ी खैरहटीके हैं । धामार्गव, घोषक ये दो (पु०)
 नाम कडवी तोरईके हैं । महाजाली यह एक (स्त्री०) नाम पीले वर्णकी
 रईका है ॥ ११७ ॥ ज्योत्स्नी, पटोलिका, जाली ये तीन (स्त्री०) नाम
 बलके हैं । नादेयी, भूमिजम्बुका ये दो (स्त्री०) नाम भूमिजामनके हैं ।
 जलिकी, अग्निशिखा ये दो (स्त्री०) नाम कलहारीके हैं । काकाङ्गी,
 काकनासिका ये दो (स्त्री०) नाम मकोहविशेषके हैं ॥ ११८ ॥

गोधापदी तु सुवहा सुसली तालमूलिका ।
 अजशृङ्गी विषाणी स्याद्गोजिह्वादार्विके समे ॥ ११९ ॥
 ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवलचप्यथ द्विजा ।
 हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ॥ १२० ॥
 एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ।
 वालुकं चाथ पालङ्क्यां मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरु ॥ १२१ ॥
 बालं द्वीबेरबर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च ।
 कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशिवानि तु ॥ १२२ ॥
 शैलेयं तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा ।
 गन्धिनी गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा ॥ १२३ ॥
 महेरुणा कुन्दुरुकी सलकी ह्लादिनीति च ।
 अग्निज्वालासुभिक्षे तु धातकी धातुपुष्पिका ॥ १२४ ॥
 पृथ्वीका चन्द्रवालैला निष्कुटिर्बहुलाऽथ सा ।
 सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्या कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटिः ॥ १२५ ॥

गोधापदी, सुवहा ये दो (स्त्री०) नाम लाल लज्जावतीके हैं ।
 तालमूलिका ये दो (स्त्री०) नाम मुसलीके हैं । अजशृङ्गी, विषाणी
 (स्त्री०) नाम मेढासींगीके हैं । गोजिह्वा, दार्विका ये दो (स्त्री०)
 गोभीशाकके हैं ॥ ११९ ॥ ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, नागवल्ली ये तीन
 नाम नागरपानकी बेलिके हैं । द्विजा, हरेणु, रेणुका, कौन्ती, कपिला,
 गन्धिनी ये छः (स्त्री०) नाम रेणुकबीजके हैं ॥ १२० ॥ एलावालुक,
 सुगन्धि, हरिवालुक, वालुक ये पांच (न०) नाम अतरके हैं ।
 (स्त्री०), मुकुन्द (पु०), कुन्द (पु०), कुन्दुरु (पु० स्त्री०)
 नाम पालकशाकके हैं ॥ १२१ ॥ बाल, द्वीबेर, बर्हिष्ठ, उदीच्य, ये
 नाम ये पांच (न०) नाम नेत्रवालाके हैं । कालानुसार्य, वृद्ध, अ
 शीतशिव ॥ १२२ ॥ शैलेय ये पांच (न०) नाम शिलाजीतके हैं । त
 दैत्या, गन्धकुटी, मुरा, गन्धिनी ये पांच (स्त्री०) नाम तालीसप
 गजभक्ष्या, सुवहा, सुरभी, रसा ॥ १२३ ॥ महेरुणा, कुन्दुरुकी,
 ह्लादिनी ये आठ (स्त्री०) नाम सालयीके हैं । अग्निज्वाला,
 धातकी, धातुपुष्पिका ये चार (स्त्री०) नाम धायके हैं ॥ १२४ ॥

व्याधिः कुष्ठं पारिभाव्यं वाप्यं पाकलमुत्पलम् ।
 शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात्केशिन्यथ वितुन्नकः ॥ १२६ ॥
 झटामलाज्झटा ताली शिवा तामलकीति च ।
 प्रपौण्डरीकं पौण्डर्यमथ तुन्नः कुबेरकः ॥ १२७ ॥
 कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षोऽथ राक्षसी ।
 चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पत्रगणहासकाः ॥ १२८ ॥
 व्याडायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् ।
 सुषिरा विद्रुमलता कपोतांग्रिर्नटी नली ॥ १२९ ॥
 धमन्यञ्जनकेशी च हनुर्हृद्विलासिनी ।
 शुक्तिः शङ्खः खुरः कोलदलं नखमथाढकी ॥ १३० ॥
 काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृत्तालकसुराष्ट्रजे ।
 कुटन्नटं दाशपुरं वानेयं परिपेलवम् ॥ १३१ ॥

चन्द्रवाला, एला, निष्कुटी, बहुला ये पांच (स्त्री०) नाम इलायचीके हैं । उपकुंचिका, तुल्या, कोरंगी, त्रिपुटा, त्रुटि ये पांच (स्त्री०) नाम छोटी इलायचीके हैं ॥ १२६ ॥ व्याधि, कुष्ठ, पारिभाव्य, वाप्य, पाकल, उत्पल ये छः नाम कूटके हैं । व्याधिशब्द (पु०) शेष (न०) हैं । शंखिनी, चोरपुष्पी, केशिनी ये तीन (स्त्री०) नाम चोरखेलिके हैं । वितुन्नक ॥ १२६ ॥ झटामला, अज्झटा, ताली, शिवा, तामलकी ये छः नाम भूमिआंवलेके हैं । वितुन्नकशब्द (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । प्रपौण्डरीक, पौण्डर्य ये दो (न०) नाम स्थलकमलके हैं । तुन्न, कुबेरक ॥ १२७ ॥ कुणि, कच्छ, कान्तलक, नन्दिवृक्ष ये छः (पु०) नाम नांदरूखीके हैं । राक्षसी (स्त्री०), चंडा (स्त्री०), धनहरी (स्त्री०), क्षेम (पु०), दुष्पत्र (पु०), गणहासक (पु०) ये छः नाम किरमाणी अजमायनके हैं ॥ १२८ ॥ व्याडायुध, व्याघ्रनख, करज, चक्रकारक ये चार (न०) नाम व्याघ्रनखके हैं । सुषिरा, विद्रुमलता, कपोतांग्रि, नटी, नली ॥ १२९ ॥ धमनी, अंजनकेशी ये सात (स्त्री०) नाम पवारीके हैं । हनु (स्त्री०), हृद्विलासिनी (स्त्री०), शुक्ति (स्त्री०), शंख (पु०), खुर (पु०), कोलदल (न०), नख (न०) ये सात नाम नखलके हैं । आढकी (स्त्री०) ॥ १३० ॥ काक्षी (स्त्री०), मृत्स्ना (स्त्री०), तुवरिका (स्त्री०), मृत्तालक

सुवगोपुरगोनर्देकैवतीमुस्तकानि च ।

ग्रंथिपर्णं शुकं बर्हपुष्पं स्थौणेयकुङ्कुरे ॥ १३२ ॥

मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः ।

समुद्रांता वधूः कोटिवर्षा लंकोपिकेत्यपि ॥ १३३ ॥

तपस्विनी जटामांसी जटिला लोमशा मिशी ।

त्वक्पत्रमुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ॥ १३४ ॥

कर्चूरको द्राविडकः काल्पको वेधमुख्यकः ।

ओषध्यो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम् ॥ १३५ ॥

शाकारख्यं पत्रपुष्पादि तण्डुलीथोऽल्पमारिषः ।

विशल्याग्निशिखानन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका ॥ १३६ ॥

स्यादक्षगन्धा छगलान्यवेगी वृद्धदारकः ।

जुङ्गो ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी ॥ १३७ ॥

(न०), सुराष्ट्रज (न०) ये छः नाम फटकडीके हैं । कुटन्नट, दाशवानेय, परिपेलव ॥ १३१ ॥ पृष्ठव, गोपुर, गोनर्द, कैवर्तीमुस्तक ये चार (न०) नाम जलमोथाके हैं । ग्रंथिपर्ण, शुक, बर्हपुष्प, स्थौणेय, कुङ्कुम, पांच (न०) नाम भटोराके हैं ॥ १३२ ॥ मरुन्माला, पिशुना, स्पृक्का देवी, लता, लघु, समुद्रान्ता, वधू, कोटिवर्षा, लंकोपिका ये दश (स्त्री०) नाम स्पृक्का अर्थात् पिंडकाके हैं ॥ १३३ ॥ तपस्विनी, जटामांसी, जटिला लोमशा, मिशी ये पांच (स्त्री०) नाम बालछडके हैं । त्वक्पत्र, उत्कट भृङ्ग, त्वच, चोच, वराङ्गक ये छः (न०) नाम दालचीनीके हैं ॥ १३४ ॥ कर्चूरक, द्राविडक, काल्पक, वेधमुख्यक ये चार (पु०) नाम कचूरवे जातिमात्रमें ओषध्यः यह (स्त्री० बहुवचन) पद होता है । जब औषधि रोगहारिपना प्रतीत हो तब औषध इस (न०) शब्दका प्रयोग होता है ॥ १३५ ॥ शाक यह एक (न०) नाम तरकारी आदिका है । तण्डुल अल्पमारिष ये दो (पु०) नाम चोलाईके हैं । विशल्या, अग्निशिखानन्ता, फलिनी, शक्रपुष्पिका ये पांच (स्त्री०) नाम इन्द्रपुष्पी विशाल हैं ॥ १३६ ॥ ऋक्षगन्धा, छगलात्री, आवेगी, वृद्धदारक, जुंग ये पांच भिदाराके हैं । वृद्धदारक, जुंग (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । ब्राह्मी, मत्स्या वयस्था, सोमवल्लरी ये चार (स्त्री०) नाम सोमलताके हैं ॥ १३७ ॥

पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ।
 हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ॥ १३८ ॥
 तुण्डिकेरी रक्तफला बिम्बिका पीलुपर्ण्यपि ।
 बर्बरा कवरी तुङ्गी खरपुष्पाऽजगन्धिका ॥ १३९ ॥
 एलापर्णी तु सुवहा रास्ना युक्तरसा च सा ।
 चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका ॥ १४० ॥
 सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि ।
 नमस्कारी गण्डकारी समङ्गा खदिरेत्यपि ॥ १४१ ॥
 जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा ।
 कूर्चशीर्षो मधुरकः शृङ्गह्रस्वाङ्गजीवकाः ॥ १४२ ॥
 किराततिक्तो भूनिम्बोऽनार्यतिक्तोऽथ सप्तला ।
 विमला शातला भूरिफेना चर्मकपेत्यपि ॥ १४३ ॥
 वायसोली स्वादुरसा वयस्थाऽथ मकूलकः ।
 निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्श्रेण्युदुम्बरपर्ण्यपि ॥ १४४ ॥

पटुपर्णी, हैमवती, स्वर्णक्षीरी, हिमावती ये चार (स्त्री०) नाम सनाहके हैं । हयपुच्छी, काम्बोजी, माषपर्णी, महासहा ये चार (स्त्री०) नाम तना उडदके हैं ॥ १३८ ॥ तुण्डिकेरी, रक्तफला, बिम्बिका, पीलुपर्णी ये चार (स्त्री०) नाम तोंडली (कुन्दरू) के हैं । बर्बरा, कवरी, तुङ्गी, खरपुष्पा, अजगन्धिका ये पांच (स्त्री०) नाम कानफोडीके हैं ॥ १३९ ॥ एलापर्णी, सुवहा, रास्ना, युक्तरसा ये चार (स्त्री०) नाम कोलिंदके हैं । चाङ्गेरी, चुक्रिका, दन्तशठा, अम्बष्ठा, अम्ललोणिका ये पांच (स्त्री०) नाम चूका-के हैं ॥ १४० ॥ सहस्रवेधिन (इन्नन्त), चुक्र, अम्लवेतस, शतवेधिन (इन्नन्त) ये चार (पु०) नाम अम्लवेतसके हैं । नमस्कारी, गण्डकारी, समङ्गा, खदिरा ये चार (स्त्री०) नाम लज्जावन्तीके हैं ॥ १४१ ॥ जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, मधुस्रवा ये पांच (स्त्री०) नाम हरणदोडी नाम औषधिके हैं । कूर्चशीर्ष, मधुरक, शृङ्ग, ह्रस्वाङ्ग, जीवक ये पांच (पु०) नाम जीवकके हैं ॥ १४२ ॥ किराततिक्त, भूनिम्ब, अनार्यतिक्त ये तीन (पु०) नाम चिरायतेके हैं । सप्तला, विमला, शातला, भूरिफेना, चर्मकपा ये पांच (स्त्री०) नाम सातलाके हैं ॥ १४३ ॥ वायसोली,

अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।
 मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे ॥ १४५ ॥
 अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।
 काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यपि ॥ १४६ ॥
 प्रपुत्राडस्त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दकः ।
 पद्माट उरणाख्यश्च पलाण्डुस्तु सुकन्दकः ॥ १४७ ॥
 लतार्कदुद्रुमौ तत्र हरितेऽथ महौषधम् ।
 लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः ॥ १४८ ॥
 पुनर्नवा तु शोथघ्नी वितुन्नं सुनिषण्णकम् ।
 स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिता शणपर्ण्यपि ॥ १४९ ॥
 पारावताङ्घ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ।
 वार्षिकं त्रायमाणा स्यान्नायन्ती बलभद्रिका ॥ १५० ॥

स्वादुरसा, वयस्था ये तीन (स्त्री०) नाम काकोलीके हैं । मकूलक (पुं
 निकुम्भ (पु०), दन्तिका (स्त्री०), प्रत्यक्श्रेणी (स्त्री०), उदुम्बर
 (स्त्री०) ये पांच नाम जमालगोटके जड़के हैं ॥ १४४ ॥ अजमोदा
 उग्रगन्धा ये दो (स्त्री०) नाम अजमोदके हैं । ब्रह्मदर्भा, यवानिका
 दो (स्त्री०) नाम अजमानके हैं । पुष्कर, काश्मीर, पद्मपत्र ये तीन (स्त्री०)
 नाम पोहकरमूलके हैं ॥ १४५ ॥ अव्यथा, अतिचरा, पद्मा, चारटी, पद्म
 चारिणी ये पांच (स्त्री०) नाम स्थलकमलिनीके हैं । काम्पिल्य, कर्कश,
 रक्ताङ्ग, रोचनी ये पांच नाम रोचना (कवीला) के हैं । रोचनी (स्त्री०)
 शेष (पु०) हैं ॥ १४६ ॥ प्रपुत्राड, एडगज, दद्रुघ्न, चक्रमर्दक, पद्माट, उ
 रणाख्य ये छः (पु०) नाम पुवाडके हैं । पलाण्डु, सुकन्दक ये दो (पु०)
 प्याजके हैं ॥ १४७ ॥ लतार्क, दुद्रुम ये दो (पु०) नाम हरी प्याजके
 महौषध, लशुन, गृञ्जन, अरिष्ट, महाकन्द, रसोनक ये छः नाम लहसुन
 हैं । महौषध, गृञ्जन शब्द (न०) शेष (पु०) हैं ॥ १४८ ॥ पुनर्नवा,
 शोथघ्नी ये दो (स्त्री०) नाम सांठीके हैं । वितुन्न, सुनिषण्णक ये दो (पुं
 नाम कुरडूके हैं । वातक (पु०), शीतल (पु०), अपराजिता (स्त्री०),
 शणपर्णी (स्त्री०) ये चार नाम गोकर्णीके हैं ॥ १४९ ॥ पारावत,
 कठभी, पण्या, ज्योतिष्मती, लता ये पांच (स्त्री०) नाम मालकी

विष्वक्सेनप्रिया गृष्टिवाराही बदरेत्यपि ।
 मार्कवो भृङ्गराजः स्यात्काकमाची तु वायसी ॥ १५१ ॥
 शतपुष्पा सितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधुरा मिसिः ।
 अवाक्पुष्पी कारवी च सरणा तु प्रसारिणी ॥ १५२ ॥
 तस्यां कटंभरा राजबला भद्रबलेत्यपि ।
 जनी जतूका रजनी जतुकृच्चक्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥
 संस्पर्शाऽथ शटी गन्धमूली षड्ग्रन्थिकेत्यपि ।
 कर्चूरोऽपि पलाशोऽथ कार्वेलः कठिलकः ॥ १५४ ॥
 सुषवी चाथ कुलकं पटोलस्तित्तकः पटुः ।
 कूष्माण्डकस्तु कर्कारुर्वारुः कर्कटी खियौ ॥ १५५ ॥
 इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात्तुम्ब्यलाबूरुमे समे ।
 चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा विशाला त्विन्द्रवारुणी ॥ १५६ ॥

हैं । वार्षिक, त्राणमाणा, त्रायंती, बलभद्रिका ये चार नाम त्रायमाण चि-
 रायतेके फलके हैं । तहां वार्षिकशब्द (न०) शेष (स्त्री०) हैं ॥ १५० ॥
 विष्वक्सेनप्रिया, गृष्टि, वाराही, बदरा ये चार (स्त्री०) नाम वाराही
 (बिलाई) कन्दके हैं । मार्कव, भृङ्गराज ये दो (पु०) नाम भांगरेके हैं ।
 काकमाची, वायसी ये दो (स्त्री०) नाम मकोहके हैं ॥ १५१ ॥ शतपुष्पा,
 सितच्छत्रा, अतिच्छत्रा, मधुरा, मिसि, अवाक्पुष्पी, कारवी ये सात
 (स्त्री०) नाम सौंफके हैं । सरणा, प्रसारिणी ॥ १५२ ॥ कटंभरा, राजबला,
 भद्रबला ये पांच (स्त्री०) नाम रंडीप नामक औषधिके हैं । जनी, जतूका,
 रजनी, जतुकृत्, चक्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥ संस्पर्शा ये छः (स्त्री०) नाम
 चाकवत शाकके हैं । शटी (स्त्री०), गंधमूली (स्त्री०), षड्ग्रन्थिका
 (स्त्री०), कर्चूर (पु०), पलाश (पु०) ये पांच नाम कपूरकचरीके
 हैं । कार्वेल (पु०), कठिलक (पु०) ॥ १५४ ॥ सुषवी (स्त्री०) ये
 तीन नाम करेलेके हैं । कुलक (न०), पटोल, तित्तक, पटु (तीन पु०)
 ये चार नाम कडवी परवलेके हैं । कूष्माण्डक, कर्कारु ये दो (पु०) नाम
 कोहलेके हैं । उर्वारु, कर्कटी ये दो (स्त्री०) नाम ककडीके हैं ॥ १५५ ॥
 इक्ष्वाकु, कटुतुम्बी ये दो (स्त्री०) नाम कडवी तूंबीके हैं । तूंबी, अलाबू
 ये दो (स्त्री०) नाम काली तूंबीके हैं । चित्रा, गवाक्षी, गोडुम्बा ये तीन

अर्शोघ्नः सूरणः कन्दो गण्डीरस्तु समष्टिला ।
 कलम्ब्युपोदिका स्त्री तु मूलकं हिलमोचिका ॥ १५७ ॥
 वास्तुकं शाकभेदाः स्युर्दूर्वा तु शतपर्विका ।
 सहस्रवीर्याभार्गव्यौ रुहाऽनन्ताऽथ सा सिता ॥ १५८ ॥
 गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली शकुलाक्षका ।
 कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमस्त्रियाम् ॥ १५९ ॥
 स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा चूडाला चक्रलोच्चटा ।
 वंशे त्वक्सारकर्मास्त्रिचिसारतृणध्वजाः ॥ १६० ॥
 शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ।
 वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः ॥ १६१ ॥

(स्त्री०) नाम जेठऊककरीके हैं । विशाला, इन्द्रवारुणी ये दो (स्त्री०) नाम इन्द्रवारुणीके हैं ॥ १५६ ॥ अर्शोघ्न, सूरण, कन्द ये तीन (पु०) नाम जमीकन्दके हैं । गंडीर (पु०), समष्टिला (स्त्री०) ये दो कडुये जमीकन्दके हैं । कलंबी यह एक (स्त्री०) नाम वांसकी आकृतिवाले शाकका है । उपोदिका यह एक (स्त्री०) नाम पुदीना शाकका है । मूलक यह एक (न०) नाम मूलीशाकका है । हिलमोचिका एक (स्त्री०) नाम हलहंजी शाकका है ॥ १५७ ॥ वास्तुक यह एक (न०) नाम वथुआ शाकका है । ये शाकोंके भेद हैं । दूर्वा, शतपर्विका सहस्रवीर्या, भार्गवी, रुहा, अनन्ता ये छः (स्त्री०) नाम दूबके हैं ॥ १५८ ॥ गोलोमी, शतवीर्या, गण्डाली, शकुलाक्षका ये चार (स्त्री०) नाम मुस्ता दूबके हैं । कुरुविन्द, मेघनामन् (नान्त) (दो पु०), मुस्ता (स्त्री०), मुस्तक (पु० न०) ये चार नाम नागरमोथेके हैं । मेघनामा याने मेघके नाम इसके भी वाचक होते हैं ॥ १५९ ॥ भद्रमुस्तक (पु०), गुन्द्रा (स्त्री०) ये दो नाम भद्रमोथाके हैं । चूडाला, चक्रला, उच्चटा ये तीन (स्त्री०) नाम भी मोथाविशेषके हैं । वंश, त्वक्सार, कर्मार, त्वचिसार, तृणध्वजा ॥ १६० ॥ शतपर्वा (नान्त), यवफल, वेणु, मस्कर, तेजन ये दश (पु०) नाम वांसके हैं । कीचक यह एक (पु०) नाम कीड़ोंसे किये हुए छिद्र होकर गये हुए पत्रके झकोरोंसे शब्दवाले वांसका है ॥ १६१ ॥

ग्रन्थिनां पर्वपरुषी गुन्द्रस्तेजनकः शरः ।

नडस्तु धमनः पोटगलोऽथो काशमस्त्रियाम् ॥ १६२ ॥

इक्षुगन्धा पोटगलः पुंसि भूम्नि तु बल्वजाः ।

रसाल इक्षुस्तद्देदाः पुण्ड्रकान्तारकादयः ॥ १६३ ॥

स्याद्वीरणं वीरतरं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।

अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ॥ १६४ ॥

लामज्जकं लघुलयमवदाहेष्टकापथे ।

नडादयस्तृणं गर्मुच्छ्यामाकप्रमुखा अपि ॥ १६५ ॥

अस्त्री कुशं कुथो दर्भः पवित्रमथ कतृणम् ।

पौरसौगन्धिकध्यामदेवजग्धकरौहिषम् ॥ १६६ ॥

छत्रातिच्छत्रपालघ्नौ मालातृणकभूस्तृणे ।

शष्पं बालतृणं घासो यवसं तृणमर्जुनम् ॥ १६७ ॥

ग्रन्थि, पर्वन् (नांत), परुष ये तीन नाम वांस आदिकी गांठके हैं । तहां ग्रन्थिशब्द (पु०) शेष (न०) हैं । गुन्द्र, तेजनक, शर ये तीन (पु०) नाम शरके हैं । नड, धमन, पोटगल ये तीन (पु०) नाम नरशल्के हैं । काश (पु० न०) ॥ १६२ ॥ इक्षुगन्धा (स्त्री०), पोटगल (पु०) ये तीन नाम काशके हैं । बल्वज यह एक नाम लवाका बहुवचनमें (पु०) है । रसाल, इक्षु ये दो (पु०) नाम ईखके हैं । पुण्ड्र, कान्तारक ये दो (पु०) नाम ईखके भेद (पौंडा) के हैं ॥ १६३ ॥ वीरण, वीरतर ये दो (न०) नाम तृणभेदके हैं । उशीर, अभय, नलद, सेव्य, अमृणाल, जलाशय ॥ १६४ ॥ लामज्जक, लघुलय, अवदाह, इष्टकापथ ये दश नाम वीरणवृक्षकी जड़ अर्थात् खसके हैं । तहां उशीरशब्द (पु० न०) शेष (न०) हैं । नड आदि शब्द तृण जातिके वाचक हैं । गर्मुत् (पु०), श्यामाक (पु०) इत्यादि शब्दभी तृणजातिवाचकही हैं । यहां प्रमुखशब्दसे कुश आदि कांगनीका दूब आदिका ग्रहण है ॥ १६५ ॥ कुश (पु० न०), कुथ (पु०), दर्भ (पु०), पवित्र (न०) ये चार नाम डाभके हैं । कतृण, पौर, सौगन्धिक, ध्याम, देवजग्धक, रौहिष ये छः (न०) नाम रोहिष तृणके हैं ॥ १६६ ॥ छत्रा (स्त्री०), अतिच्छत्र (पु०), पालघ्न (पु०), मालातृणक (न०), भूस्तृण (न०) ये पांच नाम जलतृणके हैं । शष्प, बाल-

तृणानां संहतिस्तृण्या नड्या तु नडसंहतिः ।
 तृणराजाह्वयस्तालो नालिकेरस्तु लाङ्गली ॥ १६८ ॥
 घोंटा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरोऽस्य तु ।
 फलमुद्वेगमेते च हिन्तालसहितास्त्रयः ॥ १६९ ॥
 खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणद्रुमाः ।
 इति वनौषधिवर्गः ॥ ४

अथ सिंहादिवर्गः ५ ।

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः ।

“ कण्ठीरवो मृगरिपुर्मृगदृष्टिर्मृगाशनः ।

पुण्डरीकः पञ्चनखचित्रकायमृगद्विषः ॥ ”

शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ १ ॥

तृण ये दो (न०) नाम कोमल तिनकेके हैं । घास (पु०), यवस (न०) ये दो नाम गौ आर्दके चरने योग्य तृणके हैं । तृण, अर्जुन ये दो (न०) नाम तृणमात्रके हैं ॥ १६७ ॥ तृण्या यह एक (स्त्री०) नाम तृणोंके मूहका है । नड्या यह एक (स्त्री०) नाम नडोंके समूहका है । तृणराजाह्वय, ताल ये दो (पु०) नाम ताडके हैं । नालिकेर (पु०), लाङ्गली (स्त्री०) ये दो नाम नारियलके हैं ॥ १६८ ॥ घोंटा, पूग, क्रमुक, गुवाक, खपुर ये पांच नाम सुपारीके हैं । घोंटा (स्त्री०) शेष (पु०) हैं । उद्वेग एक नाम सुपारीके फलका है । और ताल, नारिकेर और पूग इन तीनों सहित हिन्तालशब्द तालभेदका वाचीभी है ॥ १६९ ॥ खर्जूर यह एक (पु०) नाम खर्जूरवृक्षका है । केतकी यह एक (स्त्री०) नाम केतकीका है । ताली यह एक (स्त्री०) नाम ताडके भेदका है । खर्जूरी यह एक (स्त्री०) नाम खर्जूरके भेदका है । ये तृणवृक्ष हैं ॥ इति वनौषधिवर्गः ॥

अथ सिंहादिवर्गः । सिंह, मृगेन्द्र, पञ्चास्य, हर्यक्ष, केसरिन् (इन्द्र) हरि ये छः नाम और “ कंठीरव, मृगरिपु, मृगदृष्टि, मृगाशन, पुण्डरीक, पञ्चनख, चित्रकाय, मृगद्विष (पान्त) ये आठ सब चौदह (पु०) सिंहके हैं । ” शार्दूल, द्वीपिन् (इन्द्रन्त), व्याघ्र ये तीन (पु०) बघेरके हैं । तरक्षु, मृगादन ये दो (पु०) नाम चीतेके हैं ॥ १ ॥

वराहः सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री किरिः किटिः ।
 दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि ॥ २ ॥
 कपिप्लवंगप्लवगशाखामृगवलीमुखाः ।
 मर्कटो वानरः कीशो वनौका अथ भल्लुके ॥ ३ ॥
 ऋक्षाऽच्छभल्लभल्लूका गण्डके खड्गखड्गिनौ ।
 लुलायो महिषो वाहद्विषत्कांसरसैरिमाः ॥ ४ ॥
 स्त्रियां शिवा भूरिमायगोमायुमृगधूर्तकाः ।
 शृगालवञ्चकक्रोष्टुफेरुफेरवजम्बुकाः ॥ ५ ॥
 ओतुर्विडालो मार्जारो वृषदंशक आखुमुक् ।
 त्रयो गौधेरगौधारगौधेया गोधिकात्मजे ॥ ६ ॥
 श्वावितु शल्यस्तलोम्रि शलली शललं शलम् ।
 वातप्रमीर्वातमृगः कोकस्त्वीहामृगो वृकः ॥ ७ ॥

वराह, सूकर, घृष्टि, कोल, पोत्रिन् (इवन्त), किरि, किटि, दंष्ट्रिन्
 (इवन्त), घोणिन् (इवन्त), स्तब्धरोमन् (नान्त), क्रोड, भूदार ये वराह
 (पु०) नाम सूकरके हैं ॥ २ ॥ कपि, प्लवंग, प्लवग, शाखामृग, वलीमुख,
 मर्कट, वानर, कीश, वनौकस् (सान्त) ये नव (पु०) नाम वानरके हैं ।
 भल्लुक ॥ ३ ॥ ऋक्ष, अच्छभल्ल, भल्लूक ये चार (पु०) नाम रीछके
 हैं । गंडक, खड्ग, खड्गिन् (इवन्त) ये तीन (पु०) नाम गेंडेके हैं ।
 लुलाय, महिष, वाहद्विषत् (तान्त), कासर, सैरिभ ये पांच (पु०) नाम
 भैसाके हैं ॥ ४ ॥ शिवा, भूरिमाय, गोमायु, मृगधूर्तक, शृगाल, वञ्चक,
 क्रोष्टु, फेरु, फेरव, जंबुक ये दश नाम गीदडके हैं । शिवाशब्द (स्त्री०)
 शेष (पु०) हैं ॥ ५ ॥ ओतु, विडाल, मार्जार, वृषदंशक, आखुमुक्
 (जान्त) ये पांच (पु०) नाम बिलावके हैं । गौधेर, गौधार, गौधेय ये
 तीन (पु०) नाम गुहेरा (चन्दनगोह) के हैं । यह काले सर्पसे गोहमें
 पैदा होता है ॥ ६ ॥ श्वाविधू (धान्त), शल्य ये दो (पु०) नाम शेरके
 हैं । शलली (स्त्री०), शलल (न०), शल (न०) ये तीन नाम शेरके
 नामके हैं । वातप्रमी, वातमृग ये दो (पु०) नाम वातमृगके हैं । कोक,
 वीहामृग, वृक ये तीन (पु०) नाम भेड़ियेके हैं ॥ ७ ॥

मृगे कुरङ्गवातायुहरिणाजिनयोनयः ।

ऐणेयमेण्याश्चर्माद्यमेणस्यैणमुभे त्रिषु ॥ ८ ॥

कदली कन्दली चीनश्चमूरुप्रियकावपि ।

समूरुश्चेति हरिणा अमी अजिनयोनयः ॥ ९ ॥

कृष्णसाररुन्यंकुरंकुशम्बररौहिषाः ।

गोकर्णपृषतैणश्चरौहिताश्चमरो मृगाः ॥ १० ॥

गन्धर्वः शरभो रामः समरो गवयः शशः ।

इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः पशुजातयः ॥ ११ ॥

“ अधोगन्ता तु खनको वृकः पुं ध्वज उन्दुरः । ”

उन्दुरुर्मूषिकोऽप्याखुर्गिरिका बालमूषिका ।

सरटः कृकलासः स्यान्मुसली गृहगोधिका ॥ १२ ॥

लूता स्त्रीतन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः समाः ।

नीलंगुस्तु कृमिः कर्णजलौकाः शतपद्युभे ॥ १३ ॥

मृग, कुरंग, वातायु, हरिण, अजिनयोनि ये पांच (पु०) नाम मृग
ऐणेय यह एक नाम हरिणीके चाम तथा मांसका है । हरिणका चाम
मांस आदि ऐण कहाता है ये दोनों शब्द त्रिलिङ्गी हैं ॥ ८ ॥
(स्त्री०), कंदली (स्त्री०), चीन (पु०), चमूरु (पु०), प्रियक (पु०),
समूरु (पु०) ये छः हरिणके भेद और कृष्णसार आदि अजिनयोनि
हैं ॥ ९ ॥ कृष्णसार, रुरु, न्यंकु, रंकु, शंबर, रौहिष, गोकर्ण, पृषत,
ऋश्य, रोहित, चमर ये बारह (पु०) नाम मृगोंके भेदके हैं ॥ १० ॥
शरभ, राम, समर, गवय, शश, सिंह आदि और गौ आदि ये सब
नाम पशुजातिके हैं ॥ ११ ॥ “ अधोगंतु (ऋकारान्त), खनक, वृ
ध्वज, उंदुर ये पांच (पु०) नाम क्षेपक श्लोकके अनुसार ” और
मूषक, आखु ये तीन (पु०) कुल आठ नाम मूसेके हैं । गिरिका,
मूषिका ये दो (स्त्री०) नाम छोटी मूसीके हैं । सरट, कृकलास
(पु०) नाम गिरगटके हैं । मुसली, गृहगोधिका ये दो (स्त्री०)
छिपकलीके हैं ॥ १२ ॥ लूता, तंतुवाय, उर्णनाभ, मर्कटक ये चार
मकड़ीके हैं । तहां लूताशब्द (स्त्री०) शेष (पु०) हैं । नीलंगु, क
दो (पु०) नाम छोटे कीड़ेके हैं । कर्णजलौकस् (सकारान्त), श

वृश्चिकः शूककीटः स्यादलिद्रोणौ तु वृश्चिके ।
 पारावतः कलरवः कपोतोऽथ शशादनः ॥ १४ ॥
 पत्री श्येन उलूकस्तु वायसारातिपेचकौ ।
 “दिवान्धः कौशिको घूको दिवाभीतो निशाटनः ।”
 व्याघ्राटः स्याद्भरद्वाजः खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ १५ ॥
 लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्यादथ चापः किक्कीदिविः ।
 कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा अथ स्याच्छतपत्रकः ॥ १६ ॥
 दार्वाघाटोऽथ सारङ्गस्तोककश्चातकः समाः ।
 कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चरणायुधः ॥ १७ ॥
 चटकः कलविकः स्यात्तस्य स्त्री चटका तयोः ।
 पुमपत्ये चाटकैरः स्त्र्यपत्ये चटकैव सा ॥ १८ ॥
 कर्करेटुः करेटुः स्यात्कृकणककरौ समौ ।
 वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि ॥ १९ ॥

दो (स्त्री०) नाम कानखजरेके हैं ॥ १३ ॥ आगेके कलविकशब्दतक पु०) हैं । वृश्चिक, शूककीट ये दो नाम उनके खानेवाले कीड़ेके हैं । लि, द्रोण, वृश्चिक ये तीन नाम बीड़के हैं । पारावत, कलरव, कपोत ये न नाम कबूतरके हैं । शशादन ॥ १४ ॥ पत्रिन् (इन्नन्त), श्येन ये तीन म शिकरा (बाज) के हैं । उलूक, वायसाराति, पेचक ये तीन नाम उलूके । “ दिवान्ध, कौशिक, घूक, दिवाभीत, निशाटन ये पांच नामभी उलूके । ” व्याघ्राट, भरद्वाज ये दो नाम लवाविशेषके हैं । खंजरीट, खंजन ये नाम खंजन पक्षीके हैं ॥ १५ ॥ लोहपृष्ठ, कंक ये दो नाम कंकपक्षीके हैं । ष, किक्कीदिवि ये दो नाम नीलकंठ पक्षीके हैं । कलिङ्ग, भृङ्ग, धूम्याट ये न नाम मस्तकचूड पक्षीके हैं । शतपत्रक ॥ १६ ॥ दार्वाघाट ये दो म खुटबटई वा कठफोराके हैं । सारङ्ग, तोकक, चातक ये तीन नाम थाके हैं । कृकवाकु, ताम्रचूड, कुक्कुट, चरणायुध ये चार नाम मुरगेके ॥ १७ ॥ चटक, कलविक ये दो नाम चिड़ैटेके हैं । यद्वातक (पु०) हैं । का यह एक (स्त्री०) नाम चिड़ीका है । चाटकैर यह एक (पु०) म इनके पुरुषरूप बच्चेका है । और चींकली हो तो चटका इस (स्त्री०) मसे प्रसिद्ध है ॥ १८ ॥ कर्करेटु, करेटु ये दो (पु०) नाम करदोंक ७ अमर.

काकं तु करटारिष्टबलिपुष्टसकृत्प्रजाः ।

ध्वाङ्गात्मघोषपरभृद्बलिभुग्वायसा अपि ॥ २० ॥

“ स एव च चिरंजीवी चैकदृष्टिश्च मौकुलिः । ”

द्रोणकाकस्तु काकोलो दात्यूहः कालकण्ठकः ।

आतापिचिल्लौ दाक्षाय्यगृध्रौ कीरशुकौ समौ ॥ २१ ॥

कुञ्च कौश्वोऽथ वकः कह्वः पुष्कराहस्तु सारसः ।

कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वयनामकः ॥ २२ ॥

कादम्बः कलहंसः स्यादुत्क्रोशकुररौ समौ ।

हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्राङ्गा मानसौकसः ॥ २३ ॥

राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणैर्लोहितैः सिताः ।

मलि नैर्मल्लिकाक्षास्ते धार्तराष्ट्राः सितेतैरैः ॥ २४ ॥

पक्षीके हैं । कृकण, क्रकर ये दो (पु०) नाम करेटु (तीतरविशेष) के आगेके शब्द धार्तराष्ट्रक (पु०) हैं । वनप्रिय, परभृत, कोकिल, चार नाम कोयलके हैं ॥ १९ ॥ काक, करट, अरिष्ट, बलिपुष्ट, सकृत् (सान्त), ध्वाङ्ग, आत्मघोष, परभृत (तांत), बलिभुज् (जान्त), ये दश नाम काकके हैं ॥ २० ॥ चिरञ्जीविन् (इम्रंत), एकदृष्टि, मौ ये तीन नाम भी काकके हैं । द्रोणकाक, काकोल ये दो नाम काले क हैं । दात्यूह, कालकण्ठक ये दो नाम जलकाकके हैं । आतापिन् (इन्द्राचिल्ल ये दो नाम चीलहके हैं । दाक्षाय्य, गृध्र ये दो नाम गीधके हैं । शुक ये दो नाम तोतेके हैं ॥ २१ ॥ कुञ्च (चान्त), कौच ये दो नाम के हैं । वक, कह्व ये दो नाम बगलेके हैं । पुष्कराह्व, सारस ये नाम सके हैं । कोक, चक्र, चक्रवाक, रथाङ्ग ये चार नाम चक्रवाकके हैं । कादम्ब, कलहंस ये दो नाम मधुर बोलनेवाले हंसके हैं । उत्क्रोश, ये दो नाम कुसीके हैं । हंस, श्वेतगरुत (तान्त), चक्राङ्ग, मानस (सान्त) ये चार नाम हंसके हैं ॥ २३ ॥ जिन्हांका शरीर सुपेद हो चोंच पर लाल हों वे राजहंस कहाते हैं । कुछ धूम्ररंग चोंच और पैरोंवाले मल्लिकाक्ष कहाते हैं । काले रंगकी चोंच और पैरोंवाले हंस धार्तरा

१ कमलके सब नाम सारसके वाचक हैं । २ चक्रके सब नाम चक्रवाके वाच

शरारिराटिराडिश्च बलाका विसकण्ठिका ।
 हंसस्य योषिद्वरटा सारसस्य तु लक्ष्मणा ॥ २५ ॥
 जतुकाऽजिनपत्रा स्यात्परोष्णी तैलपायिका ।
 वर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका ॥ २६ ॥
 पतङ्गिका पुत्तिका स्यादंशस्तु वनमक्षिका ।
 दंशी तज्जातिरल्पा स्याद्गन्धोली वरटा द्वयोः ॥ २७ ॥
 भृङ्गारी शीरुका चीरी शिलिका च समा इमाः ।
 समौ पतङ्गशलभौ खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ २८ ॥
 मधुव्रतो मधुकरो मधुलिप्मधुपालिनः ।
 द्विरेफुप्पलिङ्गभृङ्गषट्पदभ्रमरालयः ॥ २९ ॥
 मयूरो बर्हिणो बर्ही नीलकण्ठो भुजङ्गभुक् ।
 शिखावलः शिखी केकी मेघनादानुलास्यपि ॥ ३० ॥

जाते हैं । यहाँतक (पु०) हैं ॥ २४ ॥ शरारि, आटि, आडि ये तीन (स्त्री०) नाम अडीपक्षीके हैं । बलाका, विसकंठिका ये दो (स्त्री०) नाम बगलेके भेद हैं । वरटा यह एक (स्त्री०) नाम हंसकी स्त्रीका है । लक्ष्मणा यह एक (स्त्री०) नाम सारसकी स्त्रीका है ॥ २५ ॥ जतुका, अजिनपत्रा ये दो (स्त्री०) नाम चामचिगी (चिमगादर) के हैं । परोष्णी, तैलपायिका ये दो (स्त्री०) नाम तेलडुवा (गीदड) के हैं । वर्वणा, मक्षिका, नीला ये तीन (स्त्री०) नाम मक्खीके हैं । सरघा, मधुमक्षिका ये दो (स्त्री०) नाम मधुकी मक्खीके हैं ॥ २६ ॥ पतंगिका, पुत्तिका ये दो (स्त्री०) नाम मधुमक्खीके भेदके हैं । दंश (पु०), वनमक्षिका (स्त्री०) ये दो नाम डांसके हैं । दंशी यह एक (स्त्री०) नाम उन डाँसोंकी छोटी जातिका है । गंधोली (स्त्री०), वरटा (पु० स्त्री०) ये दो नाम गांधीणी (वर्ममक्खी) के हैं ॥ २७ ॥ भृङ्गारी, शीरुका, चीरी, शिलिका ये चार (स्त्री०) नाम चिलट (झींगुर) के हैं । पतंग, शलभ ये दो (पु०) नाम पतंगके हैं । खद्योत, ज्योतिरिङ्गण ये दो (पु०) नाम पट्टीजनके हैं ॥ २८ ॥ मधुव्रत, मधुकर, मधुलिप् (हान्त), मधुप, मधुलिप् (इन्नन्त), द्विरेफ, पुप्पलिङ्ग (हान्त), भृङ्ग, षट्पद, भ्रमर, अलि ये ग्यारह (पु०) नाम भोंरके हैं ॥ २९ ॥ मयूर, बर्हिण, बर्हिन् (इन्नन्त),

केका वाणी मयूरस्य समौ चन्द्रकमेचकौ ।
 शिखा चूडा शिखण्डस्तु पिच्छवर्हं नपुंसके ॥ ३१ ॥
 खगे विहंगविहंगविहंगमविहायसः ।
 शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ॥ ३२ ॥
 पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः ।
 नगौकोवाजिविकिरविविष्करपतत्रयः ॥ ३३ ॥
 नीडोद्भवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नमसंगमाः ।
 तेषां विशेषा हारीतो मद्गुः कारण्डवः पुवः ॥ ३४ ॥
 तित्तिरिः कुकुभो लावो जीवञ्जीवश्चकोरकः ।
 कोयष्टिकाष्टिट्ठिभको वर्तको वर्तिकादयः ॥ ३५ ॥

नीलकंठ, भुजंगभुज (जान्त), शिखावल, शिखिन् (इन्नन्त),
 (इन्नन्त), मेघनादानुलासिन् (इन्नन्त) ये नव (पु०) नाम मो
 ॥ ३० ॥ केका यह एक (स्त्री०) नाम मोरकी वाणीका है ।
 मेचक ये दो (पु०) नाम मोरकी चन्दाके हैं । शिखा, चूडा
 (स्त्री०) नाम मोरकी शिखाके हैं । शिखण्ड (पु०), पिच्छ (पु०),
 वर्ह (न०) ये तीन नाम मोरके पाँखके हैं ॥ ३१ ॥ खग, विहंग,
 विहंगम, विहायस् (सान्त), शकुन्ति, पक्षिन् (इन्नन्त), शकुनि,
 शकुन, द्विज ॥ ३२ ॥ पतत्रिन् (इन्नन्त), पत्रिन् (इन्नन्त), पतग
 (तान्त), पत्ररथ, अण्डज, नगौकस् (सान्त), वाजिन् (इन्नन्त),
 विकिर, वि, विष्कर, पतत्रि ॥ ३३ ॥ नीडोद्भव, गरुत्मन् (इन्नन्त),
 पित्सत् (तान्त), नमसंगम ये सत्ताईस (पु०) नाम पक्षिमात्र
 पक्षियोंके विषयमें विशेष कहते हैं । हारीत यह एक (पु०) नाम ति
 पक्षीका है । मद्गु यह एक (पु०) नाम जलकाकका है । कारण्ड
 एक (पु०) नाम करडुवा (बतकविशेष) का है । प्लव यह एक
 नाम पाणकाकका है ॥ ३४ ॥ तित्तिरि यह एक (पु०) नाम त
 है । कुकुभ यह एक (पु०) नाम वनके मुर्गेका है । लाव यह एक
 नाम बटेरपक्षीका है । जीवञ्जीव यह एक (पु०) नाम मोरके
 समान पंखोंवाले पक्षीका है । चकोरक यह एक (पु०) नाम च
 है । कोयष्टिक, टिट्ठिभक ये दो (पु०) नाम टटीहरी पक्षीके हैं ।

गरुत्पक्षच्छदाः पत्रं पतत्रं च तनूरुहम् ।
 स्त्री पक्षतिः पक्षमूलं चंचुस्त्रोटिरुभे स्त्रियौ ॥ ३६ ॥
 प्रडीनोड्डीनसंडीनान्येताः खगगतिक्रियाः ।
 पेशी कोशो द्विहीनेऽण्डं कुलायो नीडमस्त्रियाम् ॥ ३७ ॥
 पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः ।
 स्त्रीपुंसौ मिथुनं द्वन्द्वं युग्मं तु युगुलं युगम् ॥ ३८ ॥
 समूहो निवहव्यूहसंदोहविसरव्रजाः ।
 स्तोमौघनिकरव्रातवारसंघातसंचयाः ॥ ३९ ॥
 समुदायः समुदयः समवायश्चयो गणः ।
 स्त्रियां तु संहतिर्वृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम् ॥ ४० ॥
 वृन्दमेदाः समैर्वर्गः संघसार्थौ तु जन्तुभिः ।
 सजातीयैः कुलं यूथं तिरश्चां पुंनपुंसकम् ॥ ४१ ॥

ह एक (पु०) नाम बतकका है । वर्तिका, सारिका, कपिंजला ये तीनों
 क २ (स्त्री०) नाम बतकविशेषके हैं ॥ ३५ ॥ गरुत् (तान्त पु०), पक्ष
 पु०), छद (पु० न०), पत्र (न०), पतत्र (न०), तनूरुह (न०)
 छः नाम पंखके हैं । पक्षति यह एक (स्त्री०) नाम पक्षके मूलका है ।
 च, त्रोटि ये दो (स्त्री०) नाम पक्षीकी चोंचके हैं ॥ ३६ ॥ प्रडीन,
 डीन, संडीन ये तीनों (न०) नाम पक्षियोंके गमनविशेषके हैं । पेशी
 स्त्री०), कोश (पु० न०), अंड (न०) ये तीन नाम अंडके हैं ।
 लाय (पु०), नीड (पु० न०) ये दो नाम पक्षियोंके घरके हैं ॥ ३७ ॥
 त, पाक, अर्भक, डिम्भ, पृथुक, शावक, शिशु ये छः (पु०) नाम छोटे
 रकके हैं । स्त्रीपुंस (पु०), मिथुन, द्वन्द्व (दो न०) ये तीन नाम स्त्री-
 पके जोड़ेके हैं । युग्म, युगुल, युग ये तीन (न०) नाम युग्म अर्थात्
 डल्लेके हैं ॥ ३८ ॥ समूह, निवह, व्यूह, संदोह, विसर, व्रज, स्तोम,
 घ, निकर, व्रात, वार, संघात, संचय ॥ ३९ ॥ समुदाय, समुदय,
 मवाय, चय, गण, संहति, वृन्द, निकुरम्ब, कदम्बक ये बाईस नाम
 हके हैं । तहां संहतिशब्द (स्त्री०) समूहसे गणतक (पु०) शेष
 न०) हैं ॥ ४० ॥ वृन्दमेद अर्थात् समुदायविशेष कहते हैं । वर्ग यह
 क (पु०) नाम सजातीय प्राणी अथवा अप्राणियोंके समूहका है ।

पशूनां समजोऽन्येषां समाजोऽथ सधर्मिणाम् ।
 स्यान्निकायः पुञ्जराशी वृत्करः कूटमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥
 कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्रणे ।
 गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्चेकास्ते गृह्यकाश्च ते ॥ ४३ ॥
 इति सिंहादिवर्गः ॥ ५

अथ मनुष्यवर्गः ६ ।

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः ।
 स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥
 स्त्री योषिदवला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः ।
 प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथा ॥ २ ॥

जैसे मनुष्यवर्ग, शैलवर्ग ये हैं । संघ, सार्थ ये दो (पु०) नाम सजातीय और विजातीय प्राणियोंके समूहके हैं । जैसे पशु संघ है । वणिक् सार्थ कुल यह एक (न०) नाम सजातीय प्राणियोंके समूहका है । जैसे विप्र यह एक (पु० न०) नाम सजातीय तिरछे जन्तुओंके समूहका है । यूथ यह एक (पु० न०) नाम सजातीय तिरछे जन्तुओंके समूहका है । जैसे मृगयूथ है ॥ ४१ ॥ समज यह एक (पु०) नाम पशुओंके समूहका है । पशुसे अन्योका समूह समाज (पु०) कहाता है । निकाय यह एक (पु०) नाम समानधर्मवालोंके समूहका है । पुञ्ज (पु०), राशि (पु० स्त्री उत्कर (पु०), कूट (पु० न०) ये चार नाम अन्न आदिकी राशि ॥ ४२ ॥ कापोत यह एक (न०) नाम कबूतरोंके समूहका है । शौक एक (न०) नाम तोतोंके समूहका है । मायूर यह एक (न०) मोरोंके समूहका है । तैत्तिर यह एक (न०) नाम तीतरोंके समूहका है । आदिशब्दसे काक यह एक (न०) नाम काकोंके समूहका है । विषे पींजरे आदिमें स्थापित किये पक्षी और मृग इनको छेक और कहते हैं । ये दोनों शब्द (पु०) हैं ॥ ४३ ॥ इति सिंहादिवर्गः ॥

अथ मनुष्यवर्गः । मनुष्य, मानुष, मर्त्य, मनुज, मानव, नर, (सकारान्त), पञ्चजन, पुरुष, पूरुष, नृ (ऋकारान्त) ये ग्यारह (पु०) नाम मनुष्योंके हैं । आगेके स्त्रीशब्दसे उदक्या शब्दतक सब (स्त्री०) ॥ १ ॥ स्त्री, योषित् (तान्त), अवला, योषा, नारी, सीमन्तिनी, प्रतीपदर्शिनी, वामा, वनिता, महिला ये ग्यारह नाम स्त्रीके हैं ॥

विशेषास्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना ।
 प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ॥ ३ ॥
 सुन्दरी रमणी रामा कोपना सैव भामिनी ।
 वरारोहा मत्तकाशिन्पुत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥
 कृताभिषेका महिषी भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।
 पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ५ ॥
 भार्या जायाथ पुंभूम्नि दाराः स्यात्तु कुटुम्बिनी ।
 पुरंध्री सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता ॥ ६ ॥
 कृतसापत्निकाध्यूढाधिविन्नाथ स्वयंवरा ।
 पतिवरा च वर्याथ कुलस्त्री कुलपालिका ॥ ७ ॥

भंगना यह एक (स्त्री०) नाम सुन्दर अंगोंवाली स्त्रीका है । भीरु यह एक नाम डरपोक स्त्रीका है । कामिनी यह एक नाम कामदेवसे युत हुई स्त्रीका है । वामलोचना यह एक नाम सुन्दर नेत्रोंवाली स्त्रीका है । प्रमदा यह एक नाम बहुत कामके वेगवाली स्त्रीका है । मानिनी यह एक नाम नम्र-पूर्वक कोपवाली स्त्रीका है । कान्ता यह एक नाम मनके हरनेवाली स्त्रीका है । ललना यह एक नाम चंचला स्त्रीका है । नितम्बिनी यह एक नाम सुन्दर कटिप्रान्तवाली स्त्रीका है ॥ ३ ॥ सुन्दरी यह एक नाम सुन्दर अंगोंवाली स्त्रीका है । रमणी यह एक नाम रमण करनेवाली स्त्रीका है । रामा यह एक नाम सुन्दर स्त्रीका है । कोपना, भामिनी ये दो नाम कोपवाली स्त्रीके हैं । वरारोहा, मत्तकाशिनी, पुत्तमा, वरवर्णिनी ये चार नाम बहुत गुणोंवाली स्त्रीके हैं ॥ ४ ॥ महिषी यह एक नाम अभिषेक हुई रानीका है । भोगिनी यह एक नाम राजाकी अन्य रानियोंका है । पत्नी, पाणिगृहीती, द्वितीया, सहधर्मिणी ॥ ५ ॥ भार्या, जाया, दार ये सात नाम विवाही हुई स्त्रीके हैं । तहाँ दारशब्द (पु०) बहुवचनान्त है । कुटुम्बिनी, पुरंध्री ये दो नाम कुटुम्बवाली स्त्रीके हैं । सुचरित्रा, सती, साध्वी, पतिव्रता ये चार नाम पतिव्रता स्त्रीके हैं ॥ ६ ॥ कृतसापत्निका, अध्यूढा, अधिविन्ना ये तीन नाम अनेक विवाहवाले पुरुषकी पहली विवाही स्त्रीके हैं । स्वयंवरा, पतिवरा, वर्या ये तीन नाम स्वयंवर करनेवाली स्त्रीके हैं । कुलस्त्री, कुलपालिका ये दो नाम कुलवाली स्त्रीके हैं ॥ ७ ॥

कन्या कुमारी गौरी तु नग्निकाऽनागतार्तवा ।
 स्यान्मध्यमा दृष्टरजास्तरुणी युवतिः समे ॥ ८ ॥
 समाः स्नुषाजनीवध्वश्चिरिण्टी तु सुवासिनी ।
 इच्छावती कामुका स्याद्रूपस्यन्ती तु कामुकी ॥ ९ ॥
 कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साऽभिसारिका ।
 पुंश्वली धर्षिणी बन्धक्यसती कुलदेत्वरी ॥ १० ॥
 स्वैरिणी पांसुला च स्यादशिश्वी शिशुना विना ।
 अवीरा निष्पतिमुता विश्वस्ताविधवे समे ॥ ११ ॥
 आलिः सखी वयस्यास्य पतिवत्नी सभर्तृका ।
 वृद्धा पलिकी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती ॥ १२ ॥
 शूद्री शूद्रस्य भार्या स्याच्छूद्रा तज्जातिरेव च ।
 आभीरी तु महाशूद्री जातिपुंगवयोगयोः समा ॥ १३ ॥

कन्या, कुमारी ये दो नाम कुंवारी स्त्रीके हैं । गौरी, नग्निका, अनागतार्तवा ये तीन नाम नहीं दीखे हुए रजवाली स्त्रीके हैं । मध्यमा, दृष्टरजा (सान्त) ये दो नाम प्रथम दीखे हुए रजवाली स्त्रीके हैं । तरुणी, युवति ये दो नाम मध्यम अवस्थावाली (जवान) स्त्रीके हैं ॥ ८ ॥ स्नुषा, जनीवधू ये तीन नाम पुत्र आदिकी स्त्रीके हैं । चिरिटी, सुवासिनी ये दो थोड़े उठे यौवनवाली विवाही स्त्रीके हैं । इच्छावती, कामुका ये दो कामदेवकी इच्छावाली स्त्रीके हैं । वृषस्यन्ती, कामुकी ये दो नाम वृष अश्वकी तरह भोगकी इच्छावाली स्त्रीके हैं ॥ ९ ॥ अभिसारिका यह नाम पतिकी इच्छासे संकेतस्थानको जानेवाली स्त्रीका है । पुंश्वली धर्षिणी, बंधकी, असती, कुलटा, इत्वरी ॥ १० ॥ स्वैरिणी, पांसुला ये दो नाम जारिणी स्त्रीके हैं । अशिश्वी यह एक नाम विना बालकवाली स्त्रीका है । अवीरा यह एक नाम पतिपुत्रसे रहित स्त्रीका है । विश्वस्ता, विधवा ये दो नाम विधवा अर्थात् रंडा स्त्रीके हैं ॥ ११ ॥ आलि, सखी, वयस्या ये तीन नाम सखीके हैं । पतिवत्नी, सभर्तृका ये दो नाम सुहागिन स्त्रीके हैं । वृद्धा, पलिकी ये दो नाम बूढ़ी स्त्रीके हैं । प्राज्ञी, प्रज्ञा ये दो थोड़ी समझवाली स्त्रीके हैं । प्राज्ञा, धीमती ये दो नाम बुद्धिवाली स्त्रीके हैं ॥ १२ ॥ शूद्री यह एक नाम शूद्रकी स्त्रीका है । शूद्रा यह एक

अर्याणी स्वयमर्या स्यात्क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ।
 उपाध्यायाप्युपाध्यायी स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥ १४ ॥
 आचार्यानी तु पुंयोगे स्यादर्या क्षत्रियी तथा ।
 उपाध्यायान्युपाध्यायी पोटा स्त्री पुंसलक्षणा ॥ १५ ॥
 वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसुः ।
 जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १६ ॥
 स्त्री नम्रिका कोटवी स्याद्दूतीसंचारिके समे ।
 कात्यायन्यर्धवृद्धा या काषायवसनाऽधवा ॥ १७ ॥
 सैरन्ध्री परवेश्मस्था स्ववशा शिल्पकारिका ।
 असिक्री स्यादवृद्धा या प्रेष्याऽन्तःपुरचारिणी ॥ १८ ॥
 वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवाऽथ सा जनैः ।
 सत्कृता वारमुख्या स्यात्कुट्टनी शम्भली समे ॥ १९ ॥

इकी शूद्रजातिवाली स्त्रीका है । आभीरी, महाशूद्री ये दो नाम गोपा-
 का स्त्रीके हैं । जातिमें और पुंयोगमें महाशूद्री ऐसाही रूप बनता है
 १३ ॥ अर्याणी, अर्या ये दो नाम वनेनीके हैं । क्षत्रिया, क्षत्रियाणी
 दो नाम क्षत्रिय जातिसे उत्पन्न हुई स्त्रीके हैं । उपाध्याया, उपाध्यायी ये
 नाम पंडितानी स्त्रीके हैं । आचार्या यह एक नाम अपने आप मंत्रोंका
 र्थ कहनेवालीका है ॥ १४ ॥ आचार्यानी यह एक नाम आचार्यकी
 णिका है । अर्या यह एक नाम वैश्यकी स्त्रीका है । क्षत्रियी यह एक नाम
 क्षत्रियस्त्रीका है । उपाध्यायानी, उपाध्यायी ये दो नाम पढानेवालेकी
 स्त्रीके हैं । पोटा यह एक नाम पुरुषके लक्षणोंवाली स्त्रीका है ॥ १५ ॥
 वीरपत्नी, वीरभार्या ये दो नाम वीरपुरुषकी स्त्रीके हैं । वीरमातृ (ऋका-
 न्त), वीरसु ये दो नाम वीरपुरुषकी माताके हैं । जातापत्या, प्रजाता,
 प्रसूता, प्रसूतिका ये चार नाम प्रसूता स्त्रीके हैं ॥ १६ ॥ कोटवी यह एक
 नाम नंगी स्त्रीका है । दूती, संचारिका ये दो नाम दूतीके हैं । आधी बूढी,
 यह हुए कपड़ोंवाली और पतिसे रहित हुई इन तीन विशेषणोंवाली स्त्री का-
 षायनी कहाती है ॥ १७ ॥ सैरन्ध्री यह एक वाम दूसरे कामकाजमें रहने-
 वाली स्वतन्त्र और बालोंका गूंथना आदि कर्म करनेवाली स्त्रीका है । जो
 स्त्री न हो आज्ञावर्तिनी हो और भीतरके स्थानमें रहनेवाली हो वह स्त्री
 असिक्री कहाती है ॥ १८ ॥ वारस्त्री, गणिका, वेश्या, रूपाजीवा ये चार

विप्रश्रिका त्वीक्षणिका दैवज्ञाऽथ रजस्वला ।
 स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि ॥ २० ॥
 ऋतुमत्यप्युदक्यापि स्याद्रजः पुष्पमार्तवम् ।
 श्रद्धालुर्दोहदवती निष्कला विगतार्तवा ॥ २१ ॥
 आपन्नसत्वा स्याद्विर्विण्यन्तर्वत्नी च गर्मिणी ।
 गणिकादेस्तु गाणिक्यं गार्भिणं यौवतं गणे ॥ २२ ॥
 पुनर्भूर्दिधिषूढा द्विस्तस्या दिधिषुः पतिः ।
 स तु द्विजोऽग्रेदिधिषूः सैव यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३ ॥
 कानीनः कन्यकाजातः सुतोऽथ सुभगासुतः ।
 सौभागिनेयः स्यात्पारस्त्रिण्यस्तु परस्त्रियाः ॥ २४ ॥

नाम वेश्याके हैं । वारमुख्या यह एक नाम पुरुषोंसे सत्कार करी
 श्याका है । कुटनी, शम्भली ये दो नाम कुटनी स्त्रीके हैं ॥ १९ ॥ विप्रशि
 र्क्षणिका, दैवज्ञा ये तीन नाम शुभ अशुभ निरूपण करनेवाली स्त्री
 रजस्वला, स्त्रीधर्मिणी, अवि, आत्रेयी, मलिनी, पुष्पवती ॥ २० ॥ ऋ
 तुदक्या ये आठ नाम रजस्वला स्त्रीके हैं । यहां तक (स्त्री०) हैं । रजस्
 पुष्प, आर्तव ये तीन (न०) नाम स्त्रीके रजके हैं । श्रद्धालु, दोह
 ये दो (स्त्री०) नाम गर्भके वशसे अन्न आदि विशेषको चाहनेवाली
 के हैं । निष्कला, विगतार्तवा ये दो (स्त्री०) नाम मासिक धर्मसे
 हुई स्त्रीके हैं ॥ २१ ॥ आपन्नसत्वा, गुर्विणी, अन्तर्वत्नी गर्मिणी
 (स्त्री०) नाम गर्भवती स्त्रीके हैं । गाणिक्य यह एक (न०) नाम
 ओंके समूहका है । गार्भिण यह एक (न०) नाम गर्भवतियोंके समूह
 है । यौवत यह एक (न०) नाम युवतियोंके समूहका है ॥ २२ ॥
 दिधिषू ये दो (स्त्री०) नाम दो बार विवाही स्त्रीके हैं । दिधिषु य
 (पु०) नाम दो बार विवाही स्त्रीके पतिका है । अग्रेदिधिषू य
 (पु०) नाम दो बार विवाही स्त्रीके पति द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्ष
 वैश्य हो उसका है ॥ २३ ॥ कानीन यह एक (पु०) नाम क
 उत्पन्न हुए पुत्रका है । सुभगासुत, सौभागिनेय ये दो (पु०) नाम
 गाके पुत्रके हैं । पारस्त्रिण्य यह एक (पु०) नाम दूसरेकी स्त्रीसे उत्प

पैतृष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्त्रीयश्च पितृष्वसुः ।
 सुतो मातृष्वसुश्चैवं वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥
 अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीपुतः ।
 कौलटेरः कौलटेयो भिक्षुकी तु सती यदि ॥ २६ ॥
 तदा कौलटिनेयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चात्मजः ।
 आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः स्त्रियां त्वमी ॥ २७ ॥
 आहुर्दुहितरं सर्वेऽपत्यं तोकं तयोः समे ।
 स्वजाते त्वौरसोरस्यौ तातस्तु जनकः पिता ॥ २८ ॥
 जनयित्री प्रसूर्माता जननी भगिनी स्वसा ।
 ननान्दा तु स्वसा पत्युर्नप्त्री पौत्री सुतात्मजा ॥ २९ ॥
 भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरः स्युः परस्परम् ।
 प्रजावती भ्रातृजाया मातुलानी तु मातुली ॥ ३० ॥

त्रका है ॥ २४ ॥ पैतृष्वसेय, पैतृष्वस्त्रीय ये दो (पु०) नाम भुआके
 त्रके हैं । मातृष्वसेय, मातृष्वस्त्रीय ये दो (पु०) नाम माताकी बहनके
 त्रके हैं । वैमात्रेय यह एक (पु०) नाम पिताकी दूसरी स्त्रीके पुत्रका
 है ॥ २५ ॥ बान्धकिनेय, बंधुल, असतीपुत, कौलटेर, कौलटेय ये पांच(पु०)
 नाम कुलटा स्त्रीके पुत्रके हैं ॥ २६ ॥ भिक्षाके लिये कुलोंमें विचरनेवाली
 सती स्त्री हो उसका पुत्र कौलटिनेय, कौलटेय इन दो (पु०) नामोंसे
 सिद्ध है । आरमज, तनय, सूनु, सुत, पुत्र ये पांच (पु०) नाम पुत्रके
 हैं । आत्मजा, तनया, सूनु, सुता, पुत्री ॥ २७ ॥ दुहिता ये छः (स्त्री०)
 नाम पुत्रीके हैं । अपत्य, तोक ये दो (पु०) नाम संतानके हैं । औरस,
 रस्य ये दो (पु०) नाम अपनी जातिकी विवाही हुई स्त्रीमें अपने सका-
 तसे उपजे पुत्रके हैं । तात, जनक, पितृ (ऋकारान्त) ये तीन (पु०)
 नाम पिताके हैं ॥ २८ ॥ जनयित्री, प्रसू, मातृ (ऋकारान्त), जननी
 चार (स्त्री०) नाम माताके हैं । भगिनी, स्वसृ (ऋकारान्त) ये दो
 स्त्री०) नाम बहनके हैं । ननान्द (ऋकारान्त) यह एक (स्त्री०)
 नाम पतिकी बहन (ननन्द) का है । नप्त्री, पौत्री सुतात्मजा ये तीन
 स्त्री०) नाम पोतीके हैं ॥ २९ ॥ यातृ (ऋकारान्त) यह एक (स्त्री०)
 नाम आपसमें दिवरांनी जिठानीका है । प्रजावती, भ्रातृजाया ये दो

पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः श्वशुरस्तु पिता तयोः ।
 पितुर्भ्राता पितृव्यः स्यान्मातुर्भ्राता तु मातुलः ॥ ३१ ॥
 श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः स्वामिनो देवृदेवरी ।
 स्वस्त्रीयो भागिनेयः स्याज्जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३२ ॥
 पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः ।
 मातुर्मातामहाद्येवं सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ३३ ॥
 समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः समाः ।
 सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाः समाः ॥ ३४ ॥
 ज्ञातेयं बन्धुता तेषां क्रमाद्भावसमूहयोः ।
 धवः प्रियः पतिर्भर्ता जारस्तूपपतिः समौ ॥ ३५ ॥

(स्त्री०) नाम भाईकी स्त्री (भौजाई) के हैं । मातुलानी, मातुल
 दो (स्त्री०) नाम मामाकी स्त्री (मामी) के हैं ॥ ३० ॥ श्वश्रू यह
 (स्त्री०) नाम पति और स्त्रीकी माता (सास) का है । श्वशुर यह
 (पु०) नाम पति और स्त्रीके पिता (सुसर) का है । पितृव्य यह
 (पु०) नाम पिताके भाई चचाका है । मातुल यह एक (पु०)
 माताके भाई (मामा) का है ॥ ३१ ॥ श्याल यह एक (पु०)
 अपनी स्त्रीके भाई (साले) का है । देवृ (ऋकारान्त), देवर ये
 (पु०) नाम देवर अर्थात् पतिके छोटे भाईके हैं । स्वस्त्रीय, भा
 ये दो (पु०) नाम बहनके पुत्र अर्थात् भानजेके हैं । जामातृ (ऋ
 रान्त) यह एक (पु०) नाम पुत्रीके पति (जमाई) का है ॥ ३२ ॥
 तामह, पितृपितृ (ऋकारान्त) ये दो (पु०) नाम दादाके हैं । प्रपिता
 यह एक (पु०) नाम पितामहके पिता (परदादा) का है । मातामह
 एक (पु०) नाम माताके पिता (नाना) का है । प्रमातामह यह
 (पु०) नाम मातामहके पिता (परनाना) का है । सपिण्ड, सना
 दो (पु०) नाम सात पुरुष अवधि कुलके हैं ॥ ३३ ॥ समानोदर्य, स
 सगर्भ्य, सहज ये चार (पु०) नाम एक मातासे उत्पन्न सगे भाईके
 सगोत्र, बान्धव, ज्ञाति, बन्धु, स्व, स्वजन ये छः (पु०) नाम अपने गो
 लेके हैं ॥ ३४ ॥ ज्ञातेय यह एक (न०) नाम ज्ञातियोंके समूहका
 बन्धुता यह एक (स्त्री०) नाम बन्धुओंके समूहका है । धव, प्रिय,

अमृते जारजः कुण्डो मृते भर्तरि गोलकः ।
 भ्रात्रीयो भ्रातृजो भ्रातृभगिन्यौ भ्रातराबुभौ ॥ ३६ ॥
 मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ ।
 श्वश्रूश्चशुरौ श्वशुरौ पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ॥ ३७ ॥
 दम्पती जम्पती जायापती भार्यापती च तौ ।
 गर्भाशयो जरायुः स्वादुल्बं च कललोऽस्त्रियाम् ॥ ३८ ॥
 सूतिमासो वैजननो गर्भो भ्रूण इमौ समौ ।
 तृतीयाप्रकृतिः षण्डः क्लीबः पण्डो नपुंसके ॥ ३९ ॥
 शिशुत्वं शैशवं बाल्यं तारुण्यं यौवनं समे ।
 स्यात्स्थाविरं तु वृद्धत्वं वृद्धसंघेऽपि वार्धकम् ॥ ४० ॥

भर्तृ (ऋकारान्त) ये चार (पु०) नाम पतिके हैं । जार, उपपति ये दो (पु०) नाम जारपतिके हैं ॥ ३६ ॥ कुण्ड यह एक (पु०) नाम पतिके बिना मरनेपर जारसे उत्पन्न पुत्रका है । गोलक यह एक (पु०) नाम पतिके मरनेबाद जारसे उपजे पुत्रका है । भ्रात्रीय, भ्रातृज ये दो (पु०) नाम भाईके पुत्र (भतीजे) के हैं । भ्रातरौ यह एक (पु०) नाम भाई सहनका है । यहाँ भगिनीशब्दका एकशेष समास हो रहा है ॥ ३६ ॥ मातापितरौ, पितरौ, मातरपितरौ, प्रसूजनयितारौ ये चार (पु०) नाम माता पिता दोनोंके हैं । श्वश्रूश्चशुरौ, श्वशुरौ ये दो (पु०) नाम सासू और ससुर दोनोंके हैं । पुत्रौ यह एक (पु०) नाम पुत्रीपुत्रका है । यहाँ एकशेष समास है ॥ ३७ ॥ दम्पती, जम्पती, जायापती, भार्यापती ये चार (पु०) नाम स्त्रीपतिके हैं । गर्भाशय (पु०), जरायु (पु०), उल्ब (न०) ये तीन नाम जेरके हैं । कलल (पु० न०) यह एक नाम वीर्य और रक्तके समूहका है ॥ ३८ ॥ सूतिमास, वैजनन ये दो (पु०) नाम प्रसवमासके हैं । गर्भ, भ्रूण ये दो (पु०) नाम गर्भके हैं । तृतीयाप्रकृति (स्त्री०), षण्ड (पु०), क्लीब, पण्ड (पु०), नपुंसक ये पाँच नाम हिजडेके हैं । तहाँ क्लीब और नपुंसक ये दोनों शब्द (पु० न०) हैं ॥ ३९ ॥ शिशुत्व, शैशव, बाल्य ये तीन (न०) नाम बालक अवस्थाके हैं । तारुण्य, यौवन ये दो (न०) नाम युवा अवस्थाके हैं । स्थाविर, वृद्धत्व, वार्धक ये तीन (न०) नाम वृद्धावस्थाके हैं ॥ ४० ॥

पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ विस्रसा जरा ।
 स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा च स्तनंधयी ॥ ४१ ॥
 बालस्तु स्यान्माणवको वयस्यस्तरुणो युवा ।
 प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि ॥ ४२ ॥
 वर्षीयान्दशमी ज्यायान्पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः ।
 जघन्यजे स्युः कनिष्ठयत्रीयोवरजानुजाः ॥ ४३ ॥
 अमांसो दुर्बलश्छातो बलवान्मांसलोऽसलः ।
 तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचाण्डिलः ॥ ४४ ॥
 अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो नतनासिके ।
 केशवः केशिकः केशी बलिनो बलिभः समौ ॥ ४५ ॥
 विकलाङ्गस्त्वपोगण्डः खर्वो ह्रस्वश्च वामनः ।
 खरणाः स्यात्खरणसो विग्रस्तु गतनासिकः ॥ ४६ ॥

पलित यह एक (न०) नाम बालआदिमें बुढापेसे सुपेदपनेका है । विस्र
 जरा ये दो (स्त्री०) नाम बुढापेके हैं । उत्तानशया, डिम्भा, स्तनपा,
 नंधयी ये चार (स्त्री०) नाम चूंचीसे दूध पीनेवाले बच्चेके हैं ॥ ४१ ॥
 आगे तिलकालक शब्दतक सब शब्द (पु०) हैं । बाल, माणवक ये
 नाम बालकके हैं । वयस्य, तरुण, युवन् (नांत) ये तीन नाम युवाके
 प्रवयस् (सान्त), स्थविर, वृद्ध, जीन, जीर्ण, जरत् (तान्त) ये छः
 बूढेके हैं ॥ ४२ ॥ वर्षीयस् (सान्त), दशमिन् (इन्नन्त), ज्यायस् (सान्त)
 ये तीन नाम अत्यन्त बूढेके हैं । पूर्वज, अग्रिय, अग्रज ये तीन नाम
 भाईके हैं । जघन्यज, कनिष्ठ, यवीयस् (सान्त), अवरज, अनुज ये
 नाम छोटे भाईके हैं ॥ ४३ ॥ अमांस, दुर्बल, छात ये तीन नाम दुर्बल
 हैं । बलवत् (तान्त), मांसल, असल ये तीन नाम बलवान्के हैं । तु
 तुन्दिभ, तुन्दिन् (इन्नन्त), बृहत्कुक्षि, पिचाण्डिल ये पांच नाम बड़े पेट
 हैं ॥ ४४ ॥ अवटीट, अवनाट, अवभ्रट, नतनासिक ये चार नाम
 नाकवालेके हैं । केशव, केशिक, केशिन् (इन्नन्त) ये तीन नाम
 बालवालेके हैं । बलिन, बलिभ ये दो नाम बुढापेसे ढीली हुई चामवाले
 ॥ ४५ ॥ विकलाङ्ग, अपोगण्ड ये दो नाम आदिसेही कम अंगोंवालेके
 खर्व, ह्रस्व, वामन ये तीन नाम बौनेके हैं । खरणस् (सान्त), खरणस

खुरणाः स्यात्खुरणसः प्रजुः प्रगतजानुकः ।
 ऊर्ध्वजुर्ऊर्ध्वजानुः स्यात्संजुः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥
 स्यादेडे बधिरः कुब्जे गडुलः कुकरे कुणिः ।
 पृश्निरल्पतनौ श्रोणः पङ्गु मुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥
 बलिरः केकरे खोडे खञ्जास्त्रिषु जरावराः ।
 जडुलः कालकः पिप्लुस्तिलकस्तिलकालकः ॥ ४९ ॥
 अनामयं स्यादागोग्यं किञ्चित्सा रुक्प्रतिक्रिया ।
 भेषजौषधभेषज्यान्वगदो जायुरित्यपि ॥ ५० ॥
 स्त्री रुग् रुजा चोपतापरोगव्याधिगदामयाः ।
 क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ ५१ ॥

नाम तीक्ष्ण (सरल) नासिकावालेके हैं । विग्र, गतनासिक ये दो नाम नक-
 के हैं ॥ ४६ ॥ खुरणस् (सान्त), खुरणस ये दो नाम खुरकी तरह नाक-
 वालेके हैं । प्रजु, प्रगतजानुक ये दो नाम गोडोंमें बहुत अंतरवालेके हैं ।
 ऊर्ध्वजु, ऊर्ध्वजानु ये दो नाम ठहरनेसे गोडे ऊपरको रहे उसके हैं । संजु,
 संहतजानुक ये दो नाम मिले हुए गोडोंवालेके हैं ॥ ४७ ॥ एड, बधिर ये
 दो नाम बहरेके हैं । कुब्ज, गडुल ये दो नाम कूबडेके हैं । कुकर, कुणि
 ये दो नाम रोग आदिसे दूषित हुए हाथोंवालेके हैं । पृश्नि, अल्पतनु ये
 दो नाम छोटे शरीरवालेके हैं । श्रोण, पंगु ये दो नाम पंगूके हैं । मुंड,
 मुण्डित ये दो नाम शिर मुंडे हुएके हैं ॥ ४८ ॥ बलिर, केकर ये दो नाम
 कायरा (छेचताने) के हैं । खोड, खंज ये दो नाम लंगडेके हैं । उत्तान-
 शय शब्दसे आदि ले खंजशब्दपर्यंत शब्द वाच्यलिङ्गी अर्थात् तीनों लिङ्गी
 हैं । जडुल, कालक, पिप्लु ये तीन नाम शरीरमें काले लहसनवालेके हैं ।
 तिलक, तिलकालक ये दो नाम शरीरमें उपजे तिलके हैं । यहाँतक (पु०)
 हैं ॥ ४९ ॥ अनामय, आरोग्य ये दो (न०) नाम आरोग्यके हैं । चि-
 कित्सा, रुक्प्रतिक्रिया ये दो (स्त्री०) नाम रोगके इलाजके हैं । भेषज
 (न०), औषध (न०), भेषज्य (न०), अगद (पु०), जायु (पु०)
 ये पाँच नाम औषधके हैं ॥ ५० ॥ रुज् (जान्त), रुजा, उपताप, रोग,
 व्याधि, गद, आम्य ये सात नाम रोगके हैं । रुज् और रुजा (स्त्री०)
 शोष (पु०) हैं । क्षय, शोष, यक्ष्मन् (नात) ये तीन (पु०) नाम क्षयी

स्त्री क्षुत् क्षुतं क्षवः पुंसि कासस्तु क्षवथुः पुमान् ।
 शोफस्तु श्वयथुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ ५२ ॥
 किलाससिध्मे कच्छ्रां तु पामपामे विचर्चिका ।
 कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया विस्फोटः पिटकः स्त्रियाम् ॥ ५३ ॥
 व्रणोऽस्त्रियामीर्ममरुः स्त्रीवे नाडीव्रणः पुमान् ।
 कोठो मण्डलकं कुष्ठश्चित्रे दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥
 आनाहस्तु निबन्धः स्याद् ग्रहणीरुक् प्रवाहिका ।
 प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु वमथुः समाः ॥ ५५ ॥
 व्याधिमेदा विद्रधिः स्त्री ज्वरमेहमगंदराः ।
 “ स्त्रीपदं पादवल्मीकं केशघ्नस्तिवन्द्रलुप्तकः । ”
 अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात्पूर्वे शुक्रावधेस्त्रिषु ॥ ५६ ॥

रोगके हैं । प्रतिश्याय, पीनस ये दो (पु०) नाम पीनसरोगके हैं ॥ ५१ ॥
 क्षुत् (तान्त स्त्री०) क्षुत (न०), क्षव (पु०) ये तीन नाम छाँकके
 कास, क्षवथु ये दो (पु०) नाम खाँसीके हैं । शोफ, श्वयथु, शोथ ये
 (पु०) नाम सूजनेके हैं । पादस्फोट (पु०), विपादिका (स्त्री०)
 ये दो नाम पादस्फोट (बिवाई) के हैं ॥ ५२ ॥ किलास, सिध्मे
 (तान्त) ये दो (न०) नाम सींपरोगके हैं । कच्छ्रा, पामन् (नान्त
 पामा, विचर्चिका ये चार नाम खाजके हैं । तहाँ पामन्
 (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । कण्डू, खर्ज, कण्डूया ये तीन (स्त्री०)
 नाम खुजलीके हैं । विस्फोट (पु०), पिटक (पु० स्त्री०) ये दो नाम
 डेके हैं । (स्त्री०) में पिटका (फुंसी) ऐसा होता है ॥ ५३ ॥
 ईर्म, अरुस् ये तीन नाम घावके हैं । तहाँ व्रणशब्द (पु० न०) शेष
 (न०) हैं । नाडीव्रण यह एक (पु०) नाम नाडीव्रण (नमूर) का
 कोठ (पु०), मण्डलक (न०) ये दो नाम गजकर्ण (कुष्ठ) के
 कुष्ठ, चित्र ये दो (न०) नाम श्वेतकुष्ठके हैं । दुर्नामक, अर्शस् (सा
 ये दो (न०) नाम बवासीरके हैं ॥ ५४ ॥ आनाह, निबन्ध ये दो (पु०)
 नाम मल मूत्र रुकने अर्थात् कब्जके हैं । ग्रहणीरुज् (जान्त), प्रवाहिका
 ये दो (स्त्री०) नाम संग्रहणीके हैं । प्रच्छर्दिका (स्त्री०), वमि (स्त्री०)
 वमथु (पु०) ये तीन नाम छाँदिके हैं ॥ ५५ ॥ विद्रधि यह एक (स्त्री०)

रोगहार्यगदंकारो भिषग्वैद्यौ चिकित्सके ।
 वार्तो निरामयः कल्य उल्लाघो निर्गतो गदात् ॥ ५७ ॥
 ग्लानग्लासू आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः ।
 आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः समौ पामनकच्छुरौ ॥ ५८ ॥
 ददुणो ददुरोगी स्यादर्शरोगयुतोऽर्शसः ।
 वातकी वानरोगी स्यात्सातिसारोऽतिसारकी ॥ ५९ ॥
 स्युः क्लिन्नाक्षे चुलचिलपिलाः क्लिन्नेऽक्षिण चाप्यमी ।
 उन्मत्त उन्मादवति श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी ॥ ६० ॥
 न्युब्जो भुग्ने रुजा वृद्धनाभौ तुन्दिलतुन्दिभौ ।
 किलासी सिध्मलोऽन्धोऽदृङ् मूर्च्छाले मूर्तमूर्छितौ ॥ ६१ ॥

नाम विद्वधिरोगका है । ज्वर यह एक (पु०) नाम ज्वरका है । मेह यह एक (पु०) नाम प्रमेहका है । भगंदर यह एक (पु०) नाम भगंदरका है । “ श्लीपद, पादवल्मीक ये दो (न०) नाम श्लीपदके हैं । केशघ्न, इन्द्र-
 क्षुप्तक ये दो (पु०) नाम इन्द्रक्षुप्तके हैं । ” अश्मरी (स्त्री०) यह एक नाम पथरीरोगका है । मूत्रकुच्छू यह एक (न०) नाम मूत्रकुच्छूरोगका है । शुक्रशब्दसे पूर्व याने मूर्च्छितपर्यंत शब्द वाच्यलिंगी (त्रिलिंगी) हैं ॥ ५७ ॥ रोगहारिन्, अगदंकार, भिषज् (जान्त), वैद्य, चिकित्सक ये पांच नाम वैद्यके हैं । वार्त्त, निरामय, कल्य ये तीन नाम रोगसे रहित हुए मनुष्यके हैं । उल्लाघ यह एक नाम रोगसे मुक्त हुए मनुष्यका है ॥ ५८ ॥ ग्लान, ग्लासू ये दो नाम रोग आदिके वशकरके आनन्दरहितका है । आमयादिन् (इन्नन्त), विकृत, व्याधित, अपटु, आतुर, अभ्यमित, अभ्यात ये सात नाम रोगीके हैं । पामन, कच्छुर ये दो नाम पामरोगीके हैं ॥ ५९ ॥ ददुण, ददुरोगिन् (इन्नन्त) ये दो नाम दादरोगीके हैं । अर्शस यह एक नाम बवासार रोगीका है । वातकिन् (इन्नन्त), वानरोगिन् (इन्नन्त) ये दो नाम वातरोगीके हैं । सातिसार, अतिसारकिन् ये दो नाम अतिसार रोगीके हैं ॥ ६० ॥ क्लिन्नाक्ष, चुल्ल, चिल्ल, णिल्ल ये चार नाम चिपडी (चुंड़ी) आंखोंवालेके हैं । उन्मत्त, उन्मादवत् (मत्तन्त) ये दो नाम उन्मादरोगीके हैं । श्लेष्मल, श्लेष्मण, कफिन् (इन्नन्त) ये तीन नाम कफरोगीके हैं ॥ ६१ ॥ न्युब्ज यह एक नाम रोगकरके अधोमुख हुए
 ८ अमर.

शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च ।
 मायुः पित्तं कफः श्लेष्मा स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा ॥ ६२ ॥
 पिशितं तरसं मांसं पललं कव्यमामिषम् ।
 उत्तप्तं शुष्कमांसं स्यात्तद्वह्नीं त्रिलिङ्गकम् ॥ ६३ ॥
 रुधिरंऽसृग्लोहितास्त्ररक्तक्षतजशोणितम् ।
 बुक्काग्रमांसं हृदयं हृन्मेदस्तु वपा वसा ॥ ६४ ॥
 पश्चाद्ग्रीवाशिरा मन्या नाडी तु धमनिः शिरा ।
 तिलकं क्लोम मस्तिष्कं गोर्दं किट्टं मलोऽस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥
 अन्त्रं पुरीतत् गुल्मस्तु स्त्रीहा पुंस्यथ वस्त्रसा ।
 स्नायुः स्त्रियां कालखण्डयकृती तु समे इमे ॥ ६६ ॥

कुबडेका है । वृद्धनाभि, तुंदिल, तंदिम ये तीन नाम वात आदिसे उ
 हई नाभिवालेके हैं । किलासिन् (इन्नन्त), सिध्मल ये दो नाम स्त्री
 गीके हैं । अंध, अदृश (शान्त) ये दो नाम अंधेके हैं । मूर्च्छाल, मूर्च्छित
 ये तीन नाम मूर्च्छावालेके हैं ॥ ६१ ॥ शुक्र, तेजस् (सान्त्
 रेतस् (सान्त), बीज, वीर्य, इन्द्रिय ये छः (न०) नाम वीरजके
 मायु (पु०), पित्त (न०) ये दो नाम पित्तके हैं । कफ, श्ले
 (नान्त) ये दो (पु०) नाम कफके हैं । त्वच् (चान्त), असृग्धरा
 (स्त्री०) नाम खालके हैं ॥ ६२ ॥ पिशित, तरस, मांस, पलल, कव्य, अ
 ये छः (न०) नाम मांसके हैं । उत्तप्त (न०), शुष्कमांस (न०),
 (त्रि०) ये तीन नाम सूखे मांसके हैं ॥ ६३ ॥ रुधिर, असृज्, लोहित, र
 रक्त, क्षतज, शोणित ये सात (न०) नाम रक्तके हैं । बुक्का (त्रि०), अग्र
 (न०) ये दो नाम हृदयके भीतर कमलके आकारवाले मांसभेदके हैं । ह
 हृत् ये दो (न०) नाम हृदके हैं । मेदस् (न०), वपा (स्त्री०),
 (स्त्री०) ये तीन नाम मांसके उपजे स्नेह (चर्मी) के हैं ॥ ६४ ॥
 यह एक (स्त्री०) नाम नाडके पिछले भागका है । नाडी, धमनी,
 ये तीन (स्त्री०) नाम नाडीके हैं । तिलक, क्लोमन् (नान्त) ये दो
 नाम मांसके पिंडविशेषके हैं । मस्तिष्क, गोर्दं ये दो (न०) नाम मस्ति
 उपजे घृतके आकारवाले चिकनाहटका है । किट्ट (न०), मल (पु०)
 दो नाम मलके हैं ॥ ६५ ॥ अन्त्र (न०), पुरीतत् (पु० न०)

सृणिका स्यन्दिनी लाला दूषिका नेत्रयोर्मलम् ।

“ नासामलं तु सिङ्घाणं पिञ्ज्रूपं कर्णयोर्मलम् । ”

मूत्रं प्रस्राव उच्चारवस्करो शमलं शकृत् ॥ ६७ ॥

पुरीषं गूथवर्चस्कमस्त्री विष्टाविशौ स्त्रियौ ।

स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री कीकसं कुल्यमस्थि च ॥ ६८ ॥

स्याच्छरीरास्थि कङ्कालः पृष्ठास्थि तु कशेरुका ।

शिरोऽस्थनि करोटिः स्त्री पार्श्वास्थनि तु पर्शुका ॥ ६९ ॥

अङ्गं प्रतीकोऽवयवोपघनोऽथ कलेवरम् ।

गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ॥ ७० ॥

कायो देहः क्लीवपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः ।

पादाग्रं प्रपदं पादः पदंघ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम् ॥ ७१ ॥

नाम आंतके हैं । गुल्म, प्लीहन् (नान्त) ये दो (पु०) नाम बाई को-
स्थित मांसपिंड अर्थात् तिळीके हैं । वस्त्रसा, स्नायु ये दो (स्त्री०)
नाम अंग प्रत्यंग सांधि इन्हांके बन्धनरूपनसके हैं । कालखंड, यकृत ये
दो (न०) नाम दाहिनी कोखके मांसके पिंडके हैं ॥ ६६ ॥ सृणिका,
स्यन्दिनी, लाला ये तीन (स्त्री०) नाम लारके हैं । दूषिका यह एक
(स्त्री०) नाम नेत्रोंकी गीडका है । “सिंघाण यह एक (न०) नाम नाकके
मलका है । पिञ्ज्रूप यह एक (न०) नाम कानोंके मलका है ।” मूत्र (न०),
प्रस्राव (पु०) ये दो नाम पिसाबके हैं । उच्चार (पु०), अवस्कर
(पु०), शमल (न०), शकृत् (न०) ॥ ६७ ॥ पुरीष (न०) गूथ,
वर्चस्क, विष्टा विश् ये नव नाम विष्टाके हैं । तहां गूथ और वर्चस्कशब्द
(पु० न०), विष्टा और विश्शब्द (स्त्री०) हैं । कर्पर (पु०), कपाल ये
दो नाम खोपडीके हैं । यहां कपालशब्द (पु० न०) है । कीकस, कुल्य,
अस्थि ये तीन (न०) नाम हड्डीके हैं ॥ ६८ ॥ कंकाल एह एक (पु०)
नाम शरीरकी हड्डियोंके पिंजरेका है । कशेरुका यह एक (स्त्री०) नाम
गीडकी हड्डीका है । करोटि यह एक (स्त्री०) नाम शिरकी हड्डीका है ।
पर्शुका यह एक (स्त्री०) नाम पसलीकी हड्डीका है ॥ ६९ ॥ अंग, प्रतीक,
प्रवयव, अपघन ये चार नाम अंगोंके हैं । अंगशब्द (न०) शेष (पु०) हैं ।
कलेवर, गात्र, वपुस् (सांत), संहनन, शरीर, वर्ष्मन् (नांत), विग्रह ॥ ७० ॥
काय, देह, मूर्ति, तनु, तनू ये बारह नाम शरीरके हैं । तहां कलेवरसे वर्ष्म-

तद्ग्रन्थी घुटिके गुल्फौ पुमान्पार्ष्णिस्तयोरधः ।
 जंघा तु प्रसृता जानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् ॥ ७२ ॥
 सक्थि क्लीबे पुमानूरुस्तत्संधिः पुंसि वङ्गणः ।
 गुदं त्वपानं पायुर्ना वस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥
 कटो ना श्रोणिफलकं कटिः श्रोणिः ककुब्जती ।
 पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः क्लीबे तु जघनं पुरः ॥ ७४ ॥
 कूपकौ तु नितंबस्थौ द्वयहीने कुकुन्दरे ।
 स्त्रियां स्फिचौ कटिप्रोथावुपस्थो वक्ष्यमाणयोः ॥ ७५ ॥
 भगं योनिर्द्वयोः शिश्रौ मेद्री मेहनशेफसी ।
 मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥ ७६ ॥

नशब्दतक (न०) हैं । विग्रह और काय (पु०) हैं देहशब्द (पु०)
 है मूर्ति, तनु, तनू ये तीनों शब्द (स्त्री०) हैं । पादाग्र, प्रपद ये दो (न०)
 नाम पैरके अग्रभागके हैं । पाद, पत्, अंग्रि, चरण ये चार नाम पैरके
 तहां चरणशब्द (पु० न०) शेष (पु०) हैं ॥ ७१ ॥ घुटिका (स्त्री०),
 (पु० न०) ये दो नाम टकनेके हैं । पार्ष्णि यह एक (पु०) नाम
 का है । जंघा, प्रसृता ये दो (स्त्री०) नाम जांघके हैं । जानु, ऊरु
 (नांत), अष्ठीवत् (मत्वंत) ये तीन (पु० न०) नाम गोडाकी
 (घुटने) के हैं ॥ ७२ ॥ सक्थि (न०), ऊरु (पु०) ये दो नाम गो
 उपर भागके हैं । वक्ष्यण यह एक (पु०) नाम ऊरुकी संधिका है ।
 (न०), अपान (न०), पायु (पु०) ये तीन नाम गुदाके हैं ।
 यह एक (पु० स्त्री०) नाम नाभिके नीचे स्थानका है ॥ ७३ ॥ क
 एक (पु०) नाम कटिके फलकका है । कटि, श्रोणि, ककुब्जती ये
 (स्त्री०) नाम कटिके हैं । नितम्ब यह एक (पु०) नाम स्त्रीकी क
 पश्चाद्भागका है । जघन यह एक (न०) नाम स्त्रीकी कटिके अग्रभा
 है ॥ ७४ ॥ कुकुन्दर यह एक (न०) नाम पृष्ठवंशसे अधोभागमें
 मान गत्तीका है । स्फिच (स्त्री०), कटिप्रोथ (पु०) ये दो नाम क
 स्थित मांसके पिंडों अथात् कूलोंके हैं । उपस्थ यह एक (पु०)
 योनि और लिंगका है ॥ ७५ ॥ भग (न०), योनि (पु० स्त्री०)
 नाम स्त्रियोंकी योनिके हैं । शिश्र (पु०), मेद्री (पु० न०), मेहन (पु०)

पिचण्डकुक्षी जठरोदरं तुन्दं स्तनौ कुचौ ।

चूचुकं तु कुचाग्रं स्यान्न ना क्रोडं भुजान्तरम् ॥ ७७ ॥

उरो वत्सं च वक्षश्च पृष्ठं तु चरमं तनोः ।

स्कन्धो भुजशिरोऽसोऽस्त्री सन्धी तस्यैव जत्रुणी ॥ ७८ ॥

बाहुमूले उमे कक्षौ पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।

मध्यमं चावलग्नं च मध्योऽस्त्री द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥

भुजबाहु प्रवेष्टो दोः स्यात्कफोणिस्तु कूर्परः ।

अस्योपरि प्रगण्डः स्यात्प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥ ८० ॥

मणिवन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो बहिः ।

पञ्चशाखः शयः पाणिस्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥

शेषस् (न०) ये चार नाम लिंगके हैं । मुष्क, अंडकोश, वृषण ये तीन (पु०) नाम अंडकोशके हैं । त्रिक यह एक (न०) नाम पीठके वंशके नीचे तीन हड्डियोंकरके घटितस्थानका है ॥ ७६ ॥ पिचंड (पु०), कुक्षि (पु०), जठर (पु० न०), उदर (न०), तुंद (न०) ये पांच नाम पेटके हैं । स्तन, कुच ये दो (पु०) नाम चूचियोंके हैं । चूचुक (पु० न०), कुचाग्र (न०) ये दो नाम चूचियोंके अग्रभागके हैं । क्रोड, भुजान्तर ॥ ७७ ॥ उरस् (सान्त), वत्स, वक्षस् (सान्त) ये पांच नाम छातीके हैं । तहां क्रोडशब्द (स्त्री० न०) शेष (न०) हैं । पृष्ठ यह एक (न०) नाम शरीरकी पीठका है । स्कंध (पु०), भुजशिस् (सान्त न०), अंस (पु० न०) ये तीन नाम कंधेके हैं । जत्रु यह एक (न०) नाम कंधोंकी संधि अर्थात् जोतोंका है ॥ ७८ ॥ बाहुमूल (न०), कक्ष (पु०) ये दो नाम कोखके हैं । पार्श्व यह एक (पु० न०) नाम दोनों कोखोंके नीचकी जगहका है । मध्यम, अवलग्न, मध्य ये तीन (पु० न०) नाम कमरके हैं । भुज बाहु शब्द (स्त्री० पु०) हैं ॥ ७९ ॥ भुज (भुजा), बाहु, प्रवेष्ट, दोस् (सान्त) ये चार नाम भुजाके हैं । भुज बाहु शब्द (पु० स्त्री०) शेष (पु०) हैं । कफोणि, कूर्पर ये दो (पु० न०) नाम कुहनीके हैं । प्रगंड यह एक (पु०) नाम कुहनीके ऊपरले स्थानका है । प्रकोष्ठ यह एक (पु०) नाम कुहनीके नीचे भागका है ॥ ८० ॥ मणिवन्ध यह एक (पु०) नाम हाथ और प्रकोष्ठकी संधिका

अंगुल्यः करशाखाः स्युः पुंस्यंगुष्ठः प्रदेशिनी ।
 मध्यमाऽनामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात् ॥ ८२ ॥
 पुनर्मवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम् ।
 प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्यादियुते तते ॥ ८३ ॥
 अंगुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशांगुलः ।
 पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृतांगुलौ ॥ ८४ ॥
 द्वौ संहतौ संहतलप्रतलौ वामदक्षिणौ ।
 पाणिर्निकुब्जः प्रसृतिस्तौ युतावज्जलिः पुमान् ॥ ८५ ॥
 प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तौ मुष्ट्या तु वद्धया ।
 स रत्निः स्यादरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना ॥ ८६ ॥

है । करम यह एक (पु०) नाम माणिबंधसे लेके कनिष्ठिका अंगुली
 हाथके बाहरले भागका है । पञ्चशाख, शय, पाणि ये तीन (पु०)
 हाथके हैं । तर्जनी, प्रदेशिनी ये दो (स्त्री०) नाम अंगूठेके समीप
 अंगुलीके हैं ॥ ८१ ॥ अंगुली, करशाखा ये दो (स्त्री०) नाम अंगु
 मात्रके हैं । अंगुष्ठ यह एक (पु०) नाम अंगूठेका है । प्रदेशिनी (तर्जनी)
 यह एक (स्त्री०) नाम अंगूठेके पासकी अंगुलीका है । मध्यमा यह
 (स्त्री०) नाम बीचकी अंगुलीका है । अनामिका यह एक (स्त्री०) नाम
 छोटी अंगुलीके समीपवाली अंगुलीका है । कनिष्ठा यह एक (स्त्री०) नाम
 छोटी अंगुलीका है । ये अंगुली क्रमसे जाननी चाहिये ॥ ८२ ॥ पुं
 (पु०), कररुह (पु०), नख (पु० न०), नखर (पु० न०) ये चार नाम नख
 हैं । प्रादेश यह एक (पु०) नाम तर्जनी अंगुलीसे अंगूठेपर्यंत विस्तार
 है । ताल यह एक (पु०) नाम मध्यमा अंगुलीसे अंगूठेपर्यंतका
 गोकर्ण यह एक (पु०) नाम अनामिका अंगुलीसे अंगूठेपर्यंत विस्तार
 है ॥ ८३ ॥ वितस्ति (पु० स्त्री०), द्वादशांगुल (पु०) ये दो नाम क
 णिका अंगुलीसे अंगूठेपर्यंत विस्तारके हैं । चपेट, प्रतल, हस्त ये तीन (पु०)
 नाम विस्तृत हुई अंगुलियोंवाले हाथके हैं ॥ ८४ ॥ संहतल, प्रतल ये
 (पु०) नाम दोनों हाथोंके मिलनेका है । प्रसृति यह एक (पु०) नाम
 पसकेका है । दो प्रसृतियोंकी अंजलि होती है । तहां अंजलिशब्द (पु०)
 है ॥ ८५ ॥ हस्त यह एक (पु०) नाम अंगुलीके अग्रभागसे कुहनी

व्यामो बाहोः सकरयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम् ।
 ऊर्ध्वविस्तृतदोष्पाणिनृमाने पौरुषं त्रिषु ॥ ८७ ॥
 कण्ठो गलोऽथ ग्रीवायां शिरोधिः कन्धोऽपि ।
 कम्बुग्रीवा त्रिरेखा साऽवदुर्घाटा कृकाटिका ॥ ८८ ॥
 वक्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् ।
 क्लीबे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका ॥ ८९ ॥
 ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी ।
 अधस्ताच्चिबुकं गण्डौ कपोलौ तत्परा हनुः ॥ ९० ॥
 रदना दशना दन्ता रदास्तालु तु काकुदम् ।
 रसज्ञा रसना जिह्वा प्रान्तावोष्ठस्य सृक्किणी ॥ ९१ ॥

लम्बे हाथका है । रस्ति यह एक (पु० स्त्री०) नाम बन्धी हुई मुठ्ठीसहित हाथका है । अरस्ति यह एक (पु० स्त्री०) नाम छोटी अंगुलीसे वर्जित मुठ्ठीसहित हाथका है ॥ ८६ ॥ व्याम यह एक (पु०) नाम हाथों-सहित बाहुओंके मध्यका है । पौरुष यह एक नाम ऊपरको लम्बे हाथ किये मनुष्यके प्रमाणका है और त्रिलिङ्गी है ॥ ८७ ॥ कंठ, गल ये दो (पु०) नाम कंठके हैं । कंठशब्द (त्रि०) भी है । ग्रीवा, शिरोधि, कंधरा ये तीन (स्त्री०) नाम नाडके हैं । कंबुग्रीवा यह एक (स्त्री०) नाम तीन रेखाओंसे युत हुई नाडका है । अवटु (पु० स्त्री०), घाटा (स्त्री०), कृकाटिका (स्त्री०) ये तीन नाम नाड और शिरकी संधिके मध्यभागके हैं ॥ ८८ ॥ वक्र, आस्य, वदन, तुंड, आनन, लपन, मुख ये सात (न०) नाम मुखके हैं । घ्राण, गन्धवहा, घोणा, नासा, नासिका ये पाँच नाम नासिकाके हैं । घ्राणशब्द (न०) शेष (स्त्री०) हैं ॥ ८९ ॥ ओष्ठ (पु०), अधर (पु०), रदनच्छद (पु०), दशनवासस् (सान्त न०) ये चार नाम ओंठके हैं । चिबुक यह एक (न०) नाम ओंठके नीचे भागका है । गंड, कपोल ये दो (पु०) नाम गालके हैं । हनु यह एक (पु० स्त्री०) नाम ठोड़ीका है ॥ ९० ॥ रदन, दशन, दन्त, रद ये चार (पु०) नाम दांतोंके हैं । दशनशब्द (न०) भी है । तालु, काकुद ये दो (न०) नाम तालुवाके हैं । रसज्ञा, रसना, जिह्वा ये तीन (स्त्री०) नाम जीभके हैं । सृक्किणी यह एक (स्त्री०) नाम दोनों ओंठोंके प्रान्त-

ललाटमलिकं गोधिरुध्वं दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ ।
 कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं तारकाक्षः कनीनिका ॥ ९२ ॥
 लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुराक्षिणी ।
 दृग्दृष्टौ चासु नेत्राम्बु रोदनं चास्रमश्रु च ॥ ९३ ॥
 अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ।
 कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः ॥ ९४ ॥
 उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्ध्ना ना मस्तकोऽस्त्रियाम् ।
 चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥
 तद्वन्दे वैशिकं कैश्यमलकाश्चूर्णकुन्तलाः ।
 ते ललाटे भ्रमरकाः काकपक्षः शिखण्डकः ॥ ९६ ॥
 कवरी केशवेशोऽथ धम्मिलः संयताः कचाः ।
 शिखा चूडा केशपाशी व्रतिनस्तु सटा जटा ॥ ९७ ॥

भागका है ॥ ९१ ॥ ललाट (न०), अलिक (न०), गोधि (पु०) ये
 नाम माथेके हैं । भ्रू यह एक (स्त्री०) नाम भ्रुकुटिका है । कूर्च यह
 (पु० न०) नाम भ्रुकुटियोंके मध्यभागका है । तारका यह एक (स्त्री०)
 नाम आँखके तारेका है ॥ ९२ ॥ लोचन, नयन, नेत्र, ईक्षण, चक्षु
 अक्षि, दृश् (शान्त), दृष्टि ये आठ नाम नेत्रके हैं । तहाँ दृश्, दृष्टि
 (स्त्री०) शेष (न०) हैं । अस्र, नेत्राम्बु, रोदन, अस्र, अश्रु ये
 (न०) नाम आँसुके हैं ॥ ९३ ॥ अपाङ्ग, यह एक (पु०) नाम नेत्र
 अंतका है । कटाक्ष यह एक (पु०) नाम अपाङ्गसे देखने और चेष्टा
 नेका है । कर्ण (पु०), शब्दग्रह (पु०) श्रोत्र (न०), श्रुति (स्त्री०)
 श्रवण (पु० न०), श्रवस् (सान्त न०) ये छः नाम कानके हैं ॥ ९४ ॥
 उत्तमाङ्ग, शिरस् (सान्त), शीर्ष, मूर्ध्वन्, मस्तक ये पाँच नाम शिरके
 तहाँ मूर्धन्शब्द (पु०) है मस्तकशब्द (पु० न०) है शेष (न०)
 चिकुर, कुन्तल, बाल, कच, केश, शिरोरुह ये छः (पु०) नाम बाल
 हैं ॥ ९५ ॥ वैशिक, कैश्य ये दो (न०) नाम बालोंके समूहके
 अलक, चूर्णकुन्तल ये दो (पु०) नाम टेढ़े बालोंके हैं । भ्रमरक यह
 (पु०) नाम ललाटपर झुके बालोंका है । काकपक्ष, शिखण्डक ये
 (पु०) नाम जुलफोंके हैं ॥ ९६ ॥ कवरी (स्त्री०), केशवेश (पु०)

वेणिः प्रवेणी शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे ।
 पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे ॥ ९८ ॥
 तनूरुहं रोम लोम तदृद्धौ श्मश्रु पुंमुखे ।
 आकल्पवेषौ नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ ९९ ॥
 दशैते त्रिष्वलंकर्ताऽलंकरिष्णुश्च मण्डितः ।
 प्रसाधितोऽलंकृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥ १०० ॥
 विभ्राद् भ्राजिष्णुगेचिष्णू भूषणं स्यादलंक्रिया ।
 अलंकारस्त्वामरणं परिष्कारो विभूषणम् ॥ १०१ ॥
 मण्डनं चाथ मुकुटं किरीटं पुंनपुंसकम् ।
 चूडामणिः शिरोरत्नं तरलो हारमध्यगः ॥ १०२ ॥

ये दो नाम बाल बांधनेकी रचनाके हैं । धम्मिल यह एक (पु०) नाम
 मोती आदिसे गुंये हुए बालोंके समूहका है । शिखा, चूडा, केशपाश; ये
 तीन (स्त्री०) नाम चौथेके हैं । सटा, जटा ये दो (स्त्री०) नाम जटाके
 हैं ॥ ९७ ॥ वेणि, प्रवेणी ये दो (स्त्री०) नाम बालोंकी मीठीके हैं ।
 शीर्षण्य, शिरस्य ये दो (पु०) नाम सुन्दर बालोंके हैं । कचपाश, केशपाश,
 केशपक्ष, कुन्तलहस्त ये चार (पु०) नाम केशसमूहके वाचक हैं ॥ ९८ ॥
 तनूरुह, रोमन् (नान्त), लोमन् (नान्त) ये तीन (न०) नाम रोमके
 हैं । तनूरुहशब्द (पु०) भी है । श्मश्रु (नांत) यह एक (न०) नाम
 पुरुषकी डाढोका है । आकल्प (पु०), वेष (पु०), नेपथ्य (न०),
 प्रतिकर्मन् (न०), प्रसाधन (न०) ये पांच नाम अलंकृतकी शोभाके हैं
 ॥ ९९ ॥ आगेके अलंकर्त्ता आदि वक्ष्यमाण दश शब्द वाच्यलिङ्गी हैं ।
 अलंकर्त्तृ, अलंकरिष्णु ये दो नाम अलंकर्त्ताके हैं । मंडित, प्रसाधित,
 अलंकृत, भूषित, परिष्कृत ये पांच नाम अलंकृतके हैं ॥ १०० ॥ विभ्राज्,
 भ्राजिष्णु, रोचिष्णु ये तीन नाम अत्यंत शोभावालेके हैं । भूषण (न०),
 अलंक्रिया (स्त्री०) ये दो नाम भूषणक्रियाके हैं । अलंकार (पु०),
 आभरण (न०), परिष्कार (पु०), विभूषण ॥ १०१ ॥ मंडन (दो न०)
 ये पांच नाम गहनेके हैं । मुकुट (न०), किरीट (पु० न०) ये दो नाम
 मुकुटके हैं । चूडामणि (पु०), शिरोरत्न (न०) ये दो नाम शिरकी
 मणिके हैं । तरल यह एक (पु०) नाम हारके मध्यगत नायकमणिका है

वालपाश्या पारितथ्या पत्रपाश्या ललाटिका ।

कर्णिका तालपत्रं स्यात्कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥ १०३ ॥

ग्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं स्याल्ललन्तिका ।

स्वर्णैः प्रालम्बिकाऽथोरःसूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १०४ ॥

हारो मुक्तावली देवच्छन्दोऽसौ शतयष्टिका ।

हारभेदा यष्टिभेदाहुच्छगुच्छार्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥

अर्द्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका ।

सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः ॥ १०६ ॥

आवापकः पारिहार्यः कटको बलयोऽस्त्रियाम् ।

केयूरमङ्गदं तुल्ये अंगुलीयकमूर्मिका ॥ १०७ ॥

॥१०२॥ वालपाश्या, पारितथ्या ये दो (स्त्री०) नाम सीमंतभूषणके हैं । पत्रपाश्या, ललाटिका ये दो (स्त्री०) नाम माथेके भूषण अर्थात् वैनके हैं । कर्णिका यह एक (स्त्री०) नाम कानके भूषणका है । तालपत्र यह एक (न०) नाम कानोंमें पहरनेके सुवर्णके पत्तोंका है । कुण्डल, कर्णवेष्टन ये दो (न०) नाम कानाके कुण्डलके हैं ॥१०३॥ ग्रैवेयक (न०), कंठभूषा (स्त्री०) ये दो नाम कंठके भूषणके हैं । लम्बन (न०), ललन्तिका (स्त्री०) ये दो नाम कंठीके हैं । प्रालम्बिका यह एक (स्त्री०) नाम सोनेके कंठीका है । उरस्सूत्रिका यह एक (स्त्री०) नाम मोतियोंकी कंठीका है ॥१०४॥ हार (पु०), मुक्तावली (स्त्री०) ये दो नाम मोतियोंके हारके हैं । देवच्छन्द यह एक (पु०) नाम सो लड़ोंवाले मोतियोंके हारका है । गुच्छ यह एक (पु०) नाम लताके भेदसे बत्तीस लड़ोंके हारका है । गुच्छार्द्ध यह एक (पु०) नाम चौबीस लड़ोंवाले हारका है । गोस्तन यह एक (पु०) नाम चौसठ लड़ोंवाले हारका है ॥१०५॥ अर्द्धहार यह एक (पु०) नाम बारह लड़ोंवाले अर्द्धहारका है । माणवक यह एक (पु०) नाम तीस लड़ोंवाले हारका है । एकावली यह एक (स्त्री०) नाम एक लड़वाले हारका है । नक्षत्रमाला यह एक (स्त्री०) नाम सत्ताईस मोतियोंसे बनाये गये उसी एकावली हारके हैं ॥१०६॥ आवापक (पु०), पारिहार्य (पु०), कटक (पु० न०), बलय (पु० न०) ये चार नाम पहुँचीके हैं । केयूर, अंगद ये दो (पु० न०) नाम बाजूबन्दके हैं । अंगुलीयक (पु० न०), उर्मिका (स्त्री०) ये दो नाम

साक्षराङ्गुलिमुद्रा स्यात्कंकणं कारभूषणम् ।
 स्त्रीकट्यां मेखला काञ्ची सप्तकी रशना तथा ॥ १०८ ॥
 क्लीबे सारसनं चाथ पुंस्कट्यां शृङ्खलं त्रिषु ।
 पदाङ्गुदं तुलाकांठिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥
 हंसकः पादकटकः किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका ।
 त्वक्फलकृमिरोमाणि वस्त्रथोनिर्दश त्रिषु ॥ ११० ॥
 बालकं क्षौमादि फालं तु कार्पासं बादरं च तत् ।
 कौशेयं कृमिकोशोत्थं राङ्गवं मृगरोमजम् ॥ १११ ॥
 अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवाम्बरम् ।
 तत्स्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युग्म् ॥ ११२ ॥
 पत्रोर्णं धौतकौशेयं बहुमूल्यं महाधनम् ।
 क्षौमं दुक्कलं स्याद्वै तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु ॥ ११३ ॥

अंगूठी और छल्लेके हैं ॥ १०७ ॥ अंगुलिमुद्रा यह एक (स्त्री०) नाम
 राम आदिके नामसे जड़ी हुई अंगूठेका है । कंकण (पु० न०), कर-
 भूषण (न०) ये दो नाम हाथोंके कड़ुओंके हैं । मेखला, कांची, सप्तकी,
 रशना ॥ १०८ ॥ सारसन ये पांच नाम स्त्रियोंकी तागडीके हैं । सारसन-
 शब्द (न०) शेष (स्त्री०) हैं । शृङ्खल यह एक नाम पुरुषकी तागडीका
 है । तहाँ शृङ्खलशब्द त्रिलिङ्गी है । पादाङ्गुद (न०), तुलाकांठि (स्त्री०),
 मञ्जीर (पु० न०), नूपुर (पु० न०) ॥ १०९ ॥ हंसक (पु०), पाद-
 कटक (पु०) ये छः नाम पेलरा झांझणा वा पाजेवके हैं । किङ्किणी, क्षुद्रघ-
 ण्टिका ये दो (स्त्री०) नाम घूँघरूवाली तागडीके हैं । त्वक्, फल, कृमि,
 रोम ये चारों वस्त्रोंकी थोनि हैं । बालकसे निष्प्रवाणिपर्यंत दश शब्द त्रिलि-
 ङ्गी हैं ॥ ११० ॥ बालक अर्थात् बलकलसे बना क्षौम अर्थात् अतसी आदिसे
 बना वस्त्र जानना । यह एक नाम बकलके वस्त्रका है । फाल, कार्पास,
 बादर ये तीन नाम रुई आदिके वस्त्रके हैं । कौशेय यह एक नाम कृमियोंके
 कोशसे उपजे वस्त्रका है । राङ्गव यह एक नाम मृग आदिके रोमसे बने हुए
 वस्त्रका है ॥ १११ ॥ अनाहत, निष्प्रवाणि, तन्त्रक, नवाम्बर ये चार नाम
 नये वस्त्रके हैं । उद्गमनीय यह एक (न०) नाम धोये हुए दो वस्त्रोंके
 जोड़ेका है ॥ ११२ ॥ पत्रोर्ण यह एक (न०) नाम धोये हुए कौशेय

स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः स्युर्वस्त्रयोर्द्वयोः ।
 दैर्घ्यमायाम आरोहः परिणाहो विशालता ॥ ११४ ॥
 पटच्चरं जीर्णवस्त्रं समौ नक्तककर्पटौ ।
 वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् ॥ ११५ ॥
 सुचेलकः पटोऽस्त्री स्याद्वराशिः स्थूलशाटकः ।
 निचोलः प्रच्छदपटः समौ रल्लककम्बलौ ॥ ११६ ॥
 अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोऽंशुके ।
 द्वा प्रावागेत्तरासङ्गौ समौ बृहतिका तथा ॥ ११७ ॥
 संव्यानमुत्तरीयं च चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम् ।
 नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे ॥ ११८ ॥

वस्त्रका है । महाधन यह एक (न०) नाम बहुत मोलके वस्त्र अर्थात् दुशालेका है । क्षौम, दुकूल ये दो (न०) नाम पाटके वस्त्रके हैं । निवीत प्रावृत ये दो नाम प्रावृत (ढके हुए) वस्त्रके हैं और त्रिलिङ्गी हैं ॥ ११३ ॥ दशा यह एक नाम वस्त्रके दोनों किनारोंका है । तहां दशाशब्द बहुवचना (स्त्री०) है । दैर्घ्य (न०), आयाम (पु०), आरोह (पु०) ये तीन नाम वस्त्रकी लम्बाईके हैं । परिणाह (पु०), विशालता (स्त्री०) ये दो नाम वस्त्रके विस्तारके हैं ॥ ११४ ॥ पटच्चर, जीर्णवस्त्र ये दो (न०) नाम पुराने वस्त्रके हैं । नक्तक, कर्पट ये दो (पु०) नाम पुराने वस्त्रके टुकड़ेके हैं । वस्त्र, आच्छादन, वासस् (सात), चैल, वसन, अंशुक ये छः (न०) नाम वस्त्रके हैं ॥ ११५ ॥ सुचेलक (पु०), पट (पु० न०) ये दो नाम शोभन वस्त्रके हैं । वराशि (पु०), स्थूलशाटक (त्रि०) ये दो नाम मोटे वस्त्रके हैं । निचोल (त्रि०), प्रच्छदपट (पु०) ये दो नाम वीणा आदिके ढकनेके वस्त्रके हैं । रल्लक, कंबल ये दो (पु०) नाम कंबलके हैं ॥ ११६ ॥ अंतरीय, उपसंव्यान, परिधान, अधोऽंशुक ये चार (न०) नाम शरीरके नीचे भागके वस्त्र पाजामा आदिके हैं । प्रावार (पु०), उत्तरासंग (पु०), बृहतिका (स्त्री०) ॥ ११७ ॥ संव्यान (न०), उत्तरीय (न०) ये पांच नाम दुपट्टेके हैं । चोल (पु०), कूर्पासक (पु० न०) ये दो नाम आंगीके हैं । नीशार यह एक (पु०) नाम शीत और वायुको निवारण

अर्धोरुकं वरस्त्रीणां स्याच्चण्डातकमस्त्रियाम् ।

स्यात्रिष्वाप्रपदीनं तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत् ॥ ११९ ॥

अस्त्री वितानमुल्लोचो दूष्याद्यं वस्त्रवेश्मनि ।

प्रतिसीरा जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च सा ॥ १२० ॥

परिकर्मांगसंस्कारः स्यान्मार्ष्टिर्मार्जना मृजा ।

उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे आप्लाव आप्लवः ॥ १२१ ॥

स्नानं चर्चा तु चार्चिक्यं स्थासकोऽथ प्रबोधनम् ।

अनुबोधः पत्रलेखा पत्राङ्गुलिरिमे समे ॥ १२२ ॥

तमालपत्रातिलकचित्रकाणि विशेषकम् ।

द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रियामथ कुंकुमम् ॥ १२३ ॥

काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं बाह्लीकपीतने ।

रक्तसंकोचपिशुनं धीरं लोहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥

करनेवाले ओढनेके वस्त्रका है ॥ ११८ ॥ चंडातक यह एक (पु० न०) नाम स्त्रियोंके लहंगेका है । आप्रपदीन यह एक (त्रि०) नाम जो वस्त्र परके अग्रभागपर्यंत हो उसका है ॥ ११९ ॥ वितान (पु० न०), उल्लोच (पु०) ये दो नाम चंदोवा वस्त्रके हैं । दूष्य (न०), पटकुटी (स्त्री०) ये दो नाम डेरा तम्बूके हैं । प्रतिसीरा, जवनिका, तिरस्करिणी ये तीन (स्त्री०) नाम पडदा (कनात) के हैं ॥ १२० ॥ परिकर्मन् (नान्त न०), अंगसंस्कार (पु०) ये दो नाम केशर आदिकरके शरीरमें संस्कारमात्रके हैं । मार्ष्टि, मार्जना, मृजा ये तीन (स्त्री०) नाम प्रोक्षण आदिकरके देहको निर्मल करने अर्थात् पोंछनेके हैं । उद्वर्तन, उत्सादन ये दो (न०) नाम उठने मलनेके हैं । आप्लाव (पु०), आप्लव (पु०) ॥ १२१ ॥ स्नान (न०) ये तीन नाम स्नानके हैं । चर्चा (स्त्री०), चार्चिक्य (न०), स्थासक (पु०) ये तीन नाम चन्दन आदिसे देहपर लेप करनेके हैं । प्रबोधन (न०), अनुबोध (पु०) ये दो नाम गत हुए गंधके हैं । पत्रलेखा, पत्राङ्गुलि ये दो (स्त्री०) नाम कस्तूरी केशर आदिकरके कपोल आदिपर रची हुई पत्रके समान रेखाके हैं ॥ १२२ ॥ तमालपत्र (न०), तिलक (पु० न०), चित्रक (न०), विशेषक (पु० न०) ये चार नाम माथेमें कस्तूरी आदिसे रिये हुए तिलकके हैं । कुंकुम ॥ १२३ ॥ काश्मी-

लाक्षा राक्षा जतु क्लीवे यावोऽलक्तो द्रुमामयः ।

लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञमथ जायकम् ॥ १२५ ॥

कालीयकं च कालानुसार्यं चाथ समार्थकम् ।

वंशकागुरुगजार्लोहं कृमिजजोङ्गकम् ॥ १२६ ॥

कालागुर्वगुरु स्यात्तु मङ्गल्या मल्लिगन्धि यत् ।

यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि ॥ १२७ ॥

बहुरूपोऽप्यथ वृक्षधूपकृत्रिमधूपकौ ।

तुरुष्कः पिण्डकः सिल्हो यावनोऽप्यथ पायसः ॥ १२८ ॥

श्रीवासो वृक्षधूपोऽपि श्रीवेष्टसरलद्रवौ ।

मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी चाथ कोलकम् ॥ १२९ ॥

कङ्कोलकं कोशफलमथ कर्पूरमस्त्रियाम् ।

घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताभ्रो हिमवालुका ॥ १३० ॥

रजन्मन् (नान्त), अग्निशिख, वर, बालहीक, पीतन, रक्त, संकोच, पिशुन, धीर, लोहितचन्दन ये ग्यारह (न०) नाम केशरके हैं ॥ १२४ ॥ लाक्षा (स्त्री०), राक्षा (स्त्री०), जतु (न०), याव (पु०), अलक्त (पु०), द्रुमामय (पु०) ये छः नाम लाखके हैं । लवङ्ग, देवकुसुम, श्रीसंज्ञ, तीन (न०) नाम लोंगके हैं । जायक ॥ १२५ ॥ कालीयक, कालानुसार्य ये तीन (न०) नाम पीले चन्दनके हैं । समार्थक, वंशिक, अगुरु, राजार्ह, लोह, कृमिज, जोंगक ये सात (न०) नाम अगरके हैं । अगुरु शब्द (पु० न०) है ॥ १२६ ॥ कालागुरु, अगर ये दो (न०) नाम काले अगरके हैं । मङ्गल्या यह एक (स्त्री०) नाम मल्लिके समान गंधवा अगरका है । यक्षधूप, सर्जरस, राल, सर्वरस ॥ १२७ ॥ बहुरूप ये पाँच (पु०) नाम रालके हैं । वृक्षधूप, कृत्रिमधूपक ये दो (पु०) नाम अने पदार्थोंसे बनाये गये धूपके हैं । तुरुष्क, पिण्डक, सिल्ह, यावन ये चार (पु०) नाम लोबानके हैं । पायस ॥ १२८ ॥ श्रीवास, वृक्षधूप, श्रीवेष्ट, सरलद्रव ये पाँच (पु०) नाम देवदारुके द्रवके हैं । मृगनाभि (पु०), मृगमद (पु०), कस्तूरी (स्त्री०) ये तीन नाम कस्तूरीके हैं । कोलक ॥ १२९ ॥ कङ्कोलक, कोशफल ये तीन (न०) नाम कङ्कोलके हैं । कर्पूर (पु० न०), घनसार (पु०), चन्द्रसंज्ञ (पु०), सिताभ्र (पु०), हिम

गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम् ।

तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १३१ ॥

तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रञ्जनं रक्तचन्दनम् ।

कुचन्दनं चाथ जातीकोशजातीफले समे ॥ १३२ ॥

कर्पूरागरुकस्तूरीकङ्कोलैर्यक्षकदर्दमः ।

गात्रानुलेपनी वर्तिर्वर्णकं स्याद्विलेपनम् ॥ १३३ ॥

चूर्णानि वासयोगाः स्युर्भाषितं वासितं त्रिषु ।

संस्कारो गन्धमालयाद्यैर्यः स्यात्तदधिवासनम् ॥ १३४ ॥

माल्यं मालास्रजौ मूर्ध्नि केशमध्ये तु गर्भकः ।

प्रभ्रष्टकं शिखालम्बिव पुरो न्यस्तं ललामकम् ॥ १३५ ॥

बालुका (स्त्री०) ये पांच नाम कपूरके हैं ॥ १३० ॥ गंधसार (पु०), मलयज (पु०), भद्रश्री (स्त्री०), चन्दन (पु० न०) ये चार नाम मलयागिर चन्दनके हैं । तैलपर्णिक यह एक (न०) नाम सुपेद शीतल चन्दनका है । गोशीर्ष यह एक (न०) नाम सुपेद कमलके समान गन्ध-वाले चन्दनका है । हरिचन्दन यह एक (पु० न०) नाम कपिल वर्णवाले चन्दनका है ॥ १३१ ॥ तिलपर्णी, पत्राङ्ग, रंजन, रक्तचन्दन, कुचन्दन ये पांच नाम लाल चन्दनके हैं । तिलपर्णीशब्द (स्त्री०) शेष (न०) हैं । जातीकोश, जातीफल ये दो (न०) नाम जायफलके हैं ॥ १३२ ॥ यक्ष-कदर्दम यह एक (पु०) नाम कर्पूर, अगार, कस्तूरी, कंकोल इन्होंको पीसकर किये हुए लेपका है । गात्रानुलेपनी (स्त्री०), वर्ति (स्त्री०), वर्णक (पु० न०), विलेपन (न०) ये चार नाम सुगंधि द्रव्योंके उ-टनेके हैं ॥ १३३ ॥ चूर्ण (न०), वासयोग (पु०) ये दो नाम चूर्णमात्रके हैं । भाषित, वासित ये दो (त्रि०) नाम गन्धद्रव्यकरके वासित करी वस्तुके हैं । अधिवासन यह एक (न०) नाम गन्ध और माल्य आदिकरके जो संस्कार किया जावे उसका है ॥ १३४ ॥ माल्य (न०), माला (स्त्री०), स्रज (स्त्री०) ये तीन नाम फूलोंकी मालाके हैं । गर्भक यह एक (पु०) नाम बालोंपर धारण करी मालाका है । प्रभ्रष्टक यह एक (न०) नाम चोटी-पर्यंत लम्बी मालाका है । ललामक यह एक (न०) नाम मस्तकपर्यंत

प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात् कण्ठाद्वैकक्षिकं तु तत् ।
 यत्तिर्यक् क्षिप्तमुरासि शिखास्वापीडशेखरौ ॥ १३६ ॥
 रचना स्यात्परिस्यन्द आभोगः परिपूर्णता ।
 उपधानं तूपवर्हः शय्यायां शयनीयवत् ॥ १३७ ॥
 शयनं मञ्चपर्यङ्कपल्यङ्काः खट्वा समाः ।
 गेन्दुकः कन्दुको दीपः प्रदीपः पीठमासनम् ॥ १३८ ॥
 समुद्रकः संपुटकः प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः ।
 प्रसाधनी कङ्कतिका पिष्टातः पटवासकः ॥ १३९ ॥
 दर्पणे मुकुरादर्शौ व्यजनं तालवृन्तकम् ।

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

धारण करी मालाका है ॥ १३६ ॥ प्रालम्ब यह एक (न०) नाम कंठ
 सीधी और लम्बी मालाका है । वैकक्षिक यह एक (न०) नाम छाती
 तिरछी मालाका है । आपीड, शेखर ये दो (पु०) नाम चोटीमें गुंथी
 हुई मालाके हैं ॥ १३६ ॥ रचना (स्त्री०), परिस्यन्द (पु०) ये दो
 नाम माला आदिकी रचनाके हैं । आभोग (पु०) : परिपूर्णता (स्त्री०)
 ये दो नाम सब उपचारवालोंकी परिपूर्णताके हैं । उपधान (न०), उपव
 (पु०) ये दो नाम तकियेके हैं । शय्या (स्त्री०), शयनीय (न०)
 ॥ १३७ ॥ शयन (न०) ये तीन नाम शय्याके हैं । मञ्च, पर्यङ्क, पल्यङ्क
 खट्वा ये चार नाम खाटके हैं । खट्वाशब्द (स्त्री०) शेष (पु०) हैं ।
 गेन्दुक, कन्दुक ये दो (पु०) नाम छोटे तकिये वा गेन्दके हैं । दीप
 प्रदीप ये दो (पु०) नाम दीपकके हैं । पीठ, आसन ये दो (न०)
 नाम आसनके हैं ॥ १३८ ॥ समुद्रक, संपुटक ये दो (पु०) नाम संपु
 अर्थात् डिब्बेके हैं । प्रतिग्राह, पतद्ग्रह ये दो (पु०) नाम पीकदानीके
 हैं । प्रसाधनी, कङ्कतिका ये दो (स्त्री०) नाम कंधीके हैं । पिष्टात
 पटवासक ये दो (पु०) नाम बुकनीके हैं ॥ १३९ ॥ दर्पण (पु० न०)
 मुकुर (पु०), आदर्श (पु०) ये तीन नाम शीशेके हैं । व्यजन
 तालवृन्तक ये दो (न०) नाम तालके पत्तोंसे बने हुए पंखेके हैं ॥

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

अथ ब्रह्मवर्गः ७ ।

संततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ ।

वंशोऽन्ववायः संतानो वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥ १ ॥

विप्रक्षत्रियविदूद्राश्चातुर्वर्ण्यमिति स्मृतम् ।

राजबीजी राजवंश्यो बीज्यस्तु कुलसंभवः ॥ २ ॥

महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः ।

ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥ ३ ॥

आश्रमोऽस्त्री द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः ।

विप्रश्च ब्राह्मणोऽसौ षट्कर्मा यागादिभिर्वृतः ॥ ४ ॥

विद्वान् विपश्चिदोषज्ञः सन्सुधीः कोविदो बुधः ।

धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान् पंडितः कविः ॥ ५ ॥

धीमान्सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः ।

दूरदर्शी दीर्घदर्शी श्रोत्रियश्छान्दसौ समौ ॥ ६ ॥

अथ ब्रह्मवर्गः । संतति, गोत्र, जनन, कुल, अभिजन, अन्वय, वंश, अन्ववाय, संतान ये नव नाम वंशके हैं । तहां संततिशब्द (स्त्री०), गोत्र, जनन, कुल (न०) शेष (पु०) हैं । ब्राह्मण आदि वर्ण हैं ॥ १ ॥ ब्राह्मण, क्षत्रिय, विदू, दूद्र ये चारों वर्ण चातुर्वर्ण्य कहते हैं । आगेके अग्रचित्शब्दतक (पु०) हैं और आश्रमशब्द (पु० न०) है । राज-बीजिन, राजवंश्य ये दो नाम राजवंशसे उत्पन्न हुएके हैं । बीज्य, कुलसं-भव ये दो नाम कुलमात्रसे उत्पन्न हुएके हैं ॥ २ ॥ महाकुल, कुलीन, आर्य, सभ्य, सज्जन, साधु ये छः नाम सज्जनके हैं । ब्रह्मचारिन, गृहिन, वानप्रस्थ, भिक्षु ये चार आश्रम हैं । तहां ब्रह्मचारिन, गृहिन शब्द (इ, अन्त पु०) हैं ॥ ३ ॥ आश्रम यह एक (पु० न०) नाम आश्रमका है । द्विजाति, अग्रजन्मन् (नान्त), भूदेव, वाडव, विप्र, ब्राह्मण ये छः नाम ब्राह्मणके हैं । षट्कर्मन् यह एक (नान्त पु०) नाम यज्ञ आदिसे युक्त ब्राह्मणका है ॥ ४ ॥ विद्वस् (वस्वन्त), विपश्चित्, दोषज्ञ, सत् (तान्त), सुधी, कोविद, बुध, धीर, मनीषिन (इन्नन्त), ज्ञ, प्राज्ञ, संख्यावत् (मत्वन्त), पंडित, कवि ॥ ५ ॥ धीमत् (मत्वन्त), सूरि, कृतिन् (इन्नन्त), कृष्टि, लब्धवर्ण, विचक्षण, दूरदर्शिन (इन्नन्त), दीर्घ-

“ मीमांसको जैमिनीये वेदान्ती ब्रह्मवादिनि ।
 वैशेषिके स्यादौलूक्यः सौगतः शून्यवादिनि ॥
 नैयायिकस्त्वक्षपादः स्यात्स्याद्वादिक आर्हकः ।
 चार्वाकलौकायतिकौ सत्कार्ये सांख्यकापिलौ ॥ ”
 उपाध्यायोऽध्यापकोऽथ स्यान्निषेकादिकृद्गुरुः ।
 मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य आदेष्टा त्वध्वरे व्रती ॥ ७ ॥
 यष्टा च यजमानश्च स सोमवति दीक्षितः ।
 इज्याशीलो यायजूको यज्वा तु विधिनेष्टवान् ॥ ८ ॥
 स गीष्पतीष्ट्या स्थपतिः सोमपीथी तु सोमपाः ।
 सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥

दर्शित (इवन्त) ये बार्हस नाम पंडितके हैं । श्रोत्रिय, छान्दस ये दो
 नाम वेदपाठीके हैं ॥ ६ ॥ “ मीमांसक, जैमिनीय ये दो (पु०) नाम
 मीमांसा शास्त्रको जाननेवालेके हैं । वेदातिन्, ब्रह्मवादिन् ये दो (इवन्त
 पु०) नाम वेदान्तीके हैं । वैशेषिक, औलूक्य ये दो (पु०) नाम सात
 पदार्थवादीके हैं । सौगत, शून्यवादिन् (इवन्त) ये दो (पु०) नाम
 शून्यवादीके हैं । नैयायिक, अक्षपाद ये दो (पु०) नाम न्यायशास्त्रको
 जाननेवालेके हैं । स्याद्वादिक, आर्हक ये दो (पु०) नाम मोक्ष है अथवा
 नहीं है ऐसे कहनेवालेके हैं । चार्वाक, लौकायतिक ये दो (पु०) नाम
 देहात्मवादि बौद्धके हैं । सांख्य, कापिल ये दो (पु०) नाम सांख्यको
 जाननेवालेके हैं । ” उपाध्याय, अध्यापक ये दो (पु०) नाम पढानेवाले
 के हैं । गुरु यह एक (पु०) नाम गर्भाधान आदि कर्मोंके करानेवाले
 पिता आदिका है । आचार्य यह एक (पु०) नाम वेदकी व्याख्या कर
 नेवालेका है । यज्ञविशेषमें ऋत्विजोंका आदेष्टा व्रतिन् (इवन्त) कहाता
 है ॥ ७ ॥ यष्ट (ऋकारान्त), यजमान ये तीन (पु०) नाम यजमानके
 हैं । दीक्षित यह एक (पु०) नाम सोमयज्ञमें आदेष्टा यजमानका है ।
 इज्याशील, यायजूक ये दो (पु०) नाम यजनशीलके हैं । यज्वन् (नान्त)
 यह एक (पु०) नाम विधिसे यज्ञ करनेवालेका है ॥ ८ ॥ स्थपति यह
 एक (पु०) नाम बृहस्पतिके कहे विधिकरके यज्ञ करनेवालेका है । सो
 मपीथिन्, सोमपा ये दो (पु०) नाम सोमयज्ञ करनेवालेके हैं । सर्ववेदस्

अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती गुरोस्तु यः ।
 लब्धानुज्ञः समावृत्तः सुत्वा त्वभिषवे कृते ॥ १० ॥
 छात्रान्तेवासिनौ शिष्ये शैक्षाः प्राथमकलिपकाः ।
 एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सब्रह्मचारिणः ॥ ११ ॥
 सतीर्थ्यास्त्वेकगुरवश्चितवानग्निमग्निचित् ।
 पारम्पर्योपदेशे स्यादितिहामितिहाव्ययम् ॥ १२ ॥
 उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्याज्ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः ।
 यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः ॥ १३ ॥
 पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः ।
 एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ १४ ॥

(सान्त) यह एक (पु०) नाम सर्वस्व दक्षिणावाले विश्वजित् नामक यज्ञ करनेवालेका है ॥ ९ ॥ अनूचान यह एक (पु०) नाम शिक्षा आदि अंगोंसे युत वेद अध्ययन करनेवालेका है । समावृत्त यह एक (पु०) नाम गुरुसे गृहस्थ आदि आश्रमकी प्राप्तिके लिये अनुज्ञा पानेवालेका है । सुत्वन (नान्त) यह एक (पु०) नाम अभिषव स्नान किये हुएका है ॥ १० ॥ छात्र, अंतेवासिन् (इन्नन्त), शिष्य ये तीन (पु०) नाम चलेके हैं । शैक्ष, प्राथमकलिपक ये दो (पु०) नाम नये पढनेवालेके हैं । सब्रह्मचारिन् (इन्नन्त) यह एक (पु०) नाम आपसमें समान वेदव्रत आचारवालोंका है ॥ ११ ॥ सतीर्थ्य यह एक (पु०) नाम गुरुके पास पढनेवालोंका है । अग्निचित् यह एक (पु०) नाम अग्निको बटोरनेवालेका है । ऐतिह्य (न०), इतिह ये दो नाम लोकपरम्पराके उपदेशके हैं । तहां इतिह यह अव्यय है ॥ १२ ॥ उपज्ञा यह एक (स्त्री०) नाम पहले ज्ञानका है । उपक्रम यह एक (पु०) नाम जानके आरंभ किये हुएका है । यज्ञ, सव, अध्वर, याग, सप्ततन्तु, मख, क्रतु ये सात (पु०) नाम यज्ञके हैं ॥ १३ ॥ विधिसे वेद आदिका पढना ब्रह्मयज्ञ कहाता है । वैश्वदेवहोम करना देवयज्ञ कहाता है । घरमें आये अभ्यागतोंको अन्न आदिकरके प्रसन्न करना मनुष्ययज्ञ कहाता है । पितरोंकी अन्न जल आदिसे तृप्ति करना पितृयज्ञ कहाता है । बलि करना भूतयज्ञ कहाता है । ये पांच महायज्ञ हैं ॥ १४ ॥

समज्या परिषद्गोष्ठी सभासमितिसंसदः ।
 आस्थानी क्लीबमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोः सदः ॥ १५ ॥
 प्राग्वंशः प्राग्वविर्गेहात्सदस्या विधिदर्शिनः ।
 समासदः सभास्ताराः सभ्याः सामाजिकाश्च ते ॥ १६ ॥
 अध्वर्यूद्गात्रहोतारो यजुःसामर्ग्विदः क्रमात् ।
 आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते ॥ १७ ॥
 वेदिः परिष्कृता भूमिः समे स्थण्डिलचत्वरे ।
 चषालो यूपकटकः कुम्वा सुगहना वृत्तिः ॥ १८ ॥
 यूपान्नं तर्म निर्मन्थ्यदारुणि त्वरणिर्द्वयोः ।
 दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः ॥ १९ ॥

समज्या, परिषद्, गोष्ठी, सभा, समिति, संसद्, आस्थानी, आस्थान, सदस्
 (सांत) ये नव नाम सभाके हैं। तहां आस्थानशब्द (न०) है, सदस्
 शब्द (स्त्री० न०), शेष (स्त्री०) हैं ॥ १५ ॥ प्राग्वंश यह एक (पु०)
 नाम हविके गेहसे पूर्वदेशमें सदस्य आदियोंके घरका है। सदस्य यह एक
 (पु०) नाम वेदोक्त क्रियाकलापको देखनेवालेका है। सभासद्, सम
 स्तार, सभ्य, सामाजिक ये चार (पु०) नाम सभ्योंके हैं ॥ १६ ॥ अध्व
 यह एक (पु०) नाम यजुर्वेदके जाननेवाले ऋत्विज्का है। उद्गा
 (ऋकारान्त) यह एक (पु०) नाम सामवेदको जाननेवाले ऋत्विज्
 है। होतृ (ऋकारान्त) यह एक (पु०) नाम ऋग्वेदके जाननेवाले ऋ
 त्विज्का है। ऋत्विज् (जान्त), याजक ये दो (पु०) नाम यजमान
 धन आदि देके जिन्होंको बरे उन्हींके हैं ॥ १७ ॥ वेदि यह एक (स्त्री०)
 नाम यज्ञके लिये डमरुके आकारकी बनाई पृथ्वीका है। स्थण्डिल, चत्व
 ये दो (न०) नाम यज्ञके लिये संस्कार किये हुए पृथ्वीके भाग अर्थात्
 चौतरेके हैं। चषाल, यूपकटक ये दो (पु०) नाम यज्ञस्वम्भके शिर
 वलयके आकारवाले काठविशेषके हैं। कुम्वा यह एक (स्त्री०) नाम
 भूमिमें नीचजातिकी दृष्टिके निवारणके लिये बहुत वेष्टन (आवरण) क
 नेका है ॥ १८ ॥ यूपान्न, तर्मन् (नांत) ये दो (न०) नाम यज्ञस्वम्भ
 अग्रभागके हैं। अराणि यह एक (पु० स्त्री०) नाम अग्नि निकालने
 लकड़ियोंका है। दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य, आहवनीय ये तीन (पु०)

अग्नित्रयमिदं त्रेता प्रणीतः संस्कृतोऽनलः ।
 समूहः परिचार्योपचार्यावग्नौ प्रयोगिणः ॥ २० ॥
 यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते ।
 तस्मिन्नानार्योऽथाग्रायी स्वाहा च हुतभुक्तिप्रया ॥ २१ ॥
 ऋक् सामिधेनी धार्या च या स्यादग्निसमिन्धने ।
 गायत्रीप्रमुखं छन्दो हव्यपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥
 आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरं स्यादधियोगतः ।
 धवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥
 पृषदाज्यं सदव्याजे परमान्नं तु पायसम् ।
 हव्यकव्ये दैवपित्र्ये अन्ने पात्रं सुवादिकम् ॥ २४ ॥
 ध्रुवोपभृज्जुह्वर्ना तु सुवो भेदाः सुचः स्त्रियः ।
 उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमन्य क्रतौ हतः ॥ २५ ॥

नाम यज्ञकी अग्निके हैं ॥ १९ ॥ त्रेता यह एक (स्त्री०) नाम इन तीनों अग्नियोंका है । प्रणीत यह एक (पु०) नाम मंत्र आदिसे संस्कार किये हुए अग्निका है । समूह, परिचार्य, उपचार्य ये तीन (पु०) नाम यज्ञकी अग्निके स्थलविशेषके हैं ॥ २० ॥ आनार्य यह एक (पु०) नाम गार्हपत्य अग्निसे ग्रहण कर जो दक्षिणाग्नि स्थापित कराया जावे उसका है । अग्रायी, स्वाहा, हुतभुक्तिप्रया ये तीन (स्त्री०) नाम अग्निकी स्त्रीके हैं ॥ २१ ॥ सामिधेनी, धार्या ये दो (स्त्री०) नाम अग्निको प्रज्वलित करनेमें जो ऋचा पठी जावे उसके हैं । छन्दस् (सान्त न०) यह एक नाम गायत्री उष्णिक् आदि छन्दोंका है । चरु यह एक (पु०) नाम अग्निविषै हूयमान अन्न आदिका है ॥ २२ ॥ आमिक्षा यह एक (स्त्री०) नाम पकाये हुए गरम दूधमें दहीके योगसे उत्पन्न विकृतिका है । धवित्र यह एक (न०) नाम मृगछालासे रचे पंखेका है ॥ २३ ॥ पृषदाज्य यह एक (न०) नाम दहीसे भिले घृतका है । परमान्न (न०), पायस (पु० न०) ये दो नाम दूधकी खीरके हैं । हव्य यह एक (न०) नाम देवताओंके अर्थ दिये जानेवाले अन्नका है । कव्य यह एक (न०) नाम पितरोंके अर्थ दिये जानेवाले अन्नका है । पात्र यह एक (न०) नाम सुव, चमसा आदिका है ॥ २४ ॥ ध्रुवा, उपभृत्, जुह्व (तीन स्त्री०), सुच (पु०) ये

परम्पराकं शमनं मोक्षणं च वधार्थकम् ।
 वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता हते ॥ २६ ॥
 सात्राय्यं हविरग्नौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ।
 दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञे तत्कर्माहं तु यज्ञियम् ॥ २७ ॥
 त्रिष्वथ ऋतुकर्मैष्टं पूर्तं खाताति कर्म यत् ।
 अमृतं विषसो यज्ञशेषभोजनशेषयोः ॥ २८ ॥
 त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जने ।
 विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥
 प्रादेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहतिः ।
 मृतार्थं तदहे दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदेहिकम् ॥ ३० ॥
 पितृदानं निवापः स्याच्छ्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ।
 अन्वाहार्यं मासिकेऽशोऽष्टमोऽहः कुतपोऽस्त्रियाम् ॥ ३१ ॥

चार नाम छुच्चे भेदके हैं । उपाकृत यह एक (पु०) नाम अभिमंत्रित
 कर यज्ञमें हत किये जानेवाले पशुका है ॥ २६ ॥ परम्पराक, शमन, प्रोक्षण
 ये तीन (न०) नाम वधके अर्थ यज्ञसम्बन्धीय पशु मारनेके हैं । प्रमीत
 उपसम्पन्न, प्रोक्षित ये तीन नाम यज्ञके अर्थ हत हुए पशुमात्रके हैं और
 वाच्यलिङ्गी हैं । सात्राय्य यह एक (न०) नाम हविर्विशेषका है । वषट्
 कृत यह एक नाम अग्निविषे होमे हुए याज्य आदिका है और वाच्यलिङ्गी
 है ॥ २६ ॥ अवभृथ यह एक (पु०) नाम यज्ञमें दीक्षाके अंतमें स्नान
 विशेषका है । यज्ञिय यह एक (त्रि०) नाम यज्ञकर्मके योग्य वस्तुका है
 ॥ २७ ॥ इष्ट यह एक (न०) नाम यज्ञके कर्मका है । पूर्त यह एक
 (न०) नाम बावडी कुआ आदि खातका है । अमृत यह एक (न०)
 नाम यज्ञशेष पुरोडाश आदिका है । विषस यह एक (पु०) नाम दे
 और पितृ आदिके मुक्तशेषका है ॥ २८ ॥ त्याग, विहापित, दान, उत्स
 र्जन, विसर्जन, विश्राणन, वितरण, स्पर्शन, प्रतिपादन ॥ २९ ॥ प्रादेशन
 निर्वपण, अपवर्जन, अंहति ये तेरह नाम दानके हैं । त्यागशब्द (पु०)
 अंहति (स्त्री०) शेष (न०) हैं । और्ध्वदेहिक यह एक नाम मरणदिनसे
 आरंभ कर दश दिनपर्यंत पिंडदान आदिका है और त्रिलिङ्गी है ॥ ३० ॥
 पितृदान (न०), निवाप (पु०) ये दो नाम पितरोंका उद्देश कर जे

पर्येषणा परीष्टिश्चाऽन्वेषणा च गवेषणा ।
 सनिस्त्वध्वेषणा याच्नाऽभिशस्तिर्याचनाऽर्थना ॥ ३२ ॥
 षट् तु त्रिष्वर्ध्वमर्घ्यार्थे पाद्यं पादाय वारिणि ।
 क्रमादातिथ्यातिथेये अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि ॥ ३३ ॥
 स्युरावेशिक आगन्तुरतिथिर्ना गृहागते ।
 प्राघूर्णिकः प्राघुणकश्चाभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥ ३४ ॥
 पूजा नमस्याऽपचितिः सर्पयार्चाह्रिणाः समाः ।
 वरिवस्या तु शुश्रूषा परिचर्याप्युपासना ॥ ३५ ॥
 ब्रज्याऽटाट्या पर्यटनं चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः ।
 उपस्पर्शस्त्वाचमनमथ मौनमभाषणम् ॥ ३६ ॥

दान किया जावे उसके हैं । श्राद्ध यह (न०) नाम शास्त्रसे पितृसंबंधी
 कर्मका है । अन्वाहार्य्य यह एक (न०) नाम मासिक अमावास्या
 श्राद्धका है । कुतप यह एक नाम दिनके आठवें भागका है और
 (पु० न०) है ॥ ३१ ॥ पर्येषणा, परीष्टि ये दो (स्त्री०) नाम
 श्राद्धमें ब्राह्मणके भोजनकी टहल वा भक्तिके हैं । अन्वेषणा, गवेष-
 णा ये दो (स्त्री०) नाम धर्म आदिको ढूँढनेके हैं । सनि, अध्वेषणा
 ये दो (स्त्री०) नाम गुरु आदिसे प्रार्थनापूर्वक विनतीके हैं । याच्ना,
 अभिशस्ति, याचना, अर्थना ये चार (स्त्री०) नाम याचनाके हैं ॥ ३२ ॥
 अर्घ्य, पाद्य, आतिथ्य, आतिथेय, आवेशिक, आगंतु ये छः शब्द वाच्य-
 लिंगी हैं । अर्घ्य यह एक नाम अतिथिकी पूजाके उपचारके अर्थ पानीका
 है । पाद्य यह एक पेरोंके अर्थ जो पानी हो उसका है । आतिथ्य यह
 एक नाम अतिथिके अर्थ अन्न आदिका है । आतिथेय यह एक
 नाम अतिथिमें जो साधु हो उसका है ॥ ३३ ॥ आवेशिक, आगंतु,
 अतिथि, गृहागत ये चार (पु०) नाम घरमें आये हुए अतिथिके हैं । प्राघू-
 र्णिक, प्राघुणक ये दो (पु०) नाम अभ्यागतके हैं । अभ्युत्थान, गौरव ये
 दो (न०) नाम उत्थानपूर्वक संस्कारके हैं ॥ ३४ ॥ पूजा, नमस्या, अप-
 चिति, सपर्या, अर्चा, अर्हणा ये छः (स्त्री०) नाम पूजाके हैं । वरिवस्या,
 शुश्रूषा, परिचर्या, उपासना ये चार (स्त्री०) नाम उपासनाके हैं ॥ ३५ ॥
 ब्रज्या, अटा, अट्या, पर्यटन ये चार नाम चलनेके हैं । पर्यटनशब्द (न०)

" प्राचेतसश्चादिकविः स्यान्मैत्रावरुणिश्च सः ।
 वाल्मीकिश्चाथ गोधेयो विश्वामित्रश्च कौशिकः ॥
 व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवतीसुतः ।
 आनुपूर्वी स्त्रियां वाऽऽवृत्परिपाटी अनुक्रमः ।
 पर्यायश्चातिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्ययः ॥ ३७ ॥
 नियमो व्रतमस्त्री तच्चोपवासादि पुण्यकम् ।
 औपवस्तं तूपवासो विवेकः पृथगात्मता ॥ ३८ ॥
 स्याद्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनर्द्धिरथाञ्जलिः ।
 पाठे ब्रह्माञ्जलिः पाठे विपुषो ब्रह्मविन्दवः ॥ ३९ ॥
 ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं कल्पे विधिक्रमौ ।
 मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पोऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः ॥ ४० ॥

शेष (स्त्री०) हैं । चर्या यह एक (स्त्री०) नाम ध्यान मौन आदि मार्ग
 स्थित होनेवालेका है । उपस्पर्श (पु०), आचमन (न०) ये दो नाम
 आचमनके हैं । मौन, अभाषण ये दो (न०) नाम नहीं बोलनेके
 ॥ ३६ ॥ " प्राचेतस् (सान्त), आदिकवि, मैत्रावरुणि, वाल्मीकि
 चार (पु०) नाम वाल्मीकि मुनिके हैं । गाधेय, विश्वामित्र, कौशिक
 तीन (पु०) नाम विश्वामित्रके हैं । व्यास, द्वैपायन, पाराशर्य, सत्य
 तीसुत ये चार (पु०) नाम वेदव्यासके हैं । " आनुपूर्वी, आवृत्, परि
 टी, अनुक्रम, पर्याय ये पांच नाम अनुक्रमके हैं । अनुक्रम, पर्याय (पु०)
 शेष (स्त्री०) हैं । अतिपात, पर्यय, उपात्यय ये तीन (पु०) नाम अ
 क्रमके हैं ॥ ३७ ॥ नियम (पु०), व्रत (पु० न०) ये दो नाम व्रतके हैं
 पुण्यक यह एक (न०) नाम उपवास चान्द्रायण व्रत आदिका है । औ
 वस्त (न०), उपवास (पु०) ये दो नाम उपवासके हैं । विवेक
 एक (पु०) नाम पृथक् स्वरूपपनेका है ॥ ३८ ॥ ब्रह्मवर्चस यह एक
 (न०) नाम सदाचार पालन और वेदका अभ्यास इन दोनोंकी संपत्ति
 है । ब्रह्माञ्जलि यह एक (पु०) नाम वेदके पाठकी आदिमें हाथों
 अंकारके उच्चारणपूर्वक अंजलिका है । ब्रह्मविन्दु यह एक (पु०) नाम
 वेदके पाठमें मुखसे निकसे हुए जलके किनकोंका है ॥ ३९ ॥ ब्रह्मास
 यह एक (न०) नाम ध्यान और योगके आसनका है । कल्प, विधि

संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुतेः ।

समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे ॥ ४१ ॥

भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ।

तपस्वी तापसः पारिकांक्षी वाचंयमो मुनिः ॥ ४२ ॥

तपः क्लेशसहो दान्तो वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ।

ऋषयः सत्यवचसः स्नातकस्त्वाप्लवव्रती ॥ ४३ ॥

ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते ।

यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशाय्यसौ ॥ ४४ ॥

स्थाण्डिलश्चाथ विरजस्तमसः स्युर्द्वयातिगाः ।

पवित्रः प्रयतः पूतः पाखण्डाः सर्वलिङ्गिनः ॥ ४५ ॥

क्रम ये तीन (पु०) नाम नियोगशास्त्रके हैं । मुख्य यह एक (पु०) नाम आद्यविधिका है । अनुकल्प यह एक (पु०) नाम मुख्यसे नीचे गौणका है ॥ ४० ॥ उपाकरण यह एक (न०) नाम संस्कारपूर्वक वेदके ग्रहण करनेका है । पादग्रहण, अभिवादन ये दो (न०) नाम गोत्रकथनपूर्वक नमस्कारविशेषके हैं ॥ ४१ ॥ भिक्षु, परिव्राज् (जान्त), कर्मदिन् (इन्नन्त), पाराशरिन्, मस्करिन् (इन्नन्त) ये पांच (पु०) नाम संन्यासीके हैं । तपस्विन् (इन्नन्त), तापस, पारिकांक्षिन् (इन्नन्त) ये तीन (पु०) नाम तप करनेवालेके हैं । वाचंयम, मुनि ये दो (पु०) नाम परिमित बोलनेवालेके हैं ॥ ४२ ॥ दान्त यह एक (पु०) नाम तपके क्लेशके सहनेवालेका है । वर्णिन् (इन्नन्त), ब्रह्मचारिन् (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम ब्रह्मचारीके हैं । ऋषि, सत्यवचस् ये दो (पु०) नाम ऋषिके हैं । स्नातक, आप्लवव्रतिन् (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम वेदव्रती होके समावर्त्तन किये हुएका है ॥ ४३ ॥ यतिन् (इन्नन्त), यति ये दो (पु०) नाम इन्द्रियोंको जीतनेवालेके हैं । स्थण्डिलशायिन् (इन्नन्त), स्थाण्डिल ये दो (पु०) नाम नियमके पूर्वक पृथ्वी विशेषपर सोनेवालेके हैं ॥ ४४ ॥ विरजस्तमस् (सान्त), द्वयातिग ये दो (पु०) नाम सत्वमें एक निष्ठावाले व्यास आदिकोंके हैं । पवित्र, प्रयत, पूत ये तीन (पु०) नाम पवित्रके हैं । पाखण्ड, सर्वलिङ्गिन् (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम बौद्ध क्षपण आदि दुष्ट शास्त्रवार्तिकोंके हैं ॥ ४५ ॥

पालाशो दण्ड आषाढौ व्रते राम्भस्तु वैणवः ।
 अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी व्रतिनां सासनं वृषी ॥ ४६ ॥
 अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री भैक्षं भिक्षाकदम्बकम् ।
 स्वाध्यायः स्याज्जपः सुत्याऽभिषवः सवनं च सा ॥ ४७ ॥
 सर्वेनसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्वधमर्षणम् ।
 दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक् ॥ ४८ ॥
 शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः ।
 नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागन्तुसाधनम् ॥ ४९ ॥
 “क्षौरं तु भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु ।”
 उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धते दक्षिणे करे ।
 प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ॥ ५० ॥

आषाढ यह एक (पु०) नाम ब्रह्मचारीके पलाशसंबन्धी दण्डका है ।
 यह एक (पु०) नाम बांसके दण्डका है । कमण्डलु (पु० न०), कुण्डी
 (स्त्री०) ये दो नाम व्रतियोंके जलपात्रके हैं । वृषी यह एक (स्त्री०) नाम
 व्रतियोंके आसनका है ॥ ४६ ॥ अजिन (न०), चर्मन् (नांत न०), कृत्ति
 (स्त्री०) ये तीन नाम मृगचर्म आदिके हैं । भैक्ष्य यह एक (न०) नाम भिक्षा
 के समूहका है । स्वाध्याय, जप ये दो (पु०) नाम वेदके अभ्यासके हैं ।
 सुत्या (स्त्री०), अभिषव (पु०), सवन (न०) ये तीन नाम सोमाभिषवके
 हैं ॥ ४७ ॥ अधमर्षण यह एक नाम सब पापोंको नाश करनेवाला
 जापका है और त्रिलिङ्गी है । दर्श यह एक (पु०) नाम कृष्णपक्षके अन्त
 होनेवाले यज्ञका है । पौर्णमास यह एक (पु०) नाम पौर्णमासीमें होने
 वाले यज्ञका है ॥ ४८ ॥ यम यह एक (पु०) नाम शरीरमात्रकर
 साधनके योग्य नित्यकर्मका है । नियम यह एक (पु०) नाम मांस
 और जल आदिसे साध्य कर्म अर्थात् नित्यप्रति कृत्रिम कर्मका है ॥ ४९ ॥
 “क्षौर (न०), भद्राकरण (न०), मुण्डन (न०), वपन (त्रि०)
 चार नाम क्षौरके हैं ।” उपवीत यह एक (न०) नाम दहिने हाथको ऊपर
 करके जनेऊ धारण किये जानेका है । प्राचीनावीत यह एक (न०) नाम
 वामहाथ ऊपरको करके जनेऊ धारण किये जानेका है । निवीत यह एक

अङ्गुल्यग्रे तीर्थं देवं स्वल्पाङ्गुल्योर्मूले कायम् ।
 मध्येऽङ्गुष्ठाङ्गुलयोः पित्र्यं मूले त्वङ्गुष्ठस्य ब्राह्मम् ॥ ५१ ॥
 स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ।
 देवभूयादिकं तद्वत्कृच्छ्रं सान्तपनादिकम् ॥ ५२ ॥
 संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायोऽथ वीरहा ।
 नष्टाग्निः कुहना लोभान्मिथ्यैर्यापथकल्पना ॥ ५३ ॥
 व्रात्यः संस्कारहीनः स्यादस्वाध्यायो निराकृतिः ।
 धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिरवकीर्णी क्षतव्रतः ॥ ५४ ॥
 सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च ।
 अंशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम् ॥ ५५ ॥

(न०) नाम कंठमें लंबित किये जनेउका है ॥ ५० ॥ देव यह एक
 (न०) नाम अंगुलियोंके अग्रभागमें देवतीर्थका है । काय यह एक (न०)
 नाम कनिष्ठिका और अनामिका अंगुलियोंके मूलमें कायतीर्थका है ।
 पित्र्य यह एक (न०) नाम अंगूठा और तर्जनी अंगुलीके मध्यमें पितृ-
 तीर्थका है । ब्राह्म यह एक (न०) नाम अंगूठेकी मूलमें ब्राह्मतीर्थका
 है ॥ ५१ ॥ ब्रह्मभूय, ब्रह्मत्व, ब्रह्मसायुज्य ये तीन (न०) नाम ब्रह्मभा-
 वके हैं । देवभूय, देवत्व, देवसायुज्य ये तीन (न०) नाम देवभावके हैं ।
 कृच्छ्र यह एक (न०) नाम सांतपन आदिका है ॥ ५२ ॥ प्राय यह
 एक (पु०) नाम संन्यासपूर्वक भोजनके त्यागनेका है । वीरहन् (नका-
 रान्त), नष्टाग्नि ये दो (पु०) नाम नष्ट हुए अग्निवालेके हैं । कुहना
 यह एक (स्त्री०) नाम लोभसे छल कपटकरके ध्यान मौनका है ॥ ५३ ॥
 व्रात्य यह एक (पु०) नाम संस्कारसे हीन हुका है । स्वाध्याय यह
 एक (पु०) नाम अपनी शाखाके अनुसार अध्ययनसे शून्य हुका है ।
 धर्मध्वजिन् (इवन्त), लिङ्गवृत्ति ये दो (पु०) नाम जीविकाके अर्थ
 जया आदिको धारण करनेवालेके हैं । अवकीर्णिन् (इवन्त), क्षतव्रत ये
 दो (पु०) नाम नष्ट हुए ब्रह्मचर्यवालेके हैं ॥ ५४ ॥ अभिनिर्मुक्त यह
 एक (पु०) नाम जिसके सोते हुए सूर्य अस्त हो जावे उसका है । अभ्यु-
 दित यह एक (पु०) नाम जिसके सोते हुए सूर्य उदय हो जावे उसका

परिवेत्ताऽनुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ।

परिवित्तिस्तु तज्ज्यायान् विवाहोपयमौ समौ ॥ ५६ ॥

तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ।

व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ॥ ५७ ॥

त्रिवर्गो धर्मकामार्थैश्चतुर्वर्गः समोक्षकैः ।

सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं जन्याः स्निग्धा वरस्य ये ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

अथ क्षत्रियवर्गः ८ ।

मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् ।

राजा राट् पार्थिवक्षमाभृन्नृपभूपमहीक्षितः ॥ १ ॥

राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः ।

चक्रवर्ती सार्वभौमो नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

हैं ॥ ५६ ॥ परिवेत् (ऋकारान्त) यह एक (पु०) नाम बड़े भाई
विवाह नहीं हो और छोटा भाई कर ले उसका है । परिवित्ति यह एक
(पु०) नाम उस परिवेत्ताके बड़े भाईका है ॥ ५६ ॥ विवाह, उपयम
परिणय, उद्वाह, उपयाम, पाणिपीडन ये छः नाम विवाहके हैं । पाणि
डनशब्द (न०) शेष (पु०) हैं । व्यवाय (पु०), ग्राम्यधर्म (पु०)
मैथुन (न०), निधुवन (न०), रत (न०) ये पांच नाम स्त्रीसे भोग
हैं ॥ ५७ ॥ त्रिवर्ग यह एक (पु०) नाम धर्म अर्थ काम इनके समूह
है । चतुर्वर्ग यह एक (पु०) नाम धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन्हींके स
हका है । चतुर्भद्र यह एक (न०) नाम बलसहित धर्म, अर्थ, काम
मोक्षका है । जन्य यह एक (पु०) नाम वरके समान अवस्थावाले
प्रियजनोंका है ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

अथ क्षत्रियवर्गः । मूर्धाभिषिक्त, राजन्य, बाहुज, क्षत्रिय, विराट्
पांच (पु०) नाम क्षत्रियके हैं । राजन् (नान्त), राज् (जान्त),
पार्थिव, क्षमाभृत्, नृप, भूप, महीक्षित ये सात (पु०) नाम राजाके हैं ॥ १ ॥
अधीश्वर यह एक (पु०) नाम सब देशोंके राजा जिसको प्रणाम का
हैं उस राजाका है । चक्रवर्तिन् (इन्नन्त), सार्वभौम ये दो (पु०) नाम
समुद्रपर्यन्त पृथ्वीके पतिके हैं । मण्डलेश्वर यह एक (पु०) नाम थो

येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः ।

शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्राडथ राजकम् ॥ ३ ॥

राजन्यकं च नृपतिक्षत्रियाणां गणे क्रमात् ।

मन्त्री धीसचिवोऽमात्योऽन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥

महामात्राः प्रधानानि पुरोधास्तु पुरोहितः ।

द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राङ्निवाकाक्षदर्शकौ ॥ ५ ॥

प्रतीहारो द्वारपालद्वाःस्थद्वाःस्थितदर्शकाः ।

रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थोऽथाध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥ ६ ॥

स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।

भौरिकः कनकाध्यक्षो रूप्याध्यक्षस्तु नैषिकः ॥ ७ ॥

अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्वेशिको जनः ।

सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते ॥ ८ ॥

स्वयंके पतिके हैं ॥ २ ॥ सम्राज् (जान्त) यह एक (पु०) नाम जि-
ने राजसूय यज्ञ किया हो और बारह मण्डलोंका स्वामी हो और जो
मन्त्री आज्ञासे सब राजाओंको शिक्षा करता हो उसका है । राजक यह
एक (न०) नाम राजाओंके समूहका है ॥ ३ ॥ राजन्यक यह एक (न०)
नाम क्षत्रियोंके समूहका है । मन्त्रिन् (इन्नन्त), धीसचिव, अमात्य ये तीन
पु०) नाम मन्त्रीके हैं । कर्मसचिव यह एक (पु०) नाम कार्योंमें
नियोजित किये मंत्रियोंका है ॥ ४ ॥ महामात्र (पु०), प्रधान (पु० न०)
ये दो नाम मुख्यरूप राजसहायकोंके हैं । आगे शत्रुशब्दतक (पु०) हैं ।
पुरोधस् (सान्त), पुरोहित ये दो नाम ऋण आदि व्यवहारोंके विषयमें वादी
और प्रतिवादीसे निर्मित किये विवादोंके निर्णय करनेवालेके हैं । प्राङ्-
निवाक, अक्षदर्शक ये दो नाम न्याय करनेवाले हाकिमके हैं ॥ ५ ॥
प्रतीहार, द्वारपाल, द्वाःस्थ, द्वाःस्थित, दर्शक ये पाँच नाम द्वारपालके हैं ।
रक्षिवर्ग, अनीकस्थ ये दो नाम राजाकी रक्षा करनेवाले समूहके हैं । अ-
ध्यक्ष, अधिकृत ये दो नाम अधिकारीके हैं ॥ ६ ॥ स्थायुक यह एक नाम
ग्रामके अध्यक्षका है । गोप यह एक नाम बहुतसे गोमोंके अध्यक्षका है ।
भौरिक, कनकाध्यक्ष ये दो नाम सुवर्णके अधिकारीके हैं । रूप्याध्यक्ष,
नैषिक ये दो नाम चाँदीके अधिकारीके हैं ॥ ७ ॥ अंतर्वेशिक यह

षण्ढो वर्षवरस्तुल्यौ सेवकार्थ्यनुजीविनः ।
 विषयानन्तरो राजा शत्रुमित्रमतः परम् ॥ ९ ॥
 उदासीनः परतरः पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।
 रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्वेषणदुर्हृदः ॥ १० ॥
 द्विद्विषक्षाहितामित्रदस्युशात्रवशत्रवः ।
 अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपन्थिनः ॥ ११ ॥
 वयस्यः स्निग्धः सवया अथ मित्रं सखा सुहृत् ।
 सख्यं साप्तपदीनं स्यादनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥
 यथार्हवर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः ।
 चारश्च गूढपुरुषश्चाप्तप्रत्ययितौ समौ ॥ १३ ॥

एक नाम भीतरके महलमें अधिकृत पुरुषका है । सौविदल्ल, कंचुकि
 स्थापत्य, सौविद ये चार नाम राजाके समीपमें बैठको धारण करने
 वाले पुरुषोंके हैं ॥ ८ ॥ षण्ढ, वर्षवर ये दो नाम राजाके रनवास
 रहनेवाले हीजडोंके हैं । सेवक, अर्थ्य (इन्नन्त), अनुजीविन (इन्नन्त)
 ये तीन नाम सेवकके हैं । शत्रु यह एक नाम अपने देशके पास रहनेवाले
 राजाका है । यहाँतक (पु०) हैं । मित्र यह एक (न०) नाम अपने
 देशसे दूर रहनेवाले राजाका है ॥ ९ ॥ उदासीन यह एक (पु०) नाम
 शत्रु और मित्रसे मित्र राजाका है । पार्ष्णिग्राह यह एक (पु०) नाम
 राजाके पृष्ठभागमें रहनेवाले राजाका है । रिपु, वैरिन्, सपत्न, अरि, द्वि
 द्वेषण, दुर्हृद् ॥ १० ॥ द्विष् (पात), विषक्ष, अहित, अमित्र, दस्यु
 शात्रव, शत्रु, अभिघातिन् (इन्नन्त), पर, अराति, प्रत्यर्थिन् (इन्नन्त), परि
 पन्थिन् (इन्नन्त) ये उन्नीस नाम वैरीके हैं । अमित्रशब्द (न०) शेष (पु०)
 हैं ॥ ११ ॥ वयस्य, स्निग्ध, सवयस् (सात) ये तीन (पु०) नाम प्यारेके हैं ।
 मित्र, सखि, सुहृद् (दान्त) ये तीन नाम मित्रके हैं । मित्र (न०) शेष
 (पु०) हैं । सख्य, साप्तपदीन ये दो (न०) नाम मैत्रीके हैं ।
 अनुरोध (पु०), अनुवर्तन (न०) ये दो नाम अनुकूलताके हैं ॥ १२ ॥
 यथार्हवर्ण, प्रणिधि, अपसर्प, चर, स्पश, चार, गूढपुरुष ये सात (पु०)
 नाम गुप्तपुरुषके हैं । आप्त, प्रत्ययित ये दो नाम विशेष विश्वासीके हैं ।

सांवत्सरो ज्योतिषिको दैवज्ञगणकावपि ।
 स्युर्मौहूर्तिकमौहूर्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि ॥ १४ ॥
 तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः सत्री गृहपतिः समौ ।
 लिपिकरोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चुश्च लेखके ॥ १५ ॥
 लिखिताक्षरसंस्थाने लिपिलिबिरुमे स्त्रियौ ।
 स्यात्संदेशहरो दूतो दूत्यं तद्भावकर्मणी ॥ १६ ॥
 अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्यः पथिक इत्यपि ।
 स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ॥ १७ ॥
 राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ।
 संधिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः ॥ १८ ॥

हैं और त्रिलिङ्गी हैं ॥ १३ ॥ सांवत्सर, ज्योतिषिक, दैवज्ञ, गणक, मौहूर्-
 तिक, मौहूर्त, ज्ञानिन् (इन्नन्त), कार्तान्तिक ये आठ (पु०) नाम
 ज्योतिषिके हैं ॥ १४ ॥ तान्त्रिक, ज्ञातसिद्धान्त ये दो (पु०) नाम शा-
 खको जाननेवालेके हैं । सत्रिन् (इन्नन्त), गृहपति ये दो (पु०) नाम
 घरके पति अर्थात् सब कालमें अन्न आदिको दान करनेवालेके हैं । लिपि-
 कर, अक्षरचण, अक्षरचुञ्चु, लेखक ये चार (पु०) नाम लिखनेवालेके हैं
 ॥ १५ ॥ लिखित (न०); अक्षरसंस्थान (न०), लिपि (स्त्री०),
 लिबि (स्त्री०) ये चार नाम लिखे हुए अक्षरोंके हैं । संदेशहर, दूत ये
 दो (पु०) नाम दूतके हैं । दूत्य यह एक (न०) नाम उस दूतके
 भाव और कर्मका है ॥ १६ ॥ अध्वनीन, अध्वग, अध्वन्य, पान्य, पथिक
 ये पांच (पु०) नाम मार्ग चलनेवालेके हैं । स्वामिन् अर्थात् राजा,
 अमात्य अर्थात् मंत्री, सुहृत् अर्थात् मित्र, कोश अर्थात् खजाना, राष्ट्र
 अर्थात् देशकी पृथ्वी, किला, सेना ॥ १७ ॥ ये सात राज्यके अंग हैं
 और प्रकृति कहाते हैं । अंगशब्द (न०) है और पुरमें रहनेवालोंके समू-
 हकोभी प्रकृति कहते हैं । प्रकृतिशब्द (स्त्री०) है । सुवर्ण आदि देकर
 शत्रुओंसे प्रीति उपजानेको संधि कहते हैं और संधिशब्द (पु०) है ।
 विग्रह यह एक (पु०) नाम दूसरेके राज्यमें अग्नि लगाने और लूटमार
 करनेका है । यान यह एक (न०) नाम शत्रुके प्रति जीतनेकी इच्छासे
 गमन करनेका है । आसन यह एक (न०) नाम अपनी शक्तिके रुकने

षड्गुणाः शक्त्यस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।
 क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् ॥ १९ ॥
 स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोशदण्डजम् ।
 सामदाने भेददण्डावित्युपायचतुष्टयम् ॥ २० ॥
 साहसं तु दमो दण्डः साम सान्त्वमथो समौ ।
 भेदोपजापावुपधा धर्माद्वैर्यत्परीक्षणम् ॥ २१ ॥
 पञ्च त्रिष्वषडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः ।
 विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाकास्तथा रहः ॥ २२ ॥
 रहश्चोपांशु चालिङ्गे रहस्यं तद्भवे त्रिषु ।
 समौ विस्त्रम्भविश्वासौ श्रेषो भ्रंशो यथोचितात् ॥ २३ ॥

पर किला बनाकर रहनेका है । द्वैध यह एक (न०) नाम बलवान् के सा-
 संघि अर्थात् मिलाप और निर्वलके साथ विग्रह करनेका है । आश्रय
 यह एक (पु०) नाम शत्रुसे पीडित हुए राजाको बलवान् राजाके आश्रय
 लेनेका है ॥ १८ ॥ आगेके ये संघि आदि छः गुण हैं । प्रभाव, उत्साह
 मन्त्र इन्हींसे उपजी तीन शक्ति हैं । क्षय (पु०), स्थान (न०), वृद्धि
 (स्त्री०) यह नीति जाननेवालोंके त्रिवर्ग हैं ॥ १९ ॥ प्रताप, प्रभाव ये
 दो (पु०) नाम खजाना और सेनासे उपजे तेजका है । उपाय यह एक
 (पु०) नाम साम अर्थात् प्रिय वचन आदि, दान अर्थात् धन आदि
 देना, भेद अर्थात् इकट्ठे मिले हुए शत्रुओंको भेदकर नष्ट करना
 दण्ड इनका है ॥ २० ॥ साहस (न०), दम (पु०), दण्ड (पु०)
 तीन नाम दण्डके हैं । सामन् (नां०), सान्त्व ये दो (न०) नाम मि-
 लापके हैं । भेद, उपजाप ये दो (पु०) नाम फूटके हैं । उपधा यह एक
 (स्त्री०) नाम धर्म, अर्थ, काम और भय करके मंत्री आदिकी परीक्षा
 करनेका है ॥ २१ ॥ अषडक्षीणसे आदि ले निःशलाका शब्दपर्य्यत पाँच
 शब्द (त्रि०) हैं । अषडक्षीण यह एक नाम तीसरे मनुष्यादिसे नष्ट
 जाना जावे किंतु दो जनोंहीसे किया जाय उस सम्मतिका है । विविक्त
 विजन, छन्न, निःशलाक, रहस् (सान्त न०) ॥ २२ ॥ रहस्, उपांशु
 सात नाम एकान्तके हैं । तहां रहस् और उपांशु ये दोनों अव्यय हैं
 रहस्य यह एक (त्रि०) नाम एकान्तमें होनेवालेका है । विश्रम्भ, विश्वास

अभ्रेषन्यायकल्पास्तु देशरूपं समञ्जसम् ।
 युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमानाभिनीतवत् ॥ २४ ॥
 न्याय्यं च त्रिषु षट् संप्रधारणा तु समर्थनम् ।
 अववादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं च सः ॥ २५ ॥
 शिष्टिश्चाज्ञा च संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ।
 आगोऽपराधो मन्तुश्च समे तूद्धानबन्धने ॥ २६ ॥
 द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो भागधेयः करो बलिः ।
 घट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥
 उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा ।
 यौतकादि तु यद्देयं मुदायो हरणं च तत् ॥ २८ ॥
 तत्कालस्तु तदात्वं स्यादुत्तरः काल आयतिः ।
 सांष्टिकं फलं सद्य उदर्कः फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥

ये दो (पु०) नाम विश्वासके हैं । भ्रेष यह एक (पु०) नाम यथोचित स्वरूपसे गिरनेका है ॥ २३ ॥ अभ्रेष (पु०), न्याय (पु०), कल्प (पु०), देशरूप (न०), समंजस (न०) ये पाँच नाम नीतिके हैं । युक्त, औपयिक, लभ्य, भजमान, अभिनीत ॥ २४ ॥ न्याय्य ये छः नाम न्यायसे युक्त द्रव्य आदिके हैं और छहों शब्द (त्रि०) हैं । संप्रधारणा (स्त्री०), समर्थन (न०) ये दो नाम युक्त और अयुक्त परीक्षाके हैं । अववाद (पु०), निर्देश (पु०), निदेश (पु०), शासन (न०) ॥ २५ ॥ शिष्टि (स्त्री०), आज्ञा (स्त्री०) ये छः नाम आज्ञाके हैं । संस्था, मर्यादा, धारणा, स्थिति ये चार (स्त्री०) नाम न्यायमार्गकी स्थितिके हैं । आगस् (सान्त न०), अपराध (पु०), मन्तु (पु०) ये तीन नाम अपराधके हैं । उद्धान, बन्धन ये दो (न०) नाम बंधनके हैं ॥ २६ ॥ द्विपाद्य यह एक (पु०) नाम दुगुने दंडका है । भागधेय, कर, बलि ये तीन (पु०) नाम राजग्राह्य भागके हैं । शुल्क यह एक (पु० न०) नाम घाट आदिमें ले जाने और लानेमें राजग्राह्य भाग अर्थात् महसूलका है । प्राभृत, प्रदेशन ॥ २७ ॥ उपायन, उपग्राह्य, उपहार, उपदा ये छः नाम भेंटके हैं । उपदा (स्त्री०) उपहार (पु०) शेष (न०) हैं । मुदाय (पु०), हरण (न०) ये दो नाम कन्यादानविषे तथा वरवधूको जो दिया जावे उसके हैं ॥ २८ ॥ तत्काल

अदृष्टं वह्नितोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम् ।
 महीभुजामहिमयं स्वपक्षप्रमवं भयम् ॥ ३० ॥
 प्रक्रिया त्वधिकारः स्याच्चाभारं तु प्रकीर्णकम् ।
 नृपासनं यत्तद्भद्रासनं सिंहासनं तु तत् ॥ ३१ ॥
 हैमं छत्रं त्वातपत्रं राजस्तु नृपलक्ष्म तत् ।
 मद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२ ॥
 निवेशः शिबिरं षण्ढे सज्जनं तूपरक्षणम् ।
 हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम् ॥ ३३ ॥
 दन्ती दन्तावली हस्ती द्विदोऽनेकपो द्विपः ।
 मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३४ ॥

(पु०), तदात्व (न०) ये दो नाम वर्तमान कालके हैं । आत
 यह एक (स्त्री०) नाम आनेवाले कालका है । सांख्यिक यह
 (न०) नाम तात्कालिक फलका है । उदर्क यह एक (पु०) नाम भ
 (होनेवाले) फलका है ॥ २९ ॥ अदृष्ट यह एक (न०) नाम आ
 उत्पात और अत्यंत जलवृष्टिसे उत्पन्न भयका है । दृष्ट यह
 (न०) नाम स्वदेश और परदेशसे उत्पन्न चोर आदिके भयका है । अ
 भय यह एक (न०) नाम राजाओंको अपने सहायकसे उपजे भयका
 ॥ ३० ॥ प्रक्रिया (स्त्री०), अधिकार (पु०) ये दो नाम व्यवस्था क
 फलके हैं । चामर, प्रकीर्णक ये दो (न०) नाम चैत्रके हैं । नृपा
 भद्रासन ये दो (न०) नाम मणि आदिसे बने हुए राजाके आसनके
 सिंहासन यह एक (न०) नाम सुवर्णसे रचे हुए आसनका है ॥ ३१ ॥
 छत्र, आतपत्र ये दो (न०) नाम छत्रके हैं । नृपलक्ष्मन् (नान्त)
 एक (न०) नाम राजाके छत्रका है । मद्रकुम्भ, पूर्णकुम्भ ये दो (पु०)
 नाम पूरित कलशके हैं । भृङ्गार (पु०), कनकालुका (स्त्री०) ये दो न
 सोनेसे बने हुए पात्रके हैं ॥ ३२ ॥ निवेश (पु०), शिबिर (न०)
 दो नाम सेनाके निवासस्थानके हैं । सज्जन, उपरक्षण ये दो (न०) न
 पहरा (गस्त) के हैं । हस्ती, घोड़ा, रथ, प्यादा ये चार सेनाके
 हैं ॥ ३३ ॥ दन्तिन् (इन्नन्त), दन्तावल, हस्तिन् (इन्नन्त), द्विद,
 कप, द्विप, मतंगज, गज, नाग, कुञ्जर, वारण, करिन् (इन्नन्त) ॥ ३४ ॥

इमः स्तम्बेरमः पद्मी यूथनाथस्तु यूथपः ।
 मदीत्कटो मदकलः कलमः करिशावकः ॥ ३५ ॥
 प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः समा उद्धान्तनिर्मदौ ।
 हास्तिकं गजता वृन्दे करिणी धेनुका वशा ॥ ३६ ॥
 गण्डः कटो मदो दानं वमथुः करशीकरः ।
 कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसस्तयोर्मध्ये विदुः पुमान् ॥ ३७ ॥
 अवग्रहो ललाटं स्यादीषिका त्वक्षिकूटकम् ।
 अपाङ्गदेशो निर्याणं कर्णमूलं तु चूलिका ॥ ३८ ॥
 अधः कुम्भस्य बाह्वित्थं प्रतिमानमधोऽस्य यत् ।
 आसनं स्कन्धदेशः स्यात्पद्मकं बिन्दुजालकम् ॥ ३९ ॥

इम, स्तम्बेरम, पद्मिन् (इन्नन्त) ये पन्द्रह (पु०) नाम हाथीके हैं । यूथ-
 नाथ, यूथप ये दो (पु०) नाम हाथियोंके समूहमें मुख्य हाथीके हैं । मदी-
 त्कट, मदकल ये दो (पु०) नाम मदसे उत्पन्न हुए हाथीके हैं । कलम,
 करिशावक ये दो (पु०) नाम हाथीके वस्त्रके हैं ॥ ३५ ॥ प्रभिन्न, गर्जित,
 मत्त ये तीन (पु०) नाम झिरते हुए मदवाले हाथीके हैं । उद्धान्त, निर्मद
 ये दो (पु०) नाम मदसे रहित हाथीके हैं । हास्तिक (न०), गजता
 (स्त्री०) ये दो नाम हाथियोंके समूहके हैं । करिणी, धेनुका, वशा ये तीन
 (स्त्री०) नाम हाथिनीके हैं ॥ ३६ ॥ गण्ड, कट ये दो (पु०) नाम हाथीके
 कपोलके हैं । मद (पु०), दान (न०) ये दो नाम हाथीके मदके पानीके
 हैं । वमथु, करशीकर ये दो (पु०) नाम हाथीकी सूंडसे निकसे हुए पा-
 नीके किनकोंके हैं । कुम्भ यह एक (पु०) नाम हाथीके शिरके पिण्डोंका
 है । विदु यह एक (पु०) नाम दोनों कुम्भोंके मध्यके आकाशस्थानका है ।
 ॥ ३७ ॥ अवग्रह (पु०) यह एक नाम हाथीके मस्तकका है । ईषिका
 (स्त्री०), अक्षिकूटक (न०) ये दो नाम हस्तीके नेत्रगोलके हैं । निर्याण
 यह एक (न०) नाम हाथीके कटाक्षदेशका है । चूलिका यह एक (स्त्री०)
 नाम हाथीके कर्णमूलका है ॥ ३८ ॥ बाह्वित्थ यह एक (न०) नाम
 हाथीके कुम्भके अधोभागका है । प्रतिमान यह एक (न०) नाम बाहि-
 त्थके नीचे दंतोंके मध्यका है । आसन यह एक (न०) नाम हाथीके
 कंधेका है । पद्मक यह एक (न०) नाम हाथीके बिन्दुओंके समूहका है

पार्श्वभागः पक्षभागो दन्तभागस्तु योऽग्रतः ।
 द्वौ पूर्वपश्चाज्जहादिदेशौ गात्रावरे क्रमात् ॥ ४० ॥

तोत्रं वेणुकमालानं बन्धस्तम्भेऽथ गृङ्गले ।
 अन्दुको निगडोऽस्त्री स्यादंकुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥ ४१ ॥

दूष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात्कल्पना सज्जना समे ।
 प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः ॥ ४२ ॥

वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं वारी तु गजबन्धनी ।
 घोटके वीतितुरगत्तुरङ्गाश्वतुरङ्गमाः ॥ ४३ ॥

वाजिवाहर्विगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः ।

आजानेयाः कुलीनाः स्युर्विनीताः साधुवाहिनः ॥ ४४ ॥

वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाह्लिका हयाः ।

ययुरश्वोऽश्वमेधीयो जवनस्तु जवाधिकः ॥ ४५ ॥

॥ ३९ ॥ पक्षभाग यह एक (पु०) नाम हाथीके पार्श्वभागका है । दन्त
 भाग यह एक (पु०) नाम हाथीके अग्रभागका है । गात्र यह एक (न०)
 नाम हाथीके पूर्व जंघा आदि देशका है । अवर यह एक (न०) नाम
 हाथीके जंघा आदि पश्चाद्भागका है ॥ ४० ॥ तोत्र, वेणुक ये दो (न०)
 नाम चाबकके हैं । आलान यह एक (न०) नाम बंधनके आधारस्तम्भ
 (खूंट) का है । गृङ्गल (त्रि०), अंदुक (पु०), निगड (पु० न०)
 ये तीन नाम सांकेतिक हैं । अंकुश (पु० न०), सृणि (स्त्री०) ये दो नाम
 अंकुशके हैं ॥ ४१ ॥ दूष्या, कक्ष्या, वरत्रा ये तीन (स्त्री०) नाम कम-
 रबंधनके उपयोगी चर्मकी रस्सीके हैं । कल्पना, सज्जना ये दो (स्त्री०)
 नाम मालिकको बैठानेके लिये हस्तीको सज्जी करनेके हैं । प्रवेणी (स्त्री०)
 आस्तरण (न०), वर्ण (पु०), परिस्तोम (पु०), कुथ (पु० स्त्री०)
 ये पांच नाम हस्तीकी पालखी वा झूलके हैं ॥ ४२ ॥ वीत यह एक (पु०)
 नाम युद्ध आदिको नहीं सहनेवाले हाथी घोडेका है । वारी यह एक
 (स्त्री०) नाम हाथी बंधनकी पृथ्वीका है । घोटक, वीति, तुरग, तुरंग,
 अश्व, तुरंगम ॥ ४३ ॥ वाजिन् (इन्नन्त), वाह, अर्वन् (नान्त), गंधर्व
 हय, सैन्धव, सप्ति ये तेरह (पु०) नाम घोडेके हैं । आजानेय यह एक
 (पु०) नाम सुन्दर जातीमें उत्पन्न हुए घोडेका है । विनीत यह एक (पु०)
 नाम सुन्दर सिखे हुए घोडोंका है ॥ ४४ ॥ वनायुज यह एक (पु०)

पृष्ठयः स्त्रौरी सितः कर्को रथ्यो वोढा रथस्य यः ।

बालः किशोरो वाम्यश्वा वडवा वाडवं गणे ॥ ४६ ॥

त्रिष्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ।

कश्यं तु मध्यमश्वानां हेषा हेषा च निस्वनः ॥ ४७ ॥

निगालस्तु गलोद्देशो वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत् ।

आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वलितं प्लुतम् ॥ ४८ ॥

गतयोऽभूः पञ्च धारा घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् ।

कविका तु खलीनोऽस्त्री शफं क्लीबे खुरः पुमान् ॥ ४९ ॥

नाम वनायुद्देशमें उत्पन्न होनेवाले घोडोंका है । पारसीक यह एक (पु०) नाम पारसदेशमें उत्पन्न हुए घोडेका है । कांबोज, बालिहक ये दो (पु०) नाम घोडोंके भेदोंके हैं । ययु यह एक (पु०) नाम अश्वमेध यज्ञके हित घोडेका है । जवन यह एक (पु०) नाम बहुत वेगवाले घोडेका है ॥ ४६ ॥ पृष्ठय, स्त्रौरिन् (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम जल आदिमें बोझको ले जानेवाले घोडोंके हैं । कर्क यह एक (पु०) नाम सुपेद घोडेका है । रथ्य यह एक (पु०) नाम रथमें जुतनेवाले घोडेका है । किशोर यह एक (पु०) नाम घोडेके बच्चेका है । वामी, अश्वा, वडवा ये तीन (स्त्री०) नाम घोडीके हैं । वाडव यह एक (न०) नाम घोडियोंके समूहका है ॥ ४६ ॥ आश्वीन यह एक (त्रि०) नाम घोडा एक दिनमें जितना चले उस मार्गका है । कश्य यह एक (न०) नाम घोडोंके मध्यभागका है । हेषा, हेषा ये दो (स्त्री०) नाम घोडेके शब्द (हिनहिनाने) के हैं ॥ ४७ ॥ निगाल यह एक (पु०) नाम घोडेके जोतेकी संधिका है । अश्वीय, आश्व ये दो (न०) नाम घोडोंके समूहके हैं । आस्कन्दित यह एक (न०) नाम जहां वेगसे पीडित हुआ घोडा न सुने और न देखे उस गतिका है । धौरितक यह एक (न०) नाम घोडेकी चतुराईसे सरल गतिका है । रेचित यह एक (न०) नाम घोडेकी दुलकी चालका है । वलित यह एक (न०) नाम घोडेकी टेढ़ी चालका है । प्लुत यह एक (न०) नाम घोडेकी चौकड़ी चालका है ॥ ४८ ॥ ये पांच गति धारा (स्त्री०) कहलाती हैं । प्रोथ यह एक (पु० न०) नाम घोडेकी नासिकाका है । कविका (स्त्री०), खलीन (पु० न०) ये दो नाम घोडेकी लगामके हैं । शफ (न०), खुर (पु०) ये दो नाम सुमके

पुच्छोऽस्त्री लूमलांगूले बालहस्तश्च बालधिः ।
 त्रिषूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि ॥ ५० ॥
 याने चक्रिणि युद्धार्थे शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।
 असौ पुष्यरथश्चक्रयानं न समराय यत् ॥ ५१ ॥
 कर्णीरथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम् ।
 क्लीवेऽनः शकटोऽस्त्री स्याद्गन्त्री कम्बलिवाहकम् ॥ ५२ ॥
 शिबिका याप्ययानं स्यादोला प्रेङ्गादिका स्त्रियाम् ।
 उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्वीपिचर्मावृते रथे ॥ ५३ ॥
 पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बली ।
 रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते ॥ ५४ ॥
 त्रिषु द्वैपादयो रथ्या रथकट्या रथव्रजे ।
 धूः स्त्री क्लीवे यानमुखं स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥

हैं ॥ ४९ ॥ पुच्छ (पु० न०), लूम (न०), लांगूल (न०) ये तीन नाम
 पूछके हैं । बालहस्त, बालधि ये दो (पु०) नाम बालोंके समूहसे युक्त
 पूछके अग्रभागके हैं । उपावृत्त, लुठित ये दो (त्रि०) नाम घोड़ेके लो-
 थनेके हैं ॥ ५० ॥ शताङ्ग, स्यन्दन, रथ ये तीन (पु०) नाम युद्धके अर्थ
 बने हुए रथके हैं । पुष्यरथ यह एक (पु०) नाम युद्धको छोड़ क्रीडाके
 लिये बनाये हुए रथका है ॥ ५१ ॥ कर्णीरथ (पु०), प्रवहण (न०),
 डयन (न०) ये तीन नाम वहलके हैं । अनसू (सान्त न०), शकट (पु०
 न०) ये दो नाम गाड़ेके हैं । गन्त्री यह एक (स्त्री०) नाम बैलोंसे जुत-
 नेवाले रथका है ॥ ५२ ॥ शिबिका (स्त्री०), याप्ययान (न०) ये दो
 नाम षालकके हैं । ओला, प्रेङ्गा ये दो (स्त्री०) नाम हिंडोलेके हैं । आगे
 (त्रि०) हैं । द्वैप, वैयाघ्र ये दो नाम सिंहकी चामड़ेसे मढ़े हुए रथके
 हैं ॥ ५३ ॥ पाण्डुकम्बलि (इत्थन्त) यह एक नाम सुपेद कम्बलसे मढ़े
 हुए रथका है । काम्बल यह एक नाम कम्बलसे मढ़े हुए रथका है । बाल
 यह एक नाम बस्त्रसे मढ़े हुए रथका है । आदिशब्दसे चर्म यह नाम चा-
 मसे मढ़े हुए रथका है ॥ ५४ ॥ द्वैप आदि शब्द (त्रि०) हैं । रथ्या,
 रथकट्या ये दो (स्त्री०) नाम रथोंके समूहके हैं । धुर (स्त्री०), यानमुख
 (न०) ये दो नाम रथ आदिकी धुरीके हैं । रथांग (न०), अपस्कर

चक्रं रथाङ्गं तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्राधिः पुमान् ।
 पिण्डिका नाभिरक्षाग्रकीलके तु द्वयोरणिः ॥ ५६ ॥
 रथगुप्तिर्वरुथो ना कूबरस्तु युगंधरः ।
 अनुकर्षो दार्वधःस्थं प्रासङ्गो ना युगाद्युगः ॥ ५७ ॥
 सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धोरणम् ।
 परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ ५८ ॥
 आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।
 नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः ॥ ५९ ॥
 सव्येष्टदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः ।
 रथिनः स्यन्दनारोहा अश्वारोहास्तु सादिनः ॥ ६० ॥
 भटा योधाश्च योद्धारः सेनारक्षास्तु सैनिकाः ।
 सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते ॥ ६१ ॥

(पु०) ये दो नाम रथके अवयवमात्रके अर्थात् तांगेके हैं ॥ ५५ ॥ चक्र, रथांग ये दो (न०) नाम रथके पहियोंके हैं । नेमि (स्त्री०), प्राधि (पु०) ये दो नाम रथके पहियोंकी नेमिके हैं । पिण्डिका, नाभि ये दो (स्त्री०) नाम पहियोंके मध्यभागके हैं । अणि यह एक (पु० स्त्री०) नाम रथकी लहोदर (कुलावे) का है ॥ ५६ ॥ रथगुप्ति (स्त्री०), वरुथ (पु०) ये दो नाम रथके लोहे आदिसे बनाये हुए आच्छादन अर्थात् छत्रीके हैं । कूबर, युगंधर ये दो (पु०) नाम रथकी डंडीके हैं । अनुकर्ष यह एक (पु०) नाम रथके नीचेके भागके काठका है । प्रासंग यह एक (पु०) नाम रथ आदिके जुआका है ॥ ५७ ॥ यान, युग्य, पत्र, धोरण ये चार (न०) नाम हस्ती घोडा आदि वाहनके हैं । वैनीतिक यह एक (पु० न०) नाम परंपराकी पालकी आदि वाहनका है ॥ ५८ ॥ आधोरण हस्तिपक, हस्त्यारोह, निषादिन (इत्यन्त) ये चार (पु०) नाम हाथीवानके हैं । नियन्तृ (ऋकारान्त), प्राजितृ (ऋकारान्त), यत्तृ (ऋकारान्त), सूत, क्षत्तृ (ऋकारान्त), सारथि ॥ ५९ ॥ सव्येष्ट, दक्षिणस्थ ये आठ (पु०) नाम सारथिके हैं । रथिन, स्यंदनारोह ये दो (पु०) नाम रथमें बैठ युद्ध करनेवालेके हैं । अश्वारोह, सादिन (इत्यन्त) ये दो (पु०) नाम अश्वपर बैठ युद्ध करनेवालेके हैं ॥ ६० ॥ भट, योध,

बालिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः ।
 परिधिस्थः परिचरः सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२ ॥
 कञ्चुको वारबाणोऽस्त्री यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः ।
 वध्नन्ति तत्सारसनमधिकाङ्गोऽथ शीर्षकम् ॥ ६३ ॥
 शीर्षण्यं च शिरस्त्रेऽथ तनुत्रं वर्म दंशनम् ।
 उरश्छदः कंकटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम् ॥ ६४ ॥
 आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत् ।
 संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकंकटः ॥ ६५ ॥
 त्रिष्वामुक्तादयो वर्मभृतां कावचिकं गणे ।
 पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः ॥ ६६ ॥

योद्ध (ऋकारान्त) ये तीन (पु०) नाम युद्ध करनेवालेके हैं । सेनारक्षः
 सैनिक ये दो (पु०) नाम पहिरेसे सेनाकी रक्षा करनेवालोंके हैं ।
 सैन्य, सैनिक ये दो (पु०) नाम सेनामें संपूर्ण एकत्रित हुआके हैं ॥ ६१ ॥
 साहस्र, सहस्रिन् (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम हजार सेनावालोंके हैं ।
 परिधिस्थ, परिचर ये दो (पु०) नाम फौजके चारों ओर घूमनेवालोंके
 हैं । सेनानी, वाहिनीपति ये दो (पु०) नाम सेनाके पतिके हैं ॥ ६२ ॥
 कञ्चुक, वारबाण ये दो (पु० न०) नाम वखतरके हैं । सारसन (न०),
 अधिकांग (पु०) ये दो नाम कमरपट्टीके हैं । शीर्षक ॥ ६३ ॥ शीर्ष-
 ण्य, शिरस्त्र ये तीन (न०) नाम टोपके हैं । तनुत्र (न०), वर्मन्
 (नान्त न०), दंशन (न०), उरश्छद (पु०), कंकटक (पु०), जगर
 (पु०), कवच (पु० न०) ये सात नाम कवचके हैं ॥ ६४ ॥ आमुक्त, प्रतिमुक्त,
 पिनद्ध, अपिनद्ध ये चार (त्रि०) नाम कञ्चुकको धारण करनेवालेके हैं ।
 संनद्ध, वर्मित, सज्ज, दंशित, व्यूढकंकट ये पांच (त्रि०) नाम कवचको
 धारण करनेवालेके हैं ॥ ६५ ॥ कावचिक यह एक (न०) नाम कवचको
 धारण करनेवालोंके समूहका है । पदाति, पत्ति, पदग, पादातिग, पदाति
 ॥ ६६ ॥ पद्ग, पदिक ये सात (पु०) नाम प्यादेके हैं । पादात यह एक
 (न०) नाम प्यादोंके समूहका है । आंगेके सांयुगीन शब्दतक (त्रि०)
 हैं । शस्त्राजीव, कांडपृष्ठ, आयुधीय, आयुधक ये चार नाम शस्त्रसे जीविका

पद्मश्च पदिकश्चाऽथ पादातं पत्तिसंहतिः ।

शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः ॥ ६७ ॥

कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः कृतपुंखवत् ।

अपराद्धपृष्त्कोऽसौ लक्ष्याद्यश्च्युतसायकः ॥ ६८ ॥

धन्वी धनुष्मान् धानुष्को निषङ्गचस्त्री धनुर्धरः ।

स्यात्काण्डवांस्तु काण्डीरः शाक्तीकः शक्तिहेतिकः ॥ ६९ ॥

याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपार्श्वधेतिकौ ।

नैस्त्रिशिकोऽसिहेतिः स्यात्समौ प्रासिककौन्तिकौ ॥ ७० ॥

चर्मो फलकपाणिः स्यात्पताकी वैजयन्तिकः ।

अनुप्लवः सहायश्चाऽनुचरोऽभिचरः समाः ॥ ७१ ॥

पुरोगाग्रेसरप्रष्ठाग्रतःसरपुरःसराः ।

पुरोगमः पुरोगामी मन्दगामी तु मन्थरः ॥ ७२ ॥

जङ्घालोऽतिजवस्तुल्यो जङ्घाकरिकजाङ्घिकौ ।

तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः ॥ ७३ ॥

करनेवालेके हैं ॥ ६७ ॥ कृतहस्त, सुप्रयोगविशिख, कृतपुंख ये तीन नाम शरके फेंकनेमें कुशल अर्थात् तीरंदाजके हैं । अपराद्धपृष्त्क यह एक नाम निशानसे चूकनेवालेका है ॥ ६८ ॥ धन्विन् (इन्नन्त), धनुष्मत् (मत्वन्त), धानुष्क, निषंगिन्, अस्त्रिन्, धनुर्धर ये छः नाम धनुषधारीके हैं । काण्ड-वत् (मत्वन्त), काण्डीर ये दो नाम शरको धारण करनेवालेके हैं । शाक्तीक, शक्तिहेतिक ये दो नाम बरछीको धारण करनेवालेके हैं ॥ ६९ ॥ याष्टीक यह एक नाम लाठीवालेका है । पारश्वधिक यह एक नाम फरसा-वालेका है । नैस्त्रिशिक यह एक नाम तलवारवालेका है । प्रासिक, कौन्तिक ये दो नाम भालेसे लड़नेवालेके हैं ॥ ७० ॥ चर्मिन् (इन्नन्त), फलक-पाणि ये दो नाम ढालको धारण करनेवालेके हैं । पताकिन् (इन्नन्त), वैजयन्तिक ये दो नाम ध्वजा (निशान) को धारण करनेवालेके हैं । अ-नुप्लव, सहाय, अनुचर, अभिचर ये चार नाम सेवकके हैं ॥ ७१ ॥ पुरोग, अग्रेसर, प्रष्ठ, अग्रतःसर, पुरःसर, पुरोगम, पुरोगामिन् (इन्नन्त) ये सात नाम आगे चलनेवालेके हैं । मन्दगामिन् (इन्नन्त), मन्थर ये दो नाम होले २ चलनेवालेके हैं ॥ ७२ ॥ जङ्घाल, अतिजव ये दो नाम अ-

जय्यो यः शक्यते जेतुं जेयो जेतव्यमात्रके ।
 जैत्रस्तु जेता यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति ॥ ७४ ॥
 सोऽभ्यमिष्योऽभ्यमित्रीयोऽप्यभ्यमित्रीण इत्यपि ।
 ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जातिशयान्वितः ॥ ७५ ॥
 स्यादुरस्वानुरसिलो रथिनो रथिको रथी ।
 कामगाम्यनुकामीनो ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७६ ॥
 शूरो वीरश्च विक्रान्तो जेता जिष्णुश्च जित्वरः ।
 सांयुगीनो रणे साधुः शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥ ७७ ॥
 ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनाऽनीकिनी चमूः ।
 वरूथिनी बलं सैन्यं चक्रं चानीकमस्त्रियाम् ॥ ७८ ॥
 व्यूहस्तु बलविन्यासो भेदा दण्डादयो युधि ।
 प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

त्यंत वेगसे चलनेवालेके हैं । जंघाकरिक, जांचिक ये दो नाम जंघाके बल
 जीनेवालेके हैं । तरस्विन् (इन्नन्त), त्वरित, वेगिन् (इन्नन्त), प्रजवि
 (इन्नन्त), जवन, जब ये छः नाम शीघ्र चलनेवालेके हैं ॥ ७३ ॥ जय्य यह एक
 नाम जो शीघ्र जीतनेको शक्य हो उसका है । जेय यह एक नाम जीत
 नेके योग्यका है । जैत्र, जेतृ (ऋकारान्त) ये दो नाम जीतनेवालोंके हैं
 ॥ ७४ ॥ अभ्यमिष्य, अभ्यमित्रीय, अभ्यमित्रीण ये तीन नाम शत्रु
 ओंके सम्मुख अपनी सामर्थ्यसे गमन करनेवालेके हैं । ऊर्जस्वल, ऊर्जस्वि
 (इन्नन्त) ये दो नाम अत्यंत पराक्रमीके हैं ॥ ७५ ॥ उरस्वत् (मत्त्वन्त)
 उरसिल ये दो नाम सुन्दर छातीवालेके हैं । रथिन, रथिक, रथिन् (इन्नन्त)
 ये तीन नाम रथके स्वामीके हैं । अनुकामीन यह एक नाम यथेच्छ गम
 नशीलका है । अत्यन्तीन यह एक नाम अत्यंत गमनशीलका है ॥ ७६ ॥
 शूर, वीर, विक्रान्त ये तीन नाम शूरवीरके हैं । जेतृ (ऋकारान्त), जिष्णु
 जित्वर ये तीन नाम जयशीलके हैं । सांयुगीन यह एक नाम युद्धकुशल
 है । शस्त्राजीव आदि शब्द (त्रि०) हैं ॥ ७७ ॥ ध्वजिनी, वाहिनी, सेना
 पृतना, अनीकिनी, चमू, वरूथिनी (ये स्त्री०), बल, सैन्य, चक्र
 (ये न०), अनीक (पु० न०) ये ग्यारह नाम सेनाके हैं ॥ ७८ ॥ व्यूह
 यह एक (पु०) नाम सेनाके युद्धके लिये रचना विशेषकरके स्थापन क

एकैकैकरथा ज्यश्वा पत्तिः पञ्चपदातिका ।
 पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम् ॥ ८० ॥
 सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ।
 अनीकिनी दशानीकिन्यक्षौहिण्यथ संपत्तिः ॥ ८१ ॥
 संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च विपत्त्यां विपदापदौ ।
 आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रमथास्त्रियौ ॥ ८२ ॥
 धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् ।
 इष्वासोऽप्यथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥ ८३ ॥
 कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुंनपुंसकौ ।
 कोटिरस्याटनी गोधे तले ज्याघातवारणे ॥ ८४ ॥

रनेका है । मुखभागमें रथ हों पृष्ठभागमें घोड़े हों घोड़ोंके पीछे प्यादे हों
 और दोनों पार्श्वोंमें हाथी हों वह व्यूह कहाता है । व्यूहके दंड मंडल
 आदि भेदविशेष युद्धमें हैं । प्रत्यासार, व्यूहपार्ष्णि ये दो (पु०)
 नाम व्यूहके पृष्ठभागके हैं । प्रतिग्रह यह एक (पु०) नाम सेनाके
 पृष्ठभागका है ॥ ७९ ॥ जहां एक हाथी हो एक रथ हो तीन घोड़े और
 पांच प्यादे हों वह पत्ति कहाती है । पत्तिके अवयवोंको तीन गुनाकरके
 उत्तरोत्तर क्रमसे सेनामुख आदि होते हैं ॥ ८० ॥ तीन पत्तियोंका सेना-
 मुख होता है । तीन सेनामुखोंका गुल्म होता है । तीन गुल्मोंका गण
 होता है । तीन गणोंकी वाहिनी होती है । तीन वाहिनियोंकी पृतना होती
 है । तीन पृतनाओंकी चमू होती है । तीन चमूओंकी अनीकिनी होती
 है । तीन अनीकिनियोंकी दशानीकिनी और तीन दशानीकिनियोंकी
 एक अक्षौहिणी होती है । सेनामुख (न०), गुल्म (पु० न०), गण
 (पु०) और शेष (स्त्री०) हैं । संपत्ति ॥ ८१ ॥ संपत्ति, श्री, लक्ष्मी ये चार
 (स्त्री०) नाम संपत्तिके हैं । विपत्ति, विपद्, आपद् ये तीन (स्त्री०)
 नाम विपत्तिके हैं । आयुध, प्रहरण, शस्त्र, अस्त्र ये चार (न०) नाम
 हथियारके हैं ॥ ८२ ॥ धनुस् (सान्त पु० न०), चाप (पु० न०), धन्वस्
 (सान्त न०), शरासन (न०), कोदंड (न०), कार्मुक (न०),
 इष्वास (पु०) ये सात नाम धनुषके हैं । कालपृष्ठ यह एक (न०) नाम
 कर्णके धनुषका है ॥ ८३ ॥ गांडीव, गांडिव ये दो नाम अर्जुनके धनुषके हैं

लस्तकस्तु धनुर्मध्यं मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः ।
 स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादि स्थानपञ्चकम् ॥ ८५ ॥
 लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च शराभ्यास उपासनम् ।
 पृषत्कबाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः ॥ ८६ ॥
 कलम्बमार्गणशराः पत्री रोप इषुर्द्वयोः ।
 प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः पक्षो वाजस्त्रिषूत्तरे ॥ ८७ ॥
 निरस्तः प्रहिते बाणे विषाक्ते दिग्धालिप्तकौ ।
 तूणोपासङ्गतूणीरनिषङ्गा इषुधिर्द्वयोः ॥ ८८ ॥
 तूण्यां खड्गे तु निस्त्रिंशच्चन्द्रहासासिरिष्ठयः ।
 कौक्षेयको मण्डलाग्रः करवालः कृपाणवत् ॥ ८९ ॥

और दोनों शब्द (पु०न०) हैं । कौटि, अटनी ये दो (स्त्री०) नाम धनुषके प्रान्तके हैं । गोधा (स्त्री०), तला (स्त्री०न०) ये दो नाम धनुषकी डोरी-के शब्दको दूर करनेके लिये चमड़ेके बंधविशेषके हैं ॥ ८४ ॥ लस्तक यह एक (पु०) नाम धनुषके मध्यभागका है । मौर्वी, ज्या, शिञ्जिनी, गुण ये चार नाम धनुषकी डोरीके हैं । गुणशब्द (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । प्रत्यालीढ, आलीढ, समपद, वैशाख, मंडल ये पांच भेद धनुषको धारण करनेवालोंकी स्थितिके हैं । वैशाखशब्द (पु०) शेष (न०) हैं ॥ ८५ ॥ लक्ष, लक्ष्य, शरव्य ये तीन (न०) नाम वेधके हैं । शराभ्यास (पु०), उपासन (न०) ये दो नाम शर फेंकनेके अभ्यासके हैं । पृषत्क, बाण, विशिख, अजिह्मग, खग, आशुग ॥ ८६ ॥ कलम्ब, मार्गण, शर, पत्रिन (इन्नन्त), रोप, इषु ये बारह (पु०) नाम बाणके हैं । तहां इषुशब्द (पु० स्त्री०) है । प्रक्ष्वेडन, नाराच ये दो (पु०) नाम लोहेसे बने हुए बाणके हैं । पक्ष, वाज ये दो (पु०) नाम कंकपक्षी आदिके पंखके हैं । निरस्तशब्दसे आदि लेकर लिप्तक शब्दपर्यंत (त्रि०) हैं ॥ ८७ ॥ निरस्त यह एक नाम छोड़े हुए बाणका है । विषाक्त, दिग्ध, लिप्तक ये तीन नाम विषसे युक्त किये बाणके हैं । तूण, उपासङ्ग, तूणीर, निषङ्ग, इषुधि, तूणी ये छः नाम बाणके घर (तरकस) के हैं । तहां इषुधिशब्द (पु० स्त्री०), तूणीशब्द (स्त्री०), शेष (पु०) हैं ॥ ८८ ॥ खड्ग, निस्त्रिंश, चन्द्रहास, असिरिष्ठि, कौक्षेयक, मण्डलाग्र, करवाल, कृपाण

त्सरुः खड्गादिमुष्टौ स्यान्मेखला तन्निबन्धनम् ।
 फलकोऽस्त्री फलं चर्म संग्राहो मुष्टिरस्य यः ॥ ९० ॥
 दुघणो मुद्गरघनौ स्यादीली करवालिका ।
 भिन्दिपालः सृगस्तुल्यौ परिषः परिधातिनः ॥ ९१ ॥
 दयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च परश्वधः ।
 स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च क्षुरिका चासिधेनुका ॥ ९२ ॥
 वा पुंसि शल्यं शंकुर्ना सर्वलां तोमरोऽस्त्रियाम् ।
 प्रासस्तु कुन्तः कोणस्तु स्त्रियः पाल्यश्रिकोटयः ॥ ९३ ॥
 सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थकः ।
 लोहाभिसारोऽस्त्रभृतां राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ ९४ ॥

ये नव (पु०) नाम तलवारके हैं ॥ ८९ ॥ त्सरु यह एक (पु०) नाम तलवारके आदिकी मूठका है । मेखला यह एक (स्त्री०) नाम तलवार आदिके म्यानका है । फलक (पु० न०), फल (न०), चर्मन् (नान्त न०) ये तीन नाम ढालके हैं । संग्राह यह एक (पु०) नाम ढालकी मूठका है ॥ ९० ॥ दुघण, मुद्गर, घन ये तीन (पु०) नाम मुद्गरके हैं । ईली, करवालिका ये दो (स्त्री०) नाम खांडके हैं । भिन्दिपाल, सृग ये दो (पु०) नाम गोफियाके हैं । परिष, परिधातिन ये दो (पु०) नाम लोहेसे बंधे हुए हाथके प्रमाण डंडेके हैं ॥ ९१ ॥ कुठार, स्वाधिति, परशु, परश्वध ये चार नाम कुल्हाड़ेके हैं । तहां कुठार शब्द (पु० स्त्री०) शेष (पु०) है । शस्त्री, आसिपुत्री, क्षुरिका, आसिधेनुका ये चार (स्त्री०) नाम क्षुरिके हैं ॥ ९२ ॥ शल्य (पु० न०), शंकु (पु०) ये दो नाम बाणके अग्रभागके हैं । सर्वला (स्त्री०), तोमर (पु० न०) ये दो नाम गुरुगुंजशस्त्रके हैं । प्रास, कुन्त ये दो (पु०) नाम मालेके हैं । कोण, पालि, अश्रि, कोटि ये चार नाम तलवार आदिके प्रान्तभागके हैं । कोणशब्द (पु०) शेष (स्त्री०) हैं ॥ ९३ ॥ सर्वाभिसार (पु०), सर्वौघ (पु०), सर्वसन्नहन (न०) ये तीन नाम चतुरंग सेनाके जमावके हैं । लोहाभिसार यह एक (पु०) नाम शस्त्रोंको धारनेवाली राजाओंको महानवमीके दिन नीराजनसमयमें शस्त्र आदिकी स-

यत्सेनयामिगमनमरौ तदभिषेणनम् ।

यात्रा ब्रज्याऽभिनिर्माणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ९५ ॥

स्यादासारः प्रसरणं प्रचक्रं चलितार्थकम् ।

अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥ ९६ ॥

वैतालिका बोधकराश्चाक्रिका घाण्टिकार्थकाः ।

स्युर्मागधास्तु मगधा बन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥

संशप्तकास्तु समयात्संग्रामादनिवर्तिनः ।

रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांसुर्ना न द्वयो रजः ॥ ९८ ॥

चूर्णे क्षोदः समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले ।

पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमस्त्रियाम् ॥ ९९ ॥

सा वीराशंसनं युद्धभूमिर्याऽतिमयप्रदा ।

अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहंपूर्विका स्त्रियाम् ॥ १०० ॥

मर्षण लक्षणावाली विधिका है ॥ ९४ ॥ अभिषेणन यह एक (न०) नाम
 शत्रुके समीप सेनासहित समुख गमनका है । यात्रा (स्त्री०), ब्रज्या
 (स्त्री०), अभिनिर्माण (न०), प्रस्थान (न०), गमन (न०), गम
 (पु०) ये छः नाम गमनके हैं ॥ ९५ ॥ आसार (पु०), प्रसरण (न०)
 ये दो नाम सेनाकी सब ओरकी व्याप्तिके हैं । प्रचक्र, चलित ये दो (न०)
 नाम चलती हुई सेनाके हैं । अभिक्रम यह एक (पु०) नाम युद्धमें श-
 त्रुओंके प्रति भयरहित शूरवीरके गमनका है ॥ ९६ ॥ वैतालिक, बोधकर
 ये दो (पु०) नाम राजाओंको स्तुतिकरके प्रभातमें उठानेवालोंके हैं । चाक्रिक
 घाण्टिक ये दो (पु०) नाम बन्दिविशेषके हैं । मागध, मगध, बन्दिन (इन्नन्त)
 स्तुतिपाठक ये चार (पु०) नाम राजाकी स्तुति करनेवालेके हैं ॥ ९७ ॥
 संशप्तक यह एक (पु०) नाम सौगंदसे युद्धमेंसे नहीं मुख मोड़नेवालेका
 है । रेणु, धूलि, पांसु, रजस् ये चार नाम धूलके हैं । तहां रेणुशब्द (पु०
 स्त्री०) है, धूलिशब्द (स्त्री०), पांसुशब्द (पु०) है, रजस्शब्द
 (सकारान्त न०) है ॥ ९८ ॥ चूर्ण (पु० न०), क्षोद (पु०) ये दो
 नाम पीसे हुए रजके हैं । समुत्पिज, पिञ्जल ये दो (पु०) नाम अत्यन्त
 आकुल हुई सेना आदिके हैं । पताका (स्त्री०), वैजयन्ती (स्त्री०), केतन
 (न०), ध्वज (पु० न०) ये चार नाम ध्वजाके हैं ॥ ९९ ॥ वीराशंसन

आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि ।

अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहंकारः ॥ १०१ ॥

द्रविणं तरः सहोबलशौर्याणि स्थाम शुष्मं च ।

शक्तिः पराक्रमः प्राणो विक्रमस्त्वतिशक्तिता ॥ १०२ ॥

वीरपाणं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ।

युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम् ॥ १०३ ॥

मृधमास्कन्दनं संख्यं समीकं सांपरायिकम् ।

अस्त्रियां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ ॥ १०४ ॥

संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः ।

अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमाहवाः ॥ १०५ ॥

समुदायः स्त्रियः संयत्समित्याजिसमिधुधः ।

नियुद्धं बाहुयुद्धेऽथ तुमुलं रणसंकुले ॥ १०६ ॥

यह एक (न०) नाम अत्यंत भय देनेवाली युद्धभूमिका है ।
अहंपूर्विका यह एक (स्त्री०) नाम में पहले में पहले ऐसा आग्र-
हपूर्वक युद्धादि करनेका है ॥ १०० ॥ आहोपुरुषिका यह एक (स्त्री०)
नाम गर्वसे अपने विषै सामर्थ्य प्रकट करनेका है । अहमहमिका यह एक
(स्त्री०) नाम आपसमें अहंकारका है ॥ १०१ ॥ द्रविण, तरस् (सान्त),
सहस्र, बल, शौर्य, स्थाम, शुष्म, शक्ति, पराक्रम, प्राण ये दश नाम परा-
क्रमके हैं । तहां शक्ति (स्त्री०), पराक्रम, प्राण (पु०), शेष (न०) हैं ।
विक्रम (पु०), अतिशक्तिता (स्त्री०) ये दो नाम अत्यंत शक्तिके
हैं ॥ १०२ ॥ वीरपान यह एक (पु०) नाम वृत्तिमान युद्धमें परिश्रमकी
शान्तिके लिये तथा होनेवाले युद्धमें उत्साह बढ़ानेके लिये मदिरा पीनेका है ।
युद्ध, आयोधन, जन्य, प्रधन, प्रविदारण ॥ १०३ ॥ मृध, आस्कंदन,
संख्य, समीक, सांपरायिक (यहांतक न० हैं), समर, अनीक, रण ये
तीन (पु० न०), कलह, विग्रह ॥ १०४ ॥ संप्रहार, अभिसंपात, कलि,
संस्फोट, संयुग, अभ्यामर्द, समाघात, संग्राम, अभ्यागम, आहवा ॥ १०५ ॥
समुदाय यहांतक (पु०) हैं, संयत् (पु० स्त्री०), समिति, आजि, समित्,
युध ये चार नाम (स्त्री०) हैं । इस प्रकार ये इकतीस नाम युद्धके हैं ।
नियुद्ध, बाहुयुद्ध ये दो (न०) नाम बाहुयुद्धके हैं । तुमुल यह एक (न०)

क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्यात्करिणां घटना घटा ।
 क्रन्दनं योधसंरावो बृंहितं करिगर्जितम् ॥ १०७ ॥
 विस्फारो धनुषः स्वानः पटहाडम्बरौ समौ ।
 प्रसभं तु बलात्कारो हठोऽथ स्खलितं छलम् ॥ १०८ ॥
 अज्यन्यं क्लीबमुत्पात उपसर्गः समं त्रयम् ।
 मूर्च्छा तु कश्मलं मोहोऽप्यवमर्दस्तु पीडनम् ॥ १०९ ॥
 अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं विजयो जयः ।
 वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा ॥ ११० ॥
 प्रद्रावोद्रावसंद्रावसंदावा विद्रवो द्रवः ।
 अपक्रमोऽपयानं च रणे भङ्गः पराजयः ॥ १११ ॥

नाम युद्धके विषैं आपसमें बहुत पीडाका है ॥ १०६ ॥ क्ष्वेडा (स्त्री०), सिंहनाद (पु०) ये दो नाम वीरोंके सिंहशब्दके समान शब्दविशेषके हैं । घटा यह एक (स्त्री०) नाम हस्तियोंके युद्धमें संघटनका है । क्रन्दन यह एक (न०) नाम योद्धाओंके आक्रोशपूर्वक शब्दका है । बृंहित यह एक (न०) नाम हस्तियोंके गर्जनेका है ॥ १०७ ॥ विस्फार यह एक (पु०) नाम धनुषके शब्दका है । पटहा, आडंबर ये दो (पु०) नाम संग्रामकी ध्वनि अर्थात् जुझाऊ नगाडेके हैं । प्रसभ (न०), बलात्कार (पु०), हठ (पु०) ये तीन नाम हठके हैं । स्खलित, छल ये दो (न०) नाम युद्धमें धोखा देनेके हैं ॥ १०८ ॥ अजन्य (न०), उत्पात (पु०), उपसर्ग (पु०) ये तीन नाम उत्पातके हैं । मूर्च्छा (स्त्री०), कश्मल (न०), मोह (पु०) ये तीन नाम मूर्च्छाके हैं । अवमर्द (पु०), पीडन (न०) ये दो नाम खेती आदिसे संपन्न हुए देशको परचक्रसे पीडा होनेके हैं ॥ १०९ ॥ अभ्यवस्कन्दन, अभ्यासादन ये दो (न०) नाम शत्रुके सम्मुख जानेके अथवा शत्रुओंसे उसकी हिम्मत तोड़ देनेके हैं । विजय, जय ये दो (पु०) नाम जयके हैं । वैरशुद्धि (स्त्री०), प्रतीकार (पु०), वैरनिर्यातन (न०) ये तीन नाम वैरको दूर करनेके हैं ॥ ११० ॥ प्रद्राव, उद्राव, संद्राव, संदाव, विद्रव, द्रव, अपक्रम, अपयान ये आठ नाम भागनेके हैं । तहां अपयान (न०) शेष (पु०) हैं । पराजय यह एक (पु०) नाम रणमें भंगका है ॥ १११ ॥ पराजित, पराभूत ये दो नाम

पराजितपराभूतौ त्रिषु नष्टतिरोहितौ ।
 प्रमापणं निबर्हणं निकारणं विशारणम् ॥ ११२ ॥
 प्रवासनं परासनं निषूदनं निर्हिसनम् ।
 निर्वासनं संज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ॥ ११३ ॥
 निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् ।
 निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११४ ॥
 उद्घासनप्रमथनक्रथनोजासनानि च ।
 आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथवधा अपि ॥ ११५ ॥
 स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः ।
 अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम् ॥ ११६ ॥
 परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः ।
 मृतप्रमीतौ त्रिष्वेते चिता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ ११७ ॥
 कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम् ।
 श्मशानं स्यात्पितृवनं कुणपः शवमस्त्रियाम् ॥ ११८ ॥

निर्जित (हारे हुए) के हैं । नष्ट, तिरोहित ये दो नाम छिपे हुएके हैं और पराजित आदि चारों शब्द (त्रि०) हैं । प्रमापण, निबर्हण, निकारण, विशारण ॥ ११२ ॥ प्रवासन, परासन, निषूदन, निर्हिसन, निर्वासन, संज्ञपन, निर्ग्रन्थन, अपासन ॥ ११३ ॥ निस्तर्हण, निहनन, क्षणन, परिवर्जन, निर्वापण, विशसन, मारण, प्रतिघातन ॥ ११४ ॥ उद्घासन, प्रमथन, क्रथन, उजासन यहाँतक (न०) और आगेके (पु०) हैं । आलम्भ, पिञ्ज, विशर, घात, उन्माथ, वधा ये तसि नाम मारनेके हैं ॥ ११५ ॥ पञ्चता, कालधर्म, दिष्टान्त, प्रलय, अत्यय, अन्त, नाश, मृत्यु, मरण, निधन ये दश नाम मरणके हैं । तहाँ निधनशब्द (पु० न०) पञ्चता (स्त्री०) मृत्यु (स्त्री० पु०) मरण (न०) और शेष (पु०) हैं ॥ ११६ ॥ परासु, प्राप्तपञ्चत्व, परेत, प्रेत, संस्थित, मृत, प्रमीत ये सात नाम मरे हुएके हैं और (त्रि०) हैं । चिता, चित्या, चिति ये तीन (स्त्री०) नाम चिताके हैं ॥ ११७ ॥ कबन्ध यह एक (पु० न०) नाम शिरसे रहित युद्ध करते हुए धडका है । श्मशान, पितृवन ये दो (न०) नाम प्रेतभूमिके हैं । कुणप (पु०), शव (पु० न०) ये दो नाम मुर्देके हैं ॥ ११८ ॥

प्रग्रहोपग्रहौ बन्धां कारा स्याद्बन्धनालये ।

पुंसि भूम्यसवः प्राणाश्चैवं जीवोऽसुधारणम् ॥ ११९ ॥

आयुर्जीवितकालो ना जीवातुर्जीवनौषधम् ।

इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

अथ वैश्यवर्गः ९ ।

ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः ।

आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने ॥ १ ॥

स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः ।

सेवा श्ववृत्तिरनृतं कृषिरुञ्छशिलं त्वृतम् ॥ २ ॥

द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं मृतामृते ।

सत्यानृतं वाणिग्भावः स्यादणं पर्युदश्चनम् ॥ ३ ॥

प्रग्रह (पु०), उपग्रह (पु०), बन्दी (स्त्री०) ये तीन नाम कैदके हैं । कारा यह एक (स्त्री०) नाम जेलखानेका है । असु, प्राण ये दो (पु०) नाम प्राणके हैं । तहां प्राणशब्द बहुवचनांत है । असुशब्द विकल्पकर बहुवचनांत है । जीव (पु०), असुधारण (न०) ये दो नाम प्राणधारणके हैं ॥ ११९ ॥ आयुस् यह एक (न०) नाम उमरका है । जीवातु यह एक (पु०) नाम जीवनकी औषधका है । इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

अथ वैश्यवर्गः । ऊरव्य, ऊरुज, अर्य, वैश्य, भूमिस्पृश ये छः (पु०) नाम वैश्यके हैं । आजीव (पु०), जीविका (स्त्री०), वार्ता (स्त्री०), वृत्ति (स्त्री०), वर्तन (न०), जीवन (न०) ये छः नाम जीविका मात्रके हैं ॥ १ ॥ कृषि (स्त्री०) अर्थात् खेती करना, पाशुपाल्य (न०) अर्थात् गौ आदिकी रक्षा करना, वाणिज्य (न०) अर्थात् खरीदना बेचना ये तीन वृत्ति वैश्यकी हैं । सेवा, श्ववृत्ति अर्थात् कुसेकी वृत्ति ये दो (स्त्री०) नाम सेवाके हैं । यह निन्दनीय है । अनृत (न०), कृषि (स्त्री०) ये दो नाम खेती करनेके हैं । और जीवोंकी हिंसा होनेसे खेतीभी निन्दनीय है । उञ्छ यह एक (पु०) नाम दुकान आदिमें पड़े हुए दानोंको इकट्ठा करनेका है । शिल यह एक (न०) नाम खेत आदिके स्वामीके त्याग हुए अन्नके दानोंको ग्रहण करनेका है । ये दोनों ऋत (न०) कहलाते हैं ॥ २ ॥ मृत यह एक (न०) नाम मांगनेवालेको अन्न दिये जानेका

उद्धारोऽर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका ।
याच्चयाप्तं याचितकं नियमादापमित्यकम् ॥ ४ ॥

उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात् ।
कुसीदको वार्धुषिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥

क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवलः ।

क्षेत्रं त्रैहेयशालेयं त्रीदृशाल्युद्भवोचितम् ॥ ६ ॥

यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनं हि यत् ।

तिल्यं तैलीनवन्माषोमाणुभङ्गा द्विरूपता ॥ ७ ॥

मौद्गीनकौद्रवीणादिशेषधान्योद्भवक्षमम् ।

“ शाकक्षेत्रादिके शाकशाकटं शाकशाकिनम् । ”

बीजाकृतं तूष्णकृष्टे सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥

है । अमृत यह एक (न०) नाम विना मांगनेवालेको अन्न आदि देनेका है । सत्यानृत यह एक (न०) नाम खरीदना बेचना आदि वाणिज्यका है । क्योंकि इसमें कुछ सत्य और कुछ झूठ बोलना पड़ता है । ऋण (न०), पर्युदंचन (न०) ॥ ३ ॥ उद्धार (पु०) ये तीन नाम कर्जेके हैं । अर्थप्रयोग (पु०), कुसीद (न०), वृद्धिजीविका (स्त्री०) ये तीन नाम व्याजके हैं । याचितक यह एक (न०) नाम मांगनेसे प्राप्त हुका है । आपमित्यक यह एक (न०) नाम नियमसे प्राप्त हुका है ॥ ४ ॥ उत्तमर्ण यह एक (पु०) नाम साहूकारका है । अधमर्ण यह एक (पु०) नाम कर्जदारका है । कुसीदक, वार्धुषिक, वृद्ध्याजीव, वार्धुषि ये चार (पु०) नाम व्याजखोरके हैं ॥ ५ ॥ क्षेत्राजीव, कर्षक, कृषिक, कृषीवल ये चार (पु०) नाम खेती करनेवालेके हैं । आगेके शब्द (त्रि०) हैं । त्रैहेय यह एक नाम त्रीहि अन्न उपजनेके खेतका है । शालेय यह एक नाम शालिचावल उपजनेके खेतका है ॥ ६ ॥ यव्य यह एक नाम जव उपजनेके खेतका है । यवक्य यह एक नाम अल्पजव उपजनेके खेतका है । षष्टिक्य यह एक नाम साठी अर्थात् साठ रात्रियोंमें जो पके उस चावलके खेतका है । तिल्य, तैलीन ये दो नाम तिल उपजनेके खेतके हैं । माष्य, माषीण ये दो नाम उड़द उपजनेके खेतके हैं । उम्य, औमीन ये दो नाम अलसी उपजनेके खेतके हैं । अणव्य, आणवीन ये दो नाम अण अन्नविशेष उपजनेके खेतके हैं । मंग्य, मांगीन ये दो नाम भांग उपजनेके खेतके हैं ॥ ७ ॥ मौद्गीन यह एक नाम मूंग

त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ।
 द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥
 द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः ।
 खारीवापस्तु खारीक उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥
 पुनपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्रमस्य तु ।
 कैदारकं स्यात्कैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे ॥ ११ ॥
 लोष्ठानि लेष्टवः पुंसि कोटिशो लोष्टभेदनः ।
 प्राजनं तोदनं तोत्रं खनित्रमवदारणे ॥ १२ ॥

उपजनेके खेतका है । कौद्रवीण यह एक नाम कोदू उपजनेके खेतका है ।
 चाणकीन यह एक नाम चने उपजनेके खेतका है । गौधूमीन यह एक
 नाम गेहूं उपजनेके खेतका है । ऐसे अन्यभी जानने । “ शाकशाकट, शाक-
 शाकिन ये दो नाम शाक उपजनेके खेतके हैं । ” बीजाकृत यह एक नाम
 पहले बोया पीछे जोते ऐसे खेतका है । सीत्य, कृष्ट, हल्य ये तीन नाम
 जुते हुए खेतके हैं ॥८॥ त्रिगुणाकृत, तृतीयाकृत, त्रिहल्य, त्रिसीत्य ये चार
 नाम तीन बार जोते हुए खेतके हैं । द्विगुणाकृत, द्वितीयाकृत, द्विहल्य,
 द्विसीत्य, शम्बाकृत ये पांच नाम दो बार जुते हुए खेतके हैं ॥ ९ ॥ द्रोण
 आदि परिमित अन्नके बोये जाने आदिमें द्रौणाद्रिक होते हैं । जैसे-द्रौ-
 णिक यह एक नाम जिसमें द्रोणभर अन्न बोया जावे उस खेतका है ।
 आढकिक यह एक नाम आढकभर अन्न बोया जावे उस खेतका है ।
 प्रास्थिक यह एक नाम प्रस्थभर अन्न बोया जावे उस खेतका है । आदि
 शब्दसे द्रौणिक आदि परिमित अन्न जिस कढावमें पक सके उसकेभी हैं ।
 खारीक यह एक नाम खारीभर अन्न जिसमें बोया जाय उस खेतका है ।
 उत्तमर्णसे आदि ले खारीकशब्दपर्य्यंत (त्रि०) हैं ॥१०॥ वप्र, (पु-
 न०), केदार (पु०), क्षेत्र (न०) ये तीन नाम खेतके हैं । कैदारक-
 कैदार्य, क्षेत्र, कैदारिक ये चार (न०) नाम खेतके समूहके हैं ॥ ११ ॥
 लोष्ट (पु० न०), लेष्ट (पु०) ये दो नाम माटीके टुकड़ेके हैं । कोटिश-
 लोष्टभेदन ये दो (पु०) नाम माटीके डेले फोडनेकी मोगरीके हैं । प्रा-
 जन, तोदन, तोत्र ये तीन (न०) नाम चाबक तथा सांठेके हैं । खनित्र-
 अवदारण ये दो (न०) नाम कुदार या कसीके हैं ॥ १२ ॥

दात्रं लवित्रमाबन्धो योत्रं योक्त्रमथो फलम् ।
 निरीशं कुटकं फालः कृषको लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥
 गोदारणं च सीरोऽथ शम्या स्त्री युगकीलकः ।
 ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात्सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥
 पुंसि मेधिः खलेदारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने ।
 आशुर्व्रीहिः पाटलः स्याच्छितशूकयवौ समौ ॥ १५ ॥
 तोक्मस्तु तत्र हरिते कलायस्तु सतीनकः ।
 हरेणुरेणुकौ चास्मिन्कोरदूषस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥
 मङ्गल्यको मसूरोऽथ मकुष्ठकमयुष्ठकौ ।
 वनमुद्गे सर्षपे तु द्वौ तन्तुभकदम्बकौ ॥ १७ ॥
 सिद्धार्थस्त्वेष धवलो गोधूमः सुमनः समौ ।
 स्याद्यावकस्तु कुलमाषश्चणको हरिमन्यकः ॥ १८ ॥

त्र, लवित्र ये दो (न०) नाम दरांतीके हैं । आबन्ध (पु०), योत्र (न०), योक्त्र (न०) ये तीन नाम जोतेके रस्सीके हैं । फल, निरीश, कुटक, फाल (पु० न०), कृषक (पु०) ये पांच नाम जोतनेके हलकी कुशके समीप जो काठ है उसके हैं । लांगल, हल ॥ १३ ॥ गोदारण, सीर ये चार नाम हलके हैं । सीरशब्द (पु०) शेष (न०) हैं । शम्या (स्त्री०), युगकीलक (पु०) ये दो नाम कीलके हैं । ईषा (स्त्री०), लांगलदण्ड (पु०) ये दो नाम हरिशके हैं । सीता यह एक (स्त्री०) नाम हलकी रस्साका है ॥ १४ ॥ मेधि (पु०), खलेदारु (न०) ये दो नाम बैल आदि बांधनेके काष्ठखंडके हैं । आशु, व्रीहि, पाटल ये तीन (पु०) नाम व्रीहिके हैं । शितशूक, यव ये दो (पु०) नाम जवोंके हैं ॥ १५ ॥ तोक्म यह एक (पु०) नाम हरे जवका है । कलाय, सतीनक, हरेणु, रेणुका ये चार (पु०) नाम मटरके हैं । कोरदूष, कोद्रव ये दो (पु०) नाम कोद्रूके हैं ॥ १६ ॥ मंगल्यक, मसूर ये दो (पु०) नाम मसूरके हैं । मकुष्ठक, मयुष्ठक, वनमुद्ग ये तीन (पु०) नाम मोठके हैं । सर्षप, तन्तुभ, कदम्बक ये तीन (पु०) नाम सरसोंके हैं ॥ १७ ॥ सिद्धार्थ यह एक (पु०) नाम सुपेद सरसोंका है । गोधूम, सुमन ये दो (पु०) नाम गहूँके हैं । यावक, कुलमाष ये दो (पु०) नाम आधे पके हुए जव आदि

द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च निष्फले ।

क्षवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकाऽऽसुरी ॥ १९ ॥

स्त्रियौ कंगुप्रियंगू द्वे अतसी स्यादुमा क्षुमा ।

मातुलानी तु भङ्गायां व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २० ॥

किंशारुः सस्यशूकं स्यात्कणिशं सस्यमञ्जरी ।

धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः ॥ २१ ॥

नाडी नालं च काण्डोऽस्य पलालोऽस्त्री स निष्फलः ।

कडङ्गरो बुसं क्लीबे धान्यत्वचि तुषः पुमान् ॥ २२ ॥

शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे शमी शिम्बा त्रिषूत्तरे ।

ऋद्धमावसितं धान्यं पूतं तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥

वा कुलथीके हैं । चणक, हरिमंथक ये दो (पु०) नाम चनोंके हैं ॥ १८ ॥ तिलपेज, तिलपिंज ये दो (पु०) नाम फलरहित तिल अर्थात् रानतिलके हैं । क्षव (पु०), क्षुताभिजनन (पु०), राजिका (स्त्री०), कृष्णिका (स्त्री०), आसुरी (स्त्री०) ये पाँच नाम राईके हैं ॥ १९ ॥ कंगु, प्रियंगु ये दो (स्त्री०) नाम कांगनीके हैं । अतसी, उमा, क्षुमा ये तीन (स्त्री०) नाम अलसीके हैं । मातुलानी, भंगा ये दो (स्त्री०) नाम सनके हैं । अणु यह एक (पु०) नाम व्रीहिके भेदका है ॥ २० ॥ किंशारु यह एक (पु०) नाम किशारी अन्नका है । इसका अग्रभाग सुईके समान होता है । कणिश यह एक (पु० न०) नाम खेतीके नये शिर अथवा बालका है । धान्य (न०), व्रीहि (पु०), स्तम्बकरि (पु०) ये तीन नाम व्रीहि जव आदिके हैं । स्तम्ब यह एक (पु०) नाम तृण जव आदिके गुच्छेका है ॥ २१ ॥ नाडी (स्त्री०), नाल (न०) ये दो नाम इस गुच्छेके कांडके हैं । पलाल यह एक (पु० न०) नाम फलरहित कांडका है । कडंगर (पु०), बुस (न०) ये दो नाम भूसके हैं । तुष यह एक (पु०) नाम अन्नके छिलके (भूसी) का है ॥ २२ ॥ शूक यह एक (पु० न०) नाम महीन चिकना तीक्ष्ण और पैना ऐसे अग्रभागवाले जव आदिका है । शमी, शिम्बा ये दो (स्त्री०) नाम सेंगरीके हैं । आगे ऋद्धा आदि चारों शब्द वाच्यलिंगी हैं । ऋद्ध, आवसित ये दो नाम तृणसे अलग किये अन्नके हैं । पूत, बहुलीकृत ये दो नाम छाज आदिसे शुद्ध किये

माषादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः ।
 शालयः कलमाद्याश्च षष्टिकाद्याश्च पुंस्यमी ॥ २४ ॥
 तृणधान्यानि नीवाराः स्त्री गवेधुर्गवेधुका ।
 अयोत्रं मुसलोऽस्त्री स्यादुदूखलमुलूखलम् ॥ २५ ॥
 प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री चालनी तितउः पुमान् ।
 स्यूतप्रसेवौ कण्डोलपिटौ कटकिलिञ्जकौ ॥ २६ ॥
 समानौ रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे ।
 पौरोगवस्तदध्यक्षः सूपकारास्तु बलवाः ॥ २७ ॥
 आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः ।
 आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार इमे त्रिषु ॥ २८ ॥
 अश्मन्तमुद्धानमधिश्रयणी बुलिरन्तिका ।
 अङ्गारधानिकाऽङ्गारशकट्यपि हसन्त्यपि ॥ २९ ॥

अन्नके हैं । यहाँतक (त्रि०) हैं ॥ २३ ॥ उडद, मूंग आदि शमीधान्य
 कहाते हैं । जव गेहूं आदि शूकधान्य कहाते हैं । बडी नालवाला और
 बहुत पानीसे उपजा ऐसा ब्रीहिविशेष कलम कहलाता है । कलम आदि
 और साठ रात्रिमें पकनेवाले ये सब चावल शालि कहाते हैं । ये सब
 माष आदिशब्द (पु०) हैं ॥ २४ ॥ नीवार, श्यामाक आदि (पु०) नाम
 तृणधान्यके हैं । गवेधु, गवेधुका ये दो (स्त्री०) नाम मुनिजनोंके अन्नके
 हैं । अयोत्र (न०), मुसल (पु० न०) ये दो नाम मूसलके हैं । उदूखल,
 लूखल ये दो (न०) नाम ओखलीके हैं ॥ २५ ॥ प्रस्फोटन (न०), शूर्प
 (पु० न०) ये दो नाम छाजके हैं । चालनी (स्त्री०), तितउ (पु०) ये दो
 नाम चालनीके हैं । स्यूत, प्रसेव ये दो (पु०) नाम बोरेके हैं । कंडोल,
 पिट ये दो (पु०) नाम पिटरीके हैं । कट, किलिञ्जक ये दो (पु०) नाम
 छबडेके हैं ॥ २६ ॥ रसवती (स्त्री०), पाकस्थान (न०), महानस (पु०
 न०) ये तीन नाम पाकशालाके हैं । पौरोगव यह एक नाम पाकशालाके
 मालिकका है । सूपकार, बलव ॥ २७ ॥ आरालिक, आन्धसिक, सूद, औद-
 निक, गुण ये सात (पु०) नाम रसोइयेके हैं । आपूपिक, कान्दविक,
 भक्ष्यकार ये तीन नाम पकवान बनानेवालेके हैं । तहाँ पौरोगव आदि और
 भक्ष्यकारपर्यंत शब्द (त्रि०) हैं ॥ २८ ॥ अश्मन्त (न०), उद्धान (न०),

हसन्यप्यथ न स्त्री स्यादङ्गारोऽलातमुल्मुकम् ।
 क्लीवेऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ३० ॥
 अलञ्जरः स्यान्मणिकः कर्कर्यालुर्गलन्तिका ।
 पिठरः स्थाल्युखा कुण्डं कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥
 घटः कुटानिपावस्त्री शरावो वर्धमानकः ।
 ऋजीषं पिष्टपचनं कंसोऽस्त्री पानभाजनम् ॥ ३२ ॥
 कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं सैवालपा कुतुपः पुमान् ।
 सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाजनम् ॥ ३३ ॥
 दर्विः कम्बिः खजाका च स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः ।
 अस्त्री शाकं हरितकं शिशुरस्य तु नाडिका ॥ ३४ ॥

अधिश्रयणी (स्त्री०), चुल्लि (स्त्री०), अंतिका (स्त्री०) ये पांच नाम
 चूल्हेके हैं । अंगारधानिका, अंगारशकटी, हसंती ॥ २९ ॥ हसनी ये
 चार (स्त्री०) नाम अंगीठीके हैं । अंगार, अलात, उल्मुक ये तीन नाम
 अंगारेके हैं । तहां अंगार शब्द (पु० न०) शेष (न०) हैं । अंबरीष,
 भ्राष्ट्र ये दो नाम चने आदिके भूनेके पात्रके हैं । तहां अंबरीष शब्द
 (न०) और भ्राष्ट्रशब्द (पु०) है । कन्दु (पु० स्त्री०), स्वेदनी (स्त्री०) ये
 दो नाम मदिरा आदिके भट्टीके हैं ॥ ३० ॥ अलंजर, मणिक ये दो (पु०)
 नाम बड़े मटकेके हैं । कर्करी, आलु, गलंतिका ये तीन (स्त्री०) नाम
 झारीके हैं । पिठर (पु०), स्थाली (स्त्री०), उखा (स्त्री०), कुंड
 (न०) ये चार नाम टोकनीके हैं । कलश ॥ ३१ ॥ घट, कुट, निप ये
 चार नाम कलशके हैं । तहां कलशशब्द (त्रि०) है । घटशब्द (पु०
 स्त्री०) शेष (पु०) हैं । शराव (पु० न०), वर्धमानक (पु०) ये दो
 नाम सकोरेके हैं । ऋजीष, पिष्टपचन ये दो (न०) नाम तवा कढाईके
 हैं । कंस (पु० न०), पानभाजन (न०) ये दो नाम दूध आदि पीनेके
 पात्रके हैं ॥ ३२ ॥ कुतू यह एक (स्त्री०) नाम चामसे बने तेल आदिकी
 कुप्पीका है । कुतुप यह एक (पु०) नाम छोटी कुप्पीका है । ये सब
 पूर्वोक्त पात्र आवपन आदि संज्ञक हैं । आवपन, भांड, पात्र, अमत्र, भाजन
 ये पांच (न०) नाम वर्त्तनके हैं । पात्रशब्द (पु०) भी पाया जाता है
 ॥ ३३ ॥ दर्वि, कंबि, खजाका ये तीन (स्त्री०) नाम कडछीके हैं । तर्द

कलम्बश्च कडम्बश्च वेषवार उपस्करः ।

तिन्तिडीकं च चुक्रं च वृक्षाम्लमथ वेल्लजम् ॥ ३५ ॥

मरीचं कोलकं कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् ।

जीरको जरणोऽजाजी कणा कृष्णे तु जीरके ॥ ३६ ॥

सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका ।

आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्यादथ छत्रा वितुन्नकम् ॥ ३७ ॥

कुस्तुम्बरु च धान्याकमथ शुण्ठी महौषधम् ।

स्त्रीनपुंसकयोर्विश्वं नागरं विश्वभेषजम् ॥ ३८ ॥

आरनालकसौवीरकुलमाषाभिषुतानि च ।

अवन्तिसोमधान्याम्लकुञ्जलानि च काञ्जिके ॥ ३९ ॥

सहस्रवेधि जतुकं बाल्हीकं हिंशु रामठम् ।

तत्पत्री कारवी पृथ्वी बाष्पिका कवरी पृथुः ॥ ४० ॥

पु०), दारुहस्तक (पु०) ये दो नाम काठकी कडलीके हैं । शाक
पु० न०), हरितक (न०), शिशु (पु०) ये तीन नाम बथुआ आदि
शाकके हैं ॥ ३४ ॥ कलंब, कडंब ये दो (पु०) नाम शाककी नालके
हैं । वेषवार, उपस्कर ये दो (पु०) नाम मसालेके हैं । तिन्तिडीक (न०),
चुक्र (पु० न०), वृक्षाम्ल (न०) ये तीन नाम खटाईके हैं । वेल्लज
॥ ३५ ॥ मरीच, कोलक, कृष्ण, ऊषण, धर्मपत्तन ये छः (न०) नाम
मिरचके हैं । जीरक (पु०), जरण (पु०), अजाजी (स्त्री०), कणा
(स्त्री०) ये चार नाम जीरेके हैं ॥ ३६ ॥ सुषवी, कारवी, पृथ्वी, पृथु,
काला, उपकुञ्चिका ये छः (स्त्री०) नाम काले जीरेके हैं । आर्द्रक, शृङ्ग-
वेर ये दो (न०) नाम अदरखके हैं । छत्रा (स्त्री०), वितुन्नक (न०)
॥ ३७ ॥ कुस्तुम्बरु (न०), धान्याक (न०) ये चार नाम धनियेके हैं ।
शुण्ठी (स्त्री०), महौषध (न०), विश्व (स्त्री० न०), नागर (न०),
विश्वभेषज (न०) ये पांच नाम सोंठके हैं ॥ ३८ ॥ आरनालक, सौवीर,
कुलमाषाभिषुत, अवन्तिसोम, धान्याम्ल, कुंजल, कांजिक ये सात (न०)
नाम कांजीके हैं ॥ ३९ ॥ सहस्रवेधि, जतुक, बाल्हीक, हिंशु, रामठ ये
पांच (न०) नाम हींगके हैं । हिंशुशब्द (पु०) भी है । कारवी, पृथ्वी,
बाष्पिका, कवरी, पृथु ये पांच (स्त्री०) नाम हींगुपत्रिके हैं ॥ ४० ॥

निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी ।

सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वशिरं च तत् ॥ ४१ ॥

सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणिमन्थं च सिन्धुजे ।

रौमकं वसुकं पाक्यं बिडं च कृतके द्वयम् ॥ ४२ ॥

सौवर्चलेऽक्षरुचके तिलकं तत्र मेचके ।

मत्स्यं डी फाणितं खण्डक्कारः शर्करा सिता ॥ ४३ ॥

कूर्चिका क्षीरविकृतिः स्याद्रसाला तु मार्जिता ।

स्यात्तेमनं तु निष्ठानं त्रिलिङ्गा वासितावधेः ॥ ४४ ॥

शूलाकृतं भटित्रं स्याच्छूल्यमुख्यं तु पैठरम् ।

प्रणीतमुपसंपन्नं प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥

निशा, काञ्चनी, पीता, हरिद्रा, वरवर्णिनी ये पांच (स्त्री०) नाम हलदीके हैं । अक्षीव, वशिर ये दो (न०) नाम सामुद्रनमकके हैं ॥ ४१ ॥ सैन्धव, शीतशिव, माणिमन्थ, सिन्धुज ये चार नाम सैन्धे नमकके हैं । तहां सैन्धव-शब्द (पु० न०) शेष (न०) हैं । रौमक, वसुक ये दो (न०) नाम सांभर नमकके हैं । पाक्य, बिड ये दो (न०) नाम खारी नमकके हैं ॥ ४२ ॥ सौवर्चल, अक्ष, रुचक ये तीन (न०) नाम मधुर नमकके हैं । तिलक यह एक (न०) नाम काले नमकका है । मत्स्यण्डी (स्त्री०), फाणित (न०) ये दो नाम राबके हैं । शर्करा, सिता ये दो (स्त्री०) नाम खांड और मिश्रीके हैं ॥ ४३ ॥ कूर्चिका यह एक (स्त्री०) नाम दही आदिसे बनी दूधकी विकृतिका है । रसाला, मार्जिता ये दो (स्त्री०) नाम दही, शहद, खांड, मिरच और अदरख आदिसे बनाये शिखरनका है । तेमन, निष्ठान ये दो (न०) नाम दही आदि व्यञ्जन (कढीविशेष)-के हैं । इससे आगे वासितपर्यंत सब शब्द (त्रि०) हैं ॥ ४४ ॥ शूला-कृत, भटित्र, शूल्य ये तीन नाम शूलकरके पकाये हुए मांस आदिके हैं । उख्य, पैठर ये दो नाम टोकनीमें पकाये अन्न आदिके हैं । प्रणीत, उपस-म्पन्न ये दो नाम रस आदिसे सम्पन्न किये व्यञ्जन आदिके हैं । प्रयस्त, सुसंस्कृत ये दो नाम जतन करके घृतमें पकाये पकवानके हैं ॥ ४५ ॥

१ रातके सब नाम हलदीके वाचक होते हैं ।

स्यात्पिच्छलं तु विजिलं संमृष्टं शोधितं समै ।
 चिकणं मसृणं स्निग्धं तुल्ये भावितवासिते ॥ ४६ ॥
 आपक्कं पौलिरभ्यूषो लाजाः पुंभूम्नि चाक्षताः ।
 पृथुकः स्याच्चिपिटको धाना भ्रष्टयवे स्त्रियः ॥ ४७ ॥
 पूपोऽपूपः पिष्टकः स्यात्करम्भो दधिसक्तवः ।
 भिःसा स्त्री भक्तमन्धोऽन्नमोदनोऽस्त्री स दीदिविः ॥ ४८ ॥
 भिस्सटा दग्धिका सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम् ।
 मासराचामनिस्त्रावा मण्डे भक्तसमुद्भवे ॥ ४९ ॥
 यवागुरुष्णिका श्राणा विलेपी तरला च सा ।
 “ व्रक्षणाभ्यञ्जने तैलं कृसरस्तु तिलौदनः । ”
 गव्यं त्रिषु गवां सर्वं गोविड् गोमयमस्त्रियाम् ॥ ५० ॥

पिच्छल, विजिल ये दो नाम मण्डसे युत हुई दही आदि अर्थात् मट्ठाके हैं । संमृष्ट, शोधित ये दो नाम विने हुए अन्न आदिके हैं । चिकण, मसृण, स्निग्ध ये तीन नाम चिकनेके हैं । भावित, वासित ये दो नाम जोरे आदिसे अधिवासित (छोंके हुए) के हैं । यहाँतक (त्रि०) हैं ॥ ४६ ॥ आपक्क (न०), पौलि (पु०), अभ्यूष (पु०) ये तीन नाम पूरी आदिके हैं । लाज यह एक नाम धानकी खीलका है । अक्षत यह एक नाम गीले जव चावल इन दोनोंका है । ये दोनों शब्द बहुवचन (पु०) हैं । पृथुक, चिपिटक ये दो (पु०) नाम चावल्लोंके मुरमु-रोके हैं । धाना यह एक नाम जवोंकी धानीका है और बहुवचनान्त तथा (स्त्री०) है ॥ ४७ ॥ पूप, अपूप, पिष्टक ये तीन (पु०) नाम मालपु-वेके हैं । करम्भ यह एक (पु०) नाम दहीसे युत हुए सतुओंका है । भिस्सा (स्त्री०), भक्त (न०), अन्धस् (न०), अन्न (न०), ओदन (पु० न०), दीदिवि (पु०) ये छः नाम अन्नके हैं ॥ ४८ ॥ भिःसटा, दग्धिका ये दो (स्त्री०) नाम जले हुए अन्नके हैं । मण्ड यह एक (पु० न०) नाम सब द्रव्योंके द्रव अर्थात् शोलका है । मासर, आचाम, निस्त्राव ये तीन (पु०) नाम चावल आदिके मांडके हैं ॥ ४९ ॥ यवागू, उष्णिका, श्राणा, विलेपी, तरला ये पांच (स्त्री०) नाम गुडयानी और पतला भात (लपसी आदि) के हैं । “ व्रक्षणा, अभ्यञ्जन ये दो (न०) नाम तेलके

तत्तु शुष्कं करीषोऽस्त्री दुग्धं क्षीरं पयः समम् ।
 पयस्यमाज्यदध्यादि द्रप्सं दधि घनेतरत् ॥ ५१ ॥
 घृतमाज्यं हविः सर्पिर्नवनीतं नवोद्धृतम् ।
 तत्तु हैयंगवीनं यद्धचोगोदोहोद्धवं घृतम् ॥ ५२ ॥
 दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि गोरसः ।
 तक्रं हुदश्विन्मथितं पादारूव्वर्धाम्बु निर्जलम् ॥ ५३ ॥
 मण्डं दधिभवं मस्तु पीयूषोऽभिनवं पयः ।
 अशनाया बुभुक्षा क्षुद् ग्रासस्तु कवलः पुमान् ॥ ५४ ॥
 सपीतिः स्त्री तुल्यपानं सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।
 उदन्या तु पिपासा तृट् तर्षो जग्धिस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥

हैं । कृसर यह एक (पु०) नाम तिलोंसहित चावलोंका है । ॥ गव्य
 यह एक (त्रि०) नाम गौके दूध आदिका है । गोविश्र (शान्त), गो-
 मय ये दो (पु० न०) नाम गोबरके हैं ॥ ५० ॥ करीष यह एक (पु०
 न०) नाम अरने उपलेका है । दुग्ध, क्षीर, पयस् (सान्त) ये तीन (न०)
 नाम दूधके हैं । पयस्य यह एक (न०) नाम दूधके विकार दही आदिका
 है । द्रप्स यह एक (न०) नाम पतले दहीका है ॥ ५१ ॥ घृत, आज्य,
 हविस् (सान्त), सर्पिस् (सान्त) ये चार (न०) नाम घृतके हैं । नव-
 नीत, नवोद्धृत ये दो (न०) नाम नौनी (मक्खन) के हैं । हैयंगवीन
 यह एक (न०) नाम पहले दिनके दूधसे निकासे हुए नौनी घृतका है
 ॥ ५२ ॥ दण्डाहत, कालशेय, अरिष्ट, गोरस ये चार नाम रवाईसे विलोये
 गये गोरसके हैं । तहां गोरस (पु०) और शेष (न०) हैं । तक्र यह
 एक (न०) नाम चौथाई भाग पानी मिलाकर रवाईसे मथित किये मठेका
 है । उदश्वित यह एक (न०) नाम आधा पानी मिलाकर रवाईसे विलोये
 गयेका है । मथित यह एक (न०) नाम पानी नहीं मिलाया जावे और
 रवाईसे मथित किये जानेवालेका है ॥ ५३ ॥ मस्तु यह एक (न०) नाम
 दहीके पानीका है । पीयूष यह एक (पु०) नाम नवीन व्याई हुई गौके
 सात दिन भीतरके दूधका है । अशनाया, बुभुक्षा, क्षुद् ये तीन (स्त्री०)
 नाम भूखके हैं । ग्रास, कवल ये दो (पु०) नाम ग्रासके हैं ॥ ५४ ॥
 सपीति (स्त्री०), तुल्यपान (न०) ये दो नाम सहपानके हैं । सग्धि (स्त्री०),

जेमनं लेह आहारो निघासो न्याद इत्यपि ।
 सौहित्यं तर्पणं तृप्तिः फेला भुक्तसमुज्झितम् ॥ ५६ ॥
 कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् ।
 गोपे गोपालगोसंख्यगोधुगाभीरबल्लवाः ॥ ५७ ॥
 गोमहिष्यादिकं पादबन्धनं द्वौ गवीश्वरे ।
 गोमान्गोमी गोकुलं तु गोधनं स्याद्गवां व्रजे ॥ ५८ ॥
 त्रिष्वाशितंगवीनं तद्गवो यत्राशिताः पुरा ।
 उक्षा भद्रो बलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः ॥ ५९ ॥
 अनङ्गान्सौरभेयो गौरुक्षणां संहतिरौक्षकम् ।
 गव्या गोत्रा गवां वत्सधेन्वोर्वात्सकधैनुके ॥ ६० ॥

सहभोजन (न०) ये दो नाम सहभोजनके हैं । उदन्या, पिपासा, तृषु (पान्त), तर्ष ये चार नाम तृषाके हैं । तहां तर्षशब्द (पु०) और शेष (स्त्री०) हैं । जग्धि (स्त्री०), भोजन (न०) ॥ ५५ ॥ जेमन (न०), लेह (पु०), आहार (पु०), निघास (पु०), न्याद (पु०) ये सात नाम भोजनके हैं । सौहित्य (न०), तर्पण (न०), तृप्ति (स्त्री०) ये तीन नाम तृप्तिके हैं । फेला यह एक (स्त्री०) नाम पहले खाके पीछे छोडेका है ॥ ५६ ॥ काम, प्रकाम, पर्याप्त, निकाम, इष्ट, यथेप्सित ये छः नाम यथेप्सित (चाह) के हैं और सब क्रियाविशेषण हैं और क्रियाविशेषण सर्वदा (न०) द्वितीयाके एकवचनमें रहता है । गोप, गोपाल, गोसंख्य, गोधुह, आभीर, बल्लव ये छः (पु०) नाम गोपालके हैं ॥ ५७ ॥ पादबंधन यह एक (न०) नाम गौ भैंसे आदिका है । गोमत् (मत्वन्त), गोमिन् (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम गायोंके मालिकके हैं । गोकुल, गोधन ये दो (न०) नाम गायोंके समूहके हैं ॥ ५८ ॥ आशितंगवीन यह एक नाम जहां गौ पहले चरती हों उस स्थानका है यह शब्द (त्रि०) है । उक्षन्, भद्र, बलीवर्द, ऋषभ, वृषभ, वृष ॥ ५९ ॥ अनङ्गुह (हान्त), सौरभेय, गो ये नव (पु०) नाम बैलके हैं । तहां उक्षन्शब्द नकारान्त (पु०) है । औक्षक यह एक नाम बैलोंके समूहका है । गव्या, गोत्रा ये दो (स्त्री०) नाम गायोंके समूहके हैं । वात्सक यह एक (न०) नाम बछड़ेके समूहका है । धैनुक यह एक (न०) नाम धेनुओंके समूहका है ॥ ६० ॥

वृषो महान्महोक्षः स्याद्वृद्धोक्षस्तु जरद्ववः ।
 उत्पन्न उक्षा जातोक्षः सद्यो जातस्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥
 शकृत्कारिस्तु वत्सः स्याद्वत्स्यवत्सतरौ समौ ।
 आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः षण्डो गोपतिरिट्चरः ॥ ६२ ॥
 स्कन्धदेशे त्वस्य वहः सास्त्रा तु गलकम्बलः ।
 स्यान्नस्ति तस्तु नस्योतः प्रष्ठवाङ् युगपार्श्वगः ॥ ६३ ॥
 युगादीनां तु वोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः ।
 खनति तेन तद्वोढाऽभ्येदं हालिकसैरिकौ ॥ ६४ ॥
 धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरंधराः ।
 उभाविकधुरीणैकधुरावेकधुरावहे ॥ ६५ ॥
 स तु सर्वधुरीणः स्याद्यो वै सर्वधुरावहः ।
 माहेयी सौरभेयी गौरुस्त्रा माता च शृङ्गिणी ॥ ६६ ॥

महोक्ष यह एक (पु०) नाम बड़े बैलका है । वृद्धोक्ष, जरद्वव ये दो (पु०) नाम बूढ़े बैलके हैं । जातोक्ष यह एक (पु०) नाम बैलभावको प्राप्त हुआ बछड़ेका है । तर्णक यह एक (पु०) नाम तत्काल उपजे बछड़ेका है ॥ ६१ ॥
 शकृत्कारि, वत्स ये दो (पु०) नाम बछड़ेके हैं । दम्भ्य, वत्सतर ये दो (पु०) नाम जवान बछड़ेके हैं । आर्षभ्य यह एक (पु०) नाम गोपतिपनैके योग्य बैलका है । षण्ड, गोपति, इट्चर ये तीन (पु०) नाम सांडके हैं ॥ ६२ ॥
 वह यह एक (पु०) नाम बैलके कंधेका है । सास्त्रा (स्त्री०), गलकम्बल (पु०) ये दो नाम गौके कंधमें लंबी चामके हैं । नस्ति, नस्योत ये दो (पु०) नाम नये हुए बैलके हैं । प्रष्ठवाङ्, युगपार्श्वग ये दो (पु०) नाम बैलको ढीला करनेके लिये कंधपर बंधे हुए काठवाले बैलके हैं ॥ ६३ ॥
 युग्य यह एक (पु०) नाम जोड़ीमें जानेवाले बैलका है । प्रासङ्ग्य यह एक (पु०) नाम जुएके ले जानेवाले बैलका है । शाकट यह एक (पु०) नाम गाड़ीको ले जानेवाले बैलका है । हालिक, सैरिक ये दो (पु०) नाम हलसे खोदनेवाले बैलके हैं ॥ ६४ ॥ धूर्वह, धुर्य, धौरेय, धुरीण, धुरंधर पाँच (पु०) नाम धुरमें वहनेवाले (जोत) बैलके हैं । एकधुरीण, एकधुरावह ये दो (पु०) नाम एक धुरको ले जानेवाले बैलके हैं ॥ ६५ ॥
 सर्वधुरीण यह एक (पु०) नाम सब धुरोंको ले जानेवाले बैलका है ॥

अर्जुन्यघ्न्या रोहिणी स्यादुत्तमा गोषु नैचिकी ।
 वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः शबलीधवलादयः ॥ ६७ ॥
 द्विहायनी द्विवर्षा गैरेकाब्दा त्वेकहायनी ।
 चतुरब्दा चतुर्हायण्येवं त्र्यब्दा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥
 वशा वन्ध्याऽवतोका तु स्रवद्गर्भाऽथ संधिनी ।
 आक्रान्ता वृषभेणाय वेहद्गर्भोपघातिनी ॥ ६९ ॥
 काल्योपसर्षा प्रजने प्रष्टौही बालगर्भिणी ।
 स्यादचण्डी तु सुकरा बहुसूतिः परेष्टुका ॥ ७० ॥
 चिरप्रसूता बष्कयणी धेनुः स्यान्नवसूतिका ।
 सुव्रता सुखसंदोह्या पीनोद्गी पीवरस्तनी ॥ ७१ ॥

आगेके शब्द समासमीनातक (स्त्री०) हैं । माहेयी, सौरभेयी, गो, उन्ना, मातृ, शृङ्गिणी ॥ ६६ ॥ अर्जुनी, अघ्न्या, रोहिणी ये नव नाम गौके हैं । नैचिकी यह एक नाम उत्तम गौका है । वर्णके अवयव आदि भेदसे शबली धवला आदि संज्ञा हैं । चित्रवर्णवाली शबली होती है । सुपेदवर्णवाली धवला होती है । ऐसे लम्बकणी आदिभी जाननी ॥ ६७ ॥ द्विहायनी यह एक नाम दो वर्षकी ऊमरवाली बल्लियाका है । एकहायनी यह एक नाम एक वर्षकी ऊमरवाली बल्लियाका है । चतुर्हायणी यह एक नाम चार वर्षकी ऊमरवाली गौका है । त्रिहायणी यह एक नाम तीन वर्षकी ऊमरवाली गौका है ॥ ६८ ॥ वशा, वन्ध्या ये दो नाम वांझके हैं । अवतोका, स्रवद्गर्भा ये दो नाम अकस्मात् पतित हुए गर्भवालीके हैं । संधिनी यह एक नाम बैलके संग मैथुनके अर्थ जानेवाली गौका है । वेहत् यह एक नाम बैलके संग मैथुन करनेसे गर्भको नाशनेवाली गौका है ॥ ६९ ॥ काल्या, उपसर्षा ये दो नाम गर्भको ग्रहण करनेमें प्राप्त समयवाली गौका है । प्रष्टौही यह एक नाम बालाही गर्भवाली हो जाय उस गौका है । अचण्डी, सुकरा ये दो नाम सीधी गौके हैं । बहुसूति, परेष्टुका ये दो नाम बहुतवार व्याई हुई गौके हैं ॥ ७० ॥ चिरप्रसूता, बष्कयणी ये दो नाम बहुतकालसे व्यानेवाली गौके हैं । धेनु, नवसूतिका ये दो नाम नवीन व्याई हुई गौके हैं । सुव्रता, सुखसंदोह्या ये दो नाम सुन्दरशील स्वभाववाली गौके हैं । पीनोद्गी, पीवरस्तनी ये दो नाम मोटे धनोंवाली गौके हैं ॥ ७१ ॥

द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा धेनुष्या बन्धके स्थिता ।
 समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ७२ ॥
 ऊधस्तु ह्रीवमापीनं समौ शिवककीलकौ ।
 न पुंसि दाम सन्दानं पशुरज्जुस्तु दामनी ॥ ७३ ॥
 वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके ।
 कुठरो दण्डविष्कम्भो मन्थनी गर्गरी समे ॥ ७४ ॥
 उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः करभः शिशुः ।
 करभाः स्युः गृङ्गलका दारवैः पादबन्धनैः ॥ ७५ ॥
 अजा छागी शुभच्छागबस्तच्छगलका अजे ।
 मेद्दोरभ्रोरणोर्णायुमेषवृष्णय एडके ॥ ७६ ॥
 उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम् ।
 चक्रीवन्तस्तु बालेया रासभा गर्दभाः खराः ॥ ७७ ॥

द्रोणक्षीरा, द्रोणदुग्धा ये दो नाम द्रोण अर्थात् एक हजार चौबीस तोले दूध देनेवाली गौके हैं । धेनुष्या यह एक नाम गिरवां रखी हुई गौका है । समांसमीना यह एक नाम प्रतिवर्ष व्यानेवाली गौका है । यहाँ तक (स्त्री०) हैं ॥ ७२ ॥ ऊधस् (सान्त), आपीन ये दो (न०) नाम गौके थने हैं । शिवक, कीलक ये दो (पु०) नाम खूँटेके हैं । दामन् (नान्त स्त्री० न०), सन्दान (न०) ये दो नाम बांधनेकी रज्जूके हैं । दामनी यह एक (स्त्री०) नाम जिससे बैल आदि पशु बंधे उस रज्जूका है ॥ ७३ ॥ वैशाख मन्थ, मन्थान, माथिन् (नान्त), मन्थदण्डक ये पांच (पु०) नाम मन्थनदण्डा अर्थात् रईके हैं । कुठर, दण्डविष्कम्भ ये दो (पु०) नाम जिसमें रई बांधी जावे उस खंभेके हैं । मन्थनी, गर्गरी ये दो (स्त्री०) नाम दही मथनेके पात्रके हैं ॥ ७४ ॥ उष्ट्र, क्रमेलक, मय, महाङ्ग ये चार (पु०) नाम उंटके हैं । करभ यह एक (पु०) नाम उंटके बच्चेका है । गृङ्गलक यह एक (पु०) नाम काठसे बंधे हुए उंटके बच्चेका है ॥ ७५ ॥ अजा छागी ये दो (स्त्री०) नाम बकरीके हैं । शुभ, छाग, बस्त, छागलक अज ये पांच (पु०) नाम बकरेके हैं । मेद्द, उरभ्र, उरण, उर्णायु, मेव वृष्णि, ऐडक ये सात (पु०) नाम भेडके हैं । अवि यह भी नाम भेडका है ॥ ७६ ॥ औष्ट्रक यह एक (न०) नाम उंटोंके समूहका है । औरभ्र

वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।
 पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च सः ॥ ७८ ॥
 विक्रेता स्याद्विक्रयिकः क्रायिकक्रयिकौ समौ ।
 वाणिज्यं तु वणिज्या स्यान्मूल्यं वस्त्रोऽप्यवक्रयः ॥ ७९ ॥
 नीवी परिपणो मूलधनं लाभोऽधिकं फलम् ।
 परिदानं परीवर्तो नैमेयनिमयावपि ॥ ८० ॥
 पुमानुपनिधिर्न्यासः प्रतिदानं तदर्पणम् ।
 क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रयं क्रेतव्यमात्रके ॥ ८१ ॥
 विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं क्रय्यादयस्त्रिषु ।
 क्लीबे सत्यापनं सत्यंकारः सत्याकृतिः स्त्रियाम् ॥ ८२ ॥

यह एक (न०) नाम भेड़ोंके समूहका है । आजक यह एक (न०) नाम बकरियोंके समूहका है । चक्रीवत्, बालेय, रासभ, गर्दभ, खर ये च (पु०) नाम गधेके हैं ॥ ७७ ॥ वैदेहक, सार्थवाह, नैगम, वाणिज, वणिज् (जान्त), पण्याजीव, आपणिक, क्रयविक्रयिक ये आठ (पु०) नाम क्रयविक्रय करनेवाले साहूकारके हैं ॥ ७८ ॥ विक्रेतु (ऋका-रान्त), विक्रयिक ये दो (पु०) नाम बेचनेवालेके हैं । क्रायिक, क्रयिक ये दो (पु०) नाम खरीदनेवालेके हैं । वाणिज्य (न०), वणिज्या (स्त्री०) ये दो नाम व्यवहारके हैं । मूल्य (न०), वस्त्र (पु०), अव-क्रय (पु०) ये तीन नाम मोलके हैं ॥ ७९ ॥ नीवी (स्त्री०), परिपण (पु० न०), मूलधन (न०) ये तीन नाम क्रयविक्रय आदि व्यवहारमें मूलधनके हैं । लाभ यह एक (पु०) नाम नफेका है । परिदान (न०), परीवर्त्त (पु०), नैमेय (पु०), निमय (पु०) ये चार नाम परिवर्त्तन अर्थात् लेनदेनके हैं ॥ ८० ॥ उपनिधि, न्यास ये दो (पु०) नाम धरो-हरके हैं । प्रतिदान यह एक (न०) नाम धरोहर फेर देनेका है । क्रय्य यह एक नाम दुकानमें फैलाये हुए द्रव्यका है । क्रय यह एक नाम क्रेतव्यमात्र (खरीदनेके योग्य) का है ॥ ८१ ॥ विक्रेय, पणितव्य, पण्य ये तीन (त्रि०) नाम बेचनेके योग्य वस्तुके हैं । सत्यापन (न०), सत्यंकार (पु०), सत्याकृति (स्त्री०) ये तीन नाम निश्चय अर्थात् खरीदना है इस प्रकार सत्य करने अर्थात् बयाना देनेके हैं ॥ ८२ ॥

१२ अमर.

विपणो विक्रयः संख्याः संख्येये ह्यादश त्रिषु ।
 विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः ॥ ८३ ॥
 संख्यार्थे द्विवहुत्वे स्तस्तासु चानवतेः स्त्रियः ।
 पंक्तेः शतसहस्रादि क्रमादशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥
 यौतवं द्रुवयं पाय्यामिति मानार्थकं त्रयम् ।
 मानं तुलांगुलिप्रस्थैर्गुञ्जाः पश्चाद्यमाषकः ॥ ८५ ॥
 ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री पलं कर्षचतुष्टयम् ।
 सुवर्णविस्तौ हेम्नोऽक्षे कुरुबिस्तस्तु तत्पले ॥ ८६ ॥
 तुला स्त्रियां पलशतं भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः ।
 आचितो दश भाराः स्युः शाकटो भार आचितः ॥ ८७ ॥

विपण, विक्रय ये दो (पु०) नाम विकनेके हैं । एक शब्दसे लेके अष्टादश
 शब्दपर्यंत संख्याशब्द संख्येयमें वर्तमान हुए (त्रि०) हैं । जैसे—‘ एक
 शाटी, एकः पटः, एकं वस्त्रम्, दश स्त्रियः, दश पुरुषाः, दश कुलानि
 ऐसे जानना । विंशतिसे आरंभ कर परार्द्धपर्यन्त सब संख्या सब काल
 संख्येय और संख्यामें एकवचनांत होती है । जैसे—‘ एकोनविंशतिः पयः
 ॥ ८३ ॥ संख्यार्थमें वर्तमान विंशति आदि संख्याका द्विवचन बहुवचन
 होता है । जैसे—‘ द्वे विंशती ’ यह पद है । विंशतिशब्दसे लेके नवविंश
 शब्दपर्यंत संख्यावाचकशब्द (स्त्री०) हैं । पंक्ति अर्थात् दश संख्यासे
 लेकर दशगुनी संख्याके क्रमसे शत सहस्र आदि होते हैं । जैसे—एक, दश
 शतः सहस्र, अयुत, लक्ष, प्रयुत, कोटि, अर्बुद, अब्ज, खर्व, निख
 महापद्म, शंकु, जलधि, अन्त्य, मध्य, परार्द्ध ऐसे दशगुणोत्तर संज्ञा
 ॥ ८४ ॥ यौतव, द्रुवय, पाय्य ये तीन (न०) शब्द परिमाणवाचक हैं
 तुलामान, अंगुलिमान, प्रस्थमान इन्होंकरके उसकी नाप तोल होती है
 पांच चिरमितियोंका आद्यमाषक होता है । यह (पु०) है ॥ ८५ ॥ सोल
 माषककी अक्ष (पु०) और कर्ष होता है । तहां कर्षशब्द (पु० न०)
 है । चार कर्षोंका पल होता है । यह शब्द (न०) है । सुवर्ण, विस्त ये दो
 (पु० न०) नाम अस्सी रत्तीभर सोनेके हैं । सोनेका दो पल कुरुबिस्त
 कहाता है । यह शब्द (पु०) है ॥ ८६ ॥ तुलाशब्द (स्त्री०) है । सो
 पल की तुला होती है । भार यह एक (पु०) नाम बीस तुलाओंके भार

कार्षापणः कार्षिकः स्यात्कार्षिके ताम्रिके पणः ।

अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारी वाहो निकुञ्चकः ॥ ८८ ॥

कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक् ।

पादस्तुरीयो भागः स्यादंशभागौ तु वण्टके ॥ ८९ ॥

द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु ।

हिरण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थरैविभवा अपि ॥ ९० ॥

स्यात्कोशश्च हिरण्यं च हेमरूप्ये कृताकृते ।

ताभ्यां यदन्यत्तत्कुप्यं रूप्यं तद्वयमाहतम् ॥ ९१ ॥

गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः ।

शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागोऽथ मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥

८८ । आचित यह एक (पु० न०) नाम दश भारोंका है । गाडेसे चल करनेवाला भी भार आचित कहाता है ॥ ८७ ॥ कार्षापण, कार्षिक ये दो (पु०) नाम रुपयेके हैं । पण यह एक (पु०) नाम तांबेके कर्षप्रमाण सेका है । आढक (पु० न०), द्रोण (पु० न०), खारी (स्त्री०), वाह (पु०), निकुञ्चक (पु०) ॥ ८८ ॥ कुडव (पु०), प्रस्थ (पु०) आदि अलग-अलग परिमाणके वाचक हैं । तहाँ चार पलोंका कुडव, चार कुडवोंका प्रस्थ, चार प्रस्थोंका आढक, चार आढकोंका द्रोण, दो द्रोणोंका शूर्प, षेठ शूर्पकी खारी और दो शूर्पोंकी द्रोणी इसीको भार कहते हैं । और चार भारका वाह इस प्रकार ताल है । पाद यह एक (पु०) नाम रूप्ये आदिके चाथाई भागका है । अंश, भाग, वण्टक ये तीन (पु०) नाम भागमात्रके हैं ॥ ८९ ॥ द्रव्य, वित्त, स्वापतेय, रिक्थ, ऋक्थ, धन, वसु, हिरण्य, द्रविण, द्युम्न यहाँतक (न०) हैं, अर्थ (पु०), रै (पु०), विभव (पु०) ये तरह नाम धनके हैं ॥ ९० ॥ कोश (पु०), हिरण्य (न०) ये दो नाम घडे और अनघडे हुए सोने चाँदीके हैं । कुप्य यह एक (न०) नाम घडे तथा अनघडे हुए ताँब आदिका है । रूप्य यह एक (न०) नाम चाँदी मिलाके बने हुँका है ॥ ९१ ॥ गारुत्मत (न०), मरकत (न०), अश्मगर्भ (पु०), हरिन्मणि (पु०) ये चार नाम पत्थेके हैं । शोणरत्न (न०), लोहितक (पु०), पद्मराग (पु०) ये तीन नाम माणि-

मुक्ताऽथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुंनपुंसकम् ।
 रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च ॥ ९३ ॥
 स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।
 तपनीयं शातकुम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम् ॥ ९४ ॥
 चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने ।
 रुक्मं कार्त्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् ॥ ९५ ॥
 अलंकारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनकमित्यदः ।
 दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि ॥ ९६ ॥
 रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रियामथ ताम्रकम् ।
 शुल्बं म्लेच्छमुखं द्व्यष्टवरिष्ठोदुम्बराणि च ॥ ९७ ॥
 लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ।
 अश्मसारोऽथ मण्डूरं सिंहाणमपि तन्मले ॥ ९८ ॥
 सर्वं च तैजसं लोहं विकारस्त्वयसः कुशी ।
 क्षारः काचोऽथ चपलो रसः सूतश्च पारदे ॥ ९९ ॥

कके हैं । मौक्तिक (न०) ॥ ९२ ॥ मुक्ता (स्त्री०) ये दो नाम मोती के हैं । विद्रुम (पु०), प्रवाल (पु० न०) ये दो नाम मूंगेके हैं । रत्न (न०) मणि (पु० स्त्री०) ये दो नाम मरकत आदि मणिके हैं । और येही दो नाम मोती और मूंगेके हैं ॥ ९३ ॥ स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम (नान्त), हाटक, तपनीय, शातकुम्भ, गाङ्गेय, भर्मन् (नान्त), कर्बुरम् ॥ ९४ ॥ चामीकर, जातरूप, महारजत, काञ्चन, रुक्म, कार्त्तस्वर, जाम्बूनद, अष्टापद ये उन्नीस नाम सोनेके हैं । तहां अष्टापदशब्द (पु० न०) शेष (न०) हैं ॥ ९५ ॥ शृङ्गीकनक यह एक (पु० न०) नाम सोने गहनेका है । दुर्वर्ण, रजत, रूप्य, खर्जूर, श्वेत ये पांच (न०) नाम चांदीके हैं ॥ ९६ ॥ रीति (स्त्री०), आरकूट (पु० न०) ये दो नाम पित्तलके हैं । ताम्रक, शुल्ब, म्लेच्छमुख, द्व्यष्ट, वरिष्ठ, उदुम्बर ये छः (न०) नाम ताँबेके हैं ॥ ९७ ॥ लोह, शस्त्रक, तीक्ष्ण, पिण्ड, कालायस, अयस, अश्मसार ये सात नाम लोहेके हैं । लोहशब्द (पु० न०), अश्मसार (पु०), शेष (न०) हैं । मण्डूर (पु० न०), सिंहाण (न०) ये दो नाम लोहके मैलके हैं ॥ ९८ ॥ लोह यह एक (न०) नाम सोने चांदी

गवलं माहिषं शृङ्गमभ्रकं गिरिजामले ।
 स्रोतोञ्जनं तु सौवीरं कापोताञ्जनयामुने ॥ १०० ॥
 तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ।
 कर्परी दार्विकाकायोद्भवं तुत्थं रसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥
 रसगर्भं ताक्ष्यशैलं गन्धाश्मनि तु गन्धिकः ।
 सौगन्धिकश्च चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुलत्थिका ॥ १०२ ॥
 रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पुष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।
 पिञ्जरं पीतनं तालमालं च हरितालके ॥ १०३ ॥
 गैरेयमथ्यं गिरिजमश्मजं च शिलाजतु ।
 बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः समाः ॥ १०४ ॥
 डिण्डीरोऽब्धिकफः फेनः सिन्दूरं नागसंभवम् ।
 नागसीसकयोगेष्टवप्राणि त्रपु पिच्छटम् ॥ १०५ ॥

मादिका है । कुशी यह एक (स्त्री०) नाम लेहेके विकारका है । क्षार,
 ताच ये दो (पु०) नाम कांचके हैं । चपल (पु०), रस (पु०), सूत
 (पु० न०), पारद (पु० न०) ये चार नाम पारेके हैं ॥ ९९ ॥
 गवल यह एक (न०) नाम भैंसेके सींगका है । अभ्रक, गिरिजामल ये दो
 (न०) नाम मोडलेके हैं । स्रोतोञ्जन, सौवीर, कापोताञ्जन, यामुन ये चार
 (न०) नाम सुभेके हैं ॥ १०० ॥ तुत्थाञ्जन, शिखिग्रीव, वितुन्नक, मयू-
 रक, कर्परी (स्त्री०) ये पांच (न०) नाम नीले थोथेके हैं । दारुहलदीके
 काथमें समान भाग बकरीका दूध मिलाकर संस्कार करनेसे तुत्थाञ्जन रसां-
 जन (दोनों न०) आदिक होता है ॥ १०१ ॥ रसगर्भ, ताक्ष्यशैल ये भी
 दो (न०) नाम रसाञ्जनके हैं । गन्धाश्मन् (नान्त), गन्धिक, सौगन्धिक
 ये तीन (पु०) नाम गंधकके हैं । चक्षुष्या, कुलाली, कुलत्थिका ये तीन
 (स्त्री०) नाम नीले सुभेके हैं ॥ १०२ ॥ रीतिपुष्प, पुष्पकेतु, पुष्पक, कुसु-
 माञ्जन ये चार (न०) नाम जस्तके फूलके हैं । पिंजर, पीतन, ताल, आल,
 हरिताल ये पांच (न०) नाम हरतालके हैं ॥ १०३ ॥ गैरेय, अथ्य, गि-
 रिज, अश्मज, शिलाजतु ये पांच (न०) नाम शिलाजीतके हैं । बोल,
 गंधरस, प्राण, पिंड, गोपरस ये पांच (पु०) नाम गंधरसके हैं ॥ १०४ ॥
 डिण्डीर, अब्धिकफ, फेन ये तीन (पु०) नाम समुद्रझागके हैं । सिन्दूर,

रङ्गवङ्गे अथ पिचुस्तूलोऽथ कमलोत्तरम् ।

स्यात्कुसुम्भं वह्निशिखं महारजनमित्यपि ॥ १०६ ॥

मेषकम्बल ऊर्णायुः शशोर्णं शशलोमनि ।

मधु क्षौद्रं माक्षिकादि मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम् ॥ १०७ ॥

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्रा नागजिह्विका ।

नैपाली कुनटी गोला यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥

पाकयोऽथ सर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।

सौवर्चलं स्याद्गुचकं त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥ १०९ ॥

शिशुजं श्वेतमरिचं मोरटं मूलमैश्वरम् ।

ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटिकाशिर इत्यपि ॥ ११० ॥

गोलोमी भूतकेशो ना पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ।

त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषं त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥ १११ ॥

इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

नागसंभव ये दो (न०) नाम सिद्धके हैं । नाग, सीसक, योगेष्ट, वम ये चार (न०) नाम सीसेके हैं । त्रपु, पिच्छट ॥ १०६ ॥ रंग, वंग ये चार (न०) नाम रांगके हैं । पिचु, तूल ये दो (पु०) नाम कपासके हैं । कमलोत्तर, कुसुम्भ, वह्निशिख, महारजन ये चार (न०) नाम कसुमेके हैं ॥ १०६ ॥ मेषकम्बल, ऊर्णायु ये दो (पु०) नाम कम्बलके हैं । शशोर्ण, शशलोमन् (नान्त) ये दो (न०) नाम शशाके रोमके हैं । मधु, क्षौद्र, माक्षिक ये तीन (न०) नाम शहदके हैं । मधूच्छिष्ट, सिक्थक ये दो (न०) नाम मोमके हैं ॥ १०७ ॥ मनःशिला, मनोगुप्ता, मनोह्रा, नागजिह्विका ये चार (स्त्री०) नाम मनशिलके हैं । नैपाली, कुनटी, गोला ये तीन (स्त्री०) नाम नहपाली मनशिलके हैं । यवक्षार, यवाग्रज ॥ १०८ ॥ पाक्य ये तीन (पु०) नाम जवाखारके हैं । सर्जिकाक्षार, कापोत, सुखवर्चक ये तीन (पु०) नाम सज्जीखारके हैं । सौवर्चल, रुचक ये दो (न०) नाम खारके भेदके हैं । त्वक्क्षीरी, वंशरोचना ये दो (स्त्री०) नाम वंशलोचनके हैं ॥ १०९ ॥ शिशुज, श्वेतमरिच ये दो (न०) नाम सहोंजनेके बीज अथवा श्वेत मिरचके हैं । मोरट यह एक (न०) नाम ईखकी जड़का है । ग्रन्थिक, पिप्पलीमूल, चटिकाशिरस् (सान्त) ये तीन (न०) नाम पीपला मूलके हैं ॥ ११० ॥ गोलोमी (स्त्री०), भूतकेश (पु०) यह दो नाम

अथ शूद्रवर्गः १० ।

शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः ।

आ चण्डालास्तु संकीर्णा अम्बष्ठकरणादयः ॥ १ ॥

शूद्राविशोस्तु करणोऽम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनोः ।

शूद्राक्षत्रिययोरुग्रो मागधः क्षत्रियाविशोः ॥ २ ॥

माहिषोर्याक्षत्रिययोः क्षत्ताऽर्याशूद्रयोः सुतः ।

ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतस्तस्यां वेदेहको विशः ॥ ३ ॥

रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य संभवः ।

स्याच्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः ॥ ४ ॥

जयमांसीके हैं । पत्रांग, रक्तचन्दन ये दो (न०) नाम पतंगके हैं । त्रि-
कटु, त्र्यूषण, व्योष ये तीन (न०) नाम त्रिकुटाके हैं । त्रिफला (स्त्री०),
फलत्रिक (न०) ये दो नाम त्रिफलाके हैं ॥ १११ ॥ इति वैश्यवर्गः ॥ ११ ॥

अथ शूद्रवर्गः । शूद्र, अवरवर्ण, वृषल, जघन्यज ये चार (पु०) नाम
शूद्रके हैं । चण्डालपर्यंत अंबष्ठकरण आदि कहाते हैं ॥ १ ॥ और ये
शब्द (पु०) हैं । शूद्रकी स्त्रीमें वैश्यसे उत्पन्न हुआ पुत्र करण कहाता है ।
वह लिखनेसे आजीविकावाला होता है । वैश्यकी स्त्रीमें ब्राह्मणसे उपजा
पुत्र अंबष्ठ कहाता है । वह चिकित्सासे आजीविका करनेवाला होता है ।
शूद्रकी स्त्रीमें क्षत्रियसे उपजा पुत्र उग्र कहाता है । वह शस्त्र वृत्तिवाला
है । क्षत्रियकी स्त्रीमें वैश्यसे उपजा मागध कहाता है । वह राजा आदिकी
सुति करनेवाला होता है ॥ २ ॥ वैश्यकी स्त्रीमें क्षत्रियसे उपजा माहिष
कहाता है । वह ज्योतिष, शाकुन, स्वरशास्त्र इन्हींसे वृत्ति करनेवाला
होता है । क्षत्रियकी स्त्रीमें शूद्रसे उपजा क्षत्तु कहाता है । वह सेवा करता
है । ब्राह्मणकी स्त्रीमें क्षत्रियसे उपजा सूत कहाता है । उसकी हाथी बाधना,
बोटा फेरना, सारथीपना ये आजीविका हैं । ब्राह्मणकी स्त्रीमें वैश्यसे
उपजा वेदेहक कहाता है । उसकी चौसठ कलाकर्मकी शिक्षा करना आजी-
विका है ॥ ३ ॥ शूद्रकी स्त्रीमें वैश्यसे उपजी पुत्रीमें वैश्यकी स्त्री और
क्षत्रियसे उपजे पुत्रसे उत्पन्न हुआ पुत्र रथकार कहाता है । उसका कर्म
रथ बनाना और ईधन बेंचना आदि है । ब्राह्मणकी स्त्रीमें शूद्रसे उपजा
पुत्र चण्डाल कहाता है । उसकी आजीविका मरे हुएके वस्त्र लेनेकी है ।

कारुः शिल्पी संहतैस्तेर्द्वयोः श्रेणिः सजातिभिः ।
 कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी मालाकारस्तु मालिकः ॥ ५ ॥
 कुम्भकारः कुलालः स्यात्पलगण्डस्तु लेपकः ।
 तन्तुवायः कुविन्दः स्यात्तुन्नवायस्तु सौचिकः ॥ ६ ॥
 रङ्गाजीवश्चित्रकरः शस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।
 पादूकृच्चर्मकारः स्याद्व्योकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥
 नार्द्धधमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः ।
 स्याच्छांखिकः काम्बविकः शौलिवकस्ताम्रकुट्टकः ॥ ८ ॥
 तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारस्तु काष्ठतट् ।
 ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ९ ॥
 क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्तिनापितांतावसायिनः ।
 निर्णेजकः स्याद्रजकः शौण्डिको मण्डहारकः ॥ १० ॥

पीछेके शब्द (पु०) हैं और क्षत्तृशब्द ऋकारान्त है ॥ ४ ॥ कारु, शिल्पिन्
 (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम चित्रकार आदिके हैं । खाती, जुलाहा,
 नार्द्ध, घोवी, चमार ये पांच कारुशिल्पी हैं । श्रेणि यह एक (पु० स्त्री०)
 नाम सजातीय समूहका है । आगेके शब्द देवतक (पु०) हैं । कुलक,
 कुलश्रेष्ठिन् (इन्नन्त) ये दो नाम शिल्पिकुलप्रधानके हैं । मालाकार,
 मालिक ये दो नाम मालीके हैं ॥ ५ ॥ कुम्भकार, कुलाल ये दो नाम
 कुम्हारके हैं । पलगण्ड, लेपक ये दो नाम लेपकारके हैं । तन्तुवाय, कुविन्द
 ये दो नाम जुलाहेके हैं । तुन्नवाय, सौचिक ये दो नाम छीपीके हैं ॥ ६ ॥
 रङ्गाजीव, चित्रकर ये दो नाम लीलागरके हैं । शस्त्रमार्ज, असिधावक ये
 दो नाम शिकलीगरके हैं । पादूकृत, चर्मकार ये दो नाम चमारके हैं ।
 व्योकार, लोहकारक ये दो नाम लुहारके हैं ॥ ७ ॥ नार्द्धधम, स्वर्णकार,
 कलाद, रुक्मकारक ये चार नाम सुनारके हैं । शांखिक, कांबविक ये दो
 नाम शंखके चूडे आदि बनानेवालेके हैं । शौलिवक, ताम्रकुट्टक ये दो
 नाम तांबेके पात्र बनानेवालेके हैं ॥ ८ ॥ तक्षन् (नान्त), वर्धकि, त्वष्टा
 (ऋकारान्त), रथकार, काष्ठतक्ष ये पांच नाम खातीके हैं । ग्रामतक्ष यह
 एक नाम ग्रामके खातीका है । कौटतक्ष यह एक नाम अपने आधीन
 खातीका है ॥ ९ ॥ क्षुरिन् (इन्नन्त), मुण्डिन् (इन्नन्त), दिवाकीर्ति,

जाबालः स्यादजादीवो देवाजीवस्तु देवलः ।

स्यान्माया शाम्बरी मायाकारस्तु प्रतिहारकः ॥ ११ ॥

शैलालिनस्तु शैलूषा जायाजीवाः कृशाश्विनः ।

भरता इत्यपि नटाश्चारणास्तु कुशीलवाः ॥ १२ ॥

मार्दङ्गिका मौरजिकाः पाणिवादास्तु पाणिघाः ।

वेणुधमाः स्युर्वैणविका वीणावादास्तु वैणिकाः ॥ १३ ॥

जीवान्तकः शाकुनिको द्वौ वागुरिकजालिकौ ।

वैतंसिकः कौटिकश्च मांसिकश्च समं त्रयम् ॥ १४ ॥

भृतको भृतिभुक् कर्मकरो वैतनिकोऽपि सः ।

वार्ताविहो वैवधिको भारवाहस्तु भारिकः ॥ १५ ॥

विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः ।

निहीनोऽपसदो जालमः भुल्लकश्चेतरश्च सः ॥ १६ ॥

आपित, अंतावसायिन् (इन्नन्त) ये पांच नाम नाईके हैं । निर्णेजक, रजक ये दो नाम घोबीके हैं । शौंडिक, मंडहारक ये दो नाम कलालेके हैं ॥ १० ॥ जाबाल, अजाजीव ये दो नाम बकरी पालनेवालेके हैं । देवाजीव, देवल ये दो नाम देवताकी सेवासे जीविका करनेवालेके हैं । यहांतक (१०) हैं । माया, शाम्बरी ये दो (स्त्री०) नाम इन्द्रजालके हैं । आगेके शब्द विश्वकद्रुतक (१०) हैं । मायाकार, प्रतिहारक ये दो नाम मायावीके हैं ॥ ११ ॥ शैलालिन (इन्नन्त), शैलूष, जायाजीव, कृशाश्विन् (इन्नन्त), भरत, नट ये छः नाम नटके हैं । चारण, कुशीलव ये दो नाम कर्त्तव्योंके हैं ॥ १२ ॥ मार्दङ्गिक, मौरजिक ये दो नाम मृदङ्ग बजानेवालेके हैं । पाणिवाद, पाणिघ ये दो नाम हाथसे ताल बजानेवालेके हैं । वेणुधम, वैणविक ये दो नाम बांसुरी बजानेवालेके हैं । वीणावाद, वैणिक ये दो नाम वीणा बजानेवालेके हैं ॥ १३ ॥ जीवान्तक, शाकुनिक ये दो नाम पारधीके हैं । वागुरिक, जालिक ये दो नाम जालसे मृगको बांधनेवालेके हैं । वैतंसिक, कौटिक, मांसिक ये तीन नाम मांस बेंचनेवालेके हैं ॥ १४ ॥ भृतक, भृतिभुज (जान्त), कर्मकर, वैतनिक ये चार नाम नौकरके हैं । वार्ताविह, वैवधिक ये दो नाम संदेश ले जानेवालेके हैं । भारवाह, भारिक ये दो नाम बोझवालेके हैं ॥ १५ ॥ विवर्ण, पामर, नीच, प्राकृत, पृथग्जन, निहीन,

भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः ।

नियोज्यकिंकरप्रेष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ १७ ॥

पराचितपरिस्कन्दपरजातपरैधिताः ।

मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः ॥ १८ ॥

दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूत्यान उष्णश्च ।

चण्डालप्लवमातङ्गादिवाकीर्तिजनंगमाः ॥ १९ ॥

निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः ।

भेदाः किरातशबरपुलिन्दा म्लेच्छजातयः ॥ २० ॥

व्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्लुब्धकोऽपि सः ।

कौलेयकः सारमेयः कुकुरो मृगदंशकः ॥ २१ ॥

शुनको भषकः श्वा स्यादलर्कस्तु स योगितः ।

श्वा विश्वकद्वृमृगयाकुशलः सरमा शुनी ॥ २२ ॥

विट्चरः सूकरो ग्राम्यो वर्करस्तरुणः पशुः ।

आच्छोदनं मृगव्यं स्यादासेटो मृगया स्त्रियाम् ॥ २३ ॥

अप्सद, जाल्म, क्षुल्लक, इतर ये दश नाम नीचके हैं ॥ १६ ॥ भृत्य, दासेर, दासेय, दास, गोप्यक, चेटक, नियोज्य, किंकर, प्रेष्य, भुजिष्य, परिचारक ये ग्यारह नाम दासके हैं ॥ १७ ॥ पराचित, परिस्कन्द, परजात परैधित ये चार नाम दूसरोंसे वर्द्धित कियेके हैं । मन्द, तुन्द, परिमृज, आलस्य, शीतक, अलस, अनुष्ण ये छः नाम आलस्यके हैं ॥ १८ ॥ दक्ष, चतुर, पेशल, पटु, सूत्यान, उष्ण ये छः नाम चतुरके हैं । चण्डाल, प्लव, मातंग, दिवाकीर्ति, जनंगम ॥ १९ ॥ निषाद, श्वपच, अन्तेवासिन (इवन्त), चाण्डाल, पुक्कस ये दश नाम चाण्डालके हैं । किरात, शबर, पुलिन्द ये तीन भेद म्लेच्छ जातिके हैं ॥ २० ॥ व्याध, मृगवधाजीव, मृगयु, लुब्धक ये चार नाम व्याधके हैं । कौलेयक, सारमेय, कुकुर, मृगदंशक ॥ २१ ॥ शुनक, भषक, श्वन् (नात) ये सात नाम कुत्तेके हैं । अलर्क यह एक नाम उन्मत्त (पागल) कुत्तेका है । विश्वकद्वृ यह एक नाम शिकारी कुत्तेका है । यहतक (पु०) हैं । सरमा यह एक (स्त्री०) नाम कुत्तीका है ॥ २२ ॥ विट्चर यह एक (पु०) नाम गामके शूक

दक्षिणार्कलुब्धयोगादक्षिणेर्मा कुरङ्गकः ।

चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोषकाः ॥ २४ ॥

प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमलिम्लुचाः ।

चौरिका स्तैन्यचौर्ये च स्तेयं लोप्त्रं तु तद्धने ॥ २५ ॥

वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम् ।

उन्माथः कूटयन्त्रं स्याद्वागुरा मृगबन्धनी ॥ २६ ॥

शुल्बं वराटकं स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः ।

उद्धाटनं घटीयन्त्रं सलिलोद्वाहनं प्रहेः ॥ २७ ॥

पुंसि वेमा वायदंडः सूत्राणि नरि तन्तवः ।

वाणिर्व्यूतिः स्त्रियौ तुल्ये पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ॥ २८ ॥

रका है । बर्कर यह एक (पु०) नाम जवान पशु बकरे आदिका है ।
आच्छादन (न०), मृगव्य (न०), आखेट (पु०), मृगया (स्त्री०)
ये चार नाम शिकारके हैं ॥ २३ ॥ दक्षिणेर्मन् (नांत) यह एक (पु०)
नाम शिकारीके हाथसे दहने अंगमें धाववाले मृगका है । चौर, ऐकागा-
रिक, स्तेन, दस्यु, तस्कर, मोषक ॥ २४ ॥ प्रतिरोधिन् (इवन्त), परास्कं-
दिन् (इवन्त), पाटच्चर, मलिम्लुच ये दश (पु०) नाम चौरके हैं ।
चौरिका (स्त्री०), स्तैन्य (न०), चौर्य (न०), स्तेय (न०) ये चार
नाम चोरीके हैं । लोप्त्र यह एक (न०) नाम चोरी किये धनका है
॥ २५ ॥ वीतंस यह एक (पु०) नाम मृगपक्षियोंके बन्धनके लिये पाश
और जाल आदिका है । उन्माथ (पु०), कूटयन्त्र (न०) ये दो नाम मृग
और पक्षियोंको बांधनेके लिये छलसे रखनेके यंत्र अर्थात् फन्देके हैं ।
वागुरा, मृगबन्धनी ये दो (स्त्री०) नाम मृग बांधनेकी रज्जु (जाल)-
का है ॥ २६ ॥ शुल्ब (न०), वराटक (न०), रज्जु (स्त्री०), वटी,
(त्रि०), गुण (पु०) ये पांच नाम रज्जुके हैं । उद्धाटन, घटीयन्त्र ये
दो (न०) नाम रहटके हैं ॥ २७ ॥ वेमन् (नांत पु० न०), वायदण्ड
(पु०) ये दो नाम कपडा बुननेके दण्डके हैं । सूत्र (न०), तंतु (पु०)
ये दो नाम सूतके हैं । वाणि, व्यूति ये दो (स्त्री०) नाम बुननेके हैं ।
पुस्त यह एक (न०) नाम पुत्तलिकाकर्म (लीपने आदि) का है ॥ २८ ॥

पाञ्चालिका पुत्रिका स्याद्वस्त्रदन्तादिभिः कृता ।
 जातुष्वपुविकारे तु जातुषं त्रापुषं त्रिषु ॥ २९ ॥
 पिटकः पेटकः पेटा मंजूषाऽथ विहङ्गिका ।
 भारयष्टिस्तदालम्बि शिष्यं काचोऽथ पादुका ॥ ३० ॥
 पादूरुपानत्स्त्री सैवानुपदीना पदायता ।
 नग्री वध्री वरत्रा स्यादश्वादेस्ताडनी कशा ॥ ३१ ॥
 चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ।
 नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कषः ॥ ३२ ॥
 ब्रश्चनः पत्रपरशुरीषिका तूलिका समे ।
 तैजसावर्तनी मूषा भस्त्रा चर्मप्रसेविका ॥ ३३ ॥
 आस्फोटनी वेधनिका कृपाणी कर्तरी समे ।
 वृक्षादनी वृक्षभेदी टङ्कः पाषाणदारणः ॥ ३४ ॥

पाञ्चालिका यह एक (स्त्री०) नाम कपडा और दन्त आदिसे बनाई पुत्त-
 लिकाका है । जातुष यह एक (त्रि०) नाम लाखके विकारका है ।
 त्रापुष यह एक (त्रि०) नाम रांगेके विकारका है ॥ २९ ॥ पिटक
 (पु०), पेटक (पु०), पेटा (स्त्री०), मंजूषा (स्त्री०) ये चार नाम
 सन्दूकके हैं । विहङ्गिका, भारयष्टि ये दो (स्त्री०) नाम छींकेकी लक-
 डीके हैं । शिष्य (न०), काच (पु०) ये दो नाम उस लकड़ीमें लटके
 हुए छींकेके हैं । पादुका ॥ ३० ॥ पादू, उपानह ये तीन (स्त्री०) नाम
 जूतीके हैं । अनुपदीना यह एक (स्त्री०) नाम पैरके समान विस्तारवाली
 जूतीका है । नग्री, वध्री, वरत्रा ये तीन (स्त्री०) नाम चामरज्यूके हैं ।
 कशा यह एक (स्त्री०) नाम घोड़े आदिके ताडनेकी रज्जू अर्थात् चा-
 बुकका है ॥ ३१ ॥ चाण्डालिका, कण्डोलवीणा, चण्डालवल्लकी ये तीन
 (स्त्री०) नाम नीच जातिके वीणाके हैं । नाराची, एषणिका ये दो
 (स्त्री०) नाम कांटे तराजूके हैं । शाण, निकष, कष ये तीन (पु०) नाम
 कसोटीके हैं ॥ ३२ ॥ ब्रश्चन, पत्रपरशु ये दो (पु०) नाम कानस (रेती) के
 हैं । रीषिका, तूलिका ये दो (स्त्री०) नाम सलाईके भेदके हैं । मूषा यह एक
 (स्त्री०) नाम सोना आदि गलानेके पात्रविशेषका है । भस्त्रा, चर्मप्रसेविका
 ये दो (स्त्री०) नाम धौंकनीके हैं ॥ ३३ ॥ आस्फोटनी, वेधनिका ये दो

ऋकचोऽस्त्री करपत्रमारा चर्मप्रभेदिका ।

सूर्मी स्थूणाऽयःप्रतिमा शिल्पं कर्म कलादिकम् ॥ ३५ ॥

प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया ।

प्रतिकृतिरर्चा पुंसि प्रतिनिधिरुपमोपमानं स्यात् ॥ ३६ ॥

वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदृशः सदृशः सदृक् ।

साधारणः समानश्च स्युरुत्तरपदे त्वमी ॥ ३७ ॥

निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः ।

कर्मण्या तु विधाभृत्याभृतयो भर्म वेतनम् ॥ ३८ ॥

भरण्यं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण इत्यपि ।

सुरा हलिप्रिया हाला परिसुद्धरुणात्मजा ॥ ३९ ॥

(स्त्री०) नाम मणि आदि वेधनेके शस्त्रविशेष अर्थात् वर्मेके हैं । कृपाणी, कर्त्तरी ये दो (स्त्री०) नाम सोने आदिको काटनेकी कैंचीके हैं । वृक्षा-दनी (स्त्री०), वृक्षभेदिन (इन्नन्त पु०) ये दो नाम वृक्षको काटनेके लिये शस्त्रविशेष (कुल्हाडी) के हैं । टंक, पाषाणदारण ये दो (पु०) नाम टांकीके हैं ॥ ३४ ॥ ऋकच (पु० न०), करपत्र (न०) ये दो नाम करौत (आरे) के हैं । आरा, चर्मप्रभेदिका ये दो (स्त्री०) नाम चाम काटनेके आरीके हैं । सूर्मी, स्थूणा, अयःप्रतिमा ये तीन (स्त्री०) नाम सोहेकी प्रतिमाके हैं । शिल्प यह एक (न०) नाम कला आदि कर्मका है ॥ ३५ ॥ प्रतिमान (न०), प्रतिबिम्ब (न०), प्रतिमा, प्रतियातना, प्रतिच्छाया, प्रतिकृति, अर्चा, प्रतिनिधि ये आठ नाम प्रतिमाके हैं । तहां प्रतिनिधिशब्द (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । उपमा (स्त्री०), उपमान (न०) ये दो नाम उपमित करनेके हैं ॥ ३६ ॥ आगेके शब्द वाच्यलिङ्गी हैं । सम, तुल्य, सदृश, सदृश, सदृश (शान्त), साधारण, समान ये सात नाम समानके हैं और उत्तरपदमें स्थित हुए निभ, संकाश आदि शब्द वाच्यलिङ्गी अर्थात् त्रिलिङ्गी हैं ॥ ३७ ॥ निभ, संकाश, नीकाश, प्रतीकाश, उपमा आदि शब्द तुल्यके पर्याय हैं । कर्मण्या (स्त्री०), विधा (स्त्री०), भृत्या (स्त्री०), भृति (स्त्री०), भर्मन् (नान्त न०), वेतन (न०) ॥ ३८ ॥ भरण्य (न०), भरण (न०), मूल्य (न०), निर्वेश (पु०), पण (पु०) ये ग्यारह नाम मजदूरके हैं । सुरा, हलि-

गन्धोत्तमाप्रसन्नोराकादम्बर्यः परिष्कृता ।
 मदिरा कश्यमद्ये चाप्यवदंशस्तु मक्षणम् ॥ ४० ॥
 शुण्डापानं मदस्थानं मधुवारा मधुक्रमाः ।
 मध्वासवो माधवको मधु माध्वीकमद्वयोः ॥ ४१ ॥
 मैरेयमासवः सीधुर्मदको जगलः समौ ।
 संधानं स्यादभिषवः किण्वं पुंसि तु नग्रहः ॥ ४२ ॥
 कारोत्तरः सुरामण्ड आपानं पानगोष्ठिका ।
 चषकोऽस्त्री पानपात्रं सरकोऽप्यनुतर्षणम् ॥ ४३ ॥
 धूर्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्तो द्यूतकृतसमाः ।
 स्युर्लग्नकाः प्रतिभुवः सभिका द्यूतकारकाः ॥ ४४ ॥

प्रिया, हाला, परिष्कृत, वरुणात्मजा ॥ ३९ ॥ गंधोत्तमा, प्रसन्ना, इरा,
 कादंबरी, परिष्कृता, मदिरा, कश्य, मद्य ये तेरह नाम मदिराके हैं । तहां
 कश्य और मद्य (न०) शेष (स्त्री०) हैं । अवदंश यह एक (पु०)
 नाम मदिरापानकी रुचि बढ़ानेके लिये जो व्यञ्जन खाया जावे अर्थात्
 भुने हुए चने, दाल, मोठ आदिका है ॥ ४० ॥ शुंडापान, मदस्थान ये दो
 (न०) नाम मदिराके घरके हैं । मधुवार, मधुक्रम ये दो (पु०) नाम
 मधुपानकी परिपाटीके हैं । मध्वासव (पु०), माधवक (पु०), मधु
 (न०), माध्वीक (पु० न०) ये चार नाम महुआके पुष्पोंसे बनी हुई
 मदिराके हैं ॥ ४१ ॥ मैरेय (न०), आसव (पु०), सीधु (पु० न०)
 ये तीन नाम ईख और शाक आदिसे बनी मदिराके हैं । मेदक, जगल ये
 दो (पु०) नाम मदिराके काढे आदिके हैं । संधान (न०), अभिषव
 (पु०) ये दो नाम मदिराके संधानके हैं । किण्व (न०), नग्रह (पु०)
 ये दो नाम चावल आदिसे बने मदिराके बीजके हैं ॥ ४२ ॥ कारोत्तर
 यह एक (पु०) नाम मदिराके मंडका है । आपान (न०), पानगो-
 ष्टिका (स्त्री०) ये दो नाम मदिरा पीनेकी सभाके हैं । चषक (पु०
 न०), पानपात्र (न०) ये दो नाम मदिराके पात्रके हैं । सरक (पु०
 न०), अनुतर्षण (न०) ये दो नाम मदिराके पानके हैं ॥ ४३ ॥ धूर्त,
 अक्षदेविन (इन्नत), कितव, अक्षधूर्त, द्यूतकृत ये पांच (पु०) नाम
 उषारीके हैं । लग्नक, प्रतिभू ये दो (पु०) नाम जाभिनके हैं । सभिक,

सूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्यपि ।

पणोऽक्षेषु ग्लहोऽक्षास्तु देवनाः पाशकाश्च ते ॥ ४५ ॥

परिणायस्तु शारीणां समन्तान्नयनेऽस्त्रियाम् ।

अष्टापदं शारिकलं प्राणिद्यूतं समाह्वयः ॥ ४६ ॥

उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः ।

तादृम्यादन्यतो वृत्तावृद्धा लिङ्गान्तरेऽपि ते ॥ ४७ ॥

इति शूद्रवर्गः ॥ १० ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।

द्वितीयः काण्डो भूम्यादिः साङ्ग एव समर्थितः ॥ १ ॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने द्वितीयं

काण्डं समाप्तम् ॥ २ ॥

प्रकारक ये दो (पु०) नाम जुवा खिलानेवाले अर्थात् फडवाजके हैं ॥ ४४ ॥ द्यूत (पु० न०), अक्षवती (स्त्री०), कैतव (न०), पण (पु०) ये चार नाम जुवके हैं । पण, ग्लह ये दो (पु०) नाम बाजीके हैं । अक्ष, देवन, पाशक ये तीन (पु०) नाम पाशाके हैं ॥ ४५ ॥ परिणाय यह एक (पु०) नाम चौपडकी गोटोंको इधर उधर चलनेका है । अष्टापद, शारिकल ये दो (पु० न०) नाम सारीफ (चौपड) के हैं । समाह्वय यह एक (पु०) नाम मेंढा और मुर्गा आदिको लडानेसे हार-जीतका है ॥ ४६ ॥ यहां शूद्रवर्गमें कुम्भकार मालाकार आदि शब्द बहुत जगह पुँल्लिगमेंही कहे हैं और विशेष्यलिङ्गसे स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्गमेंभी जान लेने चाहिये ॥ ४७ ॥ इति शूद्रवर्गः ॥ १० ॥

इस प्रकार अमरसिंहकृत नामलिङ्गानुशासनमें अंगोंसहित भूमि आदि द्वितीयकांड समाप्त हुआ ॥ १ ॥

इति श्रीदिक्षीरौहृतकप्रदेशान्तर्गतवेरीग्रामनिवासिगौडवंशावतंसविविधशास्त्रपरम-
पंडितश्रीशिवसहायपुत्रविदत्तशास्त्रिण जयैयविरचितायामागरानगरवास्तव्य-
न्योतिर्विद्वालमकुन्दभट्टसरिसूनुप० रायेश्वरभट्टेन संशोधितायां अमरको-
शार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां द्वितीयकांडः ॥ २ ॥

तृतीयं काण्डम् ।



अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः १ ।

विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि ।

लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः ॥ १ ॥

स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः ।

गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः ॥ २ ॥

सुकृती पुण्यवान् धन्यो महेच्छस्तु महाशयः ।

हृदयालुः सुहृदयो महोत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥

अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः । इस सामान्य तृतीयकाण्डमें विशेष्यनिघ्न जिसमें विशेषणोंका वर्णन है, जैसे सुकृती आदि । संकीर्ण जिसमें विशेषण तो हैं परन्तु उन विशेषणोंके विशेष्य कई अर्थोंमें हो सकते हैं, जैसे 'कर्मपरायण', जो शब्द है वह शिल्पविद्या पढ़ाना आदि अनेक काममें जो चतुर हो उसको कह सकते हैं । नानार्थ जिसमें एकही शब्दके अनेक अर्थ हैं, जैसे 'अब्द', यह एक नाम बादलका और वर्षका है । अव्यय जिसमें अव्ययोंके अर्थ हैं । लिङ्गादिसंग्रह जिसमें प्रत्ययोंसे लिंगका ज्ञान होता है । इन नामोंवाले वर्गोंके द्वारा पूर्वोक्त स्वर्ग आदि वर्गोंसे संबंध रखनेवाले ऐसे वर्ग कहे जावेंगे ॥ १ ॥ इस शास्त्रमें जैसे स्त्री आदि भेदकरके बहुधा लिङ्गका निर्णय है तैसेही यहांभी हो इस भ्रमको दूर करनेके लिये व्यापक लक्षण कहते हैं । जैसे स्त्री, दार आदि पदोंसे विशेष्य बनता है उस प्रकार उसके गुण द्रव्य क्रियावाचक शब्द विशेषण बनते हैं । अर्थात् जिस विशेष्य होगा उसी लिंग और वचनका उसका विशेषण होगा । आगे उदाहरणमें सुकृती आदि गुण द्रव्य क्रियावाचक विशेषण हैं इनको विशेष्यके लिंगके अनुसार किये तो इस प्रकार हुए । जैसे-सुकृतिनी स्त्री, सुकृतिनो दाराः, सुकृति कुलम् । जैसे-दंडिनी स्त्री, दंडिनो दाराः, दंडि कुलम् । जैसे-पाचिका स्त्री, पाचका दाराः, पाचकं कुलम् । ऐसे हैं ॥ २ ॥ आगे आहतलक्षण शब्दतक सब शब्द त्रिलिङ्गी हैं । सुकृति (इन्नन्त), पुण्यवत् (मत्वन्त), धन्य ये तीन नाम भाग्यवान्के हैं । महेच्छ, महाशय ये दो नाम उदारचित्तवालेके हैं । हृदयालु

प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः ।

वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि ॥ ४ ॥

पूज्यः प्रतीक्ष्यः सांशयिकः संशयापन्नमानसः ।

दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि ॥ ५ ॥

स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा बहुप्रदे ।

जैवातृकः स्यादायुष्मानन्तर्वाणिस्तु शास्त्रावित् ॥ ६ ॥

परीक्षकः कारणिको वरदस्तु समर्धकः ।

हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना हृष्टमानसः ॥ ७ ॥

दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मनाः ।

दक्षिणे सरलोदारौ सुकलो दातृभोक्तारि ॥ ८ ॥

तत्परे प्रसितासक्ताविष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः ।

प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः ॥ ९ ॥

हृदय ये दो नाम सुन्दर हृदयवालेके हैं । महोत्साह, महोद्यम ये दो नाम उद्यमीके हैं ॥ ३ ॥ प्रवीण, निपुण, अभिज्ञ, विज्ञ, निष्णात, शिक्षित, वैज्ञानिक, कृतमुख, कृतिन (इन्नन्त), कुशल ये दश नाम चतुरके हैं ॥ ४ ॥ पूज्य, प्रतीक्ष्य ये दो नाम पूज्यके हैं । सांशयिक, संशयापन्नमानस ये दो नाम संशयवालेके हैं । दक्षिणीय, दक्षिणार्ह, दक्षिण्य ये तीन नाम दक्षिणाके योग्यके हैं ॥ ५ ॥ वदान्य, स्थूललक्ष्य, दानशौण्ड, बहुप्रद ये चार नाम अधिकदानीके हैं । जैवातृक, आयुष्मत (मत्तन्त) ये दो नाम बड़ी आयुवालेके हैं । अन्तर्वाणि, शास्त्राविद् (दान्त) ये दो नाम शास्त्रको जाननेवाले (शास्त्री) के हैं ॥ ६ ॥ परीक्षक, कारणिक ये दो नाम परीक्षा करनेवालेके हैं । वरद, समर्धक ये दो नाम वर देनेवालेके हैं । हर्षमाण, विकुर्वाण, प्रमनस् (सान्त), हृष्टमानस ये चार नाम प्रसन्न मनवालेके हैं ॥ ७ ॥ दुर्मनस्, विमनस्, अन्तर्मनस् ये तीन नाम व्याकुलचित्तवाले अर्थात् उदासके हैं और सान्त हैं । उत्क, उन्मनस् (सान्त) ये दो नाम उत्कण्ठावालेके हैं । दक्षिण, सरल, उदार ये तीन नाम सरलचित्तवालेके हैं । सुकल यह एक नाम दाता भोक्ताका है ॥ ८ ॥ तत्पर, प्रसित, प्रसिद्ध ये तीन नाम किसी विषयमें लगे हुएके हैं । इष्टार्थोद्युक्त, उत्सुक ये दो नाम उद्योगवालेके हैं । प्रतीत, प्रथित, ख्यात, वित्त, विज्ञात,

गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणाहितलक्षणौ ।
 इभ्य आढ्यो धनी स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥ १० ॥
 अधिभूनायिको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः ।
 अधिकर्द्धिः समृद्धः स्यात्कुटुम्बव्यापृतस्तु यः ॥ ११ ॥
 स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयम् ।
 वराङ्गरूपोपेतो यः सिंहसंहननो हि सः ॥ १२ ॥
 निर्वार्यः कार्यकर्त्ता यः संपन्नः सत्वसंपदा ।
 अवाचि मूकोऽथ मनोजवसः पितृसन्निभः ॥ १३ ॥
 सत्कृत्यालंकृतां कन्यां यो ददाति स कूकुदः ।
 लक्ष्मीर्वाल्लक्ष्मणः श्रीलः श्रीमान् स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १४ ॥
 स्यादयालुः कारुणिकः कृपालुः सूरतः समाः ।
 स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥

विश्रुत ये छः नाम विख्यातके हैं ॥ ९ ॥ कृतलक्षण, आहितलक्षण
 दो नाम धन शौर्य आदिसे विख्यातके हैं । सुकृतीसे लेकर यहांतक सब
 शब्द विशेषण होनेसे त्रिलिङ्गी हैं । इनका लिंग विशेष्यके समान रहता
 है । इभ्य, आढ्य, धनिन् (इन्नन्त) ये तीन (पु०) नाम धनवालेके हैं
 स्वामिन् (इन्नन्त), ईश्वर, पति, ईशितृ (ऋकारान्त) ॥ १० ॥ अधिभू
 नायक, नेतृ (ऋकारान्त), प्रभु, परिवृढ, अधिप ये दश (पु०) नाम
 स्वामीके हैं । अधिकर्द्धि, समृद्ध ये दो (त्रि०) नाम सुसम्पन्न (भरे पूरे)
 के हैं । कुटुम्बव्यापृत ॥ ११ ॥ अभ्यागारिक, उपाधि ये तीन (पु०)
 नाम कुटुम्बपोषकके हैं । सिंहसंहनन यह एक (पु०) नाम उत्तम
 और रूपवालेका है ॥ १२ ॥ निर्वार्य यह एक (त्रि०) नाम विचार
 अवस्थामेंभी चिन्त लगाकर कार्य करनेवालेका है । अवाच, मूक ये दो
 (त्रि०) नाम गूंगेके हैं । मनोजवस, पितृसन्निभ ये दो (त्रि०) नाम
 पिताके समानके हैं ॥ १३ ॥ कूकुद यह एक (पु०) नाम सत्कारपूर्वक
 अलंकृत करी कन्याको देनेवालेका है । आगे वर्गान्ततक सब शब्द (त्रि०)
 हैं । लक्ष्मीवत् (मत्वन्त), लक्ष्मण, श्रील, श्रीमत् (मत्वन्त) ये
 नाम लक्ष्मीवालेके हैं । स्निग्ध, वत्सल ये दो नाम स्नेहीके हैं ॥ १४ ॥
 दयालु, कारुणिक, कृपालु, सूरत ये चार नाम दयावान्के हैं । स्वतन्त्र

परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि ।

अधीनो निघ्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यसौ ॥ १६ ॥

खलपूः स्याद्बहुकरो दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ।

जालमोऽसमीक्ष्यकारी स्यात्कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ॥ १७ ॥

कर्मक्षमोऽलंकर्मीणः क्रियावान्कर्मसूद्यतः ।

स कर्मः कर्मशीलो यः कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥ १८ ॥

भरण्यभुक्कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।

अपस्त्रातो मृतस्त्रात आमिषाशी तु शौष्कुलः ॥ १९ ॥

बुभुक्षितः स्यात्क्षुधितो जिघत्सुरशनायितः ।

परात्रः परपिण्डादो भक्षको घस्मरोऽन्नरः ॥ २० ॥

आद्यूनः स्यादौदरिको विजिगीषाविवर्जिते ।

उभौ त्वात्मभरिः कुक्षिभरिः स्वोदरपूरके ॥ २१ ॥

अपावृत, स्वैरिन् (इन्नन्त), स्वच्छन्द, निरवग्रह ये पांच नाम स्वतन्त्र (अपराधीन) के हैं ॥ १६ ॥ परतन्त्र, पराधीन, परवत् (मत्वन्त), नाथवत् (मत्वन्त) ये चार नाम पराधीनके हैं । अधीन, निघ्न, आयत्त, अस्वच्छन्द, गृह्यक ये पांच नाम आधीनके हैं ॥ १६ ॥ खलपू, बहुकर ये दो नाम बुहारनेवालेके हैं । दीर्घसूत्र, चिरक्रिय ये दो नाम बहुत देरमें काम करनेवालेके हैं । जालम, असमीक्ष्यकारिन् (इन्नन्त) ये दो नाम विना विचारे करनेवालेके हैं । कुण्ठ यह एक नाम आलसीका है ॥ १७ ॥ कर्मक्षम, अलंकर्मीण ये दो नाम कर्ममें समर्थके हैं । क्रियावत् (मत्वन्त) यह एक नाम कर्मोंमें लगे हुएका है । कर्म, कर्मशील ये दो नाम सर्वदा कर्ममें लगे हुएके हैं । कर्मशूर, कर्मठ ये दो नाम यत्नसे कार्यको पूरा करनेवालेके हैं ॥ १८ ॥ भरण्यभुज् (जान्त), कर्मकर ये दो नाम तनखा लेके काम करनेवालेके हैं । कर्मकार यह एक नाम विना तनखा काम करनेवालेका है । अपस्त्रात, मृतस्त्रात ये दो नाम मरेके लिये स्नान करनेवालेके हैं । आमिषाशिन् (इन्नन्त), शौष्कुल ये दो नाम मच्छका मांस खानेवालेके हैं ॥ १९ ॥ बुभुक्षित, क्षुधित, जिघत्सु, अशनायित ये चार नाम भूखेके हैं । परात्र, परपिण्डाद ये दो नाम पराये अन्नको खानेवालेके हैं । भक्षक, घस्मर, अन्नर ये तीन नाम खानेवालेके हैं ॥ २० ॥ आद्यून

सर्वान्नानस्तु सर्वान्नभोजी गृध्रस्तु गर्धनः ।
 लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक समौ लोलुपलोलुभौ ॥ २२ ॥
 सोन्मादस्तृन्मदिष्णुः स्यादविनीतः समुद्धतः ।
 मत्ते शौण्डोत्कटक्षीवाः कामुके कमिताऽनुकः ॥ २३ ॥
 कम्प्रः कामयिताऽभीकः कमनः कामनोऽभिकः ।
 विधेयो विनयग्राही वचने स्थित आश्रवः ॥ २४ ॥
 वश्यः प्रणयो निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः ।
 धृष्टे धृष्णाग्वियातश्च प्रगल्भः प्रतिभान्विते ॥ २५ ॥
 स्यादधृष्टे तु शालीनो विलक्षो विस्मयान्विते ।
 अधीरे कातरस्त्रस्ते भीरुभीरुकभीलुकाः ॥ २६ ॥
 आशंसुराशंसितरि गृहयालुर्ग्रहीतरि ।
 श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते पतयालुस्तु पातुके ॥ २७ ॥

औदरिक ये दो नाम भूखसे बहुत पीड़ित हुएके हैं । आत्मभरि, कुक्षिभरि
 ये दो नाम अपने पेटको भरनेवालेके हैं ॥ २१ ॥ सर्वान्नीन, सर्वान्नभोजिन
 (इन्नन्त) ये दो नाम परमहंस आदिके हैं । गृध्र, गर्धन ये दो नाम आ-
 कांक्षावालेके हैं । लुब्ध, अभिलाषुक, तृष्णजू (जान्त) ये तीन नाम लो-
 भीके हैं । लोलुप, लोलुभ ये दो नाम अत्यंत लोभीके हैं ॥ २२ ॥ सोन्माद,
 तृन्मदिष्णु ये दो नाम पागलके हैं । अविनीत, समुद्धत ये दो नाम अन्या-
 यीके हैं । मत्त, शौण्ड, उत्कट, क्षीब ये चार नाम मतवालेके हैं । कामुक,
 कमितृ (ऋकारान्त), अनुक ॥ २३ ॥ कम्प्र, कामयितृ (ऋकारान्त),
 अभीक, कमन, कामन, अभिक ये नव नाम कामवालेके हैं । विधेय, विन-
 यग्राहिन् (इन्नन्त), वचनेस्थित, आश्रव ये चार नाम आज्ञाकारीके हैं
 ॥ २४ ॥ वश्य, प्रणय ये दो नाम वश हुएके हैं । निभृत, विनीत, प्रश्रित
 ये तीन नाम नम्रके हैं । धृष्ट, धृष्णक, वियात ये तीन नाम ढीठके हैं ।
 प्रगल्भ, प्रतिभान्वित ये दो नाम प्रतिभासहित अर्थात् बुद्धिमानके हैं ॥ २५ ॥
 अधृष्ट, शालीन ये दो नाम लज्जासहितके हैं । विलक्ष, विस्मयान्वित ये दो
 नाम पराये धर्मशील आदिको देख आश्चर्य करनेवालेके हैं । अधीर, कातर
 ये दो नाम कायरके हैं । त्रस्त, भीरु, भीरुक, भीलुक ये चार नाम डरपो-
 कके हैं ॥ २६ ॥ आशंसु, आशंसितृ (ऋकारान्त) ये दो नाम कहने

लज्जाशीलेऽपत्रपिष्णुर्वन्दारुभिवादके ।
 शरारुर्घातुको हिंस्रः स्याद्वर्धिष्णुस्तु वर्धनः ॥ २८ ॥
 उत्पतिष्णुस्तुत्पतिताऽलंकरिष्णुस्तु मण्डनः ।
 भूष्णुर्भविष्णुर्भविता वर्तिष्णुर्वर्तेनः समौ ॥ २९ ॥
 निराकरिष्णुः क्षिप्तुः स्यात्सान्द्रस्त्रिधस्तु मेदुरः ।
 ज्ञाता तु विदुरो विन्दुर्विकासी तु विकस्वरः ॥ ३० ॥
 विसृत्वरो विसृमरः प्रसारी च विसारिणि ।
 सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ॥ ३१ ॥
 क्रोधनोऽमर्षणः कोपी चण्डस्त्वत्यन्तकोपनः ।
 जागरूको जागरिता घूर्णितः प्रचलायितः ॥ ३२ ॥

वाले वा इच्छाशीलेके हैं । गृहयालु, ग्रहीतृ (ऋकारान्त) ये दो नाम लेनेवालेके हैं । श्रद्धालु यह एक नाम श्रद्धावालेका है । पतयालु, पातुक ये दो नाम गिरनेवालेके हैं ॥ २७ ॥ लज्जाशील, अपत्रपिष्णु ये दो नाम लोकाजवालेके हैं । वन्दारु, अभिवादक ये दो नाम वन्दन करनेवालेके हैं । शरारु, घातुक, हिंस्र ये तीन नाम हिंसा करनेवालेके हैं । वर्धिष्णु, वर्धन ये दो नाम बढ़नेवालेके हैं ॥ २८ ॥ उत्पतिष्णु, उत्पतितृ (ऋकारान्त) ये दो नाम उछलनेवालेके हैं । अलंकरिष्णु, मंडन ये दो नाम गहना पहननेवालेके हैं । भूष्णु, भविष्णु, भवितृ (ऋकारान्त) ये तीन नाम होनेवालेके हैं । वर्तिष्णु, वर्तेन ये दो नाम वर्त्ताव करनेवालेके हैं ॥ २९ ॥ निराकरिष्णु, क्षिप्तु ये दो नाम तिरस्कार करनेवालेके हैं । मेदुर यह एक नाम सान्द्रस्त्रिध (चिकने) का है । ज्ञातृ (ऋकारान्त), विदुर, विन्दु ये तीन नाम ज्ञाताके हैं । विकासिन् (इन्नन्त), विकस्वर ये दो नाम खिलनेवालेके हैं ॥ ३० ॥ विसृत्वर, विसृमर, प्रसारिन् (इन्नन्त), विसारिन् (इन्नन्त) ये चार नाम फैलनेवालेके हैं । सहिष्णु, सहन, क्षन्तृ (ऋकारान्त), तितिक्षु, क्षमिन् (ऋकारान्त), क्षमिन् (इन्नन्त) ये छः नाम क्षमा करनेवालेके हैं ॥ ३१ ॥ क्रोधन, अमर्षण, कोपिन् (इन्नन्त) ये तीन नाम क्रोधीके हैं । चण्ड, अत्यन्तकोपन ये दो नाम अत्यन्त क्रोधीके हैं । जागरूक, जागरितृ (ऋकारान्त) ये दो नाम जागनेवालेके हैं । घूर्णित, प्रचलायित ये दो नाम नींदसे घूर्णित (घुर्गटे लेनेवाले) के हैं ॥ ३२ ॥

स्वप्नश्च शयालुर्निद्रालुर्निद्राणशयितौ समौ ।

पराङ्मुखः पराचीनः स्यादवाङ्मध्यधोमुखः ॥ ३३ ॥

देवानश्चति देवद्रचङ् विश्वद्रचङ् विश्वगश्चति ।

यः सहाश्चति सध्यङ् स त तिर्यङ् यस्तिरोश्चति ॥ ३४ ॥

वदो वदावदो वक्ता वागीशो वाक्पतिः समौ ।

वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकोऽतिवक्तरि ॥ ३५ ॥

स्याज्जलपाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्हवाक् ।

दुर्मुखे मुखराबद्धमुखो शङ्खः प्रियंवदे ॥ ३६ ॥

लोहलः स्यादस्फुटवाग्गर्हवादी तु कद्वदः ।

समौ कुवादकुचरी स्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः ॥ ३७ ॥

खणः शब्दनो नान्दीवादी नान्दीकरः समौ ।

जडोऽज्ञ एडमूकस्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते ॥ ३८ ॥

स्वप्नञ् (जान्त), शयालु, निद्रालु ये तीन नाम नींदवालेके हैं । निद्राण, शयित ये दो नाम शयन करते हुएके हैं । पराङ्मुख, पराचीन ये दो नाम विमुखके हैं । अवाञ् (चान्त), अधोमुख ये दो नाम नीचे मुखवालेके हैं ॥ ३३ ॥ देवद्रचञ् (चान्त) यह एक नाम देवताओंको पूजनेवालेका है । विश्वद्रचञ् (चान्त) यह एक नाम सब ओरको चलनेवालेका है । सध्यञ् (चान्त) यह एक नाम साथ चलनेवालेका है । तिर्यञ् यह एक नाम तिरछे चलनेवालेका है ॥ ३४ ॥ वद, वदावद, वक्तृ (ऋकारान्त) ये तीन नाम वक्ताके हैं । वागीश, वाक्पति ये दो नाम सुन्दर वाणी बोलनेवालेके हैं । वाचोयुक्तिपटु, वाग्मिन् (इन्नन्त) ये दो नाम न्यायसे बोलनेवालेके हैं । वावदूक, अतिवक्तृ (ऋकारान्त) ये दो नाम बहुत बोलनेवालेके हैं ॥ ३५ ॥ जलपाक, वाचाल, वाचाट, बहुगर्हवाच् (चान्त) ये चार नाम अवाच्य बोलनेवालेके हैं । दुर्मुख, मुखर, अबद्धमुख ये तीन नाम अप्रियवादीके हैं । शङ्ख, प्रियंवद ये दो नाम प्रियवादीके हैं ॥ ३६ ॥ लोहल, अस्फुटवाच् (चान्त) ये दो नाम अस्पष्ट बोलनेवालेके हैं । गर्हवादिन् (इन्नन्त), कद्वद ये दो नाम निन्दित बोलनेवालेके हैं । कुवाद, कुचर ये दो नाम दोषकथनशील (बुराई करनेवाले) के हैं । असौम्यस्वर, अस्वर ये दो नाम काकके स्वरके समान बुरे बोलनेवालेके हैं ॥ ३७ ॥ खण, शब्दन ये दो नाम शब्दकर्त्ताके हैं । नां दीवादिन् (इन्नन्त), नान्दीकर ये

तूष्णींशीलस्तु तूष्णीको नम्रोऽवासा दिगम्बरे ।
 निष्कासितोऽवकृष्टः स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ३९ ॥
 आत्तगर्वोऽभिभूतः स्यादापितः साधितः समौ ।
 प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्यातो निराकृतः ॥ ४० ॥
 निकृतः स्याद्विप्रकृतो विप्रलब्धस्तु वञ्चितः ।
 मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हतश्च सः ॥ ४१ ॥
 अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो बद्धे कीलितसंयतौ ।
 आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात्कांदिशीको भयद्रुतः ॥ ४२ ॥
 आक्षारितः क्षारितोऽभिशस्ते संकमुकोऽस्थिरे ।
 व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ विहस्तव्याकुलौ समौ ॥ ४३ ॥
 विक्लवो विह्वलः स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्टधीः ।
 कश्यः कशार्हे संनद्धे त्वाततायी बधोद्यते ॥ ४४ ॥

दो नाम स्तुतिविशेष करनेवालेके हैं । जड, अज्ञ ये दो नाम अर्यत मूढके हैं । एडमूक यह एक नाम गूंगे बहिरका है ॥ ३८ ॥ तूष्णींशील, तूष्णीक ये दो नाम चुपके रहनेवालेके हैं । नम्र, अवासस् (सान्त), दिगम्बर ये तीन नाम नंगेके हैं । निष्कासित, अवकृष्ट ये दो नाम निकासे हुएके हैं । अपध्वस्त, धिक्कृत ये दो नाम झिडके हुए वा धिक्कार करे गयेके हैं ॥ ३९ ॥ आत्तगर्व, अभिभूत ये दो नाम भग्न हुए गर्ववालेके हैं । दापित, साधित, ये दो नाम धनादि देकर वश किये गयेके हैं । प्रत्यादिष्ट, निरस्त, प्रत्याख्यात, निराकृत ये चार नाम त्यागे हुएके हैं ॥ ४० ॥ निकृत, विप्रकृत ये दो नाम निकाले हुए वा विवर्णीकृतके हैं । विप्रलब्ध, वञ्चित ये दो नाम ठगे हुएके हैं । मनोहत, प्रतिहत, प्रतिबद्ध, हत ये चार नाम टूटे मनवालेके हैं ॥ ४१ ॥ अधिक्षिप्त, प्रतिक्षिप्त ये दो नाम आक्षेप किये मनुष्यके हैं । बद्ध, कीलित, संयत ये तीन नाम रज्जु आदिसे बंधे हुएके हैं । आपन्न, आपत्प्राप्त ये दो नाम आपदमें पड़े हुएके हैं । कांदिशीक, भयद्रुत ये दो नाम भयसे भागे हुएके हैं ॥ ४२ ॥ आक्षारित, क्षारित, अभिशस्त ये तीन नाम लोकापवादसे दूषित हुएके हैं । संकमुक, अस्थिर ये दो नाम चञ्चल प्रकृतिवालेके हैं । व्यसनार्त, उपरक्त ये दो नाम व्यसनसे पीडित हुएके हैं । विहस्त, व्याकुल ये दो नाम व्याकुल हुएके हैं ॥ ४३ ॥ विक्लव,

द्वेष्ट्ये त्वक्षिगतो वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ ।
 विष्यो विषेण यो वध्यो मुसल्यो मुसलेन यः ॥ ४५ ॥
 शिश्विदानोऽकृष्णकर्मा चपलश्चिकुरः समौ ।
 दोषैकदृक् पुरोभागी निकृतस्त्वनृजुः शठः ॥ ४६ ॥
 कर्णेजपः सूचकः स्यात्पिशुनो दुर्जनः खलः ।
 नृशंसो घातुकः क्रूरः पापी धूर्तस्तु वञ्चकः ॥ ४७ ॥
 अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयबालिशः ।
 कदर्ये कृपणक्षुद्रकिंपचानमितंपचाः ॥ ४८ ॥
 निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः ।
 वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ ॥ ४९ ॥

विह्वल ये दो नाम शोकआदिसे अंगभंगको प्राप्त हुएके हैं । विवश, अरि-
 ष्टदुष्टधी ये दो नाम आसन्नमरणसे दुष्ट बुद्धि हो जानेवालेके हैं । कश्यप,
 कशार्ह ये दो नाम वेतसे मारनेयोग्यके हैं । आततायिन् (इन्नन्त) यह
 एक नाम वर्म आदिसे सावधान हो मारनेकी इच्छावालेका है ॥ ४४ ॥
 द्वेष्ट्य, अक्षिगत ये दो नाम वैरके योग्यके हैं । वध्य, शीर्षच्छेद्य ये दो नाम
 शिर काटनेके योग्यके हैं । विष्य यह एक नाम विषसे मारने योग्यका है ।
 मुसल्य यह एक नाम मुसलसे मारने योग्यका है ॥ ४५ ॥ शिश्विदान,
 अकृष्णकर्मन् (नान्त) ये दो नाम पुण्यकर्मवालेके हैं । चपल, चिकुर ये
 दो नाम बिना विचारे शीघ्र वध करनेवालेके हैं । दोषैकदृक् (शान्त)
 पुरोभागिन् (इन्नन्त) ये दो नाम दोषमात्रको देखनेवालेके हैं । निकृत,
 अनृजु, शठ ये तीन नाम टेढे अन्तःकरणवालेके अर्थात् कपटीके हैं ॥ ४६ ॥
 कर्णेजप, सूचक ये दो नाम चुगलखोरके हैं । पिशुन, दुर्जन, खल ये तीन
 नाम आपसमें वैर करनेवालेके हैं । नृशंस, घातुक, क्रूर, पाप ये चार नाम
 द्रोही पुरुषके हैं । धूर्त, वञ्चक ये दो नाम धूर्तके हैं ॥ ४७ ॥ अज्ञ, मूढ,
 यथाजात, मूर्ख, वैधेय, बालिश ये पांच नाम मूर्खके हैं । कदर्य, कृपण,
 क्षुद्र, किंपचान, मितंपच ये पांच नाम स्त्री पुत्र आदिको पीडित कर लोभसे
 घन संचय करनेवालेके हैं ॥ ४८ ॥ निःस्व, दुर्विध, दीन, दरिद्र, दुर्गत ये
 पांच नाम दरिद्रके हैं । वनीयक, याचनक, मार्गण, याचक, अर्थिन् (इन्नन्त)

अहंकारवानहंयुः शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।

दिव्योपपादुका देवा नृगवाद्या जरायुजाः ॥ ५० ॥

स्वेदजाः कृमिदंशाद्याः पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः ।

इति प्राणिवर्गः ।

उद्भिदस्तरुगुल्माद्या उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ ५१ ॥

सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम् ।

कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मंजु मञ्जुलम् ॥ ५२ ॥

तदासेचनकं तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् ।

अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम् ॥ ५३ ॥

निकृष्टप्रतिकृष्टावरेफयाप्यावमाधमाः ।

कुपूयकुत्सितावद्यखेटगर्हाणकाः समाः ॥ ५४ ॥

मलीमसं तु मलिनं कञ्जरं मलदूषितम् ।

पूतं पवित्रं मेध्यं च वीघ्नं तु विमलार्थकम् ॥ ५५ ॥

ये पांच नाम याचकके हैं ॥ ४९ ॥ अहंकारवत् (मत्तन्त), अहंयुस् ये दो नाम अहंकारीके हैं । शुभंयुस्, शुभान्वित ये दो नाम शुभसे युत हुएके हैं । दिव्योपपादुक यह एक नाम अपने माता पिताके विना अपने भाग्यके गुणोंसे आकाशमें उत्पन्न होनेवालोंका है । जरायुज यह एक नाम मनुष्य गौ घोड़े आदिका है ॥ ५० ॥ स्वेदज यह एक नाम कीड़े डांस आदिका है । अण्डज यह एक नाम पक्षि सर्प आदिका है ॥ यहां प्राणिवर्ग समाप्त हुआ * ॥ उद्भिद् यह एक (पु०) नाम वृक्ष वेल आदिका है । उद्भिद्, उद्भिज्ज, उद्भिद ये तीन नाम उद्भिदके हैं ॥ ५१ ॥ आगेसे अतिशोभनतक सब शब्द (त्रि०) हैं । सुन्दर, रुचिर, चारु, सुषम, साधु, शोभन, कान्त, मनोरम, रुच्य, मनोज्ञ, मंजु, मञ्जुल ये बारह नाम सुन्दरके हैं ॥ ५२ ॥ आसेचनक यह एक नाम जिसको देखनेसे दृष्टि और मनकी तृप्तिका अन्त न हो और जो बहुत बार देखनेपरभी अधिक प्रीतिको उत्पन्न करे उस परम सुन्दरका है । अभीष्ट, अभीप्सित, हृद्य, दयित, वल्लभ, प्रिय ये छः नाम प्रियके हैं ॥ ५३ ॥ निकृष्ट, प्रतिकृष्ट, अवर्ण (नान्त), रेफ, याप्य, अवम, अधम, कुपूय, कुत्सित, अवद्य, खेट, गर्हा, अणक ये तेरह नाम दुष्टके हैं ॥ ५४ ॥ मलीमस, मलिन, कञ्जर, मलदूषित ये चार नाम

निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ।
 असारं फल्गु शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके ॥ ५६ ॥
 क्लीबे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमाः ।
 मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवर्होऽनवराध्यवत् ॥ ५७ ॥
 पराध्याग्रपाग्रहरप्राग्याग्याग्रीयमग्रियम् ।
 श्रेयान् श्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने ॥ ५८ ॥
 स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुङ्गवर्षभकुञ्जराः ।
 सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः ॥ ५९ ॥
 अप्राग्यं द्वयहीने द्वे अप्रधानोपसर्जने ।
 विशङ्कटं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत् ॥ ६० ॥
 बङ्गोरुविपुलं पीनपीत्री तु स्थूलपीवरे ।
 स्तोकाल्पक्षुलकाः सूक्ष्मं श्लक्ष्णं दध्नं कृशं तनु ॥ ६१ ॥

मलवालेके हैं । पूत, पवित्र, मेध्य ये तीन नाम पवित्रके हैं । वीघ्र यह एक नाम स्वभावसे निर्मलका है ॥ ५६ ॥ निर्णिक्त, शोधित, मृष्ट, निःशोध्य, अनवस्कर ये पाँच नाम निर्मलके हैं । असार, फल्गु ये दो नाम निर्बलके हैं । शून्य, वशिक, तुच्छ, रिक्तक ये चार नाम रीतेके हैं ॥ ५६ ॥ प्रधान (न०), प्रमुख, प्रवेक, अनुत्तम, उत्तम, मुख्य, वर्य, वरेण्य, प्रवर्ह, अनवराध्य ॥ ५७ ॥ पराध्य, अग्र, प्राग्रहर, प्राग्य, अग्र्य, अग्रीय, अग्रिय ये सत्रह नाम प्रधानके हैं । श्रेयस् (सान्त), श्रेष्ठ, पुष्कल, सत्तम, अतिशोभन ये पाँच नाम अत्यन्त शोभनके हैं ॥ ५८ ॥ व्याघ्र, पुंगव, ऋषभ, कुञ्जर, सिंह, शार्दूल, नाग आदि शब्द श्रेष्ठ अर्थको कहनेवाले (पु०) हैं और उत्तरपदमें रहते हैं । जैसे—‘ पुरुषोऽयं व्याघ्र इव पुरुषव्याघ्रः ’ अर्थात् पुरुषश्रेष्ठ है ॥ ५९ ॥ अप्राग्य (त्रि०), अप्रधान, उपसर्जन ये तीन नाम अप्रधानके हैं । तहाँ अप्रधान और उपसर्जन ये दो शब्द (न०) हैं आगेके तनुशब्दतक (त्रि०) हैं । विशङ्कट, पृथु, बृहत्, विशाल, पृथुल, महत् ॥ ६० ॥ बङ्ग, उरु, विपुल ये नव नाम बडेके हैं । पीन, पीवर (नान्त), स्थूल, पीवर ये चार नाम मोटेके हैं । स्तोक, अल्प, क्षुलक ये तीन नाम अल्पके हैं । सूक्ष्म, श्लक्ष्ण, दध्न, कृश, तनु ॥ ६१ ॥

स्त्रियां मात्रा त्रुटिः पुंसि लवलेशकणाणवः ।

अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि ॥ ६२ ॥

प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदभ्रं बहुलं बहु ।

पुरुहूः पुरु भूयिष्ठं स्फारं भूयश्च भूरि च ॥ ६३ ॥

परःशताद्यास्ते येषां परा संख्या शतादिकात् ।

गणनीये तु गणयेयं संख्याति गणितमथ समं सर्वम् ॥ ६४ ॥

विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि निःशेषम् ।

समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं स्यादनूनके ॥ ६५ ॥

घनं निरन्तरं सान्द्रं पेलवं विरलं तनु ।

समीपे निकटासन्नसंनिकृष्टसनीडवत् ॥ ६६ ॥

सदेशाभ्याशसविधसमर्यादसवेशवत् ।

उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अत्यभितोऽव्ययम् ॥ ६७ ॥

संसक्ते त्वव्यवाहितमपदान्तरमित्यपि ।

नेदिष्ठमन्तिकतमं स्यादूरं विप्रकृष्टकम् ॥ ६८ ॥

मात्रा, त्रुटि, लव, लेश, कण, अणु ये ग्यारह नाम सूक्ष्मके हैं । तहां मात्रा और त्रुटि शब्द (स्त्री०) और लव आदि शब्द (पु०) शेष (त्रि०) हैं । आगेके वर्गान्तक सब शब्द (त्रि०) हैं । अल्पिष्ठ, अल्पीयस् (सान्त), कनीयस् (सान्त), अणीयस् (सान्त) ये चार नाम अत्यंत अल्पके हैं ॥ ६२ ॥ प्रभूत, प्रचुर, प्राज्य, अदभ्र, बहुल, बहु, पुरुहू, पुरु, भूयिष्ठ, स्फार, भूयस् (सान्त), भूरि ये बारह नाम बहुतके हैं ॥ ६३ ॥ परःशत यह एक नाम १०० से अधिक संख्यावालोंका है । परःसहस्र यह एक नाम १००० से अधिक संख्यावालोंका है । ऐसेही अन्यभी जानना । गणनीय, गणयेय ये दो नाम गिनने योग्यके हैं । संख्यात, गणित ये दो नाम गिने हुएके हैं ॥ ६४ ॥ विश्व, अशेष, कृत्स्न, समस्त, निखिल, अखिल, निःशेष, समग्र, सकल, पूर्ण, अखंड, अनूनक ये बारह नाम समग्रके हैं ॥ ६५ ॥ घन, निरंतर, सान्द्र ये तीन नाम सघनके हैं । पेलव, विरल, तनु ये तीन नाम विरल (अलगर) के हैं । समीप, निकट, आसन्न, संनिकृष्ट, सनीड ॥ ६६ ॥ सदेश, अभ्याश, सविध, समर्याद, सवेश, उपकंठ, अंतिक, अभ्यर्ण, अभ्यग्रा, अभितस् ये पंद्रह नाम समीपके हैं । तहां अभितस् यह अव्यय है ॥ ६७ ॥ संसक्त, अव्य-

दवीयश्च दविष्ठं च सुदूरं दीर्घमायतम् ।
 वर्तुलं निस्तलं वृत्तं बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ६९ ॥
 उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गेऽथ वामने ।
 न्यङ्गनीचखर्वह्रस्वाः स्युरवाग्रेऽवनतानतम् ॥ ७० ॥
 अरालं वृजिनं जिह्वमूर्मिमत्कुञ्चितं नतम् ।
 आविद्धं कुटिलं भुग्रं वेष्टितं वक्रमित्यपि ॥ ७१ ॥
 ऋजावजिह्वाप्रगुणौ व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ ।
 शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः ॥ ७२ ॥
 स्थास्तुः स्थिरतरः स्थेयानेकरूपतया तु यः ।
 कालव्यापी स कूटस्थः स्थावरो जङ्गमेतरः ॥ ७३ ॥
 चरिष्णु जङ्गमचरं त्रसमङ्गं चराचरम् ।
 चलनं कम्पनं कम्पं चलं लोलं चलाचलम् ॥ ७४ ॥

वहित, अपदांतर ये तीन नाम मिले हुएके हैं । नेदिष्ठ, अंतिकतम ये दो नाम अत्यंत निकटके हैं । दूर, विप्रकृष्टक ये दो नाम दूरके हैं ॥ ६८ ॥
 दवीयस् (सान्त), दविष्ठ, सुदूर ये तीन नाम अत्यंत दूरके हैं । दीर्घ, आयत ये दो नाम लंबेके हैं । वर्तुल, निस्तल, वृत्त ये तीन नाम गोलके हैं ।
 बन्धुर यह एक नाम जो स्वभावसे उंचा हो और उपाधिके भेदसे कुछ नीचा हो जावे उसका है ॥ ६९ ॥ उच्च, प्रांशु, उन्नत, उदग्र, उच्छ्रित, तुंग ये छः नाम उंचेके हैं । वामन, न्यच्, नीच, खर्व, ह्रस्व ये पांच नाम बौनेके हैं । अवाग्र, अवनत, आनत ये तीन नाम नीचेको मुखवालेके हैं ॥ ७० ॥
 अराल, वृजिन, जिह्वा, उर्मिमत्, कुञ्चित, नत, आविद्ध, कुटिल, भुग्र, वेष्टित, वक्र ये ग्यारह नाम टेढेके हैं ॥ ७१ ॥ ऋजु, अजिह्वा, प्रगुण ये तीन नाम सीधेके हैं । व्यस्त, अप्रगुण, आकुल ये तीन नाम आकुलके हैं । शाश्वत, ध्रुव, नित्य, सदातन, सनातन ये पांच नाम नित्यके हैं ॥ ७२ ॥ स्थास्तु, स्थिरतर, स्थेयस् (सान्त) ये तीन नाम अत्यंत स्थिरके हैं । कूटस्थ यह एक नाम एक स्वभाव करके कालके व्यापक आकाश आदिका है । स्थावर, जंगमेतर ये दो नाम अचरके हैं ॥ ७३ ॥ चरिष्णु, जंगम, चर, त्रस, अंग, चराचर ये छः नाम चरके हैं । चलन, कम्पन, कम्प ये तीन नाम कम्पवालेके हैं । चल, लोल, चलाचल ॥ ७४ ॥

चञ्चलं तरलं चैव पारिप्लवपरिप्लवे ।

अतिरिक्तः समधिको दृढसंधिस्तु संहतः ॥ ७५ ॥

कर्कशं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम् ।

जठरं मूर्तिमन्मूर्तं प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥ ७६ ॥

पुराणे प्रतनप्रत्नपुरातनचिरंतनाः ।

प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ॥ ७७ ॥

नूतनश्च सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु ।

अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदं क्लीबमव्ययम् ॥ ७८ ॥

प्रत्यक्षं स्यादैन्द्रियकमप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ।

एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनावपि ॥ ७९ ॥

अप्येकसर्गं एकाग्रयोऽप्येकायनगतोऽपि सः ।

पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या अथास्त्रियाम् ॥ ८० ॥

अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमाः ।

मोघं निरर्थकं स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्बणम् ॥ ८१ ॥

चञ्चल, तरल, पारिप्लव, परिप्लव ये सात नाम चलेके हैं । अतिरिक्त, समधिक ये दो नाम अधिकके हैं । दृढसंधि, संहत ये दो नाम दृढसंधान अर्थात् बडे मिलापीके हैं ॥ ७५ ॥ कर्कश, कठिन, क्रूर, कठोर, निष्ठुर, दृढ, जठर, मूर्तिमत, मूर्त ये नव नाम कठिनके हैं । प्रवृद्ध, प्रौढ, एधित ये तीन नाम प्रवृद्धके हैं ॥ ७६ ॥ पुराण, प्रतन, प्रत्न, पुरातन, चिरंतन ये पांच नाम पुरातनके हैं । प्रत्यग्र, अभिनव, नव्य, नवीन, नूतन, नव ॥ ७७ ॥ नूतन ये सात नाम नवीनके हैं । सुकुमार, कोमल, मृदुल, मृदु ये चार नाम कोमलके हैं । अन्वच् (चान्त), अन्वक्ष, अनुग, अनुपद ये चार नाम पीछेके हैं । तहां अनुपद शब्द (न०) तथा अव्यय हे ॥ ७८ ॥ प्रत्यक्ष, ऐन्द्रियक ये दो नाम इन्द्रियोंसे ग्राह्य प्रत्यक्षके हैं । अप्रत्यक्ष, अतीन्द्रिय ये दो नाम अप्रत्यक्ष अर्थात् इन्द्रियोंसे अग्राह्य धर्म आदिके हैं । एकतान, अनन्यवृत्ति, एकाग्र, एकायन ॥ ७९ ॥ एकसर्ग, एकाग्र्य, एकायनगत ये सात नाम एकाग्रके हैं । आदि, पूर्व, पौरस्त्य, प्रथम, आद्य ये पांच नाम आद्यके हैं । तहां आदिशब्द (पु०) हे ॥ ८० ॥ अंत, जघन्य, चरम, अन्त्य, पाश्चात्य, पश्चिम ये छः नाम अन्तके हैं ।

साधारणं तु सामान्यमेकाकी त्वेक एककः ।

भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतरावपि ॥ ८२ ॥

उच्चावचं नैकभेदमुच्चण्डमविलम्बितम् ।

अरुंतुदस्तु मर्मस्पृग्बाधं तु निरर्गलम् ॥ ८३ ॥

प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्ठ च ।

वामं शरीरं सव्यं स्यादपसव्यं तु दक्षिणम् ॥ ८४ ॥

संकटं ना तु संबाधः कलिलं गहनं समे ।

संकीर्णं संकुलाकीर्णं मुण्डितं परिवापितम् ॥ ८५ ॥

ग्रंथितं संदितं दृब्धं विस्मृतं विस्तृतं ततम् ।

अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात्प्राप्तप्रणिहिते समे ॥ ८६ ॥

वेष्टितप्रैखिताधूतचलिताकम्पिता धुते ।

नुत्तनुन्नास्तनिष्ठ्यूताविद्धक्षिमेरिताः समाः ॥ ८७ ॥

तहां अन्तशब्द (पु० न०) है । मोघ, निरर्थक ये दो नाम व्यर्थके हैं । स्पष्ट, स्फुट, प्रव्यक्त, उल्लवण ये चार नाम स्पष्टके हैं ॥ ८१ ॥ साधारण, सामान्य ये दो नाम साधारणके हैं । एकाकिन् (इन्नन्त), एक, एकक ये तीन नाम अकेले अर्थात् असहायकके हैं । भिन्न, अन्यतर, एक, त्व, अन्य, इतर ये छः नाम भिन्नके वाचक हैं ॥ ८२ ॥ उच्चावच, नैकभेद ये दो नाम बहुत प्रकारके हैं । उच्चण्ड, अविलम्बित ये दो नाम जल्दीके हैं । अरुंतुद, मर्मस्पृग् (शान्त) ये दो नाम मर्मभेदीके हैं । अबाध, निरर्गल ये दो नाम निर्बाध (बेरोक) के हैं ॥ ८३ ॥ प्रसव्य, प्रतिकूल, अपसव्य, अपष्ठ ये चार नाम विपरीतके हैं । सव्य यह एक नाम वाम शरीरका है । अपसव्य यह एक नाम दाहिने शरीरका है ॥ ८४ ॥ संकट, संबाध ये दो नाम अल्प अवकाशवाले मार्ग आदिके हैं । तहां संबाधशब्द (पु०) है । कलिल, गहन ये दो नाम दुःखसे अधिगम्यके हैं । संकीर्ण, संकुल, आकीर्ण ये तीन नाम अत्यन्त मिले हुएके हैं । मुण्डित, परिवापित ये दो नाम मुण्डितके हैं ॥ ८५ ॥ ग्रंथित, संदित, दृब्ध ये तीन नाम गुंफित अर्थात् पुहे हुएके हैं । विस्मृत, विस्तृत, तत ये तीन नाम फैले हुएके हैं । अन्तर्गत, विस्मृत ये दो नाम विस्मृत अर्थात् भूले हुएके हैं । प्राप्त, प्रणिहित ये दो नाम लब्धके हैं ॥ ८६ ॥ वेष्टित, प्रैखित, आधूत, चालित,

परिक्षिप्तं तु निवृतं मूषितं मुषितार्थकम् ।
 प्रवृद्धप्रसृते न्यस्तनिसृष्टे गुणिताहते ॥ ८८ ॥
 निदिग्धोपचिते गूढगुप्ते गुण्ठितरूपिते ।
 हुतावदीर्णे उद्गूर्णोद्यते काचितशिक्षिते ॥ ८९ ॥
 घ्राणघ्राते दिग्धलिप्ते समुदक्तोद्धते समे ।
 वेष्टितं स्याद्वलयितं संवीतं रुद्धमावृतम् ॥ ९० ॥
 रुग्णं भुग्नेऽथ निशितक्षणुतशातानि तेजिते ।
 स्याद्विनाशोन्मुखं पक्वं ह्रीणहीतौ तु लज्जिते ॥ ९१ ॥
 वृत्ते तु वृतव्यावृत्तौ संयोजित उपाहितः ।
 प्राप्यं गम्यं समासाद्यं स्यन्नं रीणं स्नुतं सुतम् ॥ ९२ ॥

आकंपित, धुत ये छः नाम कुछ कंपित हुएके हैं । नुत्त, नुन्न, अस्त, नि-
 च्यूत, आविद्ध, क्षिप्त, ईरित ये सात नाम प्रेरितके हैं ॥ ८७ ॥ परिक्षिप्त,
 निवृत ये दो नाम कोट आदिसे सब ओर घिरे हुएके हैं । मूषित, मुषित
 ये दो नाम चुराये हुएके हैं । प्रवृद्ध, प्रसृत ये दो नाम फैले हुएके हैं ।
 न्यस्त, निसृष्ट ये दो नाम फँके हुएके हैं । गुणित, आहत ये दो नाम
 गुणा किये हुएके हैं ॥ ८८ ॥ निदिग्ध, उपचित ये दो नाम समृद्ध हुएके
 हैं । गूढ, गुप्त ये दो नाम गुप्तके हैं । गुंठित, रूपित ये दो नाम धूलिसे
 लिप्त हुएके हैं । हुत, अवदीर्ण ये दो नाम पिघले हुएके हैं । उद्गूर्ण, उद्यत
 ये दो नाम उठाये हुए शस्त्र आदिके हैं । काचित, शिक्षित ये दो नाम
 छींकेपर धरे हुएके हैं ॥ ८९ ॥ घ्राण, घ्रात ये दो नाम सूंघे हुएके हैं ।
 दिग्ध, लिप्त ये दो नाम विलिप्तके हैं । समुदक्त, उद्धत ये दो नाम कुआ
 आदिसे निकाले हुए जल आदिके हैं । वेष्टित, वलयित, संवीत, रुद्ध,
 आवृत ये पाँच नाम घिरे हुएके हैं ॥ ९० ॥ रुग्ण, भुग्न ये दो नाम
 सूँटे हुएके हैं । निशित, क्षणुत, शात, तेजित ये चार नाम शाण आदिसे
 तीक्ष्ण किये शस्त्र आदिके हैं । पक्वं यह एक नाम पके हुएका है ।
 ह्रीण, ह्रीत, लज्जित ये तीन नाम लज्जित हुएके हैं ॥ ९१ ॥ वृत्त, वृत,
 व्यावृत्त ये तीन नाम किये हुए वरणवालेके हैं । संयोजित, उपाहित
 ये दो नाम मिलाये हुएके हैं । प्राप्य, गम्य, समासाद्य ये तीन नाम
 प्राप्त होनेके योग्यके हैं । स्यन्न, रीण, स्नुत, सुत ये चार नाम प्रसृत अर्थात्

संगूढः स्यात्संकलितोऽवगीतः ख्यातगर्हणः ।
 विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ॥ ९३ ॥
 अवरीणो धिकृतश्चाप्यवध्वस्तोऽवचूर्णितः ।
 अनायासकृतं फाण्टं स्वानितं ध्वनितं समे ॥ ९४ ॥
 बद्धे संदानितं मृतमुद्धितं संदितं सितम् ।
 निष्पक्वे कथितं पाके क्षीराज्यहविषां शृतम् ॥ ९५ ॥
 निर्वाणो मुनिवद्व्यादौ निर्वातस्तु गतेऽनिले ।
 पक्वं परिणते गूढं हन्ने मीढं तु मूत्रिते ॥ ९६ ॥
 पुष्टे तु पुषितं सोढे क्षान्तमुद्धान्तमुद्गते ।
 दान्तस्तु दमिते शान्तः शमिते प्रार्थितेऽर्दितः ॥ ९७ ॥

बहते हुएके हैं ॥ ९२ ॥ संगूढ, संकलित ये दो नाम जोड़े हुए अंक आ-
 दिके हैं । अवगीत, ख्यातगर्हण ये दो नाम निन्दितके हैं । विविध, बहु-
 विध, नानारूप, पृथग्विध ये चार नाम अनेक प्रकारके हैं ॥ ९३ ॥ अवरीण,
 धिकृत ये दो नाम निन्दितमात्रके हैं । अवध्वस्त, अवचूर्णित ये दो
 नाम चूर्ण किये हुएके हैं । फाण्ट यह एक नाम विना परिश्रम किये क्वाथका
 है । स्वानित, ध्वनित ये दो नाम शब्दितके हैं ॥ ९४ ॥ बद्ध, संदानित,
 मृत, उद्धित, संदित, सित ये छः नाम बंधे हुएके हैं । निष्पक्व, कथित
 ये दो नाम सकल रीतिसे पके हुए क्वाथ आदिके हैं । शृत यह एक नाम
 पके हुए दूध घृत आदिका है ॥ ९५ ॥ निर्वाण यह एक नाम मुनि
 और अग्निविषयमें मुक्त और बुझनेके अर्थमें है । जैसे-‘ निर्वाणो मुनिः
 निर्मुक्त इत्यर्थः । ‘ निर्वाणो वह्निः ’ अर्थात् बुझी हुई अग्नि । निर्वात यह
 एक नाम वायुरहितका है । पक्व, परिणत ये दो नाम पके हुएके हैं । गूढ,
 हन्त्र ये दो नाम विष्टा त्यागवालेके हैं । मीढ, मूत्रित ये दो नाम मूत्र कर
 चुकनेके हैं ॥ ९६ ॥ पुष्ट, पुषित ये दो नाम मोटेके हैं । सोढ, क्षान्त
 ये दो नाम क्षमाको प्राप्त हुएके हैं । उद्घात, उद्गत ये दो नाम वमन करके
 गेरे हुए अन्न आदिके हैं । दान्त, दमित ये दो नाम इन्द्रिय जीतेके हैं ।
 शान्त, शमित ये दो नाम शान्त हुएके हैं । प्रार्थित, अर्दित ये दो नाम
 याचित अर्थात् मांगे हुएके हैं ॥ ९७ ॥

ज्ञप्तस्तु ज्ञापिते छन्नच्छादिते पूजितेऽश्रितः ।
 पूर्णस्तु पूरिते क्लिष्टः क्लिशितेऽवसिते सितः ॥ ९८ ॥
 पुष्टप्लुष्टोषिता दग्धे तष्टत्वष्टौ तनूकृते ।
 वेधितच्छिद्रितौ विद्धे विन्नविन्नौ विचारिते ॥ ९९ ॥
 निष्प्रभे विगतारोकौ विलीने विद्रुतद्रुतौ ।
 सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ दारिते भिन्नभेदितौ ॥ १०० ॥
 ऊतं स्यूतमुतं चेति त्रितयं तन्तुसन्ततं ।
 स्यादार्हिते नमस्यितं नमसितमपचायितार्चितमपचितम् १०१
 वरिवसिते वरिवस्यितमुपासितं चोपचरितं च ।
 संतापितसंतप्तौ धूपितधूपायितौ च दूनश्च ॥ १०२ ॥
 हृष्टे मत्तस्तृप्तः प्रह्वन्नः प्रमुदितः प्रीतः ।
 छिन्नं छातं लूनं कृत्तं दातं दितं छितं वृक्णम् ॥ १०३ ॥

ज्ञप्त, ज्ञापित ये दो नाम जाने हुएके हैं । छन्न, छादित ये दो नाम ढके
 हुएके हैं । पूजित, अंचित ये दो नाम पूजित कियेके हैं । पूर्ण, पूरित ये
 दो नाम पूर्णके हैं । क्लिष्ट, क्लिशित ये दो नाम क्लेशको प्राप्त हुएके हैं ।
 अवसित, सित ये दो नाम समाप्तके हैं ॥ ९८ ॥ पुष्ट, प्लुष्ट, उषित, दग्ध
 ये चार नाम जले हुएके हैं । तष्ट, त्वष्ट, तनूकृत ये तीन नाम छीलकर
 मल्प बनाये हुएके हैं । वेधित, छिद्रित, विद्ध ये तीन नाम छेदे हुएके
 हैं । विन्न, वित्त, विचारित ये तीन नाम विचारे हुएके हैं ॥ ९९ ॥ निष्प्रभ,
 विगत, अगोक ये तीन नाम दीप्तिरहितके हैं । विलीन, विद्रुत, द्रुत ये
 तीन नाम द्रवीभूत अर्थात् पिघले हुए घृतादिके हैं । सिद्ध, निर्वृत्त,
 निष्पन्न ये तीन नाम सिद्ध हुएके हैं । दारित, भिन्न, भेदित ये तीन नाम
 फाड़े हुएके हैं ॥ १०० ॥ ऊत, स्यूत, उत ये तीन नाम तंतुओंके प्रबन्ध
 अर्थात् बीने हुएके हैं । अर्हित, नमस्यित, नमसित, अपचायित, अर्चित,
 अपचित ये छः नाम अर्चितके हैं ॥ १०१ ॥ वरिवसित, वरिवस्यित,
 उपासित, उपचरित ये चार नाम शुश्रूषितके हैं । संतापित, संतप्त, धूपित,
 धूपायित, दून ये पांच नाम संतापितके हैं ॥ १०२ ॥ हृष्ट, मत्त, तृप्त,
 प्रह्वन्न, प्रमुदित, प्रीत ये छः नाम प्रमुदितके हैं । छिन्न, छात, लून, कृत्त,
 दात, दित, छित, वृक्ण ये आठ नाम खंडित (कटे) के हैं ॥ १०३ ॥

स्रस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम् ।
 लब्धं प्राप्तं विन्नं भाषितमासादितं च भूतं च ॥ १०४ ॥
 अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम् ।
 आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत्तं च ॥ १०५ ॥
 त्रातं त्राणं रक्षितमवितं गोपायितं च गुप्तं च ।
 अवगणितमवमतावज्ञातेऽवमानितं च परिभूते ॥ १०६ ॥
 त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टे ।
 उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपितम् ॥ १०७ ॥
 बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवसितावगते ।
 ऊरीकृतमुररीकृतमङ्गीकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम् ॥ १०८ ॥
 संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम् ।
 ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि ॥ १०९ ॥
 अपि गीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानि स्तुतार्थानि ।
 भक्षितचर्वितलीढप्रत्यवसितगलितखादितप्सातम् ॥ ११० ॥

स्रस्त, ध्वस्त, भ्रष्ट, स्कन्न, पन्न, च्युत, गलित ये सात नाम च्युत अर्थात्
 चुए हुएके हैं । लब्ध, प्राप्त, विन्न, भाषित, आसादित, भूत ये छः नाम
 प्राप्त हुएके हैं ॥ १०४ ॥ अन्वेषित, गवेषित, अन्विष्ट, मार्गित, मृगित ये
 पांच नाम ढंढे हुएके हैं । आर्द्र, सार्द्र, क्लिन्न, तिमित, स्तिमित, समुन्न,
 उत्त ये सात नाम गीले हुएके हैं ॥ १०५ ॥ त्रात, त्राण, रक्षित, अवित,
 गोपायित, गुप्त ये छः नाम रक्षितके हैं । अवगणित, अवमत, अवज्ञात,
 अवमानित, परिभूत ये पांच नाम अवमानितके हैं ॥ १०६ ॥ त्यक्त, हीन,
 विधुत, समुज्झित, धूत, उत्सृष्ट ये छः नाम त्यागे हुएके हैं । उक्त, भाषि-
 त, उदित, जल्पित, आख्यात, अभिहित, लपित ये छः नाम कहे हुएके
 हैं ॥ १०७ ॥ बुद्ध, बुधित, मनित, विदित, प्रतिपन्न, अवसित, अवगत
 ये सात नाम अवगत (जाने हुए) के हैं । ऊरीकृत, उररीकृत, अंगीकृत,
 आश्रुत, प्रतिज्ञात ॥ १०८ ॥ संगीर्ण, विदित, संश्रुत, समाहित, उपश्रु-
 त, उपगत ये ग्यारह नाम अंगीकार कियेके हैं । ईलित, शस्त, पणायित,
 पनायित, प्रणुत, पणित, पनित ॥ १०९ ॥ गीर्ण, वर्णित, अभिष्टुत, ईडित,
 स्तुत ये बारह नाम स्तुति कियेके हैं । भक्षित, चर्वित, लीढ, प्रत्यवसित,

अभ्यवहृतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ताशितं भुक्ते ।

क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठबंहिष्ठाः ॥ १११ ॥

क्षिप्रक्षुद्राभीप्सितपृथुपीवरबहुलप्रकर्षार्थाः ।

साधिष्ठद्राधिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठहसिष्ठवृन्दिष्ठाः ॥ ११२ ॥

बाढव्यायतबहुगुरुवामनवृन्दारकातिशये ।

इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥ १ ॥

अथ संकीर्णवर्गः २ ।

प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णैः लिङ्गमुन्नयेत् ।

कर्म क्रिया तत्सातत्ये गम्ये स्युरपरस्पराः ॥ १ ॥

साकल्यासङ्गवचने पारायणपरायणे ।

यदृच्छा स्वैरिता हेतुशून्या त्वास्या विलक्षणम् ॥ २ ॥

गलित, खादित, प्लात ॥ ११० ॥ अभ्यवहत, अन्न, जग्ध, ग्रस्त, ग्लस्त, आशित, भुक्त ये चौदह नाम खाये हुएके हैं । क्षेपिष्ठ, क्षोदिष्ठ, प्रेष्ठ, वरिष्ठ, स्थविष्ठ, बंहिष्ठ ॥ १११ ॥ ये शब्द क्रमसे अत्यन्त क्षिप्र, अत्यन्त क्षुद्र, अत्यन्त अभीप्सित, अत्यन्त पृथु, अत्यन्त पीवर इन अर्थोंके वाचक हैं । अर्थात् क्षेपिष्ठ यह एक नाम अत्यन्त क्षिप्रका है । ऐसे अन्यभी जानने । साधिष्ठ, द्राधिष्ठ, स्फेष्ठ, गरिष्ठ, हसिष्ठ, वृन्दिष्ठ ॥ ११२ ॥ ये शब्द क्रमसे बाढ, व्यायत, बहु, गुरु, वामन, वृन्दारक इन्हींके अतिशयमें वर्तते हैं । जैसे—‘अतिशयेन बाढः साधिष्ठः’ इत्यादि । इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥ १ ॥

अथ संकीर्णवर्गः । पूर्वकथित दोनों काण्डोंमें स्वर्ग आदि नाम अने २ सजातीय वर्गमें कहे गये हैं और तीसरे काण्डमेंभी विशेष्यनिघ्नवर्गमें प्रकृति आदि शब्द विशेष्यनिघ्नके अनुसार कहे गये । अब पूर्वोक्त दोनों मिल न जाय इस आपत्तिके भयसे जो पहले नहीं कहे हैं उन्हींके संग्रहके लिये संकीर्णवर्गका आरंभ है । इस वर्गमें वक्ष्यमाण लिंगसंग्रहको उक्त रीतिसे प्रकृतिका अर्थ और प्रत्ययका अर्थ और कहीं २ रूपभेद करके लिंगका विचार करना । कर्मन् (नां न०), क्रिया (स्त्री०) ये दो नाम क्रियाके हैं । अपरस्पर यह एक (त्रि०) नाम क्रियाके निरन्तर होनेका है ॥ १ ॥ पारायण यह एक (न०) नाम साकल्य (सम्पूर्ण) वचनका है । परा-

शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दमः ।
 अवदानं कर्म वृत्तं काम्यदानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥
 वशक्रिया संवननं मूलकर्म तु कार्मणम् ।
 विधूननं विधुवनं तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥
 पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्तधारणमित्यपि ।
 सेवनं सीवनं स्यूतिर्विदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥
 आक्रोशनमभीषङ्गः संवेदो वेदना न ना ।
 संमूर्च्छनमभिव्याप्तिर्याच्चा भिक्षार्थनाऽर्दना ॥ ६ ॥
 वर्धनं छेदनेऽथ द्वे आनन्दनसमाजने ।
 आपच्छन्नमथाम्नायः संप्रदायः क्षये क्षिया ॥ ७ ॥

यण यह एक (त्रि०) नाम आसंग वचनका है । यहच्छा, स्वरिता ये दो
 (स्त्री०) नाम स्वतन्त्रताके हैं । विलक्षण यह एक (न०) नाम कारण-
 रहित स्थितिका है ॥ २ ॥ शमथ (पु०), शम (पु०), शान्ति (स्त्री०)
 ये तीन नाम चित्तकी शान्तिके हैं । दान्ति (स्त्री०), दमथ (पु०), दम-
 (पु०) ये तीन नाम इन्द्रियोंके रोकनेके हैं । अवदान यह एक (न०)
 नाम पहिले हो गये चरित्रका है । प्रवारण यह एक (न०) नाम काम्य
 अर्थात् तुलापुरुष आदि दानका है ॥ ३ ॥ वशक्रिया (स्त्री०), संवनन
 (न०) ये दो नाम मणि मंत्र आदिकरके वशीकरणके हैं । कार्मण यह
 एक (न०) नाम ओषधियोंके मूलोंसे उच्चाटन आदि कर्मका है । विधू-
 नन, विधुवन ये दो (न०) नाम कंपनके हैं । तर्पण, प्रीणन, अवन ये तीन
 (न०) नाम तृप्तिके हैं ॥ ४ ॥ पर्याप्ति (स्त्री), परित्राण (न०),
 हस्तधारण (न०) ये तीन नाम मारनेके लिये उद्युक्त हुएके निवारणके
 हैं । सेवन (न०), सीवन (न०), स्यूति (स्त्री०) ये तीन नाम सुईके
 कर्म अर्थात् सीवनेके हैं । विदर (पु०), स्फुटन (न०), भिदा (स्त्री०)
 ये तीन नाम फूटनेके हैं ॥ ५ ॥ आक्रोशन (न०), अभीषंग (पु०) ये
 दो नाम गाली देनेके हैं । संवेद (पु०), वेदना (स्त्री० न०) ये दो नाम
 अनुभवके हैं । संमूर्च्छन (न०), अभिव्याप्ति (स्त्री०) ये दो नाम सब
 ओरसे व्याप्तिके हैं । याच्चा, भिक्षा, अर्थना, अर्दना ये चार (स्त्री०)
 नाम मांगनेके हैं ॥ ६ ॥ वर्धन, छेदन ये दो (न०) नाम काटनेके हैं ।

ग्रहे ग्राहो वशः कान्तौ रक्षणस्त्राणे रणः कणे ।
व्यधो वेधे पचा पाके हवो हूतौ वरो वृत्तौ ॥ ८ ॥
ओषः प्लोषे नयो नाये ज्यानिर्जीर्णौ भ्रमो भ्रमौ ।
स्फातिर्वृद्धौ प्रथा ख्यातौ स्पृष्टिः पृक्तौ स्नवः स्त्रवे ॥ ९ ॥
एधा समृद्धौ स्फुरणे स्फुरणा प्रमितौ प्रमा ।
प्रसूतिः प्रसवे श्रयोते प्राधारः क्लमथः क्लमे ॥ १० ॥
उत्कर्षोऽतिशये संधिः श्लेषे विषय आश्रये ।
क्षिपायां क्षेपणं गीर्णिर्गिरौ गुणमुद्यमे ॥ ११ ॥

आनन्दन, सभाजन, आप्रच्छन्न ये तीन (न०) नाम स्वागत आदि कुशल
पूछनेसे उत्पन्न हुए आनन्दके हैं । आम्नाय, संप्रदाय ये दो (पु०) नाम
गुरुकी परंपरासे प्राप्त हुए उपदेशके हैं । क्षय (पु०), क्षिया (स्त्री०) ये
दो नाम क्षयके हैं ॥ ७ ॥ ग्रह, ग्राह ये दो (पु०) नाम ग्रहणके हैं ।
वश (पु०), कांति (स्त्री०) ये दो नाम इच्छाके हैं । रक्षण (पु०),
त्राण (न०) ये दो नाम रक्षाके हैं । रण, कण ये दो (पु०) नाम शब्द
करनेके हैं । व्यध, वेध ये दो (पु०) नाम वेधनेके हैं । पचा (स्त्री०),
पाक (पु०) ये दो नाम पाकके हैं । हव (पु०), हूति (स्त्री०) ये दो
नाम बुलानेके हैं । वर (पु०), वृत्ति (स्त्री०) ये दो नाम वरदानके हैं
॥ ८ ॥ ओष, प्लोष ये दो (पु०) नाम दाहके हैं । नय, नाय ये दो
(पु०) नाम नीतिके हैं । ज्यानि, जीर्णि ये दो (स्त्री०) नाम जीर्णप-
नेके हैं । भ्रम (पु०), भ्रमि (स्त्री०) ये दो नाम भ्रांतिके हैं । स्फाति,
वृद्धि ये दो (स्त्री०) नाम वृद्धिके हैं । प्रथा, ख्याति ये दो (स्त्री०)
नाम ख्यातिके हैं । स्पृष्टि, पृक्ति ये दो (स्त्री०) नाम स्पर्शके हैं । स्नव,
स्त्रव ये दो (पु०) नाम प्रस्रवण (झरने) के हैं ॥ ९ ॥ एधा, समृद्धि
ये दो (स्त्री०) नाम वृद्धिके हैं । स्फुरण (न०), स्फुरणा (स्त्री०) ये
दो नाम फरकनेके हैं । प्रमिति, प्रमा ये दो (स्त्री०) नाम यथार्थ ज्ञानके
हैं । प्रसूति (स्त्री०), प्रसव (पु०) ये दो नाम गर्भमोचनके हैं । श्रयोत,
प्राधार ये दो (पु०) नाम घृत आदिके टपकनेमें हैं । क्लमय, क्लम ये दो
(पु०) नाम ग्लानिके हैं ॥ १० ॥ उत्कर्ष, अतिशय ये दो (पु०)
नाम उत्कर्ष (बड़ाई) के हैं । संधि (स्त्री०), श्लेष (पु०) ये दो नाम
मिलापके हैं । विषय, आश्रय ये दो (पु०) नाम आश्रयके हैं । क्षिप

उन्नाय उन्नये श्रायः श्रयणे जयने जयः ।

निगादो निगदे मादो मद उद्वेग उद्भ्रमे ॥ १२ ॥

विमर्दनं परिमलोऽभ्युपपत्तिरनुग्रहः ।

निग्रहस्तद्विरुद्धः स्यादभियोगस्त्वभिग्रहः ॥ १३ ॥

मुष्टिबन्धस्तु संग्राहो डिम्बे ङमरविप्लवौ ।

बन्धनं प्रसितिश्चारः स्पर्शः स्पष्टोपतप्तरि ॥ १४ ॥

निकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्वङ्ग इङ्गितम् ।

परिणामो विकारो द्वे समे विकृतिविक्रिये ॥ १५ ॥

अपहारस्त्वपचयः समाहारः समुच्चयः ।

प्रत्याहार उपादानं विहारस्तु परिक्रमः ॥ १६ ॥

(स्त्री०), क्षेपण (न०) ये दो नाम प्रेरणा (आज्ञा) के हैं । गीर्णि, गिरि ये दो (स्त्री०) नाम निगलनेके हैं । गुरण (न०), उद्यम (पु०) ये दो नाम भार आदि उठानेके उद्यमके हैं ॥ ११ ॥ उन्नाय, उन्नय ये दो (पु०) नाम उठानेके हैं । श्राय (पु०), श्रयण (न०) ये दो नाम सेवाके हैं । जयन (न०), जय (पु०) ये दो नाम जयके हैं । निगाद, निगद ये दो (पु०) नाम कथनके हैं । माद, मद ये दो (पु०) नाम मदके हैं । उद्वेग, उद्भ्रम ये दो (पु०) नाम उद्वेगके हैं ॥ १२ ॥ विमर्दन (न०), परिमल (पु०) ये दो नाम केसर आदिसे किये मर्दनके हैं । अभ्युपपत्ति (स्त्री०), अनुग्रह (पु०) ये दो नाम अनुग्रहके हैं । निग्रह यह एक (पु०) नाम अनङ्गीकारका है । अभियोग, अभिग्रह ये दो (पु०) नाम कलहमें पुकारनेके हैं ॥ १३ ॥ मुष्टिबंध, संग्राह ये दो (पु०) नाम मुट्टीसे दृढ पकड़नेके हैं । डिम्ब, ङमर, विप्लव ये तीन (पु०) नाम प्रलयके हैं । बंधन (न०), प्रसिति (स्त्री०), चार (पु०) ये तीन नाम बंधनके हैं । स्पर्श, स्पष्ट (ऋकारान्त), उपतप्त (ऋकारान्त) ये तीन (पु०) नाम उपताप नामक रोगविशेषके हैं ॥ १४ ॥ निकार, विप्रकार ये दो (पु०) नाम अपकारके हैं । आकार (पु०), इंग (पु०), इङ्गित (पु० न०) ये तीन नाम अभिप्रायके अनुरूप चिह्नित कियेके हैं । परिणाम, विकार ये दो (पु०) नाम प्रकृति बदलनेके हैं । विकृति, विक्रिया ये दो (स्त्री०) नाम विरुद्ध करनेके हैं ॥ १५ ॥ अपहार, अप-

अभिहारोऽभिग्रहणं निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।

अनुहारोऽनुकारः स्यादर्थस्यापगमे व्ययः ॥ १७ ॥

प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यात्प्रवहो गमनं बहिः ।

वियामो वियमो यामो यमः संयामसंयमौ ॥ १८ ॥

हिंसाकर्माभिचारः स्याज्जागर्या जागरा द्वयोः ।

विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रये ॥ १९ ॥

निर्वेश उपभोगः स्यात्परिसर्पः परिक्रिया ।

विधुरं तु प्रविश्लेषेऽभिप्रायश्छन्द आशयः ॥ २० ॥

संक्षेपणं समसनं पर्यवस्था विरोधनम् ।

परिसर्या परीसारः स्यादास्या त्वासना स्थितिः ॥ २१ ॥

चय ये दो (पु०) नाम अपहरण (छीन लेने) के हैं । समाहार, समु-
च्चय ये दो (पु०) नाम इकट्ठेके हैं । प्रत्याहार (पु०), उपादान (न०)
ये दो नाम इन्द्रियोंके खींचनेके हैं । विहार, परिक्रम ये दो (पु०)
नाम सैर करनेके हैं ॥ १६ ॥ अभिहार (पु०), अभिग्रहण (न०) ये
दो नाम चोरी करनेके हैं । निर्हार (पु०), अभ्यवकर्षण (न०) ये दो
नाम शिल्प आदि निकालनेके हैं । अनुहार, अनुकार ये दो (पु०) नाम
नकल करनेके हैं । व्यय यह एक (पु०) नाम खर्चका है ॥ १७ ॥ प्रवाह
(पु०), प्रवृत्ति (स्त्री०) ये दो नाम पानी आदिकी निरंतर गतिके हैं ।
प्रवह यह एक (पु०) नाम बाहिर वह निकलनेका है । वियाम, वियम,
याम, यम, संयाम, संयम ये छः (पु०) नाम संयमके हैं ॥ १८ ॥ हिंसा-
कर्मन् (नान्त न०) यह एक नाम मारणा आदि अभिचारका है ।
जागर्या (स्त्री०), जागरा (पु० स्त्री०) ये दो नाम जागनेके हैं ।
विघ्न, अंतराय, प्रत्यूह ये तीन (पु०) नाम विघ्नके हैं । उपघ्न यह एक
(पु०) नाम समीपभूत आश्रयका है ॥ १९ ॥ निर्वेश, उपभोग ये दो
(पु०) नाम उपभोगके हैं । परिसर्प (पु०), परिक्रिया (स्त्री०) ये दो
नाम परिजन आदिसे घिरे हुएके हैं । विधुर (न०), प्रविश्लेष (पु०) ये
दो नाम अत्यंत वियोगके हैं । अभिप्राय, छन्द, आशय ये तीन (पु०)
नाम अभिप्रायके हैं ॥ २० ॥ संक्षेपण, समसन ये दो (न०) नाम संक्षे-
पके हैं । पर्यवस्था (स्त्री०), विरोधन (न०) ये दो नाम विरोधके हैं ।

विस्तारो विग्रहो व्यासः स च शब्दस्य विस्तरः ।
 संवाहनं मर्दनं स्याद्विनाशः स्याददर्शनम् ॥ २२ ॥
 संस्तवः स्यात्परिचयः प्रसरस्तु विसर्पणम् ।
 नीवाकस्तु प्रयामः स्यात्संनिधिः सन्निकर्षणम् ॥ २३ ॥
 लवोऽभिलावो लवने निष्पावः पवने पवः ।
 प्रस्तावः स्यादवसरस्त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥
 प्रजनः स्यादुपसरः प्रश्रयप्रणयौ समौ ।
 धीशक्तिर्निष्क्रमोऽस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः ॥ २५ ॥
 प्रत्युत्क्रमः प्रयोगार्थः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।
 स्यादभ्यादानमुद्धात आरम्भः संभ्रमस्त्वरार ॥ २६ ॥

परिसर्या (स्त्री०), परिसार (पु०) ये दो नाम सब ओर फैले हुएके हैं ।
 आस्था, आसना, स्थिति ये तीन (स्त्री०) नाम आसनके हैं ॥ २१ ॥
 विस्तार, विग्रह, व्यास ये तीन (पु०) नाम विस्तारके हैं । विस्तर यह
 एक (पु०) नाम शब्दसंबंधी विस्तारका है । संवाहन, मर्दन ये दो
 (न०) नाम अंगमर्दनके हैं । विनाश (पु०), अदर्शन (न०) ये दो
 नाम लोपके हैं ॥ २२ ॥ संस्तव, परिचय ये दो (पु०) नाम परिचयके
 हैं । प्रसर (पु०), विसर्पण (न०) ये दो नाम घाव आदिके फैलनेके
 हैं । नीवाक, प्रयाम ये दो (पु०) नाम धन धान्य आदिके संग्रहके हैं ।
 सन्निधि (पु०), सन्निकर्षण (न०) ये दो नाम पड़ोसके हैं ॥ २३ ॥
 लव, अभिलाव, लवने ये तीन (पु०) नाम अन्न आदिको काटनेके हैं ।
 निष्पाव (पु०), पवन (न०), पव (पु०) ये तीन नाम अन्न आदिको
 पवित्र करनेके हैं । प्रस्ताव, अवसर ये दो (पु०) नाम प्रसंगके हैं ।
 त्रसर (पु०), सूत्रवेष्टन (न०) ये दो नाम जुलाहेके बनाये सूत्रवेष्टन-
 विशेषके हैं ॥ २४ ॥ प्रजन, उपसर ये दो (पु०) नाम गर्भग्रहणके हैं ।
 प्रश्रय, प्रणय ये दो (पु०) नाम प्रेमके हैं । धीशक्ति (स्त्री०), निष्क्रम ये
 दो नाम बुद्धिकी सामर्थ्यके हैं । तहां निष्क्रमशब्द (पु० न०) है । संक्रम,
 दुर्गसंचर ये दो (पु०) नाम दुर्गमार्गके हैं ॥ २५ ॥ प्रत्युत्क्रम, प्रयोग ये
 दो (पु०) नाम युद्धके अर्थ अत्यंत उद्योगके हैं । प्रक्रम, उपक्रम ये दो
 (पु०) नाम प्रथमारंभके हैं । अभ्यादान (न०), उद्धात (पु०), आरंभ

प्रतिबन्धः प्रतिष्ठम्भोऽवनायस्तु निपातनम् ।

उपलम्भस्त्वनुभवः समालम्भो विलेपनम् ॥ २७ ॥

विप्रलम्भो विप्रयोगो विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ।

विश्रावस्तु प्रतिख्यातिरवेक्षा प्रतिजागरः ॥ २८ ॥

निपाठनिपठौ पाठे तेमस्तेमौ समुन्दने ।

आदीनवास्रवौ क्लेशे मेलके सङ्गसंगमौ ॥ २९ ॥

संवीक्षणं विचयनं मार्गणं मृगणा मृगः ।

परिरम्भः परिष्वङ्गः संश्लेष उपगूहनम् ॥ ३० ॥

निर्वर्णनं तु निध्यानं दर्शनालोकनेक्षणम् ।

प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः ॥ ३१ ॥

(पु०) ये तीन नाम आरंभमात्रके हैं । संभ्रम (पु०), त्वरा (स्त्री०) ये दो नाम संवेगके हैं ॥ २६ ॥ प्रतिबन्ध, प्रतिष्ठं ये दो (पु०) नाम कार्यके करनेके हैं । अवनाय (पु०), निपातन (न०) ये दो नाम नीचेको गिरनेके हैं । उपलम्भ, अनुभव ये दो (पु०) नाम साक्षात्कारके हैं । समालम्भ (पु०), विलेपन (न०) ये दो नाम केसर आदिसे किये लेपके हैं ॥ २७ ॥ विप्रलम्भ, विप्रयोग ये दो (पु०) नाम वियोगके हैं । विलम्भ (पु०), अतिसर्जन (न०) ये दो नाम अत्यंत दानके हैं । विश्राव (पु०), प्रतिख्याति (स्त्री०) ये दो नाम अत्यंत प्रसिद्धिके हैं । अवेक्षा (स्त्री०), प्रतिजागर (पु०) ये दो नाम वस्तुओंको देखनेके हैं ॥ २८ ॥ निपाठ, निपठ, पाठ ये तीन (पु०) नाम पठनेके हैं । तेम (पु०), स्तेम (पु०), समुन्दन (न०) ये तीन नाम आर्दीभाव (गीले करने) के हैं । आदीनव, आस्रव, क्लेश ये तीन (पु०) नाम क्लेशके हैं । मेलक, संग, संगम ये तीन (पु०) नाम संगम (मेल) के हैं ॥ २९ ॥ संवीक्षण (न०), विचयन (न०), मार्गण (न०), मृगणा (स्त्री०), मृग (पु०) ये पांच नाम तात्पर्यसे वस्तुओंके ढूढनेके हैं । परिरम्भ (पु०), परिष्वंग (पु०), संश्लेष (पु०), उपगूहन (न०) ये चार नाम आलिङ्गनके हैं ॥ ३० ॥ निर्वर्णन, निध्यान, दर्शन, आलोकन, ईक्षण ये पांच (न०) नाम निरंतर देखनेके हैं । प्रत्याख्यान (न०), निरसन (न०), प्रत्यादेश (पु०), निराकृति (स्त्री०) ये चार नाम निराकरणके हैं ॥ ३१ ॥

उपशायो विशायश्च पर्यायशयनार्थकौ ।

अर्तनं च ऋतीया च हृणीया च घृणार्थकाः ॥ ३२ ॥

स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्यये ।

पर्यायोऽतिक्रमस्तस्मिन्नतिपात उपात्ययः ॥ ३३ ॥

प्रेषणं यत्समाहूय तत्र स्यात्प्रतिशासनम् ।

स संस्तावः ऋतुषु या स्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम् ॥ ३४ ॥

निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्धनः ।

स्तम्बघ्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो येन निहन्यते ॥ ३५ ॥

आविधो विध्यते येन तत्र विष्वक्समे निधः ।

उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्योत्क्षेपणार्थकौ ॥ ३६ ॥

निगारोद्गारविक्षावोद्ग्राहास्तु गरणादिषु ॥ ३७ ॥

आरत्यवरतिविरतय उपरामेऽथास्त्रियां तु निष्ठेवः ।

निष्ठ्यूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनमित्यभिन्नानि ॥ ३८ ॥

उपशाय, विशाय ये दो (पु०) नाम पहर आदिके अनुसार शयनके हैं । अर्तन (न०), ऋतीया (स्त्री०), हृणीया (स्त्री०), घृणा (स्त्री०) ये चार नाम करुणाके हैं ॥ ३२ ॥ व्यत्यास, विपर्यास, व्यत्यय, विपर्यय ये चार (पु०) नाम व्यतिक्रम (उलट पुलट) के हैं । पर्याय, अतिक्रम, अतिपात, उपात्यय ये चार (पु०) नाम अतिक्रमके हैं ॥ ३३ ॥ प्रतिशासन यह एक (न०) नाम नौकर आदिको बुलाके प्रेरित करनेका है । संस्ताव यह एक (पु०) नाम यज्ञोंमें वेदको गानेवाले ब्राह्मणोंके स्तवन-देशका है ॥ ३४ ॥ उद्धन यह एक (पु०) नाम जिस काठपर काठको स्थापित कर छीला जावे उस काठका है । स्तम्बघ्न, स्तम्बघन ये दो (पु०) नाम खुरपेके हैं ॥ ३५ ॥ आविध यह एक (पु०) नाम जिस करके वेधा जावे उस शस्त्रविशेष अर्थात् वर्मेका है । निधं यह एक (पु०) नाम सब ओरसे समानरूप वृक्षका है । उत्कार, निकार ये दो (पु०) नाम अन्नको ऊपर निकालनेके हैं ॥ ३६ ॥ निगार यह एक (पु०) नाम निगलनेका है । उद्गार यह एक (पु०) नाम वमनका है । विक्षाव यह एक (पु०) नाम छींकका है । उद्ग्राह यह एक (पु०) नाम ऊपरको करके ग्रहण करनेका है ॥ ३७ ॥ आरति, अवरति, विरति, उपराम ये चार नाम उप-

जवने जूतिः सातिस्त्ववसाने स्यादथ ज्वरे जूर्तिः ।

उदजस्तु पशुप्रेरणमकरणिरित्यादयः शापे ॥ ३९ ॥

गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवकादिकम् ।

आपूपिकं शाष्कुलिकमेवमाद्यमचेतसाम् ॥ ४० ॥

माणवानां तु माणव्यं सहायानां सहायता ।

हल्या हलानां ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विजन्मनाम् ॥ ४१ ॥

द्वे पशुकानां पृष्ठानां पार्श्वे पृष्ठचमनुक्रमात् ।

खलानां खलिनी खल्याप्यथ मानुष्यकं नृणाम् ॥ ४२ ॥

ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या पृथक्पृथक् ।

अपि साहस्रकारीषवार्मणार्थवणादिकम् ॥ ४३ ॥

इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

रामके हैं । उपराम (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । निष्ठेव (पु० न०), नि-
ष्ठ्युति (स्त्री०), निष्ठेवन (न०), निष्ठीवन (न०) ये चार नाम
एकनेके हैं ॥ ३८ ॥ जवन (न०), जूति (स्त्री०) ये दो नाम वेगके
हैं । साति (स्त्री०), अवसान (न०) ये दो नाम अंतके हैं । ज्वर
(पु०), जूर्ति (स्त्री०) ये दो नाम ज्वरके हैं । उदज यह एक (पु०)
नाम पशुओंके प्रेरणाका है । अकरण (पु०), अजनानि, अवग्राह,
निग्राह आदि शब्द शापके वाचक हैं ॥ ३९ ॥ अपत्यार्थ प्रत्ययांत औपगव
आदि शब्दोंसे “ उसका समूह ” इस अर्थमें औपगवक आदि जानने ।
जैसे-‘उपगोरपत्यानि पुमांसः औपगवास्तेषां समूहः औपगवकम्’ और यह
एक (न०) नाम उपगुकी संतानोंके समूहका है । आपूपिक यह एक (न०)
नाम जड़रूप अपूप अर्थात् मालपुत्रे आदिके समूहका है । शाष्कुलिक
यह एक (न०) नाम शष्कुली अर्थात् पूरियोंके समूहका है ॥ ४० ॥
माणव्य यह एक (न०) नाम माणव अर्थात् बालकोंके समूहका है ।
सहायता यह एक (स्त्री०) नाम सहायोंके समूहका है । हल्या यह एक
(स्त्री०) नाम हलोंके समूहका है । ब्राह्मण्य, वाडव्य ये दो (न०)
नाम ब्राह्मणोंके समूहके हैं ॥ ४१ ॥ पार्श्व यह एक (न०) नाम पार्श्वका
अर्थात् अस्थिविशेषके समूहका है । पृष्ठच यह एक (न०) नाम पृष्ठोंके
समूहका है । खलिनी, खल्या ये दो (स्त्री०) नाम खलोंके समूहके हैं ।
मानुष्यक यह एक (न०) नाम मनुष्योंके समूहका है ॥ ४२ ॥ ग्रामता

अथ नानार्थवर्गः ३ ।

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः ।

भूरिप्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥

आकाशे त्रिदिवे नाको लोकस्तु भुवने जने ।

पद्मे यशसि च श्लोकः शरे खड्गे च सायकः ॥ २ ॥

जम्बुकौ क्रोष्ठवरुणौ पृथुकौ चिपिटार्भकौ ।

आलोकौ दर्शनद्योतौ भेरीपटहमानकौ ॥ ३ ॥

यह एक (स्त्री०) नाम ग्रामोंके समूहका है । जनता यह एक (स्त्री०) नाम जनोंके समूहका है । धूम्या यह एक (स्त्री०) नाम धूमोंके समूहका है । पाश्या यह एक (स्त्री०) नाम पाशोंके समूहका है । गल्या यह एक (स्त्री०) नाम गल अर्थात् बृहत्काशोंके समूहका है । साहस्य यह एक (न०) नाम सहस्रोंके समूहका है । कारीष यह एक (न०) नाम करीष अर्थात् सूखे हुए गोबरके आरनोंके समूहका है । वार्मण यह एक (न०) नाम वर्म अर्थात् कवचोंके समूहका है । आथर्वण यह एक (न०) नाम अथर्वणोंके समूहका है । चार्मण यह एक नाम चर्मोंके समूहका है ॥ ४ ॥

इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

अथ नानार्थवर्गः । जो यह कहो कि किसलिये अनेकार्थोंका आरम्भ किया जाता है । क्योंकि वे शब्द तो पूर्वोक्त वर्गोंमें कहे गये हैं और जो यहांभी कहे जावेंगे तो पहले क्यों कहे हैं ? तहां कहते हैं कि यहां वक्ष्यमाण कान्त आदि वर्गोंमें कितनेही अनेक अर्थवाले कहे हैं और प्रागुक्त पर्यायोंमें नहीं और बहुतसे प्रयोग कवियोंने काव्य आदिकोंमें अधिक-तासे कहे हैं वेही पूर्वोक्त पर्यायोंमें दीखते हैं । जैसे नाकशब्द पूर्व कहे वर्गोंमें स्वर्ग और आकाशका वाची कहा है वह फिर यहां कहा जावेगा और जंबुक शब्द गीदड़के नामोंमें कहा है और वरुणके नामोंमें नहीं इसलिये यहां फिर कहा जावेगा ॥ १ ॥ नाक यह एक (पु०) नाम आकाश और स्वर्गका है । लोक यह एक (पु०) नाम स्वर्ग आदिका और जनका है । श्लोक यह एक (पु०) नाम अनुष्टुप् आदि पद्य और यशका है । सायक यह एक (पु०) नाम शर और तरवारका है ॥ २ ॥ जंबुक यह एक (पु०) नाम गीदड़ और वरुणका है । पृथुक यह एक (पु०)

उत्सङ्गचिह्नयोरङ्कः कलङ्कोऽङ्गापवादयोः ।
 तक्षको नागवर्धकयोरर्कः स्फटिकसूर्ययोः ॥ ४ ॥
 मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोम्बुनोः ।
 स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ५ ॥
 उल्लूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः ।
 कमण्डलौ च करकः सुगते च विनायकः ॥ ६ ॥
 किष्कुर्हस्ते वितस्तौ च शूककीदे च वृश्चिकः ।
 प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिष्वेकदेशे तु पुंस्ययम् ॥ ७ ॥
 स्याद्भूतिकं तु भूनिम्बे कतृणे भूस्तृणेऽपि च ।
 ज्योत्स्निकायां च घोषे च कोशातक्यथ कट्फले ॥ ८ ॥
 सिते च खदिरे सोमवल्कः स्यादथ सिल्लके ।
 तिलकल्के च पिण्याको बाह्लीकं रामठेऽपि च ॥ ९ ॥

राम भूने चांवल और बालकका है । आलोक यह एक (पु०) नाम
 रोखना और प्रकाशका है । आनक यह एक (पु०) नाम भेरी और
 मृदंगका है ॥ ३ ॥ अंक यह एक (पु०) नाम गोद और चिह्नका है ।
 कलंक यह एक (पु०) नाम चिह्न और अपवादका है । तक्षक यह एक
 (पु०) नाम नागका और बढईका है । अर्क यह एक (पु०) नाम
 स्फटिकमणि और सूर्यका है ॥ ४ ॥ क यह एक (पु०) नाम वायु,
 ब्रह्मा, सूर्य इन्होंका है और यही (न०) नाम शिर और जलका
 है । पुलाक यह एक (पु०) नाम तुच्छ अन्न और अन्नके अवयवका है
 ॥ ५ ॥ पेचक यह एक (पु०) नाम उल्लू और हाथीकी पुच्छके मूलके
 गुदाच्छादक मांसका है । करक यह एक (पु० न०) नाम कमंडलु और
 चकारसे आकाशसे वर्षे हुए ओलेका है । विनायक यह एक (पु०) नाम
 वृद्धका और चकारसे गणेशका है ॥ ६ ॥ किष्कु यह एक (पु०) नाम हाथ
 और बिलस्तका है । वृश्चिक यह एक (पु०) नाम शूककीड़ा और चका-
 रसे विच्छूका है । प्रतीत यह एक शब्द प्रतिकूलका वाची (त्रि०) है और
 अवयवका वाची (पु०) है ॥ ७ ॥ भूतिक यह एक (न०) नाम चिरा-
 यता और गंध तृणविशेषका है । कोशातकी यह एक (स्त्री०) नाम
 कडवी तोरई और उंगाका है ॥ ८ ॥ सोमवल्क यह एक (पु०) नाम

महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालग्राहिषु कौशिकः ।

रुक्तापशङ्कास्वातङ्कः स्वल्पेऽपि क्षुल्लकस्त्रिषु ॥ १० ॥

जैवातृकः शशाङ्केऽपि खुरेऽप्यश्वस्य वर्तकः ।

व्याघ्रेऽपि पुण्डरीको ना यवान्यामपि दीपकः ॥ ११ ॥

शालावृकाः कपिक्रोष्टृश्चानः स्वर्णेऽपि गैरिकम् ।

पीडार्थेऽपि व्यलीकं स्यादलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ १२ ॥

शीलान्वयावनूके द्वे शल्के शकलवलकले ।

साष्टे शते सुवर्णानां हेमन्युरोभूषणे पले ॥ १३ ॥

दीनारेऽपि च निष्कोऽस्त्री कल्कोऽस्त्री शमलैनसोः ।

दम्भेऽप्यथ पिनाकोऽस्त्री शूलशंकरधन्वनोः ॥ १४ ॥

कायफल और सुपेद खैरका है । पिण्याक यह एक (पु० न०) नाम पण्यभेदका और स्नेहरहित तिलोंके चूर्णका है । बालहीक यह एक (न०) नाम हाँगका और चकारसे बालहीक देशका और घोडेका है ॥ ९ ॥ कौशिक यह एक (पु०) नाम इन्द्र, गुग्गुल, उलू, सर्पग्राही, विश्वामित्र और नौलेका है । आतंक यह एक (पु०) नाम रोग, ताप, शंका, भय इन्हींका है । क्षुल्लक यह एक (त्रि०) नाम स्वल्पका और अपिशब्दसे नीच, दरिद्रका है ॥ १० ॥ जैवातृक यह एक (त्रि०) नाम चंद्रमाका और अपिशब्दसे दीर्घायु और कुशाका है । वर्तक यह एक (पु०) नाम अश्वके खुरका और अपिशब्दसे बतक पक्षीका है । पुण्डरीक यह एक (पु०) नाम वधेराका और अपिशब्दसे (न०) सुपेद कमलका है । दीपक यह एक (पु०) नाम अजमानका और अपिशब्दसे प्रकाशका है ॥ ११ ॥ शालावृक यह एक (पु०) नाम वानर, गीदड, कुत्ता इन्हींका है । गैरिक यह एक (न०) नाम सोनेका और अपिशब्दसे गेरूका है । व्यलीक यह एक (न०) नाम अप्रियका और पीडाका है । अलीक यह एक (न०) नाम अप्रिय और झूठका है ॥ १२ ॥ अनूक यह एक (न०) नाम स्वभावका और वंशका है । शल्क यह एक (न०) नाम खंड और छालका है । निष्क यह एक (पु० न०) नाम सोनेके १०८ कर्षोंका, सुवर्णका, छातीके गहनेका, पलभर सोनेका ॥ १३ ॥ और व्यवहारके अनुसार द्रव्यभेदका है । कल्क यह एक (पु० न०)

धेनुका तु करेष्वां च मेघजाले च कालिका ।
 कारिका यातनावृत्योः कर्णिका कर्णभूषणे ॥ १५ ॥
 करिहस्तेंऽगुलौ पद्मबीजकोश्यां त्रिषूत्तरे ।
 वृन्दारकौ रूपमुख्यावेके मुख्यान्यकेवलाः ॥ १६ ॥
 स्याद्दाम्भिकः कौकुटिको यश्चादूरेरितेक्षणः ।
 लालाटिकः प्रभोर्भालदर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ १७ ॥
 “भूभृन्नितम्बवलयचक्रेषु कटकौऽस्त्रियाम् ।
 सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च रोमहर्षे च कण्टकः ॥
 पाकौ पक्तिशिशू मध्यरत्ने नेतरि नायकः ।
 पर्यङ्कः स्यात्परिकरे स्याद्व्याघ्रेऽपि च लुब्धकः ॥

नाम विष्ठा और पाप और पाखंडका है । पिनाक यह एक (पु० न०)
 नाम त्रिशूल और महादेवके धनुषका है ॥ १४ ॥ धेनुका यह एक
 (स्त्री०) नाम हथनीका और चकारसे नवीन व्याई हुई गौका है । का-
 लिका यह एक (स्त्री०) नाम मेघके समूहका और चकारसे कालिका-
 देवीका है । कारिका यह एक (स्त्री०) नाम नरकयातनाका और विव-
 रणश्लोकका है । कर्णिका यह एक (स्त्री०) नाम कानकी तरकी
 ॥ १५ ॥ हाथीकी सूंडके अग्रभाग, अंगुली, कमलके बीजका गुच्छा
 इन्हींका है । इससे आगे और खांतशब्दोंसे पहले सब शब्द (त्रि०) हैं ।
 वृन्दारक यह एक नाम देवताका, रूपवालेका और मुख्यका है । एकशब्द
 मुख्य, अन्य और केवल इन्हींका वाचक है ॥ १६ ॥ कौकुटिक यह एक
 नाम मायावीका और जो समीप प्रेरित किये नेत्रोंवाला हो उसका है ।
 लालाटिक यह एक नाम स्वामीके मस्तकको देखनेवालेका और कार्य कर-
 नेमें असमर्थका है ॥ १७ ॥ “ कटक यह एक (पु० न०) नाम पर्वत
 नितम्ब, कडा, चक्र इनका है । कंठक यह एक (पु०) नाम सूईका
 अग्र, छोटा शत्रु, रोमोंका उगना इनका है । पाक यह एक (पु०) नाम
 पाक और बालक इनका है । नायक यह एक (पु०) नाम मध्यरत्न और
 प्रभुका है । पर्यंक यह एक (पु०) नाम पर्यंक और समूहका है । लुब्धक
 यह एक (पु०) नाम वधेरा और लुब्धकका है । पाठान्तरसे लुब्धक नाम
 आर्द्रानक्षत्रकाभी है । पेशक यह एक (त्रि०) नाम समूह और संदूकका

पेटकस्त्रिषु वृन्देऽपि गुरौ देश्ये च देशिकः ।
 खेटकौ ग्रामफलकौ धीवरेऽपि च जालिकः ॥
 पुष्परेणौ च किञ्जलकः शुल्कोऽस्त्री स्त्रीधनेऽपि च ।
 स्यात्कल्लोलेऽप्युत्कलिका वार्धकं भाववृन्दयोः ॥
 करिण्यां चापि गणिका दारकौ बालभेदकौ ।
 अन्धेऽप्यनेडमूकः स्यादृङ्गौ दर्पाश्मदारणौ ॥ ”

इति कान्ताः ।

मयूखस्त्रिवट्करज्वालास्वलिबाणौ शिलीमुखौ ।
 शङ्खो निधौ ललाटास्थिन कम्बौ न स्त्रीन्द्रियेऽपि खम् ॥ १८ ॥
 घृणिज्वाले अपि शिखे-

इति खान्ताः ।

शैलवृक्षौ नगावगौ ।

आशुगौ वायुविशिखौ शरार्कविहगाः खगाः ॥ १९ ॥

हे । देशिक यह एक (पु०) नाम गुरु और देशमें होनेवालेका है । खेटक यह एक (पु०) नाम ग्राम और फलकका है । जालिक यह एक (पु०) नाम घीमर और जालीका है । किंजल्क यह एक (पु०) नाम पुष्परेणुक और किंजल्कका है । शुल्क यह एक (पु० न०) नाम स्त्रीधनका है । उत्कलिका यह एक (स्त्री०) नाम लहरियोंका है । वार्धक यह एक (न०) नाम भाव और समूहका है । गणिका यह एक (स्त्री०) नाम हथिन और वेश्याका है । दारक यह एक (पु०) नाम बालक और भेदनेवालेका है । अवेडमूक यह एक (पु०) नाम आंधरेका है । टंक यह एक (पु०) नाम गर्व और टांकीका है । ” यहां ककारांत शब्द समाप्त हुए ॥ मयूख यह एक (पु०) नाम शोभा, किरण, ज्वाला इन्हींका है । शिलीमुख यह एक (पु०) नाम भौंरेका और बाणका है । शंख यह एक (पु०) नाम खजाना, मस्तककी हड्डी और शंख इन्हींका है जब शंखवाची है तब (पु० न०) है । ख यह एक (न०) नाम इन्द्रिय, पुर, क्षेत्र, शून्य बिन्दु, आकाश, संवेदन, देवलोक, कल्याण इन्हींका वाची है ॥ १८ ॥ शिखा यह एक (स्त्री०) नाम किरणका और चौटीका है ॥ यहां खकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ नग, अग ये दोनों (पु०) नाम पर्वतके और

पतङ्गौ पक्षिसूर्यौ च पूगः क्रमुकवृन्दयोः ।

पशवोऽपि मृगा वेगः प्रवाहजवयोरपि ॥ २० ॥

परागः कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ रजस्यपि ।

गजेऽपि नागमातङ्गावपाङ्गस्तिलकेऽपि च ॥ २१ ॥

सर्गः स्वभावनिर्मोक्षनिश्चयाध्यायसृष्टिषु ।

योगः संनहनोपायध्यानसंगतियुक्तिषु ॥ २२ ॥

भोगः सुखे रुयादिभृतावहेश्च फणकाययोः ।

चातके हरिणे पुंसि सारङ्गः शबले त्रिषु ॥ २३ ॥

कपौ च प्लवगः शापे त्वभिषङ्गः पराभवे ।

यानाद्यङ्गे युगः पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु ॥ २४ ॥

वृक्षके हैं । आशुग यह एक (पु०) नाम वायुका आर बाणका है । खग यह एक (पु०) नाम बाण, पक्षी और सूर्यका है ॥ १९ ॥ पतंग यह एक (पु०) नाम पक्षी, सूर्य और शालिचावलके भेदका है । पूग यह एक (पु०) नाम सुपारीके वृक्ष और समूहका है । मृग यह एक (पु०) नाम पशुका, मृगशिरका और टूटनेका है । वेग यह एक (पु०) नाम प्रवाहका और वेगका है और अपिशब्दसे विष्टाको गुदासे बाहिर निकासनेका है ॥ २० ॥ पराग यह एक (पु०) नाम फूलसंबंधी रेणु और स्नानके योग्य गंधके चूर्णविशेषका है और अपिशब्दसे उपरागका है । नाग, मातंग ये दो (पु०) नाम हस्तीके और अपिशब्दसे सर्प, नागकेसर, पानवेल आदिके हैं । अपांग यह एक (पु०) नाम तिलकका और अपिशब्दसे नेत्रके अन्तर्भाग और अंगहीनका है ॥ २१ ॥ सर्ग यह एक (पु०) नाम स्वभाव, त्याग, निश्चय, अध्याय, सृष्टि इन्होंका है । योग यह एक (पु०) नाम कवच, उपाय, ध्यान, संगति, युक्ति इन्होंका है ॥ २२ ॥ भोग यह एक (पु०) नाम सुख, पण्यस्त्री, हस्ती घोडे आदिका मूल्य, पालन वा भरना, सर्पके फण और शरीर इनका है । सारंग यह एक (पु०) नाम पपैया और हिरणका है और शबलका वाची (त्रि०) है ॥ २३ ॥ प्लवग यह एक (पु०) नाम वानर और चकारसे मेंढक और सारथि आदिका है । अभिषंग यह एक (पु०) नाम शापका और तिरस्कारका है । युग यह एक नाम रथ गाडे आदिके अवयवमें (पु०) है और जोड़ा और सत्ययुग

स्वर्गेषु पशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले ।

लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौर्लिङ्गं चिह्नशेफसोः ॥ २५ ॥

शृङ्गं प्राधान्यसान्वोश्च वराङ्गं मृधगुह्ययोः ।

भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नार्ककीर्तिषु ॥ २६ ॥

इति गान्ताः ।

परिघः परिघातेऽस्त्रेऽप्योघो वृन्देऽम्भसां गये ।

मूल्ये पूजाविधावर्घोऽहोदुःखव्यसनेष्वघम् ॥ २७ ॥

त्रिष्विष्टेऽल्पे लघुः—

इति घान्ताः ।

काचाः शिष्यमृद्देदद्युजः ।

विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः पादके शुचिः ॥ २८ ॥

मास्यमात्ये चाप्युपधे पुंसि मेध्यं सिते त्रिषु ।

अभिष्वङ्गे स्पृहायां च गभस्तौ च रुचिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥

इति चान्ताः ।

आदिका वाची (न०) है ॥ २४ ॥ गो यह एक नाम स्वर्ग, बाण, पशु, वाणी, वज्र, दिशा, नेत्र, किरण, पृथ्वी, पानी इन्हींका है और प्रयोगके अनुसार (स्त्री०) और (पु०) है । लिंग यह एक (न०) नाम चिह्नका और लिंगइन्द्रियका है ॥ २५ ॥ शृंग यह एक (न०) नाम प्रधानपना, शिखर और चकारसे पशुके सींगका है । वरांग यह एक (न०) नाम शिरका और योनिका है । भग यह एक (न०) नाम लक्ष्मी, काम, ऐश्वर्य, वीर्य, यत्न, अर्क, कीर्ति इन्हींका है ॥ २६ ॥ यहां गकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ परिघ यह एक (पु०) नाम लोहेकी लाठीका और आदि शब्दसे योगभेदका है । ओघ यह एक (पु०) नाम समूह और पानीके प्रवाहका है । अर्घ यह एक (पु०) नाम मोलका और पूजाके जलका है । अघ यह एक (न०) नाम पाप, दुःख अर्थात् बुढ़ापा मरण आदि, व्यसन अर्थात् शिकार जूआ खेलने आदिका है ॥ २७ ॥ लघु यह एक (त्रि०) नाम मनोवांछित और अल्पका है ॥ यहां घकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ काच यह एक (पु०) नाम छींक, कांच, नेत्ररोग इन्हींका है । प्रपञ्च यह एक (पु०) नाम विपरीतपनेका और विस्तारका है । शुचि यह एक नाम अग्निका ॥ २८ ॥ और आपाढ महीना, मंजी तथा शुद्ध चित्तवाले

“ प्रसन्ने भल्लुकैऽप्यच्छो गुच्छः स्तवकहारयोः ।
परिधानाश्वले कच्छो जलप्रान्ते त्रिलिङ्गकः ॥ १ ॥ ”

इति क्षेपसाश्छान्ताः ।

केकिताक्ष्यावहिभुजौ दत्तविप्राण्डजा द्विजाः ।
अज। विष्णुहरच्छागा गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ॥ ३० ॥
धर्मराजौ जिनयमौ कुञ्जौ दन्तेऽपि न स्त्रियाम् ।
वलजे क्षेत्रपूद्गारे वलजा वलगुदर्शना ॥ ३१ ॥
समे क्षमांशे रणेऽप्याजिः प्रजा स्यात्सन्ततौ जने ।
अब्जौ शंखशशाङ्कौ च स्वके नित्ये निजं त्रिषु ॥ ३२ ॥
इति जान्ताः ।

हे और (पु०) है । पवित्रमें और शुक्लवर्णमें (त्रि०) है । रुचि यह एक (स्त्री०) नाम मिलाप, बहुत इच्छा, किरण इन्होंका है और चकारसे शोभाका है ॥ २९ ॥ यहां चकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ “ अच्छ यह एक (पु०) नाम रीछ, प्रसन्न और अपिशब्दसे स्फटिकका है । गुच्छ यह एक (पु०) नाम गुच्छेका और हारका है । कच्छ यह एक नाम धोती आदि पहिरनेके वस्त्रका किनारा, नावका अंगविशेष, जलप्रायदेश इन्होंका है । तहां वस्त्रवाची (पु०) है और तट नौकाद्वादिवाची (त्रि०) है । ” यहां छकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ अहिभुज यह एक (पु०) नाम मोरका और गरुड (और नौले) का है । द्विज यह एक (पु०) नाम दांत, ब्राह्मण, पक्षी इन्होंका है । अज यह एक (पु०) नाम विष्णु, महादेव, बकरा इन्होंका है । व्रज यह एक (पु०) नाम गौओंका स्थान, मार्ग, समूह इनका है ॥ ३० ॥ धर्मराज यह एक (पु०) नाम जिन अर्थात् बुद्धदेवता और यमदेवता और युधिष्ठिरका है । कुंज यह एक (पु० न०) नाम हस्तीके दांतका और निकुञ्जका है । वलज यह एक (न०) नाम खेत और नगरके द्वारका है । वलजा यह एक (स्त्री०) नाम सुन्दर स्त्रीका है ॥ ३१ ॥ आजि यह एक (स्त्री०) नाम समानरूप पृथ्वीभागका और युद्धका है । प्रजा यह एक (स्त्री०) नाम संतानका और जनका है । अब्ज यह एक (पु०) नाम शंखका और चन्द्रमाका है । निज यह एक

पुंस्यात्मनि प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो वाच्यलिङ्गकः ।
संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यैश्चार्थसूचना ॥ ३३ ॥

इति जान्ताः ।

काकेभगण्डौ करटौ गजगण्डकटी कटौ ।
शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ॥ ३४ ॥
देवशिलिपन्यपि त्वष्टा दिष्टं देवेषु न द्वयोः ।
रसे कटुः कटुकार्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः ॥ ३५ ॥
रिष्टं क्षेमाशुभाभावेष्वरिष्टे तु शुभाशुभे ।
मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु ॥ ३६ ॥
अयोधने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् ।
सूक्ष्मैलायां त्रुटिः स्त्री स्यात्कालेऽल्पे संशयेऽपि सा ॥ ३७ ॥

(त्रि०) नाम अपना और नित्यका है ॥ ३२ ॥ यहाँ जकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ क्षेत्रज्ञ यह एक नाम आत्माका वाची (पु०) है और कुशलका वाची (त्रि०) है । संज्ञा यह एक (स्त्री०) नाम बुद्धि, नाम और हाथ भौंह लोचन आदिसे अर्थकी सूचना करनेका है । गायत्री और सूर्यकी स्त्रीकोभी कहते हैं ॥ ३३ ॥ यहाँ जकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ करट यह एक (पु०) नाम काकका और हाथीके कपोलका है । कट यह एक (पु०) नाम हाथीके कपोलका और काटिका और चटाईका है । शिपिविष्ट यह एक (पु०) नाम बालोंसे रहित शिरवाला, दुष्टचामवाला और महादेवका है ॥ ३४ ॥ त्वष्टृ (ऋकारान्त) यह एक (पु०) नाम विश्वकर्माका और अपिशब्दसे सूर्यविशेष तथा खातीका है । दिष्ट यह एक नाम देवका वाची (न०) है और कालका वाची (पु०) है । कटु यह एक नाम रसका वाची (पु०) है और अकार्यका वाची (न०) है । मत्सर और तीक्ष्णका वाची (त्रि०) है ॥ ३५ ॥ रिष्ट यह एक (न०) नाम कुशल, अमंगल, अशुभके अभावका है । अरिष्ट यह एक (न०) नाम शुभ अशुभका है । सोवडका घर, मदिरा और मरणके चिह्नकाभी है ॥ ३६ ॥ कूट यह एक (पु० न०) नाम माया, निश्चलयन्त्र, कपट, झूठ, समूह, लोहेका समूह, पर्वतका शिखर, हलका अंग इन्हींका है । त्रुटि यह एक (स्त्री०) नाम छोटी इलायचीका है और कालभेद, लेश, सन्देह इन्हींका है ॥ ३७ ॥

आत्युत्कर्षाश्रयः कोट्यो मूले लग्नकचे जटा ।
 व्युष्टिः फले समृद्धौ च दृष्टिर्ज्ञानेऽक्षिण दर्शने ॥ ३८ ॥
 इष्टिर्यागेच्छयोः सृष्टं निश्चिते बहुनि त्रिषु ।
 कष्टे तु कृच्छ्रगहने दक्षामन्दागदेषु च ॥ ३९ ॥
 पटुर्दौ वाच्यलिङ्गौ च-

इति टान्ताः ।

नीलकण्ठः शिवेऽपि च ।

पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुसूलोऽन्तर्गृहं तथा ॥ ४० ॥
 निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि ।
 त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि कनिष्ठोऽतियुवाल्पयोः ॥ ४१ ॥
 इति ठान्ताः ।

दण्डोऽस्त्री लगुडेऽपि स्याद्दण्डो गोलेक्षुपाकयोः ।

सर्पमांसात्पशू व्याडौ गोभूवाचस्त्विडा इलाः ॥ ४२ ॥

कोटि यह एक (स्त्री०) नाम धनुषके अग्रभाग, प्रकर्ष, कोण, संख्याभेद इन्होंका है । जटा यह एक (स्त्री०) नाम मूल, मिले हुए बाल, जटामांसी इन्होंका है । व्युष्टि यह एक (स्त्री०) नाम फलका और समृद्धिका है । दृष्टि यह एक (स्त्री०) नाम ज्ञान, आंख, देखना इन्होंका है ॥ ३८ ॥ इष्टि यह एक (स्त्री०) नाम यज्ञका और इच्छाका है । सृष्ट यह एक (त्रि०) नाम निश्चय आर बहुतका है । कष्ट यह एक नाम दुःखका और दुःखसे प्राप्त हो सकनेवाली वस्तुका है ॥ ३९ ॥ पटु यह एक नाम चतुर, तीक्ष्ण, रोगहीन इन्होंका है । कष्ट और पटु ये दोनों शब्द वाच्यलिङ्गी हैं । यहां टकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ नीलकंठ यह एक (पु०) नाम महादेवका और अपि-शब्दसे मोरका है । कोष्ठ यह एक (पु०) नाम पेटके भीतर अन्नके मकानका, कुठीलेका और भीतरके घरका है ॥ ४० ॥ निष्ठा यह एक (स्त्री०) नाम सिद्धि, नहीं दीखना, नाश इन्होंका है । काष्ठा यह एक (स्त्री०) नाम उत्कर्ष, स्थिति और दिशाका है । ज्येष्ठ यह एक (त्रि०) नाम अत्यंत उत्तमका है और अपिशब्दसे अत्यंत वृद्ध, बड़ा और जेठ मही-त्रेका है । कनिष्ठ यह एक (त्रि०) नाम बालकका और अल्पका है ॥ ४१ ॥ यहां ठकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ दंड यह एक (पु० न०) नाम

क्षेडा वंशशलाकाऽपि नाडी नालेऽपि षट्क्षणे ।

काण्डोऽस्त्री दण्डवाणार्वावर्गवसरवारिषु ॥ ४३ ॥

स्याद्वाण्डमश्वाभरणेऽमत्रे मूलवणिग्धने ।

इति ङान्ताः ।

भृशप्रतिज्ञयोर्बाह्वं प्रगाढं भृशकृच्छ्रयोः ॥ ४४ ॥

शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ ।

इति ङान्ताः ।

भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे बाणो बलिसुते शरे ॥ ४५ ॥

कणोऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे संघाते प्रमथे गणः ।

पणो द्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूलये धनेऽपि च ॥ ४६ ॥

लाठीका और अपिशब्दसे मानभेद और दंडका है । गुड यह एक (पु०) नाम गोलेका और गुडका है । व्याड यह एक (न०) नाम सर्पके मांसके खानेवाले और पशुका है । इडा और इला ये दो (स्त्री०) नाम गा, पृथ्वी, वाणी इन्होंके हैं और इला यह एक नाम बुधकी स्त्रीकाभी है ॥ ४३ ॥ क्षेडा यह एक (स्त्री०) नाम वंशकी सलाई और अपिशब्दसे विषका है तहां विषका वाची (पु०) है । नाडी यह एक (स्त्री०) नाम नालका और छः क्षणपरिमित कालका अर्थात् घडीका है । कांड यह एक (पु०) नाम दंड, बाण, घोडा, वर्ग, अन्नसर, पानी इन्होंका है ॥ ४४ ॥ मांड यह एक (न०) नाम घोड़ेके भूषण, पात्र, मूलरूप वैश्यके धनका है । यहां ङकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ बाढ यह एक (न०) नाम अत्यंतका और प्रतिज्ञाका है । प्रगाढ यह एक (न०) नाम अत्यंतका और दःखका है ॥ ४४ ॥ दृढ यह एक (त्रि०) नाम समर्थका और स्थूलका है । व्यूढ यह एक (त्रि०) नाम धरोहरका और समूहका है ॥ यहां ङकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ भ्रूण यह एक (पु०) नाम बालकका और स्त्रीके गर्भका है । बाण यह एक (पु०) नाम बलिके पुत्रका और शरका है ॥ ४५ ॥ कण यह एक (पु०) नाम अत्यंत छोटेका और अन्नके अंशका है । गण यह एक (पु०) नाम समूहका और महादेवके गणका है । पण यह एक (पु०) नाम जूआ आदिकी बाजी, वेतन मोल, धन और अपिशब्दसे

मौर्व्या द्रव्याश्रिते सत्त्वशौर्यसंध्यादिके गुणः ।

निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयोः क्षणः ॥ ४७ ॥

वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ वर्णं तु वाऽक्षरे ।

अरुणो भास्कोऽपि स्याद्दर्णभेदेऽपि च त्रिषु ॥ ४८ ॥

स्थाणुः शर्वोऽप्यथ द्रोणः काकेऽप्याजौ रवे रणः ।

ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु ॥ ४९ ॥

ऊर्णा मेषादिलोम्नि स्यादावर्ते चान्तरा भ्रुवोः ।

हरिणी स्थान्मृगी हेमप्रतिमा हारिता च या ॥ ५० ॥

त्रिषु पाण्डौ च हरिणः स्थूणा स्तम्भेऽपि वेश्मनः ।

तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे जुगुप्साकरुणे घृणे ॥ ५१ ॥

वणिक्पथे च विपणिः सुग प्रत्यक् च वारुणी ।

करेणुरिभ्यां स्त्री नेमे द्रविणं तु बलं धनम् ॥ ५२ ॥

खरीदनेके योग्य शाक आदिका है ॥ ४६ ॥ गुण यह एक (पु०) नाम धनुषकी डोरी, रस गंध आदि, सत्व, रज, तम, चतुरपना, संधि विग्रह आदि इन्होंका है । क्षण यह एक (पु०) नाम चुप चाप रहना, काल विशेष, उत्सव इन्होंका है ॥ ४७ ॥ वर्ण यह एक (पु०) नाम ब्राह्मण आदि वर्ण, सुपद आदि रंग, स्तुति इन्होंका है और अक्षरका वाची (पु० न०) है । अरुण यह एक (पु०) नाम सूर्यका और अपिशब्दसे सूर्यके सारथिका है । और कपिल वर्ण, संध्याका राग इन्होंका वाचक (त्रि०) है ॥ ४८ ॥ स्थाणु यह एक (पु०) नाम महादेवका और स्तंभ आदिका है । द्रोण यह एक (पु०) नाम द्रोणाचार्य, तोलविशेष, काक इन्होंका है । रण यह एक (पु०) नाम युद्धका और शब्दका है । ग्रामणी यह एक नाम नाईका वाची (पु०) है । अत्यंत उत्तम और ग्रामके मालिकका वाची (त्रि०) है ॥ ४९ ॥ ऊर्णा यह एक (स्त्री०) नाम मेंढा आदिके रोम, भृकुटियोंके घेरका है । हरिणी यह एक (स्त्री०) नाम मृगी, सोनेकी मूर्ति, हरे वर्णवाली इन्होंका है ॥ ५० ॥ हरिण यह एक (त्रि०) नाम पांडुर वर्णका और चकारसे मृगके भेदका है । स्थूणा यह एक (स्त्री०) नाम मकानके स्तंभ और अपिशब्दसे लोहेकी प्रतिमाका है । तृष्णा यह एक (स्त्री०) नाम इच्छाका और तृषाका है । घृणा यह एक (स्त्री०) नाम निन्दाका और दयाका है ॥ ५१ ॥ विपणि यह

शरणं गृहरक्षित्रोः श्रीपर्ण कमलेऽपि च ।
 विषाभिमरलोहेषु तीक्ष्णं क्लीबे खरे त्रिषु ॥ ५३ ॥
 प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृषु ।
 करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि ॥ ५४ ॥
 प्राण्युत्पादे संसरणमसंवाधचमूगतौ ।
 घण्टापथेऽथ वान्तात्रे समुद्गिरणमुन्नये ॥ ५५ ॥
 अतस्त्रिषु विषाणं स्यात्पशुशृङ्गेभदन्तयोः ।
 प्रवणं क्रमनिम्नोर्व्यां प्रहे ना तु चतुष्पथे ॥ ५६ ॥
 संकीर्णौ निचिताशुद्धौ विरिणं शून्यमूपरम् ।
 “ सेतौ च वरणो वेणी नदीभेदे कचोच्चये । ”

इति णान्ताः ।

देवसूर्यौ विवस्वन्तौ सरस्वन्तौ नदार्णवा ॥ ५७ ॥

एक (स्त्री०) नाम बाजारकी गली और दुकानका है । वारुणी यह एक (स्त्री०) नाम मदिराका और पश्चिम दिशाका है । करेणु यह एक नाम हथिनीका वाची (स्त्री०) और हाथीका वाची (पु०) है । द्रविण यह एक (पु० न०) नाम बलका और धनका है ॥ ५३ ॥ शरण यह एक (न०) नाम घरका और रक्षा करनेवालेका है । श्रीपर्ण यह एक (न०) नाम कमलका और चकारसे अरनीका है । तीक्ष्ण यह एक नाम विष, युद्ध, लोहा इन्होंका (न०) है और तीक्ष्णका वाची (त्रि०) है ॥ ५३ ॥ प्रमाण यह एक (न०) नाम हेतु, मर्यादा, शास्त्र, परिच्छेद, ज्ञाता इन्होंका है । करण यह एक (न०) नाम क्रियाकी सिद्धिमें प्रकृष्ट कारणका है और क्षेत्र, अंग, इन्द्रिय इन्होंका है ॥ ५४ ॥ संसरण यह एक (न०) नाम प्राणियोंके जन्मका, निर्वाध सेनाके गमनका और चौहटका है । समुद्गिरण यह एक (न०) नाम उलटी किये अन्नका और जलके पात्र आदिको ऊपर लानेका है ॥ ५५ ॥ इससे आगे वक्ष्यमाण शब्द (त्रि०) हैं । विषाण यह एक नाम पशुके सींगका और हाथीके दंतका है । प्रवण यह एक नाम क्रमसे ढूँधी पृथ्वीका और नम्रका है और चौराहेका वाचक (पु०) है ॥ ५६ ॥ संकीर्ण यह एक नाम व्यापक और अशुद्धका है । विरिण यह एक नाम शून्यका आर ऊपर पृथ्वीका है । “ वरण

पक्षिताक्षर्यौ गरुत्मन्तौ शकुन्तौ भासपक्षिणौ ।
 अद्भ्युत्पातौ धूमकेतू जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ ५८ ॥
 हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे मरुतौ पवनामरौ ।
 यन्ता हस्तिपके सूते भर्ता धातरि पोष्टरि ॥ ५९ ॥
 यानपात्रे शिशौ पोतः प्रेतः प्राण्यन्तरे मृते ।
 ग्रहभेदे ध्वजे केतुः पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥
 स्थपतिः कारुभेदेऽपि भूभृद्भूमिधरे नृपे ।
 मूर्धाभिषिक्तो भूपेऽपि ऋतुः स्त्रीकुसुमेऽपि च ॥ ६१ ॥
 विष्णावप्यजिताव्यक्तौ सूतस्त्वष्टरि सारथौ ।
 व्यक्तः प्राज्ञेऽपि दृष्टान्तावुभौ शास्त्रनिदर्शने ॥ ६२ ॥

यह एक (पु०) नाम पुल, वेणी, नदीका भेद आर बालोंके समूहका है ॥
 यहाँ णकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ विवस्वत् (तान्त) यह एक (पु०)
 नाम देवताका और सूर्यका है । सरस्वत् (मत्वेन्त) यह एक (पु०) नाम
 नदीका और समुद्रका है ॥ ५७ ॥ गरुत्मत् (मत्वेन्त) यह एक (पु०)
 नाम पक्षीका और गरुडका है । शकुन्त यह एक (पु०) नाम गीधका
 और पक्षीका है । धूमकेतु यह एक (पु०) नाम अग्निका और उत्पा-
 तका है । जीमूत यह एक (पु०) नाम मेघका और पर्वतका है ॥ ५८ ॥
 हस्त यह एक (पु०) नाम हाथका और हस्त नक्षत्रका है । मरुत् यह
 एक (पु०) नाम पवनका और देवतोंका है । यन्तृ (ऋकारान्त पु०) यह
 एक नाम हाथीवान्का और सारथीका है । भर्तृ (ऋकारान्त पु०) यह
 एक नाम धारकका और मालिकका है ॥ ५९ ॥ पोत यह एक (पु०)
 नाम यानके पात्र अर्थात् ढुंगी आदिका और बालकका है । प्रेत यह एक
 (पु०) नाम भूतका और मरे हुका है । केतु यह एक (पु०) नाम
 केतु ग्रहका और ध्वजाका है । सुत यह एक (पु०) नाम राजाका और
 पुत्रका है ॥ ६० ॥ स्थपति यह एक (पु०) नाम शिल्पीका और अपि-
 शब्दसे जीवोष्टि यज्ञको करनेवालेका है । भूभृत् यह एक (पु०) नाम
 पर्वतका और राजाका है । मूर्धाभिषिक्त यह एक (पु०) नाम राजाका
 और अपिशब्दसे प्रधानका है । ऋतु यह एक (पु०) नाम स्त्रीको फूल
 खानेका और हेमन्त आदि ऋतुओंका है ॥ ६१ ॥ अजित, अव्यक्त ये

क्षत्ता स्यात्सारथौ द्वाःस्थे क्षत्रियायां च शूद्रे ।
 वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रकारे कात्स्न्यवार्तयोः ॥ ६३ ॥
 आनर्तः समरे नृत्यस्थाननीवृद्धिशेषयोः ।
 कृतान्तो यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु ॥ ६४ ॥
 श्लेष्मादि रसरक्तादि महाभूतानि तद्गुणाः ।
 इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः ॥ ६५ ॥
 कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृपस्यासर्वगोचरे ।
 कासूसामर्थ्ययोः शक्तिर्मूर्तिः काठिन्यकाययोः ॥ ६६ ॥
 विस्तारवल्लचोर्व्रततिर्वसती रात्रिवेश्मनोः ।
 क्षयार्चयोरपचितिः सातिर्दानावसानयोः ॥ ६७ ॥

दो (पु०) नाम विष्णुके और महादेवके हैं । सूत यह एक (पु०) नाम
 खातीका और सारथीका है । व्यक्त यह एक (त्रि०) नाम पंडितका
 और स्फुटका है । दृष्टांत यह एक (पु०) नाम न्याय आदि शास्त्रका
 और उदाहरणका है ॥ ६२ ॥ क्षत्त (ककारान्त पु०) यह एक नाम
 सारथी, द्वारपाल और क्षत्रियकी स्त्रीमें शूद्रसे उत्पन्न बालकका है ।
 वृत्तान्त यह एक (पु०) नाम प्रकरण, प्रकार, सकलपना, वार्त्ता इन्होंका
 है ॥ ६३ ॥ आनर्त यह एक (पु०) नाम युद्ध, नाचनेका स्थान, द्वार
 कापुर इन्होंका है । कृतान्त यह एक (पु०) नाम धर्मराज, सिद्धान्त
 प्राक्तन कर्म, पाप इन्होंका है ॥ ६४ ॥ धातु यह एक (पु०) नाम कर्म
 आदि, रस रक्त आदि, पृथ्वी पानी अग्नि वायु आकाश इन्होंके गुण
 आदि गुण, आंख आदि इन्द्रियां, मनशिल आदि, शब्दयोनि इन्होंका है
 ॥ ६५ ॥ शुद्धान्त यह एक (पु०) नाम स्थानके भीतरकी कक्षा, राजधानी
 नीविशेष, रनवास और आशौचके अन्तका है । शक्ति यह एक (स्त्री०)
 नाम बरछीका और सामर्थ्यका है । आगेके वार्त्ताशब्दतक सब शब्द
 (स्त्री०) हैं ! मूर्ति यह एक नाम कठिनपनेका और शरीरका है ॥ ६६ ॥
 व्रतति यह एक (स्त्री०) नाम विस्तारका और खेलका है । वसति यह
 एक नाम रात्रिका और मकानका है । अपचिति यह एक नाम क्षय
 और पूजाका है । साति यह एक नाम दानका और अन्तका है ॥ ६७ ॥

अतिः पीडाधनुष्कोट्योर्जातिः सामान्यजन्मनोः ।

प्रचारस्यन्दयो रीतिरीतिर्द्विम्बप्रवासयोः ॥ ६८ ॥

उदयेऽधिगमे प्राप्तिस्त्रेता त्वग्नित्रये युगे ।

वीणाभेदेऽपि महती भूतिर्भस्मनि संपदि ॥ ६९ ॥

नदीनगर्योर्नागानां भोगवत्यथ संगरे ।

सङ्गे सभायां समितिः क्षयवासावपि क्षिती ॥ ७० ॥

खेरचिंश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः ।

जगती जगति च्छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि ॥ ७१ ॥

पंक्तिश्छन्दोऽपि दशमं स्यात्प्रभावेऽपि चायतिः ।

पत्तिर्गतौ च मूले तु पक्षतिः पक्षभेदयोः ॥ ७२ ॥

प्रकृतिर्योनिलिङ्गे च कौशिक्याद्याश्च वृत्तयः ।

सिकताः स्युर्वालुकापि वेदे श्रवमि च श्रुतिः ॥ ७३ ॥

अति यह एक नाम पीडाका और धनुषकी कोटिका है । जाति यह एक नाम सामान्यका और जन्मका है । रीति यह एक नाम प्रचारका और धारणका है । ईति यह एक नाम विप्लव याने अतिवृष्टि आदिका और प्रवासका है ॥ ६८ ॥ प्राप्ति यह एक नाम उदयका और लाभका है । त्रेता यह एक नाम तीनों अग्निका और त्रेतायुगका है । महती यह एक नाम नारदकी धीणा और बड़े गुणसे युक्त स्त्रीका है । भूति यह एक नाम भस्मका और संपत्का है ॥ ६९ ॥ भोगवती यह एक नाम नदीका और नागोंकी नगरीका है । समिति यह एक नाम युद्ध, संग, सभा इन्हींका है । क्षिति यह एक नाम क्षय, वास, पृथ्वी इन्हींका है ॥ ७० ॥ हेति यह एक नाम सूर्यकी प्रभा, शस्त्र, अग्निकी ज्वाला इन्हींका है । जगती यह एक नाम लोकका, जगतिच्छन्दका और पृथ्वीका है ॥ ७१ ॥ पंक्ति यह एक नाम पंक्तिच्छन्दका और पंक्तिका है । आयति यह एक नाम प्रभावका उत्तरकालका और लंबाईका है । पत्ति यह एक नाम गतिका और वीरभेदका है । पक्षति यह एक नाम पक्षकी आदिकी तिथिका और पिच्छके मूलका है ॥ ७२ ॥ प्रकृति यह एक नाम लिंगका और योनिका है । वृत्ति यह एक नाम विश्वाभिन्नकी बहनकी बनाई कौशिकी नदी और आरभटी और

वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति ।
 गुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि धृतिधारणधैर्ययोः ॥ ७४ ॥
 बृहती क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदो महत्यपि ।
 वासिता स्त्रीकरिण्योश्च वार्ता वृत्तौ जनश्रुतौ ॥ ७५ ॥
 वार्तं फल्गुन्यरोगे च त्रिष्वप्सु च घृतामृते ।
 कलधौतं रूप्यहेम्नोर्निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः ॥ ७६ ॥
 श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्युगपर्याप्तयोः कृतम् ।
 अत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ॥ ७७ ॥
 युक्ते क्षमादावृते भूतं प्राण्यतीते समे त्रिषु ।
 वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वनीते दृढनिस्तले ॥ ७८ ॥

जीविका आदिका है । सिकता यह एक नाम बालू, बालुकामय प्रदेश
 शक्कर इन्हींका है । श्रुति यह एक नाम वेदका और कानका है ॥ ७३ ॥
 वनिता यह एक नाम बहुत प्यारी स्त्रीका है । गुप्ति यह एक नाम पृथ्वी
 छिद्रका और रक्षाका है । धृति यह एक नाम धारणका और धैर्यका
 ॥ ७४ ॥ बृहती यह एक नाम कटेलीविशेषका, छन्दोभेदका और मो
 वस्तुका है । वासिता यह एक नाम स्त्रीका और हथिनीका है । वार्ता
 एक नाम वृत्तिका और मनुष्योंकी बात सुननेका है । यहांतक (स्त्री०
 हैं ॥ ७५ ॥ वार्त्तं यह एक नाम असारका वाची (न०) है, रोगरहित
 वाची (त्रि०) है । घृत यह एक (न०) नाम घी और जलका है
 अमृत यह एक (न०) नाम जल, घी, अमृत और यज्ञशेषका है । क
 धौत यह एक (न०) नाम चांदीका और सोनेका है । निमित्त यह एक
 (न०) नाम कारणका और चिह्नका है ॥ ७६ ॥ श्रुत यह एक (न०
 नाम शास्त्रका और निश्चयका है । कृत यह एक (न०) नाम सत्ययुगका
 और पूर्णताका है । अत्याहित यह एक (न०) नाम बहुत भयका और
 साहसकर्मका है ॥ ७७ ॥ भूत यह एक (न०) नाम न्याय्य, पृथ्वी आदि
 पञ्चमहाभूत, सत्य, प्राणी, अतिक्लान्त और समान इन्हींका है और समान
 वाचक (त्रि०) है । वृत्त यह एक नाम श्लोक और चरित्रका वाचक
 (न०) है । अतीतकाल, दृढ और गोलका वाचक (त्रि०) है ॥ ७८ ॥

महद्राज्यं चावगीतं जन्ये स्याद्गर्हिते त्रिषु ।
 श्वेतं रूप्येऽपि रजतं हेम्नि रूप्ये सिते त्रिषु ॥ ७९ ॥
 त्रिष्वतो जगदिङ्गेषु रक्तं नील्यादिरागि च ।
 अवदातः सिते पीते शुद्धे बद्धार्जुनौ सितौ ॥ ८० ॥
 युक्तेऽतिसंस्कृते मर्षिण्यभिनीतोऽथ संस्कृतम् ।
 कृत्रिमे लक्षणोपेतेऽप्यनन्तोऽनवधावपि ॥ ८१ ॥
 ख्याते हृष्टे प्रतीतोऽभिजातस्तु कुलजे बुधे ।
 विविक्तौ पूतविजनौ मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥ ८२ ॥
 द्वौ चाम्लपरुषौ शुक्तौ शिती धवलमेचकौ ।
 सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यर्हिते च सत् ॥ ८३ ॥
 पुरस्कृतः पूजितेऽरात्यभियुक्तेऽग्रतः कृते ।
 निवातावाश्रयावातौ शस्त्राभेद्यं च वर्म यत् ॥ ८४ ॥

यह एक (न०) नाम राज्यका और बडेका है । बडेका वाची (त्रि०)
 । अवगीत यह एक नाम जनोंके अपवादका और निन्दितका (त्रि०) है
 यह एक (न०) नाम चाँदीका और सुपेद रंगका है । रजत यह एक (न०)
 नाम सोना और चाँदीका है । शुभ्रका वाची (त्रि०) है ॥ ७९ ॥ इससे आगे
 कारान्त शब्द (त्रि०) हैं । जगत् यह एक नाम जंगमका और लोकका
 है । रक्त यह एक नाम नीले आदिसे रंगे हुए और लालरंगका है । अव-
 दात यह एक नाम सुपेद, पीला, शुद्ध इन्हींका है । सित यह एक नाम
 सुपेद और बद्धका है ॥ ८० ॥ अभिनीत यह एक नाम योग्य, बहुत उत्तम,
 मूर्षित किया और क्षमावालेका है । संस्कृत यह एक नाम बनाये हुए वाट
 आदिका और शास्त्रके लक्षणसे युक्तका है । अनंत यह एक नाम मर्यादासे
 रहितका और शेषनागका है ॥ ८१ ॥ प्रतीत यह एक नाम प्रसिद्धका और
 आनन्दितका है । अभिजात यह एक नाम कुलीनका और पंडितका है ।
 विविक्त यह एक नाम पवित्रका और एकान्तका है । मूर्च्छित यह एक नाम
 मूढका और वृद्धिसे युत हुआ है ॥ ८२ ॥ शुक्त यह एक नाम खट्टका और
 कठोरका है । शिती यह एक नाम सुपेदका और कालका है । सत् (तान्त)
 यह एक नाम सत्य, साधु, विद्यमान, बहुत उत्तम, योग्य इन्हींका है
 ॥ ८३ ॥ पुरस्कृत यह एक नाम पूजित, शत्रुओंसे पीडित और अगाड़ी

जातोन्नद्धप्रवृद्धाः स्युरुच्छ्रिता उत्थितास्त्वमी ।
वृद्धिमत्प्रोद्यतोत्पन्ना आहतौ सादरार्चितौ ॥ ८५ ॥

इति तान्ताः ।

अर्थोऽभिधेयैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु ।

निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जले गुरौ ॥ ८६ ॥

समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे संबद्धार्थे हितेऽपि च ।

दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ वीथी पदव्यपि ॥ ८७ ॥

आस्थानीयत्रयोरास्था प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ।

“ शास्त्रद्रविणयोर्ग्रन्थः संस्थाधारे स्थितौ मृतौ । ”

इति थान्ताः ।

अभिप्रायवशौ छन्दावब्दौ जीमूतवत्सरौ ॥ ८८ ॥

किये हुएका है । निवात यह एक नाम आश्रयका और वातसे रहित स्थानका है और जो शास्त्रोंसे नहीं कट सके उस कवचकाभी है ॥ ८४ ॥
उच्छ्रित यह एक नाम उत्पन्न, गर्वित, प्रवृद्ध इन्हींका है । उत्थित यह एक नाम वृद्धिवाला, अधिक उद्यत हुआ, उत्पन्न इन्हींका है । आहत यह एक नाम आदरसहितका और सत्कार किये हुएका है ॥ ८५ ॥ यह तकारान्त और (त्रि०) शब्द समाप्त हुए ॥ अर्थ यह एक (पु०) नाम वाच्य, धन, भोज, प्रयोजन, निवर्त्तन इन्हींका है । तीर्थ यह एक (न०) नाम कूपके पासका जलाशय, बौद्धशास्त्रसे अन्य शास्त्र और मुनियोंसे सेवित किये जल तथा गुरु इन्हींका है ॥ ८६ ॥ समर्थ यह एक (त्रि०) नाम शक्तिवाला, संबंधयुक्त अर्थ, हितकारी इन्हींका है । दशमीस्थ यह एक (पु०) नाम क्षीण हुए रसवालेका और अत्यंत बूढेका है । वीथी यह एक (स्त्री०) नाम मार्गका और पंक्तिका है ॥ ८७ ॥ आस्था यह एक (स्त्री०) नाम सभा और यत्रका है । प्रस्थ यह एक (पु० न०) नाम पर्वतकी शिखरका और परिमाणविशेषका है । “ ग्रंथ यह एक (पु०) नाम शास्त्रका और द्रव्यका है । संस्था यह एक (स्त्री०) नाम आधार, स्थिति, मरना इन्हींका है ” ॥ यहां थकारान्त अब्द समाप्त हुए ॥
छन्द यह एक (पु०) नाम अभिप्रायका और आधीनका है ।
अब्द यह एक (पु०) नाम बादलका और वर्षका है ॥ ८८ ॥

अपवादौ तु निन्दाज्ञे दायादौ सुतबान्धवौ ।
 पादा रश्म्यग्निपुर्याशाश्चन्द्राभ्यर्कास्तमोनुदः ॥ ८९ ॥
 निर्वादो जनवादेऽपि शादो जम्बालशष्पयोः ।
 आरावे रुदिते त्रातर्याक्रन्दो दारुणे रणे ॥ ९० ॥
 स्यात्प्रसादोऽनुरागेऽपि सूदः स्याद्यज्ञनेऽपि च ।
 गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दो हर्षेऽप्यामोदवन्मदः ॥ ९१ ॥
 प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे ककुदोऽस्त्रियाम् ।
 स्त्री संविज्ज्ञानसंभाषाक्रियाकाराजिनामसु ॥ ९२ ॥
 धर्मे रहस्युपनिषत्स्यादृतौ वत्सरे शरत् ।
 पदं व्यवसितत्राणस्थानलक्ष्मांघ्रिवस्तुषु ॥ ९३ ॥
 गोष्पदं सेविते माने प्रतिष्ठाकृत्यमास्पदम् ।
 त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू मृदू चातीक्ष्णकोमलौ ॥ ९४ ॥

अपवाद यह एक (पु०) नाम निन्दाका और आज्ञाका है। दायाद यह एक (पु०) नाम पुत्रका और भाईका है। पाद यह एक (पु०) नाम किरण, पैर, चौथाई भाग इन्हींका है। तमोनुद् यह एक (पु०) नाम चन्द्रमा, सूर्य, अग्नि इन्हींका है ॥ ८९ ॥ निर्वाद यह एक (पु०) नाम लोककी निन्दा और सिद्धान्त अर्थात् निर्णय किये का है। शाद यह एक (पु०) नाम कीचड़का और बालतृणका है। आक्रन्द यह एक (पु०) नाम आत्त शब्द, रुदित, रक्षक, दारुण कर्म, भयानक युद्ध इन्हींका है ॥ ९० ॥ प्रसाद यह एक (पु०) नाम अनुग्रह, प्रसन्नता और काव्यगुण इन्हींका है। सूद यह एक (पु०) नाम व्यञ्जनका और रसोदयाका है। गोविन्द यह एक (पु०) नाम गोपाल, बृहस्पति, कृष्ण इन्हींका है। आमोद, मद ये दो (पु०) नाम आनन्दके और अत्यन्त निर्हारि गंधके हैं ॥ ९१ ॥ ककुद यह एक (पु० न०) नाम प्रधान, राजचिह्न, बेलका अंग इन्हींका है। संविद् (दान्त) यह एक (स्त्री०) नाम ज्ञान, संभाषण, कर्मका नियम, युद्ध, सजा इन्हींका है ॥ ९२ ॥ उपनिषद् (दान्त स्त्री०) यह एक नाम वेदांत, धर्म और एकान्तका है। शरद् यह एक (स्त्री०) नाम ऋतु, संवत्सर इन्हींका है। पद यह एक (न०) नाम व्यवसाय, रक्षा, स्थान, चिह्न, पैर, वस्तु इन्हींका है ॥ ९३ ॥ गोष्पद यह एक (न०) नाम गोओंसे सेवित किये

मूढालपापटुनिर्भाग्या मन्दाः स्युर्दौ तु शारदौ ।
प्रत्यग्राप्रतिभौ विद्वत्सुप्रगल्भौ विशारदौ ॥ ९५ ॥

इति दान्ताः ।

व्यामो वटश्च न्यग्रोधावुत्सेधः काय उन्नतिः ।
पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ च तौ ॥ ९६ ॥
परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके ।
बन्धकं व्यसनं चेतःपीडाधिष्ठानमाधयः ॥ ९७ ॥
स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च समाधयः ।
दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्रकृत्यादिविनश्वरे ॥ ९८ ॥
मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्त्तने ।
विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि परिच्छेदे विलेज्वाधिः ॥ ९९ ॥

देशका और खुरके प्रमाणका है । आस्पद यह एक (न०) नाम स्थानक और कृत्यका है । इससे आगे वर्गकी समाप्तिपर्यंत दकारान्त शब्द (त्रि०) हैं । स्वादु यह एक नाम मनोवांछितका और मधुरका है । मृदु यह एक नाम अतीक्ष्णका और कोमलका है ॥ ९४ ॥ मन्द यह एक नाम मूढ, अल्प, मूर्ख, निर्भाग्य इन्हींका है । शारद यह एक नाम नवीनका और अप्रगल्भका है । विशारद यह एक नाम पण्डितका और प्रगल्भका है ॥ ९५ ॥ यहां दकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ न्यग्राध यह एक (पु०) नाम व्याम अर्थात् पसारी हुई दोनों भुजाओंका और वडवृक्षका है । उत्सेध यह एक (पु०) नाम शरीरका और उन्नतिका है । विवध, वीवध ये दो (पु०) नाम ध्यान आदिके और मार्गके हैं ॥ ९६ ॥ परिधि यह एक (पु०) नाम यज्ञमें वर्त्तनेके यज्ञियशाखाका और उपसूर्यका है । आधि यह एक (पु०) नाम गहने धरी चीज, व्यसन, चित्तकी पीडा अध्यास इन्हींका है ॥ ९७ ॥ समाधि यह एक (पु०) नाम समर्थन अर्थात् शंकाका परिहार वा समाधान, वचनका प्रभाव, अंगीकार इन्हींका है । अनुबन्ध यह एक (पु०) नाम दोषके उत्पादनका और इत्संज्ञक याने लोप करके अदर्शनशील अक्षरका ॥ ९८ ॥ मुख्य अर्थात् माता पिता और गुरुकी आज्ञा पालन करनेवाला बालक और प्रकृतिके पदकी निवृत्तिका अभाव इन्हींका है । विधु यह एक (पु०) नाम विष्णु और चन्द्रमाका है ।

विधिर्विधाने दैवेऽपि प्रणिधिः प्रार्थने चरे ।

बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि स्कन्धः समुदयेऽपि च ॥ १०० ॥

देशे नदविशेषेऽब्धौ सिन्धुर्ना सरिति स्त्रियाम् ।

विधा विधौ प्रकारे च साधू रम्येऽपि च त्रिषु ॥ १०१ ॥

वधूर्जाया स्नुषा स्त्री च सुधा लेपोऽमृतं स्नुही ।

संधा प्रतिज्ञा मर्यादा श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृहा ॥ १०२ ॥

मधु मद्ये पुष्परसे क्षौद्रेऽप्यन्धं तमस्यपि ।

अतस्त्रिषु समुन्नद्धौ पण्डितं मन्यगर्वितौ ॥ १०३ ॥

ब्रह्मबन्धुराधिक्षेपे निर्देशेऽथावलम्बितः ।

अविदूरोऽप्यवष्टब्धः प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ॥ १०४ ॥

इति धान्ताः ।

अवधि यह एक (पु०) नाम परिच्छेद, बिल और कालका है ॥ ९९ ॥
 विधि यह एक (पु०) नाम विधानका और दैवका है । प्रणिधि यह एक
 (पु०) नाम प्रार्थनाका और चरका है । बुध और वृद्ध ये दो (पु०) नाम
 पण्डितके हैं और बुध यह नाम ग्रहका नाम और वृद्ध बूढ़का नाम ऐसेभी हैं ।
 स्कन्ध यह एक (पु०) नाम समूहका और राजाका है ॥ १०० ॥ सिन्धु यह
 एक (पु०) नाम देश, नदविशेष अटक आदि और समुद्रका वाची (पु०)
 है और नदीका वाची (स्त्री०) है । विधा यह एक (स्त्री०) नाम वि-
 धिका और प्रकारका है । साधु यह एक (त्रि०) नाम सज्जनका और
 रमणीकका है ॥ १०१ ॥ वधू यह एक (स्त्री०) नाम भार्याका, पुत्रकी
 पत्नीका और स्त्रीमात्रका है । सुधा यह एक (स्त्री०) नाम अमृतका और
 योहरके वृक्षका है । संधा यह एक (स्त्री०) नाम प्रतिज्ञा और मर्यादाका
 है । श्रद्धा यह एक (स्त्री०) नाम श्रद्धाका और इच्छाका है ॥ १०२ ॥
 मधु यह एक (न०) नाम मदिरा, पुष्पोंका रस, शहद इन्हींका है ।
 मद्य यह एक (न०) नाम अंधेरेका और अंधे पुरुषका है । इससे परे
 धकारान्त वर्गपर्यंत शब्द (त्रि०) हैं । समुन्नद्ध यह एक नाम आपेकी
 उदित माननेवालेका और गर्ववालेका है ॥ १०३ ॥ ब्रह्मबन्धु यह एक
 नाम निंदाके प्रयोगका और ब्राह्मणोंकी आज्ञाका है । अवष्टब्ध यह एक
 नाम आश्रितका और सन्निहितका है । प्रसिद्ध यह एक नाम विख्यातका
 १६ अमर.

सूर्यवह्नी चित्रभानू भानू रश्मिदिवाकरौ ।
 भूतात्मानो धातृदेहौ मूर्खनीचौ पृथग्जनौ ॥ १०५ ॥
 ग्रावाणौ शैलपाषाणौ पत्रिणौ शरपक्षिणौ ।
 तरुशैलौ शिखरिणौ शिखिनौ वह्निवर्हिणौ ॥ १०६ ॥
 प्रतियत्नावुभौ लिप्सोपग्रहावथ सादिनौ ।
 द्वौ सारथिहयारोहौ वाजिनोऽश्वेषु पक्षिणः ॥ १०७ ॥
 कुलेऽप्यभिजनो जन्मभूम्यामप्यथ हायनाः ।
 वर्षाचित्रीहिभेदाश्च चन्द्राभ्यर्का विरोचनाः ॥ १०८ ॥
 क्लेशेऽपि वृजिनो विश्वकर्माकिसुरशिल्पिनोः ।
 आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च ॥ १०९ ॥
 शक्रो धातुकर्मत्तेभो वर्षुकाब्दो घनाघनः ।
 घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते निरन्तरे ॥ ११० ॥

और भूषित हुएका है ॥ १०४ ॥ यहां घकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥
 आगेके शब्द राजा शब्दतक (पु०) हैं । चित्रभानु यह एक नाम सूर्यका
 और अग्निका है । भानु यह एक नाम किरणका और सूर्यका है । भूता-
 त्मन् (नान्त) यह एक नाम ब्रह्माजीका और देहका है । पृथग्जन यह
 एक नाम मूर्खका और नीचका है ॥ १०५ ॥ ग्रावन् (नांत) यह एक
 नाम पर्वत और पत्थरका है । पत्रिन् (इन्नन्त) यह एक नाम शरका
 और पक्षीका है । शिखरिन् (इन्नन्त) यह एक नाम वृक्षका और पर्वतका
 है । शिखिन् यह एक नाम अग्निका और मोरका है ॥ १०६ ॥ प्रतियत्न
 यह एक नाम इच्छाका और अनुकूलका है । सादिन् (इन्नन्त) यह एक
 नाम सारथीका और घोड़ेके सवारका है । वाजिन् यह एक (इन्नन्त)
 नाम घोड़ेका और पक्षीका है ॥ १०७ ॥ अभिजन यह एक नाम कुलका
 और जन्मभूमिका है । हायन यह एक नाम वर्ष, किरण, ब्रीहिभेद
 इन्हींका है । विरोचन यह एक नाम चन्द्रमा, अग्नि, सूर्य इन्हींका है
 ॥ १०८ ॥ वृजिन यह एक नाम क्लेशका और पापका है । विश्वकर्मा
 (नांत) यह एक नाम सूर्यका और देवताओंके शिल्पीका है । आत्मन्
 (नांत) यह एक नाम यत्न, धीरजपना, बुद्धि, स्वभाव, ब्रह्म, शरीर
 इन्हींका है ॥ १०९ ॥ घनाघन यह एक नाम इन्द्र, उन्मत्त हुआ खूनी

अभिमानोऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयहिंसयोः ।

इनः सूर्ये प्रभौ राजा मृगाङ्गे क्षत्रिये नृपे ॥ १११ ॥

वाणिन्यौ नर्तकीदूत्यू स्रवन्त्यामपि वाहिनी ।

हादिन्यौ वज्रतडितौ वन्दायामपि कामिनी ॥ ११२ ॥

त्वग्देहयोरपि तनुः सूनाऽधोजिह्विकापि च ।

ऋतुविस्तारयोरस्त्री वितानं त्रिषु तुच्छके ॥ ११३ ॥

मन्देऽथ केतनं कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे ।

वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्रः प्रजापतिः ॥ ११४ ॥

उत्साहने च हिंसायां सूचने चापि गन्धनम् ।

आतञ्चनं प्रतीवापजवनाप्ययनार्थकम् ॥ ११५ ॥

हाथी, वर्षनेवाला बादल इन्हींका है । घन यह एक नाम मेघ, कठिनपना इन्हींका वाचक (पु०) है कठिनका और निरन्तरका वाचक (त्रि०) है ॥ ११० ॥ अभिमान यह एक नाम द्रव्य पशु कुल और गुण आदिसे उपजा गर्व, ज्ञान, नरमाई, हिंसा इन्हींका है । इन यह एक नाम सूर्य और मालिकका है । राजन् (नान्त) यह एक नाम चन्द्रमा, क्षत्रिय, राजा इन्हींका है ॥ १११ ॥ वाणिनी यह एक (स्त्री०) नाम नाचने-वालीका और दूतीका है । वाहिनी यह एक (स्त्री०) नाम नदीका और सेनाका है । हादिनी यह एक (स्त्री०) नाम वज्रका और बिजलीका है । कामिनी यह एक (स्त्री०) नाम वन्दावृक्षका और सुन्दर स्त्रीका है ॥ ११२ ॥ तनु यह एक (स्त्री०) नाम खालका और देहका है । सूना यह एक (स्त्री०) नाम गलवंटिकाका और वधस्थानका है । वितान यह एक (पु० न०) नाम यज्ञ और विस्तारका है । तुच्छका और मन्दका वाचक (त्रि०) है ॥ ११३ ॥ केतन यह एक (न०) नाम कृत्य, ध्वजा, निवास, मित्रोंका नौता इन्हींका है । ब्रह्मन् (नान्त न०) यह एक नाम वेद, चैतन्य, तप इन्हींका है । ब्रह्मन् (नान्त पु०) यह एक नाम ब्राह्मण और ब्रह्माका वाचक है ॥ ११४ ॥ गंधन यह एक (न०) नाम उत्साह, हिंसा और आशयके प्रकाशका है । आतञ्चन यह एक (न०) नाम दूध आदिमें तक्र आदिका जामन देना, बेग, पुष्टाई इन्हींका

व्यञ्जनं लाञ्छनं श्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि ।
 स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धं पञ्चहिपक्षिणाम् ॥ ११६ ॥
 स्यादुद्यानं निःसरणे वनभेदे प्रयोजने ।
 अवकाशे स्थितौ स्थानं क्रीडादावपि देवनम् ॥ ११७ ॥
 उत्थानं पौरुषे तन्त्रे संनिविष्टोद्गमेऽपि च ।
 व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च ॥ ११८ ॥
 मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्येऽर्थदापने ।
 निर्वर्त्तनोपकरणानुव्रज्यासु च साधनम् ॥ ११९ ॥
 निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च ।
 व्यसनं विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे ॥ १२० ॥
 पक्ष्माक्षिलोम्नि किञ्जल्के तत्त्वाद्यंशेऽप्यणीयसि ।
 तिथिभेदे क्षणे पर्व वर्त्म नेत्रच्छदेऽध्वनि ॥ १२१ ॥

है ॥ ११६ ॥ व्यञ्जन यह एक (न०) नाम चिह्न, डाढी, मूँछ, शक
 आदि, अंग अवयव इन्होंका है । कौलीन यह एक (पु०) नाम लोकका
 अपवाद, सर्प पक्षी पशु आदिका युद्ध, कुलीनपना इन्होंका है ॥ ११६ ॥
 उद्यान यह एक (न०) नाम ग्रह आदिका निकसन, उपवन और प्रयो-
 जनका है । स्थान यह एक (न०) नाम अवकाशका और स्थितिका है ।
 देवन यह एक (पु० न०) नाम क्रीडाका व्यवहार, जीतनेकी इच्छा
 इन्होंका है ॥ ११७ ॥ आगेके शब्द वनतक (न०) हैं । उत्थान यह
 एक नाम पौरुष, तन्त्र, बैठे हुंको उठाना और मलरोग इन्होंका है । व्य-
 त्थान यह एक नाम तिरस्कार, विरोधका करना, अपने आधीन कृत्य
 इन्होंका है ॥ ११८ ॥ साधन यह एक नाम मारण अर्थात् पारेका साधन,
 मृतसंस्कार, अग्निदाह, गमन, धन, धनका देना, धनका निष्पादन, उपाय,
 अनुगमन इन्होंका है ॥ ११९ ॥ निर्यातन यह एक नाम वैरकी शुद्धि,
 त्याग, धरोहरका देना इन्होंका है । व्यसन यह एक नाम विपद्, नाश,
 पतन, कामज दोष, क्रोधज दोष इन्होंका है ॥ १२० ॥ पक्ष्मन् (नांत) यह
 एक नाम आंखोंके रोम, केसर, बहुत अल्प सूत्र आदिका अंश इन्होंका
 है । पर्वन् (नान्त) यह एक नाम तिथियोंका भेद अर्थात् अष्टमी, अमावस
 आदिका और उत्सवका है । वर्त्मन् (नान्त) यह एक नाम दकनेक

अकार्यगुह्ये कौपीनं मैथुनं संगतौ रते ।
 प्रधानं परमात्मा धीः प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः ॥ १२२ ॥
 प्रसूनं पुष्पफलयोर्निधनं कुलनाशयोः ।
 क्रन्दने रोदनाह्वाने वर्ष्म देहप्रमाणयोः ॥ १२३ ॥
 गृहदेहत्विट्प्रभावा धामान्यथ चतुष्पदे ।
 संनिवेशे च संस्थानं लक्ष्म चिह्नप्रधानयोः ॥ १२४ ॥
 आच्छादने संपिधानमपवारणमित्युभे ।
 आराधनं साधने स्यादवाप्तौ तोषणेऽपि च ॥ १२५ ॥
 अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि ।
 रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि वने सलिलकानने ॥ १२६ ॥
 तलिनं विरले स्तोके वाच्यलिङ्गं तथोत्तरे ।
 समानास्तत्समैके स्युः पिशुनौ खलसूचकौ ॥ १२७ ॥

और मार्गका है ॥ १२१ ॥ कौपीन यह एक नाम अकार्यका और गुदा
 लिङ्गका है । मैथुन यह एक नाम भार्या आदिके संबंधका और स्त्रीसंगका
 है । प्रधान यह एक नाम परमात्मा और बुद्धिका है । प्रज्ञान यह एक
 नाम बुद्धिका और चिह्नका है ॥ १२२ ॥ प्रसून यह एक नाम फूलका
 और फलका है । निधन यह एक नाम कुलका और नाशका है । क्रन्दन
 यह एक नाम रोनेका और बुलानेका है । वर्ष्मन् (नान्त) यह एक नाम
 शरीरका और प्रमाणका है ॥ १२३ ॥ धामन् (नान्त) यह एक नाम
 शरीर, किरण, प्रभाव इन्हींका है । संस्थान यह एक नाम चौराहेका और
 अवयवके विभागका है । लक्ष्मन् (नान्त) यह एक नाम चिह्नका
 और प्रधानका है ॥ १२४ ॥ संपिधान, अपवारण ये दो नाम आच्छादन-
 के हैं । आराधन यह एक नाम साधन, लाभ, संतोष इन्हींका है ॥ १२५ ॥
 अधिष्ठान यह एक नाम रथका पहिया, नगर, प्रभाव, आक्रमण इन्हींका
 है । रत्न यह एक नाम अपनी जातिमें श्रेष्ठका और मणि आदिना है ।
 वन यह एक नाम जलका और वनका है । यहाँतक (न०) हैं ॥ १२६ ॥
 आगे नान्तवर्गतक (त्रि०) हैं । तलिन यह एक नाम विरलका और
 बहुत अल्पका है । तलिनशब्द वाच्यलिङ्गी है । समान यह एक नाम पंडित,
 समान, एक इन्हींका है । पिशुन यह एक नाम खलका और निन्दकका

हीनन्यूनावूनगर्हो वेगिशूरौ तरस्विनौ ।

अभिपन्नौऽपराद्धौभिग्रस्तव्यापद्गतावपि ॥ १२८ ॥

इति नान्ताः ।

कलापो भूषणे बर्हे तूणीरे, संहतावपि ।

परिच्छदे परीवापः पर्युप्तौ सलिलस्थितौ ॥ १२९ ॥

गोधुग्गोष्ठपती गोपौ हरविष्णू वृषाकपी ।

बाष्पमूष्माश्च कशिपु त्वन्नमाच्छादनं द्वयम् ॥ १३० ॥

तल्पं शय्यादृदारेषु स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम् ।

प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुधमनोज्ञयोः ॥ १३१ ॥

भेद्यलिङ्गा अमी कूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी ।

“ कुतपो मृगरोमोत्थपटे चाहोऽष्टमेऽंशके । ”

इति पान्ताः ।

खर्णे पुंसि रेफः स्यात्कुत्सिते वाच्यलिङ्गकः ॥ १३२ ॥

इति फान्ताः ।

हैं ॥ १२७ ॥ हीन, न्यून ये दो नाम अल्पके और निन्दाके योग्यके हैं तरस्विन् (इन्नन्त) यह एक नाम वेगवालेका और शूरवीरका है । अभिपन्न यह एक नाम अपराधवाला, शत्रुसे आक्रांत हुआ और विपतयुक्तवाला इन्होंका है ॥ १२८ ॥ यहां नकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ कलाप एक (पु०) नाम गहना, मोरकी पंख, तरकस, समुदाय, आभूषण इन्होंका है । परीवाप यह एक (पु०) नाम वस्त्रमंडप आदिकी सामग्री, ओरसे वपन, पानीकी स्थिति इन्होंका है ॥ १२९ ॥ गोप यह एक (पु०) नाम गौको दोहनेवालेका और गोशालाके मालिकका है । वृषाकपी एक (पु०) नाम महादेवका और विष्णुका है । बाष्प यह एक (पु०) नाम ऊष्माका और आंस्का है । कशिपु यह एक (पु० न०) नाम अन्नका और आच्छादनका है ॥ १३० ॥ तल्प यह एक (पु० न०) नाम शय्या, अटारी, स्त्री इन्होंका है । विटप यह एक (पु० न०) नाम तृणोंका गुच्छा, विस्तार, शाखा इन्होंका है । प्राप्तरूप, स्वरूप, अभिरूप ये तीन नाम पंडितके और मनोहरके हैं । ये सब वाच्यलिङ्गी हैं ॥ १३१ ॥ कच्छपी यह एक नाम कच्छवीका और वीणाके भेदका है । “ कुतप

अन्तराभवसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो दिव्यगायने ।

कम्बुर्ना वलये शङ्खं द्विजिह्वौ सर्पसूचका ॥ १३३ ॥

पूर्वोऽन्यलिङ्गः प्रागाहः पुं बहुत्वेऽपि पूर्वजान् ।

इति बान्ताः ।

कुम्भौ घटेभमूर्धाशौ ढिम्भौ तु शिशुबालिशौ ॥ १३४ ॥

स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ शंभू ब्रह्मत्रिलोचनौ ।

कुक्षिभूणार्भका गर्भा विस्रम्भः प्रणयेऽपि च ॥ १३५ ॥

स्याद्वेयां दुन्दुभिः पुंसि स्यादक्षे दुन्दुभिः स्त्रियाम् ।

स्यान्महारजने क्लीवं कुसुम्भं करके पुमान् ॥ १३६ ॥

क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना सुरभिर्गवि च स्त्रियाम् ।

सभा संसदि सभ्ये च त्रिष्वध्यक्षेऽपि वल्लभः ॥ १३७ ॥

इति भान्ताः ।

एक नाम मृगके रोमोसे बने वस्त्रका और दिनके आठवें अंशका है । ॥
 यहां पकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ रेफ यह एक नाम खर्णका वाचक
 (पु०) और कुत्तिसतका वाची (त्रि०) है ॥ १३२ ॥ यहां फान्त शब्द
 समाप्त हुए ॥ गंधर्व यह एक (पु०) नाम मरणजन्मके बीचमें स्थित हुआ
 प्राणी, घोडा, विश्वावसु आदि, गायन इन्हींका है । कंबु यह एक (पु०)
 नाम कङ्कणका और शंखका है । द्विजिह्व यह एक (पु०) नाम सर्पका
 और चुगलखोरका है ॥ १३३ ॥ पूर्व यह एक नाम पूर्व दिशाका वाची
 (त्रि०) है और पितामह आदि पूर्व लोगोंका वाची (पु०) और बहु-
 वचनान्त है ॥ यहां बान्त शब्द समाप्त हुए ॥ कुंभ यह एक (त्रि०)
 नाम घट, हस्तीके शिरका भाग इन्हींका है । ढिंभ यह एक (पु०) नाम
 अत्यंत बालकका और मूर्खका है ॥ १३४ ॥ स्तंभ यह एक (पु०) नाम घरके
 धंभेका और जडपनेका है । शंभु यह एक (पु०) नाम ब्रह्माका और
 महादेवका है । गर्भ यह एक (पु०) नाम कुक्षि, गर्भमें स्थित प्राणी,
 बालक इन्हींका है । विस्रंभ यह एक (पु०) नाम विनयका और विश्वा-
 सका है ॥ १३५ ॥ दुन्दुभि यह एक नाम भेरीका वाचक (पु०) और बाल-
 ककी डफली आदिका वाचक (स्त्री०) है । कुसुंभ यह एक नाम कसूमका
 वाचक (न०) और कमंडलुका वाचक (पु०) है ॥ १३६ ॥ नाभि यह

किरणप्रग्रहौ रश्मी कपिभेकौ प्लवंगमौ ।
 इच्छामनोभवौ कामौ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ १३८ ॥
 धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः ।
 उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाप्युपक्रमः ॥ १३९ ॥
 वणिक्पथः पुरं वेदो निगमो नागरो वणिकृ ।
 नैगमौ द्वौ बले रामो नीलचारुसिते त्रिषु ॥ १४० ॥
 शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः क्रान्तौ च विक्रमः ।
 स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे जिह्वस्तु कुटिलेऽलसे ॥ १४१ ॥

एक नाम क्षत्रियका वाचक (पु०) और मुख्य, राजा, चक्रका मध्यभाग, प्राणीका अंग दन्तोंका वाचक (पु० स्त्री०) है । सुरभि यह एक नाम गौका वाचक (स्त्री०) और वसंत चमेलीके फूल आदिका वाचक (न०) है । सभा यह एक (स्त्री०) नाम सभाका आर सभ्यका है । वल्लभ यह एक (त्रि०) नाम मालिकका और कुलीन घोड़ेका है ॥ १३७ ॥ यहाँ भांत शब्द समाप्त हुए ॥ रश्मि यह एक (पु०) नाम किरणका और घोड़े आदिके बांधनेकी रस्सी अर्थात् लगामका है । प्लवंगम यह एक (पु०) नाम वानरका और मेंढकका है । काम यह एक (पु०) नाम इच्छाका और कामदेवका है । पराक्रम यह एक (पु०) नाम शूरवीरपनेका और उद्योगका है ॥ १३८ ॥ धर्म यह एक (पु०) नाम पुण्य, धर्मराज, न्याय, स्वभाव, आचार, सोमको पीनेवाला इन्हींका है । उपक्रम यह एक (पु०) नाम उपायपूर्वक आरंभ, नौकरका शील और परीक्षाका उपाय, चिकित्सा इन्हींका है ॥ १३९ ॥ निगम यह एक (पु०) नाम व्यवहार, नगर, वेद इन्हींका है । नैगम यह एक (पु०) नाम नगरमें होनेवालेका और वैश्यका है । राम यह एक नाम बलदेवजीका वाचक (पु०) और नील, सुन्दर, सुपेद इन्हींका वाचक (त्रि०) है और राम यह नाम रामचंद्र परशुरामकाभी है ॥ १४० ॥ ग्राम यह एक (पु०) नाम गाँवका, शब्दआदिपूर्वक ग्रामशब्द समूहका और स्वरविशेषका है । विक्रम यह एक (पु०) नाम क्रांतिका और पराक्रमका है । स्तोम यह एक (पु०) नाम स्तोत्र, यज्ञ, समूह इन्हींका है । जिह्व यह एक (पु०) नाम कुटिलका और आलसका है ॥ १४१ ॥

“ उष्णेऽपि घर्मश्चेष्टालङ्कारे भ्रान्तौ च विभ्रमः । ”

गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ।

क्षितिक्षान्त्योः क्षमा युक्ते क्षमं शक्ते हिते त्रिषु ॥ १४२ ॥

त्रिषु श्यामौ हरित्कृष्णौ श्यामा स्याच्छारिवा निशा ।

ललामं पुच्छपुण्ड्राश्वभूषाप्राधान्यकेतुषु ॥ १४३ ॥

सूक्ष्ममध्यात्ममप्याद्ये प्रधाने प्रथमस्त्रिषु ।

वामौ वल्गुप्रतीपौ द्वावधमौ न्यूनकुत्सितौ ॥ १४४ ॥

जीर्णं च परिभुक्तं च यातयामभिदं द्वयम् ।

इति मान्ताः ।

तुरङ्गरुडौ ताक्ष्यौ निलयापचयौ क्षयौ ॥ १४५ ॥

श्वशुर्यौ देवरश्यालौ भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विषौ ।

पर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ स्यादर्थः स्वामिवैश्ययोः ॥ १४६ ॥

“ घर्म यह एक (पु०) नाम घामका और पसीनेका है । विभ्रम यह एक (पु०) नाम गहनेका और भ्रांतिका है । ” गुल्म यह एक (पु०) नाम गुल्मरोग, तिछीरोग, तृणगुच्छा, सेना इन्हींका है । जामि यह एक (स्त्री०) नाम बहनका और कुलकी स्त्रीका है । क्षमा यह एक (स्त्री०) नाम पृथ्वीका और सहनशीलताका है । क्षम यह एक नाम योग्यका वाचक (न०) है और समर्थका और हितका वाचक (त्रि०) है ॥ १४२ ॥ श्याम यह एक (त्रि०) नाम हरे और काले रंगका है । श्यामा यह एक (स्त्री०) नाम शतावरीका और रात्रिका है । ललाम यह एक (न०) नाम पूंछ, घोड़ा आदिकोंके मस्तकका चित्र, घोड़ेका गहना, प्रधानपना, ध्वजा इन्हींका है ॥ १४३ ॥ सूक्ष्म यह एक (न०) नाम लिंगदेह और अल्पका है । प्रथम यह एक नाम आदिमें होनेवालेका और प्रधानका है और इसको लेकर वर्गसमाप्तिपर्यंत सब शब्द (त्रि०) हैं । वाम यह एक नाम टेढ़ेका और विपरीतका है । अधम यह एक नाम न्यूनका और नीचका है ॥ १४४ ॥ यातयाम यह एक नाम पुरानेका और भोजन करके बचे हुका है ॥ यहाँ मान्त शब्द समाप्त हुए ॥ ताक्ष्य यह एक नाम घोड़ेका और गरुडका है । इसको लेकर विषयशब्दतक (पु०) हैं । श्वय यह एक नाम घरका और नाशका है ॥ १४५ ॥ श्वशुर्य यह एक

तिष्यः पुष्ये कलियुगे पर्यायोऽवसरे क्रमे ।
 प्रत्ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु ॥ १४७ ॥
 रन्ध्रे शब्देऽथानुशयो दीर्घद्वेषानुतापयोः ।
 स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये नागानां मध्यमे गते ॥ १४८ ॥
 समयाः शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः ।
 व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्यनयास्त्रयः ॥ १४९ ॥
 अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽप्यथापदि ।
 युद्धायत्योः संपरायः पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च ॥ १५० ॥
 पश्चादवस्थायि बलं समवायश्च संनयौ ।
 संघाते संनिवेशे च संस्त्यायः प्रणयास्त्वमी ॥ १५१ ॥
 विस्रम्भयाच्चाप्रेमाणो विरोधेऽपि समुच्छ्रयः ।
 विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ १५२ ॥

नाम देवरका और श्यालेका है । भ्रातृव्य यह एक नाम भाईके पुत्र अथात्
 भतीजेका और शत्रुका है । पर्जन्य यह एक नाम शब्द करते हुए बाद-
 लका और इन्द्रका है । अर्थ यह एक नाम मालिकका और वैश्यका है
 ॥ १४६ ॥ तिष्य यह एक नाम पुष्यनक्षत्रका और कलियुगका है ।
 पर्याय यह एक नाम अवसरका और क्रमका है । प्रत्यय यह एक नाम
 आधीन, शपथ, ज्ञान, विश्वास, हेतु, छिद्र, शब्द इन्हींका है ॥ १४७ ॥
 अनुशय यह एक नाम बहुत दिनके वैरका और पश्चात्तापका है । स्थूलो-
 च्य यह एक नाम न्यूनका और हाथियोंकी मध्यम गतिकी है ॥ १४८ ॥
 समय यह एक नाम शपथ (सौगंध), आचार, काल, सिद्धान्त, श्रेष्ठ
 भाषा इन्हींका है । अनय यह एक नाम व्यसन, अशुभ दैव, विपत् इन्हींका
 है ॥ १४९ ॥ अत्यय यह एक नाम अतिक्रम, कष्ट, दोष, दंड इन्हींका
 है । संपराय यह एक नाम आपत्, युद्ध, उत्तरकाल इन्हींका है । पूज्य
 यह एक नाम पूजाके योग्यका और ससुरेका है ॥ १५० ॥ अवस्थायि
 यह एक नाम सेनाके पृष्ठभागमें जो सेना स्थित हो उसके पीछे स्थित हुई
 सेनाका है । समवाय यह एक नाम समूहका और सन्नायका है । संस्त्याय
 यह एक नाम समूह, स्थान, विस्तार इन्हींका है । प्रणय यह एक नाम
 विश्वास, याच्ना, प्रेम इन्हींका है ॥ १५१ ॥ समुच्छ्रय यह एक नाम

निर्यासेऽपि कषायोऽस्ती सभायां च प्रतिश्रयः ।
 प्रायो भूद्भयन्तगमने मन्युर्देन्ये क्रतौ कुधि ॥ १५३ ॥
 रहस्योपस्थयोर्गुह्यं सत्यं शपथतथ्ययोः ।
 वीर्यं बले प्रभावे च द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये ॥ १५४ ॥
 धिष्ण्यं स्थाने गृहे भेऽग्नौ भाग्यं कर्म शुभाशुभम् ।
 कशेरुहेऽग्नौर्गाङ्गेयं विशल्या दन्तिकाऽपि च ॥ १५५ ॥
 वृषाकपायी श्रीगौर्योरभिख्या नामशोभयोः ।
 आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं सम्प्रधारणम् ॥ १५६ ॥
 उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव क्रियाः ।
 छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बमनातपः ॥ १५७ ॥

वेरका और उन्नतिका है । विषय यह एक नाम मच्छ आदि तथा जल
 आदि जाना हुआ वस्तु और शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध इन्हींका है
 ॥ १५२ ॥ कषाय यह एक (पु० न०) नाम काथके रसका और विले-
 पन आदिका है । प्रतिश्रय यह एक (पु०) नाम सभाका और समीप
 गमनका है । प्राय यह एक (पु०) नाम बहुतका और अन्रत्यागका है
 और बहुवचनान्त है । मन्यु यह एक (पु०) नाम दीनपना, यज्ञ, क्रोध
 इन्हींका है ॥ १५३ ॥ गुह्य यह एक (न०) नाम गुप्तका और गुदा-
 लिंगका है । सत्य यह एक (न०) नाम सौगन्धका और सचका है ।
 वीर्य यह एक (न०) नाम बलका और प्रभावका है । द्रव्य यह एक
 (न०) नाम सत्वका और गुणोंके आश्रयका है ॥ १५४ ॥ धिष्ण्य यह
 एक (न०) नाम स्थान, स्त्री, नक्षत्र, अग्नि इन्हींका है । भाग्य यह एक
 (न०) नाम शुभ अशुभ कर्मका और ऐश्वर्यका है । गांगेय यह एक
 (न०) नाम कशेरुका और जमालगोटकी जडका है । विशल्या यह
 एक (स्त्री०) नाम जमालगोटकी जडका और गिलोयका है ॥ १५५ ॥
 वृषाकपायी यह एक (स्त्री०) नाम लक्ष्मीका और गौरीका है । अ-
 भिख्या यह एक (स्त्री०) नाम नामका और शोभाका है । क्रिया यह
 एक (स्त्री०) नाम आरंभ, निष्कृति, शिक्षा, पूजन, सम्प्रधारण ॥ १५६ ॥
 उपाय, कर्म, चेष्टा, चिकित्सा ये नव प्रकारकी क्रियाका है । छाया यह
 एक (स्त्री०) नाम सूर्यप्रिया, कान्ति, प्रतिबिम्ब, अनातप इन चारों अर्थोंका

कक्ष्या प्रकोष्ठे हर्म्यादिः काश्चां मध्येभवन्धने ।

कृत्या क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेदे धनादिभिः ॥ १५८ ॥

जन्यं स्याज्जनवादेशपि जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च ।

गर्ह्याहीनौ च वक्तव्यौ कल्यौ सज्जनिरामयौ ॥ १५९ ॥

आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थ्यौ पुण्यं तु चार्वापि ।

रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि वदान्यो वल्गुवागपि ॥ १६० ॥

न्याय्येऽपि मध्यं सौम्यं तु सुन्दरे सोमदैवते ।

इति यान्ताः ।

निवहावसरौ वारौ संस्तरौ प्रस्तराऽध्वरौ ॥ १६१ ॥

गुरु गीष्पतिपित्राद्यौ द्वापरौ युगसंशयौ ।

प्रकारौ भेदसादृश्ये आकाराविक्रिताकृती ॥ १६२ ॥

वाची है ॥ १५७ ॥ कक्ष्या यह एक (स्त्री०) नाम हवेली आदिके भीतरका मकान, तागडी, हस्तिबंधनका मध्यभाग इन्होंका है । कृत्या यह एक (स्त्री०) नाम क्रिया, देवता इन्होंका वाचक (त्रि०) है और धन, स्त्री, पृथ्वी आदिसे भेदन करनेके योग्य जो परदेशगत पुरुष आदि उसका वाचक वाच्यलिगी है । आगेके शब्द वर्गान्ततक (त्रि०) हैं ॥ १५८ ॥ जन्य यह एक नाम निन्दित वादका और युद्ध आदिका है । जघन्य यह एक नाम चंडाल आदि और नीचका है । वक्तव्य यह एक नाम निन्दके योग्यका और आधीनका है । कल्य यह एक नाम सामग्रीसहितका और आरोग्यका है ॥ १५९ ॥ अर्थ्य यह एक नाम बुद्धिमानका और प्रयोजनसे युक्त पुरुषका है । पुण्य यह एक नाम सुन्दरका और सुकृतधर्मका है । रूप्य यह एक नाम सुन्दर रूपका और रुपैया तथा अशरफी आदिका है । वदान्य यह एक नाम टेढा बोलनेवालेका और दाताका है ॥ १६० ॥ न्याय्य यह एक नाम उचितका और अवलम्बका है । सौम्य यह एक नाम सुन्दर, मृगाशिर नक्षत्र, बुध इन्होंका है ॥ यहां यान्त शब्द समाप्त हुए ॥ आगे वारसे दुरोदरशब्दतक (पु०) हैं । जहां भेद है दिखावेंगे । वार यह एक नाम समूहका और अवसरका है । संस्तर यह एक नाम डामकी शय्या और यज्ञका है ॥ १६१ ॥ गुरु यह एक नाम बृहस्पतिका और पिता आदिका है । द्वापर यह एक नाम युगका और संशयका है । प्रकार यह

किंशारु सस्यशूकेषु मरु धन्वधराधरौ ।

अद्रयो दुमशैलार्काः स्त्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ ॥ १६३ ॥

ध्वान्तारिदानवा वृत्रा बलिहस्तांशवः कराः ।

प्रदरा भङ्गनारीरुग्वाणा अस्त्राः कचा अपि ॥ १६४ ॥

अजातशत्रो गौः कालेऽप्यश्मश्रुर्ना च तूवरौ ।

स्वर्णेऽपि राः परिकरः पर्यङ्कपरिवारयोः ॥ १६५ ॥

मुक्ताशुद्धौ च तारः स्याच्छारो वायौ स तु त्रिषु ।

कर्बुरेऽथ प्रतिज्ञाजिसंविदापत्सु संगरः ॥ १६६ ॥

वेदभेदे गुप्तवादे मन्त्रो मित्रो खावपि ।

मखेषु यूपखण्डेऽपि स्वरुर्गुह्येऽप्यवस्करः ॥ १६७ ॥

एक नाम भेदका और सट्शपनेका है । आकार यह एक नाम चेष्टाका और आकृतिका है ॥ १६२ ॥ किंशारु यह एक नाम खेतीके तुषविशेषका, गणका और कंकपक्षीका है । मरु यह एक नाम बागडदेशका और मरुतका है । अद्रि यह एक नाम वृक्ष, पर्वत, सूर्य इन्हींका है । पयोधर यह एक नाम स्त्रियोंकी चूचियोंका और बादलका है ॥ १६३ ॥ वृत्र यह एक नाम अंधेरा, शत्रु, दानव इन्हींका है । कर यह एक नाम बलि, हाथ, किरण इन्हींका है । प्रदर यह एक नाम भंग, स्त्रीका प्रदरोग, वाण इन्हींका है । अस्त्र यह एक नाम बालोंका और कोणका है ॥ १६४ ॥ तूवर यह एक नाम समयमें नहीं उपजे सोंगोंवाले बैलका और समयमें नहीं उपजी मूँछ दाढीवाले पुरुषका है । रै यह एक नाम धनका और सोनेका है । परिकर यह एक नाम पलंगका और कुटुंबका है ॥ १६५ ॥ तार यह एक नाम मोतियोंकी शुद्धिका, तिरना, ऊँचा शब्द और चाँदीका है । शार यह एक नाम वायुका वाचक (पु०) और कर्बुरवर्णका वाचक वाच्यलिङ्गी है । संगर यह एक नाम प्रतिज्ञा, युद्ध, क्रियाका करना, दुःख इन्हींका है ॥ १६६ ॥ मन्त्र यह एक नाम वनविशेषका, गुप्त बात और देव आदिको साधने और वेदभेदका है । मित्र यह एक नाम सूर्यका वाचक (पु०) है और प्रियका वाचक (न०) है । स्वरु यह एक नाम यज्ञके थंभके खंडका और वज्रका है । अवस्कर यह एक नाम गुप्तका और मलका है

आडम्बरस्तूर्यखे गजेन्द्राणां च गर्जिते ।
 अभिहारोऽभियोगे च चौर्ये सन्नहनेऽपि च ॥ १६८ ॥
 स्याज्जङ्गमे परीवारः खड्गकोशे परिच्छदे ।
 विष्टरो विटपी दर्भमुष्टिः पीठाद्यमासनम् ॥ १६९ ॥
 द्वारि द्वाःस्थे प्रतीहारः प्रतीहार्यप्यनन्तरे ।
 विपुले नकुले विष्णौ बभ्रुर्ना पिङ्गले त्रिषु ॥ १७० ॥
 सारो बले स्थिरांशे च न्याय्ये क्लीबं वरे त्रिषु ।
 दुरोदरो द्यूतकारे पणे द्यूते दुरोदरम् ॥ १७१ ॥
 महारण्ये दुर्गपथे कान्तारं पुंनपुंसकम् ।
 मत्सरोऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ॥ १७२ ॥
 देवादृते वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीबं मनाविप्रये ।
 वंशांकुरे करीरोऽस्त्री तरुभेदे घटे च ना ॥ १७३ ॥

॥ १६७ ॥ आडम्बर यह एक नाम बाजेके शब्दका और हस्तियोंकी गर्जनाका है । अभिहार यह एक नाम अभिहरण, चोरकर्म, कवच आदिको धारण करना इन्हींका है ॥ १६८ ॥ परीवार यह एक नाम जंगमविशेष, तलवारका म्यान, उपकरण, सामग्री इन्हींका है । विष्टर यह एक नाम वृक्ष, डामकी मुष्टि अर्थात् चौबीस डाम और काठ आदिसे बने हुए आसन आदिका है ॥ १६९ ॥ प्रतीहार यह एक नाम द्वारका और द्वारपर स्थित हुए पुरुषका है । प्रतीहारी यह एक (स्त्री०) नाम द्वारपर स्थित हुई स्त्रीका है । इन्प्रत्ययान्त नहीं है । बभ्रु यह एक (पु०) नाम मोटे नौलैका और विष्णुका वाचक है और पिङ्गलका वाची (त्रि०) है ॥ १७० ॥ सार यह एक नाम बल, स्थिर अंश, इन्हींका वाची (पु०) है और योग्यका वाची (न०) है और श्रेष्ठका वाची (त्रि०) है । दुरोदर यह एक नाम जुवारीका वाचक (पु०) और दावका और जुवाका वाचक (न०) है ॥ १७१ ॥ कान्तार यह एक (पु० न०) नाम बड़े वनका और दुर्गम मार्गका है । मत्सर यह एक नाम दूसरेकी संपत्तिको नहीं सहनेका वाचक (पु०) और कृपणका वाचक (त्रि०) है ॥ १७२ ॥ वर यह एक नाम देवतासे वाञ्छा पानेका वाचक (पु०) और श्रेष्ठका वाचक (त्रि०) है और इष्टका और प्रियका वाची (न०) है । करीर

ना चमूजघने हस्तसूत्रे प्रतिसरोऽस्त्रियाम् ।
 यमानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहांशुवाजिषु ॥ १७४ ॥
 शुकाहिकपिभेकेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु ।
 शर्करा कर्परांशेऽपि यात्रा स्याद्यापने गतौ ॥ १७५ ॥
 इरा भूवाक्सुराप्सु स्यात्तन्त्री निद्राप्रमीलयोः ।
 धात्री स्यादुपमाताऽपि क्षितिर्प्यामलक्यपि ॥ १७६ ॥
 क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरधा कण्टकारिका ।
 त्रिषु क्रूरेऽधमेऽल्पेऽपि क्षुद्रं मात्रा परिच्छदे ॥ १७७ ॥
 अल्पे च परिमाणे सा मात्रं कात्स्न्येऽवधारणे ।
 आलेख्याश्चर्ययोश्चित्रं कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ॥ १७८ ॥
 योग्यभाजनयोः पात्रं पत्रं वाहनपक्षयोः ।
 निदेशग्रन्थयोः शास्त्रं शस्त्रमायुधलोहयोः ॥ १७९ ॥

यह एक नाम बांसके अंकुरका वाची (पु० न०) और वृक्षके भेदका
 और घटका वाची (पु०) है ॥ १७३ ॥ प्रतिसर यह एक नाम सेनाके
 पश्चाद्भागका वाची (पु०) और मंगलके हाथमें बांधे हुए कांगनेका
 वाची (न०) है । हरि यह एक नाम यम, वायु, इन्द्र, चन्द्रमा, सूर्य,
 विष्णु, सिंह, किरण, घोडा ॥ १७४ ॥ तोता, सर्प, वानर, मँडक इन्हींका
 वाची (पु०) और कपिलरंगका वाची (त्रि०) है । शर्करा यह एक
 (स्त्री०) नाम कंकर और खांड आदिका है । यात्रा यह एक (स्त्री०)
 नाम सवारीका और गमनका है ॥ १७५ ॥ इरा यह एक (स्त्री०)
 नाम पृथ्वी, वाणी, मदिरा, पानी इन्हींका है । तन्त्री यह एक (स्त्री०)
 नाम नींदका और तन्द्राका है । धात्री यह एक (स्त्री०) नाम धायमाता,
 पृथ्वी, आवला इन्हींका है ॥ १७६ ॥ क्षुद्रा यह एक (स्त्री०) नाम
 हीनअंगवाली, नटनी, वेश्या, मधुमाखी, छोटी कटेली इन्हींका है । क्षुद्र
 यह एक (त्रि०) नाम क्रूर, नीच, अल्प इन्हींका है । मात्रा यह एक
 (स्त्री०) नाम परिच्छद ॥ १७७ ॥ अल्प परिमाण इन्हींका है । आगे
 मात्राशब्दसे क्षीरशब्दतक (न०) हैं । मात्र यह एक नाम सकलत्वका
 और निश्चयका है । चित्र यह एक नाम तसवीर और आश्चर्यका है ।
 कलत्र यह एक नाम कटिका और भार्याका है । पात्र यह एक नाम यो-
 ग्यका और पात्रका है ॥ १७८ ॥ पत्र यह एक नाम वाहनका और पक्षका

स्याज्जटांशुकयोर्नेत्रं क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः ।
 मुखाग्रे क्रोडहलयोः पोत्रं गोत्रं तु नाम्नि च ॥ १८० ॥
 सत्रमाच्छादने यज्ञे सदादाने वनेऽपि च ।
 अजिरं विषये कायेऽप्यम्बरं व्योम्नि वाससि ॥ १८१ ॥
 चक्रं राष्ट्रेऽप्यक्षरं तु मोक्षेऽपि क्षीरमप्सु च ।
 स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्रौ द्वौ द्वारमात्रेऽपि गोपुरम् ॥ १८२ ॥
 गुहादम्भौ गह्वरे द्वे रहोऽन्तिकमुपह्वरे ।
 पुरोऽधिकमुपर्यग्राण्यगारे नगरे पुरम् ॥ १८३ ॥
 मन्दिरं चाथ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे ।
 दरोऽस्त्रियां भये श्वन्ने वज्रोऽस्त्री हीरके पवौ ॥ १८४ ॥

हे । शास्त्र यह एक नाम आज्ञाका और शास्त्र अर्थात् व्याकरण आदि-
 शास्त्रका है । शस्त्र यह एक नाम हथियारका और लोहेका है ॥ १७९ ॥
 नेत्र यह एक नाम वृक्षकी जडका और वस्त्रके भेद तथा आंखका है ।
 क्षेत्र यह एक नाम भार्याका और शरीरका है । पोत्र यह एक नाम शूकर
 और हलके अग्रभागका है । गोत्र यह एक नाम कुलका और नामका है
 ॥ १८० ॥ सत्र यह एक नाम आच्छादन, यज्ञ, सदावर्त्त, वन इन्हींका है ।
 अजिर यह एक नाम विषय, शरीर, चौराहा इन्हींका है । अंबर यह एक
 नाम आकाशका और वस्त्रका है ॥ १८१ ॥ चक्र यह एक नाम देशका और
 रथके पहियेका है । अक्षर यह एक नाम मोक्षका और परब्रह्मका है ।
 क्षीर यह एक नाम पानीका और दूधका है । भूरि, चन्द्र ये दो (पु०)
 नाम सोनेके और अपिशब्दसे भूरि यह नाम बहुतका और चन्द्र यह नाम
 कपूर आदिका है । गोपुर यह एक (न०) नाम द्वारमात्रका और मो-
 थेका है ॥ १८२ ॥ गह्वर यह एक (न०) नाम गुफाका और पाखंडका
 है । उपह्वर यह एक (न०) नाम एकांतका और समीपका है । अग्र
 यह एक (न०) नाम अगाड़ी, अधिक, ऊपर इन्हींका है । पुर यह एक
 (न०) नाम नगरका और मन्दिरका है ॥ १८३ ॥ राष्ट्र यह एक (पु०
 न०) नाम देशका और उपद्रवका है । दर यह एक (पु० न०) नाम
 भयका और छिद्रका है । वज्र यह एक (पु० न०) नाम हीरेका और

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे ।

औशीरश्चामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयनासने ॥ १८५ ॥

पुष्करं करिहस्ताग्रे वाद्यभाण्डमुखे जले ।

व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौषधिविशेषयोः ॥ १८६ ॥

अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादर्थ्ये ।

छिद्रात्मीयविनावाहिरवसरमध्येऽन्तरात्मानि च ॥ १८७ ॥

मुस्तेऽपि पिठरं राजकशेरुण्यपि नागरम् ।

शार्वरं त्वन्धतमसे घातुके भेद्यलिङ्गकम् ॥ १८८ ॥

गौरोऽरुणे सिते पीते व्रणकार्येऽप्यरुष्करः ।

जठरः कठिनेऽपि स्यादधस्तादपि चाधरः ॥ १८९ ॥

अनाकुलेऽपि चैकाग्रो व्यग्रो व्यासक्त आकुले ।

उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्वप्युत्तरः स्यादनुत्तरः ॥ १९० ॥

इन्द्रके वज्रका है ॥ १८४ ॥ तंत्र यह एक (न०) नाम प्रधान, सिद्धान्त, सूत्रका बुननेका औजार, परिच्छद इन्होंका है । औशीर यह एक नाम घमरका और दण्डका वाची (पु०) और शय्याका, आसनका वाची (न०) है ॥ १८५ ॥ पुष्कर यह एक (न०) नाम हाथीकी सूंडके अग्रभाग, बाजा, बर्त्तनका मुख, पानी, आकाश, तलवारका मध्यभाग, कमल, तीर्थ, औषधिविशेष इन्होंका है ॥ १८६ ॥ अंतर यह एक (न०) नाम अवकाश, अवधि, परिधान, अन्तर्धि, भेद, तादर्थ्य, छिद्र, आत्मीय, विना, बाहिर, अवसर, मध्य, अन्तरात्मा इन्होंका है ॥ १८७ ॥ पिठर यह एक (न०) नाम नागरमोथेका और दधि मथनेकी रवाईका है । नागर यह एक (न०) नाम राजकशेरुका और सोंडका है । शार्वर यह एक नाम गाढे अंधेरेका और मारनेवालेका है और वाच्यलिङ्गी है । आगेके वर्गान्ततक सब शब्द (त्रि०) हैं ॥ १८८ ॥ गौर यह एक नाम अरुण, सुपेद, पीला इन्होंका है । अरुष्कर यह एक नाम घाव करनेवालेका और भिलावेका है । जठर यह एक नाम कठिनका और पेटका है । अधर यह एक नाम नीचेका और होठका है ॥ १८९ ॥ एकाग्र यह एक नाम स्वस्थका और एकतानका है । व्यग्र यह एक नाम बिगड़े हुए चित्तवालेका और आकुलका है । उत्तर यह एक नाम ऊपर, उदीच्य, श्रेष्ठ इन्होंका है । अनुत्तर यह एक नाम ऊपर आदि इन तीनोंसे विपरीतपनेका

१७ अमर.

एषां विपर्यये श्रेष्ठे दूरानात्मोत्तमाः पराः ।

स्वादुप्रियौ तु मधुरौ क्रूरौ कठिननिर्दयौ ॥ १९१ ॥

उदारो दातृमहतोरितरस्त्वन्यनीचयोः ।

मन्दस्वच्छदयोः स्वैरः शुभ्रमुदीप्तशुक्रयोः ॥ १९२ ॥

इति रान्ताः ।

चूडा किरीटं केशाश्च संयता मौलयस्त्रयः ।

द्रुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि पीलवः ॥ १९३ ॥

कृतान्तानेहसोः कालश्चतुर्थेऽपि युगे कलिः ।

स्यात्कुरङ्गेऽपि कमलः प्रावारेऽपि च कम्बलः ॥ १९४ ॥

करोपहारयोः पुंसि बलिः प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम् ।

स्थूल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं नाकाकसीरिणोः ॥ १९५ ॥

वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ।

भेद्यलिङ्गः शठे व्यालः पुंसि श्वापदसर्पयोः ॥ १९६ ॥

और श्रेष्ठका है ॥ १९० ॥ पर यह एक नाम दूर, दूसरा, उत्तम इन्होंका है । मधुर यह एक नाम स्वादुका और प्रियका है । क्रूर यह एक नाम कठोरका और निर्दयका है ॥ १९१ ॥ उदार यह एक नाम दाताका और बडेका है । इतर यह एक नाम अन्यका और नीचका है । स्वैर यह एक नाम मन्दका और स्वाधीनका है । शुभ्र यह एक नाम प्रकाशितका और सुपेदका है ॥ १९२ ॥ यहाँ रान्त शब्द समाप्त हुए ॥ मौलि यह एक (त्रि०) नाम चोटी, मुकुट, बंधे हुए बाल इन्होंका है । पीलु यह एक (पु०) नाम वृक्षविशेष, हस्ती, बाण, पुष्प इन्होंका है ॥ १९३ ॥ काल यह एक (पु०) नाम धर्मराजका और समयका है । कलि यह एक (पु०) नाम कलियुगका और कलहका है । कमल यह एक (पु० न०) नाम मृगविशेष, जलकमल इन्होंका है । कंबल यह एक (पु०) नाम कंबल नाम ऊनके कपडेका और नागराजका है ॥ १९४ ॥ बलि यह एक नाम बलिदैत्यका, करका और भेटका वाची (पु०) है और त्वचाके संकोचका वाची (स्त्री०) है । बल यह एक नाम स्थूलपना, सामर्थ्य, सेना इन्होंका वाची (न०) है और काकका और हलका वाची (पु०) है ॥ १९५ ॥ वातूल यह एक नाम वातके समूहका वाची (पु०) और

मलोऽस्त्री पापविद्रुकिद्वान्यस्त्री शूलं रुगायुधम् ।
 शङ्कावपि द्वयोः कीलः पालिः रुयश्चङ्कपंक्तिषु ॥ १९७ ॥
 कला शिल्पे कालभेदेऽप्याली सरयावली अपि ।
 अब्ध्यम्बुविकृतौ वेला कालमर्यादयोरपि ॥ १९८ ॥
 बहुलाः कृत्तिका गावो बहुलोऽग्नौ शितौ त्रिषु ।
 लीला विलासक्रिययोरुपला शर्करापि च ॥ १९९ ॥
 शोणितेऽम्भसि कीलालं मूलमाद्ये शिफाभयोः ।
 जालं समूहं आनायगवाक्षक्षारकैष्वपि ॥ २०० ॥
 शीलं स्वभावे सदृते सस्ये हेतुकृते फलम् ।
 छदिर्नेत्ररुजोः क्लीवं समूहे पटलं न ना ॥ २०१ ॥

वातके विकारको नहीं सहनेशाले प्राणिका वाची (त्रि०) है । व्याल यह एक नाम शठका वाची वाच्यलिंगी और सिंह, भेडिया आदिका और सर्पका वाची (पु०) है ॥ १९६ ॥ मल यह एक (पु० न०) नाम पाप, विष्टा, पसीना आदि इन्हींका है । शूल यह एक (पु० न०) नाम रोग, हथियार इन्हींका है । कील यह एक (पु० स्त्री०) नाम शंकुका और अग्निके तेजका है । पालि यह एक (स्त्री०) नाम कानकी लत्ता, पंक्ति, चिह्न इन्हींका है ॥ १९७ ॥ कला यह एक (स्त्री०) नाम शिल्पका और कालके भेदका है । आली यह एक (स्त्री०) नाम सखीका और पंक्तिका है । वेला यह एक (स्त्री०) नाम चन्द्रमाके उदय आदिसे समुद्रके पानीकी वृद्धि और अवृद्धि अर्थात् ज्वारभाटा, कालमर्यादा इन्हींका है ॥ १९८ ॥ बहुला यह एक (स्त्री०) नाम कृत्तिकाओंका और गौओंका है । बहुल यह एक नाम अग्निका वाची (पु०) और कृष्णवर्णका वाची (त्रि०) है । लीला यह एक (स्त्री०) नाम भोगका और क्रियाका है । उपला यह एक (स्त्री०) नाम खाँडका और पत्थरका है ॥ १९९ ॥ कीलाल यह एक (पु० न०) नाम रक्तका और पानीका है । आगेके नाम कुशलशब्दतक (न०) हैं । मूल यह एक नाम पहला, जड़, मूलनक्षत्र इन्हींका है । जाल यह एक नाम समूह, सन, सूतका बना रज्जुबंध, झरोखा, बिना खिली कलिका इन्हींका है ॥ २०० ॥ शील यह एक नाम स्वभाव, सदृत्त इन्हींका है । फल यह एक नाम वृक्ष आदिके

अधःस्वरूपयोरस्त्री तलं स्याच्चाभिषे पलम् ।

और्वानलेऽपि पातालं चैलं वस्त्रेऽधमे त्रिषु ॥ २०२ ॥

कुकूलं शंकुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ।

निर्णीते केवलमिति त्रिलिङ्गं त्वेककृतस्त्रयोः ॥ २०३ ॥

पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु ।

प्रवालमंकुरेऽप्यस्त्री त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च ॥ २०४ ॥

करालो दन्तुरे तुङ्गे चारौ दक्षे च पेशलः ।

मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः स्यालोलश्चलसतृष्णयोः ॥ २०५ ॥

इति लान्ताः ।

दवदावौ वनारण्यवद्भी जन्महरौ भवौ ।

मन्त्री सहायः सचिवौ पतिशाखिनरा धवाः ॥ २०६ ॥

फलका और कार्यके फलका और त्रिफला आदिका है । पटल यह एक नाम घरका छादन, नेत्रकी पीडा इन्हींका वाचक (न०) है और समूहका वाची पटलशब्द (पु०) नहीं है ॥ २०१ ॥ तल यह एक (पु० न०) नाम नीचेका और स्वरूपका है । पल यह एक नाम पलभरका और मां-सका है । पाताल यह एक नाम बडवाग्रिका और पातालका है । चैल यह एक (न०) नाम वस्त्रका और नीचका है और नीचका वाची (त्रि०) है ॥ २०२ ॥ कुकूल यह एक नाम कीलोंसे आच्छादित छिद्रका और तुषकी अग्रिका है । केवल यह एक नाम निश्चितका वाची (न०) और एकका और संपूर्णका वाची (त्रि०) है ॥ २०३ ॥ कुशल यह एक नाम सामर्थ्य, क्षेम, पुण्य इन्हींका वाची (न०) और शिक्षाका वाची (त्रि०) है । प्रवाल यह एक (पु० न०) नाम अंकुरका और मूंगेका है । स्थूल यह एक (त्रि०) नाम जडका और मोटेका है ॥ २०४ ॥ कराल यह एक (त्रि०) नाम उंचे दांतोंवालेका और उंचेका है । पेशल यह एक (त्रि०) नाम शत्रुका और चतुरका है । बाल यह एक (त्रि०) नाम मूर्खका और बालकका है । लोल यह एक (त्रि०) नाम चञ्चलका और तृष्णावालेका है ॥ २०५ ॥ यहाँ लान्त शब्द समाप्त हुए ॥ दव, दाव ये दो (पु०) नाम वनके और वनकी अग्रिके हैं । भव यह एक (पु०) नाम जन्मका और महादेवका है । सचिव यह एक (पु०) नाम मंत्रीका

अवयः शैलमेषार्का आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः ।

भावः सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु ॥ २०७ ॥

स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो गर्भमोचने ।

अविश्वासेऽपह्वेऽपि निकृतावपि निह्वः ॥ २०८ ॥

उत्सेकामर्षयोरिच्छाप्रसरे मह उत्सवः ।

अनुभावः प्रभावे च सतां च मतिनिश्चये ॥ २०९ ॥

स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानं चाद्योपलब्धये ।

शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे पारशवो मतः ॥ २१० ॥

ध्रुवो भभेदे क्लीबं तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु ।

स्वो ज्ञातावात्मनि स्वं त्रिष्व्वात्मीये स्वोऽस्त्रियां धने ॥ २११ ॥

स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेऽपि नीवी परिपणेषपि च ।

शिवा गौरीफेरवयोर्द्वन्द्वं कलहयुग्मयोः ॥ २१२ ॥

और सहायका है । धव यह एक (पु०) नाम पति, धववृक्ष, मनुष्य इन्होंका है ॥ २०६ ॥ अवि यह एक (पु०) नाम पर्वत, मेंढा, सूर्य इन्होंका है । हव यह एक (पु०) नाम आज्ञा, आह्वान, यज्ञ इन्होंका है । भाव यह एक (पु०) नाम सत्ता, स्वभाव, अभिप्राय, चेष्टा, आत्मा, जन्म इन्होंका है ॥ २०७ ॥ प्रसव यह एक (पु०) नाम उत्पत्ति, फल, पुष्प, गर्भमोचन इन्होंका है । निह्व यह एक (पु०) नाम अविश्वास, अपलाप (बकवाद), शठपना इन्होंका है ॥ २०८ ॥ उत्सव यह एक (पु०) नाम उद्गति (ऊपरको उठाना), कोप, इच्छाका वेग, आनन्दका अवसर इन्होंका है । अनुभाव यह एक (पु०) नाम प्रभाव, सत्पु-
स्फोंकी बुद्धिका निश्चय इन्होंका है ॥ २०९ ॥ प्रभव यह एक (पु०) नाम जन्मका हेतु और प्रथम ज्ञानका स्थान इन्होंका है । पारशव यह एक (पु०) नाम शूद्रकी स्त्रीमें ब्राह्मणसे उपजे पुत्रका और शस्त्रका है ॥ २१० ॥ ध्रुव यह एक नाम ध्रुव तारेका वाची (पु०) है, निश्चयका वाची (न०) है और नित्यका वाची (त्रि०) है । स्व यह एक नाम सगोत्रीका और आत्माका वाची (पु०) है । अपने संबंधवालेका वाची (त्रि०) है और धनका वाची (पु० न०) है ॥ २११ ॥ नीवी यह एक (स्त्री०) नाम स्त्रीकी कटिके वस्त्रबंधनका और मूलद्रव्यका है । शिवा यह एक

द्रव्यामुव्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु ।

क्लीबं नपुंसकं षण्ठे वाच्यलिङ्गमविक्रमे ॥ २१३ ॥

इति वान्ताः ।

द्वौ विशौ वैश्यमनुजौ द्वौ चराभिमरौ स्पशौ ।

द्वौ राशी पुञ्जमेषाद्यौ द्वौ वंशौ कुलमस्करौ ॥ २१४ ॥

रहःप्रकाशौ वीकाशौ निर्वेशौ भृतिभोगयोः ।

कृतान्ते पुंसि कीनाशः क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु ॥ २१५ ॥

पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः स्यात्कुशमप्सु च ।

दशाऽवस्थानेकविधाऽप्याशा तृष्णापि चायता ॥ २१६ ॥

वशा स्त्री करिणी च स्याद् दृग्ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु ।

स्यात्कर्कशः साहासिकः कठोरामसृणावपि ॥ २१७ ॥

(स्त्री०) नाम पार्वतीका और गीदडीका है । द्वन्द्व यह एक (न०) नाम कलहका और जोडेका है ॥ २१२ ॥ सत्त्व यह एक नाम वस्तु, प्राण, वीर्यकी अधिकता इन्हींका वाची (न०) और प्राणीका वाची (पु० न०) है । क्लीब यह एक नाम हीजडेका वाची (न०) और अलसका वाची वाच्यलिङ्गी है ॥ २१३ ॥ यहां वान्त शब्द समाप्त हुए ॥ विश् (शान्त) यह एक (पु०) नाम वैश्यका और मनुष्यका है । स्पश यह एक (पु०) नाम गूढ पुरुषका और युद्धका है । राशि यह एक (पु०) नाम समूहका और मेष आदि राशिका है । वंश यह एक (पु०) नाम कुलका और बांसका है ॥ २१४ ॥ वीकाश यह एक (पु०) नाम एकान्त और प्रकाशका है । निर्वेश यह एक (पु०) नाम तनखाका और भोगका है । कीनाश यह एक नाम यमका वाची (पु०) है । क्षुद्र-रोगका और किसानका वाची (त्रि०) है ॥ २१५ ॥ अपदेश यह एक (पु०) नाम पद, लक्ष्य, निमित्त इन्हींका है । कुश यह एक (पु० न०) नाम डामका और रामचन्द्रके पुत्रका है । दशा यह एक (स्त्री०) नाम अनेक प्रकारकी बाल्य आदि अवस्थाका और वस्त्रके अंतका है । आशा यह एक (स्त्री०) नाम बड़ी तृष्णाका और दिशाका है ॥ २१६ ॥ वशा यह एक (स्त्री०) नाम स्त्रीका और हथिनीका है । दृश् (शान्त) यह एक नाम ज्ञानका और ज्ञाताका वाची (त्रि०) है, दृष्टिका वाची

प्रकाशोऽतिप्रसिद्धेऽपि शिशावज्ञे च बालिशः ।
कोशोऽस्त्री कुङ्कुमले खड्गपिधानेऽर्थौघदिव्ययोः ॥ २१८ ॥

इति शान्ताः ।

सुरमत्स्यावनिमिषौ पुरुषावात्ममानवौ ॥ २१९ ॥
काकमत्स्यात्खगौ ध्वाक्षौ कक्षौ तु तृणवीरुधौ ।
अभीषुः प्रग्रहे रश्मौ प्रैषः प्रेषणमर्दने ॥ २२० ॥
पक्षः सहायेऽप्युष्णीषः शिरोवेषकिरीटयोः ।
शुक्रले सूषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे वृषः ॥ २२१ ॥
द्यूतेऽक्षे शारिफलकेऽप्याकर्षोऽथाक्षमिन्द्रिये ।
ना द्यूताङ्गे कर्षचक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे ॥ २२२ ॥
कर्षूर्वावर्ता करीषाग्निः कर्षूः कुल्याभिधायिनी ।
पुंभावे तात्क्रियायां च पौरुषं विषमप्सु च ॥ २२३ ॥

(स्त्री०) है । कर्कश यह एक (त्रि०) नाम विवेकरहित, कठोर, दुष्ट स्पर्शवाला इन्होंका है ॥ २१७ ॥ प्रकाश यह एक (त्रि०) नाम अत्यंत प्रसिद्धका और घामका है । बालिश यह एक (त्रि०) नाम बालकका और मूर्खका है । कोश यह एक (पु० न०) नाम फूलकी कली, तलवारका घर, घनसमूह, शपथभेद इन्होंका है ॥ २१८ ॥ यहां शान्त शब्द समाप्त हुए ॥ अनिमिष यह एक (पु०) नाम देवताका और मच्छका है । पुरुष यह एक (पु०) नाम आत्माका और मनुष्यका है ॥ २१९ ॥ ध्वाक्ष यह एक (पु०) नाम काकका और बगला आदिका है । कक्ष यह एक (पु०) नाम तृणका और वेलका है । अभीषु यह एक (पु०) नाम घोड़े आदिकी रस्सीका और किरणका है । प्रैष यह एक (पु०) नाम प्रेषणका और मर्दनका है ॥ २२० ॥ पक्ष यह एक (पु०) नाम सहायका और पन्द्रह दिनोंका है । उष्णीष यह एक (पु० न०) नाम शिरकी पगडी आदिका और मुकुटका है । वृष यह एक (पु०) नाम वीर्यवाला, मूषा, श्रेष्ठ, सुकृत, बैल इन्होंका है ॥ २२१ ॥ आकर्ष यह एक (पु०) नाम जूवा, पाशा, जूवाकी पीठिका इन्होंका है । अक्ष यह एक नाम इन्द्रियका वाची (न०) है और जूवाका अंग, कर्ष (तोल), चक्र, व्यवहार, बहेडा इन्होंका वाची (पु०) है ॥ २२२ ॥ कर्षू यह

उपादानेऽप्यामिषं स्यादपराधेऽपि किल्विषम् ।

स्यादृष्टौ लोकधात्वंशे वत्सरे वर्षमस्त्रियाम् ॥ २२४ ॥

प्रेक्षा नृत्येक्षणं प्रज्ञा भिक्षा सेवार्थना भ्रूतिः ।

त्विद् शोभापि त्रिषु परे न्यक्षं कात्स्न्यनिकृष्टयोः ॥ २२५ ॥

प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षो रूक्षस्त्वप्रेम्ण्यचिक्कणे ॥ २२६ ॥

इति षान्ताः ।

रविश्चेतच्छदौ हंसौ सूर्यवह्नी विभावसू ।

वत्सौ तर्णकवर्षौ द्वौ सारङ्गाश्च दिवौकसः ॥ २२७ ॥

शृंगारादौ विषे वीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः ।

पुंस्युत्तंसावतंसौ द्वौ कर्णपूरे च शेखरे ॥ २२८ ॥

एक नाम बात और अरनेकी अग्निका वाची (पु०) और कर्षू नदीका वाची (स्त्री०) है । पौरुष यह एक (न०) नाम पुरुषपनेका और पुरुषके कर्मका है । विष यह एक (न०) नाम पानीका और जहरका है ॥ २२३ ॥ आमिष यह एक (पु० न०) नाम उपादानका और उत्कोच (रिशवत) का है । किल्विष यह एक (न०) नाम अपराधका और रोगका है । वर्ष यह एक (पु० न०) नाम वर्षा, जम्बूद्वीपका अंश भर तखंड आदि, संवत्सर इन्हींका है ॥ २२४ ॥ प्रेक्षा यह एक (स्त्री०) नाम नाच देखनेका और बुद्धिका है । भिक्षा यह एक (स्त्री०) नाम सेवा, मांगना, तनखा इन्हींका है । त्विष् (षान्त) यह एक (स्त्री०) नाम शोभाका और कांतिका है । वक्ष्यमाण तीन शब्द वाच्यलिङ्गी हैं । न्यक्ष यह एक नाम संपूर्णपनेका और नचिकेका है ॥ २२५ ॥ अध्यक्ष यह एक नाम प्रत्यक्ष और अधिकृतका है । रूक्ष यह एक नाम प्रेमराहितका और रूखेका है ॥ २२६ ॥ यहां षान्त शब्द समाप्त हुए ॥ हंस यह एक (पु०) नाम सूर्यका और हंसविशेषका है । विभावसु यह एक (पु०) नाम सूर्यका और अग्निका है । वत्स यह एक (पु०) नाम गौके बच्चेका और वर्षका है । दिवौकस् यह एक (पु०) नाम पपैयेका और देवताओंका है ॥ २२७ ॥ रस यह एक (पु०) नाम शृंगार आदि विष, वीर्य, गुण, प्रीति, द्रव इन्हींका है । उत्तंस, अवतंस ये दो (पु०) नाम कानके गहनेके और शिरके गहनेके हैं ॥ २२८ ॥

देवभेदेऽनले रश्मौ वसू रत्ने धने वसु ।

विष्णौ च वेधाः स्त्री त्वाशीर्हितांशसाहिदंष्ट्रयोः ॥ २२९ ॥

लालसे प्रार्थनौत्सुक्ये हिंसा चौर्यादिकर्म च ।

प्रसूरश्चापि भूद्यावौ रोदस्यौ रोदसी च ते ॥ २३० ॥

ज्वालाभासौ न पुंस्यर्चिज्योतिर्भद्योतदृष्टिषु ।

पापापराधयोरगः खगवाल्यादिनोर्वयः ॥ २३१ ॥

तेजःपुरीषयोर्वचो महस्तूत्सवतेजसोः ।

रजो गुणे च स्त्रीपुष्पे राहौ ध्वान्ते गुणे तमः ॥ २३२ ॥

छन्दः पद्येऽभिलाषे च तपः कृच्छ्रादिकर्म च ।

सहो बलं सहा मार्गो नभः खं श्रावणो नभाः ॥ २३३ ॥

वसु यह एक नाम देवता (वसुदेवता), अग्नि, किरण इन्हींका वाची (पु०) है । रत्नका और धनका वाची (न०) है । वेधस् (सान्त) यह एक (पु०) नाम विष्णुका और ब्रह्माका है । आशिस् यह एक (स्त्री०) नाम हितकी चाहनाका और सर्पकी डाढका है ॥ २२९ ॥ लालसा यह एक (स्त्री०) नाम प्रार्थनाका और आनन्दका है । हिंसा यह एक (स्त्री०) नाम चोरी और मारना आदि कर्मका है । प्रसू यह एक (स्त्री०) नाम माताका और घोड़ीका है । रोदस् (सान्त न०), रोदसी (स्त्री०) ये दो नाम पृथ्वी आकाशके हैं ॥ २३० ॥ अर्चिस् यह एक नाम ज्वालाका और प्रकाशका है और (पु०) नहीं है । ज्योतिस् यह एक (न०) नाम नक्षत्र, प्रकाश, दृष्टि इन्हींका है । आगस् यह एक (न०) नाम पापका और अपराधका है । वयस् यह एक (न०) नाम पक्षीका और बाल्य यौवन अवस्था आदिका है ॥ २३१ ॥ वर्चस् यह एक (न०) नाम तेजका और विष्ठाका है । महस् यह एक (न०) नाम उत्सवका और तेजका है । रजस् यह एक (न०) नाम रजोगुणका और स्त्रीके फूलका है । तमस् यह एक (न०) नाम राहु, अंधेरा, तमोगुण इन्हींका है ॥ २३२ ॥ छन्दस् यह एक (न०) नाम गायत्री आदि छन्दका और कृच्छ्राका है । तपस् यह एक (न०) नाम सांतपन और चान्द्रायण आदि व्रतका है । सहास् यह एक नाम बलका वाची (न०) है और मार्गका वाची (पु०) है । नभस् यह एक नाम आकाशका वाची (न०)

ओकः सद्भाश्रयश्चौकाः पयः क्षीरं पयोऽम्बु च ।
 ओजो दीप्तौ बले स्रोत इन्द्रिये निम्नगारये ॥ २३४ ॥
 तेजः प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्लेऽप्यतस्त्रिषु ।
 विद्वान्विदंश्च बीभत्सो हिंसेऽप्यतिशये त्वमी ॥ २३५ ॥
 वृद्धप्रशस्ययोज्यायान्कनीयांस्तु युवालपयोः ।
 वरीयांस्तूरुवरयोः साधीयान्साधुबाढयोः ॥ २३६ ॥
 इति सान्ताः ।

दलेऽपि बर्ह निर्वन्धोपरागार्कादयो ग्रहाः ।
 द्वार्यापीडे काथरसे निर्व्यूहो नागदन्तके ॥ २३७ ॥
 तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्राहः प्रग्रहोऽपि च ।
 पंतीपरिजनादानमूलशापाः परिग्रहाः ॥ २३८ ॥

और श्रावणका वाची (पु०) है ॥ २३३ ॥ ओकस् यह एक नाम मकानका वाची (न०) और आश्रयका वाची (पु०) है । पयस् यह एक (न०) नाम दूधका और पानीका है । ओजस् यह एक (न०) नाम कांतिका और बलका है । स्रोतस् यह एक (न०) नाम इन्द्रियका और नदीके वेगका है ॥ २३४ ॥ तेजस् यह एक (न०) नाम प्रभाव, तेज, बल, वीर्य इन्हींका है । इससे आगे सकारान्त शब्दोंकी समाप्तिपर्यन्त सब शब्द (त्रि०) हैं । विद्वस् यह एक नाम जाननेवालेका और आत्मज्ञानीका है । बीभत्स यह एक नाम क्रूरका और रसभेदका है । ये वक्ष्यमाण (आगे कहे जानेवाले) ज्यायस्से लेकर साधीयस्शब्द पर्यंत अतिशयके वाची हैं ॥ २३५ ॥ ज्यायस् यह एक नाम अत्यंत वृद्धका और अत्यंत स्तुतिके योग्यका है । कनीयस् यह एक नाम अत्यंत जवानका और अत्यंत अल्पका है । वरीयस् यह एक नाम अत्यंत बड़ेका और अत्यंत श्रेष्ठका है । साधीयस् यह एक नाम अत्यंत साधुका और अत्यन्त प्रतिज्ञावालेका है ॥ २३६ ॥ यहां सांत शब्द समाप्त हुए ॥ बर्ह यह एक (पु० न०) नाम पत्तेका और मोरके पंखका है । ग्रह यह एक (पु०) नाम आग्रहविशेष, ग्रहण, सूर्य आदि ग्रह इन्हींका है । आगेके वर्गान्ततक सब शब्द (पु०) हैं । निर्व्यूह यह एक नाम द्वार, मुकुट, काथका रस, घर आदिकी भीतिमें गाड़ी हुई दो कीलें इन्हींका है ॥ २३७ ॥ प्रग्राह, प्रग्रह ये दो नाम तराजूकी डोरी

दारेषु च गृहाः श्रोण्यामप्यारोहो वरस्त्रियाः ।

व्यूहो वृन्देऽप्यहिर्वृत्रेऽप्यग्नीद्वर्कास्तमोऽपहाः ॥ २३९ ॥

परिच्छदे नृपाहोऽर्थे परिवर्हो—

इति हान्ताः ।

ऽव्ययाः परे ।

आङ्गीषदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे ॥ २४० ॥

आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्येऽप्यास्तु स्यात्कोपपीडयोः ।

पापकुत्सेषदर्थे कु धिङ् निर्भर्त्सननिन्दयोः ॥ २४१ ॥

चान्वाचयसमाहारेतरसमुच्चये ।

स्वस्त्याशीः क्षेमपुण्यादौ प्रकर्षे लङ्घनेऽप्यति ॥ २४२ ॥

और घोड़े आदिकी रस्सी इन्हींका है । परिग्रह यह एक नाम भार्या, कुटुम्ब, अंगीकार, मूल, शाप इन्हींका है ॥ २३८ ॥ गृह यह एक नाम स्त्रीका वाची बहुवचनान्त (पु०) है और मकानका वाची (न०) है । आरोह यह एक नाम उत्तम स्त्रीकी कटिका और हाथीके चढनेका है । व्यूह यह एक नाम समूहका और सेनाके स्थित करनेका है । अहि यह एक नाम वृत्रासुरका आर सर्पका है । तमोपह यह एक नाम अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य इन्हींका है ॥ २३९ ॥ परिवर्ह यह एक नाम राजाके योग्य सुपेद छत्र आदिका और चंदोवा वस्त्र आदिका है ॥ यहां हान्त शब्द समाप्त हुए ॥ इससे आगे अव्यय हैं । आङ् यह एक नाम ईषदर्थ अर्थात् थोडा, अभिव्याप्ति, सीमार्थ, धातुयोगज इन्हींका वाची अव्यय है और इसका डकार अनुबंधके लिये है । ईषदर्थमें आपिंगल अर्थात् कुछ पिंगल है । अभिव्याप्तिमें जैसे—‘ आ सत्यलोकात् ’ अर्थात् सत्यलोकको अभिव्याप्त होके । सीमार्थमें जैसे—‘ आसमुद्रं राजदंडः ’ अर्थात् समुद्रतक राजदंड है । धातुयोगमें जैसे—‘ आहरति ’ अर्थात् आक्रमण करता है ॥ २४० ॥ जो प्रगृह्यसंज्ञक आ है वह स्मरणमें और वाक्यके पूरनेमें है । आः यह कोषमें और पीडामें वर्त्तता है । कु यह पाप, निन्दा, थोडा इन्हींमें वर्त्तता है । धिक् यह झिडकनेमें और निन्दामें वर्त्तता है ॥ २४१ ॥ च यह अन्वाचय, समाहार, इतरेतर, समुच्चय इन्हींमें वर्त्तता है । स्वस्ति यह आशीर्वाद, कुशल, पुण्य आदि इन्हींमें वर्त्तता है । अति यह अत्यन्तमें और

स्वित्रप्रश्ने च वितर्के च तु स्याद्भेदेऽवधारणे ।
 सकृत्सहैकवारं चाप्यारादूरसमीपयोः ॥ २४३ ॥
 प्रतीच्यां चरमे पश्चादुताप्यर्थविकल्पयोः ।
 पुनः सहार्थयोः शश्वत्साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः ॥ २४४ ॥
 खेदानुकम्पासंतोषविस्मयाभञ्जणे वत ।
 हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषादयोः ॥ २४५ ॥
 प्रति प्रतिनिधौ वीप्सालक्षणा द्वौ प्रयोगतः ।
 इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिसमाप्तिषु ॥ २४६ ॥
 प्राच्यां पुरस्तात्प्रथमे पुर्णार्थेऽग्रत इत्यपि ।
 यावत्तावच्च साकल्येऽवधौ मानेऽवधारणे ॥ २४७ ॥
 मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकात्स्न्येष्वथो अथ ।
 वृथा निरर्थकाविध्योर्नानाऽनेकोभयार्थयोः ॥ २४८ ॥

लघनमें वर्त्तता है ॥ २४२ ॥ स्वित्र यह प्रश्नमें और तर्कमें वर्त्तता है । तु
 यह निश्चयमें और भेदमें वर्त्तता है । सकृत् यह सहार्थमें और एकवारमें
 वर्त्तता है । आरात् यह एक नाम दूरका और समीपका है ॥ २४३ ॥
 पश्चात् यह एक नाम पश्चिम दिशाका और अन्त्यका है । उत यह एक
 नाम समुच्चयका और विकल्पका है । शश्वत् यह एक नाम वारंवारका और
 सहार्थका है । साक्षात् यह एक नाम प्रत्यक्षका और तुल्यका है ॥ २४४ ॥
 वत यह एक नाम खेद, दया, संतोष, आश्चर्य, गुप्त बोलना इन्हींका है ।
 हन्त यह एक नाम आनन्द, दया, वाक्यका आरंभ, विषाद इन्हींका है
 ॥ २४५ ॥ प्रति यह एक नाम प्रतिनिधि, व्याप्त होनेकी इच्छा, लक्षणा
 इत्यभूत आख्यान आदि इन्हींका शिष्टप्रयोगके अनुसार है । इति यह
 एक नाम हेतु, प्रकरण, प्रकाश, निश्चय, समाप्ति इन्हींका है ॥ २४६ ॥
 पुरस्तात् यह एक नाम पूर्वदिशा, प्रथम, बीता हुआ, अगाडी इन्हींका
 है । यावत्, तावत् ये दो नाम सकल्पना, अवधि, परिमाण, निश्चय
 इन्हींका है ॥ २४७ ॥ अथो, अथ ये दो नाम मंगल, अनंतर, आरंभ,
 प्रश्न, सकल्पना इन्हींका है । वृथा यह एक नाम निरर्थकका और विधिसं
 हीनका है । नाना यह एक नाम अनेकार्थका और उभयार्थका है ॥ २४८ ॥

नु पृच्छायां विकल्पे च पश्चात्सादृश्ययोरनु ।
 प्रश्नावधारणाऽनुज्ञानुनयामन्त्रणे ननु ॥ २४९ ॥
 गर्हासमुच्चयप्रश्नशङ्कासंभावनास्वपि ।
 उपमायां विकल्पे वा सामि त्वर्धे जुगुप्सिते ॥ २५० ॥
 अमा सह समीपे च कं वारिणि च मूर्धनि ।
 इवेत्यमर्थयोरेवं नूनं तर्केऽर्थनिश्चये ॥ २५१ ॥
 तूष्णीमर्थे सुखे जोषं किं पृच्छायां जुगुप्सने ।
 नाम प्राकाशसंभाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ॥ २५२ ॥
 अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम् ।
 हुं वितर्के परिप्रश्ने समयान्तिकमध्ययोः ॥ २५३ ॥
 पुनरप्रथमे भेदे निर्निश्चयनिषेधयोः ।
 स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके पुरा ॥ २५४ ॥

नु यह एक नाम पृच्छनेका और विकल्पका है । अनु यह एक नाम पी-
 छका और सदृशपनेका है । ननु यह एक नाम प्रश्न, निश्चय, आज्ञा,
 सान्त्वन, संबोधन इन्हींका है ॥ २४९ ॥ अपि यह एक नाम निन्दा,
 समुच्चय, प्रश्न, शंका, संभावना इन्हींका है । वा यह एक नाम उपमाका
 और विकल्पका है । सामि यह एक नाम आधेका और निन्दाका है ॥ २५० ॥
 अमा यह एक नाम साथका और समीपका है । कं यह एक नाम पानीका
 और शिरका है । एवं यह एक नाम सदृशपनेका और निश्चयका है । नूनं
 यह एक नाम तर्कका और अर्थके निश्चयका है ॥ २५१ ॥ तूष्णीं यह
 एक नाम मौनका है । जोषं यह एक नाम सुखका है । किं यह एक नाम
 पृच्छनेका और निन्दाका है । नाम यह एक नाम प्रकाशपना, कथंचिदर्थ,
 क्रोध, वैरसाहित अंगीकार, निन्दा इन्हींका है ॥ २५२ ॥ अलं यह एक
 नाम परिपूर्णता, गहना, सामर्थ्य, निवारण इन्हींका है । हुं यह एक
 नाम वितर्कका और प्रश्नका है । समय यह एक नाम समीपका और
 मध्यका है ॥ २५३ ॥ पुनर् यह एक नाम वारंवार और भेदका है । निश्चय
 यह एक नाम निश्चयका और निषेधका है । पुरा यह एक नाम प्रबंध,
 बहुत दिनोंका बीता हुआ, समीप आनेवाला इन्हींका है ॥ २५४ ॥

उर्यूरी चोररी च विस्तरेऽङ्गीकृतौ त्रयम् ।
 स्वर्गे परे च लोके स्ववार्तासंभाव्ययोः किल ॥ २५५ ॥
 निषेधवाक्यालंकारजिज्ञासानुनये खलु ।
 समीपोभयतः शीघ्रसाकल्याभिमुखेऽभितः ॥ २५६ ॥
 नामप्राकाश्ययोः प्रादुर्मिथोऽन्योन्यं रहस्यपि ।
 तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थे हा विषादशुगर्तिषु ॥ २५७ ॥
 अहहेत्यद्भुते खेदे हि हेतावधारणे ।

इति नानार्थवर्गः ॥ ३ ॥

अथ अव्ययवर्गः ४ ।

चिरायचिररात्रायचिरस्याद्याश्चिरार्थकाः ।
 मुहुः पुनः पुनः शश्वदभीक्ष्णमसकृत्समाः ॥ १ ॥
 स्नाग्गदित्यञ्जसाहाय द्राक् मङ्क्षु सपदि द्रुते ।
 बलवत्सुष्टु किमुत स्वत्यतीव च निर्भरे ॥ २ ॥

उररी, उरी, उररी ये तीन नाम विस्तारके और अंगीकारनेके हैं । स्वर यह एक नाम स्वर्गका और परलोकका है । किल यह एक नाम वार्ताका और संभाव्यका है ॥ २५५ ॥ खलु यह एक नाम निषेध, वाक्यकी शोभा जाननेकी इच्छा, नष्टपना इन्हींका है । अभितस् यह एक नाम समीप, दोनों तरफसे, शीघ्र, सकलपना, सन्मुख इन्हींका है ॥ २५६ ॥ प्रादुर यह एक नाम नामका और प्रकाशपनेका है । मिथस् यह एक नाम आपसका और एकान्तका है । तिरस् यह एक नाम अन्तर्धानका और तिरछेपनेका है । हा यह एक नाम विषाद, शोक, पीडा इन्हींका है ॥ २५७ ॥ अहह यह एक नाम अद्भुतका और खेदका है । हि यह एक नाम हेतुका और निश्चयका है ॥

इति नानार्थवर्गः ॥ ३ ॥

अथ अव्ययवर्गः । चिराय, चिररात्राय, चिरस्य, चिरेण, चिरात्, चिरं ये छः चिर अर्थात् बहुत देरके नाम हैं । मुहुस्, पुनः, पुनर्, शश्वत्, अभीक्ष्णं, असकृत् ये पाँचों नाम बारंवारके हैं और अर्थसे समान हैं ॥ १ ॥ स्नाक्, झटिति, अञ्जसा, अहाय, द्राक्, मङ्क्षु, सपदि ये सात नाम शीघ्रके हैं । बलवत्, सुष्टु, किमुत, सु, अति, इव ये छः नाम अतिशयके हैं ॥ २ ॥

पृथग्विनान्तरेणर्ते हिरुक् नाना च वर्जने ।
 यत्तद्यतस्ततो हेतावसाकल्ये तु चिञ्चन ॥ ३ ॥
 कदाचिजातु सार्धं तु साकं सत्रा समं सह ।
 आनुकूल्यार्थकं प्राध्वं व्यर्थके तु वृथा मुधा ॥ ४ ॥
 आहो उताहो किमुत विकल्पे किं किमुत च ।
 तु हि च स्म ह वै पादपूरणे पूजने स्वति ॥ ५ ॥
 दिवाहीत्यथ दोषा च नक्तं च रजनाविति ।
 तिर्यगर्थे साचि तिरोऽप्यथ संबोधनार्थकाः ॥ ६ ॥
 स्युः प्याट् पाडङ्ग हे है भोः समया निकषा हिरुक् ।
 अतर्किते तु सहसा स्यात्पुरः पुरतोऽग्रतः ॥ ७ ॥
 स्वाहा देवहविर्दाने श्रौषट् वौषट् वषट् स्वधा ।
 किञ्चिदीषन्मनागल्पे प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ ८ ॥
 व वा यथा तथैवैवं साम्येऽहो ही च विस्मये ।
 मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां सद्यः सपदि तत्क्षणे ॥ ९ ॥

पृथक्, विना, अन्तरेण, ऋते, हिरुक्, नाना ये छः नाम वर्जनेके अर्थमें हैं । यत्, तत्, यतः, ततः ये चारों नाम कारणवाचक हैं । चित्, चन ये दो नाम असंपूर्णवाचक हैं ॥ ३ ॥ कदाचित्, जातु ये दो नाम किसी कालके हैं । सार्धं, साकं, सत्रा, समं, यह ये पाँच नाम साथके हैं । प्राध्वं यह एक नाम अनुकूलपनेका है । वृथा, मुधा ये दो नाम व्यर्थके हैं ॥ ४ ॥ आहो, उताहो, किमुत, किं, किमु, उत ये छः नाम विकल्पके हैं । तु, हि, च, स्म, ह, वै ये छः नाम श्लोकके पादको पूरण करनेमें वर्तते हैं । सु, अति ये दो नाम पूजनके हैं ॥ ५ ॥ दिवा यह एक नाम दिनका है । दोषा, नक्तं ये दो नाम रात्रिके हैं । साचि, तिरस् ये दो नाम तिरछेके हैं ॥ ६ ॥ प्याट्, पाट्, अंग, हे, है, भोस् ये छः नाम संबोधनके हैं । समया, निकषा, हिरुक् ये तीन नाम समीपपनेके हैं । सहसा यह एक नाम नहीं तर्कित किये (अकस्मात्) का है । पुरः, पुरतः, अग्रतः ये तीन नाम अगाडीके हैं ॥ ७ ॥ स्वाहा, श्रौषट्, वौषट्, वषट्, स्वधा इन्हींमें आदिके चार नाम देवताओंके अर्थ हविर्दानविशेषके हैं और स्वधा यह एक नाम पितरोंके अर्थ देनेमें प्रसिद्ध है । किञ्चित्, ईषत्, मनाक् ये तीन नाम अल्पके हैं । प्रेत्य, अमुत्र ये दो नाम अन्यजन्मके हैं ॥ ८ ॥ व, वा, यथा, तथा, इव, एवं ये

दिष्ट्या समुपजोषं चेत्यानन्देऽथान्तरेऽन्तरा ।
 अन्तरेण च मध्ये स्युः प्रसह्य तु हठार्थकम् ॥ १० ॥
 युक्ते द्वे साम्प्रतं स्थानेऽभीक्ष्णं शश्वदनारते ।
 अभावे नह्य नो नापि मास्म मालं च वारणे ॥ ११ ॥
 पक्षान्तरे चेद्यादि च तत्त्वे त्वद्धाऽञ्जसा द्वयम् ।
 प्राकाश्ये प्रादुराविः स्यादोमेवं परमं मते ॥ १२ ॥
 समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगित्यपि ।
 अकामानुमतौ काममसूयोपगमेऽस्तु च ॥ १३ ॥
 ननु च स्याद्विरोधोक्तौ कञ्चित्कामप्रवेदने ।
 निःषमं दुःषमं गर्ह्ये यथास्वं तु यथायथम् ॥ १४ ॥
 मृषा मिथ्या च वितथे यथार्थं तु यथातथम् ।
 स्युरेवं तु पुनर्वै वेत्यवधारणवाचकाः ॥ १५ ॥

छः नाम तुल्यके हैं । अहो, ही ये दो नाम आश्चर्यके हैं । तूष्णीं, तूष्णीक
 ये दो नाम भौन अर्थात् चुपकेके हैं । सद्यः, सपदि ये दो नाम तत्कालके हैं
 ॥१॥ दिष्ट्या, समुपजोषं ये दो नाम आनन्दके हैं । अन्तरे, अन्तरा, अन्तरेण
 ये तीन नाम मध्यके हैं । प्रसह्य यह एक नाम हठका है ॥ १० ॥ साम्प्रतं,
 स्थाने ये दो नाम युक्तके हैं । अभीक्ष्णं, शश्वत् ये दो नाम निरन्तरके हैं ।
 नहि, अ, नो, न ये चार नाम अभावके हैं । मास्म, मा, अलं ये तीन
 नाम मने करनेके हैं ॥११॥ चेत्, यदि ये दो नाम अन्यपक्षके हैं । अद्धा,
 अञ्जसा ये दो नाम तत्त्वके हैं । प्रादुस्, आविस् ये दो नाम स्पष्टपनेके
 हैं । ॐ, एवं, परमं ये तीन नाम अङ्गीकारके हैं ॥ १२ ॥ समन्ततः, परितः,
 सर्वतः, विष्वक् ये चार नाम सब ओरके हैं । कामं यह एक नाम विना
 इच्छा अनुमतिका है । अस्तु यह एक नाम गुणोंमें दोष आरोपण करनेका
 और अङ्गीकारका है ॥ १३ ॥ ननु यह एक नाम विरोधवचनका है ।
 कञ्चित् यह एक नाम वाञ्छितको पूछनेका है । निःषमं, दुःषमं ये दो नाम
 निन्दाके योग्यके हैं । यथास्वं, यथायथं ये दो नाम यथायोग्यके हैं
 ॥ १४ ॥ मृषा, मिथ्या ये दो नाम असत्यके हैं । यथार्थं, यथातथं ये दो
 नाम सत्यके हैं । एवं, तु, पुनर्, वै, वा ये पाँच नाम निश्चयके हैं ॥१५॥

प्रागतीतार्थकं नूनमवश्यं निश्चये द्वयम् ।
 संवद्वर्षेऽवरे त्वर्वागामेवं स्वयमात्मना ॥ १६ ॥
 अल्पे नीचैर्महत्युच्चैः प्रायो भूमन्यदुते शनैः ।
 सना नित्ये बहिर्बाह्ये स्मातीतेऽस्तमदर्शने ॥ १७ ॥
 अस्ति सत्त्वे रुषोक्तावु उं प्रश्नेऽनुनये त्वयि ।
 हुं तर्के स्यादुषा रात्रेरवसाने नमो नतौ ॥ १८ ॥
 पुनरर्थेऽङ्ग निन्दायां दुष्टु सुष्टु प्रशंसने ।
 सायं साये प्रगे प्रातः प्रमाते निकषाऽन्तिके ॥ १९ ॥
 परुत्परार्यैषमोऽब्दे पूर्वे पूर्वतरे यति ।
 अद्यात्राहचथ पूर्वोऽह्नीत्यादौ पूर्वोत्तरापरात् ॥ २० ॥

प्राक् यह एक नाम बीते हुआ है । नूनं, अवश्यं ये दो नाम निश्चयके हैं ।
 संवत् यह एक नाम वर्षका है । अर्वाक् यह एक नाम पीछेका है । आं,
 एवं ये दो नाम अंगीकारके हैं । स्वयं यह एक नाम अपनेका है ॥ १६ ॥
 नीचैस् यह एक नाम अल्पका है । उच्चैस् यह एक नाम बड़ेका और
 ऊंचेका है । प्रायः यह एक नाम बहुतका है । शनैस् यह एक नाम हो-
 लेका है । सना यह एक नाम नित्यका है । बहिस् यह एक नाम बाहरका
 है । स्म यह एक नाम बीते हुआ है । अस्तं यह एक नाम दर्शनके अभा-
 वका है ॥ १७ ॥ अस्ति यह एक नाम सत्त्वका और प्रसिद्धका है । उ यह
 एक नाम कोपके वचनका है । उं यह एक नाम प्रश्नका है । अयि यह
 एक नाम अनुनयका है । हुं यह एक नाम तर्कका है । उषा यह एक नाम
 रात्रिके अन्तका है । नमस् यह एक नाम प्रणामका है ॥ १८ ॥ अंग यह
 एक नाम वारंवारका है । दुष्टु यह एक नाम निन्दाका है । सुष्टु यह एक
 नाम प्रशंसाका है । सायं यह एक नाम सांझका है । प्रगे, प्रातर्ये दो नाम
 प्रभातके हैं । निकषा यह एक नाम समीपका है ॥ १९ ॥ परुत् यह एक नाम
 पहले वर्षका है । परारि यह एक नाम पहलेसे पहले वर्षका है । ऐषम यह
 एक नाम वर्त्तमान वर्षका है । अद्य यह एक नाम इस दिनका है । पूर्व-
 द्युस् यह एक नाम पहले दिनका है । उत्तरेद्युस् यह एक नाम अगले दि-
 नका है । अपरेद्युस् यह एक नाम अपर दिनका है । अधरेद्युस् यह एक
 नाम नीचे दिनका है । अन्येद्युस् यह एक नाम अन्य दिनका है । अन्य-

तथाऽधरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः ।

उभयद्युश्चोभयेद्युः परे त्वद्वि परेद्यवि ॥ २१ ॥

ह्यो गतेऽनागतेऽद्वि श्वः परश्वस्तु परेऽहनि ।

तदा तदानीं युगपदेकदा सर्वदा सदा ॥ २२ ॥

एताहिं संप्रतीदानीमधुना सांप्रतं तथा ।

दिग्देशकाले पूर्वादौ प्रागुदक्प्रत्यगादयः ॥ २३ ॥

इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

अथ लिंगादिसंग्रहवर्गः ५ ।

सलिङ्गशास्त्रैः सन्नादिकृत्तद्धितसमासजैः ।

अनुक्तैः संग्रहे लिङ्गं संकीर्णवदिहोन्नयेत् ॥ १ ॥

तरेद्युस् यह एक नाम अन्यतर दिनका है । इतरेद्युस् यह एक नाम इतर अर्थात् अन्य दिनका है ॥ २० ॥ उभयद्युस्, उभयेद्युस् ये दो नाम दोनों दिनोंके हैं । परेद्यवि यह एक नाम परदिनका है ॥ २१ ॥ ह्यस् यह एक नाम बीते हुए दिनका है । श्वस् यह एक नाम अगले दिनका है । परश्वस् यह एक नाम परसों दिनका है । तदा, तदानीं ये दो नाम तिस्र कालके हैं । युगपत्, एकदा ये दो नाम एक कालके हैं । सर्वदा, सदा ये दो नाम सब कालके हैं ॥ २२ ॥ एताहिं, संप्रति, इदानीं, अधुना, सांप्रतं ये पांच नाम इस कालके हैं । तथा यह समुच्चयार्थक है । प्राक् यह एक नाम पूर्वदिशा, पूर्वदेश, पूर्वकाल इन्हींका है । उदक् यह एक नाम उत्तर दिशा, उत्तर देश, उत्तर कालका है । प्रत्यक् यह एक नाम पश्चिम दिशा, पश्चिम देश, पश्चिम काल इन्हींका है । अर्वाक् यह एक नाम दक्षिण दिशा, दक्षिण देश, दक्षिण काल इन्हींका है ॥ २३ ॥
इति अव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

अथ लिंगादिसंग्रहवर्गः । लिंगशास्त्र अर्थात् पाणिनिआदिसे कहे हुए लिंगानुशासनसहित सन् आदि प्रत्ययोंसे बने हुए चिकीर्षा आदि शब्दोंसे और कृदंतसे बने हुए श्वपाक आदि शब्दोंसे और तद्धित प्रत्ययोंसे बने हुए अण् आद्यंत शब्दोंसे और समाससे उपजे अदंतोत्तरपद द्विगु आदिसे कहे हुए शब्दोंसे और बहुधा करके पहले नहीं कहे हुए शब्दोंसे यह संग्रह किया जाता है । इस संग्रहवर्गमें संकीर्णवर्गकी तरह लिंगको विचारना ।

लिङ्गशेषविधिव्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः ।

स्त्रियामीदूद्विरामैकाच् सयोनिप्राणिनाम च ॥ २ ॥

नाम विद्युन्निशावल्लीवीणादिग्भूनदीहियाम् ।

अदन्तैर्द्विगुरेकार्यो न स पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥

तल् वृन्दे येनिकट्यत्रा वैरमैथुनिकादिवुन् ।

स्त्रीभावादावनिक्तिण्वुल्लणच्ण्वुक्क्यव्युजिज्झनिशाः ॥४॥

उनमें प्रकृतिके अर्थसे जैसे—“ अर्द्धर्चाः पुंसि च ” और प्रत्ययके अर्थसे यथा—“ स्त्रियां क्तिन् ” और “ प्रकृत्यर्थाद्यैः ” इस आद्यशब्दसे क्रिया-विशेषण सर्वदा नपुंसकलिंग और एकवचनमें रहता है। जैसे—“ शोभनं पचति ” आदि ॥ १ ॥ सन् आदि, कृत्, तद्धित, समास इन्हींसे उत्पन्न विषयवाला पूर्वोक्त शब्दोंके लिंगसे जो अन्यलिंग है वह लिंग शेष है। उसकी विधिव्यापी अर्थात् अपने विषयकी व्यापक है। जो पहले कही गई और यहां कहीं गई विशेषविधियोंसे बाधित न हो तबही व्यापी हो सक्ता है। क्योंकि अपवादविषय छोड़कर उत्सर्ग सब स्थानोंमें होता है। इसलिये लिंग विशेषविधिरूप उत्सर्गभूतके स्वर्ग आदि वर्ग अपवाद जानने उचित हैं। ईकारान्त, ऊकारान्त, एकस्वरवाला (थ) और योनि अर्थात् भगसहित प्राणियोंका नाम ये सब (स्त्री०) हैं। जैसे—“ धी, श्री, भू, वृ, माता, दुहिता, धेनु ” इत्यादि शब्द जानने और दारशब्द तो विशेषवचनके बलसे (पु०) बाची है ॥ २ ॥ विद्युत् अर्थात् तद्धित, निशा अर्थात् रात्रि, वल्ली अर्थात् व्रतति, वीणा अर्थात् विपंची, दिश् अर्थात् दिशा, भू अर्थात् पृथ्वी, नदी अर्थात् तरंगिणी, ह्वी अर्थात् लज्जा इन शब्दोंके नाम और मूल आदि अदंत शब्दोंकरके जो समाहार अर्थवाला द्विगुसमास ये (स्त्री०) हैं। जैसे—“ पंचानां मूलानां समाहारः पंचमूली ” आदि जानने। पात्र और युग ये दोनों उत्तरपदमें हैं जिन्होंके ऐसा अदंत द्विगु (स्त्री०) नहीं है। जैसे—“ पंचानां पात्राणां समाहारः पञ्चपात्रम्, चतुर्णां युगानां समाहारश्चतुर्युगम् ” इत्यादि अन्यभी जानने। जैसे—“ त्रिभुवनम् ” ॥ ३ ॥ भाव आदि अर्थमें तल् प्रत्यय है वह (स्त्री०) है। जैसे—“ शुक्लता, ब्राह्मणता ” ये हैं। समूहअर्थमें य, इन्, कट्यच्, त्र ये चार प्रत्यय (स्त्री०) हैं। जैसे—“ पाश्या, खलिनी, रथकट्या, गोत्रा ” ऐसे जानने। वैरअर्थमें और मैथुनअर्थमें जो वुन् प्रत्यय है वह (स्त्री०) है।

उणादिषु निखरीश्च डचाबूडन्तं चलं स्थिरम् ।
 तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा पाल्वा ण दिक् ॥ ५ ॥
 घञो जः सा स्त्रियाऽस्यां चेद्दाण्डपाता हि फाल्गुनी ।
 श्यैनंपाता च मृगया तैलंपाता स्वधेति दिक् ॥ ६ ॥
 स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिविवक्षापचये यादि ।
 लङ्का शेफालिका टीका धातकी पञ्जिकाऽऽढकी ॥ ७ ॥
 सिध्रका सारिका हिक्का प्राचिकोल्का पिपीलिका ।
 तिन्दुकी कणिका भङ्गिः सुरङ्गामूचिमाढयः ॥ ८ ॥

जैसे—“ अश्वमाहिषिका, काकोलूकिका, अत्रिभरद्वाजिका ” ऐसे जानने ।
 आदिशब्दसे वीप्साअर्थमें वुत्तका ग्रहण है । स्त्रियां इसका अधिकार कर
 भाव आदिमें जो अनि, क्तिन्, ण्वुल्, णच्, ण्वुच्, क्यप्, युञ्, इच्, अङ्,
 निश् ये प्रत्यय विहित हैं वे (स्त्री०) हैं । जैसे—“अकरणि, कृति, प्रच्छादिका,
 व्यावक्रोशी, शायिका, ब्रज्या, कारणा, आसना, वापि, आजिपचा, ग्लानि,
 क्रिया ” आदि शब्द (स्त्री०) हैं ॥ ४ ॥ उणादिकोंमें नि, ऊ, ई ये तीन प्रत्यय
 (स्त्री०) होते हैं । जैसे—“ श्रोणि, श्रोणि, चमू, कर्षू, तंत्री ” आदि अन्यभी
 जानने । डीप्, आप्, ऊङ् प्रत्ययांत जो जंगम और स्थावर हो वह
 (स्त्री०) हैं । जैसे—“नारी, शिवा, ब्रह्मवधू, कदली, माला, कर्कन्धू” आदि
 जानने । ब्रह्मष्टि आदि प्रहरण जो क्रीडामें हो उस अर्थमें विहित ण-प्रत्यय
 (स्त्री०) होता है । जैसे—दांडा, मौसला, मौष्टा, पाल्वा ऐसे अन्यभी
 जानने ॥ ५ ॥ वह घञन्तवाच्य दंडपाताका आदि क्रिया फाल्गुनिका
 याम् इस अर्थमें घञन्तसे विहित जो अ प्रत्यय है वह (स्त्री०) होता है
 जैसे—दांडपाता फाल्गुनी, श्यैनंपाता मृगया, तैलंपाता स्वधा ऐसे अन्यभी
 जानने ॥ ६ ॥ जो अल्पपनेमें कहनेकी इच्छा हो तब मृणाली आदि
 शब्द (स्त्री०) होते हैं । जैसे—मृणाली, वंशी आदि अन्यभी जानने ।
 लंका अर्थात् राक्षसकी पुरी, शेफालिका अर्थात् शंभालू, टीका अर्थात्
 बिषमपदोंका आख्यान करना, धातकी अर्थात् धववृक्ष, पंजिका अर्थात्
 निःशेष पदव्याख्या, आढकी अर्थात् अरहर ॥ ७ ॥ सिध्रका अर्थात्
 वृक्षभेद, सारिका अर्थात् मैना, हिक्का अर्थात् हिचकी, प्राचिका
 अर्थात् बनकी माखी, उल्का अर्थात् तेजका समूह, पिपीलिका अर्थात्

पिच्छावितण्डाकाकिण्यशूर्णिः शाणी हुणी दरत् ।

सातिः कन्था तथाऽऽसन्दी नाभी राजसभापि च ॥ ९ ॥

झलरी चर्चरी पारी होरा लट्टा च सिधमला ।

लाक्षा लिक्षा च गण्डूषा गृध्रसी चमसी मसी ॥ १० ॥

इति स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ।

पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः ।

स्वर्गयागाद्रिमेघाब्धिद्रुकालासिशरारयः ॥ ११ ॥

करगण्डोष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः ।

अह्नाहान्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः ॥ १२ ॥

क्रीडी, तिंदुकी अर्थात् टेंबरनी वृक्ष, कणिका अर्थात् परिमाण, भंगि अर्थात् कुटिलपनेका भेद, सुरंगा अर्थात् सुरंग, सूचि अर्थात् मूई, माढि अर्थात् पत्रशिरा ॥ ८ ॥ पिच्छा अर्थात् शंभलका निर्यास, वितंडा अर्थात् वादभेद, काकिणी अर्थात् दमडी, चूर्णि अर्थात् चूर्णिका, शाणी अर्थात् सनका वस्त्रविशेष, हुणी अर्थात् कानकी जलौका, दरत् अर्थात् म्लेच्छजाति, साति अर्थात् दान और अन्त, कन्था अर्थात् वस्त्रविशेष और माटीकी भीत, आसन्दी अर्थात् आसनभेद वेतका आसन, नाभि अर्थात् सूंडी, राजसभा अर्थात् राजाओंकी सभा ॥ ९ ॥ झलरी अर्थात् बाजाविशेष, चर्चरी अर्थात् हाथोंका शब्द अथवा आनन्दकी क्रीडा, पारी अर्थात् हाथीके पैरकी रज्जु, होरा अर्थात् राशिका आधा भाग, लट्टा अर्थात् गामका चिडा, सिधमला अर्थात् सूखी मछली, लाक्षा अर्थात् लाख, लिक्षा अर्थात् लीख, गण्डूषा अर्थात् पानी आदिसे मुखको पूरना, गृध्रसी अर्थात् वातरोगभेद, चमसी अर्थात् यज्ञपात्रभेद प्रणीतापात्र, मसी अर्थात् म्याही ॥ १० ॥ यहां स्त्रीलिङ्गवाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ उपरि, साध्य आदि अनुचर इन्होंसहित देवता और दैत्योंके पर्यायवाची शब्द (पु०) हैं । स्वर्गके नाक, त्रिदिव आदि पर्याय; यागके यज्ञ, मख आदि पर्याय; अद्रिके पर्वत, अद्रि आदि पर्याय; मेवके वन आदि पर्याय; अब्धिके समुद्र आदि पर्याय; द्रुके शाखी आदि पर्याय; कालके दिष्ट, समय आदि पर्याय; असिके खड्ग आदि पर्याय; शरके बाण आदि पर्याय; अरिके शत्रु आदि पर्याय ॥ ११ ॥ करके रश्मि, पाणि आदि पर्याय;

श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता अबाधिताः ।

कशेरुजतुवस्तूनि हित्वा तुरुविरामकाः ॥ १३ ॥

कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी अथ ।

पथनयसटोपान्ता गोत्रारुयाश्चरणाह्वयाः ॥ १४ ॥

गंडके कपोल आदि पर्याय; ओष्ठके दन्तच्छद आदि पर्याय; दोष्के बाह्य आदि पर्याय; दन्तके रद आदि पर्याय; कंठके गल आदि पर्याय; केशके कच आदि पर्याय; नखके कररुह आदि पर्याय; स्तनके कुच आदि पर्याय ये सब भेदोंसहित शब्द (पु०) हैं । अह्न और अह ये हैं अन्तमें जिन्होंके वे शब्द (पु०) वाची हैं । जैसे-पूर्वाह्न, अपराह्न, द्युह आदि जानने । द्वेड अर्थात् विषविशेषके वाची सौराष्ट्रिक आदि शब्द (पु०) हैं । रात्र हे अन्तमें जिन्होंके वे शब्द और आदिमें नहीं हे संख्यावाचक शब्द जिन्होंके वे शब्द (पु०) हैं । जैसे-अहोरात्र, सर्वरात्र आदि जानने और संख्या है आदिमें जिन्होंके वे पञ्चरात्र आदि शब्द (न०) हैं ॥ १२ ॥ श्रीवेष्टा आदि शब्द निर्यास (गोंद वा सार) वाचक हैं वे और असू, अन् ये प्रत्यय हैं अन्तमें जिन्होंके वे शब्द और विशेषवचनसे नहीं बाधित किये ऐसे ये सब शब्द (पु०) हैं । जैसे-श्रीवेष्ट, सरल, चन्द्रमाः, कृष्णवर्त्मा आदि अन्यभी जानने । कशेरु, जतु, वस्तु इन शब्दोंको छोड़ तु और रु ये हैं अन्तमें जिन्होंके वे शब्द (पु०) हैं । जैसे-हेतु, सेतु, धातु आदि अन्यभी जानने ॥ १३ ॥ क, ष, ण, भ, म, र ये छः अक्षर अन्त्यके समीप हैं जिन्होंके वे और नहीं बाधित किये अदंत शब्द (पु०) हैं । जैसे-अंक, लोक, स्फटिक आदि और ओष, प्लोष, माष, प्लक्ष आदि और पाषाण, गुण, किरण आदि और कौस्तुभ, दर्भ, शलभ आदि और होम, ग्राम, गुलम, व्यायाम आदि और झंझर, सीकर, कर आदि ये सब शब्द (पु०) वाची हैं और शुल्क वल्क आदि वर्षा आदि, विषाण आदि, कुसुंभ आदि, पद्म आदि, अजिर आदि ये सब शब्द विशेषवचनसे बाधित हुए (पु०) नहीं हैं । प, थ, न, य, स, ट ये छः वर्ण हैं अन्त्यके समीप जिन्होंके वे शब्द नहीं बाधित किये (पु०) वाची हैं । जैसे-यूप, बाष्प, कलाप आदि और वेपथु, रोमंथ आदि और इन, घन, भानु आदि और आय, व्यय, जायु, तंतुवाय आदि और रस, हास आदि और पट आदि ये सब शब्द (पु०) हैं और कुतप आदि, वन आदि, मृगया आदि, बिस आदि, किरीट आदि ये शब्द विशेषसूत्रोंसे

नाम्यकर्तरि भावे च घञजव्न्ङ्णघाथुचः ।

ल्युः कर्तरीमनिञ् भावे को घोः किः प्रादितोऽन्यतः ॥ १५ ॥

द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहते ।

कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयः पूर्वकोऽपि च ॥ १६ ॥

वटकश्चानुवाकश्च रल्लकश्च कुडङ्गकः ।

पुंखो न्यूङ्गः समुद्रश्च विटपट्टघटाः खटाः ॥ १७ ॥

बाधित हैं । गोत्र अर्थात् वंश उसमें हैं संज्ञा जिन्होंकी वे गोत्रके आदि पुरुष जो प्रवराध्यायमें पठित हैं और जो अन्यभी अपत्यप्रत्ययके विना गोत्रवाचित्वकरके लोकमें प्रसिद्ध हैं वे सब (पु०) हैं । जैसे-भरद्वाज, कश्यप, वत्स आदि जानने । वेदकी शाखाकी संज्ञावाले शब्द (पु०) हैं । जैसे-कठ, बह्वृच आदि शब्द जानने ॥ १४ ॥ संज्ञा, कारक, भाव इन्हींमें विहित किये घञ्, अच्, अप्, नङ्, ण, घ, अथुच् ये सात प्रत्यय (पु०) हैं । जैसे-प्राप्त, वेद, प्रपात, भाव, माघ, पाक, त्याग आदि; जय, चय, नय आदि; कर, गर, लव, प्लव आदि; यज्ञ, प्रश्न आदि; न्याद, रस आदि; उरश्छद आदि और वेपथु आदि ये सब शब्द (पु०) हैं । कर्त्तामें नन्द्यादिसे हुआ ल्युप्रत्यय (पु०) है । जैसे-नन्दन, रमण, मधुसूदन आदि अन्यभी जानने । भावमें पृथु आदिसे हुआ इमनिच् प्रत्यय (पु०) है । जैसे-प्राथिमा, महिमा आदि अन्यभी जानने । भावमें हुआ कप्रत्यय (पु०) है । जैसे-आखूत्थ, प्रस्थ आदि अन्यभी जानने । प्रादिकोंसे और अन्यसे परे जो घुसंज्ञक धातु उससे विहित किया कि-प्रत्यय (पु०) है । जैसे-प्राधि, निधि आदि; जलधि आदि अन्यभी जानने ॥ १५ ॥ समाहारसे अन्य द्वन्द्वसमासमें अश्ववडवौ शब्द (पु०) है । सूर्य और चन्द्रमाका पर्यायपूर्वक कान्तशब्द और अयस् अर्थात् लोहका वाचक शब्द है पूर्व जिसके ऐसा कान्त शब्द (पु०) है । जैसे-सूर्यकान्त, अर्ककान्त, चन्द्रकान्त, इन्दुकान्त, सोमकान्त, अयस्कान्त, लोहकान्त आदि अन्यभी जानने ॥ १६ ॥ वटक अर्थात् पीठाका वडा, अनुवाक अर्थात् वेदका अवयव, रल्लक अर्थात् कंबल, कुडंगक अर्थात् वृक्षलताका वन, पुंख अर्थात् बाणका अवयव, न्यूङ्ग अर्थात् सामवेदमें निपातित ँकार, समुद्र अर्थात् संपुटक, विट अर्थात् धूर्त, पट्ट अर्थात् पटला, घट अर्थात् तुला, खट अर्थात्

कोटारघट्टहट्टाश्च पिण्डगोण्डपिचण्डवत् ।

गडुः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः ॥ १८ ॥

दृत्तिसीमन्तहरितो रोमन्थोद्रीयबुद्बुदाः ।

कासमर्दोऽर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ ॥ १९ ॥

आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणपक्षुरकेदराः ।

पूरक्षुरप्रचुक्राश्च गोलहिङ्गुलपुद्गलाः ॥ २० ॥

वेतालमल्लमल्लाश्च पुरोडाशोऽपि पट्टिशः ।

कुलमाषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥

इति पुँल्लिङ्गशेषः ।

अंधा कुवा आदि ॥ १७ ॥ कोट्ट अर्थात् किलेकी भीत, अरघट्ट अर्थात् अरहट्टका कूवा, हट्ट अर्थात् दुकान, पिंड अर्थात् माटी आदिका गोला, गोंड अर्थात् नाभि, पिचंड अर्थात् पेट, गडु अर्थात् गलगंड, करंड अर्थात् बांस आदिकी वनाई हुई करंडी, लगुड अर्थात् लाठी, वरंड अर्थात् मुख-रोग, किण अर्थात् मांसकी ग्रंथिका भेद, घुण अर्थात् घुन ॥ १८ ॥ दृत्ति अर्थात् चाम, सीमन्त अर्थात् केशोंका वेश, हरित अर्थात् पालाशवर्ण, रोमन्थ अर्थात् पशुओंके चर्वितका चावना, उद्रीय अर्थात् सामवेद, बुद्बुद अर्थात् जलविकार, कासमर्द अर्थात् कसौंदी, अर्बुद अर्थात् दशकरोड, कुन्द अर्थात् शिल्पभांड, फेन अर्थात् झाग, स्तूप अर्थात् वड आदि, यूप अर्थात् यज्ञस्तंभ, यूप अर्थात् मालपुआ ॥ १९ ॥ आतप अर्थात् घाम, क्षत्रियका वाची नाभि, कुणप अर्थात् मुर्दा, क्षुर अर्थात् उस्तरा, केदर अर्थात् व्यवहार पदार्थ, पूर अर्थात् जलका प्रवाह, क्षुरप्र अर्थात् बाण-भेद, चुक्र अर्थात् चूका शाक, गोल अर्थात् गोला, हिङ्गुल अर्थात् सिंग-रफ, पुद्गल अर्थात् आत्मा ॥ २० ॥ वेताल अर्थात् भूतोंसे अधिष्ठित किया मुर्दा, मल्ल अर्थात् रीछ, मल्ल अर्थात् बाहुओंसे युद्ध करनेवाला, पुरोडाश अर्थात् हविर्भेद, पट्टिश अर्थात् हथियारविशेष, कुलमाष अर्थात् आधा सिजाया जव, रभस अर्थात् आनन्द, कटाह अर्थात् कडाही, पतद्ग्रह अर्थात् पीकदानी ये सब शब्द (पु०) वाची हैं ॥ २१ ॥ यहां पुँल्लिङ्गशेष समाप्त हुआ ॥ अब (न०) का अधिकार है । वाचि-तसे जो अन्य है वही (न०) वाची है । ख अर्थात् आकाश, अरण्य

द्विहीनेऽन्यच्च खारण्यपर्णश्चभ्रहिमोदकम् ।

शीतोष्णमांसरुधिरमुखाक्षिद्रविणं बलम् ॥ २२ ॥

फलहेमशुल्बलोहसुखदुःखशुभाशुभम् ।

जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥ २३ ॥

कोट्याः शतादिसंख्याऽन्या वा लक्षा नियुतं च तत् ।

द्व्यचक्रमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि ॥ २४ ॥

त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक्संख्ययान्वितम् ।

पात्राद्यदन्तैरेकार्थो द्विगुर्लक्ष्यानुसारतः ॥ २५ ॥

अर्थात् वन, पर्ण अर्थात् पत्ता, श्वभ्र जर्थात् छिद्र, हिम अर्थात् जाडा, उदक अर्थात् जल, शीत अर्थात् सीला, उष्ण अर्थात् गर्म, मांस अर्थात् कबाब, रुधिर अर्थात् लोहू, मुख अर्थात् मुँह, अक्षि अर्थात् आँख, द्रविण अर्थात् धन, बल अर्थात् सेना ॥ २२ ॥ फल अर्थात् कैथ आदि, हेम अर्थात् सोना, शुल्ब अर्थात् ताँबा, लोह अर्थात् लोहा, सुख, दुःख, शुभ, अशुभ, जलपुष्प अर्थात् कमलके फूल आदि, लवण अर्थात् नमक, व्यञ्जन अर्थात् दधि तक्र आदि पदार्थ, अनुलेपन अर्थात् केसर आदिका तिलक ॥ २३ ॥ कोटिशब्दके विना जो शत आदि संख्यावाचक शब्द हैं वे (न०) हैं और लक्षशब्द विकल्पसे (न०) है इसलिये (स्त्री०) में लक्षा बनता है । लक्षका पर्याय नियुत है । असंत, इसंत, उसंत और अन्नन्त ऐसे शब्द दो स्वरोंवाले (न०) वाची हैं । जैसे-पयस्, सर्पिस्, वपुस्, शर्मन् आदि शब्द (न०) हैं । कर्त्तासे अन्यमें जो अनांत हैं वह (न०) है । जैसे-गमन, मरण, दान आदि अन्यभी जानने । और कर्त्तामें रमण आदि (पु०) हैं ॥ २४ ॥ त्रांत शब्द (न०) हैं । जैसे-गात्र, पात्र, वस्त्र आदि अन्यभी जानने । स और ल उपधामें हैं जिन्होंके वे शब्द (न०) हैं । जैसे-बिस, कुल, आदि अन्यभी (न०) जानने और जो प्रागुक्त अर्थात् पूर्वमें कहे हुआँसे शेष हैं वेही (न०) हैं और जो बाधित हैं वे पुत्र, वृक्ष, हंस, कंस, शिला, काल आदि (पु०) और (स्त्री०) हैं । संख्या है पूर्व जिसके ऐसा रात्रशब्द (न०) है । जैसे-त्रिरात्र, पञ्चरात्र ये (न०) हैं । और संख्यासे रहित पूर्ववाले अद्विरात्र आदि शब्द (पु०) हैं । पात्र आदि अदंत शब्दोंसे एकार्थ द्विगु शिष्टप्रयोगके अनुसारसे जानना । इसवास्ते पंचमूली, त्रिलोकी येभी ठीक

द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ पथः संख्याव्ययात्परः ।

षष्ठ्याश्छाया बहूनां चेद्विच्छायं संहतौ सभा ॥ २६ ॥

शालार्थापि पराराजामनुष्यार्थादराजकात् ।

दासीसभं नृपसभं रक्षःसभमिमा दिशः ॥ २७ ॥

उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने ।

कोपज्ञकोपक्रमादिकन्थोशीनरनामसु ॥ २८ ॥

भावे नणकचिद्भयोऽन्ये समूहे भावकर्मणोः ।

अदन्तप्रत्ययाः पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः ॥ २९ ॥

क्रियाव्ययानां भेदकान्येकत्वेऽप्युक्त्यतोदके ।

चोचं पिच्छं गृहस्थूणं तिरीटं मर्म योजनम् ॥ ३० ॥

वन सक्ते हैं ॥ २५ ॥ द्वन्द्वसमासका एकत्व और अव्ययीभाव (न०) होता है। जैसे-पाणिपाद, शिरोग्रीव आदि और अधिस्त्रि, उपगंग आदि संख्यासे और अव्ययसे परे पथिनशब्द (न०) होता है। जैसे-द्विपथ त्रिपथ, विपथ, कापथ आदि। समासमें षष्ठीविभक्त्यन्तसे परे छायाशब्द (न०) है जो छाया बहुतोंकी हो तो। जैसे-विच्छाय अर्थात् पक्षियोंका छाया है यहाँ वि नाम पक्षियोंका है। समूहके विषयमें सभाशब्द (न०) है। जैसे-दासीसभ, स्त्रीसभ आदि हैं ॥ २६ ॥ शालानामवाली और अपिशब्दसे समूह नामवाली जो सभा है वह राजशब्दके पर्यायोंसे वर्जित और मनुष्यके पर्यायसे वर्जित शब्दके संग (न०) है। जैसे-इनसभ, प्रभुसभ, रक्षःसभ, पिशाचसभ आदि शब्द (न०) हैं ॥ २७ ॥ उपज्ञा और उपक्रमके आदिपनेको प्रकाशित करनेमें उपज्ञान्त और उपक्रमान्त समास (न०) है। जैसे-कोपज्ञ, क अर्थात् ब्रह्माकी उपज्ञा अर्थात् प्रज्ञा, कोपक्रम अर्थात् लोक। उशीनरोंके नामोंके मध्यमें षष्ठी विभक्तिसे परे कन्थाशब्द (न०) है। जैसे-सौशमिकन्थ आदि हैं ॥ २८ ॥ न, ण, क, चित् इन प्रत्ययोंसे अन्य जो तव्य आदि अदन्त धातुप्रत्यय हैं वे भावमें विहित किये (न०) हैं। जैसे-भवितव्य, भाव्य, सहित, भुक्त आदि हैं। समूह, भाव, कर्म इन अर्थोंमें विहित किये अदन्त प्रत्यय (न०) वाची हैं। जैसे-भैक्ष अर्थात् भिक्षाओंका समूह, गोत्व अर्थात् गौओंका समूह, चौर्य अर्थात् चोरका कर्म आदि। पुण्य और सुदिन शब्दसे परे अहनशब्द (न०) है। जैसे-पुण्याह, सुदिनाह ये हैं ॥ २९ ॥ क्रियाओंके और

राजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये कृतौ कवेः ।

माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरपिञ्जरम् ॥ ३१ ॥

लोकायतं हरितालं विदलस्थालवाहिकम् ।

इति नपुंसकसंग्रहः ।

पुनपुंसकयोः शेषोऽर्धर्चपिण्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥

मोदकस्तण्डकष्टङ्कः शाटकः कर्पटोऽर्बुदः ।

पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः ॥ ३३ ॥

कुष्ठं मुण्डं शीघ्रं बुस्तं क्ष्वेडितं क्षेमकुट्टिमम् ।

संगमं शतमानार्मशम्बलाव्ययताण्डवम् ॥ ३४ ॥

अव्ययोंके विशेषण शब्द (न०) और एकवचन हैं । जैसे-मन्दं पचति सुखदं प्रातः आदि अन्यभी जानने । उक्थ अर्थात् सामभेद, तोटक अर्थात् वृत्तभेद, चोच अर्थात् उपभुक्त किये फलसे बचा हुआ, पिच्छ अर्थात् मोरकी पांख, गृहस्थण अर्थात् घरमें थांभ, तिरीट अर्थात् वेष्टन, मर्म अर्थात् सांधिस्थान, योजन अर्थात् चार कोश ॥ ३० ॥ राजसूय अर्थात् यज्ञविशेष, वाजपेय अर्थात् यज्ञविशेष, गद्य अर्थात् पदसमूह, पद्य अर्थात् श्लोक, माणिक्य अर्थात् माणिकरत्न, भाष्य अर्थात् पदार्थका विवरण, सिन्दूर अर्थात् लालचूर्ण, चीर अर्थात् वस्त्र, चीवर अर्थात् मुनिवास, पिंजर अर्थात् पिंजरा ॥ ३१ ॥ लोकायत अर्थात् चार्वाक शास्त्र, हरिताल अर्थात् हरताल, विदल अर्थात् बांसके छिलकोंका बनाया पात्रविशेष, स्थाल अर्थात् पात्रभेद, वाल्हिक अर्थात् केशर आदि ॥ यहाँ (न०) वाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ उक्तसे शेष रहे शब्द (पु० न०) हैं । अर्धर्च अर्थात् ऋचाका आधा भाग, पिण्याक अर्थात् तिलोंका कल्क, कंटक अर्थात् कांटा ॥ ३२ ॥ मोदक अर्थात् लड्डू, तंडक अर्थात् उपताप, टंक अर्थात् टांकी, शाटक अर्थात् शाटीविशेष, कर्पट अर्थात् वस्त्रभेद, अर्बुद अर्थात् संख्याभेद, पातक अर्थात् ब्रह्महत्या आदि, उद्योग अर्थात् उत्साह, चरक अर्थात् वैद्यकशास्त्र, तमाल अर्थात् वृक्षभेद, आमलक अर्थात् आंवला, नड अर्थात् नरसल ॥ ३३ ॥ कुष्ठ अर्थात् कोटरोग, मुंड अर्थात् शिर, शीघ्र अर्थात् मदिरा, बुस्त अर्थात् भुना हुआ मांस, क्ष्वेडित अर्थात् वीर पुरुषका किया सिंहनाद, क्षेम अर्थात् कुशल, कुट्टिम अर्थात् भीतिका भेद, संगम

कवियं कन्दकार्पासं पारावारं युगंधरम् ।

यूपं प्रग्रीवपात्रीवे यूपं चमसचिक्कसौ ॥ ३५ ॥

अर्धर्चादी घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम् ।

तन्नोक्तमिह लोकेऽपि तच्चेदस्त्यस्तु शेषवत् ॥ ३६ ॥

इति पुंनपुंसकसंग्रहवर्गः ।

स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुःषट्पदोरगाः ।

जातिभेदाः पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह मल्लकः ॥ ३७ ॥

उर्मिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको झाटलिर्मनुः ।

मूषा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कटी कुटी ॥ ३८ ॥

इति स्त्रीपुंसशेषसंग्रहवर्गः ।

अर्थात् संयोग, शतमान अर्थात् तोलविशेष, अर्म अर्थात् नेत्ररोगका भेद, शंवल अर्थात् वर्णभेद, अव्ययं अर्थात् स्वर आदि निपात, तांडव अर्थात् नृत्यभेद ॥ ३४ ॥ कविय अर्थात् लगाम, कन्द अर्थात् कमलिनीकी मूल आदि, कार्पास अर्थात् कपास, पारावार अर्थात् जलसमूह, युगंधर अर्थात् लहोदर, यूप अर्थात् यज्ञस्तंभ, प्रग्रीव अर्थात् वृक्षका शिर, पात्रीव अर्थात् यज्ञपात्रभेद, यूप अर्थात् मांड, चमस अर्थात् चमसा, चिक्कस अर्थात् पात्रभेद ॥ ३५ ॥ इस अर्धर्चादि वर्गमें जो घृत आदि शब्द (पु०) वाची पाणिनि आदिने कहे हैं वह रीति वैदिक है अर्थात् वेदमें प्रसिद्ध है । इस कारण यहां नहीं कहे । वे लोकमेंभी हैं तो शिष्टप्रयोगसे जानना उचित है ॥ ३६ ॥ यहां (पु० न०) वाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ अपत्यप्रत्ययान्त शब्द (स्त्री० पु०) हैं । जैसे-औपगव, औपगवी । दो चार छः परोंवाले प्राणी और सर्पवाची ऐसे जातिभेद (स्त्री० पु०) हैं । जैसे-मानुष मानुषी, ब्राह्मण ब्राह्मणी, मृग मृगी, भृंग भृंगी, उरग उरगी, नाग नागी । स्त्रियोंके साथ पुरुषवाचक शब्द (स्त्री० पु०) हैं । जैसे-इन्द्र इन्द्राणी, मातुल मातुली । मल्लक आदि शब्द (स्त्री० पु०) हैं । जैसे-मल्लक मल्लिका ॥ ३७ ॥ उर्मि अर्थात् तरंग, वराटक अर्थात् कौड़ी, स्वाति अर्थात् नक्षत्र, वर्णक अर्थात् चन्दन, झाटलि अर्थात् मोखावृक्ष, मनु अर्थात् मंत्र, मूषा अर्थात् घडिया, सृपाटी अर्थात् परिमाणभेद, कर्कन्धू अर्थात् बडवेरी, यष्टि अर्थात् लाठी, शाटी अर्थात् धोती, कटी अर्थात् कड, कुटी अर्थात्

स्त्रीनपुंसकयोर्भावक्रिययोः ष्यञ् कचिच्च वुञ् ।
 औचित्यमौचिती मैत्री मैत्र्यं वुञ् प्रागुदाहृतः ॥ ३९ ॥
 षष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेनाछायाशालासुरानिशाः ।
 स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोशालमितरे च दिक् ॥ ४० ॥
 आबन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि नश्च लुप् ।
 त्रिखट्वं च त्रिखट्वा च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यपि ॥ ४१ ॥
 इति स्त्रीनपुंसकशेषः ।

त्रिषु पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदाडिमौ ।

इति त्रिलिङ्गशेषसंग्रहः ।

परं लिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत् ॥ ४२ ॥

अर्थान्ताः प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वाः परोपगाः ।

तद्धितार्थो द्विगुः संख्यासर्वनामतदन्तकाः ॥ ४३ ॥

घरका कोठा ये सब शब्द (स्त्री० पु०) हैं ॥ ३८ ॥ यहां (स्त्री० पु०)
 वाची शब्दोंका संग्रहवर्ग समाप्त हुआ ॥ भावमें और कर्ममें वर्त्तमान
 ष्यञ् प्रत्यय और वुञ् प्रत्यय कहीं २ (स्त्री० पु०) हैं । जैसे-औचित्य
 औचिती, मैत्र्य मैत्री, मैथुनिक मैथुनिका ॥ ३९ ॥ तत्पुरुष समासमें षष्ठी-
 विभक्त्यंत पद है पूर्व जिन्हींके ऐसे सेना, छाया, शाला, सुरा, निशा ये
 शब्द (स्त्री०) और (न०) हैं । जैसे-नृसेन नृसेना, कुड्यच्छाय कुड्य-
 छाया, गोशाल गोशाला, यवसुर यवसुरा, श्वनिश श्वनिशा आदि
 अन्यभी जानने ॥ ४० ॥ आबन्त शब्द और अन्नन्त शब्द हैं उत्तरपदमें
 जिसके ऐसा द्विगु समास (स्त्री० न०) है । जैसे-त्रिखट् त्रिखट्वा, त्रितक्ष
 त्रितक्षी । तक्षन्शब्दके अन्तका नकार लुप्त हो रहा है ॥ ४१ ॥ यहां (स्त्री०
 न०) वाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ पात्र, पुट, वाट, पेड, कुवल,
 दाडिम ये शब्द (त्रि०) हैं । जैसे-पात्रः पात्री पात्रम्, पुटः पुटी पुटम्,
 वाटः वाटी वाटम्, पेडः पेटी पेडम्, कुवलः कुवली कुवलम्, दाडिमः दाडिमी
 दाडिमम् ॥ यहां (त्रि०) वाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ उभय-
 पदप्रधान समासमें और इतरेतर द्वन्द्वसमासमें अग्रिम पदका लिंग होता
 है । जैसे-कुक्कुटमयूरी, मयूरीकुक्कुटौ, धान्यार्थ, सर्पभीति आदि अन्यभी
 जानने ॥ ४२ ॥ अर्थान्त अर्थात् अर्थ शब्द है अन्तमें जिनके और आदि

बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नामुन्नेयं तदुदाहृतम् ।

गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधिभिः परगामिनः ॥ ४४ ॥

अलं, प्राप्त, आपन्न ये हैं पूर्वमें जिन्होंके वे शब्द विशेष्यके लिंगको प्राप्त होते हैं । जैसे—‘ द्विजार्थः सूपः ’ अर्थात् द्विजके लिये दाल है, ‘ द्विजार्था यवागूः ’ अर्थात् द्विजके लिये यवागू है, ‘ द्विजार्थं पयः ’ अर्थात् द्विजके लिये दूध है । ‘ अतिमालो हारः ’ अर्थात् मालाको उल्लंघन करनेवाला यह हार है, ‘ अतिमाला इयम् ’ अर्थात् मालाको उल्लंघन करनेवाली यह माला है, ‘ अतिमालामिदम् ’ अर्थात् मालाको उल्लंघन करनेवाला यह कुल है । ‘ अलंकुमारिरयम् ’ अर्थात् कुमारीको उल्लंघन करनेवाला यह पुरुष है, ‘ अलंकुमारी इयम् ’ अर्थात् कुमारीको उल्लंघन करनेवाली यह स्त्री है, ‘ अलंकुमारि इदम् ’ अर्थात् कुमारीको उल्लंघन करनेवाला यह कुल है । ‘ प्राप्तजीविको द्विजः ’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला द्विज है, ‘ प्राप्तजीविका स्त्री ’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाली स्त्री है, ‘ प्राप्तजीविकं कुलम् ’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला कुल है । ‘ आपन्नजीविको द्विजः ’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला द्विज है, ‘ आपन्नजीविका स्त्री ’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाली स्त्री है, ‘ आपन्नजीविकं कुलम् ’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला कुल है । तद्धित है अर्थ जिसका ऐसा द्विगु समास वाच्य-लिंगी है । जैसे—‘ पञ्चकपालः पुरोडाशः ’ अर्थात् पांच कपालोंमें संस्कृत किया पुरोडाश है, ‘ पञ्चकपालं हविः ’ अर्थात् पांच कपालोंमें संस्कृत क्रिया घृत है । संख्यावाचिशब्द, सर्वनामसंज्ञक शब्द, संख्यात शब्द ये सब विशेष्यके लिंगके समान होते हैं । जैसे—‘ एकः पुमान् ’ अर्थात् एक पुरुष है, ‘ एकं कुलम् ’ एक कुल है । ‘ द्वौ पुमांसौ ’ अर्थात् दो पुरुष हैं, ‘ द्वे स्त्रियो ’ अर्थात् दो स्त्री हैं । ‘ सर्वो देशः ’ अर्थात् संपूर्ण देश है, ‘ सर्वा नदी ’ अर्थात् संपूर्ण नदी है, ‘ सर्वं जलम् ’ अर्थात् संपूर्ण पानी है । ‘ परमसर्वः पुमान् ’ अर्थात् परमसर्व पुरुष है, ‘ परमसर्वा स्त्री ’ अर्थात् परमसर्वरूप स्त्री है, ‘ परमसर्वं कुलम् ’ अर्थात् परमसर्वरूप कुल है ॥ ४३ ॥ दिशुशब्दसे वर्जित नामवालोंका बहुव्रीहि अन्यके लिंगके समान होता है । जैसे—‘ वृद्धभार्य्यः ’ अर्थात् बूढ़ी है भार्या जिसकी वह पुरुष है । गुणके योग-करके, द्रव्यके योगकरके और क्रियाके योगकरके जो उपाधि विशेषण है उसकरके धर्ममें प्रवृत्त हुए धर्मिलिंगभाज होते हैं । जैसे—‘ गंधवती पृथिवी ’

कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याः कर्तरि कर्मणि ।

अणाद्यन्तास्तेन रक्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः ॥ ४५ ॥

षट्संज्ञकास्त्रिषु समा युष्मदस्मात्तिङव्ययम् ।

परं विरोधे शेषं तु ज्ञेयं शिष्टप्रयोगतः ॥ ४६ ॥

इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥ ५ ॥

अर्थात् गंधवाली पृथिवी है, 'गंधवानश्मा', अर्थात् गंधवाला पर्वत है, 'गंधवत् कुसुमम्', अर्थात् गंधवाला फूल है। 'दंडिनी स्त्री', अर्थात् दंडवाली स्त्री है। 'पाचिका स्त्री', अर्थात् पाक करनेवाली स्त्री है ॥ ४४ ॥ कर्त्तामें और असंज्ञामें कृत्प्रत्यय विशेष्यके लिंगको भजते हैं। जैसे- 'कर्त्ता पुमान्', अर्थात् करनेवाला पुरुष है, 'कर्त्री स्त्री', अर्थात् करनेवाली स्त्री है, 'कर्तृ कुलम्', अर्थात् करनेवाला कुल है। कर्ममें और कर्त्तामें वर्त्तमान हुए कृत्यप्रत्यय परके लिंगके समान होते हैं। जैसे- 'कर्त्तव्या भक्तिः', अर्थात् करनेयोग्य भक्ति है, 'कर्त्तव्यो धर्मस्त्वया', अर्थात् तुझको धर्म करना योग्य है। 'वास्तव्योऽयम्', अर्थात् यह वसनेके योग्य है, 'वास्तव्या सा', अर्थात् वह स्त्री वसनेके योग्य है, 'वास्तव्यं तत्', अर्थात् वह कुल वसनेके योग्य है। "तेन रक्तम्" आदि अर्थमें अण् आदि तद्धितप्रत्ययांत अनेकार्थविशेषणभूत विशेष्यके लिंगके समान होते हैं। जैसे- 'कौसुंभी शायी', अर्थात् कुसुंभासे रंगी हुई धोती है, 'कौसुंभः पटः', अर्थात् कुसुंभासे रंगा हुआ वस्त्र है, 'कौसुंभं वासः', अर्थात् कुसुंभासे रंगा हुआ वासस् अर्थात् वस्त्र है ॥ ४५ ॥ षट्संज्ञक अर्थात् पान्त और नांत संख्यावाले शब्द, कतिशब्द, युष्मदशब्द, अस्मदशब्द, तिङ्प्रत्यय, अव्यय ये सब तीनों लिंगोंमें समान हैं। जैसे- 'षडिमे', अर्थात् ये छः पुरुष हैं, 'षडिमाः', अर्थात् ये छः स्त्री हैं, 'षडिमानि', अर्थात् ये छः कुल हैं। ऐसे अन्यभी जानने। 'कति पुरुषाः', कितने पुरुष हैं, 'कति स्त्रियः', अर्थात् कितनी स्त्रियां हैं, 'कति कुलानि', अर्थात् कितने कुल हैं। 'त्वं पुमान्', अर्थात् तू पुरुष है, 'त्वं स्त्री', अर्थात् तू स्त्री है, 'त्वं कुलम्', अर्थात् तू कुल है। 'अहं स्त्री', अर्थात् मैं स्त्री हूं, 'अहं पुरुषः', अर्थात् मैं पुरुष हूं, 'अहं कुलम्', अर्थात् मैं कुल हूं। 'स्थाली भवति', अर्थात् स्थाली है, 'घटो भवति', अर्थात् घट है, 'पात्रं भवति', अर्थात् पात्र है। 'उच्चैः पुरुषः', अर्थात् ऊंचा पुरुष है, 'उच्चैः स्त्री',

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।

सामान्यकाण्डस्तृतीयः साङ्ग एव समर्थितः ॥ १ ॥

इति श्रीअमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने

तृतीयं काण्डं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

अर्थात् ऊंची स्त्री है, ' उच्चैः कुलम् ' अर्थात् ऊंचा कुल है । विप्रतिषेधमें परका लिंग होता है । जैसे- ' मानुषीयम् ' अर्थात् यह मनुष्यकी स्त्री है, ' मानुषोऽयम् ' अर्थात् यह मनुष्य है । यहां नहीं कहा हुआ शिष्ट अर्थात् महाकवि भाष्यकार आदिके प्रयोगोंसे जानना उचित है ॥ ४६ ॥

इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥ ५ ॥

इस प्रकार अमरसिंहके किये नामलिङ्गानुशासनमें अंगोंसहित सामान्य कांड तीसरा निरूपित किया ॥ १ ॥

इति रोहतकप्रदेशान्तर्गत-वेरीग्रामनिवासि-गौडवंशावतंस-विविधशास्त्रपरमपंडित-
श्रीशिवसहायपुत्र-रविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायामागरानगरवास्तव्य-ज्योति-
र्विद्वालमुकुन्दभट्टसूरिसूनु-पंडितरामेश्वरभट्टेन संशोधितायां अमरकोशार्थ-
प्रकाशिकायां भाषाटीकायां तृतीयकांडः समाप्तः ॥ ३ ॥



सभाषामरकोशस्य

अकागादिवर्णानुक्रमेण

शब्दानुक्रमणिका.

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अ.			अक्षाति	७	२४	अग्निमन्थ.	१४	६६
अ	२४	११	अक्षि...	{	१६ ९३	आग्नमुखा.	१४	४२
अंश ...	१९	८९			२५ २२	अग्निशिख.	१६	१२४
अंशु	३	३३	अक्षिकूटक.	१८	३८	अग्निशिखा {	१४	११८
अंशुक	१६	११५	अक्षिगत.	२१	४५		१४	१३६
अंशुमती	१४	११५	अक्षीव. {	१४	३१	अग्न्युत्पात. {	४	१०
अंशुमत्फला.	१४	११३			१९ ४१		२३	५८
अंश	१६	७८	अक्षोट	१४	२९	अग्र {	२१	५८
अंसल ...	१६	४४	अक्षौहिणी.	१८	८१		२३	१८३
अंहति	१७	३०	अखंड	२१	६५	अग्रज	१६	४३
अंहस	४	२३	अखात	१०	२७	अग्रजन्मन्.	१७	४
अकरणि....	२२	३९	अखिल	२१	६५	अग्रतःसर.	१८	७२
अकूपार....	८	१	अग	२३	१९	अग्रतस्. {	२३	२४७
अकृष्णकर्मन्.	२१	४६	अगद	१६	५०		२४	७
			अगदंकार.	१६	५७	अग्रमांस....	१६	६४
अक्ष ... {	१४	५८	अगम	१४	५	अग्रिय.... {	१६	४३
	१६	४३					२१	५८
	१९	८६	अगस्त्य....	३	२०	अग्रीय	२१	५८
	२०	४५	अगाध	१०	१५	अग्नेदिधिषू.	१६	२३
	२३	२२२	अगार	१२	५	अग्नेसर ...	१८	७२
अक्षत	१९	४७	अगुरु	१६	१२६	अध्य	२१	५८
अक्षदर्शक.	१८	५	अगुरुशिंशपा.	१४	६२	अघ.... {	४	२३
अक्षदेविन्.	२०	४४	अग्रायी	१७	२१		२३	२७
अक्षधूर्त....	२०	४४	अग्नि	१	५६	अघमर्षण.	१७	४८
अक्षर	२३	१८२	अग्निकण...	१	६०	अघ्या	१९	६७
अक्षरचुंच.	१८	१५	अग्निचित्.	१७	१२	अंक {	३	१७
अक्षरचण.	१८	१५	अग्निज्वाला.	१४	१२४		२३	४
अक्षरसंस्थान.	१८	१६	अग्नित्रय....	१७	२०	अंकुर	१४	४
अक्षवती....	२०	४	अग्निम	१	४२	अंकुश	१८	४१
अक्षायकीलक.	१८							

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अंकोट	१४	२९	अच्छ	१०	१४	अंजनावती.	३	५
अंक्य	७	५	अच्छमल....	१५	४	अंजलि	१६	८५
अंग....	{	१६ ७०	अच्युत	१	१९	अंजसा. {	२४	२
		२४ ७	अच्युताग्रज.	१	२४		२४	१२
		२४ १९	अज	{	१९ ७६	अटनी	१८	८४
अंगण	१२	१३			२३ ३०	अटरूप	१४	१०३
अंगद	१६	१०७	अजगंधिका.	१४	१३९	अटवी	१४	१
अंगना. {	३	५	अजगर	८	५	अटा	१७	३६
		१६ ३	अजगव	१	३७	अट्ट ... {	१२	१२
अंगविक्षेप.	७	१६	अजन्य	१८	१०९		२३	१३१
अंगसंस्कार.	१६	१२१	अजमोदा....	१४	१४५	अट्टाचा	१७	३६
अंगहार	७	१६	अजशृंगी.	१४	११९	अगक	२१	५४
अंगार	१९	३०	अजस्र	१	६९	अगव्य	१९	७
अंगारक....	३	२५	अजहा	१४	८६	अणि	१८	५६
अंगारधानिका.	१९	२९	अजा	१९	७६	अणिमन्....	१	३८
अंगारवल्ली.	१४	४८	अजाजी....	१९	३६	अणीयम्....	२१	६२
अंगारवल्ली.	१४	९०	अजाजीव.	२०	११	अणु.... {	१९	२०
अंगारशकटी.	१९	२९	अजित	२३	६२		२१	६२
अंगीकार.	५	५	अजिन	१७	४७	अंड	१५	३७
अंगीकृत....	२१	१०८	अजिनपत्रा.	१५	२६	अंडकांश....	१६	७६
अंगुलोमान.	१९	८५	अजिनयोनि.	१५	८	अंडज. {	१०	१७
अंगुलमुद्रा.	१६	१०८	अजिर. {	१२	१३		१५	३३
अंगुला	१६	८२		२३	१८१		२१	५१
अंगुलीयक.	१६	१०७	अजिह्व	२१	७२	अतट	१३	४
अंगुष्ठ	१६	८२	अजिह्वग...	१८	८६	अतक्रित....	२४	७
अंघ्रि	१६	७१	अज्जका....	७	११	अतलस्पर्श.	१०	१५
अंघ्रिनामक.	१४	१२	अज्झटा....	१४	१२७	अतसी	१९	२०
अंघ्रिवल्लिका.	१४	९२	अज्ञ.... {	२१	३८		२३	२४२
अचंडी	१९	७०		२१	४८	अति.... {	२४	२
अचल	१३	१	अज्ञान	५	७		२४	५
अचला	११	२	अंचित	२१	९८	अतिक्रम. {	२२	३३
अचिक्रण....	२३	२२६	अंजन	३	३		२३	१५०
			अंजनकेशी.	१४	१३०	अतिचरा....	१४	१४६
						अतिच्छत्र.	१४	१६७

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अतिच्छत्रा.	१४	१५२	अत्यन्तनी...	१८	७६	अधित्यका.	१३	७
अतिज्व....	१८	७३	अत्यय. {	१८	११६	अधिप	२१	११
अतिथि	१७	३४		२३	१५०	अधिभू	२१	११
अतिनिर्हारिन्.	५	१०	अत्यर्थ	१	७०	अधिरोहिणी.	१२	१८
अतिनु	१०	१४	अत्यल्प	२१	६२	अधिवासन.	१६	१३४
अतिपथिन्.	११	१६	अत्याहित.	२३	७७	अधिविन्ना.	१६	७
अतिपात. {	१७	३७	अत्रि	३	२७	अधिश्रयणी.	१९	२९
	२२	३३	अथ	२३	२४८	अधिष्ठान...	२३	१२६
अतिप्रासिद्ध.	२३	२१८	अथो	२३	२४८	अधीन	२१	१६
अतिमात्र.	१	७०	अदभ्र	२१	६३	अधीर	२१	२६
अतिमुक्त....	१४	७२	अदर्शन	२२	२२	अधीश्वर....	१८	२
अतिमुक्तक.	१४	२६	अदितिनन्दन.	१	८	अधुना	२४	२३
अतिरिक्त.	२१	७५	अदृश	१६	६१	अधृष्ट	२१	२६
अतिवक्तृ.	२१	३५	अदृष्ट	१८	३०	अधोशुक्र.	१६	११७
अतिवाद....	६	१४	अदृष्टि	७	३७	अधोक्षज....	१	२१
अतिविषा.	१४	९९	अद्वा	२४	१२	अधोभुवन.	८	१
अतिवेल	१	७०	अद्भुत. {	७	१७	अधोमुख...	२१	३३
अतिशक्तिता.	१८	१०२		७	१९	अध्यक्ष. {	१८	६
अतिशय. {	१	६९	अद्भ्यर	२१	२०		२३	२२६
	२२	११	अद्य	२४	२०	अध्यवसाय.	७	२९
अतिशस्त.	२३	४१	अद्रि.... {	१३	१	अध्यात्म.	२३	१४४
अतिशोभन.	२१	५८		२३	१६३	अध्यापक.	१७	७
अतिसंस्कृत.	२३	८१	अद्वयवादिन्.	१	१४	अध्याहार.	५	३
अतिसर्जन.	२२	२८	अधम.... {	२१	५४	अध्युदा....	१६	७
अतिसाराकिन्.	१६	५९		२३	१४४	अध्यवणा.	१७	३२
अतिसौरभ.	१४	३३	अधमर्ण	१९	५	अध्वग	१८	१७
अतीक्ष्ण ...	२३	९४	अधर.... {	१६	९०	अध्वन्	११	१५
अतीत ...	२४	१७		२३	१८९	अध्वनीन....	१८	१७
अतीतनौक.	१०	१४	अधरेयुस्.	२४	२१	अध्वन्य	१८	१७
अतीन्द्रिय....	२१	७९	अधिकार्द्धि.	२१	११	अध्वर	१७	१३
अतीव	२४	२	अधिकांग.	१८	६३	अध्वर्यु	१७	१७
अत्तिका....	७	१५	अधिकार....	१८	३१	अनक्षर	६	२१
अत्यन्तकोपन.	२१	३२	अधिकृत....	१८	६	अनंग	१	२६
			अधिक्षित....	२१	४२			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अनच्छ	१०	१४	अनीक. {	१८	७८	अनुभाव. {	७	२१
अनदुह्	१९	६०		१८	१०४		२३	२०९
अनंत. {	२	१	अनीकस्थ. {	१८	६	अनुमति....	४	८
	८	४		१८	७८	अनुयोग....	६	१०
	२३	८१	अनीकेनी. {	१८	८१	अनुरोध	१८	१२
अनन्ता. {	११	२	अनु	२३	२४९	अनुलाप....	६	१६
	२३	९२	अनुक	२१	२३	अनलेपन....	२५	२३
	२३	११२	अनुकंपा....	७	१८	अनुवर्तन. {	१८	१२
	२३	१३६	अनुकर्ष	१८	५७		२५	१७
	२३	१५८	अनुकल्प....	१७	४०	अनुशय	२३	१४८
अनन्यज	१	२७	अनुकामीन. {	१८	७६	अनुष्ण	२०	१८
अनन्यवृत्ति. {	२१	७९		२२	१७	अनुहार	२२	१७
अनय	२३	१४९	अनुकार....	१७	३७	अनूक	२३	१३
अनर्थक ...	६	२०	अनुक्रम	१७	३७	अनूचान....	१७	१०
अनल ...	१	५७	अनुक्रोश ...	७	१८	अनूनक....	२१	६५
अनवधानता. {	७	३०	अनुग ...	२१	७८	अनूप	११	१०
अनवरत....	१	६९	अनुग्रह	२२	१३	अनूह	३	३२
अनवस्कार. {	२१	५६	अनुचर	१८	७१	अनृजु	२१	४६
अनवराध्य. {	२१	५७	अनुज	१६	४३			
अनस्	१८	५२	अनुजीविन्. {	१८	९	अनृत. {	६	२१
अनागतार्तिवा. {	१६	८		२०	४३		१९	२
अनातप ...	२३	१५७	अनुतर्पण...	२०	४३	अनेकप....	१८	३४
अनादर	७	२२	अनुताप. {	७	२५	अनेहस्	४	१
अनामय	१६	५०		२३	१४७	अनोकह ...	१४	५
अनामिका. {	१६	८२	अनुत्तम ...	२१	५७	अंत.... {	१८	११६
अनायासकृत. {	२१	९४	अनुत्तर	२३	१९०		२१	८१
अनारत ...	१	६९	अनुनय	२४	१८	अंतःपुर....	१२	११
अनार्यत्ति. {	१४	१४३	अनुपद ...	२१	७८	अंतक	१	६२
अनाहत	१६	११२	अनुपदीना. {	२०	३१	अंतर	२३	१८७
अनिमिष. {	२३	२१९		३	४	अंतरा	२४	१०
अनिरुद्ध	१	२८	अनुपमा ...	३	४	अंतराभवसत्त्व२३		१३२
अनिल.... {	१	१०	अनुप्लव	१८	७१	अंतराय	२२	१९
	१	६५	अनुबंध	२३	९८	अंतराल ...	३	६
अनिश	१	६९	अनुबोध	१६	१२२	अंतरिक्ष	२	१
			अनुभव	२२	२७			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अंतरीप	१०	८	अन्येषुस्....	२४	२१	अपराजिता {	१४	१०४
अंतरीय	१६	११७	अन्वक्	२१	७८	अपराजिता {	१४	१४९
अंतरे	२४	१०	अन्वक्ष	२१	७८	अपराद्धपृष्त्क	१८	६८
अंतरेण. {	२४	३	अन्वय	१७	१	अपराध	१८	२६
	२४	१०	अन्ववाय.	१७	१	अपराह्ण	४	३
अतर्गत	२१	८६	अन्वाहार्य.	१७	३१	अपरेषुस्....	२४	२०
अंतर्धा	३	१२	अन्विष्ट	२१	१०५	अपर्णा	१	३९
अंतर्धि	३	१२	अन्वेषणा.	१७	३२	अपलाप	६	१७
अंतर्द्वार	१२	१४	अन्वेषित.	२१	१०५	अपवर्ग	५	७
अंतर्मनस्....	२१	८	अप् (आप) .	१०	३	अपवर्जन....	१७	३०
अंतर्वत्नी.	१६	२२	अपकारगी.	६	१४	अपवाद. {	६	१३
अंतर्वाणि.	२१	६	अपक्रम	१८	१११	अपवाद. {	२३	८९
अंतर्वाशक....	१८	८	अपघन	१६	७०	अपवारण. {	३	१२
अंतावसायिन्.	२०	१०	अपचय	२२	१६	अपवारण. {	२३	१२५
अंतिक	२१	६७	अपचायित.	२१	१०१	अपशब्द....	६	२
अंतिकतम.	२१	६८	अपचित....	२१	१०१	अपष्टु	२१	८४
अंतिका	१९	२९	अपचिति. {	१७	३५	अपसद	२०	१६
अंतेवासिन् {	१७	११	अपचिति. {	२३	६७	अपसर्प	१८	१३
	२०	२०	अपट	१६	५८	अपसव्य....	२१	८४
अंत्य	२१	८१	अपत्य	१६	२८	अपस्कर.	१८	५५
अंत्र	१६	६६	अपत्रपा	७	२३	अपस्त्रात....	२१	१९
अंदुक	१८	४१	अपत्रपिण्णु.	२१	२८	अपहार	२२	१६
अंध.... {	१६	६१	अपथ	११	१७	अपांपति.	१०	२
	२३	१०३	अपथिन्....	११	१७	अपांग... {	१६	९४
अंधकरिपु....	१	३६	अपदांतर.	२१	६८	अपांग... {	२३	२१
अंधकार	८	३	अपदिश	३	५	अपान.... {	१	६७
अंधतमस.	८	३	अपदेश. {	७	३३	अपान.... {	१६	७३
अन्धस्	१९	४८	अपदेश. {	२३	२१६	अपामार्ग.	१४	८८
अन्धु	१०	२६	अपध्वस्त.	२१	३९	अपावृत	२१	१५
अन्न {	१९	४८	अपध्वंश	६	२	अपासन	१८	११३
	२१	१११	अपयान	१८	१११	अपि	२३	२५०
अन्य	२१	८२	अपरस्पर.	२२	१	अपिधान.	३	१३
अन्यतर....	२१	८२				अपिनद्ध....	१८	६५
अन्यतरेषुस्.	२४	२१						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अपूप	१९	४८	अभिग्रहण.	२२	१७	अभिशास्त.	२१	४३
अपोगंड.	१६	४६	अभिघातिन्.	१८	११	अभिशास्ति.	१७	३२
अस्पति	१	६४	अभिचर....	१८	७१	अभिशाप....	६	११
अस्पित्त....	१	५९	अभिचार.	२२	१९	अभिपंग ...	२३	२४
अप्रकांड.	१४	९	अभिजन.	{ १७ १		अभिपव. {	१७ ४७	
अप्रगुण	२१	७२		{ २३ १०८			२० ४२	
अप्रत्यक्ष....	२१	७९	अभिजात.	२३	८२	अभिषेनन.	१८	९५
अप्रधान....	२१	६०	अभिज्ञ	२१	४	अभिप्लुत....	२१	११०
अप्रहत	११	५	अभितस.	{ २१ ६७		अभिसंपात.	१८	१०५
अप्राध्य	२१	६०		{ २३ २५६		अभिसारिका.	१६	१०
अप्सरस. {	१ ११		अभिधान.	१२	८	अभिहार. {	२२ १७	
	१ ५५		अभिध्या...	७	२४		२३ १६८	
अफल	१४	७	अभिनय....	७	१६	अभिहित.	२१	१०७
अवद्ध	६	२०	अभिनव....	२१	७७	अभीक	२१	२४
अवद्धमुख.	२१	३६	अभिनवोद्धिद्.	१४	४	अभीक्ष्णम्. {	२४ १	
अबला	१६	२	अभिनिर्मुक्त.	१७	५५		२४ ११	
अबाध	२१	८३	अभिनिर्माण.	१८	९५	अभीप्सित {	२१ ५३	
अब्ज.... {	३ १४		अभिनीत. {	१८ २४			२१ ११२	
	२३ ३२			{ २३ ८१		अभीरु	१४	१००
अब्जयोनि.	१	१७	अभिपन्न....	२३	१२८	अभीरुपत्री.	१४	१०१
अब्द.... {	४ २०		अभिप्राय.	२२	२०	अभीषंग ...	२२	६
	२३ ८८		अभिभूत.	२१	४०	अभीषु	२३	२२०
	२३ १४६		अभिमर ...	२३	२१४	अभीष्ट	२१	५३
अब्धि.... {	१० १		अभिमान. {	७ २२		अभ्यग्र	२१	६७
	२३ १०१			{ २३ १११		अभ्यंतर.	३	६
अब्धिकफ.	१९	१०५	अभियोग...	२२	१३	अभ्यमित.	१६	५८
अब्रह्मण्य.	७	१४	अभिरूप....	२३	१३१	अभ्यामित्रिण.	१८	७५
अभय	१४	१६४	अभिलाव.	२२	२४	अभ्यामित्रिय.	१८	७५
अभया	१४	५९	अभिलाप.	७	२८	अभ्यामित्र्य.	१८	७५
अभाषण....	१७	३६	अभिलाषुक.	२१	२२	अभ्यर्ण	२१	६७
अभिक	२१	२४	अभिवादक.	२१	२८	अभ्यर्हित.	२३	८३
अभिक्रम.	१८	९६	अभिवादन.	१७	४१	अभ्यवकर्षण.	२२	१७
अभिख्या.	२३	१५६	अभिव्याप्ति.	२२	६	अभ्यवस्कंदन	१८	११०
अभिग्रह	२२	१३						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः		
अभ्यवहृत.	२१	१११	अमावस्या....	४	८	अम्मय	१०	५		
अभ्याख्यान.	६	१०	अमावास्या.	४	८	अम्ल	५	९		
अभ्यागम.	१८	१०५	अमित्र	१८	११	अम्ललोणिका.१४	१४०			
अभ्यागारिक.	२१	१२	अमुत्र	२४	८	अम्लवेतस.	१४	१४१		
अभ्यादान.	२२	२६	अमृणाल....	१४	१६४	अम्लान	१४	७३		
अभ्यांत	१६	५८	अमृत.	{	१	५१	अम्लिका.	१४	४३	
अभ्यामर्द.	१८	१०५		{	५	६	अय	४	२७	
अभ्याश	२१	६७		{	१०	३	अयन.	{	४	१३
अभ्यासादन.	१८	११०		{	१७	२८		{	११	१५
अभ्युत्थान.	१७	३४			१९	३	अयस्	१९	९८	
अभ्युदित....	१७	५५	अमृता.	{	२३	७६	अयःप्रातिमा.	२०	३५	
अभ्युपगम....	५	५		{	१४	५८	अयाचित.	१९	३	
अभ्युपपत्ति.	२२	१३		{	१४	८२	अयि	२४	१८	
अभ्यूष	१९	४७	अमृतांघ्रस्.	१	८	अयोय	१९	२५		
अत्र.... {	२	१	अमोघा.	{	१४	५४	अयोघन....	२३	३७	
	३	६		{	१४	१०६	अर	१	६८	
अत्रक	१९	१००	अंबा....	{	२	१	अरघट्ट	२५	१८	
अत्रपुष्प....	१४	३०		{	२३	१८१	अराणि	१७	१९	
अत्रमातंग.	१	४९	अंबरीष	१९	३०	अरण्य.	{	१४	१	
अत्रमु	३	४	अंबष्ट.	२०	२		{	२५	२२	
अत्रमुवल्लभ.	१	४९	अंबष्ठा.	{	१४	७१	अरण्यानी...	१४	१	
अत्रि	१०	१३		{	१४	८४	अरतिन	१६	८६	
अत्रिय	३	८		{	१४	१४०	अरर	१२	१७	
अत्रेप	१८	२४	अंबा	७	१४	अरल	१४	५७		
अमत्र	१९	३३	अंबिका	१	३९	अरविंद	१०	३९		
अमर	१	७	अंबु	१०	४	अराति	१८	११		
अमरावती....	१	४८	अंबुकणा.	३	११	अराल	२१	७१		
अमर्त्य	१	८	अंबुज	१४	६१	अरि	१८	१०		
अमर्ष	७	२६	अंबुमृत्	३	७	अरित्र	१०	१३		
अमर्षण	२१	३२	अंबुवेतस....	१४	३०	अरिमेद	१४	५०		
अमा	२३	२५१	अंबुसरण....	१०	११	अरिष्ट.	{	१२	८	
अमांस	१६	४४	अंबूकृत	६	२०		{	१४	३३	
अमात्य	१८	४	अंभस्	१०	४		{	१४	६२	
			अंभोरुह	१०	४१					

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अरिष्ट.	{	१४ १४८	अणस्	१०	४	अर्वन्....	{	१८ ४४
	{	१५ २०	अर्तन	२२	३२		{	२१ ५४
	{	१९ ५३	अर्ति	२३	६८	अर्वाक्.	{	१० ८
	{	२३ ३६	अर्थ....	{	१९ ९०		{	२४ १६
अरिष्टदृष्टी.	२१	४४		{	२३ ८६	अर्शस	१६	५४
	{	३ २९	अर्थना.	{	१७ ३२	अर्शस	१६	५९
अरुण.	{	३ ३२		{	२२ ६	अर्शोघ्न	१४	१५७
	{	५ १५	अर्थप्रयोग.	१९	४	अर्शोरागयुत.	१६	५९
	{	२३ ४८	अर्थशास्त्र.	६	५	अर्हणा	१७	३५
अरुणा	१४	९९	अर्थिन्.	{	१८ ९	अलक	१६	९६
अरुतुद	२१	८३		{	२१ ४९	अलका	१	७४
अरुक्ता.	{	१४ ४२	अर्थ्य.	{	१९ १०४	अलक्त	१६	१२५
	{	२३ १८९		{	२३ १६०	अलक्ष्मी	९	२
अरुस् ...	१६	५४	अर्दना	२२	६	अलगर्द	८	५
अरोक	२१	१००	अर्दित	२१	९७	अलंकारिण्यु.	{	१६ १००
अर्क.	{	३ २९	अर्ध...	{	३ १६		{	२१ २९
	{	२३ ४		{	३ १६	अलंकार्तृ	१६	१००
अर्कपर्ण.	१४	८१	अर्धचंद्रा....	१४	१०९	अलंकार्मीण.	२१	१८
अर्कबंधु	१	१५	अर्धनाव....	१०	१४	अलंकार....	१६	१०१
अर्काह्न	१४	८०	अर्धरात्र	४	६	अलंकृत....	१६	१००
अर्गल	१२	१७	अर्धर्च ...	२५	३२	अलक्रिया.	१६	१०१
अर्घ ...	२३	२७	अर्धहार	१६	१०६	अलंजर	१९	३१
अर्घ्य	१७	३३	अर्धोदक ...	१६	११९	अलं....	{	२३ २५३
अर्चा.	{	१७ ३५	अर्बुद.	{	२५ १९		{	२४ ११
	{	२० ३६		{	२५ ३३	अलर्क.	{	१४ ८१
आर्चित.	{	२१ १०१	अर्भक ...	१५	३८		{	२० २२
	{	२३ ८५	अर्म	२५	३४	अलस	२०	१८
अर्चिस्.	{	१ ६०	अर्थ....	{	१९ १	अलात	१९	३०
	{	२३ २३१		{	२३ १४६	अलाबू	१४	१५६
अर्जक	१४	८०	अर्थमन्	३	२८	अलि.	{	१५ १४
	{	५ १३	अर्या	१६	१४		{	१५ २९
अर्जुन.	{	१४ ४५	अर्याणी	१६	१४		{	२३ १९८
	{	१४ १६७	अर्यी	१६	१५	अलिक	१६	९२
अर्जुनी	१९	६७						
	{	१० १						
अर्णव.	{	२३ ५७						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अलिन्	१५	२९	अवदान.	२२	३	अवलम्न	१६	७९
अलिद	१२	१२	अवदाह	१४	१६५	अवलंबित.	२३	१०३
अलीक	२३	१२	अवदारण.	१९	१२	अवलगुज.	१४	९५
अल्प	२१	६१	अवदीर्ण	२१	८९	अववाद. {	१८	२५
अल्पतनु	१६	४८	अवद्य	२१	५४	अववाद. {	२३	८८
अल्पमारिष.	१४	१३६	अवधारण.	२३	१७८	अवश्यम्.	२४	१६
अल्पसरस्.	१०	२८	अवधि	२३	९९	अवश्याय.	३	१८
अल्पिष्ठ	२१	६२	अवध्वस्त.	२१	९४	अवष्टब्ध.	२३	१०४
अल्पीयस्.	२१	६२	अवन	२२	४	अवसर	२२	२४
अवकर	१२	१८	अवनत	२१	७०	अवसान	२२	३९
अवकीर्णिन्.	१७	५४	अवनाट	१६	४५	अवसित. {	१२	४
अवकृष्ट	२१	३९	अवनाय	२२	२७	अवसित. {	२१	९८
अवकेशिन्.	१४	७	अवनि	११	३	अवसित. {	२१	१०८
अवकय	१९	७९	अवन्तिसोम.	१९	३९	अवस्कर. {	१६	६७
अवगणित.	२१	१०६	अवन्ध्य	१४	६	अवस्कर. {	२३	१६७
अवगत	२१	१०८	अवभृथ	१७	२७	अवस्था	४	२९
अवगीत. {	२१	९३	अवभ्रट	१६	४५	अवहार	१०	२१
अवगीत. {	२३	७९	अवम	२१	५४	अवाहिस्था...	७	३४
अवग्रह. {	३	११	अवमत	२१	१०६	अवहेलन....	७	३३
अवग्रह. {	१८	३८	अवमर्द ...	१८	१०९	अवाक्. {	२१	१३
अवग्रहाह	३	११	अवमानना.	७	२३	अवाक्. {	२१	३३
अवचूर्णित.	२१	९४	अवमानित.	२१	१०६	अवाक्पुष्पी.	१४	१५२
अवज्ञा	७	२३	अवयव	१६	७०	अवाग्र ...	२१	७०
अवज्ञात	२१	१०६	अवर	१८	४०	अवाची	३	१
अवट	८	२	अवरज	१६	४३	अवाच्य	६	२१
अवटीट	१६	४५	अवरति	२२	३८	अवार	१०	८
अवटु	१६	८८	अवरवर्ण	२०	१	अवासस्	२१	३९
अवतंस	२३	२२८	अवरीण	२१	९४	अवि.... {	१६	२०
अवतमस.	८	३	अवरोध	१२	१२	अवि.... {	२३	२०७
अवतोका.	१९	६९	अवरोधन.	१२	११	अविग्र	१४	६७
अवदंश	२०	४०	अवरोह	१४	११	अवित	२१	१०६
अवदात. {	५	१३	अवर्ण	६	१३	अविद्या	५	७
अवदात. {	२३	८०	अवलक्ष	५	१३	अविनीत.	२१	२३
						अविरत	१	६९

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अविलंबित	{	१ ६८	अश्व	१८	४३	असृया	७	२८
		२१ ८३	अश्वकर्णक.	१४	४४	असृग्धरा.	१६	६२
अविस्पष्ट.	६	२१	अश्वरथ ...	१४	२१	असृज	१६	६४
अवीचि ...	९	१	अश्वयुग्	३	२१	असौम्यस्वर.	२१	३७
अवीरा	१६	११	अश्ववडव.	२५	१६	अस्त....	{	१३ २
अवेक्षा	२२	२८	अश्वा	१८	४६		{	२१ ८७
अव्यक्त	२३	६२	अश्वाभरण.	२३	४३	अस्तम्	२४	१७
अव्यक्तराग.	५	१५	अश्मारोह....	१८	६०	अस्ति	२४	१८
अव्यङ्ग्य	१४	८६	अश्विन्	१	५४	अस्तु	२४	१३
अव्यथा. {	१४	५९	अश्विनी ...	३	२१	अस्त्र	१८	८२
		१४ १४६	अश्विनीसुत.	१	५४	अस्थि	१६	६८
अव्यय	२५	३४	अश्वीय	१८	४८	अस्थिर	२१	४३
अव्यवहित.	२१	६८	अषडक्षिण.	१८	२२	अस्फुटवाच्.	२१	३७
अशनाया.	१९	५४	अष्टापद. {	१९	९५		{	३ ३३
अशनार्थिता.	२१	२०		२०	४६	अस्त्र....	{	१६ ६४
अशनि	१	५०	अष्टीयत्	१६	७२		{	१६ ९३
अशित	२१	१११	असकृत्	२४	१		{	२३ १६
अशिथी	१६	११	असती	१६	१०	अक्षप	१	६२
अशुभ	२५	२३	असतीसुत.	१६	२६	अक्षु	१६	९३
अशेष	२१	६५	असन ...	१४	४४	अस्वच्छंद.	२१	१६
अशोक	१४	६४	असमीक्ष्यकारिन्.	२१	१७	अस्वप्न	१	८
अशोकरोहिणी	१४	८५	असार	२१	५६	अस्वर	२१	३७
अश्मगर्भ.	१९	९२	असि	१८	७९	अस्वाध्याय.	१७	५४
अश्मज	१९	१०४	असिक्री	१६	१८	अहंयु	२१	५०
अश्मन्	१३	४	असित	५	१४	अहंकार	७	२२
अश्मंत	१९	२९	असिधावक.	२०	७	अहंकारवान्.	२१	५०
अश्मपुष्प.	१४	१२२	असिधेनुका.	१८	९२	अहन्	४	२
अश्मरी	१६	५६	असिपुत्री.	१८	९२	अहमहमिका.	१८	१०१
अश्मसार.	१९	९८	असिहेति.	१८	७०	अहंपूर्विका.	१८	१००
अश्रान्त	१	६९	असु	१८	११९	अहंमति ...	५	७
अश्रि	१८	९३	असुधारण.	१८	११९	अहंपति	३	३०
अश्रु	१६	९३	असुर	१	१२	अहर्मुख	४	२
अश्लील	६	१९	असूर्क्षण.	७	२३	अहस्कर	३	२८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
ग्रह	२३ २५८	आक्षेप	६ १३	आजीवि	१९ १
ग्रहार्य	१३ १	आखंडल.		१ ४७	आज	...	९ ३
ग्रहि.	{	८ ६	आखु	१५ १२	आज्ञा	...	१८ २६
		२३ २३९	आखुभुज्.	१५	६	आज्य	१९ ५२
ग्रहित	१८ ११	आखेट	२० २३	आटि	१५ २५
ग्रहितुडिक.	८	११	आख्या	६ ८	आडंबर.	{	१८ १०८
ग्रहिभय	१८ ३०	आख्यात.	२१	१०७			२३ १६८
ग्रहिभुज्.	२३	३०	आख्यायिका.	६	५	आडि	१५ २५
ग्रहे	१४ १०१	आगंतु	१७ ३४	आढक	१९ ८८
ग्रहो	२४ ९	आगम	१४ ५	आढकिक.		१९ १०
ग्रहोरात्र	४ १२	आगम्.	{	१८ २६	आढकी.	{	१४ १३०
ग्रहाय	२४ २			२३ २३१			२५ ७
आ.			आगु	५ ५	आढच	२१ १०
आ (आः).	२३	२४१	आग्नीध्र	१७ १७	आणवीन.		१९ ७
आ	२४ १६	आग्रहायणिक.	४	१४	आतंक	२३ १०
आकंपित.	२१	८७	आग्रहायणी.	३	२३	आतंचन....	२३	११५
आकर	१३ ७	आड्	२३ २४०	आततायिन्.	२१	४४
आकर्ष	२३ २२२	आंगिक	७ १६	आतप.	{	३ ३४
आकल्प	१६ ९९	आंगिरस.	३	२४			२५ २०
आकार.	{	२२ १५	आचमन.	१७	३६	आतपत्र....	१८	३२
		२३ १६२	आचाम	१९ ४९	आतर	१० १३
आकारगुप्ति.	७	३४	आचार्य	१७ ७	आतापिन्.	१५	२१
आकारणा.	६	८	आचार्या.	१६	१४	आतिथ्य.	१७	३३
आकाश	२ २	आचार्यानी.	१६	१५	आतिथ्य....	१७	३३
आकीर्ण	२१ ८५	आचित	१९ ८७	आतर	१६ ५८
आकुल	२१ ७२	आच्छादन.	{	३ १३	आतोद्य	७ ५
आकृति	२३ १६२			१६ ११५	आत्तगर्व.	२१	४०
आक्रंद	२३ ९०	आच्छुरितक.	७	३४	आत्मगुता.	१४	८६
आकीड	१४ ३	आच्छोदन.	२०	२३	आत्मघोष.	१५	२०
आक्रोश	६ १५	आजक	१९ ७७	आत्मज.	१६	२७
आक्रोशन.	२२	६	आजानय.	१८	४४	आत्मन्.	{	४ २९
आक्षारणा.	६	१५	आजि.	{	१८ १०६			२३ १०९
आक्षारित.	२१	४३			२३ ३२	आत्मभू.	{	१ १६
								१ २७

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
आत्मभरि.	२१	२१	आनाय्य....	१७	२१	आभीरपल्ली.	१२	२०
आत्रेयी	१६	२०	आनाह	१६	५५	आभीरी	१६	१३
आयर्वण....	२२	४३	आनुपूर्वी.	१७	३७	आभील	९	४
आदर्श	१६	१४०	आंधसिक.	१९	२८	आभोग	१६	१३७
आदि	२१	८०	आन्वीक्षिका.	६	५	आमगंधिन्.	५	१२
आदिकारण.	४	२८	आपक्व	१९	४७	आमनस्य.	९	३
आदितेय....	१	८	आपगा	१०	३०	आमय	१६	५१
आदित्य. {	१	८	आपण	१२	२	आमयाविन्.	१६	५८
	१	१०	आपणिक.	१९	७८	आमलक.	२५	३३
	३	२८	आपत्प्राप्त.	२१	४२	आमलकी.	१४	५७
आदिनव.	२२	२९	आपद्	१८	८२	आमिक्षा....	१७	२३
आदृत	२३	८५	आपन्न	२१	४२	आमिष. {	१६	६३
आद्य	२१	८०	आपन्नसत्त्वा.	१६	२२		२३	२२४
आद्यमाषक.	१९	८५	आपमित्यक.	१९	४	आमिषाशिन्.	२१	१९
आद्यन	२१	२१	आपान	२०	४३	आमुक्त	१८	६५
आद्योत	२३	३	आपीड	१६	१३६	आमोद. {	४	२४
आधार ...	१०	२९	आपीन	१९	७३		५	१०
आधि. {	७	२८	आपूषिक. {	१९	२८		२३	९१
	२३	९७		२२	४०	अमोदिन्.	५	११
आधृत	२१	८७	आत	१८	१३	आम्नाय. {	६	३
आधारण.	१८	५९	आप्य ...	१०	५		२२	७
आध्यान	७	२९	आप्यायन.	२३	११५	आम्न ...	१४	३३
आनक. {	७	६	आप्रच्छन्न.	२२	७	आम्नातक.	१४	२७
	२३	३	आप्रपद	१६	११९	आम्नोद्धित.	६	१२
आनककुंदुभि.	१	२३	आप्रपदीन.	१६	११९	आयत	२१	६९
आनत	२१	५०	आप्लव	१६	१२१	आयतन....	१२	७
आनद्ध	७	४	आप्लवव्रतिन्.	१७	४३	आयति. {	१८	२९
आनन	१६	८९	आप्लव	१६	१२१		२३	७२
आनंद	४	२५	आबंध	१९	१३	आयत्त ...	२१	१६
आनंदयु	४	२५	आभरण....	१६	१०१	आयाम	१६	११४
आनंदन.	२२	७	आभाषण.	६	१५	आयुध	१८	८२
आनर्त	२३	६४	आभास्वर.	१	१०	आयुधिक.	१८	६७
आनाय	१०	१६	आभीर	१९	५७	आयुधीय...	१८	६७
						आयुष्मत्.	२१	६

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
युस्	१८	१२०	आलान	१८	४१	आशय	२२	२०
योधन....	१८	१०३	आलाप	६	१५	आशर	१	६२
कट....	१९	९७	आलि. {	११	२१	आशा. {	३	१
गवध...	१४	२३		१४	४		२३	२१६
नालक.	१९	३९		१६	१२	आशितंगवीन.	१९	५९
ति	२२	३८	आलिग्य....	७	५	आशीविष.	८	७
म	२२	२६	आली	२३	१९८	आशीस्	२३	२२९
व	६	२३	आलीढ	१८	८५	आशु.... {	१	६८
मा	२०	३५	आलु	१९	३१		१९	१५
मातृ	२३	२४३	आलोक....	२३	३	आशुग. {	१	६५
माधन....	२३	१२५	आलोकन.	२२	३१		१८	८६
मम	१४	२	आवपन ...	१९	३३	आशुशुक्षणि.	१	५८
मालिक.	१९	२८	आवर्त	१०	६		७	१९
माव	६	२३	आवलि	१४	४	आश्रम	१७	४
मवत	१४	२४	आवासित.	१९	२३	आश्रय. {	१८	१८
मोग्य	१६	५०	आवाप	१०	२९		२२	११
मोह. {	१६	११४	आवापक.	१६	१०७	आश्रयाश.	१	५७
	२३	२३९	आवाल	१०	२९	आश्रव. {	५	५
मोहण.	१२	१८	आविम	१४	६७		२१	२४
माल....	१४	७४	आविद्ध. {	२१	७१	आश्रुत	२१	१०८
मव	१६	२१	२१	८७	आश्व	१८	४८	
	२१	१०५	आविध	२२	३६	आश्वत्य	१४	१८
क	१९	३७	आविल	१०	१४	आश्वयुज.	४	१७
म.... {	७	१४	आविष्ट	२१	९	आश्विन	४	१७
	१७	३	आविस्	२४	१२	आश्विनेय....	१	५४
मि	१	४०	आवुक	७	१२	आश्वीन	१८	४७
मिवर्त.	११	८	आवत्त ...	७	१२	आषाढ. {	४	१६
मन्य	१९	६२	आवृत्	१७	३७		१७	४६
म	१९	१०३	आवृत	२१	९०	आसक्त.	२१	९
मम	१८	११५	आवेगी	१४	१३७	आसन. {	१६	१३८
मय ...	१२	५	आवेशन....	१२	७		१८	१८
माल.	१०	२९	आवेशिक.	१७	३४		१८	३९
मय्य	२०	१८	आशंसित....	२१	२७	आसना	२२	२१
			आशंसु	२१	२७			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
आसंदी	२५	९	आह्वान	६	८	इंद्र....	{	१ ४४
आसन्न ...	२१	६६					{	३ २
आसव	२०	४२	इ.			इंद्रद्रु	१४	४५
आसादित. २१	१०४		इक्षु	१४	१६३	इंद्रयव	१४	६७
आसार. {	३ ११			{	१४ ९८	इंद्रवारुणी. १४		१५६
	१८ ९६		इक्षुगंधा. {		१४ १०४	इंद्रसुरस	१४	६८
आसुरी	१९	१९		{	१४ ११०	इंद्राणिका. १४		६८
आसेचनक. २१	५३		इक्षुर	१४	१०४	इंद्राणी	१	४८
आस्कंदन. १८	१०४		इक्ष्वाकु	१४	१५६	इंद्रायुव	३	१०
आस्कंदित. १८	४८			{	२१ ७४	इंद्रारि	१	१२
आस्तरण. १८	४२		इंग....	{	२२ १५	इंद्रावरज. १		२०
आस्था	२३	८८	इंगित	२२	१५	इंद्रिय. {	५ ८	
आस्थान. १७	१५		इंगुदी	१४	४६		१६ ६२	
आस्थानी. १७	१५		इच्छा	७	२७	इन्द्रियार्थ. ५		८
आस्पद	२३	९४	इच्छावती. १६		९	इंधन	१४	१३
आस्फोट. १४	८०		इज्याशील. १७		८	इभ	१८	३५
अस्फोटनी. २०	३४		इत्तर	१९	६२	इभ्य	२१	१०
आस्फोटा. {	१४ ७०		इडा	२३	४२	इरंमद	३	१०
	१४ १०४			{	२० १६	इरा.... {	२० ४०	
आस्य	१६	८९	इतर.... {		२१ ८२		२३ १७६	
आस्या	२२	२१		{	२३ १९२	इला ...	२३	४२
आखव	२२	२९	इतरेकुस	२४	२१	इल्वला:	३	२३
आहत. {	६ २१		इति ...	२३	२४६	इव	२४	९
	२१ ८८		इतिह	१७	१२	इष	४	१७
आहव ...	१८	१०५	इतिहास	६	४	इषु ...	१८	८७
आहवनीय. १७	१९		इत्तरी	१६	१०	इषुधि	१८	८८
आहार	१९	५६	इदानीम् ...	२४	२३	इष्ट.... {	१७ २८	
आहाव	१०	२६	इध्म	१४	१३		१९ ५७	
आहितलक्षण. २१	१०		इन	२३	१११	इष्टकापथ. १४		१६५
आहेय	८	९	इंदिरा	१	२९	इष्टगंध	५	११
आहो	२४	५	इंदीवर	१०	३७	इष्टार्थोक्त. २१		९
आहोपुदषिका. १८	१०१		इंदीवरी	१४	१००	इष्टि	२३	३९
आह्वय	६	७	इंदु	३	१३	इष्टास	१८	८३
आह्वा	६	८						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
ई.								
उग्र.	{	१६ ९३	उग्र	{	१ ३४	उत्कलिका.	७	२९
		२३ ३१			७ २०	उत्कार	२२	३६
उग्रणिका.		१६ २०	उग्रगंधा. {		२० २	उत्क्रोष	१५	२३
उग्रत		२१ ११०			१४ १०२	उत्त	२१	१०५
उग्रत		२३ ६८			१४ १४५	उत्तंस	२३	२२८
उग्रत		२१ ८७	उच्च		२१ ७०	उत्तप्त	१६	६३
उग्रत		१६ ५४	उच्चटा		१४ १६०	उत्तम	२१	५७
उग्रत		१४ १५५	उच्चंड		२१ ८३	उत्तमर्ण	१९	५
उग्रत		७ २४	उच्चार		१६ ६७	उत्तमा	१६	४
उग्रत		२१ १०९	उच्चावच		२१ ८३	उत्तमांग	१६	९५
उग्रत		१८ ९१	उच्चैःश्रवस्.		१ ४८	उत्तर. {	६	१०
उग्रत		१ ३२	उच्चैर्घृष्ट.		६ १२		२३	१९०
उग्रत		३ ३	उच्चैस्		२४ १७	उत्तरा	३	२
उग्रत		१ ३२	उच्छ्रय		१४ १०	उत्तरासंग.	१६	११७
उग्रत		२१ १०	उच्छ्राय		१४ १०	उत्तरीय.	१६	११८
उग्रत		१ ३२	उच्छ्रित. {		२१ ७०	उत्तरेद्युस्....	२४	२०
उग्रत		२१ १०			२३ ८५	उत्तान	१०	१५
उग्रत		१ ३८	उज्जासन		१८ ११५	उत्तानशय.	१६	४१
उग्रत		२४ ८	उज्ज्वल ...		७ १७	उत्तान ...	२३	११८
उग्रत		५ ११	उच्छ		१९ २	उत्थित	२३	८५
उग्रत		१९ १४	उटज		१२ ६	उत्पातित....	१६	२९
उग्रत		१८ ३८	उट्टु		३ २१	उत्पाति ...	४	३०
उग्रत		२० ३३	उडप		१० ११	उत्पातिष्णु.	२१	२९
उग्रत		७ २७	उट्टोन ...		१५ ३७	उत्पन्न	२३	८५
उग्रत		१५ ७	उत.... {		२१ १०१	उत्पल. {	१०	३७
उ.					२३ २४४		१४	१२६
उ.		२४ १८	उताहो		२४ ५	उत्पलशारिवा.	१४	११२
उ.		२१ १०७	उत्क ...		२१ ८	उत्पात	१८	१०९
उ.		६ १	उत्कट. {		१४ १३४	उत्फुल्ल	१४	७
उ.		२५ ३०			२१ २३	उत्त	१३	५
उ.		१९ ५९	उत्कंठा		७ २९	उत्सर्जन....	१७	२९
उ.		१९ ३१	उत्कर		१५ ४२	उत्सव. {	७	३८
उ.		१९ ४५	उत्कर्ष		२२ ११		२३	२०९

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
उत्सादन....	१६	१२१	उदीच्य. {	११	७	उद्यत	२१	८९
उत्साह. {	७	२९		१४	१२२	उद्यम	२२	११
	१८	१९	उदुंबर. {	१४	२२	उद्यान. {	१४	३
उत्साहन. २३	११५			१९	९७		२३	११७
उत्साहवर्धन. ७	१८		उदुंबरपर्णी. १४	१४४		उद्युक्त	२१	९
उत्सुक	२१	९	उदुखल ...	१९	२५	उद्योग	२५	३३
उत्सृष्ट	२१	१०७	उद्गत	२१	९७	उद्ग ...	१०	२०
उत्सेध. {	१४	१०	उद्गमनीय. १७	११२		उद्गर्तन	१६	१२१
	२३	९६	उद्गाह	१	७०	उद्गन्त. {	१८	३६
उदक्	२४	२३	उद्गात	१७	१७		२१	९७
उदक. {	१०	४	उद्गार	२२	३७	उद्गासन	१८	११५
	२५	२२	उद्गीथ	२५	१९	उद्गाह	१७	५७
उदक्या	१६	२१	उद्गुर्ण	२१	८९	उद्ग. {	१४	१६९
उदग्र	२१	७०	उद्ग्राह	२२	३७		२२	१२
उदज ...	२२	३९	उद्घ	४	२७	उद्गुरु	१५	१२
उदधि	१०	१	उद्घन	२२	३५	उद्गत	२१	७०
उदंत	६	७	उद्घाटन. २०	२७		उद्गतानत. २१	६९	
उदन्या	१९	५५	उद्घात ...	२२	२६	उद्गद्ग	२३	८५
उदन्वत्	१०	१	उद्धान	१८	२६	उद्गय	२२	१२
उदपान	१०	२६	उद्दाल	१४	३४	उद्गाय ...	२२	१२
उदय	१३	२	उद्दित	२१	९५	उद्गत्त. {	१४	७७
उदर	१६	७७	उद्दाव	१८	१११		१६	६०
उदर्क	१८	२९	उद्दय	७	३८	उद्गदिष्ण. २१	२३	
उदवसित. १२	४		उद्दव	७	३८	उद्गनस्	२१	८
उदाश्वित	१९	५३	उद्दात ...	२२	९६	उद्गाथ. {	१८	११५
उदात्त	६	४	उद्दान ...	१९	२९		२०	२६
उदान	१	६७	उद्गार	१९	४	उद्गाद	७	२६
उदार. {	२१	८	उद्गत	२१	९०	उद्गादवत्. १६	६०	
	२३	१९२	उद्गव	४	३०	उपकण्ठ	२१	६७
उदासीन. १८	१०		उद्गिज	२१	५१	उपकारिका. १२	१०	
उदाहार. ६	९		उद्गिद्	२१	५१	उपकार्या. १२	१०	
उदित	२१	१०७	उद्गिद् ...	२१	५१	उपकुचिका {	१४	१२५
उदीची ...	३	२	उद्गम	२२	१२		१९	३७
						उपकुल्या. १४	९६	

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
उपक्रम.	{	१७ १३	उपमातृ	२३ १७६	उपस्पर्श	१७ ३६		
		२२ २६	उपमान	२० ३६	उपहार.	{	१८ २८	
		२३ १३९	उपयम ...	१७ ५६			२३ १९५	
उपक्रोश	६ १३		उपयाम	१७ ५७	उपहार	२३ १८३		
उपगत	२१ १०९		उपरक्त.	{	४ १०	उपांशु	१८ २३	
उपगृह्य	२२ ३०				२१ ४३	उपाक्रमण.	१७ १३	
उपग्रह	१८ ११९		उपरक्षण.	१८ ३३		उपाकृत....	१७ २५	
उपग्राह्य	१८ २८		उपराग ...	४ ९		उपात्यय.	{	१७ ३७
उपग्रह	२२ १९		उपगाम	२२ ३८			२२ ३३	
उपचरित.	२१ १०२		उपरि	२३ १८३		उपादान.	{	२२ १६
उपचाध्य	१७ २०		उपल	१३ ४			२३ २२४	
उपचित	२१ ८९		उपलब्धार्थ.	६ ५		उपाधि.	{	७ २८
उपचित्रा.	१४ ८७		उपलब्धि....	५ १			२१ १२	
उपजाप	१८ २१		उपलंभ	२२ २७	उपाध्याय.	१७ ७		
उपज्ञा ...	१७ १३		उपला	२३ १९९	उपाध्याया.	१६ १४		
उपतप्त	२२ १४		उपवन	१४ २	उपाध्यायानी.	१६ १५		
उपताप	१६ ५१		उपवर्तन	११ ८	उपाध्यायी	{	१६ १४	
उपत्यका....	१३ ७		उपवर्ह	१६ १३७			१६ १५	
उपदा	१८ २८		उपवास	१७ ३८	उपानह	२० ३१		
उपधा.	{	१८ २१	उपविषा	१४ ९९	उपायचतुष्टय.	१८ २०		
		२३ १३९	उपवीत ...	१७ ५०	उपायन	१८ ७८		
उपधान	१६ १३७		उपश्लय	१२ २०	उपालंभ....	६ १४		
उपधि	७ ३०		उपशाय	२२ ३२	उपावृत्त	१८ ५०		
उपनाह	७ ७		उपश्रुत	२१ १०९	उपासंग	१८ ८८		
उपनिधि.	१९ ८१		उपसंव्यान.	१६ ११७	उपासन	१८ ८६		
उपनिधत्....	२३ ९३		उपसंपन्न.	{	१७ २६	उपासना....	१७ ३५	
उपनिष्कर.	११ १८				१९ ४५	उपासित....	२१ १०२	
उपन्यास....	६ ९		उपसर	२२ २५	उपाहित.	{	४ १०	
उपपत्ति	१६ ३५		उपसर्ग	१८ १०९			२१ ९२	
उपवर्ह	१६ १३७		उपसर्जन.	२१ ६०	उपेक्ष	१ २०		
उपभृत्	१७ २५		उपसर्ग्या....	१९ ७०	उपोदिका.	१६ १५७		
उपभोग	२२ २०		उपसूर्यक.	३ ३२	उपोद्धात.	६ ९		
उपमा.	{	२० ३६	उपस्कर	१९ ३५	उत्कृष्ट	१९ ८		
		२० ३८	उपस्थ	१६ ७५				

शब्दः	पगः	श्लोकः	शब्दः	पगः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
उभययुस् ..	२	२१	उष्ठाघ	१६	५७	उरुपान्	१६	७२
उभययुस् ..	२	२१	उष्ठाच	१६	१२०	उर्ज ५	१८	७८
उमा. (१ ३८			उष्ठाल	१०	६	उजस्वल	१८	७५
(१९ २०			उशनस्	३	२५	ऊर्स्विन् ..	१८	७५
उमापति	१	३६	उशीर	१४	१६४	ऊर्णनाभ	१५	१३
उम्य	१९	७	उपणा	१४	९७	ऊर्णा २३	५०	
उरःसूत्रिका. १६	१०५		उपयुव	१	५७	ऊर्णांयु. { १९	७६	
उरग	८	८	उपस्	४	२	{ १९	१०७	
उरण	१९	७६	उषा	२४	१८	ऊर्ध्वक	७	५
उरणाख्य १४	१४७		उषापति	१	२८	ऊर्ध्वजानु. १६	४७	
उरभ्र	१९	७६	उषित	२१	९९	ऊर्ध्वज्ञ	१६	४७
उररी	२३	२५५	उष्ट्र	१९	७५	ऊर्मि. { १०	५	
उररीकृत	२१	१०८	{ ४ १९			{ २५	३८	
उरश्छद	१८	६४	उष्ण. { २० १९			ऊर्मिका	१६	१०७
उरस्	१६	७८	{ २५ २२			ऊर्ममत	२१	७१
उरसिल ..	१८	७६	उष्णगडिम. ३	२९		ऊय	११	४
उरस्य	१६	२८	उष्णिका	१९	५०	ऊषण	१९	३६
उरस्वान् ...	१८	७६	उष्णीष	२३	२२१	ऊपर	११	५
उरु	२१	६१	उष्णोपगम. ४	१९		ऊपत्	११	५
उरुनूक ...	१४	५१	उष्मक	४	१८	ऊष्मागम	४	१९
उर्वरा	११	४	उस्त्र	३	३३	ऊह	५	३
उर्वशी	१	५५	उस्त्रा ...	१९	६६			
उर्वी	११	३						
उर्वीरु	१४	१५५	ऊ.			ऊथ	१९	९०
उलप	१४	९	ऊत	२१	१०१	{ ३ २१		
उलूक	१५	१५	ऊधस्	१९	७३	{ १४ ५७		
उलूखल	१९	२५	ऊन	२३	१२८	{ १५ ४		
उलूखलक. १४	३४		ऊम्	२४	१८	ऊक्षगन्धा. १४	१३७	
उलूपिन्	१०	१८	ऊरी	२३	२५५	ऊक्षगन्धिका. १४	११०	
उल्का	२५	८	ऊर्य ...	१९	१	ऊच्	६	३
उल्मुक	१९	३०	ऊरी	२३	२५५	ऊजीप	१९	३२
उल्य	१६	३८	ऊरीकृत	२१	१०८	ऊजु	२१	७२
उल्वण	२१	८१	ऊरु	१६	७३	ऊजुरोहित. ३	१०	
			ऊरुज	१९	१	ऊण	१९	३

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
ऋत.	{	६ २२	एकधृतिण.	१९	६५	एलावालुक.	१४	१२१
ऋतीया	१९	२	एकपदी	११	१५	{	२३	२५१
ऋत.	{	४ १३	एकपिंग	१	७३	एवम्.	{	२४ ९
{	४ २०	एकयष्टिका.	१६	१०६	{	२४ १२		
{	२३ ६१	एकसर्ग	२१	८०	{	२४ १५		
ऋतमती ...	१६	२१	एकहायनी.	१९	६८	{	२४ १६	
ऋते	२४	३	एकाकिन्.	२१	८२	एषणिक	२०	३२
ऋतिवृत्त	१७	१७	एकाम्र.	{	२१ ७९	ऐ.		
ऋद्ध	१९	२३	{	२३ १९०	एकागारिक.	२०	२४	
ऋद्धि	१४	११२	एकाध्य	२१	८०	ऐगुद	१४	१८
ऋभु	१	८	एकांत	१	७०	ऐण	१५	८
ऋभुक्षिन्...	१	४७	एकाब्दा	१९	६८	ऐणय	१५	८
ऋश्य	१५	१०	एकायन	२१	७९	ऐतिह्य	१७	१२
{	७ १	एकायनगत.	२१	७०	ऐदियक	२१	७९	
{	१४ ११६	एकावली.	१६	१०६	ऐरावण ...	१	४९	
{	१९ ५९	एकाष्टील.	१६	८१	{	१ ४९		
{	२१ ५९	एकाष्टीला.	१६	८५	ऐरावत.	{	३ ३	
ऋषि	१७	४३	एड	१६	४८	{	१४ ३८	
ऋष्यकेतु....	१	२८	एडक	१९	७६	ऐरावती	३	९
ऋष्यभोक्ता.	{	१४ ८७	एडगज	१४	१४७	ऐलविल	१	७३
	{	१४ १०१	एडमूक	२१	३८	ऐलेय	१४	१२१
ए.			एडूक	१२	४	ऐस्वर्य	१	३८
{	२१ ८२	एण	१५	१०	ऐपमस्	२४	२०	
{	२१ ८२	एत	५	१७	ओ.			
{	२३ १६	एतहिं	२४	२३	ओकस्	२३	२३४	
एकक	२१	८२	एध	१४	१३	{	७ ९	
एकगुरु	१७	१२	एधस्	१४	१३	{	१५ ३९	
एकतान	२१	७९	एधा	२२	१०	{	२३ २७	
एकताल	७	३	एधित	२१	७६	ओंकार	६	४
एकदंत	१	४१	एनस्	४	२३	ओजस्	२३	२३४
एकदा	२४	२२	एरंड	१४	५१	ओडूषुष्प.	१४	७६
एकधुर	१९	६५	एला	१४	१२५	ओतु	१५	६
एकधुरावह.	१९	६५	एलापर्णी....	१४	१४०	ओदन	१९	४८
						ओम्	२४	१२

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
ओष	२२	९	कक्ष्या. {	१८	४२	काटिप्रोथ....	१६	७५
ओषधी	१४	६	कक्ष्या. {	२३	१५८	काटि	२५	३८
ओषधीश.	३	१४	कंक	१५	१६	काटु. {	५	९
ओष्ठ ...	१६	९०	कंकटक....	१८	६४	काटु. {	१४	८५
ओ.			कंकण	१६	१०८	काटु. {	२३	३५
औक्षक	१९	६०	कंकतिका.	१६	१३९	कटुतुंबी	१४	१५६
औचिति ...	२५	३९	कंकाल ...	१६	६९	कटुरोहिणी.	१४	८५
औचित्य....	२५	३९	कंकालक.	१६	१३०	कटुफल	१४	४०
औत्तानपादि.	३	२०	कंगु ...	१९	२०	कटंग	१४	५६
औत्सुक्य.	२३	२३०	कच	१६	९५	कठिजर	१४	७९
औदनिक.	१९	२८	कचर	२१	५५	कठिन	२१	७६
औदारिक....	२१	२१	कच्चि.	२४	१४	कठिलक....	१४	१५४
औपगवक.	२२	४०	कच्छ. {	११	१०	कठार ...	२१	७६
औपयिक.	१८	२४	कच्छ. {	१४	१२८	कडंगर	१९	२२
औमीन	१९	७	कच्छप ...	१०	२१	कडंब	१९	३५
औरप्रक....	१९	७७	कच्छपो	२३	१३२	कडार	५	१६
औरस ...	१६	२८	कच्छ	१६	५३	कण. {	२१	६२
और्ध्वदेहिक.	१७	३०	कच्छुर	१६	५८	कण. {	२३	४६
आर्व	१	५९	कच्छुरा	१४	९२	कणा. {	१४	९६
औशीर ...	२३	१८५	कंचुक. {	८	९	कणा. {	१९	३६
औषध. {	१४	१३५	कंचुक. {	१८	६३	काणिका. {	१४	६६
औषध. {	१६	५०	कंचुकिन्.	१८	८	काणिका. {	२५	८
औष्ट्रक	१९	७७		१६	७४	काणिश	१९	२१
क.			कट. {	१८	३७	कंटक	२५	३२
क	२३	५	कट. {	१९	२६	कंटकारिका.	१४	९३
कंस	१९	३२	कट. {	२३	३४	कंटकिफल.	१४	६१
कंसाराति.	१	२१	कटक. {	१३	५	कंठ	१६	८८
ककर	२३	९२	कटक. {	१६	१०७	कंठभूषा....	१६	१०४
ककुभ्रती.	१६	७४	कटभी	१४	१५०	कंडुरा	१४	८६
ककुभ्र	३	१	कटभरा. {	१४	८५	कंड	१६	५३
ककुभ्र. {	७	७	कटभरा. {	१४	१५३	कंडूया	१६	५३
ककुभ्र. {	१४	४५	कटाक्ष	१६	९४	कंडोल	१९	२६
ककुभ्र. {	१६	७९	कटाह	२५	२१	कंडोलवीणा.	२०	३२
कक्ष. {	२३	२२०	काटि	१६	७४			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
कनृण	१४ १६६	कंधरा	१६ ८८	कमठ	१० २१
कथा	६ ६	कन्यकाजात.	१६ २४	कमठी	१० २४	
कदध्वन्	११ १६	कन्या	१६ ८	कमण्डलु	१७ ४६
कदेव	१४ ४२	कपट	७ ३०	कमन	१६ २४
कदेवक.	{	१५ ४०	कर्पद	१ ३७	कमल.	{	१० ३
		१९ १७	कर्पदीर्	१ ३४			१० ४०
								२३ १९४
कदर	१४ ५०	कपाट	१२ १७	कमला	१ २८
कदर्प	२१ ४८	कपाल	१६ ६८	कमलासन.	१ १७	
कदली.	{	१४ ११३	कपालभृत्...	१ ३४	कमलांतर...	१९ १०६		
		१५ ९	काप	१५ ३	कमितृ	२१ २३
कदाचित्.		२४ ४	कापिकच्छु.	१४ ८७	कंष	७ ३८	
कदृष्ण	३ ३५	कापित्थ	१४ २१	कंपन	२१ ७४
कदु	५ १६	कपिल	५ १६	कंप	२१ ७४
कद्वद	२१ ३७	कपिला.	{	३ ४	कंबल.	{	१६ ११६
कनक	१९ ९४			१४ ६३			२३ १९४
कनकाध्यक्ष.	१८ ७			१४ १२०	कंबलिवाहक.	१८ ५२		
कनकालुका.	१८ ३२		कपिवल्ली....	१४ ९७	कंबि	१९ ३४	
कनकाह्वय....	१४ ७७		कपिश	५ १६	कंबु.	{	१० २३
कनिष्ठ.	{	१६ ४३	कपीतन.	{	१४ २७			२३ १३३
		२३ ४१			१४ ४३	कंबुग्रीवा....	१६ ८८	
कनिष्ठा	१६ ८२			१४ ६३		कम्प
कनीनिका.	१६ ९२		कपोत	१५ १४	कर.	{	३ ३३
कनीयस्.	{	२१ ६२	कपोतपालिका.	१२ १५			१८ २७	
		२३ २३६	कपोतांघ्रि.	१४ १२९		२३ १६४		
कथा	२५ ९	कपोल	१६ ९०	करक.	{	१४ ६४
कद....	{	१४ १५७	कफ	१६ ६२			२३ ६
		२५ ३५	काफिन्	१६ ६०	करका	३ १२
कदर	१४ ६	काफोणि	१६ ८०	करज.	{	१४ ४७
कदराल.	{	१४ २९	कबंध.	{	१० ४			१४ १२९
		१४ ४३			१८ ११८	करंजक	१४ ४७
कदर्प	१ २६			१४ १३९	करट.	{	१५ २०
कदली	१५ ९	कबरी.	{	१६ ९७			२३ ३४
कदु	१९ ३०	कम्	{	१९ ४०	करण.	{	२० २
कदुक्	१६ १३८			२३ २५१			२३ ५४

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
करंड	२५	१८	कर्करी	१९	३१	कर्मण्या	२०	३८
करतोया	१०	३३	कर्करेटु ...	१५	१९	कर्मदिन	१७	४२
करपत्र	२०	३५	कर्कश. {	१४	१४६	कर्मशील	२१	१८
करभ. {	१६	८१	कर्कश. {	२५	७६	कर्मशूर	२१	१८
	१९	७५		२३	२१७	कर्मसचिव.	१८	४
करभूषण	१६	१०८	कर्कार	१४	१५५	कर्मार	१४	१६०
करमर्दक	१४	६७	कर्चूर	१४	१५४	कर्माद्रिय	५	४
करंभ	१९	४८	कर्चूरक	१४	१३५	कर्प	१९	८६
कररुह	१६	८३	कर्ण ...	१६	९४	कर्पक	१९	६
करवाल	१८	८९	कर्णजलकम्.	११	१३	कर्पफल	१४	५८
करवालिका.	१८	९१	कर्णधार	१०	१२	कर्प	२३	२२३
करवीर	१४	७७	कर्णपुर	२३	२२८	कल	७	२
करशाखा.	१६	८२	कर्णवेष्टन....	१६	१०३	कलकल	६	२५
करशीकर.	१८	३७	कर्णिका. {	१६	१०३	कलंक. {	३	१७
करहाट	१०	४३		२३	१५		२३	४
करहाट ...	१४	५२	कर्णिकार....	१४	६०	कलत्र	२३	१७८
कराल	२३	२०५	कर्णिरथ	१८	५२	कलधौत	२३	७६
करिगर्जित.	१८	१०७	कर्णेजप	२१	४७	कलंब. {	१८	८७
करिणी	१८	३६	कर्तरी	२०	३४		१९	३५
करिन्	१८	३४	कर्दम	१०	९	कलभ	१८	३५
करिपिप्पली.	१४	९७	कर्पट. {	१६	११५	कलम	१९	२४
करिशावक.	१८	३५		२५	३३	कलंबी	१४	१५७
करीर. {	१४	७७	कर्पर ...	१६	६८	कलरव	१५	१४
	२३	१७३	कर्परांश	२३	१७५	कलल	१६	३८
करीष	१९	५१	कर्परी	१९	१०१	कलविक....	१५	१८
करुण	७	१७	कर्पूर	१६	१३०	कलश	१९	३१
करुणा	७	१८	कर्पूर {	१	६३	कलशी	१४	९३
कोरेटु	१५	१९	कर्पूर {	५	१७	कलहंस	१५	२३
कोरेण	२३	५२		१९	९४	कलह	१८	१०४
कोरेटि	१६	६९	कर्मकर. {	२०	१५		३	१५
कर्क	१८	४६		२१	१९	कला.... {	४	११
कर्कटक ...	१०	२१	कर्मकार	२१	१९		२३	१९८
कर्कटी ...	१४	१५५	कर्मक्षम	२१	१८	कलाद	२०	८
कर्कट. {	१४	३६	कर्मठ	२१	१८	कलानिधि.	३	१४
कर्कट. {	२५	३८						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
कलाप.	२३	१२९	कविका ...	१८	४९	काकुद	१६	९१
कलाय ...	१९	१६	कविय	२५	३५	काकेंदु	१४	३९
कालि. {	१८	१०५	कवोष्ण	३	३५	काकेंदुवरिका. १४	६१	
	२३	१९४	कव्य	१७	२४	काकोदर...	८	७
कालिका	१४	१६	कशा	२०	३१	काकोल. {	८	१०
कालिंग. {	१४	६७	कशार्ह	२१	४४		१५	२१
	१५	१६	कशिपु	२३	१३०	काक्षा	७	२७
कालिद्रुम	१४	५८	कशेरु	२५	१३	काक्षो	१४	१३१
कालिमारक. १४	५८		कशरुका ...	१६	६९	काच. {	१९	९९
कालिल	२१	८५	कडमल	१८	१०९		२०	३०
कलुष. {	४	२३	कडय. {	१८	४७		२३	२८
	१०	१४		२०	४०	काचस्याली. १४	५४	
कलेवर	१६	७०		२१	४४	काचिन	२१	८९
कल्क	२३	१४	कप	२०	३२	काचन	१९	९५
कल्क. {	४	२१	कपाय. {	५	९	काचनद्वय. १४	६५	
	४	२२		२३	१५३	काचनी	१९	४१
	१७	४०	कष्ट. {	९	४	कांची	१६	१०८
	१८	२४		२३	३९	कांजिक	१९	३९
कल्पना	१८	४२	कस्तूरी	१६	१२९	कांड	२३	४३
कल्पवृक्ष ...	१	५३	कह ...	१५	२२	कांडपृष्ठ ...	१८	६७
कल्पित	४	२२	काम्यताल. ७	४		कांचनत	१८	६९
कल्मष	४	२३	काक	१५	२०	कांडार ...	१८	६९
कल्माष	५	१७	काकचिनी. १४	९८		कांडेक्ष ...	१५	१०४
कल्य. {	४	२	काकतिदक. १४	३९		कातर	२१	२६
	१६	५७	काकनातिका. १४	११८		काह्यायनी. {	१	३८
	२३	१५३	काकपक्ष ...	१६	९६		१६	१७
कल्या	६	१८	काकपीलक. १४	३९		कादंब ...	१५	२३
कल्याण	४	२५	काकमाची. १४	१५१		कादंबरी ...	२०	४०
कलोल ...	१०	६	काकमुद्रा. १४	११३		कादंबिनी. ३	८	
कल्हार ...	१०	३६	काकली	७	२	कादंबेय ...	८	४
कवच	१८	६४	काकांगो....	१४	११८	कानन	१४	१
कवल	१९	५४	काकिणी ...	२५	९	कानीन	१०	२४
कावि. {	३	२५	काकु	६	१२	कात	२१	५२
	१७	५						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
कांतलक....	१४	१२८	काय.	{	१६ ७१	कार्षिक	१९	८८
कांता	१६	३		{	१७ ५१		{	१ ६२
कांतार.	{	११ १७	कायस्था....	१४	५९	काल.	{	४ १
	{	२३ १७२	कारण	४	२८		{	५ १४
कांतारक....	१४	१६३	कारणा	९	३		{	२३ १९४
कांतार्थिनी.	१६	१०	कारणिक.	२१	७	कालक	१६	४९
कांति.	{	३ १७	कारणव	१५	३४	कालकंठक.	१५	२१
	{	२२ ८	कारंभा	१४	५६	कालकूट.	८	१०
कांदविक.	१९	२८		{	१४ १११	कालखड....	१६	६६
कांदिशोक.	२१	४२	कारवी.	{	१४ १५२	कालधर्म	१८	११६
कापय	११	१६		{	१९ ३७	कालपृष्ठ	१८	८३
	{	१५ ४३		{	१९ ४०			
कापोत.	{	१९ १०९	कारवेल ...	१४	१५४	कालमेपिका	{	१४ ९०
कापोतांजन.	१९	१००	कारा	१८	११९		{	१४ १०९
	{	१ २६	कागिका	२३	१५	कालमेपी.	१४	९६
काम.	{	७ २८	कारोप ...	२२	४३	कालशेय....	१९	५३
	{	१९ ५७	कारु	२०	५	कालसूत्र.	९	२
	{	२३ १३८	कारुणिक.	२१	१५	कालस्कंध.	{	१४ ३८
कामंगामिन्.	१८	७६	कारुण्य	७	१८		{	१४ ६८
कामन	२१	२४	कारोत्तर	२०	४३	काला.	{	१४ ९४
कामपाल.	१	२४	कार्तस्वर ...	१९	९५		{	१४ १०९
कामम्	२४	१३	कार्तातिक.	१८	१४		{	१९ ३७
कामयित.	२१	२४	कार्तिक ...	४	१७	कालागुरु....	१६	१२७
कामिनी.	{	१६ ३	कार्तिकिक.	४	१८	कालानसार्थ.	{	१४ १२२
	{	२३ ११२	कार्तिकेय.	१	४१		{	१६ १२६
कामुक	२१	२३	कात्स्न्य....	२३	१७८	कालायस.	१९	९८
कामुका	१६	९	कार्षास.	{	१६ १११	कालिका.	२३	१५
कामुकी	१६	९		{	२५ ३५	कालिंदी	१०	३२
कांपित्य....	१४	१४६	कार्षासी	१४	११६	कालिंदीभेदन.	१	२५
कावल	१८	५४	कार्म	२१	१८	काली	१	३८
कांबविक.	२०	८	कार्मण	२२	४	कालीयक.	{	१४ १०१
कांबोज	१८	४५	कार्मुक	१८	८३		{	१६ १२६
कांबोजी....	१४	१३५	काश्य	१४	४४	काल्पक. ...	१४	१३५
काम्यदान.	२२	३	कार्षापण....	१९	८८	काल्या	१९	७०
						कावचिक.	१८	६६

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
चैरी	१०	३५	किट्ट	१६	६५	कीर	१५	२१
चव्य	३	२५	किण	२५	१८	कीर्ति	६	११
चाश	१४	१६२	किणिही	१४	८९	कील. {	१	६०
चामरी ...	१४	३५	किण्व	२०	४२	{ २३	१९७	
चामर्य ...	१४	३६	कितव. {	१४	७७	कीलक	१९	७३
चामीर ...	१४	१४५	{ २०	४४	कीलाल. {	१०	३	
चामीरजन्मनू १६	१२४		किन्नर. {	१	११	{ २३	२००	
चय्यपि	३	३२	{ १	७४	कीलित	२१	४२	
चय्यपी ...	११	२	किन्नोश	१	७२	कीश	१५	३
चाष्ट	१४	१३	किम्. {	२३	२५२	कु.... {	११	३
चाष्टकुदाल. १०	१३		{ २४	५	{ २३	२४१		
चाष्टतक्ष	२०	९	किमु	२४	५	कुकर	१६	४८
{ ३	१		किमुत. {	२३	२	कुकुंदर	१६	७५
चाठा. { ४	११		{ २४	५	कुकुल	२३	२०३	
{ २३	४१		किपचान....	२१	४८	कुकुट	१५	१७
चाठांबुवाहिनी १०	११		किपुरुष	१	७४	कुकुभ	१५	३५
चाठीला ...	१४	११३	किरण	३	३३	कुकुर. {	१५	१३२
चास	१६	५२	किरात	२०	२०	{ २०	२१	
चासमर्द	२५	१९	किराततिल. १४	१४३	कुक्षि	१६	७७	
चासर	१५	४	किरि	१५	२	कुक्षिभरि... २१	२१	
चासार	१०	२८	किरीट	१६	१०२	कुकुम	१६	१२३
चासू ...	२३	६६	किमीरि	५	१७	कुच	१६	७७
चिवदंती ...	६	७	किल	२३	२५५	कुचंदन	१६	१३२
किशार. {	१९	२१	किलास	१६	५३	कुचर	२१	३७
{ २३	१६३		किलासिन्. १६	६१	कुचाग्र	१६	७७	
किशुक	१४	२९	किलिंजक. १९	२६	कुज	३	२५	
किकीदिवि. १५	१६		कल्बिष. {	४	२३	कुंचित	२१	७१
किकर	२०	१७	{ २३	२२४	कुंज. {	१४	८	
किकिणी....	१६	११०	किशोर	१८	४६	{ २३	३१	
किचित्	२४	८	किष्कु	२३	७	कुंजर. {	१८	३४
किचुलक....	१०	२२	किसलय....	१४	१४	{ २१	५९	
किजलक....	१०	४२	कीकस	१६	६८	कुंजराशन. १४	२०	
किटि	१५	२	कीचक	१४	१६१	कुंजल	१९	३९
			कीनाश	२३	२१५			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
कुट.	{	१४ ५	कुत	१९ ३३	कुमुदिनी....	१० ३९		
		१९ ३२	कुतहल	७ ३१	कुमुदत ...	११ ९		
कुटक	१९ १३		कुत्सा	६ १३	कुमुदती	१० ३८		
कुटज	१४ ६६		कुत्सित	२१ ५४	कुम्बा	१७ १८		
कुटन्नट. {	१४ ५७		कुय. {	१४ १६६	कुम्भ. {	१४ ३४		
	१४ १३१			१८ ४२		१८ ३७		
कुटिल	२१ ७१		कुदाल	१४ २२		२३ १३४		
कुटि. {	१२ ६		कुनटी	१९ १०८	कुम्भकार....	२० ६		
	२५ ३८		कुनाशक....	१४ ९१	कुम्भसंभव.	३ २०		
कुटुंबव्यापृत. २१ ११			कुंत ...	१८ ९३	कुम्भिका.	१० ३८		
कुटुबिनी.... १६ ६			कुंतल	१६ ९५	कुम्भी	१४ ४०		
कुट्टनी १६ १९			कुंद. {	१४ ७३	कुम्भीर	१० २१		
कुट्टिम २५ ३४				१४ १२०	कुम्भोलूखलक. १४ ३४			
कुठर १९ ७४				२३ १९	कुम्भरंग	१५ ८		
कुठार १८ ९२			कुंदुरु	१४ १२१	कुम्भरंगक	२० २४		
कुठेरक ... १४ ७९			कुंदुरुकी ...	१४ १२४	कुम्भरंक. {	१४ ७४		
कुडंगक २५ १७			कुपय	२१ ५४		१४ ७५		
कुडय १९ ८९			कुप्य	१९ ९१	कुम्भरक	१४ ७५		
कुडमल १४ १६			कुवेर. {	१ ७१	कुम्भर	१५ २३		
कुड्य १२ ४				३ ३	कुम्भविंद	१४ १५९		
कुपप. {	१८ ११८		कुवेरक	२० १२७	कुम्भविस्त....	१९ ८६		
	२५ २०		कुवेराक्षी ...	१४ ५५		१५ ४१		
कुणि. {	१४ १२८		कुब्ज	१६ ४८	कुल. {	१७ १		
	१६ ४८		कुमार. {	१ ४३		१४ ३९		
कुंठ २१ १७				७ १२	कुलक. {	१४ १५५		
कुंठ. {	१६ ३६		कुमारक ...	१४ २५		२० ५		
	१९ ३१		कुमारी. {	१४ ७३	कुलटा	१६ १०		
कुंडल १६ १०३				१६ ८	कुलथिका.	१९ १०२		
कुंडलिन्.... ८ ७			कुमुद. {	३ ३	कुलपालिका.	१६ ७		
कुंडी १७ ४६				१० ३७	कुलश्रेष्ठिन्.	२० ५		
कुतप १७ ३१			कुमुदप्राय.	११ ९	कुलसंभव.	१७ २		
कुतुक ७ ३१			कुमुदवांधव.	३ १३	कुलखी	१६ ७		
कुतुप १९ ३३			कुमुदिका....	१४ ४०	कुलाय	१५ ३७		

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
कुलाल	२० ६	कुसृति	७ ३०	कृतमुख	१८ ६८
कुलाली	१९ १०२	कुस्तुबुरु.	१९	३८	कृतमाल	१४ २४
कुलिश	१ ५०	कुहना	१७ ५३	कृतमुख	२१ ४
कुली	१४ ९४	कुहर	८ १	कृतलक्षण.	२१	४०
कुलीन	१७ ३	कुहू	४ ९	कृतसापत्निका.	१६	७
कुलीर	१० २१	कुकुद	२१ १४	कृतद्वस्त	१८ ६८
कुमाप.	{	१९ १८	कुट.	{	१४ ४	कृतांत.	{	१ ६१
		२५ २१			११ ४२			२३ ६४
कुमाषाभिषुत.	१९	३९			२३ ३७	कृताभिषेका.	१६	५
कुसुम	१६ ६८	कृतयंत्र	२० २६	कृत्तिन्.	{	१७ ६
कुसुमा	१० ३४	कृतशालमलि.	१४	४७			२१ ४
कुसुमल.	{	१४ ३६	कृतस्थ	२१ ७३	कृत	...	२१ १०३
		२५ ४२	कुप	१० २६	कृति	१७ ४७
कुसुमलय	१० ३७	कुपक.	{	१० १०	कृतिवासम्.	१	३३
कुवाद	२१ ३७			१० १२	कृत्या	२३ ११८
कुविंद	२० ६			१६ ७२	कृत्रिमधूपक.	१६	१२८
कुवेणी	१० १६	कुवर	१८ ५७	कृत्स्न	...	२१ ६५
कुश.	{	१४ १६६	कर्च	१६ ९२	कृपण	२१ ४८
		२३ २१६	कर्चशीर्ष....	१४	१४२	कृपा	७ १८
कुशल.	{	४ २६	कुर्विका	१५ ४४	कृपाण	१८ ८९
		२१ ४	कुर्विन	७ ३३	कृपाणी	२० ३४
कुशी	१९ ९९	कूर्पर	१६ १०	कृपाल	२१ १५
कुशीलव	२० १२	कृपासक.	१६	११८	कृपीटयोनि.	१	५६
कुशेशय	...	१० ४०	कूर्म	१० २१	कृमि.	...	१५ १३
कुट.	{	१४ १२६	कुल	१० ७	कृमिकोशोत्थ.	१६	११३
		१६ ५४	कुम्भांड	१५ ११५	कृमिघ्न	१५ १०६
		२५ ३४	कृकण	१५ १९	कृमिज	१६ १२६
कुसीद	१९ ४	कृकलास.	१५	१२	कुश	२१ ६१
कुसीदिक.	१९	५	कृकवाक.	१५	१७	कुशानु	१ ५७
कुसुम	१४ १७	कृकाटिका.	१६	८८	कुशानुरेतस्.	१	३५
कुसुमांजन.	१९	१०३	कुच्छ.	{	९ ४	कुशाश्विन्.	२०	१२
कुसुमेष्ट	१ २७			१७ ५२	कृपक	१९ १३
कुसुंभ.	{	१९ १०६	कृत	२३ ४७	कृपि	१९ २
		२३ १३६						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
कृषिक	१९	६	केशव. {	१	१८	कोटि. {	१८	८४
कृषीवल	१९	६	{	१६	४५	{	१८	९३
कृष्ट	१९	८	केशवेश	१६	९७	{	२३	३८
कृष्टि	१७	६	केशावुनाम.	१४	१२२	कोटिवर्षा.	१४	१३३
{	१	१८	केशिक	१६	४५	कोटिश	१९	१२
{	४	१२	केशिन् ...	१६	४५	कोट्ट	२५	१८
{	५	१४	काशनी	१४	१२६	कोठ	१६	५४
{	१९	३६	{	१०	४३	कोग. {	७	६
कृष्णपाकफल.	१४	६७	कसर. {	१४	२५	{	१८	९३
कृष्णफला.	१४	९६	{	१४	६४	कोदंड	१८	८३
कृष्णभेरी.	१४	८६	{	१४	६५	कोद्रव	१९	१६
कृष्णला	१४	९८	कसरिन्.	१५	१	कोप	७	२६
कृष्णलोहित.	५	१६	कटुभाजित.	१	२२	कोपना	१६	४
कृष्णवर्त्मन्	१	५७	कैड्य	१४	४०	कोपिन्	२१	३२
कृष्णवृन्ता.	१४	५५	कैतव. {	७	३०	कोमल	२१	७८
कृष्णसार....	१५	१०	{	२०	४५	कोयष्टिक.	१५	३५
कृष्णा	१४	९६	केशरक	१९	११	कोरक	१४	१६
कृष्टिका.	१९	१९	केशरिक	१९	११	कोरंगी	१४	१२५
केसर	१६	४९	कैदार्य	१९	११	कोरदूष	१९	१६
केका	१५	३१	करव	१०	३७	{	१०	११
केकिन्	१५	३०	कैलास	१०	७४	कोल. {	१४	३६
केतकी	१४	१७०	कंवर्त	१०	१५	{	१५	२
केनन. {	१८	९९	कैवर्तीमुस्तक.	१४	१३२	कोलक. {	१६	१२९
{	२३	११४	कैवल्य	५	६	{	१९	३६
केतु	२३	६०	कैशिक	१६	९६	कोलदल.	१५	१३०
केदार	२५	२०	कैश्य	१६	९६	कोलंबक.	७	७
केदार	१९	११	कोक. {	१५	७	कोलवल्ली.	१४	९७
केनिपातक.	१०	१३	{	१५	२२	कोला	१४	९७
केयूर	१६	१०७	कोकनद	१०	४२	कोलाहल.	६	२५
केलि	७	३२	कोकनदच्छात्रि.	५	१५	कोलि	१४	३६
केवल	२३	२०३	काकिल....	१५	४९	कोविद	१७	५
केश ...	१६	९५	कोकिलाक्ष.	१४	१०४	कोविदार....	१४	२२
केशपर्णी....	१४	८९	कोटर	१४	१३	{	१५	३७
केशपाशी....	१६	९७	कोटरी	१६	१७	कोश. {	९९	३१
						{	२३	२१८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
कोशफल.	१६	१३०	कथन ..	१८	११९	कोष्ट	१५	५
कोशातकी.	२३	८	कंदन. {	१८	१०७	कोष्ठविन्ना.	१४	९३
कोष्ठ	२३	४०	{	२३	१२३	कोष्ठी	१४	११०
कोष्ण	३	३५	कंदित	७	३५	कोच	११	२२
कोष्ठिक.	२३	१७	कम	१७	४०	कोचदारण.	१	४३
कोक्षेयक.	१८	८९	कमुक. {	१४	४१	कृम ...	२२	१०
कोटतक्ष.	२०	९	{	१४	१६९	कृमय	१६	१०
कोटिक	२०	१४	कमेलक	१९	७५	क्लिन्न	२१	१०५
कोणप	१	६२	कयविक्रयिक.	१९	७८	क्लिन्नाक्ष	१६	६०
कोतुक	७	३१	कयिक	१९	७९	क्लिशित	२१	९८
कोतुहल	७	३१	कय्य	१९	८१	क्लिष्ट. {	६	१९
कोद्रोण	१९	८	कव्य	१६	६३	{	२१	९८
कोति	१४	१२०	कव्यात्	१	६२	क्लृप्तक	१४	१०९
कोतिक	१८	७०	कव्याद	१	६२	क्लृप्तिक.	१४	९४
कोपीन	२३	१२२	कायिक	१९	७९	क्लीच. {	१६	२९
कोमुदी	३	१६	क्रिया. {	५	२	{	२३	२१३
कोमोदकी.	१	३०	{	२३	१५७	क्लेश	२२	२९
कोलटिनय.	१६	२७	क्रियावत्	२१	१८	क्लाम	१६	६५
कोलट्ये. {	१६	२६	क्राडा. {	७	३२	क्लण. {	६	२४
{	१६	२७	{	७	३३	{	२२	८
कोलटेर	१६	२६	कुंच	१५	२२	क्लणन	६	२४
कोलीन	२३	११६	कुंच	१६	२२	क्लथित	२१	९५
कोलेयक	२०	२१	कुथ	७	२६	क्लाण	६	२४
कोशिक. {	१४	३४	कुष्ट	७	३५	क्षण. {	४	११
{	२३	१०	क्र. {	२१	४७	{	७	३८
कोशेय	१६	१११	{	२१	७६	{	२३	४७
कोरतुभ	१	३०	{	२३	१९१	क्षणदा	४	४
ककच	२०	३५	केतव्य ...	१९	८१	क्षणन	१८	११४
ककर. {	१४	७७	केश	१९	८१	क्षणप्रभा	३	९
{	१५	१९	कोड. {	१५	२	क्षतज	१६	६४
कतु	१७	१३	{	१६	७७	क्षतव्रत	१७	५४
कतुध्वंसिन्.	१	३६	क्रोध	७	२६	क्षत्त. {	१८	५९
कतुभुज	१	९	क्रोधन	२१	३२	{	२०	३
			क्रोशयुग	११	१८	{	२३	६३

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
क्षत्रिय.	{	१७ २	क्षीवन्	२१ २३	क्षेत्र.	{	१९ ११	
		१८ १		{	१० ४		{	२३ १८०
क्षत्रिया	१६ १४		क्षीर.	{	१९ ५१	क्षेत्रज्ञ.	{	४ २९
क्षत्रियी	१६ १५			{	२३ १८२		{	२३ ३३
क्षत्रियाणी.	१६ १४		क्षीरविकृति.	१९ ४४	क्षेत्राजीव.	१९ ६		
क्षपा	४ ४		क्षीरविदारि.	१४ ११०	क्षेपण	२२ ११		
क्षपाकर	३ १५		क्षीरशक्ता....	१४ ११०	क्षेपणी	१० १३		
क्षम	२३ १४२		क्षीराजी	१४ १००	क्षेपिष्ठ	२१ १११		
क्षमा	२३ १४२		क्षीरिका	१४ ४५	क्षेम.	{	४ २६	
क्षामित्	२१ ३१		क्षीरोद	१० २		{	१४ १२८	
क्षामिन्	२१ ३१		क्षीरोदतनया.	१ २९		{	२५ ३४	
क्षत्	२१ ३१		क्षुत्	१६ ५२	क्षोणि	११ २		
	{	४ २२	क्षुत	१६ ५२	क्षोद	१८ ९९		
क्षय.	{	१६ ५१	क्षुताभिजनन.	१९ १९	क्षोदिष्ठ ...	२१ १११		
	{	१८ १९		{	२१ ४८	क्षौद्र	१९ १०७	
	{	२२ ७	क्षुद.	{	२१ ११२	क्षौम.	{	१२ १२
	{	२३ १४५		{	२३ १७७		{	१६ ११३
क्षय.	{	१६ ५२	क्षुदघाटिका.	१६ ११०	क्षणुत ...	२१ ९१		
	{	१९ १९	क्षुदशंख	१० २३	क्षमा	११ ३		
क्षयथु	१६ ५२		क्षुदा.	{	१४ ९४	क्षमाभृत्.	{	१३ १
क्षांत	२१ ९७			{	२३ १७७		{	१८ १
क्षांति	७ २४		क्षुदांडमत्स्यसंघात.	१०११९	क्ष्वेड ...	८ ९		
क्षार	१९ ९९		क्षुध्	१९ ५४	क्ष्वेडा.	{	१८ १०७	
क्षारक	१४ १६		क्षुधित	२१ २०		{	२३ ४३	
क्षारमृत्तिका.	११ ४		क्षुप	१४ ८	क्ष्वेडित	२५ ३४		
क्षारित	२१ ४३		क्षुमा	१९ २०	ख.			
क्षिति.	{	११ २	क्षुर.	{	१४ १०४	ख.	{	२ १
	{	२३ ७०		{	२५ २०		{	२३ १८
क्षिपा	२२ ११		क्षुरक	१४ ४०		{	२५ २२	
क्षित	२१ ८७		क्षुरप्र	२५ २०	खग.	{	१५ ३२	
क्षिप्तु	२१ ३०		क्षुरिन्	२० १०		{	१८ ८६	
क्षिप्र.	{	१ ६८	क्षुल्लक.	{	२० १६		{	२३ १९
	{	२१ ११२		{	२१ ६१	खगेश्वर ...	१ ३१	
क्षिया	२२ ७			{	२३ १०	खजाका	१९ ३४	

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
खंज	१६ ४९	खलीन	१८ ४९	गडुल	१६ ४८
खंजन	१५ १५	खलु	२३ २५६	गण	{	१५ ४०
खंजरीट....	१५	१५	खलेदारु	१९ १५		{	१८ ८१
खट	२५ १७	खल्या	...	२२ ४२		{	२३ ४६
खट्टा	१६ १३८	खात	१० २७	गणक	...	१८ १४
खड्ग.	{	१५ ४	खादित	२१ ११०	गणदेवता.	१	१०
	{	१८ ८९	खारी	१९ ८८	गणनीय	२१ ६४
खड्गिन्	१५ ४	खारीक	१९ १०	गणरात्र	४ ६
खंड.	{	३ १६	खारीवाप.	१९	१०	गणरूप	१४ ८०
	{	१० ४२	खिल	११ ५	गणहासक.	१४	१२८
खंडपाश.	१	३३	खुर	{	१४ १३०	गणाधिप....	१	४१
खंडविकार.	१९	४३		{	१८ ४९	गणिका.	{	१४ ७१
खदिर	१४ ४९	खरणस्	१६ ४७		{	१६ १९
खदिरा	१४ १४१	खरणस	१६ ४७	गणिकारिका.	१४	६६
खद्योत	...	१५ २८	खेट	२१ ५४	गणित	२१ ६४
खनि	१३ ७	खेय	१० २९	गणय	...	२१ ६४
खनित्र	१९ १२	खेला	७ ३३	गंड.	{	१६ ९०
खपुर	१४ १६९	खोड	१६ ४९		{	१८ ३७
खर.	{	३ ३५	ख्यात	२१ ९	गंडक	१५ ४
	{	१९ ७७	ख्यातगर्हण.	२१	९३	गंडकारी....	१४	१४१
खरणस्	१६ ४६	ख्याति	२२ ९	गंडशैल	१३ ६
खरणस	१६ ४६	ग.			गंडाली	१४ १५९
खरपुष्पा....	१४	१३९	गगन	२ १	गंडोर	१४ १५७
खरमंजरी.	१४	८९	गंगा	१० ३१	गंडपद	१० २२
खराश्वा	...	१४ १११	गंगाधर	...	१ ३६	गंडपदी	१० २४
खर्जू	१६ ५३	गज	१८ ३४	गंडुषा	२५ १०
खर्जूर.	{	१४ १७०	गजता	१८ ३६	गतनासिक.	१६	४६
	{	१९ ९६	गजबंधनी.	१८	४३	गद	१६ ५१
खर्जूरी	१४ १७०	गजभक्ष्या.	१४	१२३	गद्य	२५ ३१
खर्व	{	१६ ४६	गजानन.	१	४१	गंत्री	१८ ५२
	{	२१ ७०	गंजा	१२ ८	गंध	५ ७
खल	२१ ४७	गडक	१० १७	गंधकुटी....	१४	१२३
खलप	२१ १७	गड	२५ १८	गंधन	२३ ११५
खलिनी	२२ ४२				गंधनाकुली.	१४	११४

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
गंधफली.	{	१४ ५६	गरुडायज.	३	३२	गवाक्षी ...	१४	१५६
		१४ ६४	गरुत्	१५	३६	गवीश्वर ...	१९	५८
गंधमादन.	१३	३		१	३१	गवेधु ...	१९	२५
गंधमूली.	१४	१५४	गरुत्मत.	{	१५ ३४	गवेधुका	१९	२५
गंधरस	१९	१०४		{	२३ ५८	गवेपणा	१७	३२
	{	१ ११	गर्गरी ...	१९	७४	गवेपित ...	२१	१०५
		१ ५५	गर्जित.	{	३ ८	गव्य	१९	५०
गंधर्व.	{	१५ ११	गर्त	८	२	गव्या	१९	६०
		१८ ४४	गर्दभ	१९	७७	गव्युति	११	१८
	{	२३ १३३	भर्दभांड	१४	४३	गहन.	{	१४ १
गंधर्वहस्तक.	१४	५०	गर्द्दन	२१	२२		{	२१ ८५
गंधवह	१	६५		{	१६ ३९	गहर.	{	१३ ६
गंधवहा	१६	८९	गर्भ.	{	२३ १३५		{	२३ १८३
गंधवाह	१	६५	गर्भक	१६	१३५	गांगेय.	{	१९ ९४
गंधसार	१६	१३१	गर्भागार	१२	८		{	२३ १५५
गंधाश्मन्.	१९	१०२	गर्भाशय	१६	३८	गांगेरुकी.	१४	११७
गंधिक	१९	१०२	गर्भिणी	१६	२२	गाढ.	१	७०
गंधिनी	१४	१२३	गर्भोपधातिनी.	१९	६९	गाणिवय.	१६	२२
गंधोत्तमा....	२०	४०	गर्भुत्	१४	१६५	गांडिव	१८	८४
गंधोली	१५	२७	गर्व	७	२२	गांडीव	१८	८४
गभस्ति	३	३३	गर्वित	२३	१०३	गात्र.	{	१६ ७०
गभीर	१०	१५	गर्हण	६	१३		{	१८ ४०
गम	१८	९५	गर्ही	२१	५४	गात्रानुलेपनी.	१६	१३३
गमन	१८	९५	गर्हवादिन्.	२१	३७	गान	६	२५
गंभासी	१४	३५	गल	१६	८८	गांधार ...	७	१
गंभीर	१०	१५	गलकंबल.	१९	६३	गायत्री.	{	१४ ४९
गम्य	२१	९२	गलंतिका.	१९	३१		{	१७ २२
गरण ...	२२	३७	गलित ...	२१	१०४	गारुत्मत.	१९	९२
गरल	८	९	गलोद्देश	१८	४८	गार्भिण	१६	२२
गरा	१४	६९	गल्या ...	२२	४३	गार्हपत्य	१७	१९
गरिष्ठ	२१	११२	गवय	१५	११	गालव	१४	३३
गरी	१४	६९	गवल	१९	१००	गिर	६	१
गरुड	१	३१	गवाक्ष	१२	९	गिरि.	{	१३ १
गरुडध्वज.	१	१९					{	२२ १३

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
गिरिकर्णी.	१४	१०४	गुद	१६ ७३	गृध्रसी	२५ १०
गिरिका	१५ १२	गुंद्र	१४ १६२	गृष्टि	१४ १५१
गिरिज	१९ १०४	गुंद्रा....	{	१४ ५५		{	१२ ४
गिरिजा	१ ४०		{	१४ १६०	गृह.	{	१२ ५
गिरिजामल.	१९	१००	गुत....	{	२१ ८९		{	२३ २३९
गिरिमल्लिका.	१४	६६		{	२१ १०६	गृहगोधिका.	१५	१२
गिरिश	१ ३३	गुतनाद	२३ १६७	गृहपति	१८ १५
गिरीश	१ ३३	गुति	२३ ७४	गृहयालु	२१ २७
गिलित	२१ ११०	गुरण	२२ ११	गृहस्थूण	२५ ३०
गीत	६ २५	गुरु....	{	३ २४	गृहागत	१७ ३४
गीर्ण	२१ ११०		{	१७ ७	गृहाराम	१४ १
गीर्णि	२२ ११		{	२३ १६२	गृहावग्रहणी.	१२	१३
गीर्वाण	१ ९	गुर्विणी	१६ २२	गृहिन	१७ ३
गीष्पति	३ २४	गुल्फ	१६ ७२			
गुग्गुलु	१४ ३४		{	१४ ९	गृह्यक.	{	१५ ४३
	{	१६ १०५	गुल्म.	{	१६ ६६		{	२१ १६
गृच्छ.	{	१९ २१		{	१८ ८१	गेंदुक	१६ १३८
				{	२३ १४२	गह	१२ ४
गृच्छक	१४ १६	गुल्मिनी	१४ ९	गैरिक.	{	१४ ८
गृच्छार्ध	१६ १०५	गुवाक	१४ १६९		{	२३ १२
गुंजा	१४ ९८	गुह	१ ६२	गैरेय	१९ १०४
गुट	२३ ४२		{	१३ ६		{	१९ ६०
गुटपुष्प	१४ २७	गुहा....	{	१४ ९३	गो	{ १९ ६६
गुटफल	१४ २८		{	२३ १५४		{	२३ २५
गुडा	१४ १०५	गुह्य	२३ ११	गोकंटक....	१४	९९
गुडूची	१४ ८२	गुह्यक	१ ११	गोकर्ण.	{	१५ १०
	{	४ २९	गुह्यकेश्वर.	१	७१		{	१६ ८३
	{	१८ १९	गूड	४१ ८९	गोकर्णी	१४ ८४
	{	१८ ८५	गूडपाद	८ ७	गोकुल	१९ ५८
गुण	१९ २८	गूडपुरुष	१८ १३	गोक्षुरक	१४ ९९
	{	२० २७	गूय	१६ ६८	गोचर	५ ८
	{	२३ ४७	गून	२१ ९६	गोजिहा	१४ ११०
गुटवृक्षक.	१०	१२	गृजन	१४ १४८	गोडुंवा	१४ १५६
गुणित	२१ ८८	गृध्र	२१ २२	गोंड	२५ १८
गुठित	२१ ८९	गृध्र	१५ २१			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
गोत्र ...	{	१३ १	गोमिन्	१९	५८	गौरी.	{	१ ३८
		१७ १	गोरस	१९	५३			१६ ८
		२३ १८०	गोर्द	१६	६५	गौडीन	११	१३
गोत्रभिद्	१	४५	गोल	२५	२०	ग्रंथ	२३	१७९
गोत्रा.	{	११ ३	गोलक	१६	२६	ग्रंथि	१४	१६२
		१९ ६०	गोला	१९	१०८	ग्रंथिक	१९	११०
गोदारण	१९	१४	गोलीड	१४	३९	ग्रंथित	२१	८६
गोटुह्.	{	१९ ५७				ग्रंथिपर्ण	१४	१३२
		२३ १३०	गोलोमी.	{	१४ १०२	ग्रंथिल.	{	१४ ३७
गोधन	१९	५८			१९ १११			१४ ७७
गोधा	१८	८४	गोवन्दनी	१४	५५	ग्रस्त.	{	६ २०
गोधापदी	१४	११९	गोविड् ...	१९	५०			२१ १११
गोधी	१६	९२	गोविन्द.	{	१ १९	ग्रह.	{	४ ९
गोधिका	१०	२२			२३ ९१			२२ ८
गोधिकात्मज.	१५	६	गोशाल ...	२५	४०			२३ २३७
गोधम	१९	१८	गोशीर्ष	१६	१३१	ग्रहणीरुज्.	१६	५५
गोनर्द	१४	१३२	गोष्ठ	११	१३	ग्रहपति	३	३०
गोनस	८	४	गोष्ठपति	२३	१३०	ग्रहीट	२१	२७
			गोठी	१७	१५	ग्राम.	{	१२ १९
गोप.	{	१८ ७	गोठीन	१४	१३			२३ १४१
		१९ ५७	गोष्पद	२३	९४	ग्रामणी	२३	४९
		२३ १३०	गोसंख्य	१९	५७	ग्रामतक्ष	२०	९
गोपति	१९	६२	गोस्तन	१६	१०५	ग्रामता	२२	४३
गोपरस	१९	१०४	गोस्तनी	१४	१०७	ग्रामाधीन.	२०	९
गोपानसी	१२	१५	गोस्थानक.	११	१३	ग्रामांत	१२	२०
गोपायित	२१	१०६	गौतम	१	१५	ग्रामीणा ...	१४	९४
गोपाल	१९	५७	गौधार	१५	६	ग्राम्य	६	१९
गोपी	१४	११२	गौधेय	१५	६	ग्राम्यधर्म.	१७	५७
			गौधेर	१५	६			
गोपुर.	{	१२ १६				ग्रावन्.	{	१३ १
		१४ १३२						१३ ४
		२३ १८२						२३ १०६
गोप्यक	२०	१७	गौर.	{	५ १३	ग्रास	१९	५४
गोमत	१९	५८			५ १४			
गोमय	१९	५०			२३ १८९	ग्राह.	{	१० २१
गोमायु	१५	५	गौरव	१७	३४			२२ ८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
माहिन्	१४	२१	घातुक. {	२१	२८	चक्रकारक.	१४	१२९
ग्रीवा	१६	८८		२१	४७	चक्रपाणि.	१	२०
ग्रीष्म	४	१८	घास ...	१४	१६७	चक्रमर्दक.	१४	१४७
वैवेयक	१६	१०४	घुटिका	१६	७२	चक्रयान.	१८	५१
लस्त	२१	१११	घुण	२५	१८	चक्रला....	१४	१६०
लह	२०	४५	घूर्णित	२१	३२	चक्रवर्तिन्.	१८	२
लान	१६	५८	घृणा. {	७	१८	चक्रवर्तिनी.	१४	१५३
लासु	१६	५८		२२	३२	चक्रवाक.	१५	२२
ली	३	१४		२३	५१			
घ.			घृणि	३	३३	चक्रवाल. {	३	६
घट	१९	३२	घृत. {	१९	५२		१३	६५
घटना	१८	१०७		२३	७६	चक्रांग	१५	२३
घटा	१८	१०७	घृष्टि	१५	२	चक्रांगी	१८	८६
घटीयंत्र	२०	२७	घोटक	१८	४३	चक्रिन्	८	७
घंटा	१४	३९	घोणा ...	१६	८९	चक्रीवत्....	१९	७७
घंटापथ	११	१८	घोणिन्	१५	२	चक्षुःश्रवस्.	८	७
घंटापाटलि.	१४	३९	घोंटा. {	१४	३७	चक्षुष्.	१६	९३
घंटारवा	१४	१०७		१४	१६९	चक्षुष्या	१९	१०२
	३	७	घोर	७	२०	चंचल	२१	७५
	७	४	घोष	१२	२०	चंचला	३	९
घन. {	७	९	घोषक	१४	११७			
	१८	९१	घोषणा	६	१२	चंचु. {	१४	५१
	२१	६६	घ्राण	१६	८९		१५	३६
	२३	११०	घ्राणतर्पण.	५	११	चटक	११	१८
घनरस	१०	५	घ्रात	२१	९०	चटका	१५	१८
घनसार ...	१६	१३०	घ.			चटिकाशिरस्.	१९	११०
घनाघन	२३	११०	च {	२३	२४२	चणक	१९	१८
घर्म {	७	३३		२४	५	चंड ...	२१	३२
	२३	१४२	चकोरक....	१५	३५	चंडा	१४	१२८
घस्मर	२१	२०		१	२९	चंडांशु	३	३१
घघ	४	२		१०	७	चंडांत	१४	७६
घाटा	१६	८८	चक्र. {	१५	२२	चंडांतक ...	१६	११९
घांटिक	१८	९७		१८	५६	चंडाल. {	२०	४
घात	१८	११५		१८	७८		२०	१९
				२३	१८१	चंडालवल्लकी.	२०	६२

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
चंडिका	१	३९	चमसी	२५	१०	चलाचल.	२१	७४
चतुःशाल.	१२	६	चमू....	{	१८ ७८	चालित.	{	१८ ९६
चतुर	२०	१९			१८ ८१			२१ ८७
चतुरंगुल....	१४	२३	चमूर	१५	९	चविका	१४	९८
चतुरानन.	१	१६	चंपक	१४	६३	चव्य	१४	९८
चतुर्भद्र	१७	५८	चय.	{	१२ ३	चषक	२०	४३
चतुर्भुज....	१	२०			१५ ४०	चपाल	१७	१८
चतुर्वर्ग	१७	५८	चर.	{	१८ १३	चाक्रिक	१८	९७
चतुष्पथ....	११	१७			२१ ७४	चांगेरी	१४	१४०
चतुर्हायणी.	१९	६८	चरक	२५	३३	चाटकर ...	१५	१८
चत्तर.	{	१३ १३	चरण	१६	७१	चांडाल	२०	२०
		१७ १८	चरणायुध.	१५	१७	चांडालिका.	२०	३२
चन	२४	३	चरम	२१	८१	चातक	१५	१७
चंदन ...	१६	१३१	चरमक्षमाभृत्.	१३	२	चातुर्वर्ण्य.	१७	२
चंद....	{	३ १३	चराचर	२१	७४	चाप	१८	८३
		१४ १४६	चरिष्णु	२१	७४	चामर	१८	३१
		२३ १८२	चरु	१७	२२	चामीकर.	१९	४५
चंद्रक	१५	३१	चर्चरी	२५	१०	चांपेय.	{	१४ ६३
चंद्रभागा.	१०	३४	चर्चा.	{	५ २			१४ ६५
चंद्रमसू	३	१३			१६ १२२	चार.	{	१८ १३
चंद्रवाला.	१४	१२५	चर्मन्.	{	१७ ४७			२२ १४
चंद्रशेखर.	१	३२			१८ ९०	चारटी ...	१४	१४६
चंद्रसंज्ञ	१६	१३०	चर्मकपा	१४	१४३	चारण	२०	१२
चंद्रहास	१८	८९	चर्मकार	२०	७	चारु	२१	५२
चंद्रिका	३	१६	चर्मप्रभेदिका.	२०	३५	चारिचक्य.	१६	१२२
	{	१ ६८	चर्मप्रसेविका.	२०	३३	चालनी	१९	२६
चपल.	{	१९ ९९	चर्मिन्.	{	१४ ४६	चाप ...	१५	१६
		२१ ४३			१८ ७१	चिकित्सक.	१६	५७
चपला.	{	३ ९	चर्या	१७	३६	चिकित्सा.	१६	५०
		१४ ९६	चर्वित	२१	११०	चिकुर.	{	१६ ९५
चपेट	१६	८४	चल	२१	७४			२१ ४६
चमर	१५	१०	चलदल	१४	२०	चिक्कण	१९	४६
चमरिक	१४	२२	चलन	२१	७४	चिक्कस	२५	३५
चमस ...	२५	३५						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
चचा	१४	४३	चिरस्य	२४	१	चेतस्	४	३१
चित्. {	५	१	चिराय	२४	१	चैत्य	१२	७
	२४	३	चिरिंटी	१६	९	चैत्र	४	१५
चिता	१८	११७	चिरिविल्व.	१४	४७	चैत्ररथ	१	७३
चिति	१८	११७	चिलिचिम.	१०	१८	चैत्रिक	४	१५
चित्त	४	३१	चिल्ल. {	१५	२१	चैल. {	१६	११५
चित्तविभ्रम.	७	२६		१६	६०		२३	२०२
चित्तसमुन्नति.	७	२२	चिह्न	३	१७	चोच. {	१४	१३४
चित्ताभोग.	५	२	चीन	१५	९		२३	३०
चित्या	१८	११७	चीर	२५	३१	चोरपुष्पी.	१४	१२६
चित्र. {	५	१७	चीरी	१५	२८	चोल	१६	११८
	७	१९	चीवर	२५	३१	चौर	२०	२४
	२३	१७८		१४	१४१	चौरिका	२०	२५
चित्रक. {	१४	५१	चुक्र. {	१९	३५	चौर्य	२०	२५
	१४	८०		२५	२०	च्युत ...	२१	१०४
	१६	१२३	चुक्रिका	१४	१४०	छ.		
चित्रकर	२०	७	चुल	१६	६०	छगलक	१९	७६
चित्रकृत	१४	२७	चुलि	१९	२९	छगलांत्री	१४	१३७
चित्रतंडुला.	१४	१०६	चूचक	१६	७७	छत्र	१८	३२
चित्रपर्णी	१४	९२	चूडा. {	१५	३१		१४	१०५
	१	५९		१६	९७	छत्रा. {	१४	१६७
चित्रभानु {	३	३०	चूडामणि.	१६	१०२		१९	३७
	२३	१०५	चूडाला	१४	१६०	छत्राकी ...	१४	११५
चित्रशिखंडिज.	३	२४	चूत	१४	३३	छद. {	१४	१४
चित्रशिखंडिन्.	३	२७	चूर्ण. {	१६	१३४		१५	३६
	१४	८७		१८	९९	छदन ...	१४	१४
चित्रा. {	१४	१५६	चूर्णकुंतल.	१६	९६	छदिस् ...	१२	१४
चिता	७	२९	चूर्णि	२५	९	छन्नन्	७	३०
चपिटक.	१९	४७	चूलिका	१८	३८	छंद. {	२२	२०
चवुक	१६	९०	चेटक	२०	१७		२३	८८
चक्रकिय.	२१	१७	चेत्	२४	१२	छंदस्. {	१७	२२
चरंतन	२१	७७	चेतकी	१४	५९		२३	२३३
चरप्रसूता.	१९	७१	चेतन	४	३०	छन्न. {	१८	२२
चररात्राय.	२४	१	चेतना	५	१		२१	९८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
छल	१८ १०८	जघन्यज.	{	१६ ४३	जनश्रुति....	६	७
छवि.	{	३ १७		{	२० १	जनार्दन	१	१९
	{	३ ३४	जंगम	२१	७४	जनाश्रय....	१२	९
छाग	१९ ७६	जंगमेतर....	२१	७३	जनि	४ ३०
छागी	१९ ७६	जंघा	१६ ७२	जनी.	{	१४ १५३
छात.	{	१६ ४४	जंघाकारिक.	१८	७३		{	१६ ९
	{	२१ १०३	जंघाल	१८ ७३	जनुस्	४ ३०
छात्र	१७ ११		{	१४ ११	जंतु	४ ३०
छादित	२१ ९८	जटा.	{	१६ ९७	जंतुफल....	१४	२२
छांदस	१७ ६		{	२३ ३८	जन्मन्	४ ३०
छाया	२३ १५७	जटाजूट....	१	३७	जन्मिन्	४ ३०
छित	२१ १०३	जटामांसी.	१४	१३४	जन्म.	{	१७ ५८
छिद्र	८ २	जटिन्	१४ ३२		{	१८ १०३
छिद्रित	२१ ९९	जटिला	१४ १३४		{	२३ १५९
छिन्न	...	२१ १०३		{	१६ ७७	जन्मु	४ ३०
छिन्नरहा	...	१४ ८२	जठर.	{	२१ ७६	जप	१७ ४७
छुरिका	१८ ९२		{	२३ १८९	जपापुष्प....	१४	७६
छेक	१५ ४३	जट.	{	३ १९	जंपती	१६ ३८
छेदन	२२ ७		{	२१ ३८	जंबाल	१० ९
ज.			जडुल	१६ ४९	जंबीर.	{	१४ २४
जगत.	{	११ ६	जतु	...	१६ १२५		{	१४ ७९
	{	२३ ८०	जतुक	...	१९ ४०	जंबु	१४ १९
जगती.	{	११ ६	जतुका	...	१५ २६	जंबुक.	{	१५ ५
	{	२३ ७१	जतुकृत	१४ १५३		{	२३ ३
जगत्माण.	१	६५	जतूका	...	१४ १५३	जंबू	१४ १९
जगर	१८ ६४	जत्रु	...	१६ ७८	जंभ	१४ २४
जगल	२० ४२	जनक	१६ २८	जंभभेदिन्.	१	४६
जग्घ	२१ १११	जनंगम	२० १९	जंभल	१४ २४
जग्घि	१९ ५५	जनता	२२ ४३	जंभीर	१४ २४
जघन	१६ ७४	जनन.	{	४ ३०	जय.	{	१४ ६६
जघनेफला.	१४	६१		{	१७ १		{	१८ ११०
जघन्य.	{	२१ ८१	जननी	१६ २९		{	२३ १२
	{	२३ १५९	जनपद	११ ८	जयन	२३ १२
			जनयित्री.	१६	२९	जयंत	१ ४९

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
नयंती ...	१४	६५	जवनिका.	१६	१२०	जार	१६	३५
नया	१४	६५	जहुतनया.	१०	३१	जाल. {	१०	१६
नय्य	१८	७४	जागरा	२२	१९	{	२३	२००
नरण	१९	३६	जागरित्	२१	३२	जालक	१४	१६
नरत्	१६	४२	जागरूक-	२१	३२	जालिका....	२०	१४
नरद्वय	१९	६१	जागर्या	२२	१९	जाली	१४	११८
नरा	१६	४१	जांगुलिक.	१०	११	जाल्म. {	२०	१६
नरायु	१६	३८	जाधिक	१८	७३	{	२१	१७
नरायुज	२१	५०	जात. {	४	३१	जिघत्सु	२१	२०
नल	१०	३	{	२३	८४	जिगी	१४	९०
नलजंतु ...	१०	२०	जातरूप....	१९	९५	जित्तर	१८	७७
नलधर	३	७	जातवेदस्.	१	५६	जिन	१	१३
नलनिधि.	१०	२	जातापत्या.	१६	१६	जिष्णु. {	१	४५
नलनिर्गम.	१०	७	जाति. {	४	३१	{	१८	७७
नलनीली.	१०	३८	{	१४	७२	जिह्म. {	२१	७१
नलपुष्प....	२५	२३	{	२३	६८	{	२३	१४१
नलप्राय	११	१०	जाती	१४	१९	जिह्मग	८	८
नलमुक्	३	७	जातीकोश.	१६	१३२	जिह्वा	१६	९१
नलव्याल.	८	५	जातीफल.	१६	१३२	जीन	१६	४२
नलशायिन्.	१	२३	जातु	२४	४	जीमूत. {	३	७
नलशक्ति.	१०	२३	जातुष	२०	२९	{	१४	६९
नलधार....	१०	२५	जातोक्ष	१९	६१	{	२३	५८
नलाशय- {	१०	२५	जानु	१६	७२	जीरक	१९	३६
{	१४	१६४	जाबाल	२०	११	जीर्ण	१६	४२
जलोच्छ्वास.	१०	१०	जामातु ...	१६	३२	जीर्णवस्त्र.	१६	११५
जलौकस्.	१०	२२	जामि	२३	१४२	जीर्णि	२२	९
जलौका	१०	२२	जांबव ...	१४	१९	जीव.... {	३	२४
जल्पाक	२१	३६	जांबूनद्	१९	९५	{	१८	११९
जल्पित	२१	१०७	जायक	१६	१२५	जीवक. {	१४	४४
जव. {	१	६८	जाया	१६	६	{	१४	१४२
{	१८	७३	जायाजीव.	२०	१२	जीवंजीव.	१५	३५
{	१८	४५	जायापती.	१६	३८	जीवन. {	१०	३
जवन. {	१८	७३	जायु	१६	५०	{	१९	१
{	२२	३९				जीवनी	१४	१४२

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
जीवनीया.	१४	१४२	ज्ञात	२१	३०	ज्ञातुक	१४	४०
जीवनौषध.	१८	१२०	ज्ञातेय	१६	३५	झिंटी. {	१४	७४
जीवंतिका. {	१४	८२	ज्ञान	५	६	झिंटी. {	१४	७५
	१४	८३	ज्ञानिन्	१८	१४		१५	२८
जीवन्ती.	१४	१४२	ज्या. {	११	२	झिरुका	१५	२८
जीवा	१४	१४२		१८	८५	ट.		
जीवात	१८	१२०	ज्याघातवारण.	१८	८४	टंक. {	२०	३४
जीवांतक.	२०	१४	ज्यानि	२२	९		२५	३३
जीविका.	१९	१	ज्यायस्. {	१६	४३	टिट्टिभ	१५	३५
जीवितकाल	१८	१२०		२३	२३६	टीका	२५	७
जगुप्सा	६	३	ज्येष्ठ. {	४	१६	टुटुक	१४	५६
जुंग	१४	१३७		२३	४१	ड.		
जुहू	१७	२५	ज्योतिर्गण.	१५	२८	डमर	२२	१४
जुति	२२	३९	ज्योतिषिक.	१८	१४	डमरु	७	८
जुर्ति	२२	३९	ज्योतिष्मती.	१४	१५०	डयन	१८	५२
जुंभ	७	३५	ज्योतिस्	२३	२३१	डहु	१४	६०
जुभग	७	३५	ज्योत्स्ना ...	३	१६	डिंडिम ...	७	८
जल. {	१८	७४	ज्योत्स्नी	४	५	डिंडीर	१९	१०५
	१८	७७	ज्वर. {	१६	५६	डिंव	२२	१४
जेमन	१९	५६		२२	३९	डिंभ. {	१५	३८
जेय	१८	७४	ज्वलन	१	५६		२३	१३४
जैत्र	१८	७४	ज्वाल	१	६०	डिंभा	१६	४१
जैवातक. {	३	१४	झ.			डुंडुभ	८	५
	२१	६	झंझावात.	१	६६	डलि	१०	२४
	२३	११	झटामला.	१४	१२७	ढ.		
जांगक ...	१६	१२६	झटिति	२४	२	ढक्का	७	६
जोषम्	२३	२५२	झर	१३	५	त.		
ज्ञ	१७	५	झर्झर ...	७	८	तक्र	१९	५३
ज्ञपित ...	२१	९८	झली	२५	१०	तक्षक	२३	४
ज्ञप्त	२१	९८	ज्ञप ...	१०	१७	तक्षन्	२०	९
ज्ञप्ति ...	५	१	ज्ञषा	१४	११७	तट	१०	७
ज्ञातसिद्धांत.	१८	१५	ज्ञाटल	१४	३९	तटिनी	१०	३०
ज्ञाति	१६	३४	ज्ञाटलि	२५	३८	तडाग	१०	२८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
डित् ...	३	९	तंत्र	२३	१८४	तरपण्य	१०	११
डित्स्वत्	३	७	तंत्रक	१६	११२	तरल. {	१६	१०२
डक	२५	३३	तंत्रिका	१४	८२	{	२१	७५
डल ...	१४	१०६	तंत्री. {	७	३७	तरला	१९	५०
डलीय	१४	१३६	{	२३	१७६	तरस. {	१	६७
ड... {	७	४	तप	४	१९	{	१८	१०२
{	२१	८६	तपःक्लेशसह. १७	४३	तरस	१६	६३	
डस्	२४	३	तपन. {	३	३१	तरस्विन्. {	१६	७३
डकाल	१८	२९	{	९	१	{	२३	१२८
डव	७	९	तपनीय	१९	९४	तरि	१०	१०
डपर ...	२१	९	तपस्. {	४	१५	तरु	१४	५
डा	२४	९	{	२३	२३३	तरुण ...	१६	४२
डागत ...	१	१३	तपस्य	४	१५	तरुणी	१६	८
ड्य	६	२२	तपस्विन् ...	१७	४२	तर्क	५	३
डइ	२४	३	तपस्विनी. १४	१३४	तर्कविद्या. ६	५		
डदा	२४	२२	तम	३	२६	तर्कारी	१४	६५
डदास्व	१८	२९	{	४	२९	तर्जनी	१६	८१
डदानीम्	२४	२२	तमस्. {	८	३	तर्णक	१९	६१
डनय	१६	२७	{	२३	२३२	तर्हू	१९	३४
{	१६	७१	तमस्विनी	४	४	तर्पण. {	१७	१४
{	२१	६१	तमाल. {	१४	६८	{	१९	५६
{	२१	६६	{	२५	३३	{	२२	४
{	२३	११३	तमालपत्र. १६	१२३	तर्मन्	१७	१९	
डनुत्र ...	१८	६४	तमिस्व ...	८	३	तर्ष. {	७	२८
डन् ...	१६	७१	तमिस्वा	४	४	{	१९	५५
डनुकृत	२१	९९	तमी	४	५	तल. {	१८	८४
डनुनाद्. १	५६		तमोनुद्	२३	८९	{	२३	२०२
डनुग्रह. {	१५	३६	तमोपह	२३	२३९	तलिन	२३	१२७
{	१६	९९	तरक्षु	१५	१	तल्प	२३	१३१
{	१६	१७	तरंग	१०	५	तल्लज	४	२७
{	२०	२८	तरंगिणी	१०	३०	तष्ट	२१	९९
डनुम ...	१९	१७	तरणि. {	३	३०	तस्कार	२०	२४
डनुवाय. {	१५	१३	{	१०	१०	तांडव. {	७	१०
{	२०	६	{	१४	७३	{	२५	३४

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
तात	१६	२८	ताली {	१४	१२७	तिलक. {	१४	४०
तांत्रिक	१८	१५	{	१४	१७०	{	१६	४९
तापस	१७	४२	तालु	१६	९१	{	१६	६५
तापसतरु. १४	४६		तावत् ...	२३	२४७	{	१६	१२३
तापिच्छ	१४	६८	तिक्त	५	९	{	१९	४३
तामरस	१०	४०	तिक्तक. १४	१५५	तिलकालक. १६	४९		
तामलकी. १४	१२७		तिक्तशाक. १४	२५	तिलपर्णी. १६	१३२		
तामसी ...	४	५	तिग्म ...	३	३५	तिलपिंज. १९	१९	
तांबूलवल्ली. १४	१२०		तिङ्सुबंतचय. ६	२	तिलपेज	१९	१९	
तांबूली	१४	१२०	तित्तु	१९	२६	तिलित्स	८	५
ताम्रक	१९	९७	तितिक्षा	७	२४	तिल्य	१९	७
ताम्रकर्णी. ३	५		तितिक्षु	२१	३१	तिल्व	१४	३३
ताम्रकुट्टक. २०	८		तित्तिरि	१५	३५	तिष्य. {	३	२२
ताम्रचूड. १५	१७		तिथि	४	१	{	२३	१४७
तार. {	७	२	तिनिश	१४	२६	तिष्यफला. १४	५७	
{	२३	१६६	तिंतिडी ...	१४	४३	तीक्ष्ण. {	३	३५
तारकजित्. १	४२		तिंतिडीक. १९	३५	{	१९	९८	
तारका. {	३	२१	तिंदुक	१४	३८	{	२३	५३
{	१६	९२	तिंदुकी	२५	८	तीक्ष्णगंधक. १४	३१	
तारा	३	२१	तिमि	१०	१९	तीर	१०	७
तारुण्य	१६	४०	तिमिगिल. १०	२०	तीर्थ. {	१७	५१	
तार्क्ष्य. {	१	३१	तिमित	२१	१०५	{	२३	८६
{	२३	१४५	तिमिर	८	३	तीव्र	१	७०
तार्क्ष्यशैल. १९	१०२		तिरम्. {	२३	२५७	तीव्रवेदना. ९	३	
{	७	९	{	२४	६	तु. {	२३	२४३
{	१४	१६८	तिरस्करिणी. १६	१२०	{	२४	५	
ताल. {	१६	८३	तिरस्क्रिया. ७	२२	{	१४	२५	
{	१९	१०३	तिरीट. {	१४	३३	तुंग.... {	२१	७०
तालपत्र. १६	१०३		{	२५	३०	{	१४	१३९
तालपर्णी. १४	१२३		तिरोधान....	३	१३	तुच्छ	२१	५६
तालमूलिका. १४	११९		तिरोहित....	१८	११२	तुंड	१६	८९
तालवृंतक. १६	१४०		तिर्यच्	२१	३४	तुंडिकेरी. {	१४	११६
तालांक	१	२५				{	१४	१३९
						तुंडी	१	४३

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
न्या.	{	१४ ९५	तूण	१८ ८८	तेजित	२१ ९१
न्याजन.		१४ १२५	तूणी	१८ ८९	तेम	२२ २९
द	१६ ७७	तूणीर	१८ ८८	तेमन	१९ ४४
परिमृज.	२०	१८	तूद	१४ ४१	तैजस	१९ ९९
दन्	१६ ४४	तूर्ण	१ ६८	तैजसावर्तनी.	२०	३३
दिभ.	{	१६ ४४	तूल.	{	१४ ४२	तैत्तिर	१५ ४३
		१६ ६१			१९ १०६	तैलपर्णिक.	१६	१३१
दिल.	{	१६ ४४	तूलिका	२० ३३	तैलपाथिका.	१५	२६
		१६ ६१	तूवर	२३ १६५	तैलपाता....	२५	६
त्र	१४ १२७	तूणीशिल.	२१	३९	तैलीन	१९ ७
त्रवाय	२० ६	तूणीक	२१ ३९	तैष	४ १५
मुल	१८ १०६	तूणीकाम्.	२४	९	तोक	१६ २८
वी	१४ १५६	तूणीम्	...	२४ ९	तोकक	१५ १७
ग	१८ ४३	तृण	१४ १६७	तोकम	१९ १६
ग	१८ ४३	तृणद्रुम	१४ १७०	तोटक	२५ ३०
गम	१८ ४३	तृणधान्य....	१९	२५	तोत्र.	{	१८ ४१
गवदन....	१	७४	तृणध्वज....	१४	१६०			१९ १२
साहा	...	१ ४७	तृणराज....	१४	१६८	तोदन	१९ १२
धक्	१६ १२८	तृणशून्य....	१४	६९	तोमर	...	१८ ९३
डा	१९ ८७	तृण्या	१४ १६८	तोय	१० ४
लाकोटि.	१६	१०९	तृतीयाकृत.	१९	९	तोयपिप्पली.	१४	१११
लामान....	१९	८५	तृतीयाप्रकृति.	१६	३९	तोरण	१२ १६
ल्य	२० ३७	तृप्त	२१ १०३	तौर्यत्रिक....	७	१०
ल्यपान....	१९	५५	तृप्ति	१९ ५६	स्थक्त	२१ १०७
ल्वर	५ ९	तृष्.	{	७ २७	त्याग	१७ २९
ल्वरिका....	१४	१३१			१९ ५५	त्रपा	७ २३
ल्व.	{	१४ ५८	तृष्णक	२१ २२	त्रपु	१९ १०५
		१९ २२	तृष्णा	२३ ५१	त्रयी	६ ३
ल्वार.	{	३ १८	तेज	...	१८ २०	त्रस	२१ ७४
		३ १९	तेजन	१४ १६१	त्रसर	२२ २४
ल्वित	१ १०	तेजनक	१४ १६२	त्रस्त	२१ २६
ल्विन	३ १८	तेजनी	१४ ८३	त्राण.	{	२१ १०६
			तेजस्.	{	१६ ६२			२२ ८
					२३ २३५			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
त्रात	२१ १०६	त्रिभृता	१४ १०८	द.		
त्रापुष	२० २९	त्रिसंध्य	४ ३	दंश	१५ २७
त्रायंती	१४ १५०	त्रिसीत्य	१९ ९	दंशन	१८ ६४
त्राचमाणा.	१४	१५०	त्रिद्योतस्	१० ३१	दंशित	१८ ६५
त्रास	७ २१	त्रिहल्य	१९ ९	दंशी	१५ २७
त्रिक.	{	७ १०	त्रिहायणी.	१९	६८	दंष्ट्रिन्	१५ २
		१६ ७६				दक्ष	२० १९
त्रिककुह	१३ २	त्रुटि.	{	१४ १२५	दक्षिण	२१ ८
त्रिकटु	१९ १११			२१ ६२	दक्षिणस्थ.	१८	६०
त्रिका	१० २७			२३ ३७	दक्षिणा	३ १
त्रिकट	१३ २	त्रेता.	{	१७ २०	दक्षिणाग्नि.	१७	१९
त्रिखट्ट	२५ ४१			२३ ६९	दक्षिणारु.	२०	२४
त्रिखट्टी	२५ ४१	त्रोटि	१५ ३६	दक्षिणार्ह.	२१	५
त्रिगुणाकृत.	१९	९	त्र्यंबक	१ ३५	दक्षिणीय.	२१	५
त्रितक्ष	२५ ४१	त्र्यंबकसख.	१	७१	दक्षिणैर्मन्.	२०	२४
त्रितक्षी	२५ ४१	त्र्युषण	१९ १११	दक्षिण्य	२१ ५
त्रिदश	१ ७	त्व	२१ ८२	दग्ध	२१ ९९
त्रिदशालय.	१	६	त्वक्षीरो.	१९	१०९	दग्धिका	१९ ४९
त्रिदिव	१ ६	त्वक्पत्र	१४ १३४			
त्रिदिवेश	१ ७	त्वक्सार	१४ १६०			
त्रिपथगा	१० ३१	त्वच्.	{	१४ १२	दंड....	{	३ ३१
					१६ ६२			१८ २०
त्रिपुटा.	{	१४ १०८	त्वच	१४ १३४			१८ २१
		१४ १२५	त्वचिस्तार.	१४	१६०			२३ ४२
त्रिपुरांतक.	१	३५	त्वरा	२२ २६	दंडधर	१ ६२
त्रिफला	१९ १११	त्वरित.	{	१ ६८	दंडनीति	६ ५
त्रिभंडी	१४ १०८			१८ ७३	दंडविष्कंभ.	१९	७४
त्रियामा	४ ४	त्वरितोदित.	६	२०	दंडाहत	१९ ५३
त्रिलोचन.	१	३४	त्वष्ट	२१ ९९	दद्रुघ्न	१४ १४७
						दद्रुण	१६ ५९
त्रिवर्ग.	{	१७ ५८	त्वष्टृ.	{	२० ९	दद्रुरोगिन्.	१६	५९
		१८ १९			२३ ३५	दधित्य	१४ २१
त्रिविक्रम.	१	२०	त्विष्.	{	३ ३४	दधिफल	१४ २१
त्रिविष्टप	१ ६			२३ २२५	दधिसक्तु.	१९	४८
त्रिवृत्	१४ १०८	त्विषांपति.	३	३०	दनुज	१ १२
			त्सर	१८ ९०			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
दन्त	...	१६ ९१	दवीकर	८ ८	दानवारि	...	१ ९
दन्तधावन.		१४ ४९	दर्श....	{	४ ८	दानशौड.		२१ ६
दन्तभाग	...	१८ ४०			१७ ४८	दांत.	{	१७ ४३
दन्तशठ.	{	१४ २१	दर्शन	२२ ३१			२१ ९७
		१४ २४	दल	१४ १४	दांति	२२ ३
दन्तशठा	१४ १४०	दव	२३ २०६	दापित	२१ ४०
दावल	१८ ३४	दविष्ठ	२१ ६९	दाम	१९ ७३
दातिका	...	१४ १४४	दवीयस्	२१ ६९	दामनी	१९ ७३
दातिन्	१८ ३४	दशन	१६ ९१	दामोदर	१ १८
दशूक	८ ८	दशनवासस्		१६ ९०	दांभिक	२३ १७
दश	२१ ६१	दशबल	१ १४	दायाद	२३ ८९
दशम....	{	१८ २१	दशमिन्	१६ ४३	दारद	८ ११
		२२ ३	दशमीस्थ.		२३ ८७	दाराः	१६ ६
दशमथ	२२ ३	दशा.	{	१६ ११४	दारित	२१ १००
दशमित	२१ ९७			२३ २१६	दारु.	{	१४ १३
दशमुनस्	१ ५९	दशानीकिनी.		१८ ८१			१४ ५३
दशपती	१६ ३८	दस्यु.	{	१८ ११	दारुण	७ २७
दशम	७ ३०			२० २४	दारुहरिद्रा.		१४ १०२
दशमोली	१ ५०	दस	१ ५४	दारुहस्तक.		१९ ३४
दशम्य	...	१९ ६२	दहन	१ ५८	दारुघाट.		१५ १७
दश्या	७ १८	दाक्षायणो.	{	१ ४०	दाविका	१४ ११९
दश्यालु	२१ १५			३ २१	दावी	१४ १०२
दशयित	...	२१ ५३	दाक्षाय्य	...	१५ २१	दाव	...	२३ २०६
दश....	{	७ २१	दाडिम.	{	१४ ६४	दाविक	१० ३६
		२३ १८४			२५ ४२	दाश	१० १५
दशन्	२५ ९	दाडिमपुष्पक.		१४ ४९	दाशपुर	...	१४ १३१
दशि	...	२१ ४९	दाडिपाता.		२५ ६	दास	२० १७
दशी	१३ ६	दात	२१ १०३	दासी	१४ ७४
दशुर	१० २४	दात्यह	१५ २१	दासीसभ.		२५ २७
दशक	१ २६	दात्र.	१७ १३	दासेय	२० १७
दशग	१६ १४०			१७ २९	दासेर	...	२० १७
दशर्म	१४ १६६	दान.	{	१८ २०	दिगंबर	२१ ३९
दशर्वि	१९ ३४			१८ ३७	दिग्गज	३ ४
			दानव	१ १२			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
दिग्ध.	{	१८ ८८	दीप	१६ १३८	दुर्जन	२१ ४७
दित	२१ १०३	दीपक	२३ ११	दुर्दिन	३ १२
दितिसुत.	१	१२	दीप्ति	३ ३४	दुर्नामक	१६ ५४
दिधिषु	१६ २३	दीप्य	१४ १११	दुर्नामन्	१० २५
दिधिषू	१६ २३	दीर्घ	२१ ६९	दुर्बल	१६ ४४
दिन	४ २	दीर्घकोशिका.	१०	२५	दुर्मनस्	२१ ८
दिनांत	४ ३	दीर्घदर्शिन.	१७	६	दुर्मुख	२१ ३६
दिव.	{	१ ६	दीर्घपृष्ठ	...	८ ८	दुर्वर्ण	१९ ९६
दिवस	४ २	दीर्घवृत्त	१४ ५७	दुर्विध	२१ ४९
दिवस्पति.	१	४५	दीर्घसूत्र	२१ १७	दुर्हृद्	१८ १०
दिवा	२४ ६	दीर्घिका	१० २८	दुःश्रयवन	१ ४७
दिवाकर	३ २८	दुःख.	{	९ ३	दुष्कृत	४ २३
दिवाकीर्ति.	{	२० १०	दुःप्रधर्षिणी.	१४	११४	दुष्ट	२४ १९
दिविषद्	१ ८	दुःपमम्	२४ १४	दुष्पत्र	१४ १२८
दिवौकस्.	{	१ ७	दुःस्पर्श	१४ ९१	दुहित	१६ २८
दिव्यगायन.	२३	१३३	दुःस्पर्शी	१४ ९४	दूत	१८ १६
दिव्योपपादुक.	२१	५०	दुकूल	...	१६ ११३	दूती	१६ १७
दिश्	३ १	दुग्ध	१९ ५१	दूत्य	१८ १६
दिश्य	३ २	दुग्धिका	...	१४ १००	दून	२१ १०२
दिष्ट.	{	४ १	दुद्रुम	...	१४ १४८	दूर	२१ ६८
दिष्टांत	१८ ११६	दुंदुभि.	{	७ ६	दूरदर्शिन.	१७ ६
दिष्ट्या	२४ १०	दुरध्व	११ १६	दूर्वा	१४ १५८
दीक्षांत	१७ २७	दुरालभा	१४ ९२	द्राघिका	१६ ६७
दीक्षित	१७ ८	दुरित	४ २३	द्रुष्य	१६ १२०
दीदिवि	१९ ४८	दुरोदर	२३ १७१	द्रुष्या	१८ ४२
दीधिति	३ ३३	दुर्ग	१८ १७	दृढ.	{	१ ७०
दीन	२१ ४९	दुर्गत	२१ ४९	दृढसंधि	२१ ७५
दीनार	२३ १४	दुर्गति	९ १	दृति	२५ १९
			दुर्गध	५ १२	दृव्य	२१ ८६
			दुर्गसंचर	...	२२ २५	दृश्.	{	१६ ९३
			दुर्गा	१ ३९			२३ २१७

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः		
अद्	१३	४	देवी.	{	७	१३	युग्न	१९	९०
अट	१८	३०		{	१४	८३	यूत	२०	४५
अरजस्	१६	८	देव	१६	३२	यूतकारक.	२०	४४
अंत	२३	६२	देश	११	८	यूतकृत	२०	४४
अ. {	१६	९३	देशरूप	१८	२४	योस्.... {	१	६	
अ. {	२३	३८	देह	१६	७१	योत	३	३४	
अ.	४	९	देहली	१२	१३	द्रप्स	१९	५१	
अ. {	१	७	दैतेय	१	१२	द्रव.... {	७	३२	
अकीर्णन.	१	२१	दैत्य	१	१२	द्रवती ...	१४	८५	
अकुसुम....	१६	१२५	दैत्यगुरु	३	२५		१८	१०२	
अखातक.	१०	२७	दैत्या	१४	१२३	द्रविण. {	१९	९०	
अखातबिल.	१३	६	दैत्यारि	१	१९		२३	५२	
अच्छंद	१६	१०५	दैत्य	२३	१५३		२५	२२	
अजगधक.	१४	१६६	दैर्घ्य	१६	११४	द्रव्य. {	१९	९०	
अयतर	१	५३	दैव.... {	४	२८	द्राक्	२३	१५४		
अयता	१	९		१७	२४	द्राक्षा	१४	१०७		
अयताड	१४	६९	दैवज्ञ	१८	१४	द्राघिष्ठ	२१	११२	
अयत्व	१७	५२	दैवज्ञा	१६	२०	द्राघिडक....	१४	१२५	
अयदाव	१४	५४	दैवत.... {	१	९	हु	१४	५	
अयदचड	२१	३४		४	२१	हुकिलिम....	१४	५३		
अयन. {	२०	४५	दोला.... {	१४	९५	हुघण	१८	९१		
	२३	११७		१८	५३	हुणी	२५	९		
अयवडभ	१४	२५	दोपज्ञ	१७	५		१	६८	
अयभूय	१७	५२	दोषा	२४	६	हुत {	२१	८९	
अयमातृक.	११	१२	दोषैकदृश.	२१	४६			२१	१००	
अययज्ञ	१७	१४	दोस्	१६	८०		२४	२	
अययोनि	१	११	दोहद	७	२७	हुम	१४	५	
अयर	१६	३२	दोहदवती.	१६	२१	हुमामय	१६	१२५		
अयल	२०	११	दुस्	२	२	हुमोत्पल....	१४	६०	
अयशिल्लिपन्.	२३	३५	दुति.... {	३	१७	हुवय	१९	८५		
अयसभा ...	१	५१		३	३४	हुहिण	१	१७		
अयसायुज्य.	१७	५२	दुमणि	३	३०				
अयजीव....	२०	११								

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
द्रोण.	{	१५ १४	द्विरेफ	१५ २९	धन्वयास...	१४	९१
		१९ ८८	द्विष	१८ ११	धान्विन्	१८ ६९
		२३ ४९	द्विपत्	१८ १०	धमन	१४ १६२
द्रोणकाक.		१५ २१	द्विसीत्य	१९ ९	धमानि	१६ ६५
द्रोणक्षीरा.		१९ ७२	द्विहल्य	...	१९ ९	धमनी	...	१४ १३०
द्रोणदुग्धा.		१९ ७२	द्विहायनी...	१९	६८	धम्मिल्ल	१६ ९७
द्रोणी.	{	१० ११	द्वीप	१० ८	धर	१३ १
		१४ ९५	द्वीपवती....	१०	३०	धराणि	११ २
द्रोहचिंतन.		५ ४	द्वीपिन्	१५ १	धरा	११ २
द्रौणिक	१९ १०	द्वेषण	१८ १०	धरित्री	११ २
द्वंद्व...	{	१५ ३८	द्वेष्य	२१ ४५	धर्म....	{	४ २४
		२३ २१२	द्वैध	१८ १८			६ ३
द्वयातिग.		१७ ४५	द्वैप	१८ ५३			२३ १३२
द्वाःस्थ	१८ ६	द्वैमातुर	१ ४१	धर्मचिंता.		७ २८
द्वाःस्थित.		१८ ६	द्व्यष्ट	१९ ९७	धर्मध्वजिन्.	१७	५४
द्वादशांगुल.		१६ ८४	ध.			धर्मपत्तन.	१९	३६
द्वादशात्मन्.		३ २८	धट	२५ १७	धर्मराज	{	१ १३
		५ ३	धत्तूर	१४ ७७			१ ६१
द्वापर.	{	२३ १६२	धन	१९ ९०			२३ ३१
द्वास्	१२ १६	धनंजय	१ ५६	धर्मसंहिता.		६ ६
द्वास्	१२ १६	धनद	१ ७२	धर्षिणी	१६ १०
द्वास्पाल	१८ ६	धनहरी	१४ १२८	धव....	{	१६ ३५
द्विगुणाकृत.		१९ ९	धनाधिप....	१	७२			२३ २०६
द्विज.	{	१५ ३२	धनिन्	२१ १०	धवल	...	५ १३
		२३ ३०	धानिष्ठा	३ २२	धवला	१९ ६७
द्विजराज....		३ १५	धनु	१४ ३५	धवित्र	१७ २३
द्विजा	१४ १२०	धनुःपट....	१४	३५	धातकी.	{	१४ १२४
द्विजाति....		१७ ४	धनुर्धर	१८ ६९			२५ ७
द्विजिह्व	२३ १३३	धनुष्मान्.	१८	६९	धातु.	{	१३ ८
द्वितीया	...	१६ ५	धनुस्	१८ ८३			२३ ६५
द्वितीयाकृत.		१९ ९	धन्य	२१ ३	धातुपुष्पिका.	१४	१२४
द्विप	१८ ३४	धन्व	१८ ८३	धाट	१ १७
द्विपाद्य	१८ २७	धन्वन्	११ ५	धात्री	२३ १७६
द्विरद	१८ ३४				धाना	१९ ४७

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
धुक्	१८	६९	धुरीण	१९	६५	ध्रुव. {	३	२०
ध्व	१९	२१	धुर्य	१९	६५	ध्रुव. {	१४	८
ध्वत्त्वच्.	१९	२२	धूत ...	२१	१०७	ध्रुव. {	२१	७२
ध्याक ...	१९	३८	धूपायित....	२१	१०२	ध्रुवा. {	२३	२११
ध्यांश	२३	४५	धूपित	२१	१०२	ध्रुवा. {	१४	११५
ध्याम्ल.	१९	३९	धूमकेतु	२३	५८	ध्रुवा. {	१७	२५
ध्वन्	२३	१२४	धमयोनि....	३	७	ध्वज	१८	९९
ध्वानि. {	१४	८८	धमल	५	१६	ध्वजिनी	१८	७८
ध्वानि. {	१४	११७	धूम्या	२२	४३	ध्वनि	६	२२
ध्या	१७	२२	धूम्याट	१५	१६	ध्वनित	२१	९४
ध्या	१८	२६	धुम्न	५	१६	ध्वस्त	२१	१०४
ध्या	१८	४९	धूर्जाटि	१	३५	ध्वक्षि. {	१५	२०
ध्वर	३	७	धूर्त. {	१४	७७	ध्वक्षि. {	२३	२२०
ध्वपात.	३	११	धूर्त. {	२०	४४	ध्वान	६	२२
ध्वराष्ट्र....	१५	२४	धूर्त. {	२१	४७	ध्वान्त	८	३
ध्वनी	१४	९३	धूर्त. {	२१	४७	न.		
ध्वन्	२३	२४१	धूर्त. {	२१	४७	न	२४	११
ध्वन्. {	२१	३९	धूर्त. {	२१	४७	नकुलेष्टा....	१४	११५
ध्वन्. {	२१	९४	धूर्त. {	२१	४७	नक्तक	१६	११५
ध्वन्	३	२४	धूर्त. {	२१	४७	नक्तम्	२४	६
ध्वाना	५	१	धूर्त. {	२१	४७	नक्तमाल.	१४	४७
ध्वय	२३	१५५	धूर्त. {	२१	४७	नक्र	१०	२१
ध्वय	५	१	धूर्त. {	२१	४७	नक्षत्र	३	२१
ध्वय	५	८	धूर्त. {	२१	४७	नक्षत्रमाला.	१६	१०६
ध्वय	१७	६	धूर्त. {	२३	१५	नक्षत्रेश	३	१५
ध्वय	१६	१२	धूर्त. {	२३	१५	नख. {	१४	१३०
ध्वय	१६	१२४	धूर्त. {	२३	१५	नख. {	१६	८३
ध्वय	१७	५	धूर्त. {	२३	१५	नखर	१६	८३
ध्वय	१०	१५	धूर्त. {	२३	१५	नग	२३	१९
ध्वय	२२	२५	धूर्त. {	२३	१५	नगरी	१२	१
ध्वय	१८	४	धूर्त. {	२३	१५	नगौकस्	१५	३३
ध्वय	१०	३०	धूर्त. {	२३	१५	नग्न	२१	३३
ध्वय	१८	५५	धूर्त. {	२३	१५	नग्नहु	२०	४२
ध्वय	१९	६५	धूर्त. {	२३	१५	नग्निका	१६	८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
नट	{	१४ ५६ २० १२	नभस्य	४	१७	नवोद्धृत	१९	५२
नटन	७	१०	नभस्वत्	१	६६	नव्य	२१	७७
नटी	१४	१२९	नमस्	२४	१८	नष्ट	१८	११२
नड	{	१४ १६२ १४ १६५ २५ ३३	नमसित	२१	१०१	नष्टचेष्टता.	७	३३
नडप्राय	११	९	नमस्कारी.	१४	१४१	नष्टाग्नि	१७	५३
नडसंहति.	१४	१६८	नमस्या	१८	३५	नष्टेदुकला.	४	९
नड्या	१४	१६८	नमस्त्यत.	२१	१०१	नास्तित	१९	६३
नड्वत्	११	९	नमुचिसदन.	१	४६	नस्योत	१९	६३
नडुल	११	९	नय	२२	९	नाहि	२४	११
नत ...	२१	७१	नयन	१६	९३	ना	२४	११
नतनासिक.	१६	४५	नर	१६	१	नाक. {	१ ६ २ २ २३ २	
नद	२३	५७	नरक	८	१	नाकु	१०	१४
नदी	१०	२९	नरकांतक.	१	२२	नाकुली	१४	११२
नदीमातृक.	११	१२	नरवाहन	१	७२		८ ४ १८ ३४ १९ १० २१ ५९ २३ २१	
नदीसर्ज ...	१४	४५	नर्तक	७	११	नाग.		
नधी	२०	३१	नर्तकी	७	८			
ननांठ	१६	२९	नर्तन	७	१०	नागकेशर.	१४	६५
ननु. {	२३ २४९ २४ १४		नर्मदा	१०	३२	नागजिह्विका.	१९	१०
नंदक	१	३०	नर्मन् ...	७	३२	नागबला....	१४	११
नंदन	१	४८	नलकूबर.	१	७३		{	१९ ३८ २३ १८
नंदिक	१	४३	नलद	१४	१६४	नागर.		
नंदिकेश्वर.	१	४३	नलमीन	१०	१८	नागरंग ...	१४	३८
नंदिवृक्ष	१४	१२८	नलिन	१०	३९	नागलोक.	८	१
नंदावर्त	१२	१०	नलिनी	१०	३९	नागवल्ली	१४	१२
नपुंसक	१६	३९	नली	१४	१२९	नागसंभव.	१९	१०
नपत्री	१६	२९	नल्य	११	१८	नागांतक.	१	३१
नभस्. {	२ १ २३ २३३	१ १६	नव ...	२१	७७	नाट्य	७	१०
नभसंगम.	१५	३४	नवदल	१०	४३	नाडिधम.	२०	८
			नवनीत	१९	५२		{	१६ ६५ १९ २२ २३ ४३
			नवमालिका.	१४	७२			
			नवसूतिका.	१९	७१			
			नवांबर	१६	११२			
			नवीन	२१	७७			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
नाडीव्रण.	१६	५४	नाढ्य	१०	१०	निकृति	७	३०
नाथवत्	२१	१६	नाश	१८	११६	निकृष्ट	२१	५४
नाद	६	२३	नासत्य	१	५४	निकेतन	१२	४
नादेयी. {	१४	३०	नासा. {	१२	१३	निकोचक.	१४	२९
	१४	३८		१६	८९	निक्रण	६	२४
	१४	६५	नासिका.	१६	८९	निक्राण	६	२४
	१४	११८	नास्तिकता.	५	४	निखिल	२१	६५
ना. {	२३	२४८	निःशलाक.	१८	२२	निगड	१८	४१
	२४	३	निःशेष	२१	६५	निगद	२२	१२
नारूप.	२१	९३	निःशोध्य.	२१	५६	निगम. {	१२	१
नीकर....	२१	३८	निःश्रेणि....	१२	१८		२३	१४०
नीवादिन्.	२१	३८	निःश्रेयस.	५	६	निगाद	२९	१२
नित ...	२०	१०	निःषमम्.	२४	१४	निगार	२२	३७
	१८	५६	निःसरण....	१२	१९	निगाल ...	१९	४८
नि. {	२३	१३७	निःस्व ...	२१	४९	निग्रह	२२	१३
	२५	९	निकट	२१	६६	निघ	२२	३६
	२५	२०	निकर	१५	३९	निघास	१९	५६
म. {	६	८	निकर्षण....	१२	१९	निघ्न	२१	१६
	२३	१५२	निकप	२०	३२	निचुल	१४	६१
मधेय....	६	८	निकषा. {	२४	७	निचोल	१६	११६
मन्	६	८		२४	१९	निज ...	२३	३२
य	२२	९	निकषात्मज.	१	६३	नितंब. {	१३	५
यक	२१	११	निकामम्.	१९	५७		१६	७४
यक	९	१	निकाय	१५	४२	नितंबिनी.	१६	३
यद	१	५१	निकाय्य....	१२	५	नितांत	१	७०
याच	१८	८७	निकार. {	२२	१५	नित्य. {	१	६९
याची ...	२०	३२		२२	३६		२१	७२
यायण ...	१	१८	निकारण.	१८	११२	निदाघ. {	४	१९
यायणी.	१४	१०१	निकुंचक.	१९	८८		३३	७२
यी	१६	२	निकुंज	१३	८	निदान ...	४	२८
य. {	१०	४२	निकुंभ	१४	१४४	निदिग्ध	२१	८९
	१९	२२	निकुंरव	१५	४०	निदिग्धिका.	१४	९३
यकेर.	१४	१६८	निकृत. {	२१	४१	निदेश. {	१८	२५
यक	१०	१२		२१	४६		२३	१७९

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
निद्रा	७	३६	नियम. {	५	५	निर्देश	१८	२५
निद्राण	२१	३३		१७	३८	निर्भर. {	१	७०
निद्रालु	२१	३३	नियामक. {	१७	४९		२४	२
निधन. {	१८	११६		१०	१२	निर्मद	१८	३६
	२३	१२३	नियुत	२५	२४	निर्मुक्त	८	३
निधि	१	७५	नियुद्ध	१८	१०६	निर्मोक	८	९
	१७	५७	नियोज्य ...	२०	१७	निर्याण	१८	३८
निधुवन. {	२५	४	निर ...	२३	२५४	निर्यातन.	२३	१२०
	२५	४	निरन्तर	२१	६६	निर्यास....	२३	१५३
निध्यान	२२	३१	निरय	९	१	निर्वपण	१७	३०
निनद	६	२२	निरर्गल	२१	८३	निर्वर्णन	२२	३१
निनाद	६	२२	निरर्थक	२१	८१	निर्वहण	७	१५
निंदा	६	१३	निरवग्रह.	२१	१५	निर्वाण. {	५	६
निप	१९	३२	निरसन ...	२२	३१		२१	९६
निपठ	२२	२९	निरस्त. {	६	२०	निर्वात	२१	९६
निपाठ	२२	२९		१८	८८	निर्वाद. {	६	१३
निपातन.	२२	२७		२१	४०		२३	९०
निपान	१०	२६	निराकारिष्णु.	२१	३०	निर्वापण	१८	११४
निपुण	२२	४	निराकृत....	२१	४०	निर्वार्य	२१	१३
निबंध	१६	५५	निराकृति. {	१७	५४	निर्वासन.	१८	११३
निबंधन	७	७		२२	३१	निर्वृत्त	२१	१००
निबर्हण	१८	११२	निरामय	१६	५७	निर्वेश. {	२०	३९
निभ	२०	३८	निरीश	१९	१३		२२	२०
निभृत	२१	२५	निर्ऋती	९	२		२३	२१५
निमय	१९	८०	निर्गुडी. {	१४	६८	निर्व्यथन ...	८	२
निमित्त	२३	७६		१४	७०	निर्व्यूह	२३	२३७
निमेष	४	११	निर्व्यथन	१८	११३	निर्हार	२२	१७
निम्न	१०	१४	निर्घोष	६	२३	निर्हारिन्	५	११
निम्नगा	१०	३०	निर्जर	१	७	निर्हाद	६	२३
निंब	१४	६२	निर्जितेन्द्रियग्राम १७	४४		निलय	१२	५
निंबतरु	१४	२६	निर्झर	१३	५	निवह	१५	३९
नियति	४	२८	निर्णय ...	५	३	निवात	२३	८४
नियंतृ	१८	५९	निर्णिवत ...	२१	५६	निवाप	१७	३१
			निर्णेजक.	२०	१०			

	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
त.	{	१६ ११३	निष्ठीवन	२२ ३८	नीडोद्भव	१५ ३४		
त		१७ ५०	निष्ठुर. {	६ १९	नीम्र	१२ १४		
त		२१ ८८	निष्ठुर. {	२१ ७६	नीप	१४ ४२		
त		१८ ३३	निष्ठूत	२१ ८७	नीर	१० ४		
त		४ ४	निष्ठूति	२२ ३८	नील	५ १४		
ख्या.		१९ ४१	निष्ठेव	२२ ३८	नीलकंठ. {	१५ ३०		
त		१२ ५	निष्ठेवन	२२ ३८	नीलकंठ. {	२३ ४०		
पति....		३ १४	निष्णात	२१ ४	नीलंगु	१५ १३		
त		२१ ९१	निष्पक्व	२१ ९५	नीललोहित.	१ ३५		
थ		४ ६	निष्पतिसुता.	१६ ११	नीला	१५ २६		
तिथिनी.		४ ४	निष्पन्न	२१ १००	नीलांबर	१ २५		
थ ...		५ ३	निष्पाव	२२ २४	नीलांबुजन्मन्.	१० ३७		
णी		१४ १८	निष्प्रभ	२१ १००	नीलिका	१४ ७०		
ग		१८ ८८	निष्प्रवाणि.	१६ ११२	नीलिनी	१४ ९५		
गिन्		१८ ६९	निसर्ग	७ ३८	नीली	१४ ९४		
या		१२ २	निस्तृष्ट	२१ ८८	नीवाक	२२ २३		
र		१० ९	निस्तल	२१ ६९	नीवार	१९ २५		
थ ...		१३ ३	निस्तर्हण ...	१८ ११४	नीवी. {	१९ ८०		
थ {		७ १	निस्त्रिश ...	१८ ८९	नीवी. {	२३ २१२		
थ {		२० २०	निस्त्राव	१९ ४९	नीश्वत्	११ ८		
थिन्....		१८ ५९	निस्त्रान	६ २३	नीशार	१६ ११८		
थन		१८ ११३	निस्त्रान	६ २३	नीहार	३ १८		
थ ...		२३ १४	निहनन	१८ ११४	नु	२३ २४९		
थला....		१६ २१	निहाका	१० २२	नुति	६ ११		
थसित.		२१ ३९	निहिंसन	१८ ११३	नुत्त	२१ ८७		
थुट		१४ १	निहीन	२० १६	नुन्न	२१ ८७		
थुटि....		१४ १२५	निह्व. {	६ १७	नूतन	२१ ७७		
थुह		१४ १३	निह्व. {	२३ २०८	नूत्न	२१ ७८		
थक्रम		२२ २५	नीकाश	२० ३८	नूनम्. {	२३ २५१		
थ. {		७ १५	नीच. {	२० १६	नूनम्. {	२४ १६		
थ. {		२३ ४१	नीच. {	२१ ७०	नूपुर	१६ १०९		
थान. {		१९ ४४	नीचैस्	२४ १७	नृ	१६ १		
थान. {		२३ ११६	नीड	१५ ३७	नृत्य	७ १०		

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
वृष	१८ १	न्यग्रोधी	१४ ८७	पंकिल	११ १०
वृषलक्ष्मन्.	१८	३२	न्यङ्	२१ ७०	पंकेरुह	१० ४०
वृषसभ	२५ २७	न्यङ्कु	१५ १०	पंक्ति.	{	१४ ४
वृषासन	१८ ३१	न्यस्त	२१ ८८		{	१९ ८४
वृशंस	२१ ४७	न्याद	१९ ५६		{	२३ ७२
वृसेन	२५ ४०	न्याय	१८ २४	पंगु	१६ ४८
नेट	२१ ११	न्याय्य.	{	१८ २५	पचंपचा	१४ १०२
नेत्र.	{	१६ ९३		{	२३ १६१	पचा	२२ ८
	{	२३ १८०	न्यास	१९ ८१	पंचजन	१६ १
नेत्रांबु	१६ ९३	न्युब्ज	...	१६ ६१	पंचता	१८ ११६
नेदिष्ठ	२१ ६८	न्युख	२५ १७	पंचदशी	४ ७
नेपथ्य.	१६ ९९	न्यून	२३ १२८	पंचम	७ १
नेमि.	{	१० २७	प.			पंचलक्षण.	६	५
	{	१८ ५६	पक्रण	...	१२ २०	पंचशर	१ २६
नेमी	१४ २६	पक्र.	{	२१ ९१	पंचशाख....	१६	८१
नैकभेद	२१ ८३		{	२१ ९६	पंचांगुल	१४ ५१
नैगम.	{	१९ ७८	पक्ष.	{	४ १२	पंचास्य	१५ १
	{	२३ १४०		{	१५ ३६	पंजिका	...	२५ ७
नैचिकी	१९ ६७		{	१६ ९८	पट....	{	१४ ३५
नैपाली	१९ १०८		{	१८ ८७		{	१६ ११६
नैमेय	...	१९ ८०	पक्षक	१२ १४	पटच्चर	१६ ११५
नैयग्रोध	१४ १८		{	४ १	पटल.	{	१२ १४
नैर्ऋत.	{	१ ६३	पक्षाति.	{	१५ ३६	{	२३ २०१	
	{	३ २		{	२३ ७२	पटलप्रांत....	१४	१४
नैष्किक	१८ ७	पक्षद्वार	१२ १४	पटवासक.	१६	१३९
नैस्त्रिंशिक.	१८	७०	पक्षभाग....	१८	४०	पटह.	{	७ ६
नौ	२४ ११	पक्षमूल	१५ ३६		{	१८ १०८
नौ	१० १०	पक्षांत	४ ७	पटु.	{	१४ १५५
नौकादंड....	१०	१३	पक्षिन्	१५ ३२		{	२० १९
नौतार्य	...	१० १०	पक्षिणी	४ ५		{	२१ ३५
न्यक्ष	२३ २२५	पक्षमन्	२३ १२१	पटुपर्णी	१४ १३८
न्यग्रोध.	{	१४ ३२	पंक.	{	४ २३	पटोल	१४ १५५
	{	२३ ९६		{	१० ९	पटोलिका.	१४	११८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
ट्ट	२५ १७	पतिवरा	१६ ७	पदाति	१८ ६
ट्टिका	१४ ४१	पतिवर्त्नी....	१६ १२	पदिक	१८ ६७	
ट्टिन्	१४ ४१	पतिव्रता....	१६ ६	पद्म	१८ ६७	
ट्टिश	२५ २१	पत्तन	१२ १	पद्मति	११ १५
ग.	{	१९ ८८	पत्ति.	{	१८ ६६	पद्म.	{	१ ७५
		२० ३९			१८ ८०			१० ३९
		२० ४५			२३ ७२	पद्मक	१८ ३९
		२३ ४६	पत्तिसंहति.	१८ ६७	पद्मचारिणी.	१४ १४६		
गव	७ ८	पत्नी	१६ ५	पद्मनाभ....	१ २०	
गायित....	२१ १०९	पत्र.	{	१४ १४	पद्मपत्र	१४ १४५	
गित			१५ ३६	पद्मराग	१९ ९२	
गितम्			१८ ५८	पद्मा.	{	१ २८	
ट			२३ १७९			१४ ८९	
डित	१७ ५	पत्रपरशु	२० ३३	पद्माकर	१० २८
डितमन्य.	२३ १०३	पत्रपाश्या.	१६ १०३	पद्माट	१४ १४७		
प्य	१९ ८२	पत्ररथ	१५ ३३	पद्मालया....	१ २८	
प्यवीथिका.	१२ २	पत्रलेखा	१६ १२२	पद्मिन्	१८ ३५	
प्या	१४ १५०	पत्रांग.	{	१६ १३२	पद्मिनी	१० ३९
प्याजीव.	१९ ७८	१९ १११			पद्य	२५ ३१	
पतन	१५ ३३	पत्रांगुलि....	१६ ११२	पद्या	११ १५	
पतंग.	{	१५ २८	पत्रिन्.	{	१५ १५	पनस	१४ ६१
		२३ २०			१५ ३३	पनायित	२१ १०९
पतंगिका...	१५ २७	१८ ४७			पनित	२१ १०९	
पतत्	२३ १०६			पन्न	२१ १०४	
पतत्र	१४ ५६	पत्रोर्ण.	{	१६ ११३	पन्नग	८ ८
पतत्रि	१६ ११३			पथिक	१८ १७	पन्नगाशन...
पतत्रिन्	१५ ३३	पथिन्	११ १५	पयस्.	{	१० ३
पतद्ग्रह.	{	१६ १३९	पथ्या	१४ ५९			१९ ५१
		२५ २१	पद्	१६ ७१			२३ २३४
पतयालु	२१ २७	पद	२३ ९३	पयस्य	...	१९ ५१
पताका	१८ ९९	पदग	१८ ६६	पयोधर	२३ १६३
पताकिन्....	१८ ७१	पदवी	११ १५	पर.	{	१० ८	
पति.	{	१६ ३५	पदाजि			१८ ६६	१८ ११
		२१ १०					२३ १९१	

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
परःशत	२१	६४	परिकर्मन्...	१६	१२१	परिवर्ह	२३	२४०
परजात ...	२०	१८	परिक्रम ...	२२	१६	परिभव	७	२२
परतंत्र	२१	१६	परिक्रिया....	२२	२०	परिभाषण.	६	१४
परपिंडाद....	२१	२०	परिक्षित	२१	८८	परिभूत	२१	१०६
परभृत	१५	२०	परिखा	१०	२९	परिमल. {	५	१०
परभृत	१५	१९	परिग्रह	२३	२३८	परिमल. {	२२	१३
परमम्	२४	१२	परिघ. {	१८	९१	परिरंभ	२२	३०
परमान्न	१७	२४	परिघ. {	२३	२७	परिवर्जन....	१८	११४
परमेष्ठिन्....	१	१६	परिघातिन.	१८	९१	परिवादिनी.	७	३
परंपराक....	१७	२६	परिचय	२२	२३	परिवापित.	२१	८५
परवत्	२१	१६	परिचर	१८	६२	परिवित्ति....	१७	५६
परशु	१८	९२	परिचर्या	१७	३५	परिवृढ	२१	११
परश्वध	१८	९२	परिचाय्य....	१७	२०	परिवृत्त	१७	५६
परश्वस्	२४	२२	परिचारक.	२०	१७	परिवेष	३	३२
पराक्रम. {	१८	१०२	परिणत	२१	९६	परिव्याध. {	१४	३०
पराक्रम. {	२३	१३८	परिणय ...	१७	५७	परिव्याध. {	१४	६०
पराग. {	१४	१७	परिणाम ...	२२	१५	परिव्राज्	१७	४२
पराग. {	२३	२१	परिणाय ...	२०	४६	परिषद्	१७	१५
पराङ्मुख.	२१	३३	परिणाह	१६	११४	परिष्कार....	१६	१०१
पराचित	२०	१८	परितस्	२४	१३	परिष्कृत	१६	१००
पराचीन	२१	३३	परित्राण	२२	५	परिष्वंग	२२	३०
पराजय	१८	१११	परिदान	१९	८०	परिसर	११	१४
पराजित....	१८	११२	परिदेवन....	६	१६	परिसर्प	२२	२०
पराधीन ...	२१	१६	परिधान	१६	११७	परिसर्या	२२	२१
परान्न	२१	२०	परिधि. {	३	३२	परिस्कंद....	२०	१८
पराभृत	१८	११२	परिधि. {	२३	९७	परिस्तोम....	१८	४२
परायण	२२	२	परिधिस्थ....	१८	६२	परिस्थंद	१६	१३७
परारि ...	२४	२०	परिपण	१९	८०	परिस्तुत् ...	२०	४१
पराध्य ...	२१	५८	परिपंथिन्....	१८	११	परिस्तुता	२०	४०
परासन	१८	११३	परिपाटी....	१७	३७	परीक्षक	२१	७
परासु ...	१८	११७	परिपूर्णता.	१६	१३७	परीभाव	७	२२
परास्कंदिन्.	२०	२५	परिपेलव....	१४	१३१	परीवर्त	१९	८०
परिकर	२३	१६५	परिप्लव	२१	७५	परीवाद	६	१३

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
पिवाप	२३	१२९	पर्युदंचन.	१९	३	पशुप्रेरण	२२	३९
पिचार	२३	१६९	पर्येषणा	१७	३२	पशुरज्जु	१९	७३
पिवाह	१०	१०	पर्वत	१३	१	पश्चात्	२३	२४४
पिष्टि	१७	३२	पर्वन्. {	१४	१६२	पश्चात्ताप.	७	२५
पिसार	२२	२१	{	२३	१२१	पश्चिम	२१	८१
पिहास	७	३२	पर्वसंधि	४	७	प्रा	३	१
पित्र	२४	२०	पर्शुका	१६	६९	प्राश्चमोत्तर.	११	७
पिप	६	१९	पल. {	१९	८६	पस्त्य	१२	५
पिप्सु	१४	१६२	{	२३	२०२	पांसु	१८	९८
पित	१८	११७	पलगंड	२०	६	पांसुला	१६	११
पितराज्	१	६१	पलंकषा	१४	९८	पाक. {	१५	३८
पिचात्रि	२४	२१	पलल	१६	६३	{	२२	८
पिष्टुका	१९	७०	पलांडु	१४	१४७	पाकल	१४	१२६
पिधित	२०	१८	पलाल	१९	२२	पाकशासन.	१	४४
पिष्णी	१५	२६	{	१४	१४	पाकशासनि.	१	४९
पिटी ...	१४	३२	पलाश. {	१४	२९	पाकस्थान.	१९	२७
पिनी ...	१४	१०२	{	१४	१५४	पाक्य. {	१९	४२
पिन्य	२३	१४६	पलाशिनू....	१४	५	{	१९	१०९
{	१४	१४	पालिक्री	१६	१२	पाखंड	१७	४५
{	१४	२९	पालित	१६	४१	पांचजन्य....	१	२९
{	२५	२२	पाल्यक	१६	१३८	पांचालिका.	२०	२९
पिशाला.	१२	६	पलव	१४	१४	पाट ...	२४	७
पिस	१४	७९	पल्वल	१०	२८	पाटच्चर	२०	२५
पिक	१६	१३८	पव	२२	२४	पाटल. {	५	१५
पिटन	१७	३६	{	१	६६	{	१९	१५
पितभ	११	१४	पवन. {	२२	२४	पाटला. {	१४	२०
{	१७	३७	पवनाशन.	८	८	{	१४	५४
पिय. {	२२	३३	पवमान	१	६६	पाटलि. {	१४	३९
पियस्था.	२२	२१	पावि	१	५०	{	१४	५४
प्याप्त	१९	५७	{	१४	१६६	पाठ. {	१७	१४
प्याप्ति	२२	५	पवित्र. {	१७	४५	{	२२	२९
{	१७	३७	{	२१	५५	पाठा	१४	८४
प्याय. {	२३	१४७	पवित्रक	१०	१६	पाठिन्	१४	८०
प्यायशयन.	२२	३२	पशुपति	१	३२	पाठीन	१०	१८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
पाणि	१६	८१	पाद	२०	३१	पाराशरिन्.	१७	४२
पाणिगृहीती. १६	५		पादकृत ...	२०	७	पारिकांक्षिन्.	१७	४२
पाणिघ	२०	१३	पाय	१७	३३	पारिजात. {	१	५३
पाणिपीडन. १७	५७		पानगोष्ठिका. २०	४३		१४	२६	
पाणिवाद. २०	१३		पानपात्र. २०	४३	पारितथ्या. १६		१०३	
पांडर	५	१२	पानभाजन. १९	३२	पारिपार्श्वक. ३		३१	
पांडु ...	५	१३	पानीय	१०	४	पारिप्लव	२१	७५
पांडुकंबलिन्. १८	५४		पानीयशालिका १२	७	पारिभद्र	१४	२६	
पांडुर	५	१३	पांथ	१८	१७	पारिभद्रक. १४		५३
पातक	२५	३३	पाप. {	४	२३	पारिभाष्य. १४		१२६
पाताल. {	८	१	२१	४७	पारियात्रिक. १३		३	
२३	२०२		पापचेली	१४	८५	पारिषद	१	३७
पातुक	२१	२७	पाप्मन्	४	२३	पारिहार्य	१६	१०७
१०	८		पामन्	१६	५३	पारी	२५	१०
पात्र. {	१७	२४	पामन	१६	५८	पारुष	६	१४
१९	३३		पामर	२०	१६	पार्थिव	१८	१
२३	१७९		पामा	१६	५३	पार्वती	१	३९
पात्री	२५	४२	पायस. {	१६	१२८	पार्वतीनंदन. १		४२
पात्रीव ...	२५	३५	१७	२४	पार्श्व. {	१६	७९	
पाथस	१०	४	पायु	१६	७३	२२	४२	
१४	७		पाय्य	१९	८५	पार्श्वभाग. १८		४०
पाद. {	१६	६१	पार	१०	८	पार्श्वस्थि... १६		६९
१९	८९		पारद	१९	९९	पार्ष्णिण	१६	७२
२३	८९		पारंपर्योपदेश. १७	१२	पार्ष्णिणग्राह. १८		१०	
पादकंटक. १६	११०		पारशव	२३	२१०	पालघ्न	१४	१६७
पादग्रहण. १७	४१		पारश्वधिक. १८	७०	पालकी	१४	१२१	
पादप	१४	५	पारसीक.... १८	४५	पालाश	५	१४	
पादबंधन. १९	५८		पारस्वैण्य. १६	२४	पालि. {	१८	९३	
पादस्फोट. १६	५२		पारायण	२२	२	२३	१९७	
पादाग्र	१६	७१	पारावत.... १५	१४	पालिदी	१४	१०८	
पादांशुद	१६	१०९	पारावतांघ्रि. १४	१५०	पाल्लवा ...	२५	५	
पादात ...	१८	६७	पारावार. {	१०	१	पावक	१	५७
पादातिक. १८	६६		२५	३५	पाश	१६	९८	
पादुका	२०	३०						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
शक	२०	४५	पिठर.	{	१९ ३१	पिपीलिका.	२५	८
शन्	१	६४		{	२३ १८८	पिप्पल	१४	२०
शुपत	१४	८१		{	१८ ३७	पिप्पली	१४	९७
शुपाल्य.	१९	२	पिंड.	{	१९ ९८	पिप्पलीमूल.	१९	११०
श्रुत्य	२१	८१		{	१९ १०४	पिष्टु	१६	४९
श्या	२२	४३		{	२५ १८	पिष्ठ	१६	६०
श्याण	१३	४	पिंडक ...		१६ १२८	पिशंग	५	१६
श्याणदारण.	२०	३४	पिंडिका		१८ ५६	पिशाच	१	११
शक	१५	९९	पिंडीतक....		१४ ५२	पिशित	१६	६३
शग	५	१६	पिण्याक.	{	२३ ९		{	१६ १२४
शगल.	{	३ ३१	पितरौ		१६ ३७	पिशुन.	{	२१ ४७
	{	५ १६					{	२३ १२७
शगला	३	४	पितामह.	{	१ १६	पिशुना	१४	१३३
				{	१६ ३३	पिष्टक	१९	४८
पिचंड.	{	१६ ७७	पितृ		१६ २८	पिष्टपचन.	१९	३२
	{	२५ १८	पितृदान		१७ ३१	पिष्टात	१६	१३९
पिचंडिल.	१६	४४	पितृपति.	{	१ ६१	पीठ	१६	१३८
पचु ...	१९	१०६		{	३ २	पीडन	१८	१०९
पचुमंद	१४	६२	पितृपितृ....		१६ ३३	पीडा	९	३
पचुल	१४	४०	पितृप्रसू		४ ३	पीत	५	१४
पिचट	१९	१०५	पितृयज्ञ		१७ १४	पीतदार	१४	५३
	{	१५ ३१	पितृवन		१८ ११८		{	१४ ६०
पिच्छ.	{	२५ ३०	पितृव्य		१६ ३१	पीतहु.	{	१४ १०१
	{	१४ ४७	पितृमन्त्रिभ.		२१ १३		{	१४ २७
पिच्छा.	{	२५ ९	पितृ		१६ ६२	पीतन.	{	१६ १२४
पिच्छिल.	१९	४६			१७ २४		{	१९ १०३
	{	१४ ४६	पितृय.	{	१७ ५१	पीतसारक.	१४	४३
पिच्छिला.	{	१४ ६२	पितृसत्.		१५ ३४	पीता	१९	४१
पिज	१८	११५	पिधान.		३ १३	पीतांबर....	१	१९
पिजर.	{	१९ १०३	पिनद्ध		१८ ६५	पीन	२१	६१
	{	२५ ३१				पीनस	१६	५१
पिजल	१८	९९	पिनाक.	{	१ ३७	पीनोदनी....	१९	७१
पिट	१९	२६		{	२३ १४		{	१ ५१
पिटक.	{	१६ ५३	पिनाकिन्.		१ ३३	पीयूष.	{	१९ ५४
	{	२० ३०	पिपासा		१९ ५५			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
पीलु.	{	१४ २८	पुत्रो	१६ ३७	पुरुषोत्तम...	१ २१		
		२३ १९३	पुद्गल	२५ २०	पुरुहू	२१ ६३		
पीलुपर्णी.	{	१४ ८४	पुनःपुनः.	२४ १	पुरुहूत	१ ४४		
		१४ १३९	पुनर्.	{	२३ १५४	पुरोग	१८ ७२	
पीवन्	२१ ६१			२४ १५	पुरोगम	१८ ७२		
पीवर.	{	२१ ६१	पुनर्नवा ...	१४ १४९	पुरोगामिन्.	१८ ७२		
		२१ ११२	पुनर्भव	१६ ८३	पुरोडाश	२५ २१		
पीवरस्तनी.	१९ ७१		पुनर्भ	१६ २३	पुरोधस्	१८ ५		
पुश्चली	१६ १०		पुत्राग ...	१४ २५	पुरोभागिन्.	२१ ४६		
पुंस	१६ १		पुमस्	१६ १	पुरोहित	१८ ५		
पुक्कस	२० २०		पुर	{	१४ ३४	पुलाक	२३ ५	
पुंख	२५ १७			२३ १८३	पुलिन	१० ९		
पुंगव	२१ ५९		पुरःसर	१८ ७२	पुलिद	२० २०		
पुच्छ	१८ ५०		पुरतस्	२४ ७	पुलोमजा.	१ ४८		
पुंज	१५ ४२		पुरद्वार	१२ १६	पुपित	२१ ९७		
पुटभेद	१० ७		पुंदर	१ ४४				
पुटभेदन....	१२ १		पुंध्रो	१६ ६				
पुटी	२५ ४२		पुरस्.	{	२३ १८३			
	{	३ ३		२४ ७	पुष्कर.	{	२ १	
पुंडरीक.	{	१० ४१	पुरस्कृत	२३ ८४		१० ४		
		२३ ११	पुरस्तात्....	२३ २४७		१० ४१		
पुंडरीकाक्ष.	१ १९		पुरा	२३ २५४		१४ १४५		
पुंद्	१४ १६३		पुराण.	{	६ ५	२३ १८५		
पुंद्क	१४ ७२			२१ ७७	पुष्कराह	१५ २२		
पुण्य.	{	४ २४	पुराणपुरुष.	१ २२	पुष्करिणी.	१० २७		
	२३ १६०		पुरातन	२१ ७७	पुष्कल	२१ ५८		
पुण्यक	१७ ३८		पुरावृत्त	६ ४	पुष्ट	२१ ९७		
पुण्यजन	१ ६३		पुरी	१२ १		१४ १७		
पुण्यजनेश्वर.	१ ७३		पुरीतत्	१६ ६६	पुष्प.	{	१६ २१	
पुण्यभूमि....	११ ८		पुरीष	१६ ६८		२५ २३		
पुण्यवत्	२१ ३		पुरु	२१ ६३	पुष्पक.	{	१ ७४	
पुत्तिका ...	१५ २७			४ २९		१९ १०३		
पुत्र	१६ २७		पुरुष.	{	१४ २५	पुष्पकेतु	१९ १०३	
पुत्रिका	२० २९			१६ १	पुष्पदंत	३ ४		
				२३ २१९	पुष्पधन्वन्.	१ २७		
					पुष्पफल ...	१४ २१		

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
पुष्परस	१४	१७	पूर्णकुम्भ.	१८	३२	पृथ्वीका	१४	१२५
पुष्पलिहू	१५	२९	पूर्णिमा	४	७	पृदाकु ...	८	६
पुष्पवती	१६	२०	पूर्त	१७	२८	पृश्नि	१६	४८
पुष्पवंतौ.	४	१०	पूर्व. {	२१	८०	पृश्निपर्णी.	१४	९२
पुष्पसमय.	४	१८	पूर्व. {	२३	१३४	पृषत्	१०	६
पुष्य. {	३	२२	पूर्वज	१६	४३	पृषत्. {	१०	६
पुष्य. {	२३	१४७	पूर्वदेव	१	१२	पृषत्. {	१५	१०
पुष्यरथ	१८	५१	पूर्वपर्वत	१३	२	पृषत्क	१८	८६
पुस्त	२०	२८	पूर्वा	३	१	पृषदश्च	१	५५
पूग. {	१४	१६९	पूर्वेद्युस्	२४	२१	पृषदाज्य.	१७	२४
पूग. {	२३	२०	पूषन्	३	२९	पृष्ठ	१६	७८
पूजन	२३	१५६	पृक्वित	२२	९	पृष्ठवंशाधर....	१६	७६
पूजा	१७	३५	पृच्छा	६	१०	पृष्ठास्थि	१६	६९
पूजित	२१	९८	पृत्तना. {	१८	७८	पृष्ठच. {	१८	४६
पूज्य. {	२१	५	पृत्तना. {	१८	८१	पृष्ठच. {	२२	४२
पूज्य. {	२३	१५०	पृथक्	२४	३	पेचक. {	१५	१५
पूत. {	१७	४५	पृथक्पर्णी.	१४	९२	पेचक. {	२३	६
पूत. {	१९	२३	पृथगात्मता. {	४	३१	पेटक	२०	३०
पूत. {	२१	५५	पृथगात्मता. {	१७	३८	पेटा	२०	३०
पूतना	१४	५९	पृथग्जन. {	२०	१६	पेटी	२५	४२
पूतिक	१४	४८	पृथग्जन. {	२३	१०५	पेलव	२१	६६
पूतिकरज.	१४	४८	पृथग्विध....	२१	९३	पेशल. {	२०	१९
पूतिकाष्ट. {	१४	५४	पृथिवी	११	३	पेशल. {	२१	६६
पूतिकाष्ट. {	१४	६०	पृथु. {	१८	३७	पेशल. {	२३	२०५
पूतिगंधि....	५	१२	पृथु. {	१८	४०	पेशी	१५	३७
पूतिफली.	१४	९६	पृथु. {	२१	६०	पैठर	१९	४५
पूष	१९	४८	पृथु. {	२१	११२	पैतृष्वसेय.	१६	२५
पूर	१२	१	पृथुक. {	१५	३८	पैतृष्वसीय.	१६	२५
पूर	२५	२०	पृथुक. {	१९	४७	पैत्र	४	२१
पूरणी	१४	४६	पृथुक. {	२३	३	पोटगल. {	१४	१६२
पूरित	२१	९८	पृथुरोमन्.	१०	१७	पोटगल. {	१४	१६३
पुरुष	१६	१	पृथुल	२१	६०	पोटा	१६	१५
पूर्ण. {	२१	६५	पृथ्वी. {	११	३	पोत. {	१५	३८
पूर्ण. {	२१	९८	पृथ्वी. {	१९	३७	पोत. {	२३	६०
				१९	४०			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
पोतवाणिज्.	१०	१२	प्रकोष्ठ	१६	८०	प्रज्ञान	२३	१२२
पोतवाह	१०	१२	प्रक्रम	२२	२६	प्रजु ...	१६	४७
पोताधान...	१०	१९	प्रक्रिया	१८	३१	प्रडीन	१५	३७
पोत्र	२३	१८०	प्रक्षण	६	२४	प्रणय. {	२२	२५
पोत्रिन्	१५	२	प्रक्काण	६	२४		२३	१५१
पोष्टृ	२३	५९	प्रक्षेपेडन	१८	८७	प्रणव	६	४
पौड्य ...	१४	१२७	प्रगंड	१६	८०	प्रणाद	६	११
पौत्री ...	१६	२९	प्रगतजानुक.	१६	४७	प्रणाली	१०	३५
पौर ...	१४	१६६	प्रगल्भ	२१	२५	प्रणिधि. {	१८	१३
पौरस्त्य	२१	८०	प्रगाढ	२३	४५		२३	१००
पौरुष. {	१६	८०	प्रगुण	२१	७२	प्रणिहित	२१	८६
	२३	२२३	प्रगे	२४	१९	प्रणीत. {	१७	२०
पौरोगव ...	१९	२७	प्रग्रह. {	१८	११९		१९	४५
पौर्णमास....	१७	४८		२३	२३८	प्रणुत	२१	१०९
पौर्णमासी.	४	७	प्रग्राह	२३	२३८	प्रणय	२१	२५
पौलस्त्य	१	७२	प्रग्रीव	२५	३५	प्रतन ...	२१	७७
पौलि ...	१९	४७	प्रघण	१२	१२	प्रतल. {	१६	८४
पौष	४	१५	प्रघाण	१२	१२		१६	८५
प्याट्	२४	७	प्रचक्र	१८	९६	प्रताप	१८	२०
प्रकंपन	१	६६	प्रचलायित.	२१	३२	प्रतापस	१४	८१
प्रकर्ष	२१	११२	प्रचुर	२१	६३	प्रति	२३	२४६
प्रकांड. {	४	२७	प्रचेतस्	१	६४	प्रतिकर्मन्.	१६	९९
	१४	१०	प्रचोदनी	१४	९४	प्रतिकूल....	२१	८४
प्रकामम्	१९	५७	प्रच्छदपट.	१६	११६	प्रतिकृति....	२०	३६
प्रकार	२३	१६२	प्रच्छन्न	१२	१४	प्रतिकृष्ट	२१	५४
प्रकाश. {	३	३४	प्रच्छर्दिका.	१६	५५	प्रतिक्षिप्त....	२१	४२
	२३	२१८	प्रजन	२२	२५	प्रतिख्याति.	२२	२८
प्रकीर्णक....	१८	३१	प्रजविन्	१८	७३	प्रतिग्रह	१८	७९
प्रकीर्य ...	१४	४८	प्रजा	२३	३२	प्रतिग्राह....	१६	१३९
प्रकृति. {	४	२९	प्रजाता	१६	१६	प्रतिधा	७	२६
	७	३७	प्रजापति....	१	१७	प्रतिधातन.	१८	११४
	१८	१८	प्रजावती....	१६	३०	प्रतिच्छाया.	२०	३६
	२३	७३	प्रज्ञा. {	५	१	प्रतिजागर.	२२	२८
				१६	१२			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
प्रतिज्ञात	२१	१०८	प्रतिहारक.	२०	११	प्रत्यादिष्ट....	२१	४०
प्रतिज्ञान ...	५	५	प्रतिहास	१४	७६	प्रत्यादेश....	२२	३१
प्रतिदान....	१९	८१	प्रतीक. {	१६	७०	प्रत्यालीढ.	१८	८५
प्रतिध्वान.	६	२५		२३	७	प्रत्यासार....	१८	७९
प्रतिनिधि.	२०	३६	प्रतीकार....	१८	११०	प्रत्याहार....	२२	१६
प्रतिपत्. {	४	१	प्रतीकाश....	२०	३८	प्रत्युत्क्रम....	२२	२६
	५	१	प्रतीक्ष्य	२१	५	प्रत्युपसृ	४	२
प्रतिपन्न	२१	१०८	प्रतीची	३	१	प्रत्यूष	४	२
प्रतिपादन.	१७	२९	प्रतीत. {	२१	९	प्रत्यूह	२२	१९
प्रतिबद्ध	२१	४१		२३	८२	प्रथम. {	२१	८०
प्रतिबंध	२२	२७	प्रतीप	२३	१४४		२३	१४४
प्रतिबिम्ब....	२०	३६	प्रतीपदर्शिनी.	१६	२	प्रथा	२२	९
प्रतिभय	७	२०	प्रतीर	१०	७	प्रथित	२१	९
प्रतिभान्वित.	२१	२५	प्रतीवाप	२३	११५	प्रदर	२३	१६४
प्रतिभू	२०	४४		१२	१६	प्रदीप	१६	१३८
प्रतिमा	२०	३६	प्रतीहार. {	१८	६	प्रदीपन	८	१०
				२३	१७०	प्रदेशन	१८	२७
प्रतिमान. {	१८	३९	प्रतीहारी....	२३	१७०	प्रदेशिनी	१८	८१
	२०	३६	प्रतोली	१२	३	प्रदोष	४	६
प्रतिमुक्त ...	१८	६५	प्रतन	२१	७७	प्रद्युम्न	१	२६
प्रतियत्न	२३	१०७	प्रत्यक्	२४	२३	प्रद्राव	१८	१११
प्रतियातना.	२०	३६	प्रत्यक्पर्णी.	१४	८९	प्रधन	१८	१०३
प्रतिरोधिन्.	२०	२५	प्रत्यक्श्रेणी. {	१४	८८		४	२९
प्रतिवाक्य...	६	१०		१४	१४४	प्रधान. {	१८	५
प्रतिविषा....	१४	९९	प्रत्यक्ष	२१	७९		२१	५७
प्रतिशासन.	२२	३४	प्रत्यग्र	२१	७७		२३	१२२
प्रतिश्याय....	१६	५१	प्रत्यंत	११	७	प्राधि	१८	५६
प्रतिश्रय	२३	१५३	प्रत्यंतपर्वत.	१३	७	प्रपंच	२३	२८
प्रतिश्रव	५	५	प्रत्यय	२३	१४७	प्रपद	१६	७१
प्रतिश्रुत्	६	२५	प्रत्ययित	१८	१३	प्रपा	१२	७
प्रतिष्टम्भ ...	२२	२७	प्रत्यर्थिन्	१८	११	प्रपात	१३	४
प्रतिसर	२३	१७४	प्रत्यवसित.	२१	११०	प्रपितामह....	१६	३३
प्रतिसीरा....	१६	१२०	प्रत्याख्यात.	२१	४०	प्रपुत्राड	१४	१४७
प्रतिहत	२१	४१	प्रत्याख्यान.	२२	३१	प्रपौडरीक.	१४	१२७

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
प्रफुल्ल	१४ ७	प्रयत	१७ ४५	प्रव्यक्त	२१ ८१
प्रबंधकल्पना.	६	६	प्रयस्त	१९ ४५	प्रश्न	६ १०
प्रबोधन	१६ १२२	प्रयाम	२२ २३	प्रश्नय	२२ २५
प्रभञ्जन	१ ६६	प्रयोगार्थ	२२ २६	प्रश्रिता	२१ २५
प्रभव	२३ २१०	प्रलंबघ्न	१ २४	प्रष्ठ	१८ ७२
प्रभा	३ ३४	प्रलय.	{	४ २२	प्रष्ठवाह	१९ ६३
प्रभाकर	३ २८		{	७ ३३	प्रष्ठौही	१९ ७०
प्रभात	४ ३		{	१८ ११६	प्रसन्न	१० १४
प्रभाव.	{	१८ १९	प्रलाप	६ १५	प्रसन्नता	३ १६
		१८ २०	प्रवण	२३ ५६	प्रसन्ना	२० ४०
प्रभिन्न	१८ ३६	प्रवयस्	१६ ४२	प्रसभ	१८ १०८
प्रभु	२१ ११	प्रवर्ह	२१ ५७	प्रसर	२२ २३
प्रभूत	२१ ६३	प्रवह	२२ १८	प्रसरण	१८ ९६
प्रभ्रष्टक	१६ १३५	प्रवहण	१८ ५२	प्रसव.	{	२२ १०
प्रमथ	१ ३७	प्रवहिका.	६	६		{	२३ २०८
प्रमथन	१८ ११५	प्रवारण	२२ ३	प्रसवबंधन.	१४	१५
प्रमथाधिप.	१	३३	प्रवाल.	{	७ ७	प्रसव्य	२१ ८४
प्रमद	४ २४		{	१९ ९३	प्रसह्य	२४ १०
प्रमदवन	१४ ३		{	२३ २०४	प्रसाद.	{	३ १६
प्रमदा	१६ ३	प्रवाह	२२ १८		{	२३ ९१
प्रमनस्	२१ ७	प्रवासन	१८ ११३	प्रसाधन	१६ ९९
प्रमा	२२ १०	प्रवाहिका....	१६	५५	प्रसाधनी	१६ १३९
प्रमाण	...	२३ ५४	प्रविदारण.	१८	१०३	प्रसाधित	...	१६ १००
प्रमाद	७ ३०	प्रविक्षेप	२२ २०	प्रसारिणी....	१४	१५२
प्रमापण	१८ ११२	प्रवीण	२१ ४	प्रसारिन्	२१ ३१
प्रमिति	२२ १०	प्रवृत्ति.	{	६ ७	प्रसित	२१ ९
		१७ २६		{	२२ १८	प्रसिती	२२ १४
प्रमाति.	{	१८ ११७	प्रवृद्ध.	{	२१ ७६	प्रसिद्ध	२२ १०४
				{	२१ ८८	प्रसू.	{	१६ २९
प्रमीला.	{	७ ३७		{	२३ ८५		{	२३ २३०
		२३ १७६	प्रवेक	२१ ५७	प्रसूता	१६ १६
प्रमुख	२१ ५७	प्रवेणी.	{	१६ ९८	प्रसूति	२२ १०
प्रमुदित	२१ १०३		{	१८ ४२	प्रसूतिका.	१६	१६
प्रमोद	४ २४	प्रवेष्ट	१६ ८०			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
प्रसूतिज....	९	३	प्राग्रहर ...	२१	५८	प्राप्तरूप	२४	१३१
प्रसून. {	१४	१७	प्राग्र्य	२१	५८	प्राप्ति	२३	६९
	२३	१२३	प्राघार ...	१६	१०	प्राप्य	२१	९२
प्रसूजनयितारौ. १६	३७		प्राघुणक....	१७	३४	प्राभृत	१८	२७
प्रसृत	२१	८८	प्राघूर्णिक.	१७	३४	प्राय. {	१७	५३
प्रसृता	१६	७२	प्राचिका....	२५	८		२३	१५३
प्रसृति	१६	८५	प्राची	३	१	प्रायस् ...	२४	१७
प्रसेव	१९	२६	प्राचीन	१२	३	प्राथित	२१	९७
प्रसेवक	७	७	प्राचीना ...	१४	८५	प्रालंब	१६	१३६
प्रस्तर. {	१३	४	प्राचीनावति.	१७	५०	प्रालंबिका.	१६	१०४
	२३	१६१	प्राच्य	११	७	प्रालेय	३	१८
प्रस्ताव	२२	२४	प्राजन	१९	१२	प्रावरण	१६	११८
प्रस्थ. {	१४	५	प्राजित	१८	५९	प्रावार	१६	११७
	१९	८९	प्राज्ञ	१७	५	प्रावृत ...	१६	११३
	२३	८८	प्राज्ञा	१६	१२	प्रावृप्	४	१९
प्रस्थपुष्प....	१४	७९	प्राज्ञी	१६	१२	प्रावृषायणी.	१४	८६
प्रस्थमान.	१९	८५	प्राज्य	२१	६३	प्रास ...	१८	९३
प्रस्थान	१८	९५	प्राड्ढिवाक.	१८	५	प्रासंग	१८	५७
प्रस्फोटन.	१९	२६		१	६७	प्रासंग्य	१९	६४
प्रवण	१३	५	प्राण. {	१८	१०२	प्रासाद	१२	९
प्रवाव	१६	६७		१८	११९	प्रासिक	१८	७०
प्रवर	४	६		१९	१०४	प्राह	३	३
प्रवरण	१८	८२	प्राणिन् ...	४	३०	प्रिय. {	१६	३५
प्रवृत्त	१६	१४	प्रातर्	२४	१९		२१	५३
प्रवि	१०	२६	प्राथमकलिपक.	१७	११		१४	४२
प्रविलिका....	६	६	प्राहुस्. {	२३	२५७		१४	४४
प्रवृत्त	२१	१०३		२४	१२	प्रियक. {	१४	५६
प्रशु	२१	७०	प्रादेश	१६	८३		१५	९
प्रक्ष. {	२४	१६	प्रादेशन	१७	३०	प्रियंगु. {	१४	५५
	२४	२३	प्राध्वम्	२४	४		१९	२०
प्रकार	१२	३	प्रांतर	११	१७	प्रियता	७	२७
प्रकृत	२०	१६	प्रात. {	२१	८६	प्रियंवद	२१	३६
प्रदक्षिण.	११	७		२१	१०४	प्रियाल ...	१४	३५
प्रवंश	१७	१६	प्रातपंचरत्न.	१८	११७	प्रीणन	२२	४

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
प्रीति	२१ १०३	प्लवंगम	२३ १३८	फांट	२१ ९४
प्रीति	४ २४	प्लाक्ष	१४ १८	फाल	{	१६ ११
पुष्ट	२१ ९९	प्लीहन	१६ ६६		{	१९ १३
प्रेक्षा.	{	५ १	प्लीहशत्रु	१४ ४९	फालगुन	४ १५
	{	२३ २२५	प्लुत	१८ ४८	फालगुनिक.	४ १५
प्रेखा	१८ ५३	प्लुष्ट	२१ ९९	फालगुनी	२५ ६
प्रेखित	२१ ८७	प्लोष	२२ ९	फुल्ल	१४ ८
प्र	{	१८ ११७	प्लात	२१ ११०	फेन.	{	१९ १०
	{	२३ ६०					{	२५ १९
प्रेता	९ २	फ.			फेनिल.	{	१४ ३१
प्रेत्य	२४ ८	फणा	८ ९		{	१४ ३६
प्रमन्	७ २७	फणिजक	१४ ७९	फेरव	१५ ५
प्रेषण	२२ ३४	फणिन्	८ ७	फेरु	१५ ५
प्रेष्ठ	२१ १११		{	१८ ९०	फेला	१९ ५६
प्रेष	२३ २२०	फळ.	{	१९ १३			
प्रेष्य	२० १७		{	२३ २०१	ब.		
				{	२५ २३	बक	१५ २२
प्रोक्षण	१७ २६	फलक	१८ ९०	बकुल	१४ ६४
प्रोक्षित	१७ २६	फलकपाणि.	१८ ७१	बाडिश	१० १६
प्रोथ	१८ ४९	फलत्रिक	१९ १११	बत	२३ २४
प्रोद्यत	२३ ८५	फलपाकांता.	१४ ६	बदर	१४ ३७
प्रोष्टपदा	३ २२	फलपूर	१४ ७८	बदगा.	{	१४ ११
प्रोष्ठी	१० १८	फलवत्	१४ ७		{	१४ १५
प्रोष्टपद	४ १७	फलाध्यक्ष.	१४ ४५	बदरी	१४ ३६
प्रौढ	२१ ७६	फलिन्	१४ ७	बद्र.	{	२१ ४२
			फलिन	१४ ७		{	२१ ९५
प्लक्ष	{	१४ ३२	फलिनी.	{	१४ ५५	बाधिर	१६ ४८
	{	१४ ४३		{	१४ १३६	बदिन्	१८ ९७
	{	१० ११	फली	१४ ५५	बन्दी	१८ ११
	{	१० २४	फलेग्रही	१४ ६	बधली	१६ १०
प्लव	{	१४ १३२	फलेरुहा	१४ ५४	बंधन.	{	१८ २६
	{	१५ ३४					{	२२ १४
	{	२० १९	फगु.	{	४ १५	बंधन लय.	१८ ११
	{	१५ ३		{	१४ ६१	बंधरतंभ	१८ ४१
प्लवग.	{	२३ २४		{	२१ ५६	बंधु	१६ ३४
प्लवंग	१५ ३	फणित	१९ ४३			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
वृज्जीवक.	१४	७३	वलि.	{	१७ १४	बहुविध	२१	९३
वृता	१६	३५	वलि.	{	१८ २७	बहुवेतस	११	९
वृर	२१	६९		{	२३ १९५	बहुसुता	१४	१००
वल	१६	२६	बलिध्वंसिन्.	१	२१	बहुसूति	१९	७०
वृक	१४	७३	बलिन्	१६	४५	बाकुची ...	१४	९६
वृकपुष्प.	१४	४४	बलिपुष्ट	१५	२०	बाढ.	{	१ ७०
वृ	२३	१७०	बलिभ	१६	४५		{	२३ ४४
वर	१४	९०	बलिभुज.	१५	२०	बाण.	{	१८ ८६
वृषा	१४	१३९	बालि	१६	४९		{	२३ ४५
वृ. {	१५	३१	बलिसन्न.	८	१	बाणा	१४	७४
	२३	२३७	बलोवर्द	१९	५९	बादर	१६	१११
वृपुष्प	१४	१३२	बलव.	{	१९ २७	बाधा	९	३
वृहः	१	५७		{	१९ ५७	बांधकिनेय.	१६	२६
वृष्ण	१५	३०	बलवज	१४	१६३	बांधव	१६	३४
वृन्	१५	३०	बष्कयणी.	१९	७१	बाहंत ...	१४	१९
वृष्टिख	१	९	बस्त	१९	७६		{	१४ ११२
वृष्ट	१४	१२२	बस्ति ...	१६	७३	वाल.	{	१६ ४२
	{	१ २५	बहिर्द्वार.	१२	१६		{	२३ २०५
	{	१८ ७८	बाहिष्ठ ...	२१	११९	वालर्गभिणी.	१९	७०
वृ. {	१८	१०२	बहिस्	२४	१७	वालतनय.	१४	४९
	२३	१९५	बहु	२१	६३	वालतण.	१४	१६७
	२५	२२	बहुकर ...	२१	१७	वालमुषिका.	१५	१२
वृदेव	१	२४	बहुगर्हवाक्.	२१	३६	वाला	७	१४
वृमद्र	१	२४	बहुपाट	१४	३२	बालिश.	{	२१ ४८
वृमद्रिका.	१४	१५०	बहुप्रद	२१	६		{	२३ २१८
वृवत्. {	१६	४४	बहुमूल्य	१६	११३	बालेय	१९	७७
	२४	२	बहुरूप	१६	१२८	बालेयशाक.	१४	९०
वृविन्यास.	१८	७९		{	२१ ६३	बाल्य	१६	४०
वृषा	१४	१०७	बहुल.	{	२१ ११२	बाष्प	२३	१३०
वृषाका	१५	२५		{	२३ १९९	बाष्पिका.	१९	४०
वृषात्कार.	१८	१०८	बहुला.	{	१४ १२५	बाह	१६	८०
वृषाति....	१	४६		{	२३ १९९	बाहुज	१८	१
वृषक	३	६	बहुलीकृत.	१९	२३	बाहुदा	१०	३३
			बहुवारक.	१४	३४	बाहुमूल.	१६	७९

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
बाहुयुद्ध.	१८	१०६	बुक्ता	१६ ६४	ब्रह्मपुत्र	८	१०
बाहुल	४	१८	बुद्ध.	{	१ १३	ब्रह्मबंधु	२३	१०८
बाहुलेय	१	४२		{	२१ १०८	ब्रह्मविदु	१७	३९
बाल्हिक. {	१८ ४५		बुद्धि	५	१	ब्रह्मभूय	१७	५२
	२५ ३२		बुद्बुद	२५	१९	ब्रह्मयज्ञ ...	१७	१४
बाल्हीक. {	१६ १२४			{	३ २६	ब्रह्मवर्चस.	१७	३९
	१९ ४०		बुध.	{	१७ ५	ब्रह्मसायुज्य.	१७	५२
	२३ ९			{	२३ १००	ब्रह्मस्	१	२८
बाह्य	२४ १७		बुधित	२१	१०८	ब्रह्मसूत्र	१७	५०
बिड	१९ ४२		बुध्न	१४	१२	ब्रह्मांजली.	१७	३९
बिडाल	१५ ६		बुभुक्षा	१९	५४	ब्रह्मासन.	१७	४०
बिडौजस्.	१	४४	बुभुक्षित.	२१	२०	ब्राह्म. {	४ २१	
बिंदु	१० ६		बुस	१९	२२		१७ ५१	
बिंदुजातक.	१८ ३९		बुस्त	२५	३४	ब्राह्मण ...	१७	४
बिंव	३ १५		बृंहित	१८	१०७	ब्राह्मणयष्टिका.	१४	८९
बिबिका	१४ १३९		बृहत	२१	६०	ब्राह्मणी	१४	८९
बिल	८ १		बृहतिका	१६	११७	ब्राह्मण्य	२२	४१
बिलेशय	८ ८		बृहती. {	१४ ९३			१ ३७	
बिल्व ...	१४ ३२			{	२३ ७५	ब्राह्मी. {	६ १	
बिस	१० ४२		बृहत्कुक्षि.	१६	४४		१४ १३७	
बिसकंटिका.	१५ २५		बृहद्रानु	१	५७	भ.		
बिसप्रसून.	१० ४१		बृहस्पति	१	२४	भ ...	३ २१	
बिसिनी	१० ३९		बोधकर ...	१८	९७	भक्त	१९ ४८	
बिस्त	१९ ८६		बोधिदुम.	१४	२०	भक्षक	२१ २०	
बीज. {	४ २८		बोल	१९ १०४		भक्षित	२१ ११०	
	१६ ६२		ब्रध्न	३ २८		भक्ष्यकार.	१९ २८	
बीजकोश.	१० ४३		ब्रह्मचारिन् {	१७ ३		भग. {	१६ ७६	
बीजपूर	१४ ७८			{	१७ ४३		२३ २६	
बीजाकृत.	१९ ८		ब्रह्मण्य	१४ ४१		भगंदर	१६ ५६	
बीज्य	१७ २		ब्रह्मत्व	१७ ५२		भगवत्	१ १३	
बीभत्स. {	७ १७		ब्रह्मदर्भा	१४ १४५		भगिनी	१६ २९	
	७ १९		ब्रह्मदारु	१४ ४१		भंग	१० ५	
	२३ २३५		ब्रह्मन्. {	१ १६		भंगा	१९ २०	
बुक ...	१४ ८१			{	२३ ११४	भंगी	२५ ८	

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अय	१९ ७	भर्तृदारक.	७	१२	भाद्र	४ १७
अमान	१८ २४	भर्तृदारिका.	७	१३	भाद्रपद	४ १७
अ	१८ ६१	भर्त्सन	६ १४	भाद्रपदा	३ २२
अट्ट	१९ ४५	भर्मन्.	{	१९ ९४	भानु.	{	३ ३१
अहारक	७ १३		{	२० ३८		{	३ ३३
अट्टिनी	७ १३	भल्ल	२५ २१		{	२३ १०५
आकी	१४ ११४	भल्लातकी.	१४	४२	भामिनी	१६ ४
अहिल	१४ ६३	भल्लुक	१५ ३	भार	१९ ८७
अडी	१४ ९१	भल्लुक	१५ ४	भारत	११ ६
अ.	{	४ २५	भव.	{	१ ३६	भारती	६ १
	{	१९ ४९		{	२३ २०६	भारद्वाजी.	१४	११६
अकुम्भ	१८ ३२	भवन	१२ ५	भारयाष्टि	२० ३०
अदाह	१४ ५३	भवानी	१ ३९	भारवाह	२० १५
अपणी	१४ ३६	भविक	४ २६	भारिक	२० १५
अबला	१४ १५३	भवित	२१ २९	भार्गव	३ २५
अमुस्तक.	१४	१६०	भविष्णु	२१ २९	भार्गवी	१४ १५८
अयव	१४ ६७	भव्य	४ २६	भार्गी	१४ ८९
अश्री	१६ १३१	भषक	२० २२	भार्या	१६ ६
आसन	१८ ३१	भब्रा	२० ३३	भार्यापती.	१६	३८
अ	७ २१	भस्मगंधिनी.	१४	१२०		{	७ १२
अकार	७ २०	भस्मगर्भा...	१४	६३	भाव.	{	७ २१
अदुत	२१ ४२	भा	३ ३४		{	२३ २०७
आनक.	{	७ १७	भाग	१९ ८९	भावबोधक.	७	२१
	{	७ २०					{	१६ १३४
अ	१ ६९	भागधेय.	{	४ २८	भावित.	{	१९ ४६
अण	२० ३९		{	१८ २७		{	२१ १०४
अण्य	२० ३९	भागिनेय....	१६	३२	भावुक	४ २६
अण्यभुज.	२१	१९	भागीरथी.	१०	३१	भाषा	६ १
अत	२० १२	भाग्य.	{	४ २८	भाषित.	{	६ १
अद्राज	१५ १५		{	२३ १५५		{	२१ १०७
मी	१ ३५	भांगीन	१९ ७	भाष्य	२५ ३१
	{	१६ ३५	भाजन	१९ ३३	भास्	३ ३४
	{	२३ ५९	भांड.	{	१९ ३३	भास	२३ ५८
				{	२३ ४४	भास्कर	३ २८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
भास्वत्	३	२९	भुजंगम	८	६	भयिष्ठ	२१	६३
भिक्षा. {	२२	६	भुजंगाक्षी. १४	११५		भूरि. {	२१	६३
	२३	२२५	भुजशिरस्. १६	७८			२३	१८२
भिक्षु. {	१७	३	भुजांतर	१६	७७	भूरिकेना....	१४	१४३
	१७	४२	भुजिष्य	२०	१७	भूरिमाय	१५	५
भित्त	३	१६		१०	३	भूहंडी	१४	६९
भित्ती	१२	४	भवन. {	११	६	भूर्ज	१४	४६
भिदा	२२	५	भू	११	२	भूषण	१६	१०७
भिदुर	१	५०		१	११	भूषत	१६	१००
भिदिपाल. १८	९१		भत. {	२१	१०४	भूष्ण	२१	२९
	२१	८२		२३	७८	भूस्तृण	१४	१६७
भिन्न. {	२१	१००	भतकेश	१९	१११	भृगु	१३	४
भिषज्	१६	५७	भूतयज्ञ	१७	१४		१४	१३५
भिस्सटा....	१९	४९	भूतवेशी	१४	७१	भृंग. {	१५	१६
भिस्सा	१९	४८	भूतात्मन्	२३	१०६		१५	२९
भी ...	७	२१	भूतावास ...	१४	५८	भृगराज	१४	१५३
भीति	७	२१	भूति. {	१	३८	भृंगार	१८	३२
	१	३६		२३	६९	भृंगारी	१५	२८
भीम. {	७	२०	भूतिक	२३	८	भृंगी	१	४३
	१६	३	भूतेश	१	३३	भृतक	२०	१५
भीरु. {	२१	२६	भूदार	१५	२	भृति	२०	३८
भीरुक	२१	२६	भूदेव	१७	४	भृतिभुज्....	२०	१५
भीलुक	२१	२६	भूनिव	१४	१४३	भृत्य	२०	१७
भीषण	७	२०	भूप	१८	१	भृत्या ...	२०	३८
भीष्म	७	२०	भूपदी	१४	७०	भृशम् ...	१	७०
भीष्मस्	१०	३१	भूभृत्	२३	६१	भेक	१०	२४
भुक्त	२१	१११	भूमन्	२४	१७	भेकी	१०	२४
भुक्तसमुज्जित. १९	५६		भूमि	११	२		१८	२०
	२१	७१		१४	३८	भेद. {	१८	२१
भुम्न. {	२१	९१	भूमिजंबुक. {	१४	११८	भेदित	२१	१००
भुज	१६	८०		१४	११८	भेरी	७	६
भुजग	८	६	भूमिधर	२३	६१	भेषज	१६	५०
भुजंग	८	६	भूमिस्पृक्. १९	१		भैक्ष	१७	४७
भुजंगभुज्. १५	३०		भूयस्	२१	६३	भैरव	७	१९

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
पञ्च	१६	५०	भूकुटि	७	३७	मणिबंध	१६	८१
पोग	२३	२३	भृण. {	१६	३९	मंड. {	१४	५१
पोगवती.	२३	७०	भृण. {	२३	४५	मंड. {	१९	४९
पोगिन्	८	८	भृण. {	२३	१३५	मंडन. {	१६	१०२
पोगिनी	१६	५	भेष	१८	२३	मंडन. {	२१	२९
पोजन	१९	५५	म.			मंडप	१२	९
पोस्	२४	७	मकर	१०	२०	मंडल. {	३	६
पौम	३	२५	मकरध्वज.	१	३७	मंडल. {	३	१५
पौरिक	१८	७	मकरंद	१४	१७	मंडल. {	३	३२
प्राश	१८	२३	मकुष्टक	१९	१७	मंडलक	१६	५४
प्रकुंस	७	११	मकलक.	१४	१४४	मंडलाग्र	१८	८९
प्रकुटि	७	३७	माक्षिका	११	२६	मंडलेश्वर.	१८	२
प्रम. {	५	५	मख	१७	१३	मंडहारक.	२०	१०
प्रम. {	१०	७	मगध	१८	९७	मंडित	१६	१००
प्रम. {	२२	९	मघवन्	१	४४	मंडीरी	१४	९१
प्रमर	१५	२९	मंक्षु	२४	२	मंडुक	१०	२४
प्रमरक	१६	९६	मंगल	४	२५	मंडुकपर्ण.	१४	५६
प्रमि	२२	९	मंगल्यक.	१९	१७	मंडुकपर्ण.	१४	९१
प्रष्ट	२१	१०४	मंगल्या	१६	१२७	मंडुर	१९	९८
प्रष्टयव	१९	४७	मचचिका.	४	२७	मतंगज	१८	३४
प्राजिष्णु.	१६	१०१	मजा	१४	१२	मतल्लिका.	४	२७
प्रातरौ	१६	३६	मंच	१६	१३८	मति	५	१
प्रातृज	१६	३६	मंजरि	१४	१३	मत. {	१८	३६
प्रातृजाया.	१६	३०	मंजिष्ठा	१४	९०	मत. {	२१	२३
प्रातृभगिन्यौ.	१६	३६	मंजीर	१६	१०९	मत. {	२१	१०३
प्रातृव्य	२३	१४६	मंजु	२१	५२	मत्तकाशिनी.	१६	४
प्रात्रोय	१६	३६	मंजुल	२१	५२	मत्सर	२३	१७२
प्रांति ...	५	४	मंजूषा	२०	३०	मत्स्य	१०	१७
प्राष्ट	१९	३०	मठ ...	१२	८	मत्स्यंडी	१९	४३
प्रकुंस	७	११	मड्डु	७	८	मत्स्यपित्ता.	१४	८६
प्रकुटि	७	३७	मणि. {	१	३०	मत्स्यवेधन.	१०	१६
प्र.	१६	९२	मणि. {	१९	९३	मत्स्याक्षी.	१४	१३७
प्रकुंस	७	११	मणिक	१९	३१	मत्स्यात्खग.	२३	२२०
						मत्स्याधानी.	१०	१६

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
मथित	१९	५३	मधुरिका.	१४	१०५	मनुष्यधर्मन्.	१	७२
नद. {	१८	३७	मधुरिपु	१	२०	मनोगुप्ता.	१९	१०८
	२२	१२	मधुलिह्	१५	२९	मनोजवस.	२१	१३
	२३	९१	मधुवार	२०	४१	मनोज्ञ	२१	५२
मदकल	१८	३५	मधुव्रत	१५	२९	मनोभव	२३	१३८
मदन. {	१	२६	मधुशियु	१४	३१	मनोरथ	७	२७
	१४	५३	मधुश्रेणी.	१४	८४	मनोरम ...	२१	५२
	१४	७८	मधुष्टील	१४	२८	मनोहत	२१	४७
मदस्थान.	२०	४१	मधुत्तया.	१४	१४२	मनोह्वा	१९	१०८
मदिरा	२०	४०	मधूक	१४	२७	मंतु	१८	२६
मदिरागृह.	१२	८	मधुच्छिष्ट.	१९	१०७	मंत्र	२३	१६७
मदोत्कट	१८	३५	मधुलक	१४	२८	मंत्रव्याख्याकृत	१७	७
महु ...	१५	३४	मधुलिका.	१४	८४	मंत्रिन्	१८	४
महुर	१०	१९	मध्य. {	१६	७९	मंथ	१९	७४
मद्य	२०	४०		२३	१६१	मंथदंडक.	१९	७४
	४	१५	मध्यदेश	११	७	मंथन्	१९	७४
मधु. {	१९	१०७		७	१	मंथनी	१९	७४
	२०	४१	मध्यम. {	११	७	मंथर	१८	७२
	२३	१०३		१६	७९	मंथान	१९	७४
मधुक ...	१४	१०९	मध्यमा. {	१६	८	मंद. {	२०	१८
मधुकर	१५	२९		१६	८२		२३	९५
मधुकम	२०	४१	मध्याह्न	४	३	मंदगाभिन्.	१८	७२
मधुह्रम	१४	२७	मध्वासव ...	२०	४१	मंदाकिनी.	१	५२
मधुष	१५	२९	मनःशिला.	१९	१०८	मंदाक्ष	७	२३
मधुपर्णिका. {	१४	३५	मनसु	४	३१		१	५३
	१४	९४	मनसिज	१	२७	मंदार. {	१४	२१
मधुपर्णी	१४	८३	मनस्कार.	५	२		१४	२६
मधुमक्षिका.	१५	२६	मनाक्	२४	८	मंदिर. {	१२	५
मधुयष्टिका.	१४	१०९	मानित	२१	१०८		२३	१८४
मधुर. {	५	९	मनीषा	५	१	मंदुता	१२	७
	३३	१९१	मनीषिन्	१७	५	मंदाष्ण	३	३५
मधुरक	१४	१४२	मनु ...	२५	३८	मंद	७	२
मधुरसा. {	१४	८३	मनुज	१६	१	मन्मथ. {	१	२६
	१४	१०७	मनुष्य	१६	१		१४	२१
मधुरा	१४	१५२						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
न्या	१६ ६५	मर्दल	७ ८	महाकुल	१७ ३
न्यु.	{	७ २५	मर्मन्	२५ ३०	महांग	१९ ७५
न्वतर	२३ १५३	मर्मर	६ ३३	महाजाली.	१४	११७
य	४ २२	मर्मस्पृज	२१ ८३	महादेव	१ ३४
यु	१९ ७५	मर्यादा	१८ २६	महाधन	१६ १३३
युष्टक	१ ७४	मल.	{	१६ ६५	महानस	१९ २७
युष्टक	१९ १७		{	२३ १९७	महागात्र	१८ ५
युख.	{	३ ३३	मलदूषित	२१ ५५	महायज्ञ	१७ १४
युख.	{	२३ १८	मलयज	१६ १३१	महारजत	१९ ९५
युर.	{	१४ १११	मलयू	१४ ६१	महारजन	१९ १०६
युर.	{	१५ ३०	मालिन	२१ ५५	महारण्य	१४ १
युरक.	{	१४ ८८	मालिनी	१६ २०	महाराजिक.	१	१०
युरक.	{	१९ १०१	मलिम्लुच.	२० २५	महारौरव	९ १
रकत	१९ ९२	मलीमस	२१ ५५	महाशय	२१ ३
रण	१८ ११६	मल्ल	२५ २१	महाशूरी	१६ १३
तिच	...	१९ ३६	मल्लक	२५ ३७	महाश्वेता	१४ ११०
तिचि.	{	३ २७	मल्लिका	१४ ६९	महासहा.	{	१४ ७३
तिचि.	{	३ ३३	मल्लिकाक्ष.	१५	२४		{	१४ १३८
तिचिका.	३	३५	मल्लिगंधिन्.	१६	१२७	महासेन	१ ४१
त.	{	११ ५	मसी	२५ १०	महिला	१६ २
त.	{	२३ १६३	मसूर	१९ १७	महिलाहया.	१४	५४
तव.	{	१ ६५	मसूराविदला.	१४	१०९	महिष	१५ ४
तव.	{	३ २	मसृण	१९ ४६	महिषी	१६ ५
तत	२३ ५९	मस्कर	१४ १६१	मही	११ ३
तत्वत	१ ४४	मस्कारिन्	१७ ४२	महीक्षित	१८ १
तन्माला.	१४	१३३	मस्तक	१६ ९५	महीध्र	१३ १
तवक.	{	१४ ५२	मस्तिष्क	१६ ६५	महीरुह	१४ ५
तवक.	{	१४ ८९	मस्तु	१९ ५४	महीलता	१० २१
कट	१५ ३	मह	७ ३८	महीमुत	...	३ २५
कटक	१५ १३	महत्	२३ ७९	महेच्छ	२१ ३
कटी.	{	१४ ४८	महती	२३ ६९	महेरुणा	१४ १२४
कटी.	{	१४ ८७	महत्सुलोल.	१०	६	महेश्वर	१ ३२
त्य	१६ १	महस्	२३ २३२	महोक्ष	१९ ६१
र्दन	२२ २२	महाकंद	१४ १४८	महोत्पल	१० ३९

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
महोत्साह....	२१	३	मातुलपुत्रक.	१४	७८	मार	१	२६
महोद्यम	२१	३	मातुलानी. {	१६	३०	मारजित	१	१३
महोषध. {	१४	१००	मातुलानी. {	१९	३०	मारण	१८	११४
महोषध. {	१४	१४८	मातुलाहि.	८	६	मारिष	७	१४
महोषध. {	१९	३८	मातुली	१६	३०	मारुत	१	६५
मा. {	१	२९	मातुलुंगक.	१४	७८	मार्कव	१४	१५
मा. {	२४	११	मातृ. {	१	३७	मार्ग. {	४	१४
मांस. {	१६	६३	मातृ. {	७	१४	मार्ग. {	११	१५१
मांस. {	२५	२२	मातृ. {	१६	२९	मार्ग. {	१८	८७
मांसल	१६	४४	मातृ. {	१९	६६	मार्गण. {	२१	४९
मांसात्पशु.	२३	४२	मातृष्वसेय.	१६	२५	मार्गण. {	२२	३०
मासिक	२०	१४	मातृष्वस्त्रीय.	१६	२५	मार्गशीर्ष....	४	१४
माक्षिक	१९	१०७	मात्र	२३	१७८	मार्गित	२१	१०५
माक्षिक {	१८	९७	मात्रा. {	२१	६२	मार्जन	१४	३३
मागध. {	२०	२	मात्रा. {	२३	१७७	मार्जना	१६	१२१
मागधी. {	१४	७१	माद	२२	१२	मार्जार	१५	६
मागधी. {	१४	९६	माघ. {	१	१८	मार्जिता	१९	४४
माघ	४	१५	माघ. {	४	१६	मार्तंड	३	२९
माध्य ...	१४	७३	माघवक	२१	४१	मार्दगिक....	२०	१३
माठर	३	३१	माघवी	१४	७२	मार्ष्टि	१६	१२१
माढि	२५	८	माघ्वीक....	२०	४१	मालक	१४	६२
माणवक. {	१६	४२	मान. {	७	२२	मालती	१४	७२
माणवक. {	१६	१०६	मान. {	१९	८५	माला	१६	१३५
माणव्य	२२	४१	मानव	१६	१	मालाकार.	२०	५
माणव्य ...	२५	३१	मानस	४	३१	मालाट्टणक.	१४	१६७
माणिमंथ....	१९	४२	मानसौकस्.	१५	२३	मालिक	२०	५
मातंग. {	२०	१९	मानिनी	१६	३	मालुघान....	८	६
मातंग. {	२३	२१	मानुष	१६	१	मालूर	१४	३२
मातरपितरौ.	१६	३७	मानुष्यक....	२२	४२	माल्य	१६	१३५
मातरिन्धन्.	१	६४	माया	२०	११	माल्यवत्	१३	३
मातालि	१	४८	मायाकार...	२०	११	माषपर्णी....	१४	१३८
मातापितरौ.	१६	३७	मायादेवीसुत.	१	१५	माषीण	१९	७
मातामह....	१६	३३	मायु	१६	६२	माष्य	१९	७
मातुल. {	१४	७८	मायूर	१५	४३			
मातुल. {	१६	३१						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
नास	४ १२	मुक्ता	१९ ९३	मुसली.	{	१४ ११९
नासर	१९ ४९	मुक्तावली.	१६	१०५		{	१५ १२
नासिक	१७ ३१	मुक्तास्फोट.	१०	२३	मुसल्य	२१ ४५
नास्म	२४ ११	मुक्ति	५ ६	मुस्तक	१४ १५९
नाहिष	२० ३	मुख.	{	१२ १९	मस्ता	१४ १५९
नाहिथी	१९ ६६		{	१६ ८९	मुहु	२४ १
नितपच	२१ ४८		{	२५ २०	मुहुर्भाषा....	६	१६
नित्र.	{	३ ३०	मुखर	२१ ३६	मुहूर्त	४ ११
	{	१८ ९	मुखवासन.	५	११	मूक	२१ १३
	{	१८ १२	मुख्य.	{	१७ ४०	मूढ	२१ ४८
	{	२३ १६७		{	२१ ५७	मूत	२१ ९५
मिथस्	२३ २५७	मुंड.	{	१६ ४८	मूत्र	१६ ६७
मिथुन	१५ ३८		{	२५ ३४	मूत्रकुच्छ.	१६	५६
मिथ्या	२४ १५	मुंडित.	{	१६ ४८	मूत्रित	२१ ९६
	५	४		{	२१ ८५	मूर्ख	२१ ४८
मिथ्यादृष्टि.	५	४	मुंडिन्	...	२० १०	मूर्छा	१८ १०९
मिथ्याभियोग.	६	१०	मुद्र	४ २४	मुच्छाल	१६ ६१
मिथ्याभिशंसन.	६	१०	मुदिर	...	३ ७	मूर्छित.	{	१६ ६१
मिथ्यामति.	५	४	मुद्रपणी	१८ ११३		{	२३ ८२
मिशी	१४ १३४	मुद्र	१८ ९१	मूर्त.	{	१६ ६१
मिश्रेया	...	१४ १०५	मुधा	२४ ४		{	२१ ७६
मिसि.	{	१४ १०५	मुनि.	{	१ १४	मूर्ति.	{	१६ ७१
	{	१४ १५२		{	१७ ४२		{	२३ ६६
मिहिका.	३	१८	मुनीन्द्र	१ १४	मूर्तिमत	२१ ७६
मिहिर	३ २९	मुरज	७ ५	मूर्द्धन	१६ ९५
मीढ	२१ ९६	मुरमर्दन	...	१ २३	मूर्धाभिषिक्त.	{	१८ १
मीन	१० १७	मुष	१४ १२३		{	२३ ६१
मीनकतन.	१	२६	मुषित	२१ ८८	मूर्वा	१४ ८३
मुकुट	१६ १०२	मुष्क	१६ ७६	मूल.	{	१४ १२
मुकुंद.	{	१ २३	मुष्कक	१४ ३९		{	२३ २००
	{	१६ १२१	मुष्टिबंध	२२ १४	मूलक	१४ १५७
मुकुर	१६ १४०	मुसल	१९ २५	मूलकर्मन्.	२२	४
मुकुल	१४ १६	मुसलिन्	१ २५	मलधन	१९ ८०
मुक्तकंचुक.	८	६						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
मूल्य.	{	१९ ७९	मृत.	{	१८ ११७	मेहू....	{	१६ ७६
		२० ३९			१९ ३			१९ ७६
मूषक		१५ १२	मृतस्नात.		२१ १९	मेदक		२० ४२
मूषा.	{	२० ३३	मृत्तालक....		१४ १३१	मेदस्		१६ ६४
		२५ ३८	मृत्तिका		११ ४	मेदिनी		११ ३
मूषिकपर्णी.		१४ ८८	मृत्यु		१८ ११६	मेदुरा		२१ ३०
मूषित		२१ ८८	मृत्युंजय....		१ ३३	मेधा		५ २
	{	१५ ८	मृत्सा		११ ४	मेधि ...		१९ १५
मृग.		२२ ३०			११ ४	मेध्य		२१ ५५
		२३ २०	मृत्स्ना.	{	११ ४	मेनकात्मजा.		४०
मृगणा		२२ ३०			१४ १३१	मेरु		५२
मृगतृष्णा.		३ ३५	मृदंग		७ ५	मेलक		२२ २९
मृगदेशक.		२० २१	मृदु.	{	२१ ७८			३ २७
मृगधूर्तक.		१५ ५			२३ ९४	मेप....	{	१९ ७६
मृगनाभि.		१६ १२९	मृदुत्वच्.		१४ ४६			१९ १०७
मृगवधाजीव.		२० २१	मृदुल		२१ ७८	मेपकंबल.		१९ १०७
मृगबंधनी.		२० २६	मृद्वीका		१४ १०७	मेह		१६ ५६
मृगमद		१६ १२९	मृध		१८ १०४	मेहन ,....		१६ ७६
मृगया ...		२० २३	मृषा ...		२४ १५	मैत्रावरुणि.		३ २०
मृगयु		२० २१	मृषार्थक....		६ २१	मैत्री		२५ ३९
मृगरौमज.		१६ १११	मृष्ट		२१ ५६	मैत्र्य		२५ ३९
मृगव्य ...		२० २३	मेकलकन्यका.		१० ३२	मैथुन.	{	१७ ५७
मृगशिरस्.		३ २३	मेखला.	{	१६ १०८			२३ १२२
मृगशीर्ष.		३ २३			१८ ९०	मेरेय		२० ४२
मृगांक		३ १४	मेघ		३ ६	मोक्ष.	{	५ ७
मृगादन		१५ १	मेघज्योतिस.		३ १०			१४ ३९
मृगित		२१ १०५	मेघनादानुलासिन्.		१५ ३०	मोघ		२१ ८१
मृगेंद्र		१५ १	मेघनानन्....		१४ १५९	मोघा		१४ ५४
मृजा		१६ १२१	मेघनिर्घोष.		३ ८	मोचक		१४ ३१
मृड		१ ३३	मेघपुष्प ...		१० ५	मोचा.	{	१४ ४६
मृडानी ...		१ ३९	मेघमाला....		३ ८			१४ ११३
मृणाल		१० ४२	मेघवाहन.		१ ४७	मोदक		२५ ३३
मृणाली		२५ ७	मेचक.	{	५ १४	मोरट		१९ ११०
मृत्		११ ४			१५ ३१	मोरटा		१४ ८३

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
नोषक	२०	२४	यतिन्	१७	४४	यष्टि	२५	३८
नोह	१८	१०९	यथा	२४	९	यष्टिमधुक.	१४	१०९
नोक्तिक....	१९	९२	यथाजात.	२१	४८	यष्टृ	१७	८
नौहीन	१९	८	यथातथम्.	२४	१५	याग	१७	१३
नौन	१७	३६	यथायथम्.	२४	१४	याचक	२१	४९
नौराजिक.	२०	१३	यथार्थम् ...	२४	१५	याचनक....	२१	४९
नौवी	१८	८५	यथार्हवर्ण....	१८	१३	याचना	१७	३२
नौलि	२३	१९३	यथास्वम् ...	२४	१४	याचित	१९	३
नौष्टा	२५	५	यथेप्सित....	१९	५७	याचितक....	१९	४
नौहृत	१८	१४	यादि	२४	१२	याच्ञा. {	१७	३२
नौहृतिक्.	१८	१४	यदच्छा	२२	२		२२	६
नैलष्ट	६	२१	यंतृ. {	१८	५९	याजक	१७	१७
नैलच्छदेश.	११	७		२३	५९	यातना	९	३
नैलच्छमुख.	१९	९७	यम. {	१	६१	यातयाम ...	२३	१४५
य.				१७	४९	यातु	१	६३
यकृत	१६	६६		२२	१८	यातुधान	१	६३
यक्ष. {	१	११	यमराज्.	१	६१	यातु	१६	३०
	१	७३	यमुना	१०	३२	यात्रा. {	१८	९५
यक्षकर्दम.	१६	१३३	यमुनाभ्रातृ.	१	६१		२३	१७५
यक्षधूप	१६	१२७	ययु	१८	४५	यादःपाति.	१०	२
यक्षराज्	१	७१	यव	१९	१५	यादस्	१०	२०
यक्षमन्	१६	५१	यवक्य	१९	७	यादसांपाति.	१	६४
यजमान ...	१७	८	यवक्षार	१९	१०८	यान. {	१८	१८
यजुस्	६	३	यवफल	१४	१६१		१८	५८
यज्ञ	१७	१३	यवस	१४	१६७	यानमुख.	१८	५५
यज्ञपुरुष....	१	२२	यवागू	१९	५०	याप्य	२१	५४
यज्ञशेष	१७	२८	यवाग्रज ...	१९	१०८	याप्ययान...	१८	५३
यज्ञांग	१४	२२	यवानिका.	१४	१४५	याम. {	४	६
यज्ञिय	१७	२७	यवास	१४	९१		२२	१८
यज्वन्	१७	८	यवीयस् ...	१६	४३	यामिनी	४	४
यत्	२४	३	यव्य	१९	७	यामुन	१९	१००
यतस्	२४	३	यशःपटह.	७	६	यायजूक ...	१७	८
याति ...	१७	४४	यशस्	६	११	याव	१६	१२५

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
यावत्	१९	१८	युपखंड	२३	१६७	रक्तांग	१४	१४६
यावत्	२३	२४७	युगम्य	१७	१९	रक्तोत्पल.	१०	४२
यावन्	१६	१२८	युष	२१	३५	रक्षःसभ.	२५	२७
याष्टिक	१९	७०	योक्त्र	१९	१३	रक्षस्. {	१	११
यास	१४	९१	योग	२३	२२	रक्षस्. {	१	६३
युक्त	१८	२४	योगेष्ट	१९	१०५	रक्षा	५	१
युक्तरसा	१४	१४०	योग्य	१४	११२	रक्षित	२१	१०६
युग... {	१५	३८	योजन	२५	३०	रक्षिवर्ग	१८	६
युग... {	२३	२४	याजनल्ले.	१४	९१	रक्षण	२२	८
युगकीलक.	१९	१४	यात्र	१९	१३	रंकु	१५	१०
युगंधर. {	१८	५७	योधृ	१८	६१	रंग	१९	१०६
युगंधर. {	२५	३५	योध	१८	६१	रंगाजीव	२०	७
युगपत्	२४	२२	योधसंराव.	१८	१०७	रचना	१६	१३७
युगपत्रक	१४	२२	योनि	१६	७६	रजक	२०	१०
युगपार्श्वग.	१९	६३	योषा	१६	२	रजत. {	१९	९६
युगुल	१५	३८	योषित	१६	२	रजत. {	२३	७९
युगायुग	१८	५७	योतक	१८	२८	रजनी. {	४	४
युग्म	१५	३८	यौतव	१९	८५	रजनी. {	१४	१५३
युग्य. {	१८	५८	यौवत	१६	२२	रजनीमुख.	४	६
युग्य. {	१९	६४	यौवन	१६	४०	रजस्. {	४	२९
युद्ध	१८	१०३	र.			रजस्. {	१६	२१
युधृ	१८	१०६	रंहस्	१	६७	रजस्. {	१८	९८
युवाति	१६	८				रजस्. {	२३	२३२
युवन्	१६	४२				रजस्वला.	१६	२०
युवराज	७	१२	रक्त. {	५	१५	रज्जु	२०	२७
यूथ	१५	४१	रक्त. {	१६	६४	रंजन	१६	१३२
यूथनाथ	१८	३५	रक्त. {	१६	१२४	रंजनी	१४	९५
यूथप ...	१८	३५	रक्तक	१४	७३	रण.... {	१८	१०४
यूथिका ...	१४	७१	रक्तचंदन. {	१६	१३२	रण.... {	२२	८
यूप.... {	१४	४१	रक्तचंदन. {	१९	१११	रण.... {	२३	४९
यूप.... {	२५	३५	रक्तपा ...	१०	२२	रंडा ...	१४	८८
यूपक	२५	१९	रक्तफला....	१४	१३९	रत	१७	५७
यूपकटक.	१७	१८	रक्तसंध्यक.	१०	३६	रतिपति	१	२७
			रक्तसंराह.	१०	४१			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
रत्न.	{	१९ ९३	रत्न	२१ ३८	राजन्.	{	१८ १
रत्नसानु....		२३ १२६	रत्नि	३ ३१	राजन्य	१८ १
रत्नाकर....		१ ५२	रशना	...	१६ १०८	राजन्यक....	१८ ४	
रत्नि	१६ ८६	रदिम.	{	३ ३३	राजन्वत्....	११ १३	
रत्न	{	१४ ३०		{	२३ १३८	राजवला.	१४ १५३	
रत्न	{	१८ ५१		{	५ ७	राजवीजिन्.	१७ २	
रत्नकट्या...		१८ ५५	रस.	{	५ ९	राजराज	१ ७२	
रत्नकार.	{	२० ४		{	७ १७	राजलिङ्ग ...	२३ ९१	
	{	२० ९		{	१९ ९९	राजवंश ...	१७ २	
रत्नगति		१८ ५७	रसगर्भ		२३ २२८	राजवत्	११ १३	
रत्नदु		१४ २६	रसज्ञा ...		१९ १०२	राजवृक्ष	१४ २३	
रत्नांग.	{	१८ ५५	रसना		१६ ९१	राजसदन.	१२ १०	
	{	१८ ५६	रसवती		१९ २७	राजसभा.	२५ ९	
रत्नांगाह्वयनामक. १८		२२		{	११ २	राजसूय	२५ ३१	
रत्निक	१८ ७६	रसा.	{	१४ ८४	राजहंस	१५ २४	
				{	१४ १२३	राजादन.	{	१४ ३५
रत्निन्.	{	१८ ६०	रसांजन		१९ १०१		{	१४ ४५
रत्निन	...	२३ ७६	रसातल		८ १	राजार्ह ...	१६ १२६	
रत्न	१८ ७६	रसाल.	{	१४ ३३	राजि	१४ ६	
रत्न	१८ ४६		{	१४ १६३	राजिका	१९ १९	
रत्न्या.	{	१२ ३		{	१९ ४४	राजिल	८ ५	
	{	१८ ५५	रसित		३ ८	राजीव.	{	१० १९
रत्न	१६ ९१	रसोनक		१४ १४८		{	१० ४१
रत्न	१६ ९१	रह	१८ २३	राज्यांग	१८ १८	
रत्नच्छद.		१६ ९०	रहस	१८ २२	रात्रि	४ ४	
रत्न	८ २	रहस्य		१८ २३	रात्रिचर	१ ६३	
रत्नभस		२५ २१	राका		४ ८	रात्रिचर....	१ ६३	
रत्नणी		१६ ४	राक्षस		१ ६२	राक्षांत	५ ४	
रत्नमा		१ २९	राक्षसी		१४ १२८	राध	४ १६	
रत्नभा		१४ ११३	राक्षा		१६ १२५	राधा	३ २२	
रत्न	१ ६७	रांकव		१६ १११		{	१ २४
रत्नक.	{	१६ ११६	राज		१८ १	राम.	{	१५ ११
	{	२५ १७	राजक		१८ ३		{	२३ १४०
रत्न	६ २२	राजकशेरु.		२३ १८८			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
रामठ	१९ ४०	रुचक.	{	१४ ५१	रेफ.	{	२१ ५४
रामा	१६ ४		{	१४ ७८		{	२३ १३
राम	१७ ४६		{	१९ ४३	रेवतीरमण.		१ २४
राल	१६ १२७		{	१९ १०९	रेवा	१० ३२
राशि.	{	३ २७	राचि.	{	३ ३४	रै.	{	१९ ९०
	{	१५ ४२		{	२३ २९		{	२३ १६
	{	२३ २१४	राचिर	२१ ५२	रोक	८ २
राष्ट्र	२३ १८४	रुच्य	२१ ५२	रोग	...	१६ ५१
राष्ट्रिका	१४ ९४	रुज्	१६ ५१	रोगहारिन्.		१६ ५७
राष्ट्रिय	७ १४	रुजा	१६ ५१	रोचन	१४ ४७
रासभ	१९ ७७	रुत	६ २५	रोचनी.	{	१४ १०८
रास्ना.	{	१४ ११४	रुदित	७ ३५		{	१४ १४६
	{	१४ १४०	रुद्र	२१ ९०	रोचिष्णु	१६ १०१
राहु	३ २६	रुद्र.	{	१ १०	रोचिस्	३ ३४
रिक्तक	२१ ५६		{	१ ३६	रोदन	१६ ९३
रिवथ	१९ ९०	रुद्राणी	१ ३९	रोदनो	१४ ९२
रिंगण	७ ३६	रुधिर.	{	१६ ६४	रोदसी	२३ २३०
रिटि	१ ४३		{	२५ २२	रोदस्यौ	२३ २३०
रिपु	१८ १०	रुध	१५ १०	रोधस्	१७ ७
रिष्ट	२३ ३६	रुशती	६ १८	रोप	१८ ८७
रिष्टि	१८ ८९	रुष्	७ २६	रोमन्	१६ ९९
रीढा	७ २३	रुहा	१४ १५८	रोमन्थ	२५ १९
रीण	२१ ९२	रूप	५ ७	रोमहर्षण.	७ ३५
रीति.	{	१९ ९७	रूपाजीवा.		१६ १९	रोमांच	७ ३५
	{	२३ ६८	रूप्य.	{	१९ ९१	रोष	७ २६
रीतिपुष्प.		१९ १०३		{	१९ ९६	रोहिणी	१९ ६७
रुक्प्रतिक्रिया.		१६ ५०		{	२३ १६०		{	५ १५
रुक्म	१९ ९५	रूप्याध्यक्ष.		१८ ७	रोहित.	{	१० १९
रुक्मकारक.		२० ८	रुषित	२१ ८९		{	१५ १०
		२३ २२६	रोचित	१८ ४८	रोहितक	१४ ४९
रुक्म	२३ २२६	रेणु	१८ ९८	रोहिताश्व.		१ ५८
रुग्ण	२१ ९१	रेणुक	१९ १६	रोहिन्	१४ ४९
रुच्	३ ३४	रेणुका	१४ १२०	रौद्र.	{	७ १७
			रेतस्	१६ ६२		{	७ २०

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
मैमिक	१९ ४२	लता.	{	१४ ९	लस्तक	१८ ८५
मैरव	९ १			१४ ११	लाक्षा.	{	१६ १२५
मैहिण्य.	{	१ २५			१४ ५५		{	२५ १०
	{	५ २६			१४ ७२	लाक्षामसादन.	१४	४१
मैहिष.	{	१४ १६६			१४ १३३	लांगल	१९ १३
	{	१५ १०			१४ १५०	लांगलदंड.	१९	१४
ल.			लतार्क	१४ १४८	लांगलपद्धति.	१९	१४
कुच	१४ ६०	लपन	१६ ८९	लांगलिकी.	१४	११८
क्ष	१८ ८६	लपित.	{	६ १	लांगली.	{	१४ १११
क्षण	३ १७		{	२१ १०७		{	१४ १६८
क्षमण	२१ १४	लब्ध	२१ १०४	लांगूल	१८ ५०
क्षमणा	१५ २५	लब्धवर्ण	१७ ६	लाजा	१९ ४७
क्षमन्.	{	३ १७	लब्धानुज्ञ.	१७	१०	लांछन	३ १७
	{	२३ १२४	लभ्य	१८ २४	लाम	१९ ८०
क्षमी.	{	१ २८	लंबन	१६ १०४	लामज्जक.	१४	१६५
	{	१४ ११२	लंबोदर	१ ४१	लालसा.	{	७ २८
	{	१८ ८२	लय	७ ९		{	२३ २३०
क्षमवित.	२१	१४	ललना	१६ ३	लाला	१६ ६७
क्षय.	{	७ ३३	ललंतिका.	१६	१०४	लालाटिक.	२३	१७
	{	१८ ८६	ललाट	१६ ९२	लाव	१५ ३५
गुड	२५ १८	ललाटिका.	१६	१०३	लासिका	७ ८
ग	३ २७	ललाम	२३ १४३	लास्य	७ १०
गक	२० ४४	ललामक	१६ १३५	लिकुच	१४ ९०
	{	१ ६८	ललित	७ ३१	लिक्षा	२५ १०
	{	१४ १३३	लव.	{	२२ २४	लिखित	१८ १६
	{	२३ २८		{	२१ ६२	लिंग	२३ २५
गुल्य	१४ १६५	लवंग	१६ १२५	लिंगवृत्ति.	१७	५४
गा	२५ ७	लवण.	{	५ ९	लिपि	१८ १६
गोपिका.	१४	१३३		{	१९ ४१	लिपिकर	१८ १५
गा	७ २३		{	२५ २३	लित	२१ ९०
गाशील.	२१	२८	लवणोद	१० २	लितक	१८ ८८
गत	२१ ९१	लवन	२२ २४	लिप्सा	७ २७
ग	२५ १०	लवित्र	१९ १३	लिवि	१८ १६
			लगुन	१४ १४८	लीड	२१ ११०

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
लीला.	{	७ ३२	लोलुप	२१	२२	वचस्	६	१
		२३ १९९	लोलुभ	२१	२२	वचा	१४	१०२
लुठित	१८	५०	लोष्ट	१९	१२		{	१ ५०
लुब्ध	२१	२२	लोष्टभेदन.	१९	१२	वज्र.	{	१४ १०५
लुब्धक	२०	२१		{	१६ १२६		{	२३ १८४
लुलाय	१५	४	लोह.	{	१९ ९८	वज्रनिर्घोष.	३	१०
लृता	१५	१३		{	१९ ९९	वज्रपुष्प	१४	७६
लून	२१	१०३		{	२५ २३	वज्रिन्	१	४५
लृप्त	१८	५०	लोहकारक	२०	७	वंचक	२१	४७
लेख	१	८	लोहपृष्ठ	१५	१६	वंचित	२१	४१
लेखक	१८	१५	लोहल	२१	३७	वंचुक	१५	५
लेखवर्ध	१	४५	लोहाभिसार.	१८	९४		{	१४ २७
लेखा	१४	४	लोहित.	{	५ १५	वंजुल.	{	१४ ३०
लेपक	२०	६		{	१६ ६४		{	१४ ६४
लेश	२१	६२	लोहितक...	१९	९२	वट	१४	३२
लेष्टु	१९	१२	लोहितचंदन.	१६	१२४	वटक ...	२५	१७
लेह	१९	५६	लोहिताश्व.	१	५८	वटी	२०	२७
	{	११ ६	लोहितांग...	३	२५	वडवा	१८	४६
लोक.	{	२३ २				वडवानल.	१	५९
लोकजित्.	१	१३	व.			वडू	२१	६१
लोकमातृ.	१	२९	व	२४	९	वणिक	१९	७८
लोकायत...	२५	३२		{	१४ १६०	वणिकपथ.	२३	५२
लोकालोक.	१३	२	वंश.	{	१७ १	वणिज्या	१९	७९
लोकेश	१	१६		{	२३ २१४	वंटक	१९	८९
लोचन	१६	९३	वंशक	१६	१२६		{	१६ ७८
लोचमस्तक.	१४	१११	वंशरोचना.	१९	१०९	वत्स.	{	१९ ६२
लोघ्र	१४	३३	वक्तव्य	२३	१५९		{	२३ २२
लोपामुद्रा...	३	२०	वक्तृ	२१	३५	वत्सक	१४	६६
लोप्त्र	२०	२५	वक्त्र	१६	८९	वत्सतर	१९	६२
लोमन्	१६	९९	वक्र	२१	७१	वत्सनाभ....	८	११
लोमशा	१४	१३४	वक्षस्	१६	७८		{	४ १३
	{	२१ ७४	वक्ष्ण	१६	७३	वत्सर.	{	४ २०
लोल.	{	२३ २०५	वंग	१९	१०६		{	४ २०
			वचन	६	१	वत्सल	२१	१४
			वचनेस्थित.	२१	२४	वत्सादनी....	१४	८२

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
इ	२१ ३५	वपा.	{	८ २	वराशि	१६ ११६
इन	१६ ८९	वपुस्	१६ ६४	वराह	१५ २
दान्य.	{	२१ ६			१६ ७०	वरिवसित.	२१	१०२
		२३ १६०	वप्र.	{	१२ ३	वरिवस्या....	१७	३५
दावद	२१ ३५			१९ ११	वरिवस्यित.	२१	१०२
व	१८ ११५			१९ १०५	वरिष्ठ	...	१९ ९७
य	२१ ४५	वमयु.	{	१६ ५५	वरिष्ठ	२१ १११
य	१४ ७			१८ ३७	वरी	१४ १००
व्या	१९ ६९	वमि	१६ ५५	वरीयस्	२३ २३६
त्री	२० ३१	वयस्	२३ २३१			
		१४ १३३	वयस्था.	{	१४ ५८	वरुण.	{	१ ६४
		१६ २			१४ १३७			३ २
		१६ ९			१४ १४४			१४ २५
		२३ १०२	वयस्य.	{	१६ ४२	वरुणात्मजा.	२०	३९
					१८ १२	वरुथ	१८ ५७
		१० ३	वयस्या	१६ १२	वरुथिनी....	१८	७८
		१४ १			१६ १२४	वरेण्य	२१ ५७
		२३ १२६	वर.	{	२२ ८	वर्कर	२० २३
तिक्तिका.	१४	८५			२३ १७३	वर्ग	१५ ४१
प्रिय	१५ १९	वरटा.	{	१५ २५	वर्चस्	२३ २३२
माक्षिका.	१५	२७			१५ २७	वर्चस्क	...	१६ ६८
मालिन्.	१	२१	वरण.	{	१२ ३			१७ १
मुह	१९ १७			१४ २५	वर्ण.	{	१८ ४२
झागाट...	१४	९९	वरंड	२५ १८			२३ ४८
समह....	१४	४	वरत्रा.	{	१८ ४२	वर्णक.	{	१६ १३३
स्पति....	१४	६			२० ३१			२५ ३८
युज	१८ ४५	वरद	२१ ७	वर्णित	२१ ११०
ता.	{	१६ २	वरवर्णिनी.	{	१६ ४	वर्गिन्	१७ ४३
		२३ ७४			१९ ४१	वर्तक.	{	१५ ३५
यक	२१ ४९	वरांग.	२३ २६			२३ ११
कस्	१५ ३	वरांगक	१४ १३४	वर्तन.	{	१९ १
					१० ४३			२१ २९
	१४ ८२	वराटक.	{	२० २७	वर्तनी	११ १५
					२५ ३८	वर्ति	१६ १३३
	१४ ४	वरारोहा	१६ ४	वर्तिका	...	१५ ३५

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
वर्तिष्णु	२१	२९	वल्क	१४	१२	वसुंधरा	११	३
वर्तुल	२१	६९	वल्कल	१४	१२	वसुमती	११	३
वर्त्मन्. {	११	१५	वल्गित	१८	४८	वस्तु	२५	१३
	२३	१२१	वल्गु	२३	१४४	वस्ति ...	१६	११
वर्धक	१४	९०	वल्मीक	११	१४	वस्त्र ...	१६	११५
वर्धकि	२०	९	वल्मीकी	७	३	वस्त्रयोनि ...	१६	११
वर्धन. {	२१	२८	वल्म. {	२१	५३	वस्त्रवेश्मन्. १६	१२	२०
	२२	७		२३	१३७	वस्त्र	१९	७९
वर्धमान	१४	५१	वल्मरि	१४	१३	वस्त्रसा	१६	६६
वर्धमानक. १९	३२		वल्मी	१४	९	वह	१९	६३
वर्धिष्णु	२१	२८	वल्मूर	१६	६३	वाहि. {	१	५६
वर्मन्	१८	६४	वशा	२२	८		३	२
वर्मित	१८	६५	वशक्रिया....	२२	४	वह्निशिख....	१९	१०६
वर्य	२१	५७		१८	३६	वह्निसंज्ञक. १४	८०	
वर्या	१६	७	वशा. {	१९	६९		२३	२५०
वर्वणा	१५	२६		२३	२१७	वा. {	२४	९
	३	११	वाशिक	२१	५६		२४	१५
वर्ष. {	११	६	वाशिर. {	१४	९७	वाक्पाति	२१	३५
	२३	२३४		१९	४१	वाक्य	६	२
वर्षवर	१८	९	वश्य	२१	२५	वागीश	२१	३५
वर्षा	४	१९	वषट्	२४	८	वागुरा	२०	२६
वर्षाभि	१०	२४	वषट्कृत....	१७	२७	वागुरिक	२०	१४
वर्षाभ्वी	१०	२४	वसाति	२३	६७	वाग्गमन्....	२१	३५
वर्षीयस्	१६	४३	वसन	१६	११५	वाङ्मुख....	६	९
वर्षोपल	३	१२	वसंत	४	१८	वाच	६	१
वर्ष्मन्. {	१६	७०	वसा	१६	६४	वाचंयम	१७	४२
	२३	१२३		१	१०	वाचक	६	२
वलज	२३	३१	वसु. {	१४	८१	वाचस्पति. ३	२४	
वलजा	२३	३१		१९	९०	वाचाट ...	२१	३६
वलभी	१२	१५		२३	२२९	वाचाल ...	२१	३६
वलय	१६	१०७	वसुक. {	१४	८०	वाचिक ...	६	१७
वलयित	२१	९०		१९	४२	वाचोगुक्तिपट्ट. २१	३५	
वलीक	१२	१४	वसुदेव	१	२३	वाज	१८	८७
वलीमुख....	१५	३	वसुधा ...	११	३			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
जपेय	२५	३१	वान	१४	१५	वारि ...	१०	३
जिदंतक.	१४	१०३	वानप्रस्थ. {	१४	२८	वारिद	३	७
जिन्. {	१५	३३	वानर	१७	३	वारिपर्णी....	१०	३८
	१८	४४		१५	३	वारिप्रवाह.	१३	५
	२३	१०७		१४	६	वारिवाह....	३	६
जिशाला.	१२	७	वानीर	१४	३०	वारी	१८	४३
जा	७	२७	वानेय	१४	१३१	वारुणी	२३	५२
टी	२५	४२	वापी	१०	२८	वार्त. {	१६	५७
व्यालका.	१४	१०७	वाप्य	१४	१२६		२३	७६
डव. {	१	५९	वाम	२३	१४४	वार्ता.... {	६	७
	१७	४		१	३४		१९	१
	१८	४६		३	३		२३	७५
डवानल.	१	५९	वामन. {	१६	४६	वार्ताकी....	१४	११४
डव्य	२२	४१	२१	७०	वार्तावह ...	२०	१५	
णि	२०	२८	वामल ...	११	१४	वार्धक	१६	४०
णिज	१९	७८	वामलाचना.	१६	३	वार्धुषि	१९	५
णिज्य. {	१९	२	वामा	१६	२	वार्धुषिक....	१९	५
	१९	७९		१८	४६		वर्मण	२२
णिनी	२३	११२	वायदंड	२०	२८	वार्षिक	१५	१५०
णी	६	१	वायस	१५	२०	वाल	१६	९५
त	१	६६	वायसाराति.	१५	१५	वालधि	१८	५०
तक	१४	१४९	वायसी	१४	१५१	वालपाश्या.	१६	१०३
तकिन्.	१६	५९	वायसोली.	१४	१४४	वालहस्त ...	१८	५०
तपोथ....	१४	२९	वायु	१	६४	वालुक	१४	१२१
तप्रमी....	१५	७	वायुसख....	१	५८	वालुका	२३	७३
तमृग	१५	७	वार	१०	३	वालक	१६	१११
तरोणिन्.	१६	५९	वार. {	१५	३९	वावदुक	२१	३५
तायन....	१२	९		२३	१६१		वाशिका....	१४
तायु ...	१५	८	वारण	१८	३४	वाशित	६	२५
तूल	२३	१९६	वारणबुसा.	१४	११३	वास	१२	६
त्या	२३	१९६	वारबाण	१८	१६	वासक	१४	१०३
तसक	१८	६०	वारमुल्या.	१६	१९	वासगृह	१२	८
दित्र	७	५	वारन्धी	१६	१९	वासंती	१४	७२
य	७	५	वाराही	१४	१५१			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
वासयोग	१६	१३४	विकासिन्.	२१	३०	विच्छाय	२५	२६
वासर	४	२	विकिर	१५	३३	विजन. {	१८	२२
वासव	१	४५	विकीरण....	१४	८०	{	२३	८२
वासस्	१६	११५	विकुर्वाण.	२१	७	विजय	१८	११०
वासित. {	१६	१३४	विकृत. {	७	१९	विजिल	१९	४६
{	१९	४६	{	१६	५८	विज्ञ	२१	४
वासिता	२३	७५	विकृति	२२	१५	विज्ञात	२१	९
वासुकि	८	४	विक्रम. {	१८	१०२	विज्ञान	५	६
वासुदेव	१	३०	{	२३	१४१	विट्ट. {	१६	६८
वासू	७	१४	विक्रय	१९	८२	{	१९	१
वास्तु	१२	१९	विक्रयिक.	१९	७९	विट	२५	१७
वास्तुक	१४	१५८	विक्रांत ...	१८	७७	विटंक	१२	१५
वातोष्पाति.	१	४६	विक्रिया ...	२२	१५	विटप. {	१४	१४
वास्त्र	१८	५४	विक्रेत	१९	७९	{	२३	१३१
वाह.... {	१८	४४	विक्रेय	१९	८२	विटपिन्	१४	५
{	१९	८८	विक्लव	२१	४४	विट्खदिर.	१४	५०
वाहद्विषद्.	१४	४	विक्षाव ...	२२	३७	विट्चर	२०	२३
वाहन	१८	५८	विगत ...	२१	१००	विडंग	१४	१०६
वाहस	८	५	विगतातर्वा.	१६	२१	वितंडा	२५	९
वाहित्य	१८	३९	विग्र	१६	४६	वितथ	६	२१
वाहिनी. {	१८	७८	{	१६	७०	वितरण	१७	२९
{	१८	८१	विग्रह. {	१८	१८	वितर्दि	१२	१६
{	२३	११२	{	१८	१०४	वितास्ति	१६	८४
वाहिनीपति.	१८	६२	{	२२	२२	वितान. {	१६	१२०
वि	१५	३३	विघस	१७	२८	{	२३	११३
विंशति	१९	८३	विघ्न	२२	१९	वितुन्न	१४	१४९
विकंकत	१४	३७	विघ्नराज	१	४१	{	१४	१२६
विकच	१४	७	विचक्षण.	१७	६	वितुन्नक. {	१९	३७
विकर्तन	३	२९	विचयन ...	२२	३०	{	१९	१०९
विकलांग.	१६	४६	विचर्चिका.	१६	५३	{	१९	९०
विकसा	१४	९०	विचारणा.	५	२	वित्त. {	२१	९
विकासित.	१४	८	विचारित.	२१	९९	{	२१	९९
विकस्वर.	२१	३०	विचिकित्सा.	५	३	विदर	२२	५
विकार	२२	१५	विच्छंदक....	१२	११	विदल	२५	३२

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
विदारक	१०	१०	विधुत	२१	१०७	विपुल	२१	६१
विदारी. {	१४	२०	विधुतुद	३	२६	विप्र. {	१७	२
	१४	११०	विधुर ...	२२	२०		१७	४
विदारिगंधा. १४	११५		विधुवन्	२२	४	विप्रकार	२२	१५
विदित. {	२१	१०८	विधूनन	२२	४	विप्रकृत	२१	४१
	२१	१०९	विधेय	२१	२४	विप्रकृष्टक. २१		६८
विदिग्	३	५	विनयग्राहिन्. २१	२४		विप्रतीसार. ७		२५
विदु	१८	३७	विना	२४	३	विप्रयोग	२२	२८
विदुर. {	१४	३०		१	१४	विप्रलब्ध....	२१	४१
	२१	३०	विनायक. {	१	४०	विप्रलंभ. {	७	३६
विदुल	१४	३०		२३	६		२२	२८
विद्व	२१	९९	विनाश	२२	२२	विप्रलाप....	६	१६
विद्वकर्णी. १४	८४		विनाशोन्मुख. २१	९१		विप्रश्रिका. १६		२०
विधाधर	१	११	विनीत. {	१८	४४	विप्रुष	१०	६
विद्युत्	३	९		२१	२५	विप्रुय	२२	१४
विद्रधि	१६	५६	विंदु	२१	३०	विबुध	१	७
विद्रव	१८	१११	विन्ध्य	१३	३	विभव	१९	९०
विद्रुत	२१	१००	विन्न. {	२१	९९	विभाकर....	३	२८
विद्रुम	१९	९३		२१	१०४	विभावरी ...	४	४
विद्रुमलता. १४	१२९		विन्यस्त	२३	४५		१	५९
विद्रुस्. {	१७	५	विपक्ष	१८	११	विभावसु {	३	३०
	२३	२३५	विपंची	७	३		२३	२२७
विद्वेष ...	७	२५	विपण	१९	८३	विभीतक... १४		५८
विधवा	१६	११	विपणि. {	१२	२	विभूति	१	३८
				२३	५२	विभूषण	१६	१०१
विधा. {	२०	३८	विपत्ति	१८	८२	विभ्रम. {	७	३१
	२३	१०१	विपथ	११	१६		२३	१४२
विधातृ	१	१७	विपद् ...	१८	८२	विभ्राज्	१६	१०१
	१	१७	विपर्यय	२२	३३	विमनस्	२१	८
विधि. {	४	२८	विपर्याप्त	२२	३३	विमर्दन	२२	१३
	१७	४०	विपश्चित्	१७	५	विमला	१४	१४३
	२३	१००	विपाट्	१०	३३	विमातृज....	१६	२५
विधिदर्शिन. १७	१६		विपादिका. १६	५२		विमान	१	५१
विधु. {	१	२२	विपाशा ...	१०	३३	वियत्	२	२
	३	१४	विपिन	१४	१			
	२३	९९						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
वियद्गता	१	५२	विवाद	६	९	विश्वकटु....	२०	२२
वियम	२२	१८	विवाह	१७	५६	विश्वकर्मन्.	२३	१०९
वियात	२१	२५	विविक्त. {	१८	२२	विश्वद्रव्यञ्.	२१	३९
वियाम	२२	१८	{	२३	८२	विश्वभेषज.	१९	३८
विरजस्तमस्.	१७	४५	विविध	२१	९३	विश्वंभर	१	२२
विरति	२२	३८	विवेक	१७	३८	विश्वंभरा....	११	२
विरल ...	२१	६६	विव्वोक ...	७	३१	विश्वरूप	१	२३
विराज्	१८	१	विश	१७	२	विश्ववसु ...	१	१०
विराव	६	२३	विश	२३	२१४	विश्वसृज्....	१	१७
विरिच	१	१७	विशंकट....	२१	६०	विश्वस्ता....	१६	११
विरिचि	१	१७	विशद	५	१२	विश्वा	१४	९९
विरिण	२३	५७	विशर	१८	११५	विश्वास	१८	२३
विरूपाक्ष....	१	३४	{	१४	८३	विष्	१८	६८
विरोचन. {	३	३०	विशल्या. {	१४	१३६	विष. {	८	९
{	२३	१०८	{	२३	१५५	{	२३	२२३
विरोध	७	२५	विशसन	१८	११४	विषधर	८	७
विरोधन	२२	२१	विशाख	१	४२	विषमच्छद.	१४	२३
विरोधोक्ति.	६	१६	विशाखा	३	२२	{	५	७
विलक्ष	२१	२६	विशाय	२२	३२	विषय. {	११	८
विलक्षण....	२२	२	विशारण....	१८	११२	{	२२	११
विलंबित....	७	९	विशारद	२३	९५	{	२३	१५२
विलंभ	२२	२८	विशाल	२१	६०	विषयि	५	८
विलाप	६	१६	विशालता.	१६	११४	विषवैद्य	८	११
विलास	७	३१	विशालत्वञ्.	१४	२३	विषा	१४	९९
विलीन ...	२१	१००	विशाला	१४	१५६	विषाक्त ...	१८	८८
विलेपन. {	१६	१३३	विशाला	१४	१५६	विषाण ...	२३	५६
{	२२	२७	विशिख	१८	८६	विषाणी	१४	११५
विलेपी	१९	५०	विशिखा	१२	३	विषुव	४	१४
विवध	२३	९६	विशेषक	१६	१२३	विषुवत	४	१४
विवर	८	१	विश्राणन....	१७	२९	विष्किर	१५	३३
विवर्ण	२०	१६	विश्राव	२२	२८	विष्कंभ... ..	१२	१७
विवश	२१	४४	विश्रुत	२१	९	विष्टप	११	६
विवस्वत. {	३	२९	{	१	१०	विष्टर	२३	१६९
{	२३	५७	विश्व. {	१९	३८	विष्टरश्रवस्.	१	१८
			{	२१	६५	विष्टि	९	३

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
विष्ठा	१६	६८	विघ्नसा	१६	४१	वीरपाण	१८	१०३
विष्णु	१	१८	विहग	१५	३२	वीरभार्या....	१६	१६
विष्णुक्रांता. १४	१०४		विहंग	१५	३२	वीरमातृ	१६	१६
विष्णुपद	२	२	विहंगम ...	१५	३२	वीरवृक्ष	१४	४२
विष्णुपदी....	१०	३१	विहंगिका....	२०	३०	वीराशंसन. १८	१००	
विष्णुरथ	१	३१	विहसित	७	३५	वीरसू	१६	१६
विष्य	२१	४५	विहस्त	२१	४३	वीरहृत्	१७	५३
विष्वक्	२४	१३	विहापित....	१७	२९	वीरधृ	१४	९
विष्वक्सेन. १	१९		विहायस्. {	२	२	वीर्य. {	१०	२९
विष्वक्सेनप्रिया १४	१५१		विहायस्. {	१५	३२	वीर्य. {	१६	६२
विष्वक्सेना. १४	५६		विहायस	२	२	वीर्य. {	२३	१५४
विष्वद्व्यङ्. २१	३४		विहार	२२	१६	वीवध	२३	९६
विसंवाद	७	३६	विह्वल	२१	४४	वृक	१५	७
विसर	१५	३९	वीकाश	२३	२१५	वृकधूप. {	१६	१२८
विसर्जन	१७	२९	वीचि	१०	५	वृकधूप. {	१६	१२९
विसर्पण	२२	२३	वीणा	७	३	वृक्वण	२१	१०३
विसार	१०	१७	वीणादंड	७	७	वृक्ष	१४	५
विसारिन्	२१	३१	वीणावाद....	२०	१३	वृक्षभेदिन्. २०	३४	
विस्तृत	२१	८६	वीत	१८	४३	वृक्षरुहा	१४	८२
विस्तृत्वर	२१	३१	वीतंस	२०	२६	वृक्षवाटिका. १४	२	
विस्मर	२१	३१	वीति	१८	४३	वृक्षादनी. {	१४	८२
विस्तर	२२	२२	वीतिहोत्र....	१	५६	वृक्षादनी. {	२०	३४
विस्तार. {	१४	१४	वीथी. {	१४	४	वृक्षाम्ल	१९	३५
विस्तृत	२१	८६	वीथी. {	२३	८७	वृक्षाम्ल. {	४	२३
विस्फार	१८	१०८	वीध	२१	५५	वृजिन. {	२१	७१
विस्फोट....	१६	५३	वीनाह	१०	२७	वृजिन. {	२३	१०९
विस्मय	७	१९	वीर. {	७	१७	वृत्त	२१	९२
विस्मयान्वित. २१	५६		वीर. {	७	१८	वृत्ति. {	१२	३
विस्मृत	२१	८६	वीर. {	१८	७७	वृत्ति. {	२२	८
विस्व	५	१२	वीरण	१४	१६४	वृत्ति. {	२१	६९
विस्वम्. {	१८	२३	वीरतर	१४	१६४	वृत्ति. {	२१	९२
	२३	१३५	वीरतरु	१४	४५	वृत्ति. {	२३	७८
			वीरपत्नी....	१६	१६	वृत्तांत. {	६	७
						वृत्तांत. {	२३	६३

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
वृत्ति.	{	१९ १	वृषण	१६ ७६	वेधसू.	{	१ १७	
		१९ २	वृषदंशक	१५ ६		{	२३ २२९	
		२३ ७३	वृषध्वज	१ ३६	वेधित	२१ ९९		
वृत्र	२३ १६४		वृषन्	१ ४५	वेपथु	७ ३८		
वृत्रहन्	१ ४५		वृषभ	१९ ५९	वेमन् ...	२० २८		
वृथा. {	२३ २४८		वृषल	२० १	वेला	२३ १९८		
	२४ ४		वृषस्यंती	१६ ९	वेल्ल	१४ १०६		
वृद्ध. {	१४ १२२		वृषा. {	१ ४५	वेल्लज	१९ ३५		
	१६ ४२			१४ ८७	वेल्लित. {	२१ ७१		
	२३ १००		वृषाकपायी. २३ १५६			२१ ८७		
वृद्धस्व	१६ ४०		वृषाकापि	२३ १३०	वेश	१२ २		
वृद्धदारक. १४ १३७			वृषी	१७ ४६	वेशंत	१० २८		
वृद्धनाभि. १६ ६१			वृष्टि	३ ११	वेश्मन्	१२ ४		
वृद्धश्रवस्. १ ४४			वृष्णि	१९ ७६	वेश्मभू	१३ १९		
वृद्धसंघ	१६ ४०		वेग	२३ २०	वेश्या	१६ १९		
वृद्धा	१६ १२		वेगिन्	१८ ७३	वेश्याजनसमाश्रय. १२१२			
	१८ १९		वेणि	१६ ९८	वेष	१६ ९९		
वृद्धि. {	२२ ९		वेणी	१४ ६९	वेषगार	१९ ३५		
वृद्धिजीविका. १९ ४			वेणु	१४ १६१	वेष्टित	२१ ९०		
वृद्धिमत्	२३ ८५		वेणुक ...	१८ ४१	वेहत	१९ ६९		
वृद्धोक्ष	१९ ६१		वेणुध्म	२० १३	वै. {	२४ ५		
वृद्धयाजीव. १९ ५			वेतन	२० ३८		२४ १५		
वृत्त	१३ १५		वेतस	१४ २९	वैकाक्षिक....	१६ १३६		
वृन्द	१५ ४०		वेतस्वत्	११ ९	वैकुण्ठ	१ १८		
वृन्दभेद	१५ ४१		वेताल	२५ २१	वैजनन	१६ ३९		
वृन्दारक. {	१ ९		वेत्रवती	१० ६४	वैजयंत	१ ४९		
	२३ १६		वेद	६ ३	वैजयंतिक. १८ ७१			
वृन्दिष्ठ	२२ ११२		वेदना ...	२२ ६	वैजयंतिका. १४ ६५			
वृश्चिक. {	१५ १४		वेदि	१७ १८	वैजयंती	१८ ९९		
	२३ ७		वेदिका	१२ १६	वैज्ञानिक	२१ ४		
	३ २७		वेध	२२ ८	वैणव. {	१४ १८		
	४ २४		वेधनिका	२० ३४		१७ ४६		
	१४ १०३		वेधमुख्यक. १४ १३५		वैणविक	२० १३		
वृष. {	१४ ११६							
	१९ ५९							
	२३ २२१							

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
वैणिक	२०	१३	व्यंजक	७	१६	व्याधिघात.	१४	२४
वैतंसिक	२०	१४	व्यंजन. {	२३	११६	व्याधित	१६	५८
वैतनिक	२०	१५		२५	२३	व्यान	१	६७
वैतरणी	९	२	व्यङ्गबक	१४	५१	व्यापाद	५	४
वैतालिक.	१८	९७	व्यत्यय	२२	३३	व्याम	१६	८७
वैदेहक. {	२०	३	व्यत्यास	२२	३३	व्याल. {	८	७
	१९	७८	व्यथा	९	३		२३	१९६
वैदेही	१४	९६	व्यघ	२२	८	व्यालग्राहिन्.	८	११
वैद्य	१६	५७	व्यच्च	११	१६	व्यावृत्त	२१	९२
वैद्यमातृ	१४	१०३	व्यय	२२	१७	व्यास ...	२२	२२
वैधातृ	१	५४	व्यलीक	२३	१२	व्याहार	६	१
वैधेय	२१	४८	व्यवधा	३	१२	व्युत्थान	२३	११८
वैनतेय	१	३१	व्यवसाय....	२३	२१३	व्युष्टि	२३	३८
वैनीतिक	१८	५८	व्यवहार	६	९	व्यूढ	२३	४५
वैमात्रेय	१६	२५	व्यवाय	१७	५७	व्यूढकंकट.	१८	६५
वैयाघ्र	२०	५३	व्यसन ...	२३	१२०	व्यूति	२०	२८
वैर	७	२५	व्यसनार्त....	२१	४३		१५	३९
वैरनिर्यातन.	१८	११०	व्यस्त	२१	७२	व्यूह. {	१८	७९
वैरशुद्धि	१८	११०	व्याकल	२१	४२		२३	२३९
वैरिन्	१८	१०	व्याकोश	१४	७	व्यूहपार्ष्णि.	१८	७९
वैवाधिक	२०	१५	व्याघ्र. {	१५	१	व्यौकार	२०	७
वैवस्वत	१	६२		२१	५९	व्योमकेश.	१	३६
वैशाख. {	४	१६	व्याघ्रनख...	१४	१२९	व्योमन्	२	१
	१९	७४	व्याघ्रपाद....	१४	३७	व्योमयान.	१	५१
वैश्य	१९	१	व्याघ्रपुच्छ.	१४	५०	व्योष	१९	१११
वैश्रवण	१	७२	व्याघ्राट	१५	१५	व्रज.... {	१५	३९
वैश्वानर	१	५६	व्याघ्री	१४	९३		२३	३०
वैसारिण	१०	१७	व्याज. {	७	३०	व्रज्या. {	१७	३६
वौषट्	२४	८		७	३३		१८	९५
व्यक्त	२३	६२	व्याड	२३	४२	व्रण	१६	५४
व्यक्ति	४	३१	व्याडायुध.	१४	१२९	व्रणकार्य....	२३	१८९
व्यग्र	२३	१९०	व्याघ	२०	२१	व्रत	१७	३८
व्यगा	२३	१७७	व्याधि. {	१४	१२६	व्रताति. {	१४	९
व्यजन	१६	१४०		१६	५१		२३	६७

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
व्रातिन्	१७	७	शक्रधनुस् .	३	१०	शतमूली ...	१४	१००
व्रश्चन	२०	३३	शक्रपादप. .	१४	५३	शतयाष्टिका. .	१६	१०५
व्रात	१५	३९	शक्रपुष्पिका. .	१४	१३६	शतवीर्या....	१४	१५९
व्रात्य	१७	५४	शक्र	२१	३६	शतवेधिन. .	१४	१४१
व्रीडा	७	२३	शंकर	१	३२	शतहृदा	३	९
व्रीहि. {	१४	१९	शंकु. {	१०	२०	शतांग	१८	५१
	१९	१५		१४	८	शतावरी	१४	१०१
	१९	२१		१८	९३			
व्रीहिभेद. .	१९	२०		१	७५	शत्रु. {	१८	९
व्रहेय	१९	६	शंख. {	१०	२३		१८	११
श.				१४	१३०	शनैश्चर	३	२६
शंब	१	५०		२३	१८	शनैस्	२४	१७
शकट	१८	५२	शंखनक. .	१०	२३	शपथ	६	९
शकल	३	१६	शंखिनी	१४	१२६	शपन	६	९
शकुलिन....	१०	१७	शची	१	४८	शफ	१८	४९
शकुन	१५	३२	शचीपति....	१	४६	शफरी	१०	१८
शकुनि	१५	३२	शटी ...	१४	१५४	शबर	२०	२०
शकुंत. {	१	२७	शठ	२१	४६	शबरालय. .	१२	२०
	२३	५८	शणपर्णी....	१४	१४९	शबल	५	१७
शकुंति	१५	३२	शणपुष्पिका. .	१४	१०७	शबली	१९	६७
शकुल	१०	१९	शणसत्र	१०	१६		५	७
शकुलाक्षका. .	१४	१५९	शत	१९	८४	शब्द. {	६	२
शकुलादनी. {	१४	८६	शतकोटि. .	१	५०		६	२२
	१४	१११	शतद्रु	१०	३३	शब्दग्रह	१६	९४
शकुलार्भक. .	१०	१७	शतपत्र	१०	४०	शब्दन	२१	३८
शकुत्त	१६	६७	शतपत्रक....	१५	१६	शम	२२	३
शकुत्कारि. .	१९	६२	शतपदी	१५	१३	शमथ	२२	३
	१८	१९	शतपर्वन्....	१४	१६१	शमन. {	१	६१
शक्ति. {	१८	१०२	शतपर्विका. {	१४	१०२		१७	२६
	२३	६६		१४	१५८	शमनस्वस्. .	१०	३२
शक्तिधर. .	१	४३	शतपुष्पा. .	१४	१५२	शमल	१६	६७
शक्तिहेतिक. .	१८	६९	शतप्रास	१४	७६	शमित	२१	९७
	१	४५	शतमन्यु	१	४५	शमी. {	१४	५२
शक्र. {	१४	६६	शतमान....	२५	३४		१९	२३
						शमीधान्य. .	१९	२४

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
शमीर	१४ ५२	शराह	२१ २८	शष्प	१४ १६७
शंपा	३ ९	शराव	१९ ३२	शस्त.	{	४ २६
शंब	...	१ ५०	शरावती	१० ३४		{	२१ १०९
शंबर.	{	१० ४	शरासन	१८ ८३	शस्त्र.	{	१८ ८२
	{	१५ १०	शरीर	१६ ७०		{	२३ १७९
शंबरारि	१ २७	शरीरास्थि.	१६ ६९	शस्त्रक	१९ ९८	
शंबरी	१४ ८७	शरीरिन्	४ ३०	शस्त्रमार्ज.	२० ७	
शंबल	२५ ३४		{	११ ११	शस्त्राजीव.	१८ ६७	
शंबाकृत	१९ ९	शर्करा.	{	१९ ४३	शस्त्री	१८ १२
शंबूक	१० २३		{	२३ १७५	शाक.	{	१४ १३६
शंभली	१६ १९	शर्करावत्.	११ ११			{	१९ ३४
शंभु.	{	१ ३२	शर्करिल	११ ११	शाकट	१९ ६४
	{	२३ १३५	शर्मन्	४ २५	शाकुनिक.	२० १४	
शम्या	१९ १४	शर्व	१ ३२	शाक्तीक.	१८ ६९	
शम्याक	१४ २३	शर्वरी	४ ३	शाक्यमुनि.	१ १४	
शय	१६ ८१	शर्वाणी	१ ३९	शाक्यसिंह.	१ १५	
शयन.	{	७ ३६	शल	१५ ७	शाखा	...	१४ ११
	{	१६ १३८	शलभ	१५ २८	शाखानगर.	१२ २	
शयनीय	१६ १३७	शलल	१५ ७	शाखामृग.	१५ ३	
शयालु	२१ ३३	शलली	१५ ७	शाखाशिफा.	१४ ११	
शयित	२१ ३३	शलाटु	१४ १५	शाखिन्	...	१४ ५
शयु	८ ५	शलक	२३ १३	शांखिक	२० ८
शय्या	१६ १३७		{	१४ ५३	शाटक	...	२५ ३३
शर....	{	१४ १६२	शल्य.	{	१५ ७	शाटी	२५ ३८
	{	१८ ८७		{	१८ ९३	शाठ्य	७ ३०
शरजन्मन्.	१	४१	शव	१८ ११८	शाण	२० ३२
शरण	२३ ५३	शश	१५ ११	शाणी	२५ ९
	{	४ १९	शशधर	३ १५	शांडिल्य	१४ ३२
शरद्.	{	४ २०	शशलोमन्.	१९ १०७	शात.	{	४ २५	
	{	२३ ९३	शशादन	१५ १४		{	२१ ९१
शरभ	१५ ११	शशोर्ण	१९ १०७	शातकुंभ.	१९ ९४	
शरव्य	१८ ८६		{	२३ २४४	शातला	१४ १४३
शराभ्यास.	१८ ८६		शश्वत्.	{	२४ १	शान्नव	१८ ११
शरारि	१५ २५		{	२४ ११			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
शाद.	{	१० ९	शाष्कलिक.	२२	४०	शिपिविष्ट.	२३	३४
		२३ ९०	शासन	१८	२५	शिफा	१४	११
शादहरित.	११	१०	शास्तु	१	१४	शिफाकंद.	१०	४३
शाद्वल	१०	१०	शास्त्र	२३	१७९	शिविका	१८	५३
शांत	२१	९७	शास्त्रविद्...	२१	६	शिविर	१८	३३
शांति	२२	३	शिक्य	२०	३०	शिवा	१९	२३
शाबर	१४	३३	शिक्यित....	२१	८९	शिरस	१६	९५
शांवरी	२०	११	शिक्षा	६	४	शिरस्त्र	१८	६४
शार	२३	१६६	शिक्षित	२१	४	शिरस्य	१६	९८
शारद.	{	१४ २३	शिशुंढ	१५	३१	शिरा	१६	६५
		२३ ९५	शिशुंढक.	१६	९६	शिरीष	१४	६३
शारदी	१४	१११	शिवर. {	१३ ४	१४ १२	शिरोग्र	१४	१२
शारिफल....	२०	४६				शिरोधि	१६	८८
शार्कर	११	११	शिखरिन् {	१३ १	२३ १०६	शिरोरत्न....	१६	१०२
शार्ङ्ग	१	३०				शिरोरुह	१६	९५
शार्ङ्गिन्	१	१९				शिरोस्थि....	१६	६९
शार्दूल. {	१५ १	२१ ५९	शिखा. {	१५ ३१	१६ ९७	शिल	१९	२
				२३ १९		शिला. {	१२ १३	४
शार्बर	२३	१८८						
शाल. {	१० १९	१४ ५	शिखावत्.	१	५८	शिलाजतु.	१९	१०४
			शिखावल.	१५	३०	शिली	१०	२४
शाला. {	१२ ६	१४ ११	शिखिग्रीव.	१९	१०१	शिलीमुख.	२३	१८
			शिखिन्. {	१५ ३०	२३ १०६	शिलोच्चय.	१३	१
शालावृक...	२२	१२				शिल्प	२०	३५
शालि ...	१९	२४	शिखिवाहन.	१	४२	शिल्पिन्	२०	५
शालीन	२१	२६	शिशु. {	१४ ३१	१९ ३४	शिल्पिशाला.	१२	७
शालूक	१०	३८				शिव. {	१ ३२	४ २५
शालूर	१०	२४	शिशुज	१९	११०			
शालेय. {	१४ १०५	१९ ६	शिशित	६	२४	शिवक	१९	७३
			शिंजिनी....	१८	८५	शिवमल्ली....	१४	८१
शात्मलि	१४	४६	शितशूक ...	१९	१५			
शात्मलीवेष्ट.	१४	४७	शिति	२३	८३	शिवा. {	१ ३९	१४ ५२
शावक	१५	३८	शितिकंठ.	१	३४			
शाश्वत	२१	७२	शितिसारक.	१४	३८			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
शिवा.	{	१४ १२७	शुक.	{	१४ १३२	शुभ्रदंती....	३	५
		१५ ५			१५ २१	शुभ्रांशु....	३	१४
		२३ २१२	शुकनास....	१४	५७	शुल्क....	१८	२७
शिशिर.	{	३ १९	शुक्त....	२३	८३		१९	९७
		४ १८	शुक्ति.	{	१० २३	शुल्ब.	{	२० २७
शिशु....	१५	३८			१४ १३०		२५	२३
शिशुक....	१०	१८			१ ५९	शुश्रूषा....	१७	३५
शिशुत्व....	१६	४०			३ २५	शुषि...	८	२
शिशुमार....	१०	२०	शुक्र.	{	४ १६	शुष्कमांस.	१६	६३
शिश्र...	१६	७६			१६ ६२	शुष्म....	१८	१०२
शिश्विदान.	२१	४६	शुक्ल....	२३	२२१	शुष्मन्....	१	५७
शिष्टि....	१८	२६	शुकशिष्य.	१	१२	शुक....	१९	२३
शिष्य....	१७	११	शुकु.	{	४ १२	शुककीट....	१५	१४
शीकर....	३	११			५ १२	शुकधान्य....	१९	२४
शीघ्र....	१	६८	शुच....	७	२५	शुकशिवि.	१४	८७
		३ १९			१ ५९	शूद्र.	{	१७ २
शीत.	{	१४ ३०	शुचि.	{	४ १६		२०	१
		१४ ३४			५ १२	शूरा....	१६	१३
		२५ २२			७ १७	शूरी....	१६	१३
शीतक....	२०	१८			२३ २८	शून्य....	२१	५६
शीतभीरु.	१४	७०	शुंठी....	१९	३८	शूर....	१८	७७
		३ १९	शुंढापान....	२०	४१	शूर्प....	१९	२६
शीतल.	{	१४ १४९	शुतुद्रि....	१०	३३	शूल....	२३	१९७
		१४ १०५	शुद्धांत.	{	१२ १२	शूलाकृत....	१९	४५
शीतशिव.	{	१४ १२२			२३ ६६	शूलिन्....	१	३२
		१९ ४२	शुनक....	२०	२२	शूल्य....	१९	४५
शीघ्र....	२५	३४	शुनासीर....	१	४४	शृगाल...	१५	५
शीर्ष....	१६	९५	शुनी....	२०	२२	शृंखल.	{	१६ १०९
शीर्षक....	१८	६३			४ २५		१८	४१
शीर्षच्छेद....	२१	४५	शुभ.	{	१९ ७६	शृंखलक....	१९	७५
		१६ ९८			२५ २३		१४	४
शीर्षण्य.	{	१८ ६४	शुभंयु....	२१	५०	शृंग.	{	१४ १४२
		१८ २६	शुभान्वित.	२१	५०		२३	२६
शील.	{	२३ २०१	शुभ्र.	{	५ १२	शृंगवेर....	१९	३७
शक्....	७	२५			२३ १९२			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
शृंगाटक ...	११	१७	शोणरत्न	१९	९२	श्याल	१६	३२
शृंगार ...	७	१७	शोणित ...	१६	६४	श्याव	५	१६
शृंगिणी	१९	६६	शोथ	१६	५२	श्येत	५	१२
शृंगी. {	१	४३	शोथघ्नी	१४	१४९	श्येन ...	१५	१५
	१०	२५	शोधनी ...	१२	१८	श्येनपाता.	२५	६
	१४	१००	शोधित. {	१९	४६	श्रद्धा	२३	१०२
	१४	११६		२१	५६	श्रद्धालु. {	१६	२१
शृंगीकनक. १९	९६		शोफ	१६	५२	श्रद्धालु. {	२१	२७
श्रुत	२१	९५	शोभन	२१	५३	श्रयण ...	२२	१२
शेखर	१६	१३६	शोभा	३	१७	श्रवण	१६	९४
शेफस्	१६	७६	शोष	१६	५१	श्रवस्	१६	९४
शेफालिका. {	१४	७०	शौक	१५	४३	श्रविष्ठा	३	२२
	२५	७	शौकिकेय... ८	१०		श्राणा ...	१९	५०
शेमुषी	५	१	शौक्य	१६	४१	श्राद्ध	१७	३१
शेलु	१४	३४	शौड	२१	२३	श्राद्धदेव ...	१	६२
शेवधि	१	७५	शौडिक	२०	१०	श्राय	२२	१२
शेष	८	४	शौडी	१४	९७	श्रावण	४	१६
शैक्ष	१७	११	शौद्धोदनि. १	१५		श्रावणिक.	४	१६
शैखरिक....	१४	८८	शौरि	१	२१	श्री. {	१	२८
शैल	१३	१	शौर्य	१९	१०२		१८	८२
शैलालिन्. २०	१२		शौलिक ...	२०	८	श्रीकंठ	१	३४
शैलप. {	१४	३२	शौष्कुल	२१	१९	श्रीघन	१	१४
	२०	१२	श्वेत	२२	१०	श्रीद	१	७३
शैलेय	१४	१२३	श्मशान	१८	११८	श्रीपाति	१	२१
शैवल	१०	३८	श्मश्रु	१६	९९	श्रीपर्ण. {	१४	६६
शैवालिनी....	१०	३०	श्याम. {	५	१४		२३	५३
शैवाल	१०	३८	श्यामल	५	१४	श्रीपर्णिका. १४	४०	
शैशव	१६	४०		१४	५५	श्रीपर्णी	१४	३६
शोक	७	२५	श्यामा. {	१४	१०८	श्रीफल	१४	३२
शोचिष्केश. १	५७			१४	११२	श्रीफली	१४	९५
शोचिस् ...	३	३४		१४	१४३	श्रीमत	२१	१४
शोण. {	५	१५		२३	१४३	श्रीमान्	१४	४०
	१०	३४	श्यामाक....	१४	१६५	श्रील	२१	१४
शोणक	१४	५७						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
श्रीवत्स	१	३०	श्वन्	२०	२२	षड्ज	७	१
श्रीवत्सलांछन. १	२२		श्वनिश	२५	४०	षंड	१९	६२
श्रीवास	१६	१२९	श्वपच	२०	२०	षंड. {	१६	३९
श्रीवेष्ट	१६	१२९		८	२		१८	९-
श्रीसंज्ञ	१६	१२५	श्वप्र. {	२३	१८४	षष्टिक ...	१९	२४
श्रीहस्तिनी. १४	६९			२५	२२	षष्टिक्य	१९	७
श्रुत	२३	७७	श्वयथु	१६	५२	षाण्मातुर....	१	४३
			श्ववृत्ति	१९	२	स.		
श्रुति. {	६	३	श्वगुर	१६	३१	संयत	१८	१०६
	१६	९४	श्वगुरौ	१६	३७	संयत	२१	४२
	२३	७३	श्वगुर्य	२३	१४६	संयम	२२	१८
श्रेणि. {	१४	४	श्वश्रु	१६	३१	संयाम	२२	१८
	२०	५	श्वश्रुश्वगुरौ.	१६	३७	संयुग	१८	१०५
श्रेयस्. {	४	२४	श्वस्	२४	२२	संयोजित...	२१	९२
	५	६	श्वसन. {	१	६४	संराव	६	२३
	२१	५८		१४	५२	संलाप	६	१६
श्रेयसी. {	१४	५९	श्राविष्	१५	७	संवत	२४	१६
	१४	८४	श्वित्र	१६	५४	संवत्सर	४	२०
	१४	९७	श्वेत. {	५	१२	संवनन	२२	४
श्रेष्ठ	२१	५८		१९	९६	संवर्त	४	२२
श्रीण	१६	४८		२३	८०	संवर्तिका ...	१०	४३
श्रीणि	१६	७४	श्वेतगरुत....	१५	२३	संवसथ	१२	१९
श्रीणिफलक. १६	७४		श्वेतच्छद....	२३	२२७	संवाहन	२२	२२
श्रीत्र	१६	९४	श्वेतमारिच. १९	११०				
श्रीत्रिय	१७	६	श्वेतरक्त	५	१५	संविद्. {	५	१
श्रीपट्	२४	८	श्वेतसुरसा. १४	७१			५	५
श्रीक्षण	२१	६१	ष.				२३	९२
श्रीष	२२	११	षट्कर्मन्. १७	४		संवीक्षण	२२	३०
श्रीष्मण	१६	६०	षट्पद	१५	२९	संवीत	२१	९०
श्रीष्मन्	१६	६२	षडाभिज्ञ	१	१४	संवेग	७	३४
श्रीष्मल	१६	६०	षडानन	१	४१	संवेद	२२	६
श्रीष्मातक. १४	३४		षड्ग्रंथ	१४	४८	संवेश	७	३६
श्रीक	२३	२	षड्ग्रंथा	१४	१०२	संन्यान	१६	११८
श्रीःश्रेयस. ४	२५		षड्ग्रंथिका. १४	१५४		संशतक	१८	९८
श्रीदंश	१४	९८				संशय ...	५	३

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
संशयापन्नमानस.	२१	५	सखी	१६ १२	संग्राम	१८ १०५
संश्रव	५ ५	सख्य	१८ १२	संग्राह.	{	१८ ९०
संश्रुत	२१ १०९	सगर्भ्य	१६ ३४		{	२२ १४
संश्लेष	...	२२ ३०	सगोत्र	१६ ३४	संघ	१५ ४१
संस्तुत	२१ ६८	साग्धि	१९ ५५	संघात.	{	९ २
संसद	१७ १५	संकट	२१ ८५		{	१५ ३९
संस्मरण.	{	११ १८	संकर	...	१२ १८	सचिव	२३ २०६
	{	२३ ५५	संकर्षण	१ २५	सजंबाल	११ १०
संसिद्धि	७ ३७	संकलित	२१ ९३	सज्ज	१८ ६५
संस्कार	१६ १३४	संकल्प	५ २	सजन.	{	१७ ३
संस्कारहीन.	१७	५४	संकसुक	१५ ४३		{	१८ ३३
संस्कृत	२३ ८१	संकाश	...	२० ३८	सज्जना	१८ ४२
संस्तर	२३ १६१	संकीर्ण.	{	२० १	संचय	१५ ३९
संस्तव	२२ २३		{	२१ ८५	संचारिका.	१६	१७
संस्ताव	२२ ३४		{	२३ ५७	संजयन	१२ ६
संस्त्याय	२३ १५१	संकुल.	{	६ १९	संज्वर	१ ६०
संस्था	१८ २६		{	२१ ८५	संज्ञपन	१८ ११३
संस्थान	२३ १२४	संकोच	१६ १२४	संज्ञा	२२ ३३
संस्थित	१८ ११७	संक्रन्दन	...	१ ४७	संज्ञु	१६ ४७
संस्पर्शा	१४ १५४	संकम	२२ २५	सटा	...	१६ ९७
संस्फोट	...	१८ १०५	संक्षेपण	२२ २१	संडीन	...	१५ ३७
संहत	२१ ७५	संख्य	...	१८ १०४	सत्.	{	१७ ५
संहतजानुक.	१६	४७	संख्या	५ २		{	२३ ८३
संहतल	१६ ८५	संख्यात	२१ ६४	सततं	१ ६९
संहति	१५ ४०	संख्यावत्	...	१७ ५	सती	१६ ६
संहनन	१६ ७०	संख्येय	१९ ८३	सतीनक	१९ १६
संहति	६ ८	संग	...	२२ २९	सतीर्थ	...	१७ १२
सकल	२१ ६५	संगत	६ १८	सत्तम	२१ ५८
सकृत्	२३ २४३	संगम.	{	२३ २९	सत्त्व.	{	४ २९
सकृत्प्रज.	१५	२०		{	२५ ३४		{	२३ २१३
सकुफला.	१४	५२	संगर	२३ १६६	सत्पथ	११ १६
सक्थि	१६ ७३	संगीर्ण	२१ १०९	सत्य.	{	६ २२
साखि	१८ १२	संगूढ	२१ ९३		{	२३ १५४
			संग्रह	६ ६	सत्यंकार.	१९ ८२

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
सत्यवचस्.	१७	४३	संतत	२१	१०२	सपिंड	१६	३३
सत्याकृति.	१९	८२	संतमस	९	४	सपीति	१९	५५
सत्यावृत....	१९	३	संतान. {	१	५३	सप्तकी	१६	१०८
सत्यापन....	१९	८२		१७	१	सप्ततंतु	१७	१३
सत्र	२३	१८१	संताप	१	६०	सप्तपर्ण	१४	२३
सत्रा	२४	४	संतापित....	२१	१०२	सप्तर्षि	३	२७
सत्रिन् ...	१८	१५	संदान	१९	७३	सतला. {	१४	७२
सत्वर	१	६८	संदानित....	२१	९५		१४	१४३
सदध्याज्य.	१७	२४	संदाव	१८	१११	सतर्चिस्....	१	५९
सदन	१२	५	संदित. {	२१	८५	सताश्व	३	२९
सदस्	१७	१५		२१	९६	सति	१८	४४
सदस्य	१७	१६	संदेशवाच्.	६	१७	सब्रह्मचारिन्.	१७	११
सदा	२४	२२	संदेशहर	१८	१६	सभर्तृका....	१६	१२
सदागति ...	१	६४	संदेह	५	३		१२	६
सदातन	२१	७२	संदोह	१५	३९	सभा. {	१७	१५
सदानीरा....	१०	३३	संदाव	१८	१११		२३	१३७
सदृक्	२०	३७	संधा	२३	१०२	सभाजन....	२२	७
सदृश	२०	३७	संधान	२०	४२	सभासद....	१७	१६
सदृक्ष	२०	३७	संधि. {	१८	१८	सभास्तार.	१७	१६
सदेश	२१	६७		२२	११	सभिक	२०	४४
सद्यन्	१२	४	संधिनी	१९	६९	सभ्य. {	१७	३
सद्यस्	२४	९	संध्या	४	३		१७	१६
सधर्मिणी....	३	२०	सन्नकट्ट	१६	३५	सम. {	२०	३७
सधश्च	२१	३४	सन्नद्ध	१८	६५		२१	६४
सनत्कुमार.	१	५४	सन्नय	२३	१५१	समग्र	२१	६५
सना	२४	१७	सन्निकर्षण.	२२	२३	समंगा. {	१४	९०
सनातन	२१	७२	सन्निकृष्ट....	२१	६६		१४	१४१
सनाभि	१६	३३	सन्निधि	२२	२३	समज	१५	४२
सनि	१७	३२	सन्निवेश....	१२	१९	समज्ञा	६	११
सनिष्ठीव....	६	२०	सपत्न	१८	१०	समज्या	१७	१५
सनीड	२१	६६	सपदि. {	२४	२	समंजस	१८	२४
संततं	१	६९		२४	९	समधिक....	२१	७५
संताति	१७	१	सपर्या. {	१७	१४	समंततस्....	२४	१३
				१७	३५	समंतदुग्धा.	१४	१०६

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
समेतभद्र....	१	१३	समाहित ...	२१	१०९	समूह	१५	३९
समन्वितलय.	७	३	समाहति ...	६	६	समूह्य	१७	२०
समम्	२४	४	समाह्वय	२०	४६	समृद्ध	२१	११
समय. {	४	१	समिति. {	१७	१५	समृद्धि	३१	१०
	२३	१४९		१८	१०६	संपत्ति	१८	८२
समया. {	२३	२५३		२३	७०	संपद्	१८	८१
	२४	७	सामित ...	१८	१०६	संपराय	२३	१५०
समर	१८	१०४	समिध्	१४	१३	संपिधान....	२३	१२५
समर्थ	२३	८७	समीक	१८	१०४	संपुटक	१६	१३९
समर्थन	१८	२५	समीप	२१	६६	संप्रति	२४	२३
समर्थक ...	२१	७	समीर	१	६५	संप्रदाय	२२	७
समर्थीद	२१	६७	समीरण. {	१	६५	संप्राधरण.	२३	१५६
समवर्तिन्.	१	६१		१४	७९	संप्रधारणा.	१८	२५
समवाय	१५	४०	समुच्चय ...	२२	१६	संप्रहार	१८	१०५
समाष्टिला....	१४	१५७	समुच्छ्रय....	२३	१५२	संपुल्ल	१४	७
समसन	२२	२१	समुज्झित.	२१	१०७	संबाध	२१	८५
समस्त ...	२१	६५	समुत्पिज...	१८	९९	संबोधन	२४	६
समस्या	६	७	समुदक्त....	२१	९०	संभेद	१०	३५
समाः	४	२०	समुदय	१५	४०	संभ्रम. {	७	३४
समांसमीना.	१९	७२	समुदाय. {	१५	४०		२२	२६
समाकर्षिन्.	५	११		१८	१०६	संभद	४	२४
समाधात....	१८	१०५	समुद्र	२५	१७	संमार्जनी...	१२	१८
समाज	१५	४२	समुद्रक ...	१६	१३९	संमूर्च्छन....	२२	६
समाधि. {	५	५	समद्विरण.	२३	५५	संमृष्ट	१९	४६
	२३	९८	समुद्धत	२१	२३	सम्यक्	६	२२
समान. {	१	६७	समुद	१०	१	समाज्	१८	३
	२०	३७	समुद्रांता. {	१४	९२	सरक	२०	४२
	२३	१२७		१४	११६	सरघा	१५	२६
समानोदर्थ.	१६	३४		१४	१३३	सरट	१५	१२
समालम्भ....	२२	२७	समुंदन	२२	२९	सरणा	१४	१५२
समावृत्त	१७	१०	समुन्न	२१	१०५	सराणि	११	१५
समासाद्य....	२१	९२	समुन्नद्ध	२३	१०३	सरत्ति	१६	८४
समासार्थ.	६	७	समुपजीवम्.	२४	१०	सरमा ...	२०	२२
समाहार	२२	१६	समूह	१५	९			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
सरल.	{	१४ ६०	सर्वमंगला.	१	३९	सहभोजन.	१९	५५
		२१ ८	सर्वरस	१६	१२७		{	४ १४
सरलद्रव	१६	१२९	सर्वला	१८	९३	सहस्र.	{	१८ १०२
सरला	१४	१०८	सर्वलिंगिन्.	१७	४५		{	२३ २३३
सरस्	१०	२८	सर्ववेदस् ...	१७	९	सहसा	२४	७
सरसी	१०	२८	सर्वसन्नहन.	१८	९४	सहस्य	४	१५
सरसीरुह....	१०	४०	सर्वानुभूति.	१४	१०८	सहस्र ...	१९	८४
सरस्वत.	{	१० १	सर्वान्नभोजिन्. २१	२२		सहस्रदंष्ट्र	१०	१८
		२३ ५७	सर्वान्नीन....	२१	२२	सहस्रपत्र	१०	४०
सरस्वती.	{	६ १	सर्वाभिसार.	१८	९४	सहस्रवीर्या.	१४	१५८
		१० ३४	सर्वार्थसिद्ध.	१	१५	सहस्रवेधि.	१९	४०
सरित्	१०	२९	सर्वौघ	१८	९४	सहस्रवेधिन्.	१४	१४१
सरित्पति....	१०	१	सर्वपा	१९	१७	सहस्रांशु	३	३१
सरीसृप	८	७	सलिल	१०	३	सहस्राक्ष	१	४७
सर्ग	२३	२२	सल्लकी	१४	१२४	सहस्रिन्	१८	६२
सर्ज	१४	४४	सव	१७	१३	सहा.	{	१४ ७३
सर्जक	१४	४४	सवन	१७	४७		{	१४ ११३
सर्जरस	१६	१२७	सवयस्	१८	१२	सहाय	१८	७१
सर्जिकाक्षार.	१९	१०९	सवितृ	३	३१	सहायता ...	२२	४१
सर्प	८	६	सविध	२१	६७	सहिष्णु	२१	३१
सर्वराज	८	४	सवेश	२१	६७	सांयात्रिक.	१०	१२
सर्पिस्	१९	५२	सव्य	२१	८४	सांयुगीन	१८	७७
सर्व	२१	६४	सव्येष्ठ	१८	६०	सांवत्सर	१८	१४
सर्वसहा	११	३	सस्य	१४	१५	सांशयिक.	२१	५
	{	१ १३	सस्यमंजरी.	१९	२१	साकम्	२४	४
सर्वज्ञ.	{	१ ३५	सस्यशूक....	१९	२१	साकल्य	२२	२
सर्वतस्	२४	१३	सस्यसंवर.	१४	४४	साक्षात्	२३	२४४
सर्वतोभद्र.	{	१४ १०	सह	२४	४	सागर	१०	१
		१४ ६२	सहकार	१४	३३	साचि	२४	६
सर्वतोभद्रा.	१४	३५	सहचरी ...	१४	७५	साति.	{	२२ ३९
सर्वतोमुख.	१०	४	सहज	१६	३४		{	२३ ६७
सर्वदा	२४	२२	सहधर्मिणी.	१६	५		{	२५ ९
सर्वधुरावह.	१९	६६	सहन ...	२१	३१	सातिसार...	१६	५९
सर्वधुरीण...	१९	६६				सार्विक....	७	१६

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
साक्षिन्.	{	१८ ६०	सांप्रतम्.	{	२४ ११	सिंहसंहनन.	२१	१२
		२३ १०७			२४ २३	सिंहाण	१९	९८
साधन	२३	११९	सायक	२३	२	सिंहासन....	१८	३१
साधारण.	{	२० ३७	सायम्.	{	४ ३	सिंहास्य....	१४	१०३
		२१ ८२			२४ १९	सिंही.	{	१४ १०३
साधित	२१	४०	सार.	{	१४ १२			१४ ११४
साधिष्ठ ...	२१	११२			२३ १७१	सिकता	२३	७३
साधीयस् ...	२३	२३६	सारंग.	{	१५ १७	सिकतामय.	१०	९
	{	१७ ३			२३ २३	सिकतावत्.	११	११
साधु.	{	२१ ५२			२३ २२५	सिक्थक.	{	१९ १०७
		२३ १०१	सारथि	१८	५९			२३ ५
साधुवाहिन्.	१८	४४	सारमेय	२०	२१		{	५ १३
साध्य	१	१०	सारव	१०	३६	सित.	{	२१ ९५
साध्यस ...	७	२१	सारस.	{	१० ४०			२१ ९८
साध्वी	१६	६			१५ २२			२३ ८०
सानु	१३	५	सारसन.	{	१६ १०९	सितछत्रा....	१४	१५२
सातपन	१७	५२			१८ ६३	सिता.	{	१४ ७१
सात्व.	{	६ १८	सारिका	२५	८			१९ ४३
		१८ २१	सार्य	१५	४१	सिताभ्र	१६	१३०
सांद्राष्टिक....	१८	२९	सार्यवाह....	१९	७८	सितांभोज.	१०	४१
सांद्र	२१	६६	सार्द्र	२१	१०५	सिद्ध.	{	१ ११
सांद्रस्निग्ध.	२१	३०	सार्धम्	२४	४			२१ १००
सान्नाय्य ...	१७	२७	सार्वभौम.	{	३ ४	सिद्धांत	५	४
सातपदीन.	१८	१२			१८ २	सिद्धार्थ	१९	१८
साम	१८	२०	साल.	{	१२ ३	सिद्धि	१४	११२
					१४ ४४	सिद्धम	१६	५३
सामन्.	{	६ ३	सालपर्णी.	१४	११५	सिद्धमल	१६	६१
		१८ २१	साला	१९	६३	सिद्धमला ...	२५	१०
सामाजिक.	१७	१६	साहस	१८	२१	सिध्य	३	२२
सामान्य.	{	४ ३१	साहस.	{	१८ ६२	सिधका	२५	८
		२१ ८२			२२ ४३	सिनीवाली.	४	९
सामि	२३	२५०	सिंह.	{	१५ १	सिंदुक	१४	६८
सामिधेनी.	१७	२२			२१ ५९	सिंदुवार	१४	६८
सामुद्र	१९	४१	सिंहनाद....	१८	१०७			
सांपरायिक.	१८	१०४	सिंहपुच्छी.	१४	९३			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
सिंदूर.	{	१९ १०५	सुगंधि.	{	५ ११	सुमनस्	१	७
		२५ ३१			१४ १२१	सुमनस	१४	१७
सिंधु.	{	९ २	सुचरित्रा....	१६	६	सुमना	१४	७२
		१० १	सुचेलक	१६	११६	सुमनोरजस्.	१४	१७
		२३ १०१	सुत.	{	१६ २७	समेरु	१	५२
सिंधुज		१९ ४२			२३ ६०	सुर	१	७
सिंधुसंगम.		१० ३५	सुतश्रेणी....	१४	८८	सुरंगा	२५	८
सिल्ह		१६ १२८	सुतात्मजा.	१६	२९	सुरज्येष्ठ	१	१६
सीता		१९ १४	सुत्रामन्	१	४५	सुरदीर्घिका.	१	५२
सीत्य		१७ ८	सत्या	१७	४७	सुरद्विप	१	१२
सीधु		२० ४२	सुत्वन्	१७	१०	सुरनिम्नगा.	१०	३१
सीमन्		१२ २०	सुदर्शन	१	२९	सुरपति	१	४६
सीमन्त		२५ १९	सदाय	१८	२८			
सीमान्तिनी.		१६ २	सदूर	२१	६९	सुरभि.	{	४ १८
सीमा		१२ २०	सुधर्मा	१	५१			५ ११
सीर		१९ १४	सुधा.	{	१ ५१			२३ १३७
सीरपाणि....		१ २५			२३ १०२	सुरभी	१४	१२३
सीवन		२२ ५	सुधांशु	३	१४	सुरर्षि	१	५१
सीसक		१९ १०५	सुधो	१७	५	सुरलोक	१	६
सीहण्ड		१४ १०५	सुनासीर....	१	४४	सुरवर्त्मन्....	२	१
सु.	{	२४ २	सुनिषण्णक.	१४	१४९	सुरासा	१४	११४
		२४ ५	सुंदर	२१	५२	सुरा ...	२०	३९
सुकंदक		१४ १४७	सुंदरी	१६	४	सुराचार्य....	३	२४
सुकरा		१९ ७०	सुपथिन्	११	१६	सुरामंड	२०	४३
सुकल		२१ ८	सुपर्ण	१	३१	सुरालय	१	५२
सुकुमार....		२१ ७८	सुपर्वन्	१	७	सुराष्ट्रज	१४	१३१
सुकृत		४ २४	सुपार्श्वक	१४	४३	सुवचन	६	१७
सुकृतिन्		२१ ३	सुप्रतीक	३	४	सुवर्ण.	{	१९ ८६
सुख.	{	४ २५	सुप्रयोगविशिख. १८	६८				१९ ९४
		२५ २३	सुप्रलाप	६	१७	सुवर्णक	१४	२४
सुखवर्चक.		१९ १०९	सुभगासुत.	१६	२४	सुवह्नि	१४	९५
सुखसंदोहा.		१९ ७१	सुभिक्षा	१४	१२४			
सुगत		१ १३	सुम	१४	१७	सुवहा.	{	१४ ७०
सुगंधा		१४ ११४	सुमन	१९	१८			१४ ११५
								१४ ११९

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
सुवहा.	{	१४ १२३	सूत्रवेष्टन ...	२२ २४	सेनामुख	१८ ८१		
		१४ १४०	सूद.	{	१९ २८	सेनारक्ष	१८ ६१	
सुवासिनी.		१६ ९		२३ ९१	सेवक	१८ ९		
सुव्रता	१९ ७१		सूना	२३ ११३	सेवन	२२ ५		
सुषम	२१ ५२		सनु ...	१६ २७	सेवा	१९ २		
सुषमा	३ १७		सूच्यत	६ १९	सेव्य	१४ १६४		
सुषवी.	{	१४ १५५	सूपकार	१९ २७	सैहिकेय	३ २६		
		१९ ३७	सूर	३ २८	सैकत	१० ९		
साधिर.	{	७ ४	सूरण	१४ १५७	सैतवाहिनी.	१० ३३		
		८ १	सूरत	२१ १५	सैनिक ...	१८ ६१		
		८ २	सूरस्त	३ ३२	सैधव.	{		
सुषिरा	१४ १२९		सूरि	१७ ६		१८ ४४		
सुषीम	३ १९		सूमी	२० ३५		१९ ४२		
सुषेण	१४ ६७		सूर्य	३ २८	सैन्य.	{		
सुषेणिका....	१४ १०८		सूर्यतनया....	१० ३२		१८ ७८		
सुष्ठु.	{	२४ २	सूर्यप्रिया....	२३ १५७	सैरंध्री	१६ १८		
		२४ १९	सूर्यदुसंगम.	४ ८	सैरिक ...	१९ ६४		
सुसंस्कृत....	१९ ४५		सृक्किणी	१६ ९१	सैरिभ	१५ ४		
सुहृद्	१८ १२		सृग	१८ ९१	सैरेयक	१४ ७५		
सुहृदय	२१ ३		सृणि	१८ ४१	सोढ ...	२१ ९७		
सूकर	१५ २		सृणिका	१६ ६७	सोदर्य ...	१६ ३४		
सूक्ष्म.	{	२१ ६१	सृति	११ १५	सोन्माद ...	२१ २३		
		२३ १४४	सृपाटी	२५ ३८	सोपप्लव ...	४ १०		
सूचक	२१ ४७		सृमर	१५ ११	सोपान	१२ १८		
सूचन	२३ ११५		सृष्ट	२३ ३९	सोभाजन.	१४ ३१		
सूचि	२५ ८		सेकपात्र	१० १३	सोम	३ १४		
सूत.	{	१८ ५९	सेचन	१० १३	सोमपा	१७ ९		
		१९ ९९	सेतु.	{	सोमपीथिन्.	१७ ९		
		२० ३		११ १४	सोमराजी.	१४ ९५		
		२३ ६२	सेना	१८ ७८	सोमवल्क.	{		
सूतिकाग्रह.	१२ ८		सेनांग	१८ ३३		१४ ५०		
सूतिमास....	१६ ३९		सेनानी.	{		२३ ९		
सूत्थान	२० १९			१ ४२	सोमवल्ली.	१४ १३७		
सूत्र	२० २८			१८ ६२	सोमवल्लिका.	१४ ९५		
					सोमवल्ली....	१४ ८३		

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
श्रीमोक्षवा	१०	३२	स्तनित	३	८	स्थली	११	५
श्रीगंधिक. {	१०	३६	स्तवक	१४	१६	स्थविर	१६	४२
	१४	१६६	स्तब्धरोमन्.	१५	२	स्थविष्ठ	२१	१११
	१९	१०२	स्तंब. {	१४	९		१	३६
श्रीचिक	२०	६		१९	२१	स्थाणु. {	१४	८
श्रीदामनी.	३	९	स्तंबकारि.	१९	२१		२३	४९
श्रीध	१२	१०	स्तंबघन	२२	३५	स्थांडिल	१७	४५
श्रीभागिनेय.	१६	२४	स्तंबघ्न	२२	३५	स्थान. {	१८	१९
श्रीम्य. {	३	२६	स्तंबेरम	१८	३५		२३	११७
	२३	१६१	स्तंभ	२३	१३५	स्थानीय	१२	१
श्रीरभेय	१९	६०	स्तव	६	११	स्थाने	२४	११
श्रीरभेयी	१९	६६	स्तिमित	२१	१०५	स्थापत्य	१८	८
श्रीराष्ट्रिक	८	१०	स्तुत	२१	११०	स्थापनी	१४	८४
श्रीरि	३	२६	स्तुति	६	११	स्थामन्	१८	१०२
श्रीवर्चल. {	१९	४३	स्तुतिपाठक.	१८	९७	स्थायुक	१८	७
	१९	१०९	स्तूप	२५	१९	स्थाल	२५	३२
श्रीविद	१८	८	स्तेन	२०	२४	स्थाली	१९	३१
श्रीविदल	१८	८	स्तेम	२२	२९	स्थावर	२१	७३
	१४	३७	स्तेय	२०	२५	स्थाविर	१६	४०
श्रीवीर. {	१९	३९	स्तैन्य	२०	२५	स्थासक	१६	१२२
	१९	१००	स्तोक	२१	६१	स्थास्नु	२१	७३
श्रीहित्य	१९	५६	स्तोत्र	६	११	स्थिति. {	१८	२६
स्कंद	१	४२	स्तोम. {	१५	३९		२२	२१
	१४	१०		२३	१४१	स्थिरतर	२१	७३
स्कंध. {	१६	७८	स्त्री	१६	२	स्थिरा. {	११	२
	२३	१००	स्त्रीधर्मिणी.	१६	२०		१४	११५
स्कंधशाखा.	१४	११	स्त्रीपुंस	१५	३८	स्थिरायु	१४	४६
स्कन्ध	२१	१०४	स्वगार	१२	११	स्थूणा. {	२०	३५
स्वलन	७	३६	स्थंडिल	१७	१८		२३	५१
स्वलित	१८	१०८	स्थंडिलशायिन्.	१७	४४	स्थूल. {	२१	६१
स्तन	१६	७७	स्थपति. {	१७	९		२३	२०४
स्तनंधयी	१६	४१		२३	६१	स्थूललक्ष्य.	२१	६
स्तनपा	१६	४१	स्थल	११	५	स्थूलशाटक.	१६	११६
स्तनयित्नु.	३	६				स्थूलोच्चय.	२३	१४८

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
स्थेयस्	२१	७३	स्फुट. {	१४	७	लुक्	१७	२५
स्थौणेय ...	१४	१३२	स्फुट. {	२१	८१	लुत	२१	९२
स्थौरिन्	१४	४६	स्फुटन	२२	५	लुव	१७	२५
स्थौल्य	२३	१९५	स्फुरण	२२	१०	लुवा	१४	८३
लव	२२	९	स्फुरणा	२२	१०	लुवावृक्ष	१४	३७
स्नातक	१७	४३	स्फुल्लिग	१	६०	लोतस्. {	१०	११
स्नान	१६	१२२	स्फूर्जक	१४	३८	लोतस्. {	२३	२३४
स्नायु	१६	६६	स्फूर्जथु ...	३	१०	लोतस्विनी.	१०	३०
स्निग्ध. {	१८	१२	स्फैष्ठ	२१	११२	लोतोजन.	१९	१००
स्निग्ध. {	१९	४६	स्म.... {	२४	५	स्व.... {	१६	३४
स्निग्ध. {	२१	१४	स्म.... {	२४	१७	स्व.... {	२३	२११
स्तु	१३	५	स्मर ...	१	२६	स्वच्छंद. {	२१	१५
स्तुक्	१४	१०५	स्मरहर	१	३५	स्वच्छंद. {	२१	१६
स्तुत	२१	९२	स्मित ...	७	३४	स्वजन	१६	३४
स्तुषा	१६	९	स्मृति. {	६	६	स्वतंत्र	२१	१५
स्तुही	१४	१०५	स्मृति. {	७	२९	स्वधा	२४	८
स्नेह	७	२७	स्यद ...	१	६७	स्वधाति	१८	९२
स्पर्श. {	५	७	स्यंदन. {	१४	२६	स्वन ...	६	२२
स्पर्श. {	२२	१४	स्यंदन. {	१८	५१	स्वनित	२१	९४
स्पर्शन. {	१	६४	स्यंदनारोह.	१८	६०	स्वप्न	७	३६
स्पर्शन. {	१७	२९	स्यंदिनी	१६	६७	स्वप्नज् ...	२१	३३
स्पर्श. {	१८	१३	स्यन्न	२१	९२	स्वभाव	७	३८
स्पर्श. {	२३	२१४	स्यूत. {	१९	२६	स्वभू	१	११
स्पष्ट	२१	८१	स्यूत. {	२१	१०१	स्वयंवर	१६	७
स्पष्टृ	३	१४	स्यूति	२२	५	स्वयम् ...	२४	१६
स्पृक्का	१४	१३३	स्योनाक	१४	५७	स्वयंभू	१	१६
स्पृशी	१४	९३	संसिन्	१४	२८	स्वर. {	१	६
स्पृष्टि ...	२२	९	सज्ज	१६	१३५	स्वर. {	२३	२५५
स्पृष्टा	७	२७	स्रव	२२	९	स्वर. {	६	४
स्पृष्टृ	२२	१४	स्रवद्गर्भा	१९	६९	स्वर. {	७	१
स्फटा	८	९	स्रवंती	१०	३०	स्वर. {	१	५०
स्फाति	२२	९	स्रष्टृ	१	१७	स्वर. {	२३	१३७
स्फार	२१	६३	स्रस्त	२१	१०४	स्वरूप. {	७	३८
स्फिच्	१६	७५	स्त्राक ...	२४	२	स्वरूप. {	२३	१३१

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
स्वर्ग	१ ६	स्वैरिता	२२ २	हरित.	{	५ १५
स्वर्ण	१९ ९४	स्वैरिन्	२१ १५		{	२५ १९
स्वर्णकार....	२० ८		ह.			हरितक	१९ ३४
स्वर्णक्षीरी.	१४ १३८	ह	२४ ५		हरिताल	२५ ३२
स्वर्णदी	१ ५२		{	३ ३१	हरितालक.	१९	१०३
स्वर्भानु	३ २६	हंस.	{	१५ २३	हरिदश्व	३ २९
स्वर्वेश्या	१ ५५		{	२३ २२७	हरिद्रा	१९ ४
स्वर्वेद्य	१ ५४	हंसक	१६ ११०	हरिद्राभ	५ १४
स्वस	१६ २९	हंजिका	१४ ८९	हरिदु	१४ १०१
स्वस्ति	२३ २४२	हंजे	७ १५	हरिन्मणि....	१९	९२
स्वस्तिक....	१२ १०	हट्ट	२५ १८		हरिप्रिय	१४ ४२
स्वस्तीय	१६ ३२	हट्टविलासिनी.	१४ १३०		हरिप्रिया....	१	२८
स्वाति	२५ ३८	हठ	१८ १०८	हरिमथक....	१९	१८
स्वादु	२३ ९४	हंडे	७ १५	हरिवालुक.	१४	१२१
स्वादुकटक.	{	१४ ६७	हत	२१ ४१	हरिहय	१ ४६
	{	१४ ९८	हनु.	{	१४ १३०	हरीतकी....	१४	५९
स्वादुरसा....	१४ १४४			{	१६ ९०	हरेणु.	{	१४ १२०
स्वाद्दी	१४ १०७	हंत	२३ २४५		{	१९ १६
स्वाध्याय....	१७ ४७	हन्न	२१ ९६		हर्म्य	...	१२ ९
स्वान	६ २३	हय	१८ ४४	हर्यक्ष	१५ १
स्वांत	४ ३१	हयपुच्छी....	१४ १३८		हर्ष	४ २४
स्वाप	८ ३६	हयमारक....	१४ ७६		हर्षमाण	२१ ७
स्वापतेय	१९ ९०	हर	१ ३५	हल	१९ १३
स्वामिन्.	{	१८ १७	हरण	१८ २८	हला	७ १५
	{	२१ १०		{	१५ १	हलायुव	...	१ २४
स्वाराज्	१ ४६	हरि.	{	२३ १७५	हलाहल	८ १०
	{	१७ २१		{	१ ५३	हलिन	१ २५
स्वाहा.	{	२४ ८	हरिचंदन.	{	१६ १३१	हलिप्रिया....	२०	३९
स्वित	२३ २४३		{	५ १३	हल्य	१९ ८
स्वेद	७ ३३	हरिण.	{	१५ ८	हल्या	...	२२ ४१
स्वेदज	२१ ५१		{	२३ ५१	हल्लक	१० ३६
स्वेदनी	१९ ३०	हरिणी	२३ ५०	हन.	{	२२ ८
स्वैर	२३ १९२	हरित.	{	३ १		{	२३ २०७
स्वैरिणी	१६ ११		{	५ १४			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
हविस्.	{	१७ २७	हिंसाकर्मन्.	२२	१९	इति.	{	६ ८
		१९ ५२	हिंस्र	२१	२८			२२ ८
हव्य	१७	२४	हिक्का	२५	८	इह	१	५५
हव्यपाक....	१७	२२	हिंशु	१४	४०	हणीया	२२	३२
हव्यवाहन.	१	५८	हिंशुनिर्यास.	१४	६२	इद्.	{	४ ३१
हस	७	१८	हिंशुल	२५	२०			१६ ६४
हसनी	१९	३०	हिंशुली	१४	११४	हृदय.	{	४ ३१
हसती	१९	२९	हिज्जल	१४	६१			१६ ६४
	{	१६ ८६	हिंताल	१४	१६९	हृदयंगम ...	६	१८
हस्त.		१६ ९८		{	३ १८	हृदयालु	२१	३
		२३ ५९	हिम.	{	३ १९	हृद्य	२१	५३
हस्तधारण.	२२	५			२५ २२	हृषीक	५	८
हस्तिन्	१८	३४	हिमवत्	१३	३	हृषीकेश	१	१८
हस्तिनख.	१२	१७	हिमवालुका.	१६	१३०	हृष्ट ...	२१	१०३
हस्तिपक....	१८	५९	हिमसंहति.	३	१८	हृष्टमानस....	२१	७
हस्त्यारोह.	१८	५९	हिमांशु	३	१३	हे	२४	८
हा	२३	२५७	हिमानी	३	१८	हेति.	{	१ ६०
हाटक	१९	९४	हिमावती....	१४	१३८			२३ ७१
	{	४ ३०		{	१९ ९०	हेतु	४	२८
हायन.		२३ १०८	हिरण्य.	{	१९ ९१	हेमकूट	१३	३
हार	१६	१०५			१९ ९४	हमदुग्ध	१४	२२
हारीत	१५	३४	हिरण्यगर्भ.	१	१६	हेमन्.	{	१९ ९४
हार्द	७	२७	हिरण्यवाह.	१०	३४			२५ २३
हाला	२०	३९	हिरण्यरेतस्.	१	५८	हेमन्त	४	१८
हालिक	१९	६४	हिरुक्.	{	२४ ३	हेमपुष्पक.	१४	६३
हाव	७	३२			२४ ७	हेमपुष्पिका.	१४	७१
हास	७	१९	हिलमोचिका.	१४	१५७	हेमाद्रि	१	५२
हास्तिक	१८	३६	ही	२४	९	हेरंब	१	४१
	{	७ १७	हीन.	{	२१ १०७	हेला	७	३२
हास्य.		७ १९			२३ १२८	हेषा	१८	४७
हाहा	१	५५	हुतभुक्तिप्रया.	१७	२१	हेषा	१८	४७
	{	२३ २५८	हुतभुज	१	५८	हे.	२४	७
हि.		२४ ५	हुम्.	{	२३ २५३	हैम	१८	३२
हिंसा	२३	२३०			२४ १८			

शब्दानुक्रमणिका.

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
हैमवती.	{	१ ३८	हृद	१० २५	ह्लादिनी.	{	१० ३०
		१४ ५९	हसिष्ठ	२१ ११२	{		२३ ११२
		१४ १०३	ह्रस्व.	{	१६ ४६		ह्री	...
		१४ १३८			२१ ७०	ह्रीण	२१ ९१
हैयंगवीन....		१९ ५२	ह्रस्वगवेषुका.		१४ ११७	ह्रीत	२१ ९१
होतृ	१७ १७	ह्रस्वांग	१४ १४२	ह्रीवेर	१४ १२२
होम	१७ १४	ह्लादिनी.	{	१ ५०	ह्रीषा	१८ ४७
होरा	२५ १०			३ ९	ह्रीदिनी	१४ १२४
ह्यस्	२४ २२						

इति काले इत्युपाह्व-काशीनाथात्मज-गणेशशा-
स्त्रिणा विरचिता सभाषामरकोशस्थ-
शब्दानुक्रमणिका समाप्ता ।

अथ सभाषामरकोशस्थक्षेपकश्लोकशब्दानुक्रमणिका.

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
अ.		अवाग्भव.... १६	इन्द्राणी.... ९
अंशुमालिन् २१	अवाचीन.... १६	इला ५७
अक्षपाद.... १३०	अष्टमूर्ति.... ८	ईशित्व ९
अंडज ५	अहिदंष्ट्रिका ४६	उ.	
अच्छ २२७	अहिर्बुध्न्य ८	उत्कलिका २२४
अणिमन् ९	आ.		उदग्भव १६
अघोगंढ ९६	आक्रोश ३५	उदीचीन.... १६
अनेडमूक २२४	आक्षेप ३५	उद्धव ७
अंतरिक्ष १५	आदिकावि १३६	उंदुर ९६
अब्जिनीपति २१	आर्हक १३०	उल्का १२
अभ्यंजन.... १७१	आशिस् ४६	ए.	
अभियोग ३५	इ.		एकदृष्टि.... ९८
अवधान २९	इन २१	औ.	
अवलेप ४१	इन्द्रलुप्तक ११२	औलुक्य.... १३०
अवष्टम्भ ४१				

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
क.		गणिका	२२४	झ.	
कच्छ	२२७	गद	७	झंझावात....	१३
कंचुकिन्	४६	गरिमन्	९	ट.	
कटक ...	२२३	गह्वरी	५७	टंक	२२४
कंटक ...	२२३	गाधेय	१३६	त.	
कंठीरव	९४	गुच्छ	२२७	तमिस्रहन्	२१
कमलोद्भव	५	गो	५७	तार	३८
कर्ममोटी....	१०	गोकर्ण	४६	तारपथ	१५
कर्मसाक्षिन् ...	२१	गोसर्ग	२३	तिलौदन....	१७१
कापिल	१३०	गौरिला	६७	तेजसां राशि	२१
किंजल्क....	२२४	ग्रंथ	२३८	त्रयीतनु	२१
कुट्टिम	६२	घ.		द.	
कुतुप	२४६	घूक	९७	दंसक	६६
कुंभिनी	५७	च.		दर्प	४१
कुंभीनस....	४६	चंद्रशाला....	६२	दव ...	१२
कूलंकषा ...	५४	चर्चिका	१०	दारक	२२४
कुसर	१७१	चर्ममुंडा	१०	दारुक	७
केशघ्न	११२	चटु	३५	दाव	१२
कौमारी	९	चाटु	३५	दिनमणि....	२१
कौशिक	{ ९७	चामुंडा	१०	दिवस्पृथिव्यौ	६०
	{ १३६	चार्वाक	१३०	दिवांध	९७
क्षमा	५७	चित्तोद्रेक	४१	दिवाभीत	९७
क्षार	१२	चित्रकाय	९४	दुरेषणा	३५
क्षीरसागरकन्यका.	७	चिरंजीविन्	९८	देशिक	२२४
क्षौर	१३८	चोद्य	३५	द्विसन	४६
ख.		छ.		द्वेपायन	१३६
खद्योत	२१	छायानाथ....	२१	द्यावापृथिव्यौ	६०
खनक	९६	ज.		द्यावाभूमी	६०
खेटक	२२४	जगच्चक्षुस्	२१	ध.	
ग.		जगती	५७	धामनिधि	२१
गजारी	८	जलशायिन्	६	धात्री	५७
गंजा	६०	जालिक	२२४		
		जैमिनीय....	१३०		

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
न.					
आभिजन्मन् ५		प्राग्भव १६		महीसूनु १६	
नायक २२३		प्राचीन १६		मोहेश्वरी १३०	
नासामल ११५		प्राचेतस १३६		मीमांसक ९४	
निधन ५		फ.		मृगद्विष ९४	
निबद्धाभ ६२		फणधर ४६		मृगद्विष्ट ९४	
निर्झरिणी ५४		ब.		मृगरिपु ९४	
निशाटन ९७		बलाहक ७		मृगाशन २३८	
नैयायिक १३०		बुध १६		मृत १३८	
प.		बृहस्पति १६		मुंडन ७	
पंचनख ९४		ब्रह्मवादिन् १३०		मघपुष्प १५	
पद्माक्ष २१		ब्राह्मी ९		मेघाध्वन् १३६	
पर्यक २३३		भ.		भैत्रावरुणि ९८	
पाक २२९		भग २१		मौकुलि १७१	
पादवल्मीक ११२		भणित ३६		र.	
पाराशर्य १३६		भद्राकरण १३८		रक्षा १२	
पिजूष ११५		भसित १२		रजोमूर्ति ५	
पुंडरीक ९४		भस्मन् १२		रत्नगर्भा ५७	
पुंघ्वज ९६		भानुज १६		रतिकूजित ३६	
पुराणपुरुष ६		भार्गवी ७		रवि १६	
पूर्व ५		भावना २९		रुमा ६०	
पेटक २२४		भूतधात्री ५७		रोदसी ६०	
पौष ४५		भृति १२		रोदस्यौ ५४	
पौषी २४		भोग ४६		लो.	
प्रकंपन १३		भोगधर ४६		लघिमन् ९	
प्रकटोदित ३६		म.		लवणाकर ६०	
प्रणिधान २९		मद ४१		लुब्धक २२३	
प्रत्यग्भव १६		मनोहारिन् ३६		लेलिहान ४६	
प्रतीचीन १६		मन्द ३८		लोकजननी ७	
प्राकाम्य ९		महानट ८		लोकबंधु २१	
प्राप्ति ९		महाबिल १५		लोकबांधव २१	
प्रद्योतन २१		महावात १३		लोकायतिक १३०	
प्रभात २२		महिमन् ९			

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
व.		वैष्णवी ९		समाधान	
वनहुताशन १२		व्यास १३६		सरस्वती	
वनज ७		व्युष्ट २३		सांख्य	
वपन १३८		श.		सागरांबरा	
वपरा २३२		शाकशाकट १६३		सिंघाण	
वशित्व ९		शाकशाकिन १६३		सुग्रीव	
वाराही ९		शाप ३५		सोत्प्राप्त	
वार्धक २२४		शिरोगृह ६२		सोच्छ्रुतन	
वाल्मीक १३६		शुक १६		सौगत	
वासना २९		शुल्क २२४		स्मय	
विधु १६		शून्यवादिन् १३०		स्वर्भानु	
विपुला ५७		शैव्य ७		स्याद्वादिक	
विभात २३		श्राव्य ३६		ह.	
विमर्श २९		श्लाघा ३५		हंसवाहन	
विश्वामित्र १३६		श्लोपद ११२		हरि	
विस्पष्ट ३६		स.		हय	
वृक ९६		सत्यक ५			
वैणी २३२		सत्यवतीसुत १३६			
वेदांतिन् १३०		सदामंद ५			
वैशेषिक १३०					

इति सभाषामरकोशस्थक्षेपकश्लोकशब्दानु-
क्रमणिका समाप्ता ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

“ लक्ष्मीवेंकटेश्वर ” छापाखाना,

कल्याण-मुंबई.

